ज्योतिष-रहस्य

जगजीवनदास गुप्त

प्रथम खण्ड

सिद्धान्त-संहिता-होरारूपं स्कन्धत्रयात्मकम्।
वेदस्य निर्मलं चक्षुर्ज्योतिषशास्त्रमकल्मषम् ॥

ज्योतिष-रहस्य

(प्रथम खण्ड)

सिद्धान्त : संहिता : होरा

प्रणेता और संपादक
जगजीवनदास गुप्त

मोतीलाल बनारसीदास
दिल्ली वाराणसी पटना बंगलौर मद्रास कलकत्ता

प्रस्तावना

बहुत दिनों से अभिलाषा थी कि गणित-ज्योतिष-विषयक ऐसा उपयोगी और आवश्यक ग्रन्थ ज्योतिष-प्रेमियों को भेंट किया जाए, जैसा कि अब तक कहीं प्रकाशित न हुआ हो। आज वह अभिलाषा परमात्मा की असीम कृपा से अंशतः पूर्ण हुई है। त्रिस्कन्ध-ज्योतिषशास्त्र का मूल आधार गणित है। गणित जितना सूक्ष्म, शुद्ध होगा, फलित का विचार उतना ही उत्तम हो सकेगा। गणित की यत्किञ्चित् त्रुटि या अशुद्धि फलादेश में भयंकर परिणाम ला सकती है। इसलिए भारतीय ज्योतिषशास्त्र में फलादेश का अधिकार मात्र उन्हीं ज्योतिर्विदों को दिया गया है जो तत्सम्बन्धी गणित-क्रिया में निष्णात हों। सूक्ष्म, शुद्ध गणित का कार्य बड़ा क्लिष्ट होता है। अतः इस विषय के नए-पुराने आचार्यों ने बड़े कठिन श्रम से अनेक ऐसे कोष्ठकों एवं सारणियों की रचना की, जिनसे थोड़े श्रम और समय में ही सूक्ष्म, शुद्ध परिणाम प्राप्त होते हैं। सारणी-निर्माण-कला में भी दिनों-दिन उन्नति होती जा रही है; किन्तु जो भी नया लेखक किसी अपेक्षाकृत अधिक सूक्ष्म परिणामदायी सरल कोष्ठक का अविष्कार करता है, वह वस्तुतः अपने पूर्वाचार्यों का उतना ही ऋणी रहता है जितना उच्च अट्टालिका पर पहुंचने वाला व्यक्ति नीचे से लेकर ऊपर तक के सोपानों का। वर्तमान समय में पाश्चात्य गणितज्ञों ने ज्योतिर्गणित में जैसी महान् उन्नति की है, उसे देखकर विस्मय-विमुग्ध रह जाना पड़ता है। हमारे प्रिय पाठकजन स्वयं देखें कि इस पुस्तक में दिए गए कोष्ठकों से ज्योतिष-संबन्धी अनेकानेक गणित-कार्य कितनी त्वरित और सूक्ष्म रीति से सम्पन्न हो सकते हैं। पुस्तक को अधिकाधिक सुन्दर और शुद्ध रूप में छपवाने का हमने यत्न किया है; फिर भी मानव-धर्मवश कहीं कोई त्रुटि रह गई हो तो कृपालु पाठक हमें अवश्य सूचित करें ताकि आगे उनका सुधार कर दिया जाए।

(द्वितीय संस्करण की प्रस्तावना से)

इस पुस्तक के प्रथम संस्करण में केवल ३२ पृष्ठों की सामग्री नमूनार्थ प्रस्तुत की गयी थी। कहने को तो हिन्दी राष्ट्रभाषा है; किन्तु उसमें क्रियात्मक गणित-ज्योतिष-विषयक प्रामाणिक पुस्तकों का दुःखद अभाव है। अतः तद्विषयक ६४ पृष्ठों की सामग्री इस पुस्तक के द्वितीय संस्करण में प्रकाशित की गई जिसका हिन्दी-प्रेमी ज्योतिष-जिज्ञासुओं ने आशातीत स्वागत किया। बहुसंख्यक पाठकों ने इसके संबंध में अपने प्रशंसापूर्ण उद्गार प्रकट किए। अनेक पाठक तो केवल इतने ही से संतुष्ट नहीं हुए, प्रत्युत् अत्यन्त श्रद्धा-प्रेम से मुझे अपना गुरु मानकर इस विषय के गहन अध्ययन, मनन और अन्वेषण में प्रवृत्त हो गए हैं। एक भी पाठक ने इस पुस्तक के विषय में किसी प्रकार का असंतोष या शिकायत प्रकट नहीं किया। इसे ही मैं अपनी बहुत बड़ी सफलता मानता हूं। हमारे पाठकों के प्रोत्साहन का ही फल है कि इस पुस्तक के प्रस्तुत संस्करण में और अधिक उपयोगी विषय-सामग्री एवं सारणियों का समावेश किया जा सका है। 'ज्योतिष-रहस्य' के इस प्रथम खण्ड में केवल सरल, सामान्य गणित का ही प्रयोग किया गया है, ज्या-चापीय उच्च गणित का नहीं। समस्त पुस्तक में केवल एक जगह ३०० वर्षों की सूर्य-सारणी के उदाहरण में त्रिकोणमिति का एक सूत्र और उसका गणितोदाहरण दिया गया है; किन्तु उसके साथ ही सारणी की सहायता से सामान्य त्रैराशिक गणित से भी सूर्य स्पष्ट करने का वही उदाहरण दिया

गया है। इस प्रकार सर्वसामान्य ज्योतिष-प्रेमियों के लिए यह प्रायः नित्य उपयोग की एक अनिवार्य पुस्तक बन गई है जिसके बिना जन्मकुण्डली, वर्ष कुण्डली, प्रश्नकुण्डली अथवा संहिताविषयक सूर्य-संक्रान्ति आदि कुण्डलियों का कार्य शुद्धता एवं सूक्ष्मतापूर्वक सम्पन्न नहीं हो सकता। जो लोग त्रिस्कन्ध-ज्योतिष (गणित एवं फलित) का उच्चतर अध्ययन करना और इन विषयों में अन्वेषण-अनुसन्धान के नए आयाम प्राप्त करना चाहते हैं, उनके लिए अपेक्षित पाठ्य सामग्री बिल्कुल स्वतंत्र रूप में इस पुस्तक के दूसरे खण्ड में दी गई है। इस प्रथम खण्ड की भांति दूसरा खण्ड भी विगत कई वर्षों से अप्राप्त था और मैं निजी विषम परिस्थितियों के कारण उनका नवीन परशोधित और परिवर्धित संस्करण प्रकाशित कराने में समर्थ नहीं हो पा रहा था। पाठकों की मांग बढ़ती जा रही थी। मुझे शीघ्र अनुकूल परिस्थितियां प्राप्त होने के अतिरिक्त यह भी आशा थी कि अन्य विद्वन्महानुभाव द्वारा एतद्विषयक बृहद् ग्रंथ के प्रकाशन से ज्योतिष की आवश्यकता पूरी हो सकेगी; किन्तु निकट भविष्य में दोनों ही आशाएं पूरी न होते देखकर मैंने प्रतिकूल परिस्थितियों में ही, अपने स्वास्थ्य को खतरे में डालकर, इन दोनों खण्डों के परिवर्धित संस्करणों का सम्पादन-प्रकाशन सम्पन्न किया। किसी शास्त्रीय विषय का सम्यक् बोध, यथार्थ ज्ञान-प्राप्ति स्वयं में बहुत बड़ी उपलब्धि होती है; फिर ज्योतिष तो अपनी लौकिक उपयोगिता के कारण आज देश-विदेश में अत्यधिक लोकप्रिय हो रहा है। 'ज्योतिष रहस्य' के द्वारा मैंने ज्योतिष की लोकप्रियता की अभिवृद्धि का ही प्रयत्न नहीं किया है, प्रत्युत् गणित और फलित दोनों विधाओं में उच्च अध्ययन, अनुशीलन का पथ भी प्रशस्त किया है। आशा है, ज्योतिष-प्रेमी इसे सहर्ष अपनाएंगे तथा इसके विशेष प्रचार-प्रसार में भी सहायक होकर मेरा श्रम सार्थक करेंगे।

—जगजीवनदास गुप्त

विषय-सूची

क्रम सं०		पृष्ठ-संख्या
१	ज्योतिष की जरूरी जानकारी	१
२	सांपातिक काल द्वारा कुण्डली-निर्माण	३
३	ससंधि द्वादशभाव-स्पष्टीकरण	४
४	मुहूर्त-काल-साधन	५
५	देशकाल-सुबोधिनी तालिका	८
६	विदेश काल-सुबोधिनी तालिका	१०
७	अयनांश-सारणी	११
८	निरमण राहु-सारणी	१४
९	बिना सारणी के अयनांश-गणित की श्लोकबद्ध रीति	१६
१०	काशी की निरयण लग्न-सारणी	१७
११	सर्वत्रोपयोगी निरयण दशम-सारणी	१८
१२	सन् १९११ से सन् २००५ ई. तक का सांपातिक काल	१९
१३	षड्वर्ग बल-साधन	२१
१४	त्रिभागीय महादशान्तर्दशा का कोष्ठक	२३
१५	सूक्ष्म, शुद्ध वर्ष-प्रवेश-सारणी	२३
१६	ग्रह-दृष्ट्यादि विवरण-चक्र	२४
१७	ग्रहशील-चक्र	२५
१८	राशिशील-चक्र	२६
१९	सायन सूर्य से क्रांति और बेलान्तर-साधन-कोष्ठक	२७
२०	जन्म चंद्रस्पष्ट से विंशोत्तरी दशा-साधन सारणी	३१
२१	दशा, अन्तर्दशा, प्रत्यन्तर्दशा सारणी	३३
२२	विंशोत्तरी महादशा की प्रत्येक अन्तर्दशा में भुक्त समय-कोष्ठक	३६
२३	छः लग्न सारणियों का विवरण	३७
२४	भूकेंद्रीय अक्षांश-संस्कार	३९
२५	सर्वघात चक्र	३९
२६	उत्तर और मध्यभारत के विभिन्न क्षेत्रों की सवा तेइस अयनांशीय ६ निरयण लग्न सारणियां	४०
२७	चर सारणी	४२
२८	स्पष्ट मध्याह्न, सूर्योदयास्त, दिनमान एवं मिश्रमानादि-साधन	४३
२९	प्रत्येक अंग्रेजी तारीख़ की सूर्य क्रांति और बेलान्तर का कोष्ठक	४८

३० काशी की चर-सारणी ५१
३१ दिल्ली की निरयण लग्नसारणी ५४
३२ बंबई की निरयण लग्नसारणी ५५
३३ पटना की निरयण लग्न सारणी ५६
३४ ३०० वर्षों की सूर्य-सारणी ५७
३५ लाघवांक-कोष्ठक ६०
३६ राशियों का परस्पर शुभाशुभ योग ६३
३७ ग्रह स्पष्टीकरण की सारणियां ६३
३८ विकलांत सूक्ष्म ग्रह स्पष्टीकरण की सारणी ७०
३९ लग्न-परिवर्तन-तालिका ७९
४० होड़ाचक्र सविवरण ८०

ज्योतिष-रहस्य

(प्रथम खण्ड)

❀ ज्योतिष की जरूरी जानकारी ❀

सम्पूर्ण भचक्र विभाजित है ३६० अंशों में =१२ **राशियां** = २७ नक्षत्र ।

१ राशि = ३० अंश = २¼ नक्षत्र = ९ चरण ।

१ नक्षत्र = ४ चरण = १३⅓ अंश = ८०० कला

१ चरण = ३⅓ अंश २०० कला, १ अंश = ६० कला ।

१ कला = ६० विकला, १ विकला = ६० प्रतिविकला

समय-विभाग

६० अनुपल का १ विपल ।

६० विपल का १ पल ।

२½ पल या ६० सेकेण्ड का १ मिनट ।

६० पल = २४ मिनट = १ घटी ।

२½ घटी = १ घण्टा ।

७½ घटी = ३ घण्टे = १ प्रहर ।

८ प्रहर = ६० घटी = २४ घण्टे = दिन-रात या एक अहोरात्र ।

१५ अहोरात्र = १ पक्ष ।

२ पक्ष = १ मास; १२ मास = १ वर्ष ।

नव ग्रह ये हैं—१ रवि, २ **चंद्र** (सोम), ३ मंगल, ४ **बुध**, ५ **गुरु**, ६ **शुक्र**, ७ शनि ८ राहु, ९ केतु । हर्शल, नेपच्यून और प्लूटो इन तीन नये ग्रहों का पता पाश्चात्य ज्योतिषियों ने लगाया है और उनके ज्योतिष में इनका उपयोग भी होता है; पर भारतीय ज्योतिष में नहीं । उपरोक्त ७ ग्रहों के क्रमश: सात 'वार' हैं । 'वार' सूर्योदय से शुरू होकर अगले सूर्योदय पर समाप्त होता है ।

प्रत्येक ग्रह बारह राशियों में भ्रमण करते रहते हैं । प्रथम मेष राशि से गणना आरम्भ होती है । बारह राशियों के नाम ये हैं—१ मेष, २ वृष, ३ मिथुन, ४ कर्क, ५ सिंह ६ कन्या, ७ तुला, ८ वृश्चिक ९ धनु, १० मकर, ११ कुम्भ १२ मीन । बारह राशियों के अन्तर्गत कुल २८ **नक्षत्र हैं** जिनके नाम क्रमानुसार निम्नांकित हैं—

१ **अश्विनी**, २ भरणी, ३ कृत्तिका, ४ **रोहिणी**, **मृगशीर्ष**, ६ आर्द्रा, ७ **पुनर्वसु**, ८ **पुष्य**, ९ आश्लेषा, १० मघा, ११ पूर्वाफाल्गुनी, १२ **उत्तराफाल्गुनी**, १३ **हस्त** १४ चित्रा, १५ **स्वाती**, १६ विशाखा, १७ **अनुराधा**, १८ ज्येष्ठा, १९ मूल, २० पूर्वाषाढ़ा, २१ **उत्तराषाढ़ा** २२ **अभिजित्**, २३ **श्रवण**, २४ **धनिष्ठा**, २५ **शततारका**, २६ पूर्वाभाद्रपदा, २७ **उत्तराभाद्रपदा**, २८ **रेवती** । अभिजित् नक्षत्र का अलग प्रदेश नहीं है; बल्कि यह उत्तराषाढ़ा के चौथे चरण (अन्तिम चौथे भाग) और श्रवण के पहले पन्द्रहवें भाग के अन्तर्गत (करीब १९ घटी का है । अत: मुख्यतया २७ ही नक्षत्र हैं और इन्हीं का उल्लेख पञ्चाङ्ग-प्रकरण में रहता है । प्रत्येक नक्षत्र के चार चरण होते हैं और ९ चरण या २। (सवा दो) नक्षत्र की १ राशि होती है (देखो आगे अवकहडा-चक्र) ।

योग—२७ हैं । उनके नाम क्रमश: इस प्रकार हैं—१ विष्कुम्भ (३) २ प्रीति, ३ **आयुष्मान**, ४ **सौभाग्य** ५**शोभन**, ६ अतिगण्ड, ७ **सुकर्मा** (६), ८ **धृति**, ९**शूल** (५), १० गण्ड (६), ११ **वृद्धि**, १२ **ध्रुव**, १३ व्याघात (९), १४ **हर्षण**, १५वज्र (९), १६**सिद्धि**, १७व्यतीपात (संपूर्ण), १८ **वरीयान**, १९ परिघ (पूर्वार्ध), २० **शिव**; २१ **सिद्धि**, २२ **साध्य**, २३ शुभ, २४ शुक्ल, २५ **ब्रह्म**, २६ **ऐन्द्र**; २७ वैधृति (संपूर्ण) ।

मास—मुख्यतया दो प्रकार का होता है । चांद्रमास तथा सौर मास । सूर्य की एक संक्रान्ति से दूसरी संक्रान्ति तक का समय सौर मास होता है । चांद्रमास कृष्णपक्ष की १ तिथि से शुरू होकर शुक्लपक्षकी १५ तिथि पर समाप्त होता है । मास १२ ये हैं—

१ **चैत्र**, २ वैशाख, ३ ज्येष्ठ, ४ आषाढ़, ५ श्रावण, ६ **भाद्रपद**, ७ **आश्विन** (कुआर), ८ कार्तिक, ९ मार्गशीर्ष (**अगहन**), १० **पौष**, ११ **माघ**, १२ फाल्गुन।

एक चांद्रमास में दो पक्ष होते हैं। पहला कृष्णपक्ष, **दूसरा शुक्लपक्ष। दोनों** पक्षों की १ से १४ **तिथियों के नाम समान हैं; इस प्रकार :—**

१ **प्रतिपदा**, २ **द्वितीया**, ३ **तृतीया**, ४ चतुर्थी (८), ५ **पञ्चमी**, ६ षष्ठी (९), ७ **सप्तमी**, ८ अष्टमी (१४) ९ **नवमी** (२५), १० **दशमी**, ११ **एकादशी**, १२ द्वादशी (१०), १३ त्रयोदशी, १४ चतुर्दशी (५)। शुक्लपक्ष की अन्तिम पन्द्रहवीं तिथि को **पूर्णिमा** तथा कृष्णपक्ष की आखिरी तिथि को अमावस्या कहते हैं जिसकी संख्या **पंचाङ्गों** में ३० लिखने की परिपाटी है।

नोट—प्रतिपदा १ कृष्णपक्ष को एवं त्रयोदशी १३ शुक्लपक्ष की शुभ होती है।

करण—तिथि के आधे भाग को करण कहते हैं अर्थात् एक तिथि में दो करण व्यतीत होते हैं। इनके **नाम ये हैं—**

१ बव, २ बालव, ३ कौलव, ४ **तैतिल**, ५ **गर**, ६ **वणिज**, ७ विष्टि (भद्रा), ८ शकुनि, ९ चतुष्पद, १० नाग ११ किंस्तुघ्न। इनमें विष्टि का ही नाम भद्रा है तथा **प्रथम सात करण चर** कहलाते हैं जिनका आरम्भ शुक्ल प्रतिपदा के उत्तरार्द्ध से होता है तथा कृष्ण चतुर्दशी के **पूर्वार्ध** तक की हर आधी तिथियों में उक्त सात चर करणों का क्रमशः ८ फेरा लग जाता है। आगे कृष्ण १४ के **उत्तरार्द्ध से शुक्ल** प्रतिपदा के पूर्वार्ध तक अन्तिम ४ स्थिर करण क्रमशः भुक्त होते हैं—मास में केवल एक बार। इसीलिए ये स्थिर कहलाते हैं; और भी स्पष्टता के लिए प्रत्येक तिथि के पूर्वार्ध और उत्तरार्ध दोनों भाग के करणों की तालिका नीचे देखिये :—

शुक्लपक्ष की तिथियों के करण			कृष्णपक्ष की तिथियों के करण		
तिथि	पहला भाग	दूसरा भाग	तिथि	पहला भाग	दूसरा भाग
१	किंस्तुघ्न	**बव**	१	बालव	कौलव
२	**बालव**	कौलव	२	**तैतिल**	गर
३	**तैतिल**	**गर**	३	**वणिज**	**विष्टि**
४	**वणिज**	**विष्टि**	४	**बव**	बालव
५	**बव**	बालव	५	कौलव	तैतिल
६	कौलव	तैतिल	६	**गर**	वणिज
७	**गर**	वणिज	७	**विष्टि**	**बव**
८	**विष्टि**	बव	८	**बालव**	कौलव
९	बालव	कौलव	९	तैतिल	गर
१०	तैतिल	गर	१०	वणिज	**विष्टि**
११	वणिज	**विष्टि**	११	बव	बालव
१२	**बव**	बालव	१२	कौलव	तैतिल
१३	कौलव	तैतिल	१३	गर	वणिज
१४	**गर**	वणिज	१४	**विष्टि**	शकुनि
१५	विष्टि	बव	३०	चतुष्पद	नाग

उपरोक्त **वार, तिथि**, नक्षत्र, योग और करण भारतीय ज्योतिष के पाँच अंग हैं। इन पाँचों का निश्चय जिससे किया जाता **है**, उसे ही पञ्चाङ्ग, पञ्जिका, पत्रा या जंत्री कहते हैं। किसी वार के आरम्भ (सूर्योदय-समय) से जितनी घटी पल तक जो तिथि, नक्षत्र, योग और करण वर्तमान रहता है, वह जंत्री में उस वार की तारीख के सामने लिखा होता है. उतने ही घटी पल के बाद अगली तिथि, नक्षत्र, योग, करण आरम्भ हो जाया करता है; तथा आगे पूर्ववत्।

जो तिथि एक **सूर्योदय** के बाद से शुरू होती है और अगले सूर्योदय के पूर्व ही समाप्त हो जाती है, वह क्षयतिथि कहलाती है और जो तिथि दो सूर्योदय-समयों में वर्तमान रहती है, वह वृद्धितिथि कहलाती है। शुभ कार्यों में वृद्धि- और क्षय-तिथियाँ दोनों ही त्याज्य हैं। क्षय-तिथि से पहली तिथि सूर्योदय-काल से जितनी घटी पल तक विद्यमान रहती है और उसके बाद से जितनी घटी पल तक क्षय तिथि भुक्त होती है, वे दोनों घटी पल छोटे अक्षरों में ऊपर नीचे छपे रहते हैं; किन्तु तिथियों के खाने में उदित तिथियों का ही उल्लेख रहता है, क्षयतिथि का नहीं, ताकि पाठक आसानी से समझ जांय कि किस तिथि का क्षय हुआ है। ऐसा ही नक्षत्र, योग और करण के विषय में भी समझना चाहिये। लौकिक व्यवहार में उदित तिथियों की ही गणना की जाती है; अतः किसी पक्ष में एक तिथि का क्षय होने से वह १४ दिनों का पक्ष कहा जाता है। कई वर्षों के बाद कभी दो तिथियों का भी क्षय हो जाता है तो तेरह दिनों के उस पक्ष को "विश्वघस्र पक्ष" कहते हैं तथा उसे देश और व्यापार के लिए अशुभ फलकारी मानते हैं।

वार, तिथि, नक्षत्र, योग और करणों में जो शुभ हैं उनके नाम किंचित् स्थूल अक्षरों में मुद्रित किये गये हैं; शेष अशुभ या मध्यम हैं। योगों में व्यतीपात, वैधृति सम्पूर्ण-तया अशुभ हैं। परिघयोग का पहला आधा हिस्सा घटी पल) अशुभ है। अन्य जिन अशुभ योगों एवं तिथियों के प्रारम्भ की जितनी घटी आवश्यक में त्याज्य हैं, वह संख्या उस योग और तिथि के बगल में कोष्ठ में दे दी गयी है। उक्त पाँच अंगों के विचार से समय-विशेष के शुभत्व को ही पञ्चाङ्गशुद्धि कहते हैं और अशुभत्व को पञ्चाङ्गदूषण; लेकिन प्रत्येक वर्ष में निम्न ३॥ मुहूर्त ऐसे हैं जिनमें पञ्चाङ्ग-शुद्धि की आवश्यकता नहीं पड़ती है।

साढ़े तीन मुहूर्त—१ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, २ वैशाख शुक्ल तृतीया (अक्षय तृतीया), ३ आश्विन शुक्ल दशमी (विजया दशमी), ४ कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा, ये चार स्वयं-सिद्ध मुहूर्त हैं। इनमें कोई भी शुभ कार्य करने के लिए पञ्चाङ्ग-शुद्धि देखने की आवश्यकता नहीं। इन समयों में बालकों को विद्यारम्भ करवा सकते हैं। इनमें प्रथम तीन मुहूर्त पूर्ण बली तथा चौथा अर्ध-बली होने से इनको 'साढ़े तीन मुहूर्त' कहते हैं।

❀ सांपातिक-काल द्वारा कुण्डली निर्माण ❀

स्वसम्पादित 'चिन्ताहरण जंत्री' में प्रतिदिन के स्पष्ट (True) अयनांश के आधार पर दैनिक निरयण मेषादि लग्न-प्रवेश सारणी दी जाती है। यह काशी के भौगोलिक अक्षांश उत्तर २५°–१९' के तुल्य भूकेंद्रीय अक्षांश २५°।१०।३" तथा पूर्व रेखांश ८३°–०' के मान से भारतीय प्रामाणिक समय (इण्डियन स्टैंडर्ड टाइम (I.S.T.) में बनायी जाती है। उत्तर भारतीय अन्य पञ्चांगों की भाँति उक्त दैनिक लग्न सारणी में प्रत्येक लग्न की समाप्ति का समय न देकर प्रत्येक लग्न के आरम्भ होने का समय दिया जाता है। प्रत्येक लग्न के आरम्भ का समय, अपने से पहले के लग्न की समाप्ति का समय भी होता है। दैनिक लग्न-सारणी में हर अंग्रेजी तारीख को लग्नों का उदय (प्रवेश या आरम्भ) मेषादि क्रम से दिया गया है, अन्य पञ्चांगों की भाँति सूर्योदयकालिक लग्नानुक्रम से नहीं; यानी किसी तारीख को मेष लग्न कितने बजे शुरू होगा, यह सर्व प्रथम उस तारीख के सामने दिया गया है; उसके बाद शेष ग्यारह लग्नों के शुरू होने के समय क्रमशः दिये गये हैं। लग्न-सारणी में मेष लग्न के आरम्भ होने का समय घंटा, मिनट, सेकेण्ड में दिया गया है। शेष ११ लग्नों के आरम्भ होने का समय क्रमशः घंटा, मिनट में दिया गया है; सेकेण्ड तक नहीं। जन्त्री का सारा गणित मिनट-पर्यन्त सूक्ष्म रहता है जो सर्व-साधारण के लिये व्यावहारिक दृष्टि से पर्याप्त समझा जाना चाहिए। तब मेष लग्न के आरम्भ होने का समय ही घ. मि. के अलावा सेकेण्ड में भी क्यों दिया जाता है?—स्वभावतः यह प्रश्न पाठकों के मन में उठ सकता है। इसका उत्तर उन्हें इसी ग्रन्थ में प्रकाशित शुभाधिक्य षडवर्ग-काल-बोधक सारणी के उपयोग से मिलेगा, जब वे इसके द्वारा मुहूर्तों के सूक्ष्म नवांश एवं शुभाधिक्य-वर्ग-प्रवेश-काल का साधन करेंगे। किसी समय के लग्न के शुभाशुभत्व विचार के लिये उसकी ग्रह-स्थिति पर ध्यान देना होता है। इसमें सुविधा के खयाल से जंत्री में दैनिक लग्न सारणी को प्रत्येक मास की कुण्डलियों से पहले छापा जाता है। जिन लोगों के लिए सांपातिक-काल से लग्न-साधन मुश्किल होता है, वे भी उस सारणी से सूक्ष्म लग्न ज्यादा परिश्रम और कठिन गणित किये बिना निकाल लेंगे। चालू वर्ष के अलावा आगे-पीछे के अन्य वर्षों के सूक्ष्म लग्न, दशम-साधन के लिये तो सांपातिक काल सम्बन्धी सारणियों का ही उपयोग करना चाहिए, न कि इष्टकालिक सूर्य पर से लग्न, दशम-साधन की पुरानी स्थूल सारणियों का। सांपातिक-काल से लग्न, दशम-साधन की रीति अत्यन्त सरल भी है और उसको भलीभाँति विस्तार से, उदाहरण सहित हमने अपने पाठकों को इसी पुस्तक में समझा दिया है; हमारे पाठक उन पर तनिक ध्यान देकर अभ्यास करेंगे तो फिर सदा के लिये इसी रीति के भक्त हो जायेंगे और पुराने ढर्रे के स्थूल साधनों से उनका पीछा छूट जायगा। सांपातिक-काल की सरल रीति का एक बार अभ्यास हो जाय तो फिर पाठकगण उसके द्वारा मिनटों में एक स्थान की कौन कहे, अनेक स्थानों, बल्कि विदेशों तक की सूक्ष्म, शुद्ध कुण्डलियाँ अनायास बना सकते हैं; इसे और भी अधिक सरलतापूर्वक समझाने के उद्देश्य से यहाँ एक सरल रीति बतायी जाती है:—

(१) जिस क्षण की कुण्डली आपको बनानी है, उस क्षण का 'इष्ट सांपातिक-काल' पहले काशी के लिए आप बनायें।

(२) काशी से जिस स्थल के सांपातिक-कालीन अन्तर को आप काशी के उक्त इष्ट सांपातिक-काल में जोड़ या घटा देंगे, बस उसी स्थल का इष्ट सांपातिक-काल फौरन बन जायगा। इस अन्तर को देशान्तर संस्कार भी कहा जाता है और यह सदैव काशी से पूर्व के स्थानों के लिए प्रति रेखांश ४ मिनट की दर से धन + तथा काशी से पश्चिम के स्थानों के लिए ऋण – करना होता है।

काशी के इष्ट साम्पातिक-काल से अन्य स्थानों के इष्ट साम्पातिक-काल का अन्तर (यानी देशान्तर संस्कार) जोड़ने या घटाने के धन + और ऋण – चिह्न के साथ 'देश-विदेश-काल-सुबोधिनी-तालिका' के [illegible] से अन्तिम खाने में दिये गये हैं।

हम जिस स्थल के लिये कुण्डली बनाना चाहते हैं, जब उस स्थल का इष्ट साम्पातिक-काल बन गया तो उसे उस स्थल के अक्षांश की बनी लग्न-सारणी में हमें देखना होगा; बस तुरन्त लग्न के राशि, अंश ज्ञात हो जायेंगे। देश-काल-सुबोधिनी तालिका में प्रकाशित हर स्थान के अक्षांश, रेखांश उनके बगल के खानों में छपे हैं तथा विभिन्न अक्षांशों की लग्न-सारणियों के संग्रह की पुस्तक आपको अंग्रजी अक्षरों में छपी मिल जायगी। इनके लेखक हैं स्व० श्रीनिर्मलचन्द्र लाहिरी, पुस्तक का मूल्य १४) है और यह हमारी इस पुस्तक के प्रकाशक से प्राप्त हो सकती है। इस पुस्तक में काशी के अक्षांश २५°–१९' पर बनी जो लग्न-सारणी छपी है, वह इस अक्षांश के आस-पास पड़नेवाले अन्य शहरों जैसे गाजीपुर, मिर्जापुर, झाँसी, बाँदा, इलाहाबाद, बूंदी, हैदराबाद, सिंध, कराँची, रियाध(सऊदी अरब), पटना, भागलपुर, फार्बीसगंज आदि के लिए भी काम देगी। दशम-सारणी तो सभी उत्तर-अक्षांशों के स्थानों के लिए ज्यों-की-त्यों काम देती है; अलबत्ता दक्षिण, अक्षांशों के स्थानों के लिये उसमें भी भिन्न क्रिया करनी पड़ती है जो फिर कभी बतलायी जायगी।

उदाहरण—मान लीजिये, आपको भा० स्टैं०. टा. से घं. १० मि. १५ बजे के एक ही समय की लग्न-कुण्डलियाँ तीन विभिन्न स्थानों जैसे पाकिस्तान की राजधानी करांची, सऊदी अरब की राजधानी रियाध और फार्मोसा के लिए बनानी है तो सर्वप्रथम उक्त भा० स्टैं टा. घं. १० मि. १५ बजे के समय को काशी के इष्ट साम्पातिक काल में परिवर्तित करना होगा। आगे इसी पुस्तक में इस स्टै. टा. को काशी के इष्ट साम्पातिक काल में परिवर्तित किया गया है; काशी का उक्त इष्ट साम्पातिक काल घण्टा २१ मि. २७ से. ३५ है। काशी के इस इष्ट साम्पातिक काल को हमें अपने अभीष्ट स्थानों करांची, रियाध और फार्मोसा के साम्पातिक कालों में बदलना है। इसके लिए विदेश-काल सुबोधिनी तालिका में इन शहरों के सामने अन्तिम खाने में देखा तो करांची के सामने – घं. १ मि. ४ से. ० तथा रियाध के सामने घं. २ मि. २६ से. ४८ ऋण चिह्न – के साथ मिला; फार्मोसा के सामने घं. २ मि. ३४ से.८ धन + चिह्न के साथ मिला। अत: काशी के इष्ट सांपातिक काल घं. २१ मि. २७ से. ३५ से करांची के लिए घं. १ मि. ४ से ० घटा दिया तो शेष घण्टा २० मि. २३ से. ३५ करांची का इष्ट सांपातिक काल आ गया। इसी प्रकार काशी के इष्ट साम्पातिक काल घं २१ मि. २७ से. ३५ में फार्मोसा के लिये संस्कार घं. २ मि. ३४ से. ८ जोड़ दिया तो घं. २४ यानी घं ० मि १ से. ४३ फार्मोसा का इष्ट सांपातिक काल बन गया। उसी काशी के इष्ट सांपातिक काल में रियाध के इष्ट साम्पातिक काल का संस्कार घं. २ मि. २६ से. ४८ ऋण – चिह्न के अनुसार घटा दिया तो शेष घं. १९ मि. ० से. ४७ रियाध का इष्ट साम्पातिक काल ज्ञात हो गया।

अब उक्त शहरों के अक्षांश पर बनी लग्न-सारणी में उनके इष्ट साम्पातिक कालों को देखना है। उन तीनों शहरों के अक्षांश तालिका के दूसरे खाने में दिये गये हैं। उन्हें देखने से स्पष्ट प्रकट है कि वे काशी के अक्षांश के लगभग तुल्य ही हैं जिससे काशी की लग्न-सारणी स्वल्पान्तर से उन शहरों के लिए भी काम देगी। अतएव तीनों शहरों के उपर्युक्त इष्ट साम्पातिक कालों को 'ज्योतिष-रहस्य' में छपी काशी की लग्न-सारणी में देखा तो करांची का लग्न मेष का २३, फार्मोसा का लग्न मिथुन का १८° तथा रियाध का लग्न मीन का २८° तुरन्त मालूम हो गया। सर्वत्रोपयोगी दशम-सारणी में उक्त शहरों के इष्ट साम्पातिक कालों को देखा तो करांची का दशम मकर का ११°, फार्मोसा का दशम मीन का ८° तथा रियाध का दशम धनु का २१° ज्ञात हो गया। देखिये, कितनी सरलता से मिनटों में तीन विदेशी स्थानों की लग्न-कुण्डलियाँ बन गयीं। इसी प्रकार किसी भी समय के लिये तथा देश-विदेश-काल-सुबोधिनी-तालिका में दिये गये किसी भी स्थल के लिये आप मिनटों में सूक्ष्म लग्न, दशम स्पष्ट सहित कुण्डलियाँ सरलतापूर्वक बना लेंगे। विदेशों के लिएँ 'विदेश काल-सुबोधिनी-तालिका' में उनके शहरों के विभिन्न प्रकार के समय-ज्ञान का विवरण भी दे दिया गया है। उन समयों का उल्लेख उनके खानों के सिरे पर संक्षिप्त रूप में है। अत: पाठकों की जानकारी के लिए वे शीर्षक पूर्ण रूप में नीचे दिये जाते हैं। विदेश-काल-सुबोधिनी तालिका के पाँचवें खाने का पूरा शीर्षक "क्षेत्रीय (जोनल) स्टैंडर्ड टाइम से स्थानीय समय का अन्तर" है। छठे खाने का शीर्षक—"ग्रीनीच मध्यम समय (G.M.T.) से क्षेत्रीय स्टैंडर्ड समय का अन्तर" है। सातवें खाने का शीर्षक "भारतीय स्टैं टा. से क्षेत्रीय स्टैंडर्ड समय का अन्तर" है। आठवें खाने का शीर्षक "काशी के ० बजे के साम्पातिक काल से स्थानीय ० बजे के साम्पातिक काल के लिए संस्कार" है। नवें खाने का पूरा शीर्षक "काशी के इष्ट साम्पातिक काल के लिए संस्कार" है।

उपर्युक्त समय-भेद के पूर्ण परिचय तथा उपयोगिता पर 'काल-परिमाण और परिणमन' शीर्षक लेख इस ग्रन्थ के द्वितीय खण्ड में प्रकाशित किया गया है।

ससंधि द्वादश भाव-स्पष्टीकरण :—

लग्नस्पष्ट ऋण – दशम स्पष्ट = शेष ÷ ६ = प्रथम षष्ठ्यंश;

१ राशि (= ३०अंश) ऋण – प्रथमषष्ठ्यंश = द्वितीय षष्ठ्यंश

स्पष्ट लग्न + द्वितीय षष्ठ्यंश = (i) संधि
(i) संधि + ,, = धन भाव-मध्य
धनभाव-मध्य + ,, = (ii) संधि
(ii) संधि + ,, = सहज भाव-मध्य
सहजभाव-मध्य + ,, = (iii) संधि
(iii) संधि + ,, = सुख भाव-मध्य

सुखभाव-मध्य + प्रथम षष्ठ्यंश = (iv) संधि
(iv) संधि + ,, = सुत भाव-मध्य
सुतभाव-मध्य + ,, = (v) संधि
(v) संधि + ,, = रिपु भाव-मध्य
रिपु भाव-मध्य + ,, = (vi) संधि
(vi) संधि + ,, = जाया भाव-मध्य

लग्न से षष्ठ भाव तक के प्रत्येक भाव और संधि में ६ राशि जोड़ने से अग्रिम सप्तम भाव से द्वादश भाव पर्यन्त यावत् भाव और उनकी संधि स्पष्ट हो जायेगी। श्रीपति, केशव और नीलकण्ठ आदि की यही भाव-साधन-पद्धति है। प्राचीन आर्षमत से तो लग्नस्पष्ट में १५-१५ अंश जोड़ते जाने से क्रमश: संधि सहित द्वादश भाव स्पष्ट हो जाते हैं

मुहूर्त-काल-साधन—मुहूर्त-निर्णय में पञ्चाङ्ग-शुद्धि से दिन-शुद्धि का निश्चय कर लेने पर उस रोज अभीष्ट कार्यारम्भ के सद्यः फलप्रद समय-साधन के लिए लग्न-शोधन करना पड़ता है। इसी ग्रंथ में आगे बतलाया गया है कि लग्न के होरादि ६ वर्ग होते हैं। उनमें से आधे यानी ३ से अधिक शुभ(ग्रह के)वर्ग हों तो लग्न शुभाधिक्य वर्ग-बलयुक्त होकर सर्वथैव शुभफलदायक होता है, अन्यथा नहीं ; किन्तु लग्न के होरादि षड्वर्गों में नवांश सर्व-प्रमुख है। अतः नवांश सहित ४ से ६ वर्ग शुभ हों तो मुहूर्त का वह सर्वोत्तम काल होता है और यदि मुहूर्त के लग्न का नवांश ही अशुभ या अनुपयुक्त हो तो शेष पाँचों वर्ग के शुभ होने पर भी वह मुहूर्त-काल ग्राह्य नहीं होता। इसी कारण से "सूक्ष्म नवांश एवं शुभाधिक्य वर्ग-काल-बोधक सारणी" में अशुभ नवांशों के शुभाधिक्य वर्ग-काल का उल्लेख नहीं किया गया है। षड्वर्गे विशेष फलदत्वात् अनेक दोष संयुक्तं लग्न कोटिगुणान्वितम्। इति।

अभीष्ट लग्न के सूक्ष्म नवांश और शुभाधिक्य वर्गों के शुद्ध कालानयन की रीति काशी तो क्या उत्तर भारत के किसी भी प्राचीन, नवीन, स्थूल या सूक्ष्म गणित के संस्कृत, हिन्दी पञ्चाङ्ग में नहीं रहता है ; फलतः प्रायः सभी ज्योतिषीगण लग्न-भोग का ९ समान भाग कर नवांश-प्रवेश और समाप्ति-काल-साधन करते हैं जो ठीक नहीं ; क्योंकि वस्तुतः सर्व नवांशों का भोग-काल एक बराबर नहीं होता ; अस्तु। इसी शोचनीय अभाव की पूर्ति के लिए हम इस ग्रन्थ में यह अपूर्व सारणी प्रकाशित कर रहे हैं। यह इतनी स्पष्ट और सरल है कि ज्योतिषी-वर्ग तथा सर्व-साधारण दोनों के लिए समान रूप से उपयोगी सिद्ध होगी।

सारणी की प्रयोग-विधि—सारणी दो पृष्ठों में है। पहले पृष्ठ में मेष-लग्न से कन्या-लग्न तक के ६ कोष्ठक हैं तथा दूसरे में तुला लग्न से मीन-लग्न तक के छः, इस प्रकार कुल १२ कोष्ठक १२ लग्नों के हैं। प्रत्येक लग्न-कोष्ठक में ६ स्तम्भ (खाने) हैं। किसी लग्न के आरम्भ होने का समय घं.मि.से. में लाने के लिए उस लग्न से गत लग्न तक का मान अभीष्ट दिन के मेष-लग्नारम्भ के घं. मि. से. में जोड़ना होता है जिसके लिए प्रत्येक लग्न-कोष्ठक के सबसे प्रथम खाने में उससे गत लग्न तक का मान दिया गया है। दूसरे खाने में प्रत्येक लग्न के अन्दर आनेवाले नवांशों के नाम क्रमशः दिये गये हैं। तीसरे खाने में नवांश आरम्भ-काल लाने के लिये उसके लग्नारम्भ के समय में जोड़ने का 'समय-संस्कार' दिया गया है। चौथे में हर नवांश का भोग-काल दिया गया है जिसे नवांश-आरम्भ-काल में जोड़ देने से स्वभावतः उसकी समाप्ति का समय ज्ञात हो जाता है। पाँचवें खाने में शुभ नवांश में शुभाधिक्य वर्ग के शुरू होने का समय जानने के लिए नवमांशारम्भ के समय में जोड़ने का समय-संस्कार दिया गया है। छठे यानी अन्तिम खाने में शुभाधिक्य वर्गों के भोग का समय दिया गया है जिसे शुभाधिक्य वर्ग शुरू होने के समय में जोड़ देने से उसकी समाप्ति का समय ज्ञात हो जाता है। उपर्युक्त विवरण में पाठकों ने देखा कि सभी 'समय-संस्कार' जोड़ने के हैं ; कोई भी कहीं घटाने का नहीं है। आगे एक उदाहरण से इस सारणी का पूरा उपयोग समझ में आ जायगा। उदाहरण—मान लीजिये, आपको १ जनवरी १९५८ ई० को वृष लग्न में मिथुन नवांश और उसके शुभाधिक्य वर्ग-बलयुक्त समय मालूम करना है तो उपर्युक्त तरीके से सबसे पहले उस दिन(१ जनवरी '५८) को मेष-लग्न प्रारम्भ होने का समय घ. मि. से. तक जन्त्री की दैनिक लग्नसारणी से लिख लीजिये। मान लीजिए, यह समय घं. १२ मि. २५ से. १३ उसमें छपा मिला। तब इस ग्रन्थ के पृष्ठ ६ की सूक्ष्म नवांश एवं शुभ षड्वर्ग-काल-बोधक सारणी में अभीष्ट वृष लग्न का कोष्ठक देखें। उसके प्रथम खाने से गत लग्न तक का मान घं. १ मि. ३७ से. ५३ लेकर उक्त मेषारम्भ के समय घं. १२ मि. २५ से. १३ में जोड़ दीजिये तो वृष लग्न के आरम्भ होने का समय(सेकेण्ड तक) घं. १४ मि. ३ से. ६ आगया। अब वृष लग्न में मिथुन नवांश के आरम्भ, भोग और समाप्ति के समय जानने के लिए वृषभ लग्न-कोष्ठक के तीसरे खाने में मिथुन नवांश के सामने अन्य खानों को देखिये तो उनमें क्रमशः घं. १ मि. २ से. १३, मि. १३, से. १३, मि. १ से.५३ तथा मि. ११ से. २० मिलेंगे। पूर्व कथित नियमानुसार घं. १ मि. २ से. १३ को वृषभ लग्न के आरम्भकाल घं. १४ मि. ३ से. ६ में जोड़ दिया तो घं. १५ मि. ५ से. १९ वृषभ लग्न में मिथुन नवांश शुरू होने का समय ज्ञात हुआ, जिसका भोगकाल मि. १३ से. १३ है। इस भोग-काल को मिथुन नवांश के शुरू होने के समय में जोड़ दिया तो मिथुन नवांश की समाप्ति का समय घं. १५ मि. १८ से ३२ आ गया। अब मि. १ से. ५३ को मिथुन नवांश के शुरू होने के समय घं. १५ मि. ५ से. १९ में जोड़ा तो घं. १५ मि. ७ से. १२ मिथुन नवांश में शुभाधिक्य वर्ग-प्रवेश का समय मालूम हुआ। इसमें शुभाधिक्य वर्ग का भोग-काल मि. ११ से. २० जोड़ दिया तो शुभाधिक्य वर्ग की समाप्ति का सयम घं. १५ मि. १८ से. ३२ ज्ञात हो गया। यही समय मिथुन-नवांश की समाप्ति का भी पहले आ चुका है। इससे प्रकट है कि वृष लग्न का मिथुन नवांश घं. १५ मि ७ से १२ बजे के बाद से अपनी समाप्ति समय(यानी घं. १५ मि. १८ से. ३२)तक शुभाधिक्य वर्ग-बलयुक्त रहेगा। ऐसी ही रीति सम्पूर्ण सारणी के लिए समझें। पाठकगण देखें कि सम्पूर्ण सारणी में केवल तीन नवांश ऐसे हैं, जिनमें शुभाधिक्य वर्ग आरम्भ होकर अपने नवांश के अन्त तक वर्तमान नहीं रहते ; बल्कि बीच में ही भंग हो जाते हैं और कुछ समय के अनन्तर पुनः आरम्भ होकर नवांशान्त तक रहते हैं। ये हैं क्रमशः १ मिथुन लग्न का वृष नवांश, २ सिंह लग्न का तुला नवांश तथा ३. मकर लग्न का मीन नवांश। अन्य जिस भी नवांश में शुभाधिक्य वर्ग का प्रवेश एक बार होता है तो वह नवांश के अन्त तक चालू रहता है। जिस शुभ नवांश में शुभाधिक्य वर्ग-प्रवेश नहीं होता उसके सामने शुभाधिक्य वर्ग-प्रवेश-काल का खाना बिल्कुल खाली है। सारणी में शुभाधिक्य यानी ४, ५, ६ वर्गों के अलग-अलग समय नहीं दिये हैं, क्योंकि वे अल्पकालिक होने से व्यावहारिक दृष्टि से उपयोगी नहीं होते ; बल्कि सारणी सर्व-साधारण के लिये खामख्वाह जटिल एवं दुर्बोध हो जाती ; इस वास्ते नवांश सहित ४ से ६ शुभवर्गों तक के सम्मिलित समय सारणी में दिये गये हैं जिससे सूक्ष्मतापूर्वक मुहूर्त के सर्वोत्तम काल-साधन में यह सर्वोपयोगी बन गयी है।

१. मेष लग्न ♈

गत लग्न तक का मान	नवमांश	नवमांशारम्भ के लिए मेषारम्भ में योग-काल	नवमांश भोग-काल	शुभाधिक्य वर्ग-प्रवेश के लिए नवमांशारंभ में योग काल	शुभाधिक्य वर्ग भोग-काल
		घं· मि· से·	मि· से·	मि· से·	मि· से·
घं. मि. से. ०-०-०	मे·	०- ०- ०	१०-१२		
	वृ·	०-१०-१२	१०-२०		
	मि·	०-२०-३२	१०-२९		
	क·	०-३१- १	१०-३८	७-५९	२-२९
	सिं·	०-४१-३९	१०-५०		
	कं·	०-५२-२९	११- १	०- ०	२-४५
	तु·	१· ३-३०	११-१४	०- ०	११-१४
	वृ·	१-१४-४४	११-२७		
	ध·	१-२६-११	११-४२	०- ०	११-४२

२. वृषभ लग्न ♉

गत लग्न तक का मान	नवमांश	नवमांशारम्भ के लिए वृषभारम्भ में योग-काल	नवमांश भोग-काल	शुभाधिक्य वर्ग-प्रवेश के लिए नवमांशारंभ में योग काल	शुभाधिक्य वर्ग भोग-काल
		घं· मि· से·	मि· से·	मि· से·	मि· से·
घं. मि. से. १-३७-५३	म·	०- ०- ०	११-५५		
	कुं·	०-११-५५	१२-११		
	मी·	०-२४- ६	१२-२७	०- ०	१२-२७
	मे·	०-३६-३३	१२-४२		
	वृ·	०-४९-१५	१२-५८	०- ०	६-२९
	मि·	१- २-१३	१३·१३	१-५३	११-२०
	क·	१-१५-२६	१३-२९		
	सिं·	१-२८-५५	१३-४९		
	कं·	१-४२-४४	१३-५१		

३. मिथुन लग्न ♊

गत लग्न तक का मान	नवमांश	नवमांशारम्भ के लिए मिथुनारम्भ में योग-काल	नवमांश भोग-काल	शुभाधिक्य वर्ग-प्रवेश के लिए नवमांशारंभ में योग काल	शुभाधिक्य वर्ग भोग-काल
		घं· मि· से·	मि· से·	मि· से·	मि· से·
घं. मि. से. ३-३४-२८	तु·	०- ०- ०	१४-११	०- ०	१४-११
	वृ·	०-१४·११	१४-२४		
	ध·	०-२८-३५	१४-३५	३-३९	४-४१
	म·	०-४३-१०	१४-४५		
	कुं·	०-५७-५५	१४-५५		
	मी·	१-१२-५०	१५- २	०- ०	१५- २
	मे·	१-२७-५२	१५- ८		
	वृ·	१-४३- ०	१५-१३	०- ० १०-५२	७-३१ ४-२१
	मि·	१-५८-१३	१५-१७	०- ०	१५-१७

४. कर्क लग्न ♋

गत लग्न तक का मान	नवमांश	नवमांशारम्भ के लिए कर्करारम्भ में योगकाल	नवमांश भोग-काल	शुभाधिक्य वर्ग-प्रवेश के लिए नवमांशारंभ में योग काल	शुभाधिक्य वर्ग भोग-काल
		घं· मि· से·	मि· से·	मि· से·	मि· से·
घं. मि. से. ५-४७-४८	क·	०- ०- ०	१५-२०	०- ०	१५-२०
	सिं·	०-१५-२०	१५·२१		
	कं·	०-३०-४१	१५-२२	०- ०	१५-२२
	तु·	०-४६- ३	१५·२१	०- ०	१५-२१
	वृ·	१- १-२४	१५-२०		
	ध·	१-१६-४४	१५-१८		
	म·	१-३२- २	१५-१६		
	कुं·	१-४७-१८	१५-१३		
	मी·	२- २·३१	१५- ९	०- ०	१५- ९

५. सिंह लग्न ♌

गत लग्न तक का मान	नवमांश	नवमांशारम्भ के लिए सिंहारम्भ में योग-काल	नवमांश भोग-काल	शुभाधिक्य वर्ग-प्रवेश के लिए नवमांशारंभ में योग काल	शुभाधिक्य वर्ग भोग-काल
		घं· मि· से·	मि· से·	मि· से·	मि· से·
घं. मि. से. ८- ४-३८	मे·	०· ०- ०	१५- ५		
	वृ·	०-१५- ५	१५- २		
	मि·	०-३०- ७	१४-५९		
	क·	०-४५- ६	१४-५४	०- ०	१२-४६
	सिं·	१- ०- ०	१४-५१		
	कं·	१-१४-५१	१४-४९	०- ०	१४-४९
	तु·	१-२९-४०	१४-४७	०- ० ११- ५	१-२० ३-४२
	वृ·	१-४४-२७	१४-४५		
	ध·	१-५९-१२	१४-४३	०- ०	१४-४३

६. कन्या लग्न ♍

गत लग्न तक का मान	नवमांश	नवमांशारम्भ के लिए कन्यारंभ में योग-काल	नवमांश भोग-काल	शुभाधिक्य वर्ग-प्रवेश के लिए नवमांशारंभ में योग काल	शुभाधिक्य वर्ग भोग-काल
		घं· मि· से·	मि· से·	मि· से·	मि· से·
घं. मि. से. १०-१९-३३	म·	०- ०- ०	१४-४२		
	कुं·	०-१४-४२	१४-४२		
	मी·	०-२९-२४	१ ·४१	०- ०	१४-४१
	मे·	०-४४- ५	१४-४३		
	वृ·	०-५८-४८	१४-४३	०- ०	१४-४३
	मि·	१-१३-३१	१४-४३	०- ०	३-४१
	क·	१- २-१४	१४-४६	०- ०	६-२०
	सिं·	१-४३- ०	१४-४८		
	कं·	१-५७-४८	१४-५१	०- ०	३-४३

७. तुला लग्न ♎

गत लग्न तक का मान	नवमांश	नवमांशारम्भ के लिए तुलारम्भ में योग-काल	नवमांश भोग-काल	शुभाधिक्य वर्ग-प्रवेश के लिए नवमांशारंभ में योग काल	शुभाधिक्य वर्ग भोग-काल
		घं· मि· से·	मि· से·	मि· से·	मि· से·
घं· मि· से· १२-३२-१२	तु·	०- ०- ०	१४-५६	०- ०	११-१२
	वृ·	०-१४-५६	१४-५८		
	ध·	०-२९-५४	१५- २		
	म·	०-४४-५६	१५- ६		
	कुं·	१- ०- २	१५- ८		
	मी·	१-१५-१०	१५-१३	३-४८	११-२५
	मे.	१-३०-२३	१५-१५		
	वृ·	१-४५-३८	१५-१७	०- ०	१५-१७
	मि·	२- ०-५५	१५-२०	०- ०	१५-२०

८. वृश्चिक लग्न ♏

गत लग्न तक का मान	नवमांश	नवमांशारम्भ के लिए वृश्चिकारम्भमें योग-काल	नवमांश भोग-काल	शुभाधिक्य वर्ग-प्रवेश के लिए नवमांशारंभ में योग काल	शुभाधिक्य वर्ग भोग-काल
		घं· मि· से·	मि· से·	मि· से·	मि· से·
घं· मि· से· १४-४८-२७	क·	०- ०- ०	१५-२१	०- ०	१५-२१
	सिं·	०-१५-२१	१५-२१		
	कं·	०-३०-४२	१५-२२	०- ०	१५-२२
	तु·	०-४६- ४	१५-२०	०- ०	१५-२०
	वृ·	१- १-२४	१५-१८		
	ध·	१-१६-४२	१५-१३	०- ०	१५-१३
	म·	१-३१-५५	१५-१०		
	कुं·	१-४७- ५	१४-५६		
	मी·	२- २- १	१५- २		

९. धनु लग्न ♐

गत लग्न तक का मान	नवमांश	नवमांशारम्भ के लिए धनु आरंभ में योग-काल	नवमांश भोग-काल	शुभाधिक्य वर्ग-प्रवेश के लिए नवमांशारंभ में योग काल	शुभाधिक्य वर्ग भोगकाल
		घं· मि· से·	मि· से·	मि· से·	मि· से·
घं· मि· से· १७-५-३०	मे·	०- ०- ०	१४-४५		
	वृ·	०-१४-४५	१४-३५		
	मि·	०-२९-२०	१४-२३		
	क·	०-४३-४३	१४-१२	१२-१०	२- २
	सिं·	० ५७-५५	१३-५८		
	कं·	१-११-५३	१३-४४	०- ०	१३-४४
	तु·	१-२५-३७	१३-३०	५-४७	७-४३
	वृ·	१-३९- ७	१३-१४		
	ध·	१-५२-२१	१२-५८	०- ०	१२-५८

१०. मकर लग्न ♑

गत लग्न तक का मान	नवमांश	नवमांशारम्भ के लिए मकरकारम्भ में योग-काल	नवमांश भोग-काल	शुभाधिक्य वर्ग-प्रवेश के लिए नवमांशारंभ में योग काल	शुभाधिक्य वर्ग भोग-काल
		घं· मि· से·	मि· से·	मि· से·	मि· से·
घं· मि· से· १९-१०-४९	म·	०- ०- ०	१२-४३		
	कुं·	०-१२-४३	१२-२८		
	मी·	०-२५-११	१२-११	०-० ६-५८	३-३ ५-१३
	मे.	०-३७-२२	११-५७		
	वृ·	०-४९-१९	११-४२	०- ०	११-४२
	मि·	१- १- १	११-२८	०- ०	२-५२
	क·	१-१२-२९	११-१४	४-४९	६-२५
	सिं·	१-२३-४३	११- २		
	कं·	१-३४-४५	१०-५२		

११. कुंभ लग्न ♒

गत लग्न तक का मान	नवमांश	नवमांशारम्भ के लिए कुम्भारंभ में योग-काल	नवमांश भोग-काल	शुभाधिक्य वर्ग-प्रवेश के लिए नवमांशारंभ में योग काल	शुभाधिक्य वर्ग भोग-काल
		घं· मि· से·	मि· से·	मि· से·	मि· से·
घं· मि· से· २०-४३-२७	तु·	०- ०- ०	१०-३८		
	वृ·	०-१०-३८	१०-२९		
	ध·	०-२१- ७	१०-२०		
	म·	०-३१-२७	१०-१२		
	कुं·	०-४१-३९	१०- ४		
	मी·	०-५१-४३	९-५९	०- ०	९-५९
	मे.	१- १-४२	९-५४		
	वृ·	१-११-३६	९-४९	०- ०	९-४९
	मि·	१-२१-२५	९-४७	०- ०	९-४७

१२. मीन लग्न ♓

गत लग्न तक का मान	नवमांश	नवमांशारम्भ के लिए मीनारंभ में योग-काल	नवमांश भोग-काल	शुभाधिक्य वर्ग-प्रवेश के लिए नवमांशारंभमें योग काल	शुभाधिक्य वर्ग भोग-काल
		घं· मि· से·	मि· से·	मि· से·	मि· से·
घं· मि· से· २२-२७-३८	क·	०- ०- ०	९-४४	०- ०	९-४४
	सिं·	०- ९-४४	९-४३		
	कं.	०-१९-२७	९-४४	०- ०	९-४४
	तु·	०-२९-११	९-४४	०- ०	९-४४
	वृ·	०-३८-५५	९-४५		
	ध·	०-४८-४०	९-५०	०- ०	९-५०
	म·	०-५८-३०	९-५३		
	कुं·	१- ८-२३	९-५८		
	मी·	१-१८-२१	१०- ४		

❀ देश-काल सुबोधिनी तालिका ❀

नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश ° '	पूर्व रेखांश ° '	स्टैं. समयसे स्थानीय समय का अन्तर मि. से.	स्थानी. ०बजेके लिएसां. संस्कार से.	काशी इष्ट सां. काल से स्थानी. इष्ट सां. कालका संर. मि. से.
१. अगरतला	त्रिपुरा	२३-५२	९१-१६	+३५- ४	- ५	+३३- ४
२. अजमेर	राजस्थान	२६-२७	७४-४०	-३१-२०	+ ५	-३३-२०
३. अमृतसर	पंजाब	३१-३७	७४-५३	-३०-२८	+ ५	-३२-२८
४. अयोध्या	उत्तर प्रदेश	२६-४८	८२-१४	- १- ४	+ १	- ३- ४
५. अलवर	राजस्थान	२७-३४	७६-३८	-२३-२८	+ ४	-२५-२८
६. अलमोड़ा	उत्तर प्रदेश	२९-३७	७९-४०	-११-२०	+ २	-१३-२०
७. अलीगढ़	उत्तर प्रदेश	२७-५४	७८- ५	-१७-४०	+ ३	-१९-४०
८. अहमदाबाद	गुजरात	२३- २	७२-३७	-३९-३२	+ ७	-४१-३२
९. आगरा	उत्तर प्रदेश	२७-१०	७८- २	-१७-५२	+ ३	-१९-५२
१०. आजमगढ़	उत्तर प्रदेश	२६- ५	८३-१२	+ २-४८	- ०	+ ०-४८
११. आरा	बिहार	२५-३६	८४-४२	+ ८-४८	- १	+ ६-४८
१२. इटावा	उत्तर प्रदेश	२६-४७	७९- २	-१३-५२	+ ३	-१५-५२
१३. इन्दौर	मध्य प्रदेश	२२-४३	७५-५३	-२६-२८	+ ५	-२८-२८
१४. इम्फाल	मणिपुर	२४-५४	९३-५४	+४५-३६	- ७	+४३-३६
१५. उज्जयिनी	मध्य प्रदेश	२३-११	७५-४३	-२७- ८	+ ५	-२९- ८
१६. उदयपुर	राजस्थान	२४-३५	७३-४२	-३५-१२	+ ६	-३७-१२
१७. उन्नाव	उत्तर प्रदेश	२६-२६	८०-३०	- ८- ०	+ २	-१०- ०
१८. एलाहाबाद	उत्तर प्रदेश	२६-२६	८१-५०	- २-४०	+ १	- ४-४०
१९. कटक भुवनेश्वर	उडीसा	२०-२९	८५-५२	+१३-३६	- २	+११-३६
२०. कटनी	मध्य प्रदेश	२३-५०	८०-२३	- ८-२८	+ २	-१०-२८
२१. कलकत्ता(हाबड़ा)	प. बंगाल	२२-३५	८८-२१	+२३-२४	- ४	+२१-२४
२२. काठमाण्डू	नेपाल	२७-४२	८५-१७	+११- ८	- १	+ ९- ८
२३. कालीकट	केरल	११-१५	७५-४५	-२७- ०	+ ५	-२९- ०
२४. कानपुर	उत्तर प्रदेश	२६-२६	८०-२१	- ८-३६	+ २	-१०-३६
२५. कुर्ग मरकारा	मैसूर	१२-२५	७५-४३	-२७- ८	+ ५	-२९- ८
२६. कुर्नूल	आंध्र	१५-५०	७८- ३	-१७-४८	+ ३	-१९-४८
२७. कुरुक्षेत्र	पंजाब	३०- ०	७६-४८	-२२-४८	+ ४	-२४-४८
२८. कोयम्बटूर	मद्रास	११- ०	७६-५८	-२२- ८	+ ४	-२४- ८
२९. कोलम्बो	सीलोन	६-५६	७९-५१	-१०-३६	+ २	-१२-३६
३०. कोलार(स्वर्णखान)	मैसूर	१२-५४	७८-१८	-१६-४८	+ ३	-१८-४८

❀ देश-काल सुबोधिनी तालिका ❀

नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश ° '	पूर्व रेखांश ° '	स्टैं. समयसे स्थानीय समय का अन्तर मि. से.	स्थानी. ०बजेके लिएसां संस्कार से	काशी इष्ट सां.का. से स्था. इष्ट सां.का.का संर.मि.से.
३१. गया	बिहार	२४-४८	८५- १	+१०- ४	- १	+ ८- ४
३२. गंगटोक	सिक्किम	२७-२०	८८-३५	+२४-२०	- ४	+२२-२०
३३. ग्वालियर	मध्य प्रदेश	२६-१४	७८-१०	-१७-२०	+ ३	-१९-२०
३४. गाजीपुर	उत्तर प्रदेश	२५-३६	८३-३५	+ ४-२०	- ०	+ २-२०
३५. गोरखपुर	उत्तर प्रदेश	२६-४७	८३-२४	+ ३-३६	- ०	+ १-३६
३६. गोवा	गोवा	१५-२५	७३-४७	-३४-५२	+ ६	-३६-५२
३७. गोंदिया	मध्य प्रदेश	२१-२८	८०-१२	- ९-१२	+ २	-११-१२
३८. चण्डीगढ़	पंजाब	३०-४०	७६-५२	-२२-३२	+ ४	-२४-३२
३९. चंदौसी	उत्तर प्रदेश	२८-२७	७८-४९	-१४-४४	+ ३	-१६-४४
४०. छपरा	बिहार	२५-४७	८४-४७	+ ९- ८	- १	+ ७- ८
४१. जबलपुर	मध्य प्रदेश	२३-१०	७९-५८	-१०- ८	+ २	-१२- ८
४२. जम्मू	कश्मीर	३२-४४	७४-५४	-३०-२४	+ ५	-३२-२४
४३. जमशेदपुर	उड़ीसा	२२-४६	८६-१२	+१४-४८	- २	+१२-४८
४४. जयपुर	राजस्थान	२६-५५	७५-५०	-२६-४०	+ ५	-२८-४०
४५. जामनगर	सौराष्ट्र	२२-२७	७०- ५	-४९-४०	+ ८	-५१-४०
४६. जालंधर	पंजाब	३१-१९	७५-३५	-२७-४०	+ ५	-२९-४०
४७. जोधपुर	राजस्थान	२६-१८	७३- २	-३७-५२	+ ७	-३९-५२
४८. झांसी	उत्तर प्रदेश	२५-२७	७८-३३	-१५-४८	+ ६	-१७-४८
४९. तिरुची	मद्रास	१०-५०	७८-४२	-१५-१२	+ ३	-१७-१२
५०. त्रिवेन्द्रम	केरल	८-३०	७६-५७	-२२-१२	+ ४	-२४-१२
५१. दरभंगा	बिहार	२६-१०	८५-५५	+१३-४०	- २	+११-४०
५२. दिल्ली (नई)	भारतदिल्ली	२८-३८	७७-१४	-२१- ४	+ ४	-२३- ४
५३. द्रुग (दुर्ग)	मध्य प्रदेश	२१-११	८१-२१	- ४-३६	+ १	- ६ -३६
५४. द्वारका	गुजरात	२२-१६	६८-५७	-५४-१२	+ ९	-५६-१२
५५. धार	मध्य प्रदेश	२२-३६	७५-१८	-२८-४८	+ ५	-३०-४८
५६. नागपुर	महाराष्ट्र	२१- ९	७९- ६	-१३-३६	+ ३	-१५-३६
५७. नीमच	मध्य प्रदेश	२४-२७	७४-५२	-३०-३२	+ ५	-३२-३२
५८. पटना	बिहार	२५-३७	८५-१०	+१०-४०	- १	+ ८-४०
५९. पटियाला	पंजाब	३०-२२	७६-२५	-२४-२०	+ ४	-२६-२०
६०. प्रतापगढ़	उत्तर प्रदेश	२५-५३	८१-५८	- २- ८	+ १	- ४- ८

❀ देश काल-सुबोधिनी तालिका ❀

नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश (अंश कला)	पूर्व रेखांश (अंश कला)	स्टै. समयसे स्थानीय समय का अन्तर (मि. से.)	स्थानी. ०बजेके लिए सां. संस्कार (से.)	काशी इष्ट सां काल से स्थानी. इष्ट सां. कालका (सं. मि. से)
६१. प्रयाग	उत्तर प्रदेश	२५–२५	८१–५३	– २–२८	+१	– ४–२८
६२. पीलीभीत	उत्तर प्रदेश	२८–४२	७९–४८	–१०–४८	+२	–१२–४८
६३. पुनाका	भूटान	२७–३५	८९–५०	+२९–२०	–५	+२७–२०
६४. पुना	महाराष्ट्र	१८–३०	७३–५२	–३४–३२	+६	–३६–३२
६५. पोर्ट ब्लेअर	अंदमान नि.	११–५०	९२–४६	+३९– ४	–६	+३७– ४
६६. फतेहपुर	उत्तर प्रदेश	२५–५५	८०–५२	– ६–३२	+१	– ८–३२
६७. फर्रुखाबाद	उत्तर प्रदेश	२७– ३	७९–३७	–११–३२	+२	–१३–३२
६८. बक्सर	बिहार	२५–३४	८४– १	+ ६– ४	–१	+ ४– ४
६९. बड़ौदा	गुजरात	२२–१८	७३–१३	–३७– ८	+६	–३९– ८
७०. बम्बई	महाराष्ट्र	१८–५७	७२–५०	–३८–४०	+७	–४०–४०
७१. बरेली	उत्तर प्रदेश	२८–२२	७९–२४	–१२–२४	+२	–१४–२४
७२. बस्ती	उत्तर प्रदेश	२६–५४	८२–४२	+ ०–४८	+०	– १–१२
७३. बहराइच	उत्तर प्रदेश	२७–३४	८१–३८	– ३–२८	+१	– ५–२८
७४. बाँदा	उत्तर प्रदेश	२५–२८	८०–१२	– ९–१२	+२	–११–१२
७५. बिजनौर	उत्तर प्रदेश	२९–२३	७८–११	–१७–१६	+३	–१९–१६
७६. बिलासपुर	मध्य प्रदेश	२२– ५	८२–१०	– १–२०	+१	– ३–२०
७७. बीकानेर	राजस्थान	२८– १	७३–१९	–३६–४४	+६	–३८–४४
७८ बेतिया	बिहार	२६–४८	८४–३३	+ १–१२	–६	+ ६–१२
७९. बगलोर	मैसूर	१२–५८	७७–३५	–१९–४०	+४	–२१–४०
८०. भाटपारा	मध्य प्रदेश	२१–४६	८१–५७	– २–१२	+१	– ४–१२
८१. भावनगर	गुजरात	२१–४७	७२– ९	–४१–२४	+७	–४३–२४
८२. भुज	गुजरात	२३–१५	६९–४०	–५१–२०	+४	–५३–२०
८३. भोपाल	मध्य प्रदेश	२३–१६	७७–२३	–२०–२८	+४	–२२–२८
८४. भंडारा	बम्बई	२१– ९	७९–४२	–११–१२	+२	–१३–१२
८५. मथुरा	उत्तर प्रदेश	२७–२८	७७–४१	–१९–१६	+३	–२१–१६
८६. मदुरा	मद्रास	९–५५	७८– ८	–१७–२८	+३	–१९–२८
८७. मद्रास	मद्रास	१३– ६	८०–१५	– ९– ०	+२	–११– ०
८८. मीरजापुर	उत्तर प्रदेश	२५–१०	८२–३३	+ ०–१२	+०	– १–४८
८९. मुंगेर	बिहार	२५–२३	८६–३०	+१६– ०	–२	+१४– ०
९०. मुजफ्फरपुर	बिहार	२६– ७	८५–२७	+११–४८	–२	+ ९–४८

❀ देश काल-सुबोधिनी तालिका ❀

नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश (अंशकला)	पूर्व रेखांश (अंशकला)	स्टै. समयसे स्थानीय समय का अन्तर (मि. से.)	स्थानी. ०बजेके लिएसां संस्कार (से)	काशी इष्ट सां. का. से स्था. इष्ट सां. का. का (सं. मि. से.)
९१. मुरादाबाद	उत्तर प्रदेश	२८–५०	७८–५०	–१४–४०	+३	–१६–४०
९२. मेरठ	उत्तर प्रदेश	२९–०१	७७–४५	–१९– ०	+३	–२१– ०
९३. मैनपुरी	उत्तर प्रदेश	२७–१३	७९– २	–१३–५२	+३	–१५–५२
९४. मैसूर	मैसूर	१२–१९	७६–४०	–२३–२०	+४	–२५–२०
९५. राजकोट	गुजरात	२२–१७	७०–४९	–४६–४४	+८	–४८–४४
९६. राजनन्द गाँव	मध्य प्रदेश	२१– ५	८१– ५	– ५–४०	+१	– ७–४०
९७. रायगढ़	मध्य प्रदेश	२१–५४	८३–२६	– ३–४४	+१	– ५–४४
९८. रायपुर	मध्य प्रदेश	२१–१५	८१–३८	– ३–२८	+१	– ५–२८
९९. रायबरेली	उत्तर प्रदेश	२६–१४	८१–१३	– ५– ८	+१	– ७– ८
१००. रीवाँ	मध्य प्रदेश	२४–३२	८१–१७	– ४–५२	+१	+ ६–५२
१०१. लखनऊ	उत्तर प्रदेश	२६–५१	८०–५५	– ६–२०	+१	– ८–२०
१०२. लखीमपुर खीरी	उत्तर प्रदेश	२७–५७	८०–४९	– ६–४४	+१	–८ –४४
१०३. लश्कर	मध्य प्रदेश	२६–१०	७८–१०	–१७–२०	+३	–१९–२०
१०४. लुधियाना	पंजाब	३०–५६	७५–५२	–२६–३२	+५	–२८–३२
१०५. वाराणसी	उत्तर प्रदेश	२५–१९	८३– ०	+ २– ०	+०	±०– ०
१०६. शाहजहाँपुर	उत्तर प्रदेश	२७–५४	७९–५७	–१०–१२	+२	–१२–१२
१०७. शिलाङ्ग	आसाम	२५–३४	९१–५४	+३७–३६	–६	+३५–३६
१०८. शोलापुर	गुजरात	१७–४०	७५–५५	–२६–२०	+५	–२८–२०
१०९. श्रीनगर	कश्मीर	३४– ५	७४–५०	–३०–४०	+५	–३२–४०
११०. सतना	मध्य प्रदेश	२४–३४	८०–५५	– ६–२०	+१	– ८–२०
१११. सहारनपुर	उत्तर प्रदेश	२९–५८	७७–३२	–१९–५२	+४	–२१–५२
११२. सागर	मध्य प्रदेश	२३–५०	७८–४५	–१५– ०	+३	–१७– ०
११३. साहिबगंज	बिहार	२५–१३	८७–४०	+२०–४०	–३	+१८–४०
११४. सीतापुर	उत्तर प्रदेश	२७–३६	८०–४०	– ७–२०	+२	– ९–२०
११५. शिमला	हिमाचल प्र.	३१– ६	७७–१०	–२१–२०	+४	–२३–२०
११६. सूरत	गुजरात	२१–१२	७२–५०	–३८–४०	+७	–४०–४०
११७. सुलतानपुर	उत्तर प्रदेश	२६–१५	८२– ४	– १–४४	+१	– ३–४४
११८. हरदोई	उत्तर प्रदेश	२७–२४	८०– ६	– ९–३६	+२	–११–३६
११९. हरद्वार	उत्तर प्रदेश	२९–५८	७८– ८	–१७–२८	+३	–१९–२८
१२०. हापुड़	उत्तर प्रदेश	२८–४५	७७–४६	–१८–५६	+३	–२०–५६
१२१. हैदराबाददक्षिण	आंध्र	२७–१७	७८–३०	–१६– ०	+३	–१८– ०

❀ विदेश काल सुबोधिनी तालिका ❀

विदेशी राजधानियाँ एवं प्रमुख नगर	राष्ट्र	अक्षांश	रेखांश	क्षेत्रीय स्टैं.टा.से स्थानीय समयान्तर	ग्रीनीच समय GMTसे क्षे.स्टैं सम.	भारतीय स्टैं.टा.से क्षेत्रीय स्टैं समयान्तर	काशी ०बजे के सां.का.से स्था ०ब. के सां. के लिये संस्.	काशी के इष्ट सां.का.से.स्था इष्टसां कालके लिये संस्कार
		° ′	° ′	मि. से.	घं. मि.	घं. मि.	संस्. मि. से.	घं. मि. से.
१. अमन	जॉर्डन	३१-५७ उ.	३०-५७ पू.	+ २३-४८	+ २- ०	– ३-३०	+ ०-३१	– ३- ८-१२
२. एडन	एडन	१२-५८ उ.	४५- १ पू.	+ ०- ४	+ ३- ०	– २-३०	+ ०-२५	– २-३१-५६
३. एथेन्स	ग्रीस	३७-५९ उ.	२३-२० पू.	– २६-४०	+ २- ०	– ३-३०	+ ०-३९	– ३-५८-४०
४. ओटावा	कैनेडा	४५-२६ उ.	७५-४१ प.	– २-४४	– ५- ०	– १०-३०	+ १-४४	–१०-३४-४४
५. अंकारा	तुर्किस्तान	३९-५२ उ.	३२-५९ पू.	+ ११-५६	+ २- ०	– ३-३०	+ ०-३३	– ३-२०- ४
६. कराची	पाकिस्तान	२४-५१ उ.	६७- ० पू.	– ३२- ०	+ ५- ०	– ०-३०	+ ०-११	– १- ४- ०
७. केनबरा	ऑस्ट्रेलिया	३५-१५ द.	१४९- ८ पू.	– ३-२८	+ १०- ०	+ ४-३०	– ०-४३	+ ४-२४-३२
८. काबुल	अफगानि.	३४-३१ उ.	६९-१२ पू.	+ ६-४८	+ ४-३०	– १- ०	+ ०- ९	– ०-५५-१२
९. काहिरा	मिश्र	३०- १ उ.	३१-१३ पू.	+ ४-५२	+ २- ०	– ३-३०	+ ०-३४	– ३-२७- ८
१०. ग्रीनीच	इङ्गलैंड	५१-२९ उ.	०- ० पू.	+ ०- ०	+ ०- ०	– ५-३०	+ δ ०-५५	– ५-३२- ०
११. जाकार्ता	इंडोनेशिया	७-५७ द.	११०-२० पू.	– ८-४०	+ ७-३०	+ २- ०	– ०-१८	+ १-४९-२०
१२. जिब्राल्टर	जिब्राल्टर	३६- ७ उ.	५-२२ प.	– ८१-२८	+ १- ०	– ४-३०	+ ०-५८	– ५-५३-२८
१३. जेनेवा	स्विट्जरलैंड	४६-१२ उ.	६- ९ पू.	– ३५-२४	+ १- ०	– ४-३०	+ ०-५०	– ५- ७-२४
१४. जेरुसलेम	इजराइल	३१-४८ उ.	३५-११ पू.	+ २०-४८	+ २- ०	– ३-३०	+ ०-३१	– ३-११-१२
१५. टोकियो	जापान	३५-३९ उ.	१३९-४५ पू.	+ १९- ०	+ ९- ०	+ ३-३०	– ०-३७	+ ३-४७- ०
१६. ढाका	बंगलादेश	२३ ४३ उ.	९०-२५ पू.	+ १-४०	+ ६- ०	+ ०-३०	– ०- ५	+ ०-२९-४०
१७. तेहरान	ईरान	३५-४४ उ.	५१-२७ पू.	– ४-१२	+ ३-३०	– २- ०	+ ०-२१	– २- ६-१२
१८. दमास्कस	सीरिया	३३-३० उ.	३६-१८ पू.	+ २५-१२	+ २- ०	– ३-३०	+ ०-३१	– ३- ६-४८
१९. न्यूयार्क	अमेरिका	४०-४३ उ.	७४- ० प.	+ ४- ०	– ५- ०	– १०-३०	+ १-४३	–१०-२८- ०
२०. पीकिंग	चीन	३९-५० उ.	११६-२० पू.	– १४-४०	+ ८- ०	+ २-३०	– ०-२२	+ २-१३-२०
२१. पेरिस ★	फ्रांस	४८-५० उ.	२-२० पू.	– ५०-४०	+ १- ०	– ४-३०	+ ०-५३	– ५-२२-४०
२२. प्योंगयांग	उ. कोरिया	३९- ० उ.	१२५-३० पू.	– ३८- ०	– ९- ०	+ ३-३०	– ०-२८	+ २-५०- ०
२३. फार्मोसा	फार्मोसा	२५ १८ उ.	१२१-३२ पू.	– ५३-५२	+ ९- ०	+ ३-३०	– ०-२५	+ २-३४- ८
२४. बगदाद	इराक	३३-१८ उ.	४४-३० पू.	– २- ०	+ ३- ०	– २-३०	+ ०-२५	– २-३४- ०
२५. बर्न	स्विट्जरलैंड	४६-५७ उ.	७-२८ पू.	– ३०- २	+ १- ०	– ४-३०	+ ०-५०	– ५- २- ८
२६. बर्लिन	पूर्वी जर्मनी	५२-३२ उ.	१३-२४ पू.	– ६-२४	+ १- ०	– ४-३०	+ ०-४६	– ४-३८-२४
२७. बुडापेस्ट	हंगरी	४७-२९ उ.	१९- ५ पू.	+ १६-२०	+ १- ०	– ४-३०	+ ०-४२	– ४-१५-४०
२८. बेलग्रेड	युगोस्ला.	४४-५० उ.	२०-३७ पू.	+ २२-२८	+ १- ०	– ४-३०	+ ०-४१	– ४- ९-३२
२९. बैंककॉक	स्याम	१३-४५ उ.	१००-३० पू.	– १८- ०	+ ७- ०	+ १-३०	– ०-११	+ १ १०- ०
३०. बॉन	प. जर्मनी	५०-४३ उ.	७- ६ पू.	– ३१-३६	+ १- ०	– ४-३०	+ ०-५०	– ५- ३-३६
३१. ब्रुसेल्स ★	बेल्जियम	५०-५१ उ.	४-२१ प.	– ४२-३६	+ १- ०	– ४-३०	+ ०-५२	– ५-१४-३६
३२. मैड्रिड ★	स्पेन	४०-२५ उ.	३-४५ प.	– ७५- ०	+ १- ०	– ४-३०	+ ०-५७	५-४७- ०
३३. मॉस्को	रूस	५५-४५ उ.	३७-३५ पू.	– २९-४०	+ ३- ०	– २-३०	+ ०-३०	– ३- १-४०
३४. मांडले	बर्मा	२२- ० उ.	९६- ५ पू.	– ५-४०	+ ६-३०	+ १- ०	– ०- ९	+ ०-५२-२०
३५. मैक्सिको	मैक्सिको	१९-२५ उ.	९९-१७ प.	– ३७- ८	– ६- ०	– ११-३०	+ २- ०	–१२- ९- ८
३६. रियाध	सऊदी अरब	२४-५० उ.	४६-१८ पू.	+ ५-१२	+ ३- ०	– २-३०	+ ०-२४	– २-२६-४८
३७. रोम	इटली	४१-४५ उ.	१२-२९ पू.	– १०- ४	+ १- ०	– ४-३०	+ ०-४६	– ४-४२- ४
३८. रंगून	बर्मा	१६-४८ उ.	९६- ८ पू.	५-२८	+ ६-३०	+ १- ०	– ०- ९	+ ०-५२-३२
३९. लिस्बॅन	पुर्तगाल	३८-४२ उ.	९-१० प.	– ३६-४०	– ०- ०	– ५-३०	+ १- १	– ६- ८-४०
४०. लंदन	इङ्गलैंड	५१-३२ उ.	०- ५ प.	– ०-२०	– ०- ०	– ५-३०	+ ०-५५	– ५-३२-२०
४१. ल्हासा	तिब्बत	२९-४० उ.	९१- ८ पू.	+ ३४-३२	+ ५-३०	+ ०- ०	– ०- ५	+ ०-३२-३२
४२. वाशिंगटन	अमेरिका	३८-५३ उ.	७७- ४ प.	– ८-१६	– ५- ०	– १०-३०	+ १-४५	–१०-४०-१६
४३. वेलिंग्टन	न्यूजीलैंड	४१-१९ द.	१७४-४६ पू.	– २०-५६	+ १२- ०	+ ६-३०	– १- ०	+ ६- ७- ४
४४. सिंगापुर	मलाया	१-१६ उ.	१०३-४७ पू.	– ३४-५२	+ ७-३०	+ २- ०	– ०-१४	+ १ २३- ८
४५. सेऊल	द. कोरिया	३७-४० उ.	१२७- ० पू.	– ३२- ०	+ ९- ०	+ ३-३०	– ०-२९	+ २-५६- ०
४६. हांगकांग	हांगकांग	२२-१८ उ.	११४-१० पू.	– २३-२०	+ ८- ०	+ २-३०	– ०-२०	+ २- ४-४०

★ यहाँ ग्रीनीच मध्यम समय (G.M.T.) भी व्यवहार में चालू है। [δ सूक्ष्म मान ५४'५३९ है।

ई० सन् १८८१ से ई० सन् १९७० तक, ९० वर्ष के किसी भी दिन का भारत-सरकार से स्वीकृत चित्रापक्षीय अयनांश जानने की अति सरल सारणी

सारणी-संख्या-१

ईस्वी सन्	शाके	संवत्	अयनांश अं.	क.	वि.	ईस्वी सन्	शाके	संवत्	अयनांश अं.	क.	वि.	ईस्वी सन्	शाके	संवत्	अयनांश अं.	क.	वि.
१८८१	१८०२	१९३७	२२	११	४३	१९११	१८३२	१९६७	२२	३६	५१	१९४१	१८६२	१९९७	२३	१	५८
१८८२	१८०३	१९३८	२२	१२	३३	१९१२	१८३३	१९६८	२२	३७	४१	१९४२	१८६३	१९९८	२३	२	४९
१८८३	१८०४	१९३९	२२	१३	२३	१९१३	१८३४	१९६९	२२	३८	३१	१९४३	१८६४	१९९९	२३	३	३९
१८८४	१८०५	१९४०	२२	१४	१४	१९१४	१८३५	१९७०	२२	३९	२१	१९४४	१८६५	२०००	२३	४	२९
१८८५	१८०६	१९४१	२२	१५	४	१९१५	१८३६	१९७१	२२	४०	१२	१९४५	१८६६	२००१	२३	५	१९
१८८६	१८०७	१९४२	२२	१५	५४	१९१६	१८३७	१९७२	२२	४१	२	१९४६	१८६७	२००२	२३	६	१०
१८८७	१८०८	१९४३	२२	१६	५४	१९१७	१८३८	१९७३	२२	४१	५२	१९४७	१८६८	२००३	२३	७	०
१८८८	१८०९	१९४४	२२	१७	३५	१९१८	१८३९	१९७४	२२	४२	४२	१९४८	१८६९	२००४	२३	७	५०
१८८९	१८१०	१९४५	२२	१८	२५	१९१९	१८४०	१९७५	२२	४३	३३	१९४९	१८७०	२००५	२३	८	४१
१८९०	१८११	१९४६	२२	१९	१५	१९२०	१८४१	१९७६	२२	४४	२३	१९५०	१८७१	२००६	२३	९	३१
१८९१	१८१२	१९४७	२२	२०	५	१९२१	१८४२	१९७७	२२	४५	१३	१९५१	१८७२	२००७	२३	१०	२१
१८९२	१८१३	१९४८	२२	२०	५६	१९२२	१८४३	१९७८	२२	४६	३	१९५२	१८७३	२००८	२३	११	११
१८९३	१८१४	१९४९	२२	२१	४६	१९२३	१८४४	१९७९	२२	४६	५४	१९५३	१८७४	२००९	२३	१२	२
१८९४	१८१५	१९५०	२२	२२	३६	१९२४	१८४५	१९८०	२२	४७	४४	१९५४	१८७५	२०१०	२३	१२	५२
१८९५	१८१६	१९५१	२२	२३	२६	१९२५	१८४६	१९८१	२२	४८	३४	१९५५	१८७६	२०११	२३	१३	४२
१८९६	१८१७	१९५२	२२	२४	१७	१९२६	१८४७	१९८२	२२	४९	२५	१९५६	१८७७	२०१२	२३	१४	३२
१८९७	१८१८	१९५३	२२	२५	७	१९२७	१८४८	१९८३	२२	५०	१५	१९५७	१८७८	२०१३	२३	१५	२३
१८९८	१८१९	१९५४	२२	२५	५७	१९२८	१८४९	१९८४	२२	५१	५	१९५८	१८७९	२०१४	२३	१६	१३
१८९९	१८२०	१९५५	२२	२६	४७	१९२९	१८५०	१९८५	२२	५१	५५	१९५९	१८८०	२०१५	२३	१७	३
१९००	१८२१	१९५६	२२	२७	३८	१९३०	१८५१	१९८६	२२	५२	४५	१९६०	१८८१	२०१६	२३	१७	५३
१९०१	१८२२	१९५७	२२	२८	२८	१९३१	१८५२	१९८७	२२	५३	३६	१९६१	१८८२	२०१७	२३	१८	४४
१९०२	१८२३	१९५८	२२	२९	१८	१९३२	१८५३	१९८८	२२	५४	२६	१९६२	१८८३	२०१८	२३	१९	३४
१९०३	१८२४	१९५९	२२	३०	८	१९३३	१८५४	१९८९	२२	५५	१६	१९६३	१८८४	२०१९	२३	२०	२४
१९०४	१८२५	१९६०	२२	३०	५९	१९३४	१८५५	१९९०	२२	५६	७	१९६४	१८८५	२०२०	२३	२१	१५
१९०५	१८२६	१९६१	२२	३१	४९	१९३५	१८५६	१९९१	२२	५६	५७	१९६५	१८८६	२०२१	२३	२२	५
१९०६	१८२७	१९६२	२२	३२	३९	१९३६	१८५७	१९९२	२२	५७	४७	१९६६	१८८७	२०२२	२३	२२	५५
१९०७	१८२८	१९६३	२२	३३	३०	१९३७	१८५८	१९९३	२२	५८	३७	१९६७	१८८८	२०२३	२३	२३	४५
१९०८	१८२९	१९६४	२२	३४	२०	१९३८	१८५९	१९९४	२२	५९	२८	१९६८	१८८९	२०२४	२३	२४	३६
१९०९	१८३०	१९६५	२२	३५	१०	१९३९	१८६०	१९९५	२३	०	१८	१९६९	१८९०	२०२५	२३	२५	२६
१९१०	१८३१	१९६६	२२	३६	०	१९४०	१८६१	१९९६	२३	१	८	१९७०	१८९१	२०२६	२३	२६	१६

सारणी-संख्या-२

तारीख	जनवरी विकला		फरवरी विकला		मार्च विकला		अप्रैल विकला		मई विकला		जून विकला		जुलाई विकला		अगस्त विकला		सितम्बर विकला		अक्टूबर विकला		नवम्बर विकला		दिसम्बर विकला	
१	०	१	४	४	८	[illegible]	१२	६	१६	६	२०	९	२५	०	२९	३	३३	६	३७	७	४२	०	४६	१
२	०	३	४	५	८	४	१२	७	१६	८	२१	०	२५	२	२९	४	३३	७	३७	८	४२	१	४६	२
३	०	४	४	७	८	६	१२	८	१६	९	२१	१	२५	३	२९	६	३३	८	३८	०	४२	३	४६	४
४	०	६	४	८	८	७	१२	९	१७	०	२१	३	२५	४	२९	७	३४	०	३८	१	४२	४	४६	५
५	०	७	५	०	८	८	१३	०	१७	२	२१	४	२५	६	२९	८	३४	१	३८	२	४२	५	४६	६
६	०	८	५	१	८	९	१३	२	१७	३	२१	६	२५	७	३०	०	३४	२	३८	४	४२	६	४६	८
७	१	०	५	[illegible]	९	०	१३	३	१७	४	२१	७	२५	८	३०	१	३४	४	३८	६	४२	८	४६	९
८	१	१	५	३	९	[illegible]	१३	४	१७	६	२१	८	२६	०	३०	२	३४	५	३८	७	४२	९	४७	०
९	१	२	५	५	९	३	१३	६	१७	७	२२	०	२६	१	३०	४	३४	६	३८	८	४३	१	४७	२
१०	१	४	५	६	९	५	१३	७	१७	९	२२	१	२६	३	३०	५	३४	८	३८	९	४३	२	४७	३
११	१	५	५	८	९	६	१३	९	१८	०	२२	३	२६	४	३०	७	३४	९	३९	१	४३	३	४७	४
१२	१	६	५	९	९	७	१४	०	१८	१	२२	४	२६	५	३०	८	३५	१	३९	२	४३	४	४७	६
१३	१	८	६	१	९	९	१४	१	१८	३	२२	५	२६	७	३०	९	३५	२	३९	३	४३	६	४७	७
१४	१	९	६	२	१०	०	१४	३	१८	४	२२	७	२६	८	३१	१	३५	३	३९	५	४३	७	४७	९
१५	२	१	६	३	१०	२	१४	४	१८	६	२२	८	२७	०	३१	२	३५	५	३९	६	४३	९	४८	०
१६	२	२	६	४	१०	३	१४	६	१८	७	२२	९	२७	१	३१	४	३५	६	३९	८	४४	०	४८	१
१७	२	३	६	६	१०	४	१४	७	१८	८	२३	१	२७	२	३१	५	३५	८	३९	९	४४	२	४८	३
१८	२	४	६	७	१०	६	१४	८	१९	०	२३	२	२७	४	३१	६	३५	९	४०	०	४४	३	४८	४
१९	२	६	६	८	१०	७	१५	०	१९	१	२३	४	२७	५	३१	८	३६	०	४०	२	४४	४	४८	६
२०	२	७	७	०	१०	८	१५	१	१९	३	२३	५	२७	६	३१	९	३६	२	४०	३	४४	६	४८	७
२१	२	८	७	१	११	०	१५	२	१९	४	२३	६	२७	८	३२	०	३६	३	४०	४	४४	७	४८	८
२२	३	०	७	३	११	१	१५	४	१९	५	२३	८	२७	९	३२	२	३६	४	४०	६	४४	८	४९	०
२३	३	१	७	४	११	३	१५	५	१९	६	२३	९	२८	०	३२	३	३६	६	४०	७	४५	०	४९	१
२४	३	३	७	५	११	४	१५	७	१९	८	२४	१	२८	२	३२	५	३६	७	४०	९	४५	१	४९	३
२५	३	४	७	७	११	५	१५	८	१९	९	२४	२	२८	३	३२	६	३६	९	४१	०	४५	३	४९	४
२६	३	५	७	८	११	७	१५	९	२०	१	२४	३	२८	५	३२	७	३७	०	४१	१	४५	४	४९	५
२७	३	७	७	९	११	८	१६	१	२०	२	२४	५	२८	६	३२	९	३७	१	४१	३	४५	५	४९	७
२८	३	८	८	०	११	९	१६	२	२०	३	२४	६	२८	७	३३	०	३७	३	४१	४	४५	७	४९	८
२९	३	९	८	[illegible]	१२	०	१६	३	२०	५	२४	७	२८	९	३३	१	३७	४	४१	५	४५	८	४९	९
३०	४	१	[illegible]	[illegible]	१२	२	१६	४	२०	६	२४	८	२९	०	३३	३	३७	५	४१	७	४५	९	५०	१
३१	४	२	[illegible]	[illegible]	१२	४	०	०	२०	७	०	०	२९	१	३३	४	०	०	४१	८	०	०	५०	२

सारणी का विवरण—प्रथम सारणी में सन् १८८१ ई० से सन् १९७० ई० तक के प्रत्येक वर्ष के आरम्भ (पहली जनवरी) का अयनांश दिया गया है। ईसवी वर्ष की बगल में शाके और संवत् भी दिये गये हैं, बाद में अयनांश के अंश, कला और विकला। द्वितीय सारणी में पूरे वर्ष की अयन-गति दी गई है। पहले खाने में अयन-गति विकला और दूसरे खाने में विकला का दशमांश है। अब मान लीजिए हमें ४ जून १९६३ ई० का अयनांश ज्ञात करना है तो पहले उस वर्षारम्भ का अयनांश जानने के लिए ईसवी सन् के खाने में १९६३ की सीधमें देखा तो अयनांश २३°-२०′-२४″ मिला। यह १९६३ ई० की प्रथम जनवरी का अयनांश है। हमें ४ जून का अयनांश निकालना है। अतः दूसरी सारणी में जून मास के खाने में ४ तारीख के सामने देखा तो २१″·३ विकला मिला। इसे २३°-२०′-२४″ में जोड़ देने पर हमें अभीष्ट दिन का २३°-२०′-४५″·३ अयनांश ज्ञात हो गया।

❋ स्पष्ट अयनांश ❋ सारणी-संख्या—३

सन् १८७० ई० से १९७० ई० तक के प्रत्येक वर्षारम्भ (ता० १ जनवरी के) स्पष्ट (True) अयनांश।

ईस्वी सन्	अयनांश अं०	क०	वि०	ईस्वी सन्	अयनांश अं०	क०	वि०	ईस्वी सन्	अयनांश अं०	क०	वि०	ईस्वी सन्	अयनांश अं०	क०	वि०
१८७०	२२	०	१५	१८९५	२२	२३	२८	१९२०	२२	४४	३७	१९४५	२३	५	४०
१८७१	२२	३	४	१८९६	२२	२४	२४	१९२१	२२	४५	२३	१९४६	२३	५	५३
१८७२	२२	३	५४	१८९७	२२	२५	१९	१९२२	२२	४६	८	१९४७	२३	६	[illegible]
१८७३	२२	४	४६	१८९८	२२	२६	१३	१९२३	२२	४६	५२	१९४८	२३	७	३८
१८७४	२२	५	४०	१८९९	२२	२७	५	१९२४	२२	४७	३७	१९४९	२३	८	३०
१८७५	२२	६	३५	१९००	२२	२७	५५	१९२५	२२	४८	२२	१९५०	२३	९	२८
१८७६	२२	७	३१	१९०१	२२	२८	४४	१९२६	२२	४९	९	१९५१	२३	१०	२४
१८७७	२२	८	२७	१९०२	२२	२९	३०	१९२७	२२	४९	५८	१९५२	२३	११	१९
१८७८	२२	९	२२	१९०३	२२	३०	१५	१९२८	२२	५०	४२	१९५३	२३	१२	१४
१८७९	२२	१०	१७	१९०४	२२	३१	०	१९२९	२२	५१	४१	१९५४	२३	१३	८
१८८०	२२	११	१०	१९०५	२२	३१	४४	१९३०	२२	५२	३५	१९५५	२३	१४	०
१८८१	२२	१२	१	१९०६	२२	३२	२९	१९३१	२२	५३	३१	१९५६	२३	१४	५०
१८८२	२२	१२	५०	१९०७	२२	३३	१६	१९३२	२२	५४	२६	१९५७	२३	१५	३८
१८८३	२२	१३	३७	१९०८	२२	३४	३	१९३३	२२	५५	२२	१९५८	२३	१६	२४
१८८४	२२	१४	२२	१९०९	२२	३४	५३	१९३४	२२	५६	१८	१९५९	२३	१७	९
१८८५	२२	१५	७	१९१०	२२	३५	३५	१९३५	२२	५७	१२	१९६०	२३	१७	५४
१८८६	२२	१५	५१	१९११	२२	३६	३९	१९३६	२२	५८	४	१९६१	२३	१८	३८
१८८७	२२	१६	३६	१९१२	२२	[illegible]	३४	१९३७	२२	५८	५५	१९६२	२३	१९	[illegible]
१८८८	२२	१७	२२	१९१३	२२	[illegible]	९	१९३८	२२	५९	४४	१९६३	२३	[illegible]	[illegible]
१८८९	२२	१८	९	१९१४	२२	[illegible]	५	१९३९	२३	०	३	१९६४	२३	२०	५८
१८९०	२२	१८	५८	१९१५	२२	४०	२१	१९४०	२३	१	१६	१९६५	२३	२१	४८
१८९१	२२	१९	४०	१९१६	२२	४१	१५	१९४१	२३	२	[illegible]	१९६६	२३	२२	४०
१८९२	२२	२०	४	१९१७	२२	४	९	१९४२	२३	२	४५	१९६७	२३	२३	३४
१८९३	२२	२१	३	१९१८	२२	४३	०	१९४३	२३	३	३	१९६८	२३	२४	२९
१८९४	२२	२	३	१९१९	२२	४३	४८	१९४४	२३	४	[illegible]	१९६९	२३	२५	२५
												१९७०	२३	२६	११

सारणी-संख्या—४

राहु रा०	अं०	संस्कार विकला	राहु रा०	अं०	संस्कार विकला	राहु रा०	अं०	संस्कार विकला
११	७	— ०	३	७	— १५	७	७	+ १५
११	२२	— ५	३	२२	— १२	७	२२	+ १६
०	७	— ९	४	७	— ९	८	७	+ १७
०	२२	— १२	४	२२	— ५	८	२२	+ १६
१	७	— १५	५	७	+ ०	९	७	+ १५
१	२२	— १६	५	२२	+ ५	९	२२	+ १२
२	७	— १७	६	७	+ ९	१०	७	+ ९
२	२२	— १६	६	२२	+ १२	१०	२२	+ ५

अयनांश-विवेक—पाश्चात्य देशों में सायन ग्रह-गणना प्रचलित है ; किन्तु भारतीय ज्योतिष निरयण गणनामूलक है। निरयण ज्योतिष विश्व के खगोल-विज्ञान को भारत की महान् देन है। केवल फलित की दृष्टि से ही नहीं, उच्च गणित ज्योतिष एवं खगोलशास्त्र की दृष्टि से भी भारत की मौलिक निरयण पद्धति की अपनी विशिष्टता एवं महत्ता है। वेधागत सायन ग्रह में स्पष्ट अयनांश घटाने से वास्तव निरयण ग्रह सिद्ध होता है ; किन्तु अयनांश के विषय में गत कई दशकों से भारतीय ज्योतिषों में बड़ा मतभेद रहा है जो भारतीय ज्योतिष को उसके गौरवपूर्ण पद पर पुनः प्रतिष्ठित होने में मुख्यतः बाधक था। हर्ष की बात है कि श्रीकेतकरजी आदि मूर्धन्य ज्योतिर्विदों की महान् त्यागपूर्ण शास्त्र-सेवा के फलस्वरूप अब एकाध पञ्चांग को छोड़कर भारत के सभी पञ्चांग-कारों ने चित्रापक्षीय अयनांश को अपना लिया है। इधर हमारी राष्ट्रीय सरकार भी महान् व्यय-पूर्वक ज्योतिषशास्त्र की ठोस सेवा कर रही है। विदेशों के श्रेष्टतम नाविक पञ्चांगों की टक्कर का भारतीय नाविक पञ्चांग प्रकाशित करने के अलावा देश की १२ प्रान्तीय भाषाओं में शुद्धतम निरयण पञ्चांग प्रतिवर्ष अल्पतम मूल्य में जनता को वह दे रही है। भारत-सरकार ने भी किञ्चित संशोधन के साथ आचार्य केतकर-प्रवर्तित(चित्रापक्षीय) अयनांश को ही स्वीकृत किया है। गत वर्ष से पहले तक चित्रापक्षीय अयनांश का मध्यम मान पञ्चागों में व्यवहृत होता था ; किन्तु भारत सरकार ने मध्यम के बजाय स्पष्ट (True) अयनांश व्यवहार में लाने के लिए सर्व पञ्चांगकारों से अनुरोध किया; परिणामतः सभी दृश्य पञ्चागकारों ने तथा 'चिन्ताहरण जन्त्री' ने भी स्पष्ट(True) अयनांश का उपयोग आरम्भ कर दिया जिससे जन्त्री के सामान्य ज्योतिष-प्रेमी पाठकों के अलावा विद्वान् ज्योतिषी एवं कुछ पञ्चांगकारों में भी जन्त्री के अयनांश की शुद्धाशुद्धि के विषय में शंका उत्पन्न हो गई और एतद्विषयक उनके पत्र हमारे पास आने लगे। हमें भी अलग-अलग पत्र द्वारा उनका समाधान करने में कष्ट उठाना पड़ा। अतः इस पुस्तक में इस विषय को परिपूर्ण रूप में ज्योतिषज्ञों के लाभार्थ प्रस्तुत किया जा रहा है।

सन् १८७५ ई० से सन् १९६४ तक के ९० वर्षों के किसी भी दिन का मध्यम अयनांश बड़ी सरलतापूर्वक जान लेने की सारणी चिन्ताहरण जन्त्री तथा इस 'ज्योतिष-रहस्य' पुस्तिका के प्रथम संस्करण में हमने प्रकाशित किया था। उसमें पहली सारणी में प्रति वर्ष के आरम्भ (१ जनवरी) के मध्यम अयनांश तथा दूसरी सारणी में वर्ष के प्रति दिनांक की अयन-गति दी गयी थी। अयन-गति तो सूक्ष्म शुद्ध है ; किन्तु पहली सारणी में दिये गये मध्यम अयनांश में किञ्चित संशोधन भारत-सरकार ने किया है; अतएव इस पुस्तक के वर्तमान संस्करण में अयनांश सम्बन्धी प्रथम सारणी में हम वही संशोधित मध्यम अयनांश विगत सन् १८८१ ई० से आगामी सन् १९७० ई० तक के प्रतिवर्ष के लिये दे रहे हैं। इन ९० वर्षों के मध्यम अयनांश के गणितार्थ उपकरण (सूक्ष्मतम अयन-गति) हमें भारत-सरकार के राष्ट्रीय एवं नाविक पञ्चांग के प्रधान सम्पादक स्व० श्रीनिर्मलचन्द्रजी लाहिरी से प्राप्त हुई थी, एतदर्थ हम उनके अभारी हैं। द्वितीय सारणी सं० २ पूर्ववत् है। इन दो सारणियों की सहायता से उक्त ९० वर्षों के किसी भी दिन का सूक्ष्म, शुद्ध मध्यम अयनांश आपको मामूली जोड़ से ज्ञात हो जायेगा, जैसाकि दोनों सं० १ और २ की सारणियों के नीचे छपे उदाहरण से स्पष्ट है।

उपर्युक्त दो सारणियों के अलावा दो और सारणियां सं० ३ और ४ दी गयी हैं। सारणी सं० ३ सन् १८७० से सन् १९७० ई० तक के १०१ वर्षों के लिए हैं। इतने वर्षों में-से प्रत्येक वर्ष के आरम्भ (पहली जनवरी) का स्पष्ट (True) अयनांश दिया गया है। इसका गणित हमने स्वतन्त्र रूप से बड़े परिश्रमपूर्वक किया है। सारणी-संख्या २ के साथ सारणी सं० १ के बजाय सारणी सं० ३ का उपयोग किया जाय तो इष्ट दिन का स्पष्ट(True) अयनांश ज्ञात होगा, किन्तु वह किञ्चित स्थूल होगा; क्योंकि वर्षारम्भ का अयनांश स्पष्ट (True) होने पर भी उसमें योग मध्यम दैनिक गति का रहेगा। विकालान्त सूक्ष्म स्पष्ट(True) अयनांश लाने के लिए इष्ट दिन के मध्यम अयनांश में धूनन (Nutation) संस्कार करना होता है। इस संस्कार से अधिकांश ज्योतिषी तो क्या बहुत से पंचांगकार भी अनभिज्ञ हैं। जो जानते भी हैं उनको त्रिकोणमिति के सूत्रानुसार उस संस्कार का गणित करना कष्टसाध्य है। अतः हम सम्पूर्ण ज्योतिष-जगत के लाभार्थ उस संस्कार का गणित निरयण राहु के आधार पर सरलतापूर्वक कर लेने की युक्ति प्रकाशित कर दे रहे हैं। इसके लिए सारणी सं० ४ दी गई है जिसका उदाहरण निम्नाङ्कित है।

मध्यम अयनांश से स्पष्ट अयनांश लाने की सरल रीति—पहले इष्ट दिन का मध्यम अयनांश सारणी सं० १ और सारणी सं० २ से लाना चाहिये। उसमें सारणी सं० ४ द्वारा इष्ट दिन के राहु पर से साधित + या – संस्कार करने से स्पष्ट(True) अयनांश आ जायेगा। **उदाहरण १**—पूर्वोक्त उदाहरण ता. ४ जून सन् १९६३ ई० के मध्यम अयनांश २३°-२०-'-४५' को स्पष्ट अयनांश बनाना है। उस दिन (ता. ४-६-६३ का राहु रा. २-२९° है जिसके बराबर सारणी-संख्या ४ में संस्कार ऋण–१६" दिया गया है। अतः इसे उपर्युक्त मध्यम अयनांश २३°-२०-४५" में घटा दिया तो २३°-२०'-२९" स्पष्ट अयनांश ज्ञात हो गया। उदाहरण २—इसी दिन के स्पष्ट अयनांश का साधन यदि हम सारणी सं० २, ३ की सहायता से करें तो सन् १९६२ ई० के वर्षारम्भ का स्पष्ट अयनांश सारणी सं० ३ में २३°-२०'-९" मिलेगा; उसमें सारणी सं० २ से ४ जून तक की गति २१"·३ को जोड़ने से स्पष्ट (Ture) अयनांश २३°-२०'-३०"·३ उस दिन का ज्ञात हो जायेगा। प्रथम उदाहरण के स्पष्ट अयनांश तथा इस द्वितीय उदाहरण के स्पष्ट अयनांश में केवल १ विकला का अन्तर है जो अत्यन्त अल्प होने से उपेक्षिणीय है। अतएव पाठक जिस प्रकार चाहें, इष्ट दिन के स्पष्ट अयनांशका साधन कर सकते हैं। अब चित्रापक्षीय अयनांश का प्रचार यहाँ तक बढ़ गया है कि दृश्य गणित के पंचाङ्गों के अलावा काशी के मकरन्दीय, ग्रहलाघवीय आदि स्थूलतर गणित के पंचाङ्गकर्त्ता भी चित्रा-पक्षीय अयनांश अपने पचांङ्गों में देने लगे है; किन्तु उत्तर भारत के स्थूल गणित तथा दृक्तुल्य दोनों प्रकार के सब पंचाङ्गकार अभी तक केतकी ज्योतिर्गणितादि की सारणियों के आधार से मध्यम अयनांश ही अपने पंचाङ्गों में देते रहे हैं। अब इस पुस्तक में सर्वप्रथम स्पष्ट अयनांश-साधन की सारणियाँ प्रकाशित हो जाने से सभी पंचाङ्गकार सूक्ष्म, शुद्ध, स्पष्ट(True) अयनांश का अपने पंचाङ्गों में प्रयोग कर सकेंगे जिससे भारतीय ज्योतिष का अभिशाप-रूप अयनांश-विवाद सदा के लिए समाप्त होकर सर्व पंचांङ्गों एकवाक्यता हो जायेगी और यही हमारे परिश्रम का सर्वोत्तम प्रति-फल होगा।

आगामी वर्षों का साम्पातिक काल—अब से १२ वर्ष पहले उत्तर भारत के ज्योतिष-क्षेत्र में सर्वप्रथम हमने चिन्ताहरण जन्त्री और उसके बाद अपनी इस 'ज्योतिष-रहस्य' पुस्तक के द्वारा साम्पातिक काल को प्रचलित किया। 'ज्योतिष-रहस्य' अपने विषय को हिन्दी भाषा में एकमात्र प्रामाणिक पुस्तक होने के कारण विद्वानों से लेकर सर्वसामान्य ज्योतिष-प्रेमियों के लिए नित्य उपयोग की पुस्तक बन गई है। जन्त्री में तो साम्पातिक काल की महत्ता और उपयो-गिता पर प्रति वर्ष प्रकाश डाला जाता रहा है जिससे सभी ज्योतिष-प्रेमियों ने अब प्रत्यक्ष अनुभव कर लिया है कि कुण्डली के इष्ट, लग्न, दशमादि गणित में प्राचीन पद्धति की अपेक्षा कम श्रम और समय में अधिक सूक्ष्म, शुद्ध परिणाम साम्पातिक काल के उपयोग से प्राप्त होता है। हमें बड़ा हर्ष है कि काशी के दोनों (हिन्दू और संस्कृत) विश्व विद्यालयों के पंचाङ्गों के आलावा उत्तर भारत के अन्यान्य पचाङ्गकार भी अब जन्त्री की भाँति साम्पातिक काल का विषय नियमित रूप से अपने पंचाङ्गों में देने लगे हैं जिससे प्राचीन ढंग के संस्कृतज्ञ ज्योतिषियों में उसके प्रचार को बल मिल रहा है। यह बहुत शुभ लक्षण हैं; किन्तु हमारे पंचांगकारों को आगामी वर्ष के साम्पातिक काल के गणितार्थ शुद्ध और सरल साधन की बहुत ही आवश्यकता रही है; फलित-ज्योतिर्विदों को भी वर्ष-फल की कुण्डली आदि के गणि-तार्थ अग्रिम वर्ष के लिए साम्पातिक काल-साधन की आवश्यकता पड़ती है जिसकी पूर्ति 'ज्योतिष-रहस्य' के प्रथम संस्करण से भी नहीं हो पाती थी, क्योंकि उसमें सन् १८९१ ई० से सन् १९६० ई० तक के ही लिए साम्पातिक काल-साधन की सारणी छपी थी। अतः अग्रिम वर्षों के साम्पातिक काल की सारणियों के लिए ज्योतिषज्ञों की बड़ी माँगे हमारे पास आती रही हैं। इस सस्करण में उनकी माँग पूरी करते हुए हमें हार्दिक खुशी है। आगे पृ.१९ पर सन् १९११ ई० से लेकर सन् २००५ ई० तक के साम्पातिक काल-साधन की सारणी दी जा रही है। इन पूरे ९५ वर्षों में-से किसी भी वर्ष के किसी दिन, समय और देश-विदेश का विशुद्ध साम्पातिक काल बड़ी सरलता से मामूली जोड़-बाकी जानने-वाला एक विद्यार्थी भी मिनटों में तैयार कर लेगा। अभी दैनिक साम्पातिक काल कुछ पंचाङ्गों में किंचित् त्रुटिपूर्ण एवं स्थूल दिए जा रहे हैं। उनके सम्पादकों से हमारा साग्रह अनुरोध है कि आगे से वे अपने पंचाङ्ग-स्थल की मध्यरात्रि (स्थानिक मध्यम समय L.M.T. से ० बजे) का ही दैनिक साम्पातिक-काल बिल्कुल सूक्ष्म, शुद्ध रूप में अपने पंचाङ्गों में दिया करें—दिन रात के किसी अन्य समय की अपेक्षा अपने स्थानिक मध्यरात्रि का दैनिक साम्पातिक काल देना इष्ट साम्पातिक काल" (R. A. M. C.) बनाने के लिए बड़ा सुविधाजक होता है, यह आगे सारणी के उदाहरणों से साफ प्रकट है।

* निरयण राहु-सारणी *

[भा. प्र. समय से प्रातः घं० ५ मि. ३० बजे का राहु-स्पष्ट]

वर्ष	भोग °	भोग '	वर्ष	भोग °	भोग '
१९००	२१६	४४·९	१९५१	३०९	३९·८
०१	१९७	२४·३	*५२	२९०	१६·०
०२	१७८	३·८	५३	२७०	५५·५
०३	१५८	४३·३	५४	२५१	३५·०
*०४	१३९	१९·६	५५	२३२	१४·५
०५	११९	५९·०	*५६	२१२	५०·८
०६	१००	३८·५	५७	१९३	३०·२
०७	८१	१८·०	५८	१७४	९·७
*०८	६१	५४·३	५९	१५४	४९·२
०९	४२	३३·८			
१९१०	२३	१३·२	१९*६०	१३५	२५·५
११	३	५२·७	६१	१११	४·९
*१२	३४४	२९·२	६२	९६	४४·४
१३	३२५	८·५	६३	७७	२३·९
१४	३०५	४७·९	*६४	५८	०·२
१५	२८६	२७·४	६५	३८	३९·७
*१६	२६७	३·७	६६	१९	१९·१
१७	२४७	४३·२	६७	३५९	५८·६
१८	२२८	२२·६	*६८	३४०	३४·९
१९	२०९	२·१	६९	३२१	१४·४
१९*२०	१८९	३८·४	१९७०	३०१	५३·८
२१	१७०	१७·९	७१	२८२	३३·३
२२	१५०	५७·३	*७२	२६३	९·६
२३	१३१	३६·८	७३	२४३	४९·१
*२४	११२	१३·१	७४	२२४	२८·५
२५	९२	५२·६	७५	२०५	८·०
२६	७३	३२·१	*७६	१८५	४४·३
२७	५४	११·५	७७	१६६	२३·८
*२८	३४	४७·८	७८	१४७	३·३
२९	१५	२७·३	७९	१२७	४२·७
१९३०	३५६	६·८	१९*८०	१०८	१९·०
३१	३१६	४५·३	८१	८८	५८·५
*३२	३१७	२२·५	८२	६९	३८·०
३३	२९८	२·०	८३	५०	१७·५
३४	२७८	४१·५	*८४	३०	५३·७
३५	२५९	२०·९	८५	११	३३·३
*३६	२३९	५७·३	८६	३५२	१२·७
३७	२२०	३६·७	८७	३३२	५२·२
३८	२०१	१६·२	*८८	३१३	२८·५
३९	१८१	५५·७	८९	२९४	८·०
१९*४०	१६२	३१·९	१९९०	२७४	४७·५
४१	१४३	११·४	९१	२५५	२६·९
४२	१२३	५०·९	*९२	२३६	३·२
४३	१०४	३०·४	९३	२१६	४२·७
*४४	८५	६·७	९४	१९७	२२·२
४५	६५	४६·१	९५	१७८	१·६
४६	४६	२५·६	*९६	१५८	३८·०
४७	२७	५·१	९७	१३९	१७·४
*४८	७	४१·४	९८	११९	५६·९
४९	३४८	२०·९	९९	१००	३६·४
१९५०	३२८	०·३	*२०००	८१	१२·७

सामान्य	प्लु	अं.	कला
जनवरी	०	११८	०·०
फरवरी	०	११६	२१·४
मार्च	०	१४	५२·४
अप्रैल	०	१३	१३·८
मई	०	११	३८·५
जून	०	९	५९·९
जुलाई	०	८	२४·५
अगस्त	०	६	४५·९
सितम्बर	०	५	७·४
अक्टूबर	०	३	३२·०
नवम्बर	०	१	५३·४
दिसम्बर	०	०	१८·०

दिन	अंश	कला
०	२	०·०
१	१	५६·८
२	१	५३·७
३	१	५०·५
४	१	४७·३
५	१	४४·१
६	१	४०·९
७	१	३७·८
८	१	३४·६
९	१	३१·४
१०	१	२८·२
११	१	२५·१
१२	१	२१·९
१३	१	१८·७
१४	१	१५·५
१५	१	१२·४
१६	१	९·२
१७	१	६·०
१८	१	२·८
१९	०	५९·६
२०	०	५६·५
२१	०	५३·३
२२	०	५०·१
२३	०	४६·९
२४	०	४३·८
२५	०	४०·६
२६	०	३७·४
२७	०	३४·२
२८	०	३१·०
२९	०	२७·४
३०	०	२४·७
३१	०	२१·५

राहु-सारणी—इस पुस्तक के 'अयनांश-विवेक' शीर्षक लेखानुसार अब समस्त भारत में दो-एक रैवत पंचाङ्गों को छोड़कर सभी पंचाङ्ग चित्रापक्षीय (राष्ट्रीय) अयनांश के आधार पर निर्मित हो रहे हैं। काशी के बहु-प्रचलित ग्रहलाघवीय पंचाङ्ग में भी ग्रहलाघवीय अयनांश के बजाय चित्रा पक्षीय अयनांश ही दिया जाता है; किन्तु वह स्पष्ट अयनांश न होकर मध्य-अयनांश होता है जिसकी उपयोगिता समाप्त हो चुकी है; क्योंकि भारत-सरकार के प्रस्तावानुसार अब सभी दृश्य पंचाङ्गों में मध्यम के बजाय स्पष्ट (True) अयनांश का उपयोग हो रहा है। हम उक्त लेख में बता आये हैं कि मध्यम अयनांश में राहु-फल (धूनन Nutation) संस्कार करने से स्पष्ट अयनांश बनता है और कुण्डली के लग्न, दशम, ग्रह-स्पष्टादि में उसी का उपयोग उचित एवं आवश्यक है। राहु-फल (धूनन संस्कार) की सारणी सोदाहरण अन्यत्र दी गयी है, किन्तु इष्ट दिन का शुद्ध राहु-स्पष्ट जानने के लिए इष्ट वर्ष का शुद्ध पंचाङ्ग ढूँढ़ना पड़ताहै। इस कठिनाई से बचने के लिए यहाँ गत सन् १८०० से आगामी सन् २००० ई० के २०० वर्षों के लिए निरयण राहु की सारणी दी जा रही है जिसकी सहायता से पाठकगण उक्त अवधि के किसी भी दिन का शुद्ध निरयण राहु-स्पष्ट सहज ही ज्ञात कर सकते हैं। राहु स्पष्ट ज्ञात हो जाने पर उसके द्वारा इसी पुस्तक की सारणी सं० ४ से राहुफल (धूनन-सस्कार) मालूम कर लीजिए। उसका इष्ट दिन के मध्यम अयनांश में संस्कार करने से स्पष्ट अयनांश ज्ञात हो जायेगा। दृश्य पंचांगों के निरयण ग्रहादि में यही स्पष्ट अयनांश युक्त करने से उनका शुद्ध सायन भोग प्राप्त होगा। स्पष्ट अयनांश सारणी सं० ३ में सन् १८७० ई० से सन् १९७० ई० तक के प्रत्येक वर्ष की १ जनवरी का स्पष्ट अयनांश दिया गया है। उसके आगे की सारणी भी पाठकों के हितार्थ प्रकाशित की जा रही है जिसमें सन् १९७० ई० से सन् २००५ ई० तक के प्रत्येक वर्षारम्भ (१ जनवरी) का स्पष्ट (धूननसंस्कृत) अयनांश दिया गया है। इस सारणी का उपयोग एवं उदाहरण भी इसी पुस्तक में दिया गया है; तदनुसार पाठक इसके द्वारा भी कार्य-सम्पादन कर सकते हैं।

राहु-सारणी का विवरण और उपयोग-विधि—सारणी के क्रमशः तीन खानों में ईस्वी सन् १९०० से लेकर सन् २००० तक के प्रत्येक वर्ष, अंग्रेजी मास और दिनांक के सामने अंश, कला और कला का दसवाँ भाग दशमलव के रूप में दिये गये हैं। प्लुत वर्षों (Leap years) को ताराङ्कित (* चिह्न से युक्त) कर दिया गया है। अब, जिस वर्ष, मास के अभीष्ट दिनांक(तारीख) का राहु स्पष्ट करना हो, उस वर्ष, मास और दिनांक के अंशादि सारणी के उक्त खानों से लेकर उन्हें यथारीति जोड़ दीजिए; बस, उस वर्ष मास के अभीष्ट दिन(तारीख) का शुद्ध राहु-स्पष्ट ज्ञात हो जायेगा; किन्तु प्लुत वर्ष में केवल जनवरी फरवरी के दो मासों का राहु-स्पष्ट करने के लिए निम्नलिखित दो बातों को ध्यान में रखना चाहिये।

१. दूसरे खाने में हरेक अंग्रेजी मास के दिनांक के सामने जो अंशादि दिए गये हैं, वे सामान्य वर्ष के क्रमशः सब मासों के लिए हैं तथा वे ही प्लुत-वर्ष के मार्च से दिसम्बर तक के दस मासों के लिए भी हैं; किन्तु सामान्य वर्ष की जनवरी फरवरी में ० दिनांक के अंशादि प्लुत-वर्ष की जनवरी फरवरी में १ दिनांक के हैं। इसीलिए इन मासों के सामने और प्लुत के नीचे १ मुद्रित किया गया है तथा तीसरे खाने में ० दिन के लिए २°-०′·० अंश दिये गये हैं। अब किसी प्लुत-वर्ष की जनवरी फरवरी की १ ता. का राहु-स्पष्ट करना हो तो प्लुत-वर्ष के अंशादि तथा जनवरी फरवरी के सामने प्लुत के नीचे १ दिनांक के अंशादि तथा तीसरे खाने के ० दिन के २°-०′·० इन तीनों को जोड़ने से अभीष्ट जनवरी या फरवरी मास की १ ता० का राहु स्पष्ट ज्ञात होगा।

२. इन दो मासों को १ ता० के आगे किसी तारीख का राहु-स्पष्ट करना हो तो पूर्ववत् क्रिया कीजिए; किंतु उसमें ० दिन के २ अंश मत जोडिये, उसके बजाय इष्ट दिनांक (तारीख) में १ कम करके शेष दिन-संख्या के अंशादि तीसरे खाने से लेकर जोड़ दीजिए ; बस, इष्ट दिनांक (तारीख) का शुद्ध राहु-स्पष्ट ज्ञात हो जायेगा। आगे दिए गये उदाहरणों से यह सब प्रक्रिया और भी अच्छी तरह समझ में आ जायेगी।

उदाहरण १—ता. १ जनवरी १९७२ का राहु स्पष्ट करना है। सारणी में—

सन् १९७२ के सामने अंशादि २६३°-९′·६ है। सन् १९७२ प्लुत वर्ष है; अतः जनवरी मास
के प्लुत के नीचे १ दिनांक ,, १८ -०·० तथा
० ,, ,, २ -० ० तीनों को जोड़ दिया, तब
सन् १९७२ को जनवरी के १ ,, ,, २८३°-९′·६ अंशादि राहु स्पष्ट हुआ,

अंशों में ३० का भाग देने से राश्यादि ९-१३°-९′·६ निरयण राहु-स्पष्ट हो गया।

उदाहरण २—ता. २० फरवरी सन् १९७२ ई० का राहु स्पष्ट करना है।
सन् १९७२ के अंशादि २६३ -९′ ·६ है, सन् १९७२ प्लुत वर्ष है। अतः फरवरी मास के सामने
प्लुतके नीचे१ दिनांकके ,, १६ -२१ ·४ लिया तथा इष्ट दिनांक २० में १ कम कर
तीसरे खाने से १९ ,, ,, ० -५९ ·६ लिया, सबको जोड़ने से

सन्१९७२की फरवरी २० को २८०°-३०′·६ अंशादि राहु स्पष्ट हुआ। अंश में ३० का भाग देने से राश्यादि ९-१०°-३०′·६ निरयण राहु स्पष्ट हो गया।

उदाहरण ३—ता० २१ जुलाई सन् १९६४ ई० का राहु स्पष्ट करना है ; अतः सारणी से क्रमशः वर्ष, मास और दिनांक के अंशादि लेकर जोड़ा—

सन् ११६४ के लिये ५८°-००′·२
जुलाई ,, ८ -२४′·५
ता० २१ ,, ० -५३′·३

योगफल = ६७°-१८′·० अंशादि राहु-स्पष्ट हुआ। अंश में ३० का भाग देने से राश्यादि २-७°-१८′·० निरयण राहु स्पष्ट हो गया।

इसी सारणी से सन् १८०० से १८९९ तक के किसी वर्ष की अभीष्ट तारीख का राहुस्पष्ट भी—सरलता से ज्ञात किया जा सकता है। इस सारणी से सन् १९०० से १९९९ तक के किसी वर्ष, मास, दिनाङ्क का जो राहु-स्पष्ट होगा, उसमें १३५°-२९′·१ और जोड़ दें तो वह १०० वर्ष पहले के उसी वर्ष मास दिनाङ्क का राहु स्पष्ट हो जायेगा। जैसे, उपर्युक्त तीसरे उदाहरण में २१ जुलाई सन् १९६४ का राहु स्पष्ट अंशादि ६७ -१८·० हुआ है, उसमें

१३५-२९·१ और जोड़ देने पर
अंशादि २०२-४७·१ सन् १८६४ की २१जुलाई

का राहु स्पष्ट हुआ। अंश में ३० का भाग देने से राश्यादि ६-२२ -४७′·१ उक्त ता. का निरयण राहु स्पष्ट हो गया। सारांश यह है कि सन् १८०० से १८९९ के अन्तर्गत जिस वर्ष मास दिन का राहु स्पष्ट करना हो, उस वर्ष में १०० जोड़कर उसके द्वारा इस सारणी से तत्सम्बन्धी मास दिन का राहु स्पष्ट कीजिए—फिर उसमें १३५°-२९′·१ और जोड़ दीजिये ; बस, आपकी अभीष्ट तारीख माह सन् का राहु स्पष्ट हो जायेगा।

बिना सारणी के अयनांश-गणित की श्लोकबद्ध रीति—

खवाष्टभूम्यून १८०० शकात्खशैलैः ७०
नगान्वभि ५० भाग कलादि लब्ध्योः।
यदंतरं तत्सहिता द्विहस्ता २२
नवाश्विदस्त्रा २९ अयनांश संज्ञा ॥

अर्थ—इष्ट शक में १८०० घटाओ, शेष को दो स्थान में लिखो। एक स्थान में ७० का भाग देकर अंशादि फल लाओ; दूसरे स्थान में ५० का भाग देकर कलादि फल लाओ। अंशादि फल में कलादि फल को घटा दो; जो बचे, उसमें २२°-९'-२९' जोड़ने से इष्ट शक की मेष-संक्रान्ति के दिन का अयनांश होता है।

उदाहरण—ता० १३ अप्रैल सन् १९६४ ई०, शके १८८६ का अयनांश-साधन करना है; अतः इष्ट शक १८८६ में १८०० घटाया तो शेष रहा ८६ ÷ ७० लब्धि १°, शेष १६ × ६० = ९६० ÷ ७० लब्धि १३', शेष ५० × ६० = ३००० ÷ ७० लब्धि ४२'', शेष ६० × ६० = ३६०० ÷ ७० लब्धि ५१''' ∴ अंशादि फल हुआ १°-१३'-४२''-५१''' पुनः कलादि फल के लिए ८६ ÷ ५० लब्धि १', शेष ३६ × ६० = २१६० ÷ ५० लब्धि ४३'', शेष १० × ६० = ६०० ÷ ५० लब्धि १२''' ∴ कलादि फल हुआ १'-४३''-१२''' अब—

अंशादि फल १°-१३'-४२''-५१''' में
कलादि फल— १–४३–१२ घटाया तो
शेष १-११-५९-३९ रहा; उसमें
+ २२-९ -२९- ० जोड़ने से उपर्युक्त मेष-संक्रान्ति-दिन का

अयनांश = २३°-२१'-२८''-३९''' ज्ञात हुआ।

मेष-संक्रान्ति से आगे इष्ट दिन का अयनांश-ज्ञान—

सूर्यांशकादि १० गुणिता विभाजिता
धरातुरंगैः ७१ इह यत्फलं स्यात्।
तेनान्विता मेषदिनायनांशा भवन्ति
तेऽभीष्ट दिनेऽयनांशाः ॥

इष्ट सूर्य के अंशादि भोग को १० से गुणा करें, गुणनफल में ७१ का भाग दें; जो विकला एवं प्रतिविकला फल उपलब्ध हों, उन्हें मेष-संक्रान्ति-दिन के अयनांश में युक्त करने से इष्ट दिन का अयनांश होता है। सरलता के लिये इष्ट सूर्य के भोगांश में ७ का भाग देकर भी स्वल्पान्तर से विकलादि फल ला सकते हैं और उसके द्वारा इष्ट दिन का मध्यम अयनांश-साधन कर सकते हैं। उसमें राहु-फल का (धनन -संस्कार करने से इष्ट दिन का स्पष्ट (True) अयनांश ज्ञात हो जायेगा।

उदाहरण—ता. २१ जुलाई सन् १९६४ का अयनांश ज्ञात करना है। उस दिन सूर्य का राश्यादि भोग ३-४ ५३'-५०' यानी लगभग ३ राशि ५ अंश है। १ राशि

❀ वार्षिक स्पष्ट अयनांश-सारणी ❀
[प्रतिवर्ष ता. १ जनवरी का स्पष्ट (True) अयनांश]

	°	'	''
१९७०	२३	२६	२१·०
७१	२३	२७	१६·५
★७२	२३	२८	१०·९
७३	२३	२९	३·९
७४	२३	२९	५४·६
७५	२३	३०	४४·२
★७६	२३	३१	३१·६
१९७७	२३	३२	१७·४
७८	२३	३३	२·२
७९	२३	३[illegible]	४६·५
★८०	२३	३४	३१·१
१९८१	२३	३५	१६·७
८२	३	३६	४·०
८३	२३	३६	५३·२
★८४	२३	३७	४४·०
८५	२३	३८	३६·९
१९८६	२३	३९	३१·२
८७	२३	४०	२६·३
★८८	२३	४१	२२·४
८९	२३	४२	१८·३
९०	२३	४३	१३·४
१९९१	२३	४४	७·३
★९२	२३	४४	५९·६
९३	२३	४५	५०·१
९४	२३	४६	३९·८
९५	२३	४७	२५·२
★९६	२३	४८	१०·५
१९९७	२३	४८	५५·१
९८	२३	४९	३९·५
९९	२३	५०	२४·५
★२०००	२३	५१	१०·७
२००१	२३	५१	५८·५
२	२३	५२	४८·३
३	२३	५३	४०·१
★४	२३	५४	३३·६
५	२३	५५	२८·२

★ तारांकित वर्ष प्लुत वर्ष हैं

में ३० अंश होते हैं, अतः ३ रा. को ३० से गुणा किया तो ९० अंश हुये उसमें ५ अंश जोड़ने से इष्ट सूर्य का भोगांश ९५° हुआ। उसमें ७ का भाग देने से विकलादिफल १३''-३४''' प्राप्त हुआ इसे पूर्वोपलब्ध गत मेष संक्रान्ति-दिन के अयनांश २३°-२१'-२८''-३९''' में जोड़ से इष्ट दिन का मध्यम अयनांश २३°-२१'-४२''-१३''' हुआ। राहु-स्पष्ट के उदाहरण संख्या-३ में इस ता० (२१ जुलाई सन् १९६४) का राहु-भोग राश्यादि २-७°-१८' ज्ञात हुआ है। इस पुस्तक की सारणी-सं० ४ में राहु के २ रा. ७° का धनन-संस्कार ऋण—१७' विकला दिया गया है। अतः उपर्युक्त मध्य अयनांश २३°-२१'-४२''·२ में १७'' घटा दिया तो शेष २३°-२१'-२५''·२ उक्त तारीख २१ जुलाई सन् १९६४ का स्पष्ट (True) अयनांश ज्ञात हुआ।

तुलना—इस पुस्तक के पृष्ठ ११ पर अयनांश-सारणी सं. १ में ता. १ जनवरी १९६४ का अयनांश २३°-२१'-१५'' तथा सारणी सं० २ में ता० २१ जुलाई का अयन-गतिफल २७''·८ दिया गया है; दोनों को जोड़ने पर २३° २१'-४२''·८ उक्त २१ जुलाई सन् १९६४ का मध्यम अयनांश हुआ। उपर्युक्त श्लोक की रीति से मध्यम अयनांश २३°-२१'-४२''·२ आया है, अन्तर ०''·६ उपेक्ष्य है।

२ इस पुस्तक के पृष्ठ १२ पर स्पष्ट अयनांश-सारणी सं०-३ में सन् १९६४ का स्पष्ट अयनांश २३°-२०'-५८'' छपा है। उसमें ता० २१ जुलाई की उपर्युक्त अयन-गति २७''·८ विकला जोड़ देने से २३-२१-२५·८ उक्त ता. २१-७-'६४ का स्पष्ट (True) अयनांश हुआ। यहाँ भी अन्तर ०''·६ होने से उपेक्ष्य है।

अतएव, पाठक जिस तरह से चाहें, अभीष्ट तारीख का स्पष्ट अयनांश जान सकते हैं।

राशि		० मेष ♈				१ वृषभ ♉				२ मिथुन ♊			
		सांपा. काल			गति	सपा. काल			गति	सांपा. काल			गति
अंश	क.	घं.	मि.	से.	से.	घं.	मि.	से.	से.	घं.	मि.	से.	से.
०		१	२६	३	२२६	३	२३	२६	२४५	५	३०	३६	२६१
१		१	२९	४१	२२७	३	२७	३१	२४६	५	३४	५७	२६१
२		१	३३	३६	२२६	३	३१	३७	२४८	५	३९	१८	२६१
३		१	३७	२२	७६	३	३५	४५	८२	५	४३	३९	८७
३	२०′	१	३८	३८	१५२	३	३७	७	१६५	५	४५	६	१७५
४		१	४१	१०	२२८	३	३९	५२	२४८	५	४८	१	२६१
५		१	४४	५८	२२९	३	४४	०	२४९	५	५२	२२	२६२
६		१	४८	४७	१५२	३	४८	९	१६६	५	५६	४४	१७४
६	४०′	१	५१	१९	७६	३	५०	५५	८४	५	५९	३८	८७
७		१	५२	३५	२३०	३	५२	१९	२५०	६	१	५	२६२
८		१	५६	२५	२३१	३	५६	२९	२५१	६	५	२७	२६२
९		२	०	१६	२३१	४	०	४०	२५२	६	९	४९	२६२
१०		२	४	७	२३१	४	४	५२	२५२	६	१४	१०	२६२
११		२	७	५८	२३२	४	९	४	२५३	६	१८	३१	२६२
१२		२	११	५०	२३३	४	१३	१७	२५३	६	२२	५३	२६२
१३		२	१५	४३	७८	४	१७	३०	८५	६	२७	१४	८७
१३	२०′	२	१७	१	१५५	४	१८	५५	१७०	६	२८	४१	१७५
१४		२	१९	३६	२३४	४	२१	४५	२५४	६	३१	३६	२६१
१५		२	२३	३०	२३५	४	२५	५९	२५६	६	३५	५७	२६०
१६		२	२७	२५	१५७	४	३०	१५	१७०	६	४०	१६	१७३
१६	४०′	२	३०	२	७९	४	३३	५	८५	६	४३	९	८७
१७		२	३१	२१	२३६	४	३४	३०	२५७	६	४४	३६	२६०
१८		२	३५	१७	२३६	४	३८	४७	२५७	६	४८	५६	२६०
१९		२	३९	१३	२३८	४	४३	४	२५७	६	५३	१६	२६०
२०		२	४३	११	२३८	४	४७	२१	२५८	६	५७	३५	२५९
२१		२	४७	९	२३९	४	५१	३९	२५८	७	१	५४	२५८
२२		२	५१	८	२४०	४	५५	५७	२५९	७	६	१२	२५८
२३		२	५५	८	८०	५	०	१६	८६	७	१०	३०	८६
२३	२०′	२	५६	२८	१६०	५	१	४२	१७३	७	११	५६	१७२
२४		२	५९	८	२४१	५	४	३५	२५९	७	१४	४८	२५७
२५		३	३	९	२४२	५	८	५४	२६०	७	१९	६	२५६
२६		३	७	११	१६२	५	१३	१४	१७३	७	२३	२१	१७१
२६	४०′	३	९	५३	८१	५	१६	७	८७	७	२६	१२	८५
२७		३	११	१४	२४३	५	१७	३४	२६०	७	२७	३७	२५६
२८		३	१५	१७	२४४	५	२१	५४	२६१	७	३१	५३	२५५
२९		३	१९	२१	२४५	५	२६	१५	२६१	७	३६	८	२५४
३०		३	२३	२६		५	३०	३६		७	४०	२२	
१		१	५७	२३	××	२	७	१०	××	२	९	४६	××
२		१	५७	४		२	६	४१		२	९	२५	

राशि		३ कर्क ♋				४ सिंह ♌				५ कन्या ♍			
		सांपा. काल			गति	सांपा. काल			गति	सांपा. काल			गति
अंश	क.	घं.	मि.	से.	से.	घं.	मि.	से.	से.	घं.	मि.	से.	से.
०		७	४०	२२	२५४	९	४२	२०	२३४	११	३५	१३	२२०
१		७	४४	३६	२५३	९	४६	१४	२३२	११	३८	५३	२२१
२		७	४८	४९	२५३	९	५०	६	२३२	११	४२	३४	२२०
३		७	५३	२	८४	९	५३	५८	७७	११	४६	१४	७४
३	२०′	७	५४	२६	१६८	९	५५	१५	१५४	११	४७	२८	१४६
४		७	५७	१४	२५२	९	५७	४९	२३१	११	४९	५४	२२१
५		८	१	२६	२५०	१०	१	४०	२३०	११	५३	३५	२२०
६		८	५	३६	१६७	१०	५	३०	१५२	११	५७	१५	१४७
६	४०′	८	८	२३	८३	१०	८	२	७७	११	५९	४२	७३
७		८	९	४६	२५०	१०	९	१९	२२९	१२	०	५५	२२०
८		८	१३	५६	२४८	१०	१३	८	२२८	१२	४	३५	२२०
९		८	१८	४	२४८	१०	१६	५६	२२८	१२	८	१५	२२१
१०		८	२२	१२	२४७	१०	२०	४४	२२७	१२	११	५६	२२०
११		८	२६	१२	२४७	१०	२४	३१	२२७	१२	१५	३६	२२०
१२		८	३०	२६	२४५	१०	२८	१८	२२६	१२	१९	१६	२२१
१३		८	३४	३१	८२	१०	३२	४	७५	१२	२२	५७	७४
१३	२०′	८	३५	५३	१६४	१०	३३	१९	१५१	१२	२४	११	१४७
१४		८	३८	३७	२४४	१०	३५	५०	२२५	१२	२६	३८	२२१
१५		८	४२	४१	२४४	१०	३९	३५	२२५	१२	३०	१९	२२१
१६		८	४६	४५	१६२	१०	४३	२०	१५०	१२	३४	०	१४७
१६	४०′	८	४९	२७	८१	१०	४५	५०	७४	१२	३६	२७	७४
१७		८	५०	४८	२४२	१०	४७	४	२२४	१२	३७	४१	२२१
१८		८	५४	५०	२४१	१०	५०	४८	२२४	१२	४१	२२	२२२
१९		८	५८	५१	२४१	१०	५४	३२	२२३	१२	४५	४	२२२
२०		९	२	५२	२४०	१०	५८	१५	२२३	१२	४८	४६	२२२
२१		९	६	५२	२३९	११	१	५८	२२३	१२	५२	२८	२२२
२२		९	१०	५१	२३८	११	५	४१	२२२	१२	५६	१०	२२३
२३		९	१४	४९	८०	११	९	२३	७४	१२	५९	५३	७४
२३	२०′	९	१६	९	१५९	११	१०	३७	१४८	१३	१	७	१४९
२४		९	१८	४८	२३७	११	१३	५	२२२	१३	३	३६	२२४
२५		९	२२	४५	२३६	११	१६	४७	२२२	१३	७	२०	२२४
२६		९	२६	४१	१५८	११	२०	२१	१४७	१३	११	४	१४९
२६	४०′	९	२९	१९	७८	११	२२	५६	७४	१३	१३	३३	७५
२७		९	३०	३७	२३५	११	२४	१०	२२१	१३	१४	४८	२२४
२८		९	३४	३२	२३५	११	२७	५१	२२१	१३	१८	३२	२२५
२९		९	३८	२७	२३३	११	३१	३२	२२१	१३	२२	१७	२२६
३०		९	४२	२०		११	३५	१३		१३	२६	३	
१		२	१	५८	××	१	५२	५३	××	१	५०	५०	××
२		२	१	३८		१	५२	३४		१	५०	३२	

राशि		६ तुला ♎				७ वृश्चिक ♏				८ धनु ♐			
		सांपा. काल			गति	सांपा. काल			गति	सांपा. काल			गति
अंश	क.	घं.	मि.	से.	से.	घं.	मि.	से.	से.	घ.	मि.	से.	से.
०		१३	२६	३	२२६	१५	२३	२६	२४५	१७	३०	३६	२६१
१		१३	२९	४१	२२७	१५	२७	३१	२४६	१७	३४	५७	२६१
२		१३	३३	३६	२२६	१५	३१	३७	२४८	१७	३९	१८	२६१
३		१३	३७	२२	७६	१५	३५	४५	८२	१७	४३	३९	८७
३	२०′	१३	३८	३८	१५२	१५	३७	७	१६५	१७	४५	६	१७५
४		१३	४१	१०	२२८	१५	३९	५२	२४८	१७	४८	१	२६१
५		१३	४४	५८	२२९	१५	४४	०	२४९	१७	५२	२२	२६२
६		१३	४८	४७	१५२	१५	४८	९	१६६	१७	५६	४४	१७४
६	४०′	१३	५१	१९	७६	१५	५०	५५	८४	१७	५९	३८	८७
७		१३	५२	३५	२३०	१५	५२	१९	२५०	१८	१	५	२६२
८		१३	५६	२५	२३१	१५	५६	२९	२५१	१८	५	२७	२६२
९		१४	०	१६	२३१	१६	०	४०	२५२	१८	९	४९	२६२
१०		१४	४	७	२३१	१६	४	५२	२५२	१८	१४	१०	२६२
११		१४	७	५८	२३२	१६	९	४	२५३	१८	१८	३१	२६२
१२		१४	११	५०	२३३	१६	१३	१७	२५३	१८	२२	५३	२६२
१३		१४	१५	४३	७८	१६	१७	३०	८५	१८	२७	१४	८७
१३	२०′	१४	१७	१	१५५	१६	१८	५५	१७०	१८	२८	४१	१७५
१४		१४	१९	३६	२३४	१६	२१	४५	२५४	१८	३१	३६	२६१
१५		१४	२३	३०	२३५	१६	२५	५९	२५६	१८	३५	५७	२६०
१६		१४	२७	२५	१५७	१६	३०	१५	१७०	१८	४०	१६	१७३
१६	४०′	१४	३०	२	७९	१६	३३	५	८५	१८	४३	९	८७
१७		१४	३१	२१	२३६	१६	३४	३०	२५७	१८	४४	३६	२६०
१८		१४	३५	१७	२३६	१६	३८	४७	२५७	१८	४८	५६	२६०
१९		१४	३९	१३	२३८	१६	४३	४	२५७	१८	५३	१६	२६०
२०		१४	४३	११	२३८	१६	४७	२१	२५८	१८	५७	३५	२५९
२१		१४	४७	९	२३९	१६	५१	३९	२५८	१९	१	५४	२५८
२२		१४	५१	८	२४०	१६	५५	५७	२५९	१९	६	१२	२५८
२३		१४	५५	८	८०	१७	०	१६	८६	१९	१०	३०	८६
२३	२०′	१४	५६	२८	१६०	१७	१	४२	१७३	१९	११	५६	१७२
२४		१४	५९	८	२४१	१७	४	३५	२५९	१९	१४	४८	२५७
२५		१५	३	९	२४२	१७	८	५४	२६०	१९	१९	६	२५६
२६		१५	७	११	१६२	१७	१३	१४	१७३	१९	२३	२१	१७१
२६	४०′	१५	९	५३	८१	१७	१६	७	८७	१९	२६	१२	८५
२७		१५	११	१४	२४३	१७	१७	३४	२६०	१९	२७	३७	२५६
२८		१५	१५	१७	२४४	१७	२१	५४	२६१	१९	३१	५३	२५५
२९		१५	१९	२१	२४५	१७	२६	१५	२६१	१९	३६	८	२५४
३०		१५	२३	२६		१७	३०	३६		१९	४०	२२	
१		१	५७	२३	××	२	७	१०	××	२	९	४६	××
२		१	५७	४		२	६	४१		२	९	२५	

राशि		९ मकर ♑				१० कुम्भ ♒				११ मीन ♓			
		सांपा. काल			गति	सांपा. काल			गति	सांपा. काल			गति
अंश	क.	घ.	मि.	से.	से.	घ.	मि.	से.	से.	घ.	मि.	से.	से.
०		१९	४०	२२	२५४	२१	४२	२०	२३४	२३	३५	१३	२२०
१		१९	४४	३६	२५३	२१	४६	१४	२३२	२३	३८	५३	२२१
२		१९	४८	४९	२५३	२१	५०	६	२३२	२३	४२	३४	२२०
३		१९	५३	२	८४	२१	५३	५८	७७	२३	४६	१४	७४
३	२०′	१९	५४	२६	१६८	२१	५५	१५	१५४	२३	४७	२८	१४६
४		१९	५७	१४	२५२	२१	५७	४९	२३१	२३	४९	५४	२२१
५		२०	१	२६	२५०	२२	१	४०	२३०	२३	५३	३५	२२०
६		२०	५	३६	१६७	२२	५	३०	१५२	२३	५७	१५	१४७
६	४०′	२०	८	२३	८३	२२	८	२	७७	२३	५९	४२	७३
७		२०	९	४६	२५०	२२	९	१९	२२९	०	०	५५	२२०
८		२०	१३	५६	२४८	२२	१३	८	२२८	०	४	३५	२२०
९		२०	१८	४	२४८	२२	१६	५६	२२८	०	८	१५	२२१
१०		२०	२२	१२	२४७	२२	२०	४४	२२७	०	११	५६	२२०
११		२०	२६	१२	२४७	२२	२४	३१	२२७	०	१५	३६	२२०
१२		२०	३०	२६	२४५	२२	२८	१८	२२६	०	१९	१६	२२१
१३		२०	३४	३१	८२	२२	३२	४	७५	०	२२	५७	७४
१३	२०′	२०	३५	५३	१६४	२२	३३	१९	१५१	०	२४	११	१४७
१४		२०	३८	३७	२४४	२२	३५	५०	२२५	०	२६	३८	२२१
१५		२०	४२	४१	२४४	२२	३९	३५	२२५	०	३०	१९	२२१
१६		२०	४६	४५	१६२	२२	४३	२०	१५०	०	३४	०	१४७
१६	४०′	२०	४९	२७	८१	२२	४५	५०	७४	०	३६	२७	७४
१७		२०	५०	४८	२४२	२२	४७	४	२२४	०	३७	४१	२२१
१८		२०	५४	५०	२४१	२२	५०	४८	२२४	०	४१	२२	२२२
१९		२०	५८	५१	२४१	२२	५४	३२	२२३	०	४५	४	२२२
२०		२१	२	५२	२४०	२२	५८	१५	२२३	०	४८	४६	२२२
२१		२१	६	५२	२३९	२३	१	५८	२२३	०	५२	२८	२२२
२२		२१	१०	५१	२३८	२३	५	४१	२२२	०	५६	१०	२२३
२३		२१	१४	४९	८०	२३	९	२३	७४	०	५९	५३	७४
२३	२०′	२१	१६	९	१५९	२३	१०	३७	१४८	१	१	७	१४९
२४		२१	१८	४८	२३७	२३	१३	५	२२२	१	३	३६	२२४
२५		२१	२२	४५	२३६	२३	१६	४७	२२२	१	७	२०	२२४
२६		२१	२६	४१	१५८	२३	२०	२१	१४७	१	११	४	१४९
२६	४०′	२१	२९	१९	७८	२३	२२	५६	७४	१	१३	३३	७५
२७		२१	३०	३७	२३५	२३	२४	१०	२२१	१	१४	४८	२२४
२८		२१	३४	३२	२३५	२३	२७	५१	२२१	१	१८	३२	२२५
२९		२१	३८	२७	२३३	२३	३१	३२	२२१	१	२२	१७	२२६
३०		२१	४२	२०		२३	३५	१३		१	२६	३	
१		२	१	५८	××	१	५२	५३	××	१	५०	५०	××
२		२	१	३८		१	५२	३४		१	५०	३२	

१. सांपातिक काल (मध्यम सायन सूर्य) लग्न-भोग। २. सावन काल (घड़ी के समय) का लग्न-भोग।

सन् १९११ से सन् २००५ ई० तक के साम्पा. काल कोष्ठक

वाराणसी (पूर्व-रेखांश ८३°–०) के प्रत्येक वर्ष की ता. १ जनवरी के आरम्भ (मध्यरात्रि स्था. ० घं. ० मि.) का साम्पातिक काल

ई. सन्	सांपा. काल घं.	मि.	से.
१९११	६	३७	११
१९१२	६	३६	१४
१९१३	६	३९	१४
१९१४	६	३८	१७
१९१५	६	३७	२०
१९१६	६	३६	२३
१९१७	६	३९	२२
१९१८	६	३८	२५
१९१९	६	३७	२८
१९२०	६	३६	३०
१९२१	६	३९	२९
१९२२	६	३८	३२
१९२३	६	३७	३४
१९२४	६	३६	३५
१९२५	६	३९	३५
१९२६	६	३८	३८
१९२७	६	३७	४०
१९२८	६	३६	४३
१९२९	६	३९	४२
१९३०	६	३८	४५
१९३१	६	३७	४८
१९३२	६	३६	५२
१९३३	६	३९	५१
१९३४	६	३८	५४
१९३५	६	३७	५७
१९३६	६	३७	०
१९३७	६	३९	५९
१९३८	६	३९	२
१९३९	६	३८	४
१९४०	६	३७	७
१९४१	६	४०	६
१९४२	६	३९	८
१९४३	६	३८	११
१९४४	६	३७	१३
१९४५	६	४०	१५
१९४६	६	३९	१५
१९४७	६	३८	२८
१९४८	६	३७	२०
१९४९	६	४०	२०
१९५०	६	३९	२३
१९५१	६	३८	२६
१९५२	६	३७	२९
१९५३	६	४०	२९
१९५४	६	३९	३१
१९५५	६	३८	३४
१९५६	६	३७	३७
१९५७	६	४०	३६
१९५८	६	३९	३९
१९५९	६	३८	४१
१९६०	६	३७	४३
१९६१	६	४०	४३
१९६२	६	३९	४६
१९६३	६	३८	४८
१९६४	६	३७	५१
१९६५	६	४०	५०
१९६६	६	३९	५३
१९६७	६	३८	५६
१९६८	६	३७	५९
१९६९	६	४०	५८
१९७०	६	४०	६०
१९७१	६	३९	३
१९७२	६	३८	६
१९७३	६	४१	५
१९७४	६	४०	८
१९७५	६	३९	११
१९७६	६	३८	१३
१९७७	६	४१	१३
१९७८	६	४०	१५
१९७९	६	३९	१८
१९८०	६	३८	२१
१९८१	६	४१	२०
१९८२	६	४०	२३
१९८३	६	३९	२५
१९८४	६	३८	२८
१९८५	६	४१	२७
१९८६	६	४०	३०
१९८७	६	३९	३३
१९८८	६	३८	३५
१९८९	६	४१	३५
१९९०	६	४०	३७
१९९१	६	३९	४०
१९९२	६	३८	४३
१९९३	६	४१	४२
१९९४	६	४०	४५
१९९५	६	३९	४८
१९९६	६	३८	५०
१९९७	६	४१	४९
१९९८	६	४०	५२
१९९९	६	३९	५५
२०००	६	३८	५८
२००१	६	४१	५७
२००२	६	४१	०
२००३	६	४०	२
२००४	६	३९	५
२००५	६	४२	४

प्रतिमास के आरंभ का सांपातिक काल

मास प्रवेश +	साध वर्ष + घं.	मि.	से.	प्लुत वर्ष + घं.	मि.	से.
जनवरी	०	०	०	०	०	०
फरवरी	२	२	१३	२	२	१३
मार्च	३	५२	३७	३	५६	३३
अप्रैल	५	५४	५०	५	५८	४७
मई	७	५३	७	७	५७	३
जून	९	५५	२०	९	५९	१६
जुलाई	११	५३	३६	११	५७	३३
अगस्त	१३	५५	५०	१३	५९	४६
सितम्बर	१५	५८	३	१६	२	०
अक्टूबर	१७	५६	२०	१८	०	१६
नवम्बर	१९	५८	३३	२०	२	२९
दिसम्बर	२१	५६	५०	२२	०	४६

सापा. का. दैनिक ता. प्रवेश का सांप. का +

ता.	घं.	मि.	से.
१	०	०	०
२	०	३	५७
३	०	७	५३
४	०	११	५०
५	०	१५	४६
६	०	१९	४३
७	०	२३	३९
८	०	२७	३६
९	०	३१	३२
१०	०	३५	२९
११	०	३९	२६
१२	०	४३	२२
१३	०	४७	१९
१४	०	५१	१५
१५	०	५५	१२
१६	०	५९	८
१७	१	३	५
१८	१	७	१
१९	१	१०	५७
२०	१	१४	५५
२१	१	१८	५१
२२	१	२२	४८
२३	१	२६	४४
२४	१	३०	४१
२५	१	३४	३७
२६	१	३८	३४
२७	१	४२	३०
२८	१	४६	२७
२९	१	५०	२४
३०	१	५४	२०
३१	१	५८	१७

कोष्ठक "अ"

घं. / मि. / से.	मि. / से. / प्रसे	से. / प्रसे / —	प्रसे / — / —
१	०	९	५१
२	०	१९	४२
३	०	२९	३४
४	०	३९	२५
५	०	४९	१६
६	०	५९	८
७	१	९	०
८	१	१८	५१
९	१	२८	४२
१०	१	३८	३४
११	१	४८	२५
१२	१	५८	१७
१३	२	८	८
१४	२	१८	०
१५	२	२७	५१
१६	२	३७	४२
१७	२	४७	३३
१८	२	५७	२५
१९	३	७	१६
२०	३	१७	८
२१	३	२६	५९
२२	३	३६	५०
२३	३	४६	४२
२४	३	५६	३३
२५	४	६	२५
२६	४	१६	१६
२७	४	२६	७
२८	४	३५	५९
२९	४	४५	५०
३०	४	५५	४२
३१	५	५	३३
३२	५	१५	२४
३३	५	२५	१६
३४	५	३५	७
३५	५	४४	५९
३६	५	५४	५०
३७	६	४	४१
३८	६	१४	३३
३९	६	२४	२४
४०	६	३४	१६
४१	६	४४	७
४२	६	५३	५८
४३	७	३	५०
४४	७	१३	४१
४५	७	२३	३२
४६	७	३३	२४
४७	७	४३	१५
४८	७	५३	७
४९	८	२	५८
५०	८	१२	४९
५१	८	२२	४१
५२	८	३२	३२
५३	८	४२	२४
५४	८	५२	१५
५५	९	२	६
५६	९	११	५८
५७	९	२१	४९
५८	९	३१	४०
५९	९	४१	३२
६०	९	५१	२३

कोष्ठक "ब"

घं. / मि. / से.	घं. / मि. / से.	मि. / से. / प्रसे	से. / प्रसे / —	प्रसे / — / —
१	०	५९	५०	१०
२	१	५९	४०	२०
३	२	५९	३०	३१
४	३	५९	२०	४१
५	४	५९	१०	५१
६	५	५९	१	१
७	६	५८	५१	१२
८	७	५८	४१	२२
९	८	५८	३१	३२
१०	९	५८	२१	४२
११	१०	५८	११	५२
१२	११	५८	२	३
१३	१२	५७	५२	१३
१४	१३	५७	४२	२३
१५	१४	५७	३२	३३
१६	१५	५७	२२	४४
१७	१६	५७	१२	५४
१८	१७	५७	३	४
१९	१८	५६	५३	१४
२०	१९	५६	४३	२५
२१	२०	५६	३३	३५
२२	२१	५६	२३	४५
२३	२२	५६	१३	५५
२४	२३	५६	४	५
२५	२४	५५	५४	१६
२६	२५	५५	४४	२६
२७	२६	५५	३४	३६
२८	२७	५५	२४	४६
२९	२८	५५	१४	५७
३०	२९	५५	५	७
३१	३०	५४	५५	१७
३२	३१	५४	४५	२७
३३	३२	५४	३५	३७
३४	३३	५४	२५	४८
३५	३४	५४	१५	५८
३६	३५	५४	६	८
३७	३६	५३	५६	१८
३८	३७	५३	४६	२८
३९	३८	५३	३६	३९
४०	३९	५३	२६	४९
४१	४०	५३	१६	५९
४२	४१	५३	७	९
४३	४२	५२	५७	२०
४४	४३	५२	४७	३०
४५	४४	५२	३७	४०
४६	४५	५२	२७	५०
४७	४६	५२	१८	०
४८	४७	५२	८	११
४९	४८	५१	५८	२१
५०	४९	५१	४८	३१
५१	५०	५१	३८	४१
५२	५१	५१	२८	५२
५३	५२	५१	१९	२
५४	५३	५१	९	१२
५५	५४	५०	५९	२२
५६	५५	५०	४९	३२
५७	५६	५०	३९	४३
५८	५७	५०	२९	५३
५९	५८	५०	२०	३
६०	५९	५०	१०	१३

कोष्ठक "स"

पूर्व रेखांश अं.	क.	+ या −	सेकण्ड
२६	४२	+	३७
२८	१३	+	३६
२९	४४	+	३५
३१	१६	+	३४
३२	४७	+	३३
३४	१८	+	३२
३५	४९	+	३१
३७	२१	+	३०
३८	५२	+	२९
४०	२३	+	२८
४१	५४	+	२७
४३	२६	+	२६
४४	५७	+	२५
४६	२८	+	२४
४८	०	+	२३
४९	३१	+	२२
५१	३	+	२१
५२	३४	+	२०
५४	५	+	१९
५५	३६	+	१८
५७	८	+	१७
५८	३९	+	१६
६०	१०	+	१५
६१	४२	+	१४
६३	१३	+	१३
६४	४४	+	१२
६६	१६	+	११
६७	४७	+	१०
६९	१८	+	९
७०	५०	+	८
७२	२१	+	७
७३	५२	+	६
७५	२३	+	५
७६	५५	+	४
७८	२६	+	३
७९	५७	+	२
८१	२९	+	१
८३	०	+	०
८४	३१	−	१
८६	३	−	२
८७	३४	−	३
८९	५	−	४
९०	३७	−	५
९२	८	−	६
९३	३९	−	७
९५	१०	−	८
९६	४२	−	९
९८	१३	−	१०
९९	४४	−	११

कोष्ठकों का विवरण और दृष्टान्त

कोष्ठक 'अ'—घड़ी के समय (सावन-काल) को सांपातिक काल में बदलने के लिये इस कोष्ठक के अनुसार संस्कार + धन करना चाहिये। यह संस्कार प्रति घंटे के लिये लगभग १० सेकेण्ड है; तथैव „ „ प्रति घटीके लिए१०विपल (९वि.५१प्र.वि.) है।

घड़ी के समय के २४ घंटों में सांपातिक काल का मान २४ घंटा ३ मिनट ५६·५५५३६३५२ सेकेण्ड = १·००२७३७९०९३ दिन है।

दृष्टान्त (१)—१० घं. १७ मि. का सांपातिक काल बनाइये।

	मि. से. प्र.से.
कोष्ठक 'अ' से संस्कार १० घंटों के लिये	१–३८–३४
+ १७ मिनट के लिये	०– २–४७–३३
सावन १० घं. १७ मि. का संस्कार	१–४१–२१–३३

	घं. मि. से.
घड़ी का समय	१० १७ ०
+ सांपातिक कालार्थ संस्कार	० १ ४१
१०घं.१७मि.का सांपातिक काल =	१० १८ ४१

कोष्ठक 'ब'—सांपातिक काल को घड़ी का समय बनाने के लिए यह कोष्ठक है। सांपातिक काल के २४ घंटों में घड़ी के समय का मान २३ घं.५६मि.४·०९०५४से. = ०.९९७२७ दिन है।

दृष्टान्त (२)—१५ घं. २० मि. ५० से. सांपातिक काल है; इसे घड़ी के समय में बदलिये।

घं. मि. से.		घं. मि. से. प्र.से.	
१५ ० ०	=	१४ ५७ ३२ ३३	कोष्ठक 'ब' से मिला
० २० ०	=	० १९ ५६ ४३ २५	„
० ० ५०	=	० ० ४९ ५१ ४८ ३१	„
१५ २० ५०	=	१५ १८ १९ ८ १३ ३१	

इस प्रकार सांपातिक काल १५ घं. २० मि. ५० से. के घड़ी का समय (सावन काल) १५ घं. १८ मि. १९ से. होता है।

पूर्व या पश्चिम रेखांश १°–३१′–१८″·६ के लिए सांपातिक काल की गति १ सेकेंड है एवं प्रति १° रेखांश के लिए सांपातिक काल की गति ०·६५७१ सेकेण्ड है।

१. उदाहरण—ता. ४-६-१९६३ ई. के दिन स्टैं. समय से घं. १० मि. १५ बजे काशी का सापांतिक काल क्या होगा ?

१९६३ ई० को १ जनवरी के प्रारम्भ-समय	घं. मि. से.
का सापांतिक काल	६ ३८ ४८
जून मास के लिए + (साधारण वर्ष के खाने में-से) लिया	९ ५५ २०
४ ता. के लिये लिया	० ११ ५०
सबको जोड़ा तो घंटादि	१६ ४५ ५८

यह सन् १९६३ के जून की ४ तारीख के प्रारम्भ का सापांतिक काल हुआ। देखिए, जंत्री सन् '६३ के पृष्ठ ३८ पर भी ता. ४ जून के सामने यही साम्पातिक काल दिया गया है। अब हमें स्टैं. समय घं. १० मि. १५ बजे काशी का साम्पातिक काल जानना है तो पहले १० घं. १५ मि. स्टै.टा. को काशी का स्थानिक समय बनाना होगा। स्टैं. टा. से काशी के स्थानिक समय का अन्तर सदैव २ मि. + होता है। अत: १० घं १५ मि. में २ मिनट जोड़ दिया तो काशी का स्थानिक समय घं. १० मि. १७ हुआ। इस स्थानिक समय को साम्पातिक काल में बदलने के लिए कोष्ठक "अ" से इस प्रकार संस्कार ज्ञात किया --

घं. मि. से.	संस्कार (कोष्ठक "अ")	मि, से., प्र. से.,
१० ० ०	के लिए	१ ३८ ३४
० १७ ०	,,	० २ ४८
१० १७ ०	,,	१ ४१ २२

	घं. मि. से.
अब ता. ४-६-१९६३ का साम्पातिक काल	१६ ४५ ५८
काशी का स्थानिक समय	+१० १७ ०
स्थानिक समय का संकार	+ ० १ ४१
सबका जोड़	घंटादि २७ ४ ३९

२७ घं. २४ घं. से अधिक है, अत: उसमें २४ घं. घटाकर शेष ३ घं ४ मि. ३९ से. 'इष्ट साम्पातिक काल' हुआ जिसे सक्षेप में पाश्चात्य ज्योतिषी R.A M C.कहते हैं।

२. इष्ट साम्पातिक काल पर से काशी का लग्न एवं दशम-साधन—उपरोक्त इष्ट साम्पातिक काल ३ घं. ४ मि. ३९ से. के द्वारा पहले हम लग्न निकालेंगे; फिर दशम। इष्ट साम्पातिक काल अथवा उससे निकटतम समय सारणी में कहां मिलता है, यह सबसे पहले देखना चाहिये। यहाँ इष्ट साम्पातिक काल ३ घं. ४ मि. ३९ से से निकट-तम समय ३-२-१३ काशी की लग्न-सारणी पृष्ठ १७ के जिस खाने में हमें मिला, उसके सिरे पर राशि कर्क और बायीं ओर आखीर में २७ अंश लिखा है; यानी ३घं. २मि. १३ से. कर्क राशि के २७ अंश का साम्पातिक काल है। इससे हमारा इष्ट साम्पातिक काल २ मिनट २६ सेकण्ड यानी (२ × ६० = १२० + २६ =) १४६ से. ज्यादा है। अत: १४६ से में कर्क राशि के २७ अंश के अतिरिक्त कितनी कला-विकला बीतेगी, यह निकालना है। २७ और २८ अंश के सां. कालों का अन्तर २७४ सेकेण्ड है जो २७ अंश के सां. काल की बगल में ही गति के खाने में अङ्कित है। चूंकि २७४ से. में १ अंश यानी ६० कला व्यतीत होती है तो १४६ से. में कितनी ? (२७४ से. : १४६ से. : ६० कला = ३१'-५८") इस अनुपात से ३१ कला ५८ विकला प्राप्त हुई। इसे कर्क के २७ अंश से युक्त कर देने पर लग्न राश्यादि ३-२७°-३१'-५८" स्पष्ट हुआ; किन्तु यहाँ स्मरणीय है कि सारणी सवा तेईस अंश (२३°-१५') को बनी है जबकि इष्ट दिन का स्पष्ट (True) अयनांश २३°-२०'-२९" है। (देखें गत पृष्ठ सं. १३ पर स्पष्ट अयनांश-साधन का उदाहरण) इष्ट दिन के अयनांश से सारणी का अयनांश ५'-२९" कम है, अत: इसे उपर्युक्त लग्न के २७°-३१'-५८" में घटा देने से स्पष्ट लग्न-राश्यादि ३-२७ -२६'-२९" हुआ।

इसी प्रकार दशम-सारणी से दशम स्पष्ट करें—

दशम		साम्पातिक काल	
०-२५°-०'-०"	—६०'	३ घं. ३ मि. ९ से.	—२४२ से.
०-२६ -० -०		३ घं. ७ मि. ११ से.	

३-४-३९
३-३-९
०-१-३० = (६० + ३० =) ९० सेकेण्ड

से. २४२ : ९० से. : : ६०' = २२'-१९"

	०-२५- ०- ०
	+ २२-१९
	०-२५-२२-१९
	— ५-२९
स्पष्ट दशम राश्यादि	०-२५-१६-५०

सन् १९५६ ई० से प्रत्येक वर्ष 'चिन्ताहरण जन्त्री' में काशी के प्रतिदिन का साम्पातिक काल दिया जा रहा है। अत: इन वर्षों के लिए आपको दैनिक साम्पातिक काल निकालने का श्रम नहीं करना होगा।

३. काशी से अन्यत्र का उदाहरण—बम्बई में ता० ४-६-१९६३ ई० के प्रारम्भ का साम्पा. काल क्या होगा ?

	घं. मि. से.
उस रोज वाराणसी का साम्पा काल	१६ ४५ ५८
बम्बई का रेखांश ७२°-५८' है,	
अत: कोष्ठक "स" के अनुसार संस्कार	+ ० ० ७
ता.४-६-१९६३ के प्रारम्भ का घण्टादि	१६ ४६ ५
बम्बई का साम्पातिक काल हुआ।	

इसी दिन स्टैं. टा. से. घं. १० मि. १५ बजे बम्बई में इष्ट साम्पातिक काल क्या होगा ?

इसके लिए हमें प्रथम स्टैं. टा. से बम्बई के स्थानिक समय का अन्तर जानना होगा। 'ज्योतिष-रहस्य' पृष्ठ ८ पर "देश-काल-सुबोधिनी तालिका" छपी है। उसके एक स्तम्भ में भारतीय मुख्य शहरों के स्थानिक समय का भा. स्टैं. टा. से ऋण या धन अन्तर दिया गया है। उसमें बम्बई के लिये यह अन्तर ऋण – ३८ मि. ४० से. है। अतः स्टैं. टा. १० घं. १५ मि. में ३८ मि. ४० से ऋण कर दिया तो शेष ९ घं. ३६ मि. २० से. बम्बई का स्थानिक समय हुआ। इसको साम्पातिक काल में बदलने के लिये कोष्ठक 'अ' से इस प्रकार संस्कार ज्ञात किया—

घं.	मि.	से.		संस्कार कोष्ठक 'अ' से. मि.	से.	प्र. से.
९	०	०	के लिये	१	२८	४२
०	३६	०	,,	०	५	५५
०	०	२०	,,	०	०	३
९	३६	२०	,, जोड़	१	३४	४०

अब ता० ४-६-१९६३ के ० बजे का साम्पातिक काल

	घं०	मि.	से.
	१६	४६	५
बम्बई का स्थानिक समय	९	३६	२०
स्थानिक समय का संस्कार	०	१	३५
सबका जोड़	२	२४	०

इस प्रकार ता. ४-६-१९६३ ई० को स्टैं. टा. से घ. १० मि० १५ बजे बम्बई में इष्ट साम्पातिक काल घं. २ मि. २४ से. ० हुआ।

४. लग्नांश पर से इष्ट काल निकालने की रीति— ता. ४-६-१९६३ ई० को जब काशी का लग्नस्पष्ट रा.१-१०°-५४'-३१" है तो इष्ट काल स्टैं.टा. के घं.मि. में तथा स्पष्टार्कोदयात् घटी, पल, विपल में क्या होगा ?

ता. ४-६-१९६३ का अयनांश २३°-२०'-२९" है और इस पुस्तक में दी गई लग्न-सारिणी है २३°-१५' अयनांश की। अन्तर + ५'-२९" हुआ। अतः लग्न रा. १-१०°-५४'-३१" में अन्तर ५'-२९" धन किया तो इष्ट लग्नांश १-११° ०'-०" आया, जिसे काशी की लग्न-सारणी में देखने से इष्ट साम्पातिक काल २१ घं. २७ मि. ३० से. मिला। इसमें इष्ट तारीख के प्रारम्भ का साम्पातिक काल १६ घं. ४५ मि ५८ से. घटाने से बचा ४ घं. ४१ मि. ३२ से.(यह है उक्त तारीख के प्रारम्भ से इष्ट काल तक का अन्तर—साम्पातिक काल में) जिससे कोष्ठक "ब" के सहारे स्थानिक समय और स्थानिक समय से रेलवे घड़ी का समय निकलेगा जैसे—

साम्पातिक काल घं.	मि.	से.		सावन काल (यानी घड़ी का समय) घं.	मि.	से.	प्र से.
४	०	०	=	३	५९	२०	४१
०	४१	०	=	०	४०	५३	१७
०	०	३२	=	०	०	३१	५५
४	४१	३२	=	४	४०	४५	५३

यह है काशी का स्थानिक समय। इसमें २ मिनट कम करने से इष्ट स्टैं. (यानी रेलवे घड़ी का) समय ४ घं. ३८ मि. ४६ से. आ गया। सूर्योदयात् इष्ट घटचादि निकालने के लिए उक्त तारीख से पूर्व दिन का स्पष्टसूर्योदय-समय ५ घं. १२ मि. को उक्त ४ यानी (२४ + ४ =) २८ घं. ३८ मि. ४६ से. में घटा दिया तो शेष २३ घं. २६ मि. ४६ से. बचा। इसको २॥ से गुणा कर घटी पल, विपल बनाया तो घटचादि ५८-३६-५५ इष्ट काल काशी के स्पष्टार्कोदयात् आ गया।

❀ षड्वर्ग-बल-साधन ❀

षड्वर्ग-बल—कुण्डली के ग्रह एवं लग्नादि द्वादश भाव स्पष्ट हो जाने पर उनका बलाबल जानने के लिये षड्-बल विचार किया जाता है। मुहूर्त-शास्त्र में भी किसी शुभ मुहूर्त के लग्न, नवांश के साथ षड्वर्ग-बलशुद्धि देखी जाती है। षड्वर्ग में १ होरा, २ द्रेष्काण, ३ सप्तमांश, ४ नवांश, ५ द्वादशांश, ६ त्रिशांश परिगणित किये गये हैं। यहाँ शुभ ग्रहों के वर्ग शुभ होते हैं, पापग्रहों के वर्ग अनिष्ट फल देते हैं। यदि सकल वर्गेश शुभ ग्रह हों तो पूर्ण शुभ फल, यदि सब वर्गेश अशुभ ग्रह हों तो पूर्ण अशुभ फल, यदि आधे से अधिक शुभवर्ग हों तो शुभाधिक्य, आधे से अधिक पापग्रह-वर्ग हों तो अशुभाधिक्य, बराबर होने से न शुभ, न अशुभ—सामान्य फल देते हैं।

षड्वर्गों का एकत्र तत्काल ज्ञान हो सके, इस वास्ते 'षड्वर्ग-बल-कोष्ठक' यहाँ दिया जाता है। इसमें बायीं ओर प्रत्येक राशि और बगल के खाने में होरा, द्रेष्काण आदि षड्वर्ग के प्रथमाक्षर अंकित हैं। सबसे ऊपर राशियों के क्रमशः २६ भाग, प्रत्येक भाग की समाप्ति के अंश, कला, विकला सहित दिये गये हैं। अब जिस ग्रह या लग्नादि का षड्वर्ग ज्ञात करना है उसकी राशि 'इष्ट राशि' हुई और अंश, कला, 'इष्ट अंशादि' हुए। कोष्ठक के सिरे पर के जिस भाग में 'इष्ट अंशादि' समाहित होते हों, उसी 'भाग' की पंक्ति के नीचे 'इष्ट राशि के' खाने में देखिये। उसमें जो होरादि षड्वर्ग लिखे हों, उन्हें ही अभीष्ट ग्रह या लग्नादि का षड्वर्ग समझें।

उदाहरण—मान लें, लग्न-स्पष्ट रा. ९-११°-५१'-१५" है। यहाँ 'इष्ट राशि' मकर और 'इष्ट अंशादि' ११°-५१'-१५" है। कोष्टक के सिरे पर ८वाँ भाग १० अंश पर समाप्त होता है; वहाँ से १२ अंश तक ९ वाँ भाग है। इसी के अन्दर हमारा 'इष्ट अंशादि' आता है। अतः ९ वें भाग की पंक्ति के नीचे इष्ट मकर राशि के खाने में देखा तो होरादि ४-२-६-१-२-६ मिला जिससे यह लग्न कर्क होरा का, वृष द्रेष्काण का, कन्या सप्तमांश का, मेष नवांश का, वृष द्वादशांश का और कन्या त्रिशांश का ज्ञात हुआ एवं इन वर्गों के स्वामी क्रमशः चन्द्र, शुक्र, बुध, मंगल, शुक्र एवं बुध ग्रहों में से केवल १ मंगल पापग्रह तथा शेष ५ शुभ ग्रह होने के कारण उक्त लग्न ५ शुभ-वर्ग-बलयुक्त श्रेष्ठ सिद्ध हुआ।

भाग		१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
अंशादि		२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
रा.षड्		३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२	०	४२	४०	३०	०
		०	०	८॥	०	०	०	१७	०	०	०	२६	०	०	०	३४	०	०	०	४३	०	०	०	५१	०	०	०
० मे. मं.	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९
	स.	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७
	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
	द्वा.	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२
	त्रि.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
१ वृ. शु.	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
	स.	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२
	न.	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
	द्वा.	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१
	त्रि.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
२ मि. बु.	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	११	११	११	११	११	११	११	११
	स.	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९
	न.	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
	द्वा.	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	२
	त्रि.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
३ क. चं.	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
	स.	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४
	न.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
	द्वा.	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३
	त्रि.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
४ सिं. सू.	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१
	स.	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११
	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
	द्वा.	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४
	त्रि.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
५ कं. बु.	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२
	स.	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६
	न.	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
	द्वा.	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५
	त्रि.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८

भाग		१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
अंशादि		२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
		३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
		०	०	८॥	०	०	०	१७	०	०	०	२६	०	०	०	३४	०	०	०	४३	०	०	०	५१	०	०	०
६ तु. शु.	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	७	७	७	७	७	७	७	७	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३
	स.	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१
	न.	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
	द्वा.	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६
	त्रि.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
७ वृ. मं.	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४
	स.	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८
	न.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
	द्वा.	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७
	त्रि.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२
८ ध. बृ.	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५
	स.	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३
	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
	द्वा.	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८
	त्रि.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
९ म. श.	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६
	स.	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०
	न.	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
	द्वा.	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९
	त्रि.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
१० कुं. श.	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७
	स.	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५
	न.	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
	द्वा.	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०
	त्रि.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
११ मी. बृ.	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८
	स.	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२
	न.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
	द्वा.	१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११
	त्रि.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८

❀ त्रिभागीय महादशा की प्रत्येक अन्तर्दशा में भुक्त समय-कोष्ठक ❀

१. ☉ सूर्य दशा-वर्ष ४ में अन्तर्दशा नक्षत्र—कृत्तिका, उ. फा., उ. षा.

दशा	सू·	चं·	मं·	रा·	गु·	श·	बु·	के·	शु·
वर्ष	०	०	०	०	०	०	०	०	०
मास	२	४	२	७	६	७	६	२	८
दिवस	१२	०	२४	६	१२	१८	२४	२४	०
जोड़ व·	०	०	०	१	१	२	३	३	४
मा	२	६	९	४	१०	६	१	४	०
दि·	१२	१२	६	१२	२४	१२	६	०	०

२. ☽ चंद्र-दशा-वर्ष ६, महीना ८ में अन्तर्दशानक्षत्र—रोहिणी, हस्त, श्रवण

दशा	चं·	मं·	रा·	गु·	श·	बु·	के·	शु·	सू·
वर्ष	०	०	१	०	१	०	०	१	०
मास	६	४	०	१०	०	११	४	१	४
दिवस	२०	२०	०	२०	२०	१०	२०	१०	०
जोड़ व·	०	०	१	२	३	४	५	६	६
मा	६	११	११	१०	१०	१०	२	४	८
दि·	२०	१०	१०	०	२०	०	२०	०	०

३. ♂ मंगल-दशा-वर्ष ४, महीना ८ में अन्तर्दशानक्षत्र—मृगशीर्ष, चित्रा, धनि.

दशा	मं·	रा·	गु·	श·	बु·	के·	शु·	सू·	चं·
वर्ष	०	०	०	०	०	०	०	०	०
मास	३	८	७	८	७	३	९	२	४
दिवस	८	१२	१४	२६	२८	८	१०	२४	२८
जोड़ व·	०	०	१	२	२	३	४	४	४
मा	३	११	७	४	११	३	०	३	८
दि·	८	२०	४	०	२८	६	१६	१०	०

४. ☊ राहु-दशा वर्ष १२ में अन्तर्दशा नक्षत्र—आर्द्रा, स्वाती, शतभिषा

दशा	रा·	गु·	श·	बु·	के·	शु·	सू·	चं·	मं·
वर्ष	१	१	१	१	०	२	०	१	०
मास	९	७	१०	८	८	०	७	०	८
दिवस	१८	६	२४	१८	१२	०	६	०	१२
जोड़ व·	१	३	५	७	७	९	१०	११	१२
मा	९	४	३	०	८	८	३	३	०
दि·	१८	२४	१८	०	१२	१२	१८	१८	०

५. ♃ गुरु-दशा-वर्ष १०, महीना ८ में अन्तर्दशानक्षत्र—पुन., विशा., पू.भा.

दशा	गु·	श·	बु·	के·	शु·	सू·	चं·	मं·	रा·
वर्ष	१	१	१	०	१	०	०	०	१
मास	५	८	६	७	९	६	१०	७	७
दिवस	२	८	४	१४	१०	१२	२०	१४	६
जोड़ व·	१	३	४	५	७	७	८	९	१०
मा	५	१	७	२	०	६	५	०	८
दि·	२	१०	१४	२८	८	२०	१०	२४	०

६. ♄ शनि-दशा-वर्ष १२, महिना ८ में अन्तर्दशा नक्षत्र—पुष्य, अनु. उ. भाद्र.

दशा	श·	बु·	के·	शु·	सू·	चं·	मं·	रा·	गु·
वर्ष	२	१	०	२	०	१	०	१	१
मास	०	९	८	१	७	०	८	१०	८
दिवस	२	१६	२६	१०	१८	२०	२६	२४	८
जोड़ व·	२	३	४	६	७	८	९	१०	१२
मा	०	९	६	७	३	४	०	११	८
दि·	२	१८	१४	२४	१२	२	२८	२२	०

७. ☿ बुध-दशा-वर्ष ११, महीना ४ में अन्तर्दशानक्षत्र—आश्ले., ज्येष्ठा. रेवती

दशा	बु·	के·	शु·	सू·	चं·	मं·	रा·	गु·	श·
वर्ष	१	०	१	०	०	०	१	१	१
मास	७	७	१०	६	११	७	८	६	९
दिवस	८	२८	२०	२४	१०	२८	१२	४	१६
जोड़ व·	१	२	४	४	५	६	८	९	११
मा	७	३	१	८	८	३	०	६	४
दि·	८	६	२६	२०	०	२८	१०	१४	०

८. ☋ केतु-दशा-वर्ष ४, महीना ८ मे अन्तर्दशानक्षत्र—अश्विनी, मघा, मूल

दशा	के·	शु·	सू·	चं·	मं·	रा·	गु·	श·	बु·
वर्ष	०	०	०	०	०	०	०	०	०
मास	३	९	२	४	३	८	७	८	७
दिवस	८	१०	२४	२०	८	१२	१४	२६	२८
जोड़ व·	०	१	१	१	१	२	३	४	४
मा	३	०	३	८	११	७	३	०	८
दि·	८	१८	१२	२	१०	२२	६	२	०

९. ♀ शुक्र-दशा-वर्ष १३, महीना ४ में अन्तर्दशानक्षत्र-भरणी, पू.फा. पू.षा.

दशा	शु·	सू·	चं·	मं·	रा·	गु·	श·	बु·	के·
वर्ष	२	०	१	०	२	१	२	१	०
मास	२	८	१	९	०	९	१	१०	९
दिवस	२०	०	१०	१०	०	१०	१०	२०	१०
जोड़ व·	२	२	४	४	६	८	१०	१२	१३
मा	२	१०	०	९	९	६	८	६	४
दि·	२०	२०	०	१०	१०	२०	०	२०	०

सक्षम शुद्ध वर्ष-प्रवेश-सारणी ।

वर्ष	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०	१००
वा.	१	२	३	५	६	७	१	३	४	५	४	२	१	६	५	३	२	१	६
घ·	१५	३०	४६	१	१६	३२	४७	३	१८	३३	७	४१	१५	४९	२२	५६	३०	४	३८
प·	२२	४५	८	३१	५४	१७	४०	३	२६	४९	३८	२७	१६	५	५४	४३	३२	२१	१०
त्रि·	५४	४९	४३	३७	३२	२६	२१	१५	९	४	७	१२	१४	१८	२२	२५	२९	३३	३६

वर्ष का सूर्य अपनी दैनिक स्पष्ट गति से जिस क्षण व्यक्ति के जन्मकालीन सूर्य की राशि, अंश, कला विकला तुल्य होता है, उस क्षण को उस व्यक्ति का वर्ष-प्रवेश-काल कहा जाता है; जन्म और वर्ष का सूर्य एकजातीय (एक ही अयनांश-पद्धति का) होना आवश्यक है।

किसी भी वर्ष का प्रवेश-काल सरलता से जानने के लिये वर्ष-प्रवेश-सारणी बनायी गयी है जिसमें प्रत्येक वर्ष के ध्रुवांक, वार, घटी, पल, विपल—इस क्रम से दिये गये हैं। जन्म-समय का वार और इष्ट घटयादि लिख लेने के बाद उनके नीचे जिस वर्ष का प्रवेश-काल निकालना हो, उससे गत वर्षों का ध्रुवांक सारणी से लिख लेना चाहिये। इन सबका योग फल इष्ट वर्ष-प्रवेश-काल वारादि में आयेगा। इस वार की तारीख जन्म-तारीख के निकटतम रहेगी अथवा बिल्कुल वही तारीख आयेगी। वारों के १ से ७ तक के अङ्क क्रमशः रवि से शनिवार के लिये हैं।

उदाहरण—एक व्यक्ति का जन्म गुरुवार ता० २३-२-१९२२ ई० की आधी रात बाद यानी ता. २४-२-२२ई. को स्टै. टा. घं. ० मि. ३९ को हुआ था। उस दिन जन्म-स्थल के सूर्योदय का स्टैं.टा. घ. ७ मि. २६ है; अतः जन्म के समय घं. २४।३९ में सूर्योदय-समय को घटाया तो शेष घं० १७ मि० १३ बचा; इसका घटी, पल, विपल बनाया तो इष्ट-काल ४३ घटी, २ पल, ३० विपल आया तथा इष्ट वार गुरुवार का रविवार से क्रमांक ५ है। अतः इष्ट वारादि ५-४३-२ ३० हुये। जन्मकालीन स्पष्ट सूर्य रा. १०-११ -३८′-४९″ है।

इस व्यक्ति का ३५ वाँ वर्ष-प्रवेश-काल (जो सन् १९५६ में आता है) जानने के लिए इष्ट वारादि में गत ३४ वर्षों का ध्रुवांक जोड़ना होगा।

इष्ट वारादि	५—४३— २—३०
सारणी से ३० वर्षों का ध्रुवांक	२—४१—२७—१२
,, ४ ,,	५— १—३१—३७
३५ वें वर्षारम्भ के वारादि	६—२६— १—१९

यानी जन्म-तारीख के निकटतम के शुक्रवार को सूर्योदय से इष्ट घटयादि २६-१-१९ पर वर्ष प्रवेश होगा। इसी को स्टैं.टा.घं.मि.में निकालना हो तो घटी २६ प.१वि.१९ =

घं. १० मि. २४ से. ३२ को
सूर्योदय-समय घं. ७ मि. २६ से. ० में जोड़ा
तो वर्ष-प्रवेश का स्टैं.टा. घं १७ मि. ५० से. ३२ आया।

इस प्रकार जन्म तारीख २४ फरवरी के निकटतम शुक्रवार की तारीख भी २४ फरवरी है। अतः शुक्रवार ता.२४-२-१९५६ ई. की शाम को घं.१७ मि. ५० से.३२बजे इस व्यक्ति का ३५ वाँ वर्ष-प्रवेश होता है। इस समय का स्पष्ट सूर्य जन्मकालीन स्पष्ट सूर्य जितना ही आयेगा (कदाचित् तनिक अन्तर रहेगा)। वर्ष-प्रवेश-काल का लग्न, दशम, स्पष्ट-ग्रह वगैरह साधन कर वर्ष-प्रवेश कुण्डली बनायी जाती है और उससे व्यक्ति के सालभर के शुभाशुभ फलों का विचार किया जाता है।

* ग्रह-दृष्ट्यादि-विवरण-चक्र *

रवि ☉	चन्द्र ☽	मंगल ♂	बुध ☿	गुरु ♃	शुक्र ♀	शनि ♄	राहु ☊	केतु ☋	ग्रह और उनके चिह्न
३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	०	३।१०	३।१०	ग्रहों की एकपाद दृष्टि
५।९	५।९	५।९	५।९	०	५।९	५।९	५।९	५।९	दो पाद दृष्टि
४।८	४।८	०	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	तीन पाद दृष्टि
७	७	४।७।८	७	५।७।९	७	३।७।१०	७	७	सम्पूर्ण दृष्टि
५,१५	१५	७,८ १०,१५	९,१२,१५	१०,१५ १०	९,१२,१५	३,५, १५,१९	९,१५	९,१५	नक्षत्र-दृष्टि
चं. मं. गु.	र. बु.	र. चं. गु	र. शु. रा	र. चं. मं.	बु. श. रा.	बु. शु,रा.	बु. शु. रा.	बु.	मित्र ग्रह
बु.	मं.गु.शु.श	शु. श.	मं. गु. श.	श. रा.	मं. गु.	गु.	गु.	×	सम ग्रह
शु. श. रा.	रा.	बु. रा.	चं.	बु. शु.	र. चं.	र.च.मं	र.चं.मं.	×	शत्रु ग्रह
दशम	चतुर्थ	दशम	प्रथम	प्रथम	चतुर्थ	सप्तम	×	×	बलवत्तम भाव
१,९,१०	४	३,६	४,१०	२, ५, ९ १०, ११	७	६,८ १०,१२	×	×	कारक भाव[८का शनि अपवाद है,कारक १२वें शुभ होता है]
मेष १०°	वृषभ ३°	मकर२८°	कन्या१५°	कर्क ५°	मीन २७°	तुला२०°	मिथु. १५°	धनु १५°	उच्चराशि एवं परमोच्चांश
तुला १०°	वृश्चिक ३°	कर्क २८°	मीन १५°	मकर ५°	कन्या २७°	मेष२०°	धनु१५°	मिथु.१५°	नीच राशि एव परम नीचांश
सिंह२०°	वृष४°से ३०°	मेष १८°	कं१६°से२०°	धनु १३°	तुला १०°	कुम्भ२०°	कर्क	मकर	मूल त्रिकोण राशि, अंश
सिंह	कर्क	म., वृश्चिक	मि. कन्या	ध. मी.	वृष, तु.	म. कुं.	कन्या	मीन	स्वगृह (राशि)
कुम्भ	मकर	तुला, वृष	धनु मीन	कन्या मि.	मे. वृ.	क., सिं.	मीन	कन्या	स्वगृह से सप्तम(अस्त)राशि
पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	आग्नेय	पश्चिम	नैऋत्य	नैऋत्य	दिशा
१	०'०७४	१'९	०'२	११'९	०'६	२९'५	१८.६	१८'६	राशिचक्र-परिभ्रमण वर्ष
१ मास	२। दिन	१॥ मास	२५ दिन	१३ मास	२८ दिन	३०मास	१८मास	१८मास	मध्यम राशि-भ्रमण-काल
१३	१	२०	१०	१०३	१२	४००	२४०	२४०	नक्षत्र-चार दिन
३¼	¼	५	२½	४३	३	१००	६०	६०	नक्षत्र-पाद(नवांश)चार दिन
५९'८"	७९०'३५"	३१'२६"	५९'८"	४'५९"	५९'८"	२'०"	३'११"	३'११"	मध्यम दिन-गति,कला,विकला
६०'४"	८२३'४८"	३९'१"	१०४'४६"	१४'२२"	७३'४३"	५'२७"	×	×	शीघ्र गति, कला, विकला
६१'	८५७'	४८'११"	११३'३२"	१४'४"	७५'४२"	७'४५"	×	×	परमशीघ्रगति(अतिचारी),,
×	×	१५	१०	४५	१०	१८०	×	×	अतिचार-दिन (स्थूल)
१५	१२	८	७	९	७	९	१२	१२	दीप्तांश
×	१२°	१७°	१३°व१२	११°	८°,व७°	१५°	×	×	लोप, दर्शन के कालांश
×	४५	६०	४२	३६	५६	५२	×	×	,,सूक्ष्म उदयास्तान्तर मिनट
३२-३१ ३३	३२-०-९	४ ४५	६-१५	७-४५	९-०	५-४५	×	×	मध्यम बिम्ब कलादि(प्रा.मत)
४-८-१२	४-८-१०	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२	४ ८ १२	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२	गोचर मे निंद्य
१-२ ५-७ ९	२-५-०	१ २-५-७-९	१ ३ ५ ७ ९	१ ३ ६-१०	५-६-७-१०	१ २-५-७०	१-२-५ ७-९	१-२ ५ ७-९	,, पूज्य
३ ६ १०-११	१-३ ६ ७-१० ११	३-६ १०-११	२-६ १०-११	२-५-७ ९-११	१-२ ३ ९-११	३-६ १०-११	३-६ १०-११	३ ६ १०-११	,, शुद्ध
९,१२ ४,५ शनिवर्जित	५,९,१२ २,४,८ बुध वर्जि	१२,९ १०,५	५, ९ ८, १२ चंद्रवर्जित	१२,४,३ १०,८	८,७,१ ११,३	१२,९ १० ५ सूर्यवर्जित	१२,९, १०.५	१२ ९ १०,५	अनुक्रम से वेध-स्थान

टि०—चन्द्रमा शुक्लपक्ष में २,५,९वें स्थानों में भी शुभ होता है; यदि क्रमशः६,८,४ स्थान में बुध के सिवा अन्य ग्रह न हों।

ग्रह-चिह्न	सूर्य ☉	चन्द्र ☽	मंगल ♂	बुध ☿	गुरु ♃	शुक्र ♀	शनि ♄	राहु ☊	केतु ☋
पर्याय	हेलि	ग्लौ,शीत-रश्मि	आर वक्र भू-सुत	ज्ञ,इन्दुपुत्र, विद् बोधन	जीव,आंगिर सुरगुरु इज्य	भृगु भृगुसुत [illegible] दैत्यगुरु	कोण,मद सूर्य-पुत्र	तम,अगु,असुर	शिखी
शुभ, पाप	उग्र	शुभ(क्षीण चन्द्र पाप)	क्रूर	शुभ,(पाप युक्त पाप)	शुभ	शुभ	अति पाप	पाप	पाप
देवता	अग्नि	वरुण	स्कन्द	विष्णु	इन्द्र	इन्द्राणी	ब्रह्मा	वायु	आकाश
काल-पुरुष	आत्मा	मन	सत्व शौर्य	वाणी	ज्ञान-सुख	काम-सुख	दुःख	मृति	स्थिति
पुरुषादि	पुरुष	स्त्री	पुरुष	नपुंसक	पुरुष	स्त्री	नपुंसक	पुरुष	पुरुष
वर्ण	क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	वैश्य, शूद्र	ब्राह्मण	ब्राह्मण	अन्त्यज	शूद्र	संकर
आकार	चतुरस्र	वर्तुल	चतुष्कोण	वृत्त	वृत्त	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	पुच्छ
स्वभाव	स्थिर	चचल	उग्र	स्निग्ध	मृदु	लघु	अत्यत तीक्ष्ण	...	....
स्थान	पर्वत	जलचर	पर्वत, वनचर	विद्वानों से युक्त ग्रामचर	विद्वानों से युक्तग्रामचर	जलचर	पर्वत, बनचर	पर्वत, वनचर	पर्वत, बनचर
काल	अयन	क्षण-मुहूर्त	दिन	ऋतु	मास	पक्ष	वर्ष	...	...
दिशा, कोण	पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	अग्नि	पश्चिम	नैऋत्य	सर्वदिशा
ग्रह-शांतिमें दिशा	मध्य	अग्नि	दक्षिण	ईशान	उत्तर	पूर्व	पश्चिम	नैऋत्य	वायव्य
राजादि	राजा	राजरानी	सेनापति	युवराज	मंत्री	गुप्त मंत्री	प्रेष्य दूत	सेवक	परिचारक
वय-वर्ष	प्रौढ़(५०)	युवा	तरुण	कुमार	युवा(३०)	किशोर	वृद्ध(१००)	अतिवृद्ध	अतिवृद्ध
रंग	पाटल	गौर	रक्त-गौर	दूर्वाश्याम	गौर-पीत	श्वेत-श्याम	नील	कृष्ण	धूम्र
ह्रस्वादि	ह्रस्व	ह्रस्व	ह्रस्व	ह्रस्व	दीर्घ	ह्रस्व	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ
विद्या	वैद्यक	ज्योतिष	शस्त्र	शिल्प	व्याकरण	संगीत	यावनी विद्या	गारुड़ी	गुप्त तंत्र
भाग्योदय-वर्ष	२२	२४	२८	३२	१६	२५	३६	४२	४८
दशा व गोचर★	प्रथम भाग	अन्त्य	प्रथम भाग	सर्वदा	मध्य	मध्य	अन्त्य	...	...
कारक	पिता	माता	बंधु पितृव्य	मामा,बुद्धि वाणी	पुत्र,बुद्धि ज्ञान धर्म	स्त्री	दूत, भृत्य, दरिद्रय	दादा, शत्रु	नाना
कारक भाव	१,९,१०	४	३,६	४, १०	,५,९ [illegible]	७	६,८,१०	...	...
हर्ष-स्थान	९	३	६	१	११	५	१२	. .	...
तत्व	अग्नि	जल	अग्नि	पृथ्वी	आकाशतेज	जल	वायु	जलवायु	तेज
गुण	सत्व	सत्व	तामस	राजस	सत्व	राजस	तामस	अति तामस	किंचित्ताम.
धात्वादि	मूल	जीव	धातु	मिश्रण	जीव	मूल	मूल	धातु	धातु
रस	तिक्त	क्षार	कटु	मिश्र	मधुर	अम्ल, खट्टा	कषाय कटु.	तीखा	नीरस फीका
धातु	सुवर्ण	रौप्य	लोहा	यशद	बग	ताम्र	नाग	पञ्चधातु	अष्टधातु
वस्त्र	मोटा	नवीन	अग्नि दग्ध	आर्द्र	मध्यम	दृढ़	मलिन	चित्र-विचित्र	जीर्ण-शीर्ण
काल-बल	मध्याह्न	अपराह्न	मध्याह्न	प्रातः	प्रातः	अपराह्न	संध्या	संध्या	संध्या
पाद	चतुष्पद	चतुष्पद	चतुष्पद	द्विपद	द्विपद	द्विपद	भुजंगअपद	अपद	अपद
भूमि	पशुभूमि	जलभूमि	दग्ध	श्मशान	सुरालय	जलभूमि	उत्कट	ऊषर	ऊषर
स्थान	वन	जल	वन	ग्राम	ग्राम	ग्राम	सन्धि	विवर	विवर
शरीर-धातु	अस्थि	रुधिर	मज्जा मांस	चर्म त्वचा	मेद	वीर्य-ओज	स्नायु	...	रस
पित्तादि	पित्त	श्लेष्मा	पित्त	समधातु	समधातु	कफ	वात	वात	वात
रोग	नेत्र-रोग	नेत्र-पीड़ा	रक्त	त्रिदोष	ज्वर	वीर्य-रोग	वात व्याधि	अस्थि-रोग	अस्थि-रोग
ऋतु	ग्रीष्म	वर्षा	ग्रीष्म	शरद	हेमन्त	वसन्त	शिशिर	शिशिर	शिशिर
दृष्टि	ऊर्ध्व	सम	ऊर्ध्व	तिर्यक	सम	तिर्यक	अधो	अधो	अधो

★फल-काल] [illegible]८ का शनिअपवादहै; कारक१२वें शुभ होताहै। फलित-ज्योतिष के अध्येता ग्रहशील-राशिशील हृदयंगम करलें।

राशि	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
अंक	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
चिह्न	♈	♉	♊	♋	♌	♍	♎	♏	♐	♑	♒	♓
अंग्रेजी नाम	Aries	Taurus	Gemini	Cancer	Leo	Virgo	Libra	Scorpio	Sagitta.	Caprico	Aquari.	Pisces
राशि-स्वामी व चिन्ह	मंगल ♂	शुक्र ♀	बुध ☿	चन्द्र ☽	सूर्य	बुध ☿	शुक्र ♀	मंगल ♂	गुरु ♃	शनि ♄	श.ह. ♅	गु ♃ ने ♆
अंश अश्विन्यादि–	० अंश से	३१ से	६१ से	९१ से	१२१ से	१५१ से	१८१ से	२११ से	२४१ से	२७१ से	३०१ से	३३१ से
आरंभ स्थान से	३० तक	६० तक	९० तक	१२०तक	१५०तक	१८०तक	२१०तक	२४०तक	२७०तक	३००तक	३३०तक	३६०तक
राश्युदयमान काशी	घं १।३८	१।५७	२।१४	२।१८	२।१८	२।१३	२।१६	२।१७	२।५	१।४५	१।३१	१।२८
नवांशारम्भ	मेष	मकर	तुला	कर्क	मेष	मकर	तुला	कर्क	मेष	मकर	तुला	कर्क
चरादि स्वभाव	चर	स्थिर	द्विस्वभा.	चर	स्थिर	द्विस्वभा.	चर	स्थिर	द्विस्वभा.	चर	स्थिर	द्विस्वभा.
द्वि-चतुष्पदादि	चतुष्पद	चतुष्पद	द्विपद	बहु. कीट	चतुष्पद	द्विपद	द्विपद	बहु.सरी.	द्विपद	चतु.कीट	अपद	अप कीट
निवास	उपवन	खेत	रतिगृह	जलाशय	अरण्य	नौका	बाजार	बिलगड्ढा	छावनी	बन, नदी	भूमि	समुद्र
ह्रस्वादि	ह्रस्व	ह्रस्व	सम	सम	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	सम	सम	ह्रस्व	ह्रस्व
स्थानबली	दशम	दशम	लग्न	चतुर्थ	दशम	लग्न	लग्न	सप्तम	लग्न/द.	चतु./द.	लग्न	चतुर्थ
शीर्षादि अवयव	शिर	मुख	छा.बाहु	हृदय	उदर	कटि	वस्ति	गुह्यांग	ऊरु	जानु	जाँघ	दोनों पैर
प्रथम द्रेष्काण	शिर	दाहि.नेत्र	दा.कान	दा. नाक	दा. गाल	दा हनु.	मुख	बा.हनु.	बा.गाल	बा.नाक	बा.कान	बायाँ नेत्र
द्वितीय द्रेष्काण	कंठ	दा.कंधा	दा.हाथ	दा.बगल	दा. हृद	दा.उदर	नाभि	बा.उदर	बा.हृदय	बा.बगल	बा.हाथ	बा कंधा
तृतीय द्रेष्काण	वस्ति	गुह्यांग	दा.वृषण	दा. जंघा	दा. जानु	दा पैर	पंजा	बायाँ पैर	बा. जानु	बा.जंघा	बा.वृषण	गुदा
स्त्री पुरुषादि	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री
क्रूर सौम्यादि	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य
राशिसत्ता	पॉजेटि.	नेगेटिव	पॉजेटि.	नेगेटिव	पॉजेटिव	नेगेटिव	पॉजेटिव	नेगेटिव	पॉजेटिव	नेगेटिव	पॉजेटिव	नेगेटिव
कांति	रुक्ष	स्निग्ध	रुक्ष	स्निग्ध	रुक्ष	स्निग्ध	रुक्ष	स्निग्ध	रुक्ष	स्निग्ध	रुक्ष	स्निग्ध
समय बली	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	दिवा	दिवा	दिवा	रात्रि	रात्रि	रात्रि	दिवा	दिवा
दिशा बली	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
कारक	धातु	मूल	जीव	धातु	मूल	जीव	धातु	मूल	जीव	धातु	मूल	जीव
उदय	पृष्ठोदय	पृष्ठोदय	शीर्षोदय	पृष्ठोदय	शीर्षोदय	शीर्षोदय	शीर्षोदय	शीर्षोदय	पृष्ठोदय	पृष्ठोदय	शीर्षोदय	उभयोद
पुष्टादि	सुदृढ़	सुदृढ़	मध्यम	अशक्त	सुदृढ़	मध्यम	सुदृढ़	मध्यम	सुदृढ़	अशक्त	मध्यम	अशक्त
बंध्यादि	मध्य	मध्य	यु.बंध्य	फलद्रुप	बंध्य	बंध्य	मध्य	फलद्रुप	युग.मध्य	मध्य	मध्य	युग.फ.द्रु.
प्रश्न-लग्न से– मनश्चिंता	मनुष्य चिन्ता	गाय भैंस पशुचिंता	गर्भ- चिन्ता	व्यवसा. चिन्ता	जीव- चिन्ता	स्त्री- चिन्ता	धन- चिन्ता	रोग- चिन्ता	धन- चिंता	शत्रु- चिंता	स्थान- चिंता	दैवी- चिन्ता
पित्रादि दोष	पितृदेवी	गोत्रदेवी	देवी	भूत	प्रेतभ्रातृ	कृतकर्म	चंडिका	बेताल	महामारी	क्षेत्रपाल	गोत्रदेवी	शाकिनी
राहुवास	दक्षिण	पश्चिम	पश्चिम	पश्चिम	उत्तर	उत्तर	उत्तर	पूर्व	पूर्व	पूर्व	दक्षिण	दक्षिण
वत्सवास	पश्चिम	उत्तर	उत्तर	उत्तर	पूर्व	पूर्व	पूर्व	दक्षिण	दक्षिण	दक्षिण	पश्चिम	पश्चिम
मूलवास	पाताल	पाताल	स्वर्ग	भूमि	स्वर्ग	स्वर्ग	भूमि	पाताल	भूमि	स्वर्ग	पाताल	भूमि
चोर-जाति	विप्र	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	स्वजन	कुली.स्त्री	पुत्र भाई	म्लेच्छ	स्त्री	वैश्य	मूषक	जमीन
चंद्रात् भद्रावास	स्वर्ग	स्वर्ग	स्वर्ग	मनुष्य	मनुष्य	पाताल	पाताल	स्वर्ग	पाताल	पाताल	मनुष्य	मनुष्य
रंग	लाल	सफेद	हरा	गुलाबी	बादामी	नानावर्ण	काला	सुनहरा	कपिलव.	पिंगलव.	नकुल व.	मीनवर्ण
पाश्चात्य पद्धति से	लाल	पीला	बैंगनी	हरा	नारंगी	का.नीला	लालक्री.	भूरा	नीलाला.	का.ब्राउ	आसमा.	सफेद
निवास-देश	पाटल	कर्नाटक	चेदिराज	चोल	पांड्य	केरल	कोल्लास	मलय	सिंधु	पाचाल	यवन	कोशल
तत्त्व	पृथ्वी	जल	तेज	वायु	आकाश	पृथ्वी	जल	तेज	वायु	आकाश	पृथ्वी	जल
पाद-जल	$\frac{1}{4}$ जल	अर्ध जल	निर्जल	पूर्ण-जल	निर्जल	निर्जल	$\frac{1}{4}$ जल	$\frac{1}{4}$ जल	अर्ध-जल	पूर्ण जल	अर्ध-जल	पूर्ण जल
पदार्थ	खनिज	उद्भिज	प्राणिज	खनिज	उद्भिज	प्राणिज	खनिज	उद्भिज	प्राणिज	खनिज	उद्भिज	प्राणिज
संबन्ध	स्वदेह	परस्त्री	भ्रातृ	मातृ	विद्या	भामी	दूत	चिन्ता	गुरु	पिता	मित्र	काका
उपसबन्ध	मातामह	सा. स्त्री	बांधव	श्वसुर	हाकिम	मौसी	पितामह	वारिस	बहनोई	सास	जमाई	फूआ
पश्वादि अंग-विभाग	शिर	मुखगला	अगले पैर	पीठ	छातीपेट	पाँजर	कुक्षि	गुदा	पिछले पै.	उपस्थ	स्फिक्	पुच्छ
शब्द	महाशब्द	पुष्कल	दीर्घ	हीन	महा	खण्ड	नि:शब्द	नि:शब्द	पुष्कल	अर्ध	तोतला	हीन
प्रकृति	पित्त	वायु	सम	कफ	पित्त	वायु	सम	कफ	पित्त	वायु	सम	कफ
प्लवत्व	दक्षिण	आग्नेय	उत्तर	वायव्य	पूर्व	उत्तर	आग्नेय	दक्षिण	ईशान	पश्चिम	पश्चिम	ईशान
सूर्यदग्धा-तिथि	६	४	८	६	१०	८	१२	१०	२	१२	४	२
मृत्युप्रद चंद्रांश	२०	२५	२२	२२	२१	१	४	२३	१८	२०	२०	१०
चंद्रात् पुष्करांश	२१	१४	१८	८	१९	९	२४	११	२३	१४	१९	९

सायन सूर्य से क्रांति और बेलान्तर-साधन-कोष्ठक १.

तारीख	जनवरी—राष्ट्रीय पौष (मकर) मास वैदिक तपस् मास								
	सायन सूर्य का अंश	क्रांति —दक्षिण अं.	क.	वि.	प्रत्यंश गति क.	वि.	बेलान्तर+ मि.	से.	प्रत्यंश गति से.
१	२८०	२३	०४	०२	४	४५	०३	१४	२८
२	२८१	२२	५९	१७	५	०९	०३	४२	२७
३	२८२	२२	५४	०८	५	३३	०४	०९	२७
४	२८३	२२	४८	३५	६	०६	०४	३६	२७
५	२८४	२२	४२	२९	६	३०	०५	०३	२७
६	२८५	२२	३५	५९	६	५४	०५	३०	२६
७	२८६	२२	२९	०५	७	२०	०५	५६	२५
८	२८७	२२	२१	४५	७	४६	०६	२१	२५
९	२८८	२२	१३	५९	८	०९	०६	४६	२५
१०	२८९	२२	०५	५०	८	३७	०७	११	२४
११	२९०	२१	५७	१३	९	०१	०७	३५	२३
१२	२९१	२१	४८	१२	९	२५	०७	५८	२३
१३	२९२	२१	३८	४७	९	४९	०८	२१	२३
१४	२९३	२१	२८	५८	१०	१२	०८	४४	२२
१५	२९४	२१	१८	४६	१०	३९	०९	०६	२१
१६	२९५	२१	०८	०७	११	००	०९	२७	२०
१७	२९६	२०	५७	०७	११	२४	०९	४७	२०
१८	२९७	२०	४५	४३	११	४७	१०	०७	१९
१९	२९८	२०	३३	५६	१२	०८	१०	२६	१९
२०	२९९	२०	२१	४८	१२	३३	१०	४५	१८
२१	३००	२०	०९	१५	१२	५४	११	०३	१७
२२	३०१	१९	५६	२१	१३	१५	११	२०	१६
२३	३०२	१९	४३	०६	१३	३७	११	३६	१५
२४	३०३	१९	२९	२९	१३	५७	११	५१	१५
२५	३०४	१९	१५	३२	१४	२०	१२	०६	१४
२६	३०५	१९	०१	१२	१४	३९	१२	२०	१३
२७	३०६	१८	४६	३३	१४	५९	१२	३३	१३
२८	३०७	१८	३१	३४	१५	१९	१२	४६	१२
२९	३०८	१८	१६	१५	१५	३७	१२	५८	११
३०	३०९	१८	००	३८	१५	५८	१३	०९	१०
३१	३१०	१७	४४	४०	१६	१६	१३	१९	०९

तारीख	फरवरी—राष्ट्रीय माघ (कुंभ) मास वैदिक तपस्य मास								
	सायन सूर्य का अंश	क्रांति —दक्षिण अं.	क.	वि.	प्रत्यंश गति क.	वि.	बेलान्तर+ मि.	से.	प्रत्यंश गति से.
१	३११	१७	२८	२४	१६	३४	१३	२८	९
२	३१२	१७	११	५०	१६	५३	१३	३७	८
३	३१३	१६	५४	५७	१७	०८	१३	४५	७
४	३१४	१६	३७	४९	१७	२८	१३	५२	६
५	३१५	१६	२०	२१	१७	४४	१३	५८	५
६	३१६	१६	०२	३७	१८	००	१४	०३	५
७	३१७	१५	४४	३७	१८	१६	१४	०८	४
८	३१८	१५	२६	२१	१८	३१	१४	१२	३
९	३१९	१५	०७	५०	१८	४२	१४	१५	२
१०	३२०	१४	४९	०१	१९	०८	१४	१७	१
११	३२१	१४	२९	५९	१९	१७	१४	१८	१
१२	३२२	१४	१०	४२	१९	३१	१४	१९	०
१३	३२३	१३	५१	११	१९	४४	१४	१९	१
१४	३२४	१३	३१	२७	१९	५९	१४	१८	१
१५	३२५	१३	११	२८	२०	१२	१४	१७	२
१६	३२६	१२	५१	१६	२०	२४	१४	१५	३
१७	३२७	१२	३०	५२	२०	३७	१४	१२	४
१८	३२८	१२	१०	१५	२०	४८	१४	०८	४
१९	३२९	११	४९	२७	२१	००	१४	०४	५
२०	३३०	११	२८	२७	२१	११	१३	५९	५
२१	३३१	११	०७	१६	२१	२२	१३	५४	७
२२	३३२	१०	४५	५४	२१	३३	१३	४७	७
२३	३३३	१०	२४	२१	२१	४२	१३	४०	७
२४	३३४	१०	०२	३९	२१	५३	१३	३३	८
२५	३३५	०९	४०	४६	२२	०१	१३	२५	९
२६	३३६	०९	१८	४५	२२	१०	१३	१६	९
२७	३३७	०८	५६	३५	२२	१९	१३	०७	१०
२८	३३८	०८	३४	१६	२२	२६	१२	५७	११
२९	३३९	०८	११	५०	२२	३६	१२	४६	११

तारीख	मार्च—राष्ट्रीय फाल्गुन (मीन) मास वैदिक मधु मास								
	सायन सूर्य का अं.	क्रांति – द./उ. अं.	क.	वि.	प्रत्यंश गति क.	वि.	बेलान्तर+ मि.	से.	प्रत्यंश गति से.
१	३४०	०७	४९	१४	२२	४२	१२	३५	१२
२	३४१	०७	२६	३२	२२	४९	१२	२३	१२
३	३४२	०७	०३	४३	२२	५६	१२	११	१३
४	३४३	०६	४०	४७	२३	०२	११	५८	१३
५	३४४	०६	१७	४५	२३	०८	११	४५	१३
६	३४५	०५	५४	३७	२३	१४	११	३२	१४
७	३४६	०५	३१	२३	२३	१८	११	१८	१५
८	३४७	०५	०८	०५	२३	२४	११	०३	१५
९	३४८	०४	४४	४१	२३	२७	१०	४८	१५
१०	३४९	०४	२१	१४	२३	३३	१०	३३	१५
११	३५०	०३	५७	४१	२३	३५	१०	१८	१६
१२	३५१	०३	३४	०६	२३	३९	१०	०२	१६
१३	३५२	०३	१०	२७	२३	४२	०९	४६	१७
१४	३५३	०२	४६	४५	२३	४५	०९	२९	१७
१५	३५४	०२	२३	००	२३	४६	०९	१२	१७
१६	३५५	०१	५९	१४	२३	४९	०८	५५	१७
१७	३५६	०१	३५	२५	२३	५०	०८	३८	१८
१८	३५७	०१	११	३५	२३	५१	०८	२०	१८
१९	३५८	००	४७	४४	२३	५२	०८	०२	१८
२०	३५९	००	२३	५२	२३	५२	०७	४४	१८
२१	३६०	००	००	००			०७	२६	१८
२२	१	+००	२३	५२	२३	५२	०७	०८	१८
२३	२	००	४७	४४	२३	५१	०६	५०	१८
२४	३	०१	११	३५	२३	५०	०६	३२	१८
२५	४	०१	३५	२५	२३	४९	०६	१४	१८
२६	५	०१	५९	१४	२३	४६	०५	५६	१९
२७	६	०२	२३	००	२३	४५	०५	३७	१९
२८	७	०२	४६	४५	२३	४२	०५	१८	१८
२९	८	०३	१०	२७	२३	३९	०५	००	१८
३०	९	०३	३४	०६	२३	३५	०४	४२	१८
३१	१०	०३	५७	४१	२३	३३	०४	२४	१८

कोष्टक की प्रयाग-विधि और उदाहरण—भारतीय पद्धति के घटी पलात्मक इष्टकाल तथा उसके आधारभूत सूर्योदय, दिनमानादि-साधन का विषय 'ज्योतिष रहस्य' के इस प्रथम खण्ड में भलीभांति बतलाया गया है, साथ ही तत्सम्बन्धी सूर्य-क्रान्ति और बेलान्तर-साधन की सारणियाँ भी प्रकाशित की गयी हैं। वे अपने प्रकाशन-वर्ष के लिये तो सर्वथा सूक्ष्म है; किन्तु आगे पीछे के किसी वर्ष के सूर्योदयादि-गणित में उनसे किञ्चित् स्थूल परिणाम प्राप्त होगा। इष्टकाल-साधन के लिए सूर्योदय का समय कम-से-कम मिनिट पर्यन्त सूक्ष्म होना चाहिये जो सूर्य की सूक्ष्म क्रान्ति और बेलान्तर पर निर्भर करता है। अतः सायन सूर्य के द्वारा सरलतापूर्वक तात्कालिक सूक्ष्म सूर्य-क्रान्ति और बेलान्तर-साधन के लिए यह अत्यन्त उपयोगी सारणी सर्वप्रथम यहाँ प्रकाशित की जा रही है। इसमें सबसे ऊपर के खाने में अंग्रेजी महीनों के नाम के साथ राष्ट्रीय मास तथा तपस्, तपस्य, मधु, माधवादि वैदिक मास-नाम भी दिये गये हैं। नीचे पहले खाने में तारीखें दी गयी हैं। बगल के खानों में क्रमशः सायन सूर्य के अंश और तत्सम्बन्धी सूर्य-क्रान्ति अंश, कला, विकला में तथा उसकी प्रत्यंश-गति कला, विकला में दी गयी है। अग्रिम खानों में बेलान्तर मिनिट सेकेंड में तथा उसकी प्रत्यंश गति सेकेण्ड में दी गयी है। सायन सूर्य को अपने भोगांश से अग्रिम अंश तक यानी ६०′ कला चलने में उसके भोगांश सम्बन्धी क्रान्ति एवं बेलान्तर में जो फर्क पड़ता यानी घट-बढ़ होती है, वही उक्त क्रांति एवं बेलान्तर की प्रत्यंश गति है। क्रांति के खाने में सिरे पर क्रांति की उत्तर या दक्षिण दिशा का उल्लेख किया गया है; बीच में दिशा-परिवर्तन होने पर क्रांत्यंश के पहले धन + या ऋण – चिह्न अङ्कित कर दिया गया है। उत्तर दिशा सूचित करने के लिए धन + चिह्न

सायन सूर्य से क्रांति और बेलान्तर साधन-कोष्ठक २

अप्रैल—राष्ट्रीय चैत्र (मेष) मास, वैदिक माधव मास

तारीख	सायन सूर्य का अंश	क्रांति + उत्तर अं.	क.	वि.	प्रत्यंश गति क.	वि.	बेलान्तर + मि.	से.	प्रत्यंश गति से.
१	११	०४	२१	१४	२३	२७	०४	०६	१८
२	१२	०४	४४	४१	२३	२४	०३	४८	१८
३	१३	०५	०८	०५	२३	१८	०३	३०	१८
४	१४	०५	३१	२३	२३	१४	०३	१२	१८
५	१५	०५	५४	३७	२३	०८	०२	५४	१८
६	१६	०६	१७	४५	२३	०२	०२	३६	१८
७	१७	०६	४०	४७	२२	५६	०२	१८	१७
८	१८	०७	०३	४३	२२	४९	०२	०१	१७
९	१९	०७	२६	३२	२२	४२	०१	४४	१७
१०	२०	०७	४९	१४	२२	३६	०१	२७	१६
११	२१	०८	११	५०	२२	२६	०१	११	१६
१२	२२	०८	३४	१६	२२	१९	००	५५	१६
१३	२३	०८	५६	३५	२२	१०	००	३९	१६
१४	२४	०९	१८	४५	२२	०१	००	२३	१५
१५	२५	०९	४०	४६	२१	५३	००	०८	१४
१६	२६	१०	०२	३९	२१	४२	००	०६	१४
१७	२७	१०	२४	२१	२१	३३	—	२०	१४
१८	२८	१०	४५	५४	२१	२२	००	३४	१४
१९	२९	११	०७	१६	२१	११	००	४८	१४
२०	३०	११	२८	२७	२१	३०	०१	०२	१३
२१	३१	११	४९	५७	२०	१८	०१	१५	१२
२२	३२	१२	१०	१५	२०	३७	०१	२७	१२
२३	३३	१२	३०	५२	२०	२४	०१	३९	१२
२४	३४	१२	५१	१६	२०	१२	०१	५१	११
२५	३५	१३	११	२८	१९	५९	०२	०२	१०
२६	३६	१३	३१	२७	१९	४४	०२	१२	१०
२७	३७	१३	५१	११	१९	३१	०२	२२	०९
२८	३८	१४	१०	४२	१९	१७	०२	३१	०९
२९	३९	१४	२९	५९	१९	०२	०२	४०	०९
३०	४०	१४	४९	०१	१८	४९	०२	४९	०८
३१									

मई—राष्ट्रीय वैशाख (वृष) मास, वैदिक शुक्र मास

तारीख	सायन सूर्य का अंश	क्रांति + उत्तर अं.	क.	वि.	प्रत्यंश गति क.	वि.	बेलान्तर − मि.	से.	प्रत्यंश गति से.
१	४१	१५	०७	५०	१८	३१	[illegible]	५३	०७
२	४२	१५	२६	२१	१८	१६	०३	०४	०७
३	४३	१५	४४	३७	१८	००	०३	११	०६
४	४४	१६	०२	३७	१७	४४	०३	१७	०५
५	४५	१६	२०	२१	१७	२८	०३	२२	०५
६	४६	१६	३७	४२	१७	०८	०३	२७	०५
७	४७	१६	५४	५७	१६	५३	०३	३१	०४
८	४८	१७	११	५०	१६	३४	०३	३५	०३
९	४९	१७	२८	२४	१६	१६	०३	३९	०२
१०	५०	१७	४४	४०	१५	५८	०३	४१	०२
११	५१	१८	००	३८	१५	३७	०३	४३	०१
१२	५२	१८	१६	१५	१५	१९	०३	४४	०१
१३	५३	१८	३१	३४	१४	५९	०३	४५	००
१४	५४	१८	४६	३३	१४	३९	०३	४५	०१
१५	५५	१९	०१	१२	१४	२०	०३	४४	०१
१६	५६	१९	१५	३२	१३	५७	०३	४३	०२
१७	५७	१९	२९	२९	१३	३७	०३	४१	०३
१८	५८	१९	४३	०६	१३	१५	०३	३८	०३
१९	५९	१९	५६	२१	१२	५४	०३	३५	०४
२०	६०	२०	०९	१५	१२	३३	०३	३१	०४
२१	६१	२०	२१	४८	१२	०८	०३	२७	०५
२२	६२	२०	३३	५६	११	४७	०३	२२	०५
२३	६३	२०	४५	४३	११	२४	०३	१७	०६
२४	६४	२०	५७	०७	११	००	०३	११	०६
२५	६५	२१	०८	०७	१०	३९	०३	०५	०७
२६	६६	२१	१८	४६	१०	१२	०२	५८	०८
२७	६७	२१	२८	५८	०९	४९	०२	५०	०८
२८	६८	२१	३८	४७	०९	२५	०२	४२	०८
२९	६९	२१	४८	१२	०९	०१	०२	३४	०९
३०	७०	२१	५७	१३	०८	३७	०२	२५	०९
३१									

जून—राष्ट्रीय ज्येष्ठ (मिथुन) मास, वैदिक शुचि मास

तारीख	सायन सूर्य का अंश	क्रांति + उत्तर अं.	क.	वि.	प्रत्यंश गति क.	वि.	बेलान्तर मि.	से.	प्रत्यंश गति से.
१	७१	२२	०५	५०	०८	०९	०२	१६	१०
२	७२	२२	१३	५९	०८	०१	०२	०६	१०
३	७२	२२	१३	५९	०७	४६	०२	०६	१०
४	७३	२२	२१	४५	०७	२०	०१	५६	१०
५	७४	२२	२९	०५	०६	५४	०१	४६	१२
६	७५	२२	३५	५९	०६	३०	०१	३४	१२
७	७६	२२	४२	२९	०६	०६	०१	२२	१२
८	७७	२२	४८	३५	०५	३३	०१	१०	१२
९	७८	२२	५४	०८	०५	०९	००	५८	१२
१०	७९	२२	५९	१७	०४	४५	००	४६	१२
११	८०	२३	०४	०२	०४	१७	००	३४	१२
१२	८१	२३	०८	१९	०३	४९	००	२२	१२
१३	८२	२३	१२	०८	०३	२३	००	१०	१३
१४	८३	२३	१५	३१	०२	५७	००	[illegible]	१४
१५	८४	२३	१८	२८	०२	२९	+०	१७	१४
१६	८५	२३	२०	५७	०२	०४	००	३१	१४
१७	८६	२३	२३	०१	०१	३४	००	४५	१४
१८	८७	२३	२४	३५	०१	०८	००	५९	१४
१९	८८	२३	२५	४३	००	४१	०१	१३	१४
२०	८९	२३	२६	२४	००	१६	०१	२७	१३
२१	९०	२३	२६	४०	००	१६	०१	४०	१३
२२	९१	२३	२६	२४	००	४१	०१	५३	१३
२३	९२	२३	२५	४३	०१	०८	०२	[illegible]	१३
२४	९३	२३	२४	३५	०१	०८	०२	१९	१३
२५	९३	२३	२४	३५	०१	३४	०२	१९	१३
२६	९४	२३	२३	०१	०२	०४	०२	३२	१३
२७	९५	२३	२०	५७	०२	२९	०२	[illegible]	१३
२८	९६	२३	१८	२८	०२	५८	०२	५८	१३
२९	९७	२३	१५	३१	०३	२३	०३	११	१३
३०	९८	२३	१२	०८	०३	४९	०३	२४	१३

है और दक्षिण दिशा सूचित करने के लिए ऋण चिह्न ! इसी तरह बेलान्तर के खाने में भी सिरे पर + या ऋण − चिह्न अंकित है और महीने के बीच में जहाँ-कहीं यह चिह्न बदला है, मिनिट के खाने में अंकित कर दिया गया है। बेलान्तर के इस धन, ऋण चिह्न का उपयोग सूर्यघड़ी के स्पष्ट काल को यन्त्र-घड़ी के मध्यकाल में बदलने के लिए करना चाहिये। मध्यकाल को स्पष्टकाल बनाने के लिये धन चिह्न को ऋण चिह्न और ऋण चिह्न को धन चिह्न के रूप में प्रयोग करना चाहिये। अब अभीष्ट विकलान्त सायन सूर्य की क्रांति और बेलान्तर का स्पष्टमान जानने के लिए उक्त राशि-संख्या को ३० से गुणाकर गुणनफल में अंश जोड़ दीजिए। उस पूरे अंश की क्रांति और बेलान्तर सारणी में दिया ही गया है; सिर्फ यह और ज्ञात करना है कि सूर्य के १° = ३६०० विकला में उक्त क्रांति और बेलान्तर में उनके प्रत्यंशगति-तुल्य फर्क पड़ता है तो अभीष्ट सूर्य की कला, विकला में कितना अन्तर पड़ेगा ? इसके लिए त्रैराशिक के नियमानुसार सूर्य की कला विकला को प्रत्यंश गति से गुणाकर गुणनफल में ३६०० का भाग देना चाहिये। लब्धि चालन-फल होगा जिसे अभीष्ट सूर्य के पूर्णांश की क्रान्ति और बेलान्तर में धन या ऋण कर दें तो अभीष्ट विकलान्त सूर्य की सूक्ष्म क्रांति और बेलान्तर सहज ही स्पष्ट हो जायेगा। कहने की आवश्यकता नहीं कि क्रांति और बेलान्तर घट रहे हों तो उनमें उक्त चालन ऋण करना होगा और वे बढ़ रहे हों तो चालन धन करना होगा। क्रांति और बेलान्तर का घटना बढ़ना उनके प्रस्तुत और अग्रिम मान को देख कर तुरन्त जान सकते हैं।

उदाहरण—मान लीजिये, हमें ता. १ अप्रैल '७२ को प्रातः घं. ५ मि. २९ बजे की सूर्य-क्रांति और बेलान्तर स्पष्ट करना है तो जंत्री में उक्त तारीख और समय का निरयण सूर्य स्पष्ट राश्यादि ११।१७°।५३'।१५" छपा है, उस दिन का स्पष्ट अंशादि अयनांश २३°।२८'।२३" छपा है जिसे निरयण सूर्यस्पष्ट में जोड़ देने से सायन सूर्यस्पष्ट राश्यादि

सायन सूर्य स क्रान्ति और बेलान्तर-साधन-कोष्ठक ३.

तारीख	जुलाई—राष्ट्रीय आषाढ़ (कर्क) मास वैदिक नभस् मास					अगस्त—राष्ट्रीय श्रावण (सिंह) मास वैदिक नभस्य मास					सितम्बर—राष्ट्रीय भाद्रपद (कन्या) मास वैदिक इष मास				
	सायन सूर्य का अंश	क्रांति + उत्तर अं.क.वि.	प्रत्यंश गति क.वि.	बेलान्तर + मि.से.	प्रत्यंश गति से.	सायन सूर्य का अंश	क्रांति + उत्तर अं.क.वि.	प्रत्यंश गति क.वि.	बेलान्तर + मि.से.	प्रत्यंश गति से.	सायन सूर्य का अंश	क्रांति + उत्त./द. अं.क.वि.	प्रत्यंश गति क.वि.	बेलान्तर ± मि.से.	प्रत्यंश गति से.
१	९९	२३ ०८ ११	०४ १७	०३ ३७	१२	१२९	१- ०० ३८	१५ ५८	०६ १४	०४	१५९	०८ ११ ५०	२२ ३६	०० ०३	२०
२	१००	२३ ०४ ०[illegible]	०४ ४५	०३ ४९	१२	१३०	१७ ४४ ४०	१६ १६	०६ १०	०५	१६०	०७ ४९ १४	२२ ४२	— २३	२१
३	१०१	२२ ५९ १७	०५ ०९	०४ ०१	११	१३१	१७ २८ २४	१६ ३४	०६ ०५	०५	१६१	०७ २६ ३२	२२ ४९	०० ४४	२०
४	१०२	२२ ५४ ०८	०५ ३३	०४ १२	११	१३२	१७ ११ ५०	१६ ५३	०६ ००	०६	१६२	०७ ०३ ४३	२२ ४९	०१ ०४	२०
५	१०३	२२ ४८ ३५	०६ ०६	०४ २३	११	१३३	१६ ५४ ५७	१७ ०८	०५ ५४	०७	१६२	०७ ०३ ४३	२२ ५६	०१ ०४	२०
६	१०४	२२ ४२ २९	०६ ३०	०४ ३४	१०	१३४	१६ ३७ ४९	१७ २८	०५ ४७	०७	१६३	०६ ४० ४७	२३ ०२	०१ २४	२१
७	१०५	२२ ३५ ५९	०६ ५४	०४ ४४	१०	१३५	१६ २० २१	१७ ४४	०५ ४०	०८	१६४	०६ १० ४५	२३ ०८	०१ ४५	२१
८	१०६	२२ २९ ०५	०७ २०	०४ ५४	१०	१३६	१६ ०२ ३७	१७ ४४	०५ ३२	०८	१६५	०५ ५४ ३७	२३ १४	०२ ०६	२१
९	१०७	२२ २१ ४५	०७ ४६	०५ ०४	०९	१३६	१६ ०२ ३७	१८ ००	०५ ३२	०९	१६६	०५ ३१ २३	२३ १८	०२ २७	२१
१०	१०८	२२ १३ ५९	०८ ०९	०५ १३	०९	१३७	१५ ४४ ३७	१८ १६	०५ २३	०९	१६७	०५ ०८ ०५	२३ २४	०२ ४८	२१
११	१०९	२२ ०५ ५०	०८ ३०	०५ २[illegible]	०८	१३८	१५ २६ २१	१८ ३१	०५ १४	१०	१६८	०४ ४४ ४[illegible]	२३ [illegible]७	०३ ०९	२१
१२	११०	२१ ५७ १३	०९ ०५	०५ ३०	०८	१३९	१५ ०७ ५०	१८ ४९	०५ ०४	१०	१६९	०४ २१ १४	२३ ३३	०३ ३०	२१
१३	१११	२१ ४८ १	०९ २५	०५ ३-	०७	१४०	१४ ४९ ०१	१९ ०२	०४ ५४	११	१७०	०३ ५७ ४१	२३ ३५	०३ ५१	२१
१४	११२	२१ ३८ ४९	०९ ४०	०५ ४५	०७	१४१	१४ २९ ५९	१९ १७	०४ ४३	१२	१७१	०३ ३४ ०६	२३ ३९	०४ १	२२
१५	११३	२१ २८ ५८	१० १[illegible]	०५ ५२	०६	१४२	१४ १० ४२	१९ ३१	०४ ३१	१२	१७२	०३ १० २७	२३ ४२	०४ ३४	२२
१६	११४	२१ १८ ४६	१० १[illegible]	०५ ५[illegible]	०६	१४३	१३ ५१ ११	१९ ४४	०४ १९	१३	१७३	०२ ४६ ४५	२३ ४५	०४ ५६	२२
१७	११४	२१ १८ ४६	१० ३०	०५ ५८	०६	१४४	१३ ३१ २७	१९ ५९	०४ ०६	१३	१७४	०२ २३ ००	२३ ४६	०५ १[illegible]	२२
१८	११५	२१ ०८ ०९	११ ००	०६ ०४	०५	१४५	१३ ११ २८	२० १२	०३ ५३	१४	१७५	०१ ५९ १४	२३ ४९	०५ ४[illegible]	२२
१९	११६	२० ५७ ०९	११ २०	०६ ०९	०४	१४६	१२ ५१ १६	२० २४	०३ ३९	१४	१७६	०१ ३५ २५	२३ ५०	०६ ०[illegible]	२२
२०	११७	२० ४५ ४३	११ ४०	०६ १३	०४	१४७	१२ ३० ५२	२० ३७	०३ [illegible]	१५	१७७	०१ ११ ३५	२३ ५१	०६ २४	२२
२१	११८	२० ३३ ५६	१२ ०८	०६ १७	०३	१४८	१२ १० १५	२० ४८	०३ १०	१५	१७८	०० ४७ ४४	२३ ५२	०६ ४६	२२
२२	११९	२० २१ ४८	१२ ३३	०६ २०	०२	१४९	११ ४९ २७	२१ ००	०२ ५५	१६	१७९	०० २३ ५२	२३ ५२	०७ ०८	२२
२३	१२०	२० ०९ १५	१२ ५४	०६ २२	०२	१५०	११ २८ २७	२१ ११	०२ ३९	१७	१८०	०० ०० ००	२३ ५२	०७ ३०	२२
२४	१२१	१९ ५६ २१	१३ १५	०६ २४	०१	१५१	११ ०७ १६	२१ २२	०२ २२	१७	१८१	-द २३ ५२	२३ ५२	०७ ५[illegible]	२२
२५	१२२	१९ ४३ ०६	१३ ३९	०६ २५	०१	१५२	१० ४५ ५४	२१ ३३	०२ ०५	१७	१८२	०० ४७ ४४	२३ ५१	०८ १४	२१
२६	१२३	१९ २९ २९	१३ ५७	०६ २६	०१	१५३	१० २४ २१	२१ ४२	०१ ४८	१८	१८३	०१ ११ ३५	३ ५०	०८ ३५	२१
२७	१२४	१९ १५ ३२	१४ २०	०६ २५	०१	१५४	१० ०२ ३९	२१ ५३	०१ ३०	१८	१८४	०१ ३५ [illegible]५	३ ४९	०८ ५६	२०
२८	१२५	१९ ०१ १२	१४ ३९	०६ २४	०१	१५५	०९ ४० ४६	२२ ०१	०१ १[illegible]	१८	१८५	०१ ५९ १[illegible]	३ ४६	०९ १६	२०
२९	१२६	१८ ४६ ३३	१४ ५९	०६ २३	०२	१५६	०९ १८ ४५	२२ १०	०० ५४	१९	१८६	०२ २३ ००	३ ४५	०९ ३६	२०
३०	१२७	१८ ३१ ३४	१५ १९	०६ २१	०३	१५७	०८ ५६ ३५	२२ १९	०० ३५	१९	१८७	०२ ४६ ४५	३ ४२	०९ ५६	२०
३१	१२८	१८ १६ १५	१५ ३०	०६ १८	०४	१५८	०८ ३४ १६	२२ २६	०० १६	१९					

०।११।२१'।५८" हुआ। इसके पूर्णांश ११° की क्रांति + (उत्तर) अंशादि ४।२१'।१४" एवं बेलान्तर + ४ मि. ६ से. सारणी में मिला। वहीं उनकी प्रत्यंश-गति भी क्रमश २३'२७" तथा १८ से. मिली अर्थात् सायन सूर्य के ११ अंश से १२ अंश तक ३६००" विकला चलने में ११ अंश की उक्त क्रांति में २३'।२७" की वृद्धि तथा बेलान्तर में १८ सेकेंड का ह्रास होता है। हमें यहाँ सायन सूर्य के ११ अंश के अलावा २१'।५८" के लिए क्रांति एवं बेलान्तर की ह्रास वृद्धि यानी चालन चाहिए। एतदर्थ २१' की विकला(२१ × ६० =)१२६०" में ५८" जोड़ दिया तो कुल विकला १३१८" हुई जिसे क्रांति की प्रत्यंशगति (२३' × ६० + २७" =) १४०७" विकला से गुणाकर गुणनफल १८५४४२६ में ३६००" का भाग दिया तो क्रांति का धन + चालन ५१५" ८'।३५" प्राप्त हुआ जिसे अभीष्ट सायन सूर्य के ११ अंश की क्रांति ४°।२१'।१४" में जोड़ दिया, क्योंकि क्रांति यहाँ बढ़ रही है; तब अभीष्ट क्रांति अंशादि ४°।२९'।४९" स्पष्ट हो गयी। इसी प्रकार से बेलान्तर की प्रत्यंश-गति १८ सेकेण्ड से सूर्य की २१'।५८" के लिए ऋण चालन ६ से. मिलता है जिसे सूर्य के ११ अंश के बेलांतर ४ मि. ६ से. में घटा देने से अभीष्ट बेलान्तर ४ मि. हुआ। भारतीय नाविक पञ्चाङ्ग (Indian Nautical Almanac) में उक्त ता. और समय की सूर्य क्रांति ४°।२९'।५०"·२ तथा बेलान्तर मि. ४ से. ०·२२ दी गयी है अर्थात् हमारी सारणी से सिद्ध क्रांति में केवल १ विकला का अन्तर है जो उपेक्ष्य है। अब यदि इस सूक्ष्म क्रांति और बेलान्तर का उपयोग उक्त ता. को काशी में सूर्योदय-साधन के लिए करना हो तो काशी के अक्षांश २५°-१९' तथा उक्त सूर्य-क्रांति ४°।२९'।४९" का चर ८ मि. ३१ सेकेंड "ज्योतिष-रहस्य" के इसी प्रथम खण्ड में छपी चर-सारणी से प्राप्त होगा। इस चर, बेलान्तर और रेखां.-अन्तर के संस्कार धं० ६ में इस भाँति करने होंगे—

सायन सूर्य से क्रांति और बेलान्तर-साधन-कोष्ठक ४.

अक्टूबर—राष्ट्रीय आश्विन (तुला) मास, वैदिक ऊर्ज मास

तारीख	सायन सूर्य का अंश	क्रांति — दक्षिण अं.	क.	वि.	प्रत्यंश गति क.	वि.	बेलान्तर— मि.	से.	प्रत्यंश गति से.
१	१८८	०३	१०	२७	२३	२९	१०	१६	२०
२	१८९	०३	३४	०६	२३	३५	१०	३६	१९
३	१९०	०३	५७	४१	२३	३३	१०	५५	१९
४	१९१	०४	२१	१४	२३	२७	११	१४	१८
५	१९२	०४	४४	४१	२३	२४	११	३२	१८
६	१९३	०५	०८	०५	२३	१८	११	५०	१८
७	१९४	०५	३१	२३	२३	१४	१२	०८	१७
८	१९५	०५	५४	३७	२३	०८	१२	२५	१६
९	१९६	०६	१७	४५	२३	०२	१२	४१	१६
१०	१९७	०६	४०	४७	२२	५६	१२	५७	१६
११	१९८	०७	०३	४३	२२	४९	१३	१३	१५
१२	१९९	०७	२६	३२	२२	४८	१३	२८	१५
१३	२००	०७	४९	१४	२२	३६	१३	४३	१४
१४	२०१	०८	११	५०	२२	२६	१३	५७	१४
१५	२०२	०८	३४	१६	२२	१९	१४	११	१३
१६	२०३	०८	५६	३५	२२	१०	१४	२४	१२
१७	२०४	०९	१८	४५	२२	०१	१४	३६	१२
१८	२०५	०९	४०	४६	२१	५३	१४	४८	११
१९	२०६	१०	०२	३९	२१	४८	१४	५९	११
२०	२०७	१०	२४	२१	२१	३३	१५	१०	१०
२१	२०८	१०	४५	५४	२१	२२	१५	२०	०९
२२	२०९	११	०७	१६	२१	११	१५	२९	०८
२३	२१०	११	२८	२८	२१	००	१५	३७	०८
२४	२११	११	४९	२९	२०	४८	१५	४५	०८
२५	२१२	१२	१०	१५	२०	३७	१५	५३	०६
२६	२१३	१२	३०	५[illegible]	२०	२४	१५	५९	०६
२७	२१४	१२	५१	१६	२०	१२	१६	०५	०५
२८	२१५	१३	११	२८	१९	५९	१६	१०	०४
२९	२१६	१३	३१	२९	१९	४४	१६	१४	०४
३०	२१७	१३	५१	११	१९	३१	१६	१८	०३
३१	२१८	१४	१०	४[illegible]	१९	१७	१६	२१	०१

नवम्बर—राष्ट्रीय कार्तिक (वृश्चिक) मास, वैदिक सहस् मास

तारीख	सायन सूर्य का अंश	क्रांति — दक्षिण अं.	क.	वि.	प्रत्यंश गति क.	वि.	बेलान्तर— मि.	से.	प्रत्यंश गति से.
१	२१९	१४	२९	५१	१९	०२	१६	२२	०१
२	२२०	१४	४९	०१	१८	४९	१६	२३	००
३	२२१	१५	०७	५०	१८	३१	१६	२३	०१
४	२२२	१५	२६	२१	१८	१६	१६	२२	०२
५	२२३	१५	४४	३७	१८	००	१६	२१	०२
६	२२४	१६	०२	३७	१७	४४	१६	१९	०३
७	२२५	१६	२०	२१	१७	२८	१६	१६	०४
८	२२६	१६	३७	४९	१७	०८	१६	१२	०५
९	२२७	१६	५४	५७	१६	५३	१६	०७	०६
१०	२२८	१७	११	५०	१६	३४	१६	०१	०६
११	२२९	१७	२८	२४	१६	१६	१५	५५	०८
१२	२३०	१७	४४	४०	१५	५८	१५	४७	०८
१३	२३१	१८	००	३८	१५	३७	१५	३९	०९
१४	२३२	१८	१६	१५	१५	१९	१५	३०	१०
१५	२३३	१८	३१	३४	१४	५९	१५	२०	१०
१६	२३४	१८	४६	३३	१४	३९	१५	१०	१२
१७	२३५	१९	०१	१२	१४	२३	१४	५८	१२
१८	२३६	१९	१५	३५	१३	५४	१४	४६	१३
१९	२३७	१९	२९	२९	१३	३७	१४	३३	१४
२०	२३८	१९	४३	०६	१३	१५	१४	१९	१४
२१	२३९	१९	५६	२१	१२	५४	१४	०५	१५
२२	२४०	२०	०९	१५	१२	३३	१३	५०	१७
२३	२४१	२०	२१	४८	१२	०८	१३	३३	१७
२४	२४२	२०	३३	५६	११	४७	१३	१६	१७
२५	२४३	२०	४५	४३	११	२४	१२	५९	१८
२६	२४४	२०	५७	०७	११	००	१२	४१	१९
२७	२४५	२१	०८	०७	१०	३९	१२	२२	२०
२८	२४६	२१	१८	४६	१०	१२	१२	०२	२१
२९	२४७	२१	२८	५८	०९	४९	११	४१	२१
३०	२४८	२१	३८	४७	०९	२५	११	२०	२२

दिसम्बर—राष्ट्रीय मार्गशीर्ष (धनु) मास, वैदिक सहस्य मास

तारीख	सायन सूर्य का अंश	क्रांति — दक्षिण अं.	क.	वि.	प्रत्यंश गति क.	वि.	बेलान्तर∓ मि.	से.	प्रत्यंश गति से.
१	२४९	२१	४८	१[illegible]	०९	०१	१०	५८	२२
२	२५०	२१	५७	१३	०८	३७	१०	३६	२२
३	२५१	२२	०५	५०	०८	०९	१०	१४	२४
४	२५२	२२	१३	५९	०७	४६	०९	५०	२४
५	२५३	२२	२१	४५	०७	२०	०९	२६	२४
६	२५४	२२	२९	०५	०६	५४	०९	०२	२६
७	२५५	२२	३५	५९	०६	३०	०८	३६	२६
८	२५६	२२	४२	२९	०६	०६	०८	१०	२६
९	२५७	२२	४८	३५	०५	३३	०७	४४	२७
१०	२५८	२२	५४	०८	०५	०९	०७	१७	२७
११	२५९	२२	५९	१७	०४	४५	०६	५०	२७
१२	२६०	२३	०४	०२	०४	१७	०६	२३	२८
१३	२६१	२३	०८	१९	०३	४९	०५	५५	२८
१४	२६२	२३	१२	०८	०३	२३	०५	२७	२८
१५	२६३	२३	१५	३१	०२	५७	०४	५९	२८
१६	२६४	२३	१८	२८	०२	२९	०४	३१	२९
१७	२६५	२३	२०	५७	०२	०४	०४	०२	२९
१८	२६६	२३	२३	०१	०१	३४	०३	३३	२९
१९	२६७	२३	२४	३५	०१	०८	०३	०४	२९
२०	२६८	२३	२५	४३	००	४१	०२	३५	३०
२१	२६९	२३	२६	२४	००	१६	०२	०५	३०
२२	२७०	२३	२६	४०	००	१६	०१	३५	२९
२३	२७१	२३	२६	२४	००	४१	०१	०६	२९
२४	२७२	२३	२५	४३	०१	०८	००	३७	२९
२५	२७३	२३	२४	३५	०१	३४	००	०८	२९
२६	२७४	२३	२३	०१	०२	०४	+	२१	२९
२७	२७५	२३	२०	५७	०२	२९	००	५०	२९
२८	२७६	२३	१८	२८	०२	५७	०१	१९	२९
२९	२७७	२३	१५	३१	०३	२३	०१	४८	२९
३०	२७८	२३	१२	०८	०३	४९	०२	१७	२९
३१	२७९	२३	०८	१९	०४	१७	०२	४६	२८

	घ.	मि.	से.	
	६	०	०	उन्मण्डलीय सूर्योदय का समय (Sunrise-time in Six O'Clock Circle)
ऋण —		८	३१	चर-संस्कार (Ascensional Difference)
	५	५१	२९	स्थानीय सूर्योदय-समय सूर्य-घड़ी से (Local Apparent Time)
धन +		४	०	बेलान्तर (Equation of time)
	५	५५	२९	सूर्योदय का स्थानिक मध्यम समय (Local Mean Time)
ऋण —		२	०	स्टैं.-अन्तर (Correction to I.S.T.)
	५	५३	२९	सूर्योदय का भा. स्टैं. टा (Indian Standard Time of sun-rise) सिद्ध

हुआ। जंत्री में उक्त दिन के सूर्योदय का स्टैं. टा. घं ५ मि. ५४ छपा है। यदि किसी के जन्म अथवा अन्य किसी घटना का शुद्ध इष्टकाल बनाना है तो जन्म अथवा घटना के स्टैं. टा में जन्म या घटनास्थल के सूर्योदय का स्टैं टा. घटा कर शेष घंटादि को ॥ से गुणाकर घट्यादि बना लेना चाहिए। यह इष्टकाल-साधन का सबसे सीधा सहज मार्ग है। इस विवरण से सर्वथा स्पष्ट है कि सायन सूर्य जितना सूक्ष्म होगा, उतनी ही सूक्ष्म उसकी क्रांति और बेलान्तर उपलब्ध होगा एवं सूक्ष्म क्रांति से ही शुद्ध चर प्राप्त होगा। चर और बेलान्तर स्थूल, अशुद्ध होने से न वास्तविक सूर्योदय-समय सिद्ध हो सकता है, न तज्जन्य शुद्ध इष्टकाल बन सकता है। भारतीय पद्धति में सायन सूर्य ही उस लग्न और दशम का भी आधार-स्तम्भ है जिस पर फलित के भव्य प्रासाद का निर्माण किया जाता है। इसीलिए उन सबके गणित में प्रत्यक्ष वेध-सिद्ध छायार्क (सायन सूर्य) के उपयोग का हमारे सिद्धान्त ग्रन्थों में स्पष्ट आदेश दिया गया है; देखिए, सूर्यसिद्धांत के त्रिप्रश्नाधिकार में १०वें श्लोक का अन्तिम चरण तथा सायन सूर्य-साधनार्थ अग्रिम १७ और १८वाँ श्लोक !

❀ ग्रहों की विशोत्तरी दशा अन्तर्दशा जानने का चक्र ❀

सूर्यदशावर्ष ६				चन्द्रदशावर्ष १०				भौमदशावर्ष ७			
कृ.उ.फा.उ.षा.				रोहि.ह. श्रवण				मृग. चित्रा. ध.			
अन्तर्दशा				अन्तर्दशा				अन्तर्दशा			
ग्र.	व·	मा·	दि·	ग्र.	व·	मा·	दि·	ग्र.	व·	मा·	दि·
सू·	०	३	१८	चं·	०	१०	०	मं·	०	४	२७
चं·	०	६	०	मं·	०	७	०	रा·	१	०	१८
मं·	०	४	६	रा.	१	६	०	बृ·	०	११	६
रा.	०	१०	२४	बृ·	१	४	०	श.	१	१	९
बृ·	०	९	१८	श.	१	७	०	बु·	०	११	२७
श.	०	११	१२	बु·	१	५	०	के·	०	४	२७
बु·	०	१०	६	के·	०	७	०	शु.	१	२	०
के·	०	४	६	शु·	१	८	०	सू·	०	४	६
शु·	१	०	०	सू·	०	६	०	चं·	०	७	०

राहु दशावर्ष १८				गुरुदशावर्ष १६				शनिदशावर्ष १९			
आर्द्रा.स्वा.शत.				पुन.वि.पू.भा.				पुष्य.अनु.उ.भा			
अन्तर्दशा				अन्तर्दशा				अन्तर्दशा			
ग्र.	व·	मा·	दि·	ग्र.	व·	मा·	दि·	ग्र.	व·	मा·	दि·
रा.	२	८	१२	बृ·	२	१	१८	श.	३	०	३
बृ·	२	४	२४	श.	२	६	१२	बु·	२	८	९
श.	२	१०	६	बु·	२	३	६	के·	१	१	९
बु·	२	६	१८	के·	०	११	६	शु.	३	२	०
के·	१	०	१८	शु.	२	८	०	सू·	०	११	१२
शु.	३	०	०	सू·	०	९	१८	चं·	१	७	०
सू·	०	१०	२४	चं·	१	४	०	मं·	१	१	९
चं·	१	६	०	मं·	०	११	६	रा.	२	१०	६
मं·	१	०	१८	रा·	२	४	२४	बृ·	२	६	१२

बुधदशावर्ष १७				केतुदशावर्ष ७				शुक्रदशावर्ष २०			
आश्ले.ज्ये.रे.				मघा.मू.अश्वि.				पू.फा.पू.षा.भ.			
अन्तर्दशा				अन्तर्दशा				अन्तर्दशा			
ग्र.	व·	मा·	दि·	ग्र.	व·	मा·	दि·	ग्र.	व·	मा·	दि·
बु·	२	४	२७	के·	०	४	२७	शु.	३	४	०
के·	०	११	२७	शु.	१	२	०	सू·	१	०	०
शु.	२	१०	०	सू·	०	४	६	चं·	१	८	०
सू·	०	१०	६	चं·	०	७	०	मं·	१	२	०
चं·	१	५	०	मं·	०	४	२७	रा.	३	०	०
मं·	०	११	२७	रा.	१	०	१८	बृ·	२	८	०
रा.	२	६	१८	बृ·	०	११	६	श·	३	२	०
बृ·	२	३	६	श·	१	१	९	बु·	२	१०	०
श·	२	८	९	बु·	०	११	२७	के·	१	२	०

जन्म-चन्द्रस्पष्ट से विंशोत्तरी दशा-साधन-सारणी

(जन्म चन्द्र-राश्यंश से विंशोत्तरीदशा के भुक्त वर्ष मास दिन-बोधक सारणी-सं० १)

	मेष, सिंह, वा धनु राशिस्थ चन्द्र				वृष, कन्या वा मकर राशिस्थ चन्द्र				मिथुन,तुला वा कुम्भ राशिस्थ चन्द्र				कर्क,वृश्चिक वा मीन राशिस्थ चन्द्र			
अंश	ग्रह	वर्ष	मास	दिन	ग्रह	वर्ष	मास	दिन	ग्रह	वर्ष	मास	दिन	ग्रह	वर्ष	मास	दिन
१	के·	०	६	९	सू·	१	११	१२	मं·	४	०	९	बृ·	१३	२	१२
२		१	०	१८		२	४	२४		४	६	१८		१४		२४
३		१	६	२७		२	१०	६		५	०	२७		१५	७	६
४		२	१	६		३	३	१८		५	७	६	श·	०	११	१२
५		२	७	१५		३	९	०		६	१	१५		२	४	१५
६		३	१	२४		४	२	१२		६	७	२४		३	९	१८
७		३	८	३		४	७	२४	रा·	०	५	१२		५	२	२१
८		४	२	१२		५	१	६		१	९	१८		६	७	२४
९		४	८	२१		५	६	१८		३	१	२४		८	०	२७
१०		५	३	०		६	०	०		४	६	०		९	६	०
११		५	९	९	चं·	०	९	०		५	१०	६		१०	११	३
१२		६	३	१८		१	६	०		७	२	१२		१२	४	६
१३		६	९	२७		२	३	०		८	६	१८		१३	९	९
१४	शु·	१	०			३	०	०		९	१०	२४		१५	२	१२
१५		२	६	०		३	९	०		११	३	०		१६	७	१५
१६		४	०	०		४	६	०		१२	७	६		१८	०	१८
१७		५	६	०		५	३	०		१३	११	१२	बु·	०	५	३
१८		७	०	०		६	०	०		१५	३	१८		१	८	१२
१९		८	६	०		६	९	०		१६	७	२४		२	११	२१
२०		१०	०	०		७	६	०		१८	०	०		४	३	०
२१		११	६	०		८	३	०	बृ·	१	२	१२		५	६	९
२२		१३	०	०		९	०	०		२	४	२४		६	९	१८
२३		१४	६	०		९	९	०		३	७	६		८	०	२७
२४		१६	०	०	मं·	०	४	६		४	९	१८		९	४	६
२५		१७	६	०		०	१०	१५		६	०	०		१०	७	१५
२६		१९	०	०		१	४	२४		७	२	१२		११	१०	२४
२७	सू·	०	१	२४		१	११	३		८	४	२४		१३	२	३
२८		०	७	६		२	५	१२		९	७	६		१४	५	१२
२९		१	०	१८		२	११	२१		१०	९	१८		१५	८	२१
३०		१	६	०		३	६	०		१२	०	०		१७	०	०

लीजिये पाठक, अब विंशोत्तरी दशा-साधन के लिए भयात ३दिन, ४घटी, ३०पल मिला। सबको यथा रीति जोड़ दिया—भभोग आदि के क्लिष्ट गणित की कोई आवश्यकता नहीं; केवल जन्मकालीन चन्द्र के राश्यंश, कला, विकला के अंश इस सारणी से लेकर जोड़ दीजिये और विंशोत्तरी ग्रह-दशा के भुक्त वर्ष, मास, दिन, घटी, पल तुरन्त मालूम कर लीजिये।

	वर्ष	मास	दिन	घटी	पल
	६	०	०	०	०
	०	४	१५	०	०
	०	०	३	४	३०
जोड़	६	४	१८	४	३०

उदाहरण—मेरी अपनी कुण्डली में जन्म-चन्द्र मकर राशि के १८ अंश ३० कला ४१ विकला का है। अत: प्रथम राश्यंश सारणी से मकर के खाने में १८ अंश के सामने देखा तो चन्द्रदशा का ६ वर्ष, ० मास, ०दिन लिखा मिला; फिर अगले पृष्ठ पर कला-विकलावाली सारणी सं.२ में चन्द्रदशा के नीचे ३० कला के सामने खाने में देखा तो ० वर्ष, ४ मास १५ दिन मिला। इसी प्रकार विकला के खाने में ४१ के सामने

यह दशा का भुक्तकाल आया यानी हमारे जन्म के समय चन्द्रमा की दशा के ६ वर्ष, ४ मास, १८ दिन, ४ घटी, ३० पल व्यतीत हो चुके थे। चन्द्रमा की कुल दशा १० वर्ष की होती है। अत: १० वर्ष में उक्त भुक्तकाल घटाया तो ज्ञात हुआ कि जन्म के बाद ३ वर्ष ७ मास ११ दिन ५५ घटी ३० पल तक चन्द्रदेव की दशा रही।

दशा, अन्तर, प्रत्यन्तर्दशा-सारणी [दशमलव-प्रणाली से]

सूर्य-दशा-वर्ष ६ में सूर्यादि ग्रहों की अन्तर एवं प्रत्यन्तर्दशा

सूर्य अन्तर्दशा व.० मा. ३ दि. १८ में प्रत्यन्तदशा			चन्द्र अन्तर्दशा व. ०मा. ६ दि. ० में प्रत्यन्तर्दशा			मंगल अन्तर्दशा व.० मा ४ दि. ६ में प्रत्यन्तर्दशा		
ग्र.	मा	दि.	ग्र.	मा.	दि.	ग्र.	मा.	दि.
सू.	०	५.४	चं.	०	१५.०	मं.	०	७.३५
चं.	०	९.०	मं.	०	१०.५	रा.	०	१८.९
मं.	०	६.३	रा.	०	२७.०	बृ.	०	१६.८
रा.	०	१६.२	बृ.	०	२४.०	श.	०	१९.९५
बृ.	०	१४.४	श.	०	२८.५	बु.	०	१७.८५
श.	०	१७.१	बु.	०	२५.५	के.	०	७.३५
बु.	०	१५.३	के.	०	१०.५	शु.	०	२१.०
के.	०	६.३	शु.	१	०.०	सू.	०	६.३
शु.	०	१८.०	सू.	०	९.०	चं.	०	१०.५

राहु अन्तर्दशा व.०मा. १० दि. २४ में प्रत्यन्तर्दशा			गुरु अन्तर्दशा व.० मा. ९ दि. १८ में प्रत्यन्तर्दशा			शनि अन्तर्दशा व.०मा ११ दि. १२ में प्रत्यन्तर्दशा		
ग्र.	मा	दि.	ग्र.	मा	दि.	ग्र.	मा	दि.
रा.	१	१८.६	बृ.	१	८.४	श.	१	२४.१५
बृ.	१	१३.२	श.	१	१५.६	बु.	१	१८.४५
श.	१	२१.३	बु.	१	१०.८	के.	०	१९.९५
बु.	१	१५.९	के.	०	१६.८	शु.	१	२७.०
के.	०	१८.९	शु.	१	१८.०	सू.	०	१७.१
शु.	१	२४.०	सू.	०	१४.४	चं.	०	२८.५
सू.	०	१६.२	चं.	०	२४.०	मं.		१९.९५
चं.	०	२७.०	मं.	०	१६.८	रा.		२१.३
मं.	०	१८.९	रा.	१	१३.२	बृ.		१५.६

बुध अन्तर्दशा व.०मा. १० दि. ६ में प्रत्यन्तर्दशा			केतु अन्तर्दशा व. ० मा. ४ दि. ६ में प्रत्यन्तर्दशा			शुक्र अन्तर्दशा व. १ मा. ० दि. ० में प्रत्यन्तर्दशा		
ग्र.	मा	दि.	ग्र.	मा	दि.	ग्र.	मा	दि.
बु.	१	१३.३५	के.	०	७.३५	शु.	२	०.०
के.	०	१७.८५	शु.	०	२१.०	सू.	०	१८.०
शु.	१	२१.०	सू.	०	६.३	चं.	१	०.०
सू.	०	१५.३	चं.	०	१०.५	मं.	०	२१.०
चं.	०	२५.५	मं.	०	७.३५	रा.	१	२४.०
मं.	०	१७.८५	रा.	०	१८.९	बृ.	१	१८.०
रा.	१	१५.९	बृ.	०	१६.८	श.	१	२७.०
बृ.	१	१०.८	श.	०	१९.९५	बु.	१	२१.०
श.	१	१८.४५	बु.	०	१७.८५	के.	०	२१.०

चन्द्र दशा-वर्ष १० में चन्द्रादि ग्रहों की अन्तर व प्रत्यन्तर्दशा

चन्द्र अन्तर्दशा व.०मा.१० दि. ० में प्रत्यन्तर्दशा			मंगल अन्तर्दशा व. ० मा.७ दि.० में प्रत्यन्तर्दशा			राहु अन्तर्दशा व. १ मा. ६ दि. ० में प्रत्यन्तर्दशा		
ग्र.	मा	दि.	ग्र.	मा	दि.	ग्र.	मा	दि.
चं.	०	२५.०	मं.	०	१२.२५	रा.	२	२१.०
मं.	०	१७.५	रा.	१	१.५	बृ.	२	१२.०
रा.	१	१५.०	बृ.	०	२८.०	श.	२	२५.५
बृ.	१	१०.०	श.	१	३.२५	बु.	२	१६.५
श.	१	१७.५	बु.	०	२९.७५	के.	१	१.५
बु.	१	१२.५	के.	०	१२.२५	शु.	३	०.०
के.	०	१७.५	शु.	१	५.०	सू.	०	२७.०
शु.	१	२०.०	सू.	०	१०.५	चं.	१	१५.०
सू.	०	१५.०	चं.	०	१७.५	मं.	१	१.५

गुरु अन्तर्दशा व.१ मा. ४ दि. ० में प्रत्यन्तर्दशा			शनि अन्तर्दशा व. १ मा. ७ दि. ० में प्रत्यन्तर्दशा			बुध अन्तर्दशा व. १ मा.५ दि. ० में प्रत्यन्तर्दशा		
ग्र.	मा	दि.	ग्र.	मा	दि.	ग्र.	मा	दि.
बृ.	२	४.०	श.	३	०.२५	बु.	२	१२.२५
श.	२	१६.०	बु.	२	२०.७५	के.	०	२९.७५
बु.	२	८.०	के.	१	३.२५	शु.	२	२५.०
के.	०	२८.०	शु.	३	५.०	सू.	०	२५.५
शु.	२	२०.०	सू.	०	२८.५	चं.	१	१२.५
सू.	०	२४.०	चं.	१	१७.५	मं.	०	२९.७५
चं.	१	१०.०	मं.	१	३.२५	रा.	२	१६.५
मं.	०	२८.०	रा.	२	२५.५	बृ.	२	८.०
रा.	२	१२.०	गु.	२	१६.०	श.		२०.७५

केतु अन्तर्दशा व. ० मा. ७ दि. ० में प्रत्यन्तर्दशा			शुक्र अन्तर्दशा व. १ मा. ८ दि. ० में प्रत्यन्तर्दशा			सूर्य अन्तर्दशा व. ० मा. ६ दि. ० में प्रत्यन्तर्दशा		
ग्र.	मा	दि.	ग्र.	मा	दि.	ग्र.	मा	दि.
के.	०	१२.२५	शु.	३	१०.०	सू.	०	९.०
शु.	१	५.०	सू.	१	०.०	चं.	०	१५.०
सू.	०	१०.५	चं.	१	२०.०	मं.	०	१०.५
चं.	०	१७.५	मं.	१	५.०	रा.	०	२७.०
मं.	०	१२.२५	रा.	३	०.०	बृ.	०	२४.०
रा.	१	१.५	बृ.	२	२०.०	श.	०	२८.५
बृ.	०	२८.०	श.	३	५.०	बु.	०	२५.५
श.	१	३.२५	बु.	२	२५.०	के.	०	१०.५
बु.	०	२९.७५	के.	१	५.०	शु.	१	०.०

मंगल-दशा-वर्ष ७ में भौमादि ग्रहों की अन्तर एवं प्रत्यन्तर्दशा

मं. अन्तर्दशा व. ० मा. ४ दि. २७ में प्रत्यन्तर्दशा			राहु अन्तर्दशा व. १ मा.० दि. १८ में प्रत्यन्तर्दशा			गुरु अन्तर्दशा व. ०मा.११ दि. ६ में प्रत्यन्तर्दशा		
ग्र.	मा	दि.	ग्र.	मा	दि.	ग्र.	मा	दि.
मं.	०	८.५७५	रा.	१	२६.७	बृ.	१	१४.८
रा.	०	२२.०५	बृ.	१	२०.४	श.	१	२३.२
बृ.	०	१९.६	श.	१	२९.८५	बु.	१	१७.६
श.	०	२३.२७५	बु.	१	२३.५५	के.	०	१९.६
बु.	०	२०.८२५	के.	०	२२.०५	शु.	१	२६.०
के.	०	८.५७५	शु.	२	३.०	सू.	०	१६.८
शु.	०	२४.५	सू.	०	१८.९	चं.	०	२८.०
सू.	०	७.३५	चं.	१	१.५	मं.	०	१९.६
चं.	०	१२.२५	मं.	०	२२.०५	रा.	१	२०.४

शनि अन्तर्दशा व. १ मा. १ दि ९ में प्रत्यन्तर्दशा			बुध अन्तर्दशा व. ० मा.११ दि. २७ में प्रत्यन्तर्दशा			केतु अन्तर्दशा व. ० मा. ४ दि. २७ में प्रत्यन्तर्दशा		
ग्र.	मा	दि.	ग्र.	मा	दि.	ग्र.	मा	दि.
श.		३.१७५	बु.	१	२०.५७५	के.	०	८.५७५
बु.	१	२६.५२५	के.	०	२०.८२५	शु.	०	२४.५
के.	०	२३.२७५	शु.	१	२९.५	सू.	०	७.३५
शु.	२	६.५	सू.	०	१७.८५	चं.	०	१२.२५
सू.	०	१९.९५	चं.	०	२९.७५	मं.	०	८.५७५
चं.	१	३.२५	मं.	०	२०.८२५	रा.	०	२२.०५
मं.	०	२३.२७५	रा.	१	२३.५५	बृ.	०	१९.६
रा.	१	२९.८५	बृ.	१	१७.६	श.	०	२३.२७५
बृ.	१	२३.२	श.	१	२६.५२५	बु.	०	२०.८२५

शुक्र अन्तर्दशा व. १मा. २ दि. ० में प्रत्यन्तर्दशा			सूर्य अन्तर्दशा व. ० मा. ४ दि. ६ में प्रत्यन्तर्दशा			चन्द्र अन्तर्दशा व. ० मा.७ दि. ० में प्रत्यन्तर्दशा		
ग्र.	मा	दि.	ग्र.	मा	दि.	ग्र.	मा	दि.
शु.		१०.०	सू.	०	६.३	चं.	०	१७.५
सू.	०	२१.०	चं.	०	१०.५	मं.	०	१२.२५
चं.	१	५.०	मं.	०	७.३५	रा.	१	१.५
मं.	०	२४.५	रा.	०	१८.९	बृ.	०	२८.०
रा.	२	३.०	बृ.	०	१६.८	श.	१	३.२५
बृ.	१	२६.०	श.	०	१९.९५	बु.	०	२९.७५
श.		६.५	बु.	०	१७.८५	के.	०	१२.२५
बु.	१	२९.५	के.	०	७.३५	शु.	१	५.०
के.	०	२४.५	शु.	०	२१.०	सू.	०	१०.५

सारणी का विवरण और प्रयोग विधि—विंशोत्तरी दशा तथा अन्तर्दशा की सारणियाँ इस पुस्तक के अतिरिक्त पिछले वर्षों की जंत्री में भी प्रकाशित की जा चुकी हैं। तभी से पाठकों का आग्रह था कि विंशोत्तरी की प्रत्यन्तदशाओं की भी शुद्ध सारणियाँ जन्त्री में प्रकाशित कर दी जायँ। उनके माँग की पूर्ति करना इसलिये भी हमें आवश्यक हो गया कि स्थानीय सभी प्रसिद्ध प्रकाशकों द्वारा जो 'लघुपाराशरी' की पुस्तकें प्रकाशित की गई हैं, उनमें छपी हुई प्रत्यन्तदशाओं की सारणियों में बहुत अधिक अशुद्धियाँ हैं।

राहु-दशा-वर्ष १८ में राहु आदि ग्रहों की अन्तर एवं प्रत्यन्तर्दशा

राहुअन्तर्दशा व. २ मा. ८ दि. १२ में प्रत्यन्तर्दशा			गुरु अन्तर्दशा व. २ मा. ४ दि. २४ में प्रत्यन्तर्दशा			शनि अन्तर्दशा व. २ मा. १० दि. ६ में प्रत्यन्तर्दशा		
ग्र.	मा	दि.	ग्र.	मा	दि.	ग्र.	मा	दि.
रा.	४	२५.८	बृ.	३	२५.२	श.	५	१२.४५
बृ.	४	९.६	श.	४	१६.८	बु.	४	२५.३५
श.	५	३.९	बु.	४	२.४	के.	१	२९.८५
बु.	४	१७.७	के.	१	२०.४	शु.	५	२१.०
के.	१	२६.७	शु.	४	२४.०	सू.	१	२१.३
शु.	५	१२.०	सू.	१	१३.२	चं.	२	२५.५
सू.	१	१८.६	चं.	२	१२.०	मं.	१	२९.८५
चं.	२	२१.०	मं.	१	२०.४	रा.	५	३.९
मं.	१	२६.७	रा.	४	९.६	बृ.	४	१६.८

बुध अन्तर्दशा व. २ मा. ६ दि. १८ में प्रत्यन्तर्दशा			केतु अन्तर्दशा व. १ मा. ० दि. १८ में प्रत्यन्तर्दशा			शुक्र अन्तर्दशा व. ३ मा. ० दि. ० में प्रत्यन्तर्दशा		
ग्र.	मा	दि.	ग्र.	मा	दि.	ग्र.	मा	दि.
बु.	४	१०.०५	के.	०	२२.०५	शु.	६	०.०
के.	१	२३.५५	शु.	२	३.०	सू.	१	२४.०
शु.	५	३.०	सू.	०	१८.९	चं.	३	०.०
सू.	१	१५.९	चं.	१	१.५	मं.	२	३.०
चं.	२	१६.५	मं.	०	२२.०५	रा.	५	१२.०
मं.	१	२३.५५	रा.	१	२६.७	बृ.	४	२४.०
रा.	४	१७.७	बृ.	१	२०.४	श.	५	२१.०
बृ.	४	२.४	श.	१	२९.८५	बु.	५	३.०
श.	४	२५.३५	बु.	१	२३.५५	के.	२	३.०

सूर्य अन्तर्दशा व. ० मा. १० दि. २४ में प्रत्यन्तर्दशा			चन्द्र अन्तर्दशा व. १ मा. ६ दि. ० में प्रत्यन्तर्दशा			मंगल अन्तर्दशा व. १ मा. ० दि. १८ में प्रत्यन्तर्दशा		
ग्र.	मा	दि.	ग्र.	मा	दि.	ग्र.	मा	दि.
सू.	०	१६.२	चं.	१	१५.०	मं.	०	२२.०५
चं.	०	२७.०	मं.	१	१.५	रा.	१	२६.७
मं.	०	१८.९	रा.	२	२१.०	बृ.	१	२०.४
रा.	१	१८.६	बृ.	२	१२.०	श.	१	२९.८५
बृ.	१	१३.२	श.	२	२५.५	बु.	१	२३.५५
श.	१	२१.३	बु.	२	१६.५	के.	०	२२.०५
बु.	१	१५.९	के.	१	१.५	शु.	२	३.०
के.	०	१८.९	शु.	३	०.०	सू.	०	१८.९
शु.	१	२४.०	सू.	०	२७.०	चं.	१	१.५

बृहस्पति-दशा वर्ष १६ में गुरु आदि ग्रहों की अन्तर एवं प्रत्यन्तर्दशा

गुरु अन्तर्दशा व. २ मा. १ दि. १८ में प्रत्यन्तर्दशा			शनि अन्तर्दशा व. २ मा. ६ दि. १२ में प्रत्यन्तर्दशा			बुध अन्तर्दशा व. २ मा. ३ दि. ६ में प्रत्यन्तर्दशा		
ग्र.	मा	दि.	ग्र.	मा	दि.	ग्र.	मा	दि.
बृ.	३	१२.४	श.	४	२४.४	बु.	३	२५.६
श.	४	१.६	बु.	४	९.२	के.	१	१७.६
बु.	३	१८.८	के.	१	२३.२	शु.	४	१६.०
के.	१	१४.८	शु.	५	२.०	सू.	१	१०.८
शु.	४	८.०	सू.	१	१५.६	चं.	२	८.०
सू.	१	८.४	चं.	२	१६.०	मं.	१	१७.६
चं.	२	४.०	मं.	१	२३.२	रा.	४	२.४
मं.	१	१४.८	रा.	४	१६.८	बृ.	३	१८.८
रा.	३	२५.२	बृ.	४	१.६	श.	४	९.२

केतु अन्तर्दशा व. ० मा. ११ दि. ६ में प्रत्यन्तर्दशा			शुक्र अन्तर्दशा व. २ मा. ८ दि. ० में प्रत्यन्तर्दशा			सूर्य अन्तर्दशा व. ० मा. ९ दि. १८ में प्रत्यन्तर्दशा		
ग्र.	मा	दि.	ग्र.	मा	दि.	ग्र.	मा	दि.
के.	०	१९.६	शु.	५	१०.०	सू.	०	१४.४
शु.	१	२६.०	सू.	१	१८.०	चं.	०	२४.०
सू.	०	१६.८	चं.	२	२०.०	मं.	०	१६.८
चं.	०	२८.०	मं.	१	२६.०	रा.	१	१३.२
मं.	०	१९.६	रा.	४	२४.०	बृ.	१	८.४
रा.	१	२०.४	बृ.	४	८.०	श.	१	१५.६
बृ.	१	१४.८	श.	५	२.०	बु.	१	१०.८
श.	१	२३.२	बु.	४	१६.०	के.	०	१६.८
बु.	१	१७.६	के.	१	२६.०	शु.	१	१८.०

चन्द्र अन्तर्दशा व. १ मा. ४ दि. ० में प्रत्यन्तर्दशा			मंगल अन्तर्दशा व. ० मा. ११ दि. ६ में प्रत्यन्तर्दशा			राहु अन्तर्दशा व. २ मा. ४ दि. २४ में प्रत्यन्तर्दशा		
ग्र.	मा	दि.	ग्र.	मा	दि.	ग्र.	मा	दि.
चं.	१	१०.०	मं.	०	१९.६	रा.	४	९.६
मं.	०	२८.०	रा.	१	२०.४	बृ.	३	२५.२
रा.	२	१२.०	बृ.	१	१४.८	श.	४	१६.८
बृ.	२	४.०	श.	१	२३.२	बु.	४	२.४
श.	२	१६.०	बु.	१	१७.६	के.	१	२०.४
बु.	२	८.०	के.	०	१९.६	शु.	४	२४.०
के.	०	२८.०	शु.	१	२६.०	सू.	१	१३.२
शु.	२	२०.०	सू.	०	१६.८	चं.	२	१२.०
सू.	०	२४.०	चं.	०	२८.०	मं.	१	२०.४

शनि-दशा-वर्ष १९ में शनि आदि ग्रहों की अन्तर एवं प्रत्यन्तर्दशा

शनि अन्तर्दशा व. ३ मा. ० दि. ३ में प्रत्यन्तर्दशा			बुध अन्तर्दशा व. २ मा. ८ दि. ९ में प्रत्यन्तर्दशा			केतु अन्तर्दशा व. १ मा. १ दि. ९ में प्रत्यन्तर्दशा		
ग्र.	मा	दि.	ग्र.	मा	दि.	ग्र.	मा	दि.
श.	५	२१.४७५	बु.	४	१७.२७५	के.	०	२३.२७५
बु.	५	३.४२५	के.	१	२६.५२५	शु.	२	६.५
के.	२	३.१७५	शु.	५	११.५	सू.	०	१९.९५
शु.	६	०.५	सू.	१	१८.४५	चं.	१	३.२५
सू.	१	२४.१५	चं.	२	२०.७५	मं.	०	२३.२७५
चं.	३	०.२५	मं.	१	२६.५२५	रा.	१	२९.८५
मं.	२	३.१७५	रा.	४	२५.३५	बृ.	१	२३.२
रा.	५	१२.४५	बृ.	४	९.२	श.	२	३.१७५
बृ.	४	२४.४	श.	५	३.४२५	बु.	१	२६.५२५

शुक्र अन्तर्दशा व. ३ मा. २ दि. ० में प्रत्यन्तर्दशा			सूर्य अन्तर्दशा व. ० मा. ११ दि. १२ में प्रत्यन्तर्दशा			चन्द्र अन्तर्दशा व. १ मा. ७ दि. ० में प्रत्यन्तर्दशा		
ग्र.	मा	दि.	ग्र.	मा	दि.	ग्र.	मा	दि.
शु.	६	१०.०	सू.	०	१७.१	चं.	१	१७.५
सू.	१	२७.०	चं.	०	२८.५	मं.	१	३.२५
चं.	३	५.०	मं.	०	१९.९५	रा.	२	२५.५
मं.	२	६.५	रा.	१	२१.३	बृ.	२	१६.०
रा.	५	२१.०	बृ.	१	१५.६	श.	३	०.२५
बृ.	५	२.०	श.	१	२४.१५	बु.	२	२०.७५
श.	६	०.५	बु.	१	१८.४५	के.	१	३.२५
बु.	५	११.५	के.	०	१९.९५	शु.	३	५.०
के.	२	६.५	शु.	१	२७.०	सू.	०	२८.५

मंगल अन्तर्दशा व. १ मा. १ दि. ९ में प्रत्यन्तर्दशा			राहु अन्तर्दशा व. २ मा. १० दि. ६ में प्रत्यन्तर्दशा			गुरु अन्तर्दशा व. २ मा. ६ दि. १२ में प्रत्यन्तर्दशा		
ग्र.	मा	दि.	ग्र.	मा	दि.	ग्र.	मा	दि.
मं.	०	२३.२७५	रा.	५	३.९	बृ.	४	१.६
रा.	१	२९.८५	बृ.	४	१६.[illegible]	श.	४	२४.४
बृ.	१	२३.२	श.	५	१२.४५	बु.	४	९.२
श.	२	३.१७५	बु.	४	२५.३५	के.	१	२३.२
बु.	१	२६.५२५	के.	१	२९.८५	शु.	५	२.०
के.	०	२३.२७५	शु.	५	२१.०	सू.	१	१५.६
शु.	२	६.५	सू.	१	२१.३	चं.	२	१६.०
सू.	०	१९.९५	चं.	२	२५.५	मं.	१	२३.२
चं.	१	३.२५	मं.	१	२९.८५	रा.	४	१६.८

आधुनिक लेखक—प्रकाशकों द्वारा ज्योतिष-साहित्य, विशेषत: गणित-ज्योतिष, की ऐसी दुर्दशा देखकर यही धारणा दृढ़ होती है कि जब तक इस क्षेत्र में विशुद्ध शास्त्र-सेवाभावी विद्वानों की कोई सार्वजनिक संस्था नहीं बनती और उसके द्वारा कम-से-कम लाभ पर शुद्धतम ज्योतिष-साहित्य का प्रकाशन नहीं होता, तब तक भारतीय ज्योतिष अपने प्राचीन गौरवपूर्ण पद पर पुन: प्रतिष्ठित नहीं हो सकता; अस्तु। यह कहने में अतिशयोक्ति नहीं कि सर्व प्रथम इस पुस्तक के द्वारा ही विंशोत्तरी की प्रत्यन्तर्दशा-सारणियाँ शुद्धतम रूप में ज्योतिष जगत को प्राप्त हो रही हैं।

बुध-दशा-वर्ष १७ में बुधादि ग्रहों का अन्तर एवं प्रत्यन्तर्दशा

बुध अन्तर्दशा व. २ मा. ४ दि. २७ में प्रत्यन्तर्दशा			केतु अन्तर्दशा व.० मा. ११ दि. २७ में प्रत्यन्तर्दशा			शुक्र अन्तर्दशा व.२ मा.१० दि. ० में प्रत्यन्तर्दशा		
ग्र.	मा	दि·	ग्र.	मा	दि·	ग्र.	मा	दि·
बु·	४	२·८२५	के·	०	२०·८२५	शु·	५	२०·०
के·	१	२०·५७५	शु·	१	२९·५	सू·	१	२१·०
शु·	४	२४·५	सू·	०	१७·८५	चं·	२	२५·०
सू·	१	१३·३५	चं·	०	२९·७५	मं·	१	२९·५
चं·	२	१२·२५	मं·	०	२०·८२५	रा·	५	३·०
मं·	१	२०·५७५	रा·	१	२३·५५	वृ·	४	१६·०
रा·	४	१०·०५	वृ·	१	१७·६	श·	५	११·५
वृ·	३	२५·६	श·	१	२६·५२५	[illegible]	४	२४·५
श·	४	१७·२७५	बु·	१	२०·५७५	के·	१	२९·५

सूर्य अन्तर्दशा व.०मा. १० दि. ६ में प्रत्यन्तर्दशा			चन्द्र अन्तर्दशा व. १ मा. ५ दि. ० में प्रत्यन्तर्दशा			मंगल अन्तर्दशा व. ० मा. ११ दि. २७ में प्रत्यन्तर्दशा		
ग्र.	मा	दि·	ग्र.	मा	दि·	ग्र.	मा	दि·
सू·	०	१५·३	चं·	१	१२·५	मं·	०	२०·८२५
च·	०	२५·५	मं·	०	२९·७५	रा·	१	२३·५५
मं·	०	१७·८५	रा·	२	१६·५	वृ·	१	१७·६
रा·	१	१५·९	वृ·	२	८·०	श·	१	२६·५२५
वृ·	१	१०·८	श·	२	२०·७५	बु·	१	२०·५७५
श·	१	१८·४५	बु·	२	१२·२५	के·	०	२०·८२५
बु·	१	१३·३५	के·	०	२९·७५	शु·	१	२९·५
के·	०	१७·८५	शु·	२	२५·०	सू·	०	१७·८५
शु·	१	२१·०	सू·	०	२५·५	च·	०	२९·७५

राहु अन्तर्दशा व, २ मा ६ दि. १८ में प्रत्यन्तर्दशा			गुरु अन्तर्दशा व. २ मा. ३ दि. ६ में प्रत्यन्तर्दशा			शनि अन्तर्दशा व. २ मा. ८ दि. ९ में प्रत्यन्तर्दशा		
ग्र.	मा	दि·	ग्र.	मा	दि·	ग्र.	मा	दि·
रा·	४	१७·७	वृ·	३	१८·८	श·	५	३·४२५
वृ·	४	२·४	श·	४	९·२	बु·	४	१७·२७५
श·	४	२५·३५	बु·	३	२५·६	के·	१	२६·५२५
बु·	४	१०·०५	के·	१	१७·६	शु·	५	११·५
के·	१	२३·५५	शु·	४	१६·०	सू·	१	१८·४५
शु·	५	३·०	सू·	१	१०·८	चं·	२	२०·७५
सू·	१	१५·९	च·	२	८·०	मं·	१	२६·५२५
चं·	२	१६·५	मं·	१	१७·६	रा·	४	२५·३५
मं·	१	२३·५५	रा·	४	२·४	वृ·	४	९·२

केतु-दशा-वर्ष ७ में केतु आदि ग्रहों की अन्तर एवं प्रत्यन्तर्दशा

केतु अन्तर्दशा व. ० मा. ४ दि २७ में प्रत्यन्तर्दशा			शुक्र अन्तर्दशा व. १ मा. २ दि. ० में प्रत्यन्तर्दशा			सूर्य अन्तर्दशा व. ० मा. ४ दि. ६ में प्रत्यन्तर्दशा		
ग्र.	मा	दि·	ग्र.	मा	दि·	ग्र.	मा	दि·
के·	०	८·५७५	शु·	२	१०·०	सू·	०	६·३
शु·	०	२४·५	सू·	०	२१·०	चं·	०	१०·५
सू·	०	७·३५	चं·	१	५·०	मं·	०	७·३५
चं·	०	१२·२५	मं·	०	२४·५	रा·	०	१८·९
मं·	०	८·५७५	रा·	२	३·०	वृ·	०	१६·८
रा·	०	२२·०५	वृ·	१	२६·०	श·	०	१९·९५
वृ·	०	१९·६	श·	२	६·५	बु·	०	१७·८५
श·	०	२३·२७५	बु·	१	२९·५	के·	०	७·३५
बु·	०	२०·८२५	के·	०	२४·५	शु·	०	२१·०

चन्द्र अन्तर्दशा व. ० मा. ७ दि. ० में प्रत्यन्तर्दशा			मंगल अन्तर्दशा व. ० मा. ४ दि. २७ में प्रत्यन्तर्दशा			राहु अन्तर्दशा व. १ मा.० दि. १८ में प्रत्यन्तर्दशा		
ग्र.	मा	दि·	ग्र.	मा	दि	ग्र.	मा	दि·
चं·	०	१७·५	मं·	०	८·५७५	रा·	१	२६·७
मं·	०	१२·२५	रा·	०	२२·०५	वृ·	१	२०·४
रा·	१	१·५	वृ·	०	१९·६	श·	१	२९·८५
वृ·	०	२८·०	श·	०	२३·२७५	बु·	१	२३·५५
श·	१	३·२५	बु·	०	२०·८२५	के·	०	२२·०५
बु·	०	२९·७५	के·	०	८·५७५	शु·	२	३·०
के·	०	१२·२५	शु·	०	२४·५	सू·	०	१८·९
शु·	१	५·०	सू·	०	७·३५	चं·	१	१·५
सू·	०	१०·५	चं·	०	१२·२५	मं·	०	२२·०५

गुरु अन्तर्दशा व. ०मा.११ दि ६ में प्रत्यन्तर्दशा			शनि अन्तर्दशा व. १ मा. १ दि. ९ में प्रत्यन्तर्दशा			बुध अन्तर्दशा व. ० मा. ११ दि. २७ में प्रत्यन्तर्दशा		
ग्र.	मा	दि	ग्र.	मा	दि·	ग्र.	मा	दि·
वृ·	१	१४·८	श·	२	३·१७५	बु·	१	२०·५७५
श·	१	२३·२	बु·	१	२६·५२५	के·	०	२०·८२५
बु·	१	१७·६	के·	०	२३·२७५	शु·	१	२९·५
के·	०	१९·६	शु·	२	६·५	सू·	०	१७·८५
शु·	१	२६·०	सू·	०	१९·९५	चं·	०	२९·७५
सू·	०	१६·८	चं·	१	३·२५	मं·	०	२०·८२५
चं·	०	२८·०	मं·	०	२३·२७५	रा·	१	२३·५५
मं·	०	१९·६	रा·	१	२९·८५	वृ·	१	१७·६
रा·	१	२०·४	वृ·	१	२३·२	श·	१	२६·५२५

शुक्र-दशा-वर्ष २० में शुक्रादि ग्रहों की अन्तर एवं प्रत्यन्तर्दशा

शुक्र अन्तर्दशा व ३ मा. ४ दि. ० में प्रत्यन्तर्दशा			सूर्य अन्तर्दशा व. १ मा ० दि. ० में प्रत्यन्तर्दशा			चन्द्र अन्तर्दशा व. १ मा.८ दि. ० में प्रत्यन्तर्दशा		
ग्र.	मा	दि·	ग्र.	मा.	दि·	ग्र.	मा	दि·
शु·	६	२०·०	सू·	०	१८·०	चं·	१	२०·०
सू·	२	०·०	चं·	१	०·०	मं·	१	५·०
चं·	३	१०·०	मं·	०	२१·०	रा·	३	०·०
मं·	२	१०·०	रा·	१	२४·०	वृ·	२	२०·०
रा·	६	०·०	वृ·	१	१८·०	श·	३	५·०
वृ·	५	१०·०	श·	१	२७·०	बु·	२	२५·०
श·	६	१०·०	बु·	१	२१·०	के·	१	५·०
बु·	५	२०·०	के·	०	२१·०	शु·	३	१०·०
के·	२	१०·०	शु·	२	०·०	सू·	१	०·०

मंगल अन्तर्दशा व. १ मा. २ दि. ० में प्रत्यन्तर्दशा			राहु अन्तर्दशा व ३ मा. ० दि. ० में प्रत्यन्तर्दशा			गुरु अन्तर्दशा व. २ मा ८ दि. ० में प्रत्यन्तर्दशा		
ग्र.	मा	दि	ग्र.	मा	दि·	ग्र.	मा	दि·
मं·	०	२४·५	रा·	५	१२·०	वृ·	४	८·०
रा·	२	३·०	वृ·	४	२४·०	श·	५	२·०
वृ·	१	२६·०	श·	५	२१·०	बु·	४	१६·०
श·	२	६·५	बु·	५	३·०	के·	१	२६·०
बु·	१	२९·५	के·	२	३·०	शु·	५	१०·०
के·	०	२४·५	शु·	६	०·०	सू·	१	१८·०
शु·	२	१०·०	सू·	१	२४·०	चं·	२	२०·०
सू·	०	२१·०	चं·	३	०·०	मं·	१	२६·०
चं·	१	५·०	मं·	२	३·०	रा·	४	२४·०

शनि अन्तर्दशा व. ३ मा. २ दि. ० में प्रत्यन्तर्दशा			बुध अन्तर्दशा व.२ मा.१० दि. ० में प्रत्यन्तर्दशा			केतु अन्तर्दशा व. १ मा. २ दि. ० में प्रत्यन्तर्दशा		
ग्र.	मा	दि·	ग्र.	मा	दि·	ग्र.	मा	दि·
श·	६	०·५	बु·	४	२४·५	के·	०	२४·५
बु·	५	११·५	के·	१	२९·५	शु·	२	१०·०
के·	२	६·५	शु·	५	२०·०	सू·	०	२१·०
शु·	६	१०·०	सू·	१	२१·०	चं·	१	५·०
सू·	१	२७·०	चं·	२	२५·०	मं·	०	२४·५
चं·	३	५·०	मं·	१	२९·५	रा·	२	३·०
मं·	२	६·५	रा·	५	३·०	वृ·	१	२६·०
रा·	५	२१·०	वृ·	४	१६·०	श·	२	६·५
वृ·	५	२·०	श·	५	११·५	बु·	१	२९·५

इस सारणी में सूर्यादि प्रत्येक ग्रह की क्रमानुसार प्रत्यन्तर्दशाओं को मास, दिन तथा दिन के दशमांश में दिया गया है। पुरानी परिपाटी के अनुसार सूर्य की राशि, अंश और संवत् शक के अनुसार दशा, अन्तर्दशादि-काल कुण्डलियों में न लिखकर आजकल आधुनिक शिक्षित समुदाय के सुविधार्थ अंग्रेजी तारीख, मास व सन् के अनुसार दशा, अन्तर, प्रत्यन्तर्दशा-कालों के लिखने का खूब प्रचार हो गया है एवं कुछ लोग प्रत्यन्तर्दशाओं में घटी, पल के बजाय घंटा, मिनट का उपयोग भी करने लगे हैं तथा कुछ लोगों के लिये केवल अंग्रेजी मास के दिनांक (तारीख) ही पर्याप्त होते हैं। इन सभी लोगों के प्रयोजन

की पूर्ति एक ही सारणी से हो जाय, एतदर्थ यह सारणी दशमलव-प्रणाली से दी गयी है। जिन लोगों को प्रत्यन्तर्दशाओं के केवल दिनांक(तारीख)अपेक्षित हैं, वे प्रत्यन्तर्दशाओं को केवल दिन तक ग्रहण करें एवं दशमलव चिह्न के बाद जहाँ ५ का या उससे अधिक का अंक हो, वहाँ दिन की संख्या में एक और बढ़ा लें। प्रत्यन्तर्दशाओं को जोड़ते समय दशमलव की रीति से ही जोड़ना चाहिये और योगफल में भी दशमलव के बाद ५ का अंक या उससे अधिक हो तो योग के दिनों में एक और बढ़ा लेना चाहिये। जो ज्योतिषज्ञ पुरानी परिपाटी से घटी, पल का उपयोग करते हैं, उनके लिए भी मार्ग बिल्कुल सरल है। जहाँ दशमलव-चिह्न के बाद सिर्फ एक अंक है, वहाँ ६ से उसे गुणा कर दें तो उनको घटी पूर्ण रूप में मिल जायेगी। जहाँ दशमलव के बाद दो-तीन अंक हैं, वहाँ दशमलव-चिह्न को दाहिनी ओर हटाकर पहले अंक के बाद रखें और पूर्ववत् ६ से गुणा कीजिए तो गुणनफल घटी तथा उसके दशमांश के रूप में प्राप्त होगा। घटी के दशमांश का मतलब यह हुआ कि उसे भी ६ से गुणा कर दें तो पल ज्ञात हो जायेगा। जो लोग घटी पल के बजाय घं. मि. का उपयोग करते हैं, उन्हें दिन के बाद के दशमलव सहित अंक या अंकों को २४ से गुणा करना चाहिए, तब घंटा व उसका दशमांश प्राप्त होगा ; दशमांश यानी घं. के दशमलव-चिह्न के बाद के अंक को ६ गुणा करने पर वह मिनट बन जायेगा। और भी अच्छी तरह समझने के लिए कुछ उदाहरण देखिए—प्रथम सारणी में सूर्य की दशा एवं सूर्य की अन्तर्दशा में सूर्य की प्रत्यन्तर्दशा ० मास, ५·४ दिन छपा है ; यहाँ दिन के साथ घटी पल का मान जानने के लिए ४ को ६ से गुणा किया तो २४ घटी पूर्ण रूप में प्राप्त हुई। इसी सारणी में भौम की अन्तर्दशा में बुध की प्रत्यन्तर्दशा ० मास १७·८५ दिन छपा है। यहाँ दशमलव-चिह्न के बाद दो अंक आठ और पाँच के हैं। अतः दशमलव चिह्न को दाहिनी ओर हटाकर प्रथम अंक आठ के बाद रखा एवं ८·५ में ६ का गुणा किया तो ५१·० यानी ५१ घटी प्राप्त हुई। नीचे मंगल की दशा एवं मंगल की अन्तर्दशा में मंगल की प्रत्यन्तर्दशा ० मास, ८·५७५ दिन छपा है। यहाँ भी पूर्ववत् दशमलव-चिह्न को दायीं ओर एक अंक के बाद रखा तो ५·७५ हुआ, जिसे ६ से गुणा करने पर ३४·५० हुआ ; यहाँ ३४ घटी के बाद ·५ को पुनः ६ से गुणा करने पर ३० पल प्राप्त हो गया यानी उपर्युक्त मंगल की प्रत्यन्तर्दशा ८ दिन ३४ घटी ३० पल की ज्ञात हो गई। मान लीजिए, इसी को आप घटी पल के बजाय घं. मि. में लाना चाहते हैं तो ·५७५ को ६ के बजाय २४ से गुणा कीजिए, जिसका गुणनफल १३·८०० होगा ; यहाँ १३ घंटा के बाद के पूर्णांक ८ को ६ से गुणा करने पर ४८ मिनट प्राप्त होगा यानी उपर्युक्त मंगल की प्रत्यन्तर्दशा ० मास, ८ दिन, १३ घं., ४८ मि. की ज्ञात हो गई। इस प्रकार से हमारे प्रिय पाठक उपर्युक्त हर प्रयोजन इस एक ही सारणी से सिद्ध कर सकते हैं।

❀ विंशोत्तरी महादशा की प्रत्येक अन्तर्दशा में भुक्त समय-कोष्ठक ❀

१. ☉ सूर्य दशा-वर्ष ६ में अन्तर्दशा
नक्षत्र—कृत्तिका, उ. फा., उ. षा.

दशा	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
वर्ष	०	०	०	०	०	०	०	०	१
मास	३	६	४	१०	९	११	१०	४	०
दिवस	१८	०	६	२४	१८	१२	६	६	०
व.	०	०	१	२	२	३	४	५	६
मा.	३	९	१	०	१०	९	७	०	०
दि.	१८	१८	२४	१८	६	१८	२४	०	०

२. ☽ चन्द्र दशा-वर्ष १० में अन्तर्दशा
नक्षत्र—रोहिणी, हस्त, श्रवण

दशा	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
वर्ष	०	०	१	१	१	१	०	१	०
मास	१०	७	६	४	७	५	७	८	६
दिवस	०	०	०	०	०	०	०	०	०
व.	०	१	२	४	५	७	७	९	१०
मा.	१०	५	११	३	१०	३	१०	६	०
दि.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

३. ♂ मंगल-दशा-वर्ष ७ में अन्तर्दशा
नक्षत्र—मृगशीर्ष, चित्रा, धनिष्ठा

दशा	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
वर्ष	०	१	०	१	०	०	१	०	०
मास	४	०	११	१	११	४	२	४	७
दिवस	२७	१८	६	९	२७	२७	०	६	०
व.	०	१	२	३	४	४	६	६	७
मा.	४	५	४	६	५	१०	०	५	०
दि.	२७	१५	२१	०	२७	२४	२४	०	०

४. ☊ राहु-दशा वर्ष १८ में अन्तर्दशा
नक्षत्र—आर्द्रा, स्वाती, शतभिषा

दशा	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
वर्ष	२	२	२	२	१	३	०	१	१
मास	८	४	१०	६	०	०	१०	६	०
दिवस	१२	२४	६	१८	१८	०	२४	०	१८
व.	२	५	७	१०	११	१४	१५	१६	१८
मा.	८	१	११	६	६	६	५	११	०
दि.	१२	६	१२	०	१८	१८	१२	१२	०

५. ♃ गुरु-दशा-वर्ष १६ में अन्तर्दशा
नक्षत्र—पुन., विशा., पू. भाद्र.

दशा	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
वर्ष	२	२	२	०	२	०	१	०	२
मास	१	६	३	११	८	९	४	११	४
दिवस	१८	१२	६	६	०	१८	०	६	२४
व.	२	४	६	७	१०	११	१२	१३	१६
मा.	१	८	११	१०	६	४	८	७	०
दि.	१८	०	६	१२	१२	०	०	६	०

६. ♄ शनि-दशा-वर्ष १९ में अन्तर्दशा
नक्षत्र—पुष्य, अनुराधा, उ. भाद्र.

दशा	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
वर्ष	३	२	१	३	०	१	१	२	२
मास	०	८	१	२	११	७	१	१०	६
दिवस	३	९	९	०	१२	०	९	६	१२
व.	३	५	६	९	१०	१२	१३	१६	१९
मा.	०	८	९	११	११	६	७	५	०
दि.	३	१२	२१	२१	३	३	१२	१८	०

७. ☿ बुध-दशा-वर्ष १७ में अन्तर्दशा
नक्षत्र—आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती

दशा	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
वर्ष	२	०	२	०	१	०	२	२	२
मास	४	११	१०	१०	५	११	६	३	८
दिवस	२७	२७	०	६	०	२७	१८	६	९
व.	२	३	६	७	८	९	११	१४	१७
मा.	४	४	२	१	६	५	०	३	०
दि.	२७	२४	२४	०	०	२७	१५	२१	०

८. ☋ केतु-दशा—वर्ष ७ में अन्तर्दशा
नक्षत्र—अश्विनी, मघा, मूल

दशा	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
वर्ष	०	१	०	०	०	१	०	१	०
मास	४	२	४	७	४	०	११	१	११
दिवस	२७	०	६	०	२७	१८	६	९	२७
व.	०	१	१	२	२	३	४	६	७
मा.	४	६	११	६	११	११	१०	०	०
दि.	२७	२७	३	३	०	१८	२४	३	०

९. ♀ शुक्र-दशा-वर्ष २० में अन्तर्दशा
नक्षत्र—भरणी, पू. फा. पू. षा.

दशा	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
वर्ष	३	१	१	१	३	२	३	२	१
मास	४	०	८	२	०	८	२	१०	२
दिवस	०	०	०	०	०	०	०	०	०
व.	३	४	६	७	१०	१२	१६	१८	२०
मा.	४	४	०	२	२	१०	०	१०	०
दि.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

छः लग्न-सारणियों का विवरण

उत्तर भारत के पञ्चाङ्गों में सांपातिक काल का प्रचलन सर्वप्रथम हमने 'चिन्ताहरण जंत्री' में किया। हमें अत्यन्त हर्ष है कि अनेक सहयोगी पञ्चाङ्गकारों ने भी इसका महत्त्व समझा है और उक्त जंत्री का अनुसरण कर अब अपने पञ्चाङ्गों में दैनिक सांपातिक काल का प्रकाशन आरम्भ किया है। इनमें मुख्य हैं—काशी के हिन्दू विश्वविद्यालय से प्रकाशित होनेवाला विश्व-पञ्चाङ्ग और उत्तरप्रदेशीय सरकार के तत्वावधान में प्रकाशित होनेवाला श्रीबापू देव शास्त्री का पञ्चाङ्ग। यद्यपि सूक्ष्मता की दृष्टि से अभी उक्त दोनो पञ्चागों के सांपातिक काल किञ्चित त्रुटिपूर्ण हैं और प्रारम्भ में ऐसा होना स्वाभाविक है; किन्तु हमें विश्वास है कि अब जंत्री के समान ही सर्वथा सूक्ष्म, शुद्ध रूप में यह विषय उक्त पञ्चाङ्गों में दिया जाया करेगा। इन दोनों पञ्चाङ्गों में पहला आर्ष मत (निर्बीज सूर्यसिद्धान्तीय गणित) से निर्मित होता है और दूसरा नितान्त दृश्य गणना से। कोई पञ्चाग किसी भी प्रणाली से निर्मित होता हो, सांपातिक काल का विषय सबके लिए समानतः उपयोगी है और अब अधिक समय तक उससे ज्योतिषी-वर्ग और ज्योतिषानुरागी जनता को वञ्चित नहीं रखा जा सकता; खासकर इसलिए कि जन्म-कुण्डली-निर्माण में इसकी महत्तम उपयोगिता सर्वमान्य है। हमें गणित में जितना सूक्ष्म परिणाम चाहिये, उतनी ही अधिक क्लिष्ट गणना करनी होती है; किन्तु सांपातिक काल की विशेषता यह है कि कुण्डली-निर्माण में प्राचीन पद्धति की पेक्षा अधिक सूक्ष्म परिणाम, कहीं कम श्रम और समय में इससे प्राप्त होता है। अतः इस कार्य के लिए तो अब यही नूतन पद्धति अबाधित रूप से चलने वाली है, यह निश्चित जानकर हम यह विषय चिन्ताहरण जंत्री में अत्यन्त सरलतापूर्वक, उदाहरण देकर भलीभाँति समझाते रहे हैं जिसे उसके पाठकों और ज्योतिषी-वर्ग ने बहुत पसन्द किया है। मध्य भारत और राजस्थान के अनेक प्रमुख ज्योतिर्विदों ने हमें पत्र लिखा है कि उनके प्रान्तीय शहरों के लिए उपयोगी सांपातिककालीन लग्न-सारणियाँ भी जंत्री में प्रकाशित की जायँ ताकि आगे से वे अपने यहाँ सांपातिक काल के ही आधार पर सूक्ष्म कुण्डली-निर्माण किया करें। उनकी यह माँग बिलकुल जरूरी थी; क्योंकि जंत्री में सिर्फ एक ही लग्न-सारणी काशी के अक्षांश की प्रकाशित होती रही जो उस अक्षांस के निकटवर्ती शहरों के लिए ही उपयोगी है तथा अन्य अक्षांशों की लग्न-सारणियों का संस्कृत, हिन्दी में सर्वथा अभाव है। अंग्रेजी में छपी लग्न-सारणियों का उपयोग सबके, खासकर पुराने संस्कृतज्ञ ज्योतिर्विदों के, लिए शक्य नहीं। उत्तर भारत में सांपातिक कालीन पद्धति के प्रचार में यह खास बाधा है। इसके निराकरण के लिए हमने निश्चय किया कि जंत्री में ही उत्तर भारत के अक्षांशों की लग्न-सारणियों का क्रमशः प्रकाशन शुरू किया जाय। यदि ज्योतिष-जगत् में इनका यथेष्ट आदर और प्रचार हुआ तो इस बीच में समस्त भारत के अक्षांशों के लिए सांपातिक कालीन लग्न-सारणियों की एक पुस्तिका भी हिन्दी में प्रकाशित कर दी जायेगी, जिससे संस्कृत, हिन्दी-भाषाविद् ज्योतिषियों की आवश्यकतापूर्ति के साथ राष्ट्र-भाषा के ज्योतिष-साहित्य का एक शोचनीय अभाव भी दूर हो जायेगा; अस्तु।

इस पुस्तिका में छः लग्न-सारणियों का समुच्चय दिया जा रहा है। यह समुच्चय मध्यप्रदेश और राजस्थान के अधिकाधिक प्रमुख स्थानों को आच्छादित कर सके, इस दृष्टि से इसकी सारणियों के अक्षांशों का चयन किया गया है। आगे पृष्ठ २३, २४ पर प्रत्येक सारणी की क्रमसंख्या, उसका भौगोलिक अक्षांस और तत्तुल्य भूकेन्द्रीय अक्षांश दिया गया है। साथ ही प्रत्येक सारणी जितने भारतीय भू-भाग के लिए उपयोगी हैं, उतने भू-भाग में पड़नेवाले कतिपय प्रमुख स्थानों की सूची भी उनके अक्षांश सहित पाठकों की सुविधा के लिए दी गयी है। इस सूची के द्वारा पाठक तुरन्त जान सकते हैं कि समुच्चय की कौन-सी सारणी किन स्थानों के लिए उपयोगी है।

इन ६ लग्न सारणियों का उपयोग करने के पूर्व उनके ऊपर बड़े अक्षरों में जो आवश्यक सूचनाएँ दी गयी हैं तथा हम आगे जो उदाहरण दे रहे हैं, उन सबको भली-भाँति समझ लेना चाहिये; अन्यथा गणित में भ्रम और भूल हो जाना बहुत सम्भव है। उदाहरण—अपने अभीष्ट स्थल के लिए इष्ट सांपातिक काल-साधन की अत्यन्त सरल रीति पिछले लेख से पाठकगण भली-भाँति समझ चुके हैं। अब मान लीजिये, जयपुर के लिये ता० १०-३-१९३२ ई० को इष्ट सांपातिक काल घ० २० मि० ५८ से० ५६ का लग्न-साधन हमें करना है। जयपुर का भौगोलिक अक्षांश २६°-५५' और भूकेंद्रीय अक्षांश २६°-४६' है। अतः सारणी नं० ६ देखी जाय। अपना इष्ट सांपातिक काल वृष राशि में मिलता है। उसके तीसरे अंश का सांपातिक काल जो २०-५४-३५ है उसमें एक अंश की गति ०-३-३७ जोड़ने से २०-५८-१२ चौथे अंश का सांपातिक काल आया जो अपने इष्ट सांपातिक काल के बिल्कुल निकट है। अतः उदितांश वृषभ का ४ अंश हुआ। इसमें अयनांश-अन्तर धन + होगा। इष्ट दिन के अयनांश से सारणी का अयनांश कम हो तो अन्तर ऋण और अधिक हो तो धन होता है। यहाँ इष्ट दिन का अयनांश २२°-५३'-४०" है और सारणी का अयनांश २३°-१५' है; दोनों का अन्तर २१'-२०" + है। अतः

१–४°–०'—०"
+ २१'–२०"

१-४°-२१'-२०" इष्टलग्नवृषभराशिके ४।° (सवाचार अंश) हुए। देखिये, कितनी आसानी से उदितांश ज्ञात हो गया।

अगर सूक्ष्म परिणाम भूकेंद्रीय अक्षांश २६°-४६' के लिए ही चाहिये तो ५वीं और ६ठी लग्न-सारणी से परिणाम लाकर अनुपात करना होगा। पहले ५वीं सारणी लें:

	घं.	मि.	से.	से.
वृषभ का ३°	२०	५५	२८	—२१७
,, ४°	२०	५९	५	

२० ५५ २८
\+ ३ ३७
२० ५९ ५

इष्ट सांपातिक काल है २० ५८ ५६
अतः २० ५९ ५
−२० ५८ ५६
० ० ९ २१७ : ९ :: ६०' = २'−२९"
१ ४° ०' ०"
— २ २९
१ ३ ५७ ३१ प्रथम परिणाम आया।

अब ६ठी सारणी से २० ५४ ३५
\+ ३ ३७
२० ५८ १२
\+ ३ ३७
२१ १ ४९

	घं.	मि.	से.	
वृषभ का ४°	२०	५८	१२	—२१७
,, ५°	२१	१	४९	

२० ५८ ५६
२० ५८ १२
० ० ४४
२१७ : ४४ :: ६० = १२'−१०"
१ ४° ०' ०"
\+ १२ १०
१ ४ १२ १० द्वितीय परिणाम मिला।

चूंकि

अक्षांश	और	अक्षांश
२६।।° का प्रथम परिणाम		२७° का द्वितीय परिणाम
१−३°−५७'−३१"		१−४°−१२'−१०" है

तो भूकेंद्रीय अक्षांश २६°−४६' के लिए क्या होगा?

१−४−१२−१०	२७°−०'	२६°−४६'
१−३−५७−३१	−२६−३०	−२६ −३०
०−०−१४−३९ =	०−३०	०−१६
८७९"		

३०' : १६' :: ८७९" = ४६९" = ७'−४९" आया
इसे प्रथम परिणाम—
१−३−५७−३१ में
\+ ७−४९ जोड़ दिया तो
१−४−५−२० यह लग्न के राश्यादि मिले; इसमें
\+ २१−२० अयनांश-अन्तर जोड़ देने से राश्यादि
१−४−२६−४० स्पष्ट लग्न ज्ञात हो गया।

१. सारणी भौगोलिक अक्षांश २२°-२३' से २२°-५३' तथा भूकेंद्रीय अक्षांश २२।° से २२।।।° तक।

अक्षांश	शहर
२२°-२४'	मिदनापुर (पश्चिमी बंगाल)
२२-३५	कलकत्ता (हावड़ा), जामनगर, लींबडी (सौराष्ट्र)
२२-३६	बांकानेर (सौ.), मांडला (म.प्र.), धार (म.प्र.)
२२-३७	इटारसी
२२-४१	नडीयाद (गुजरात)
२२-४२	बढवाण (सौराष्ट्र)
२२-४३	इन्दौर
२२-४४	सुरेन्द्रनगर
२२-४५	खेड़ा (गुजरात)
२२-४६	जमशेदपुर, होशंगाबाद
२२-४६	मोरबी (सौराष्ट्र)
२२-५१	मांडवी (कच्छ)

२. सारणी भौगोलिक अक्षांश २३°-२३' से २३°-५३' तथा भूकेंद्रीय अक्षांश २३।° से २३।।।° तक।

२३°-२४'	सुजालपुर (म. भा.)
२३-३२	भेलसा (म. भा.)
२३-३३	बाँसवाड़ा (राज.)
२३-३८	जावरा (म. भा.)
२३-४१	नरसिंहगढ़ (म. भा.)
२३-४५	झरिया (बिहार)
२३-५०	सागर, कटनी (म. प्र.), डूंगरपुर (राज.)
२३-५२	पाटण (गुज.), अगरतला, गंजबासोदा (म. भा.)

विदेशी शहर—

२३-४३	ढाका

३. सारणी भौगोलिक अक्षांश २४°-२४' से २४°-५४' तथा भूकेंद्रीय अक्षांश २४।° से २४।।° तक।

२२°-२७'	नीमच (राज.)
२४-३२	रीवाँ (विन्ध्य प्र.)
२४-३४	सतना ,, ,,
२४ ३५	उदयपुर (राज.)
२४ ३६	झालावाड ,,
२४-४८	गया
२४-५३	सीरोही (राज.)
२४-५४	इम्फाल, चित्तौड़गढ़

विदेशी शहर—

२४-५०	रियाध
२४-५१	कराची

४. सारणी भौगोलिक अक्षांश २५°-२४' से २५°-५४' तथा भूकेंद्रीय अक्षांश २५।° से २५।।। तक।

२५°-२३'	मुंगेर (बिहार)
२५-२५	प्रयाग
२५-२७	बूंदी (राज.)
२५-२८	बांदा (उ. प्र.)

२५-३४ शिलाङ्ग, बक्सर
२५-३६ कटिहार, गाजीपुर, आरा
२५-३७ पटना
२५-४६ जौनपुर (उ. प्र.)
२५-४७ छपरा (बिहार), पाली (मारवाड़)
२५-५३ प्रतापगढ़ (उ. प्र.)

विदेशी शहर

२५-२१ हैदराबाद (सिंध)

५. सारणी भौगोलिक अक्षांश २६°-४' से २६°-५४' तथा भूकेंद्रीय अक्षांश २६°। से २६°॥। तक।

२६°-२६' एलाहाबाद
२६-२७ कानपुर, अजमेर
२६-३३ उन्नाव
२६-४२ धौलपुर (राज.)
२६-४७ गोरखपुर, फैजाबाद, इटावा
२६-४८ अयोध्या, बेतिया (चम्पारण)
२६-५१ लखनऊ
२६-५४ बस्ती

६. सारणी भौगोलिक अक्षांश २६°-५४' से २७°-२४' तथा भूकेंद्रीय अक्षांश २६°॥। से २७°। तक।

२६°-५५' जैसलमेर, जयपुर
२७-०१ कन्नौज
२७-३ फर्रुखाबाद
२९-९ फलौदी (मारवाड़), फ़िरोज़ाबाद
२७-१० आगरा
२७-१३ मैनपुरी
२७-२० गंगतोक
२७-२४ हरदोई

भूकेंद्रीय अक्षांश-संस्कार।

भूगोल के (नक्शा वगैरह में) व्यावहारिक उपयोगिता की दृष्टि से पृथ्वी को सर्वथा गोल मानकर उसके दक्षिणोत्तर १८० समान विभाग के आधार पर अक्षांश निश्चित किये गये रहते हैं; किन्तु वस्तुतः पृथ्वी सर्वथा गोल नहीं है; अतः उक्त अक्षांशों की वास्तविक स्थिति में न्यूनाधिक अन्तर रह जाता है। भौगोलिक अक्षांश के इसी अन्तर को दूर करने से वह भूकेंद्रीय अक्षांश होता है जो यावत् खगोल-गणित जैसे लग्न, ग्रहण, ग्रहोदयास्तादि साधन के लिए उपयोगी होता है। प्रत्येक भौगोलिक अक्षांश में कितनी कला, विकला के संस्कार घटाने से वह भूकेंद्रीय अक्षांश में परिणत होगा, यह निम्न कोष्ठक में दिया गया है :—

भूकेंद्रीय अक्षांश-संस्कार

अक्षांश	कला	विकला	अक्षांश	कला	विकला
०	०	०	३५	१०	५३
१	०	२४	३६	११	१
२	०	४८	३७	११	८
३	१	१२	३८	११	१४
४	१	३७	३९	११	२०
५	२	०	४०	११	२५
६	२	२४	४१	११	२९
७	२	४८	४२	११	३२
८	३	११	४३	११	३४
९	३	३४	४४	११	३५
१०	३	५७	४५	११	३६
११	४	२०	४६	११	३५
१२	४	४२	४७	११	३४
१३	५	४	४८	११	३२
१४	५	२६	४९	११	२९
१५	५	४७	५०	११	२५
१६	६	८	५१	११	२१
१७	६	२८	५२	११	१६
१८	६	४८	५३	११	९
१९	७	७	५४	११	२
२०	७	२६	५५	१०	५४
२१	७	४४	५६	१०	४६
२२	८	२	५७	१०	३६
२३	८	१९	५८	१०	२६
२४	८	३६	५९	१०	१५
२५	८	५२	६०	१०	३
२६	९	७	६१	९	५१
२७	९	२२	६२	९	३८
२८	९	३६	६३	९	२४
२९	९	४९	६४	९	९
३०	१०	१	६५	[illegible]	५४
३१	१०	१३	६६	८	३८
३२	१०	२४	उत्तर	—	—
३३	१०	३५	दक्षिण	—	—
३४	१०	४४			

पाठक देखें कि १ अक्षांश से यह संस्कार क्रमशः बढ़ता हुआ ४५ अंश पर परमाधिक होता है और फिर क्रमशः घटता जाता है। अस्तु; भौगोलिक अक्षांश उत्तर हो या दक्षिण, यह संस्कार उसमें ऋण करना (घटाना) चाहिये तब वह भूकेंद्रीय अक्षांश होगा।

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
सौरमा	कार्तिक	मार्ग	आषाढ़	पौष	ज्येष्ठ	भाद्र	माघ	आश्व.	श्रावण	वैशाख	चैत्र	फाल्गु
तिथि	१-६-११	५-१०-१५	२-७-१२	२-७-१२	३-८-१३	५-१०-१५	४-९-१४	१-६-११	३-८-१३	४-९-१४	३-८-१३	५-१०-१५
वार	रवि	शनि	सोम	बुध	शनि	शनि	गुरु	शुक्र	शुक्र	मंगल	गुरु	शुक्र
नक्षत्र	मघा	हस्त	स्वाती	अनु.	मूल	श्रवण	शत.	रेवती	भरणी	रोहि.	आर्द्रा	श्ले.
नक्षत्र-पाद	कृत्ति. १	चित्रा २	शत. ३	मघा ३	पुनि. १	आर्द्रा ३	मूल २	रोहि. ४	पू भा. ३	मघा ४	मूल ४	पूभा. ३
योग	विष्कुं.	सुकर्मा	परिघ	व्याघा	धृति	शूल	सुकर्मा	व्यतो.	वज्र	धृति	गण्ड	वज्र
करण	बव	शकुनि	चतु.	नाग	बव	कौल.	तैतिल	गर	तैतिल	शकुनि	किंस्तु.	चतु.
लग्न	मेष	मिथुन	कन्या	मकर	मेष	सिंह	मीन	मिथुन	सिंह	वृश्चिक	मेष	कर्क
प्रहर	१ ला	४ था	३ रा	१ ला	१ ला	१ ला	४ था	१ ला	१ ला	४ था	३ रा	४ था
चं.पुरु.	मेष	कन्या	कुम्भ	सिंह	मकर	मिथुन	धनु	वृष	मीन	सिंह	धनु	कुम्भ
चं.स्त्री	मेष	धनु	धनु	मीन	मकर	वृश्चि.	मकर	धनु	कन्या	वृश्चि.	मिथुन	कुम्भ

—: मवघात चक्र :—

अपनी जन्म-राशि के अनुसार घात-चक्रोक्त मास, तिथि, वारादि को द्यूत (सट्टा), प्रवास, राज दर्शन और यात्रा में वर्जित करना चाहिये। विवाह, उपनयनादि में घात-चक्र वर्ज्य नहीं है।

सिंह, धनु और कुम्भ राशि का चंद्र पुरुषों की दो-दो राशियों के लिए घातक होता है और कर्क, तुला व वृश्चिक का चन्द्रमा उनकी किसी भी राशि के लिए घातक नहीं होता।

अक्षांश	क्रां.१	२	३	४	५	६	७	८
२	०·१	०·३	०·४	०·६	०·७	०·८	१·०	१·१
४	०·३	०·६	०·८	१·१	१·४	१·७	२·०	२·२
६	०·४	०·८	१·[illegible]	१·७	२·१	२·५	२·९	३·४
८	०·६	१·१	१·७	२·२	२·८	३·४	३·९	४·५
९	०·६	१·३	१·९	२·५	३·२	३·८	४·४	५·५
१०	०·७	१·४	२·१	२·८	३·५	४·२	५·०	५·७
११	०·८	१·५	२·३	३·१	३·९	४·७	५·५	६·३
१२	०·८	१·७	२·५	३·४	४·३	५·१	६·०	६·८
१३	०·९	१·८	२·८	३·७	४·६	५·६	६·५	७·४
१४	१·०	२·०	३·०	४·०	५·०	६·०	७·०	८·०
१५	१·१	२·१	३·२	४·३	५·४	६·४	७·५	८·६
१६	१·१	२·३	३·४	४·६	५·७	६·९	८·१	९·२
१७	१·२	२·४	३·७	४·९	६·१	७·४	८·६	९·८
१८	१·३	२·६	३·९	५·२	६·५	७·८	९·१	१०·५
१९	१·४	२·७	४·१	५·५	६·९	८·३	९·७	११·१
२०	१·४	२·९	४·४	५·८	७·३	८·८	१०·२	११·७
२१	१·५	३·१	४·६	६·१	७·७	९·२	१०·८	१२·४
२२	१·६	३·२	४·८	६·५	८·१	९·७	११·४	१३·०
२३	१·७	३·४	५·१	६·८	८·५	१०·२	११·९	१३·७
२४	१·८	३·६	५·३	७·१	८·९	१०·७	१२·५	१४·३
२५	१·९	३·७	५·६	७·५	९·३	११·२	१३·१	१५·०
२६	१·९	३·९	५·९	७·८	९·८	११·७	१३·७	१५·७
२७	२·०	४·१	६·१	८·२	१०·२	१२·३	१४·२	१६·४
२८	२·१	४·२	६·४	८·५	१०·७	१२·८	१५·०	१७·१
२९	२·२	४·४	६·७	८·९	११·१	१३·४	१५·६	१७·९
३०	२·३	४·६	६·९	९·२	११·६	१३·९	१६·३	१८·६
३१	२·४	४·८	७·२	९·६	१२·०	१४·५	१६·९	१९·४
३३	२·६	५·२	७·८	१०·४	१३·०	१५·६	१८·३	२०·९
३५	२·८	५·६	८·४	११·२	१४·०	१६·९	१९·७	२२·६
४०	३·३	६·७	१०·१	१३·४	१६·८	२०·२	२३·६	२७·१
४५	४·०	८·०	१२·०	१६·०	२०·१	२४·१	२८·३	३२·३
५०	४·८	९·५	१४·३	१९·१	२३·९	२८·८	३३·६	३८·६
५५	५·७	११·४	१७·२	२२·९	२८·७	३४·५	४०·४	४६·३
१८°-५७'	१·४	२·७	४·१	५·५	६·९	८·३	९·७	११·१
२२°-३५'	१·७	३·३	५·०	६·७	८·३	१०·०	११·७	१३·४
२८°-३८'	२·२	४·४	६·६	८·७	१०·५	१३·१	१५·४	१७·६

अक्षांश	क्रां.९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	अक्षांश
२	१·३	१·४	१·५	१·७	१·८	२·०	२·१	२·[illegible]	२·४	२
४	२·५	२·८	३·१	३·४	३·७	४·०	४·३	४·६	४·९	४
६	३·८	४·२	४·७	५·१	५·६	६·०	६·४	६·९	७·४	६
८	५·१	५·७	६·३	६·८	७·४	८·०	८·६	९·२	९·८	८
९	५·७	६·४	७·०	७·७	८·४	९·०	९·८	१०·४	११·१	९
१०	६·४	७·१	७·८	८·६	९·३	१०·१	१०·८	११·६	१२·४	१०
११	७·०	७·८	८·७	९·५	१०·३	११·१	११·९	१२·८	१३·६	११
१२	७·०	८·६	९·५	१०·३	११·२	१२·१	१३·०	१४·०	१४·९	१२
१३	८·४	९·१	१०·३	११·२	१२·२	१३·२	१४·२	१५·२	१६·२	१३
१४	९·०	१०·१	११·१	१२·१	१३·२	१४·२	१५·३	१६·४	१७·५	१४
१५	९·७	१०·८	११·९	१३·१	१४·२	१५·३	१६·५	१७·६	१८·८	१५
१६	१०·४	११·६	१२·८	१४·०	१५·२	१६·४	१७·६	१८·९	२०·१	१६
१७	११·१	१२·४	१३·६	१४·९	१६·२	१७·५	१८·८	२०·१	२१·४	१७
१८	११·८	१३·१	१४·५	१५·८	१७·२	१८·६	२०·०	२१·४	२२·८	१८
१९	१२·५	१३·९	१५·३	१६·८	१८·२	१९·७	२१·२	२२·७	२४·२	१९
२०	१३·२	१४·७	१६·२	१७·७	१९·३	२०·८	२२·४	२४·०	२५·५	२०
२१	१३·९	१५·५	१७·१	१८·७	२०·३	२२·०	२३·६	२५·३	२७·०	२१
२२	१४·७	१६·३	१८·०	१९·७	२१·४	२३·१	२४·८	२६·६	२८·४	२२
२३	१५·४	१७·२	१८·९	२०·७	२२·५	२४·३	२६·१	२८·०	२९·८	२३
२४	१६·२	१८·७	१९·९	२१·७	२३·६	२५·५	२७·४	२९·३	३१·३	२४
२५	१६·९	१८·९	२०·८	२२·७	२४·७	२६·७	२८·७	३०·७	३२·८	२५
२६	१७·७	१९·७	२१·८	२३·८	२५·९	२७·९	३०·०	३२·१	३४·३	२६
२७	१८·५	२०·६	२२·७	२४·९	२७·०	२९·२	३१·४	३३·६	३५·८	२७
२८	१९·३	२१·५	२३·७	२५·९	२८·२	३०·५	३२·८	३५·१	३७·४	२८
२९	२०·१	२२·४	२४·७	२७·१	२९·४	३१·८	३४·२	३६·६	३९·०	२९
३०	२१·०	२३·४	२५·८	२८·२	३०·६	३३·१	३५·६	३८·१	४०·७	३०
३१	२१·८	२४·३	२६·८	२९·३	३१·९	३४·५	३७·१	३९·७	४२·३	३१
३३	२३·६	२६·३	२९·०	३१·७	३४·५	३७·३	४०·१	४२·९	४५·८	३३
३५	२५·५	२८·४	३१·३	३४·२	३७·२	४०·२	४३·२	४६·३	४९·४	३५
४०	३०·५	३४·१	३७·५	४१·१	४४·७	४८·३	५२·०	५५·७	५९·५	४०
४५	३६·४	४०·६	४४·८	४९·१	५३·४	५७·७	६२·२	६६·६	७१·२	४५
५०	४३·५	४८·५	५३·६	५८·७	६३·९	६९·१	७४·५	७९·९	८५·५	५०
५५	५२·३	५८·३	६४·५	७०·७	७७·०	८३·४	९०·१	९६·८	१०३·५	५५
१८°-५७'	१२·५	१३·९	१५·[illegible]	१६·७	१८·२	१९·६	२१·१	२२·६	२४·७	१८°-५७'
२२°-३५'	१५·१	१६·८	१८·५	२०·३	२२·०	२३·८	२५·६	२७·४	२९·२	२२°-३५'
२८°-३८'	१९·८	२२·१	२४·४	२६·६	२९·०	३१·[illegible]	३३·६	३६·०	३८·४	२८°-३८'

अक्षांश	क्रां.१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
२	२·६	२·७	२·९	३·१	३·२	३·४	३·६
४	५·२	५·५	५·८	६·१	६·५	६·८	७·१
६	७·८	८·३	८·८	९·२	९·७	१०·२	१०·७
८	१०·५	११·१	११·७	१२·४	१३·०	१३·७	१४·३
९	११·८	१२·५	१३·२	१३·९	१४·७	१५·४	१६·२
१०	१३·१	१३·९	१४·७	१५·५	१६·३	१७·२	१८·०
११	१४·५	१५·४	१६·२	१७·१	१८·०	१८·९	१९·९
१२	१५·८	१६·८	१७·७	१८·७	१९·७	२०·७	२१·७
१३	१७·२	१८·२	१९·३	२०·[illegible]	२१·४	२२·५	२३·६
१४	१८·६	१९·७	२०·८	२२·०	२३·१	२४·३	२५·५
१५	२०·०	२१·२	२२·४	२३·६	२४·९	२६·१	२७·४
१६	२१·४	२२·७	२४·०	२५·३	२६·६	२८·०	२९·३
१७	२२·८	२४·२	२५·५	२७·०	२८·४	२९·८	३१·३
१८	२४·२	२५·७	२७·२	२८·७	३०·२	३१·७	३३·३
१९	२५·७	२७·२	२८·८	३०·४	३२·०	३३·६	३५·३
२०	२७·२	२८·८	३०·४	३२·१	३३·८	३५·५	३७·३
२१	२८·७	३०·४	३२·१	३३·९	३५·७	३७·५	३९·४
२२	३०·२	३२·०	३३·८	३५·७	३७·६	३९·५	४१·४
२३	३१·७	३३·६	३५·५	३७·५	३९·५	४१·५	४३·६
२४	३३·३	३५·३	३७·३	३९·४	४१·४	४३·६	४५·७
२५	३४·९	३६·९	३९·१	४१·२	४३·४	४५·७	४७·९
२६	३६·५	३८·७	४०·९	४३·२	४५·५	४७·८	५०·२
२७	३८·१	४०·४	४२·७	४५·१	४७·५	५०·०	५२·४
२८	३९·८	४२·२	४४·६	४७·१	४९·६	५२·२	५४·८
२९	४१·५	४४·०	४६·५	४९·१	५१·८	५४·४	५७·१
३०	४३·२	४५·९	४८·५	५१·२	५३·९	५६·७	५९·६
३१	४५·०	४७·८	५०·५	५३·३	५६·२	५९·१	६२·१
३३	४८·७	५१·७	५४·७	५७·७	६०·८	६४·०	६७·२
३५	५२·६	५५·८	५९·१	६२·४	६५·७	६९·२	७२·७
४०	६३·३	६७·२	७१·१	७५·२	७९·३	८३·५	८७·७
४५	७५·८	८०·६	८५·४	९०·३	९५·३	१००·५	१०५·७
५०	९१·१	९६·९	१०२·८	१०८·९	११५·१	१२१·५	१२८·२
५५	११०·१	१११·७	१२५·३	१३३·०	१४१·०	१४९·३	१५७·९
१८°-५७'	२५·६	२७·२	२८·७	३०·३	३१·९	३३·५	३५·२
२२°-३५'	३१·१	३२·९	३४·७	३६·७	३८·७	४०·७	४२·७
२८°-३८'	४०·९	४३·२	४५·८	४८·४	५१·०	५३·६	५६·३

अक्षांश	क्रां.२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	अक्षांश
२	३·७	३·९	४·१	४·२	४·४	४·६	४·८	२
४	७·५	७·८	८·२	८·५	८·९	९·२	९·६	४
६	११·२	११·७	१२·३	१२·८	१३·[illegible]	१३·९	१४·५	६
८	१५·०	१५·७	१६·४	१७·१	१७·९	१८·६	१९·४	८
९	१६·९	१७·७	१८·५	१९·३	२०·१	२१·०	२१·८	९
१०	१८·९	१९·७	२०·[illegible]	२१·५	२२·४	२३·४	२४·३	१०
११	२०·८	२१·८	[illegible]२·७	२३·७	२४·७	२५·८	२६·८	११
१२	२२·७	२३·८	२४·९	२५·९	२७·१	२८·२	२९·३	१२
१३	२४·७	२५·९	२७·०	२८·२	२९·४	३०·६	३१·९	१३
१४	२६·७	२७·९	२९·२	३०·५	३१·८	३३·१	३४·५	१४
१५	२८·७	३०·०	३१·४	३२·८	३४·२	३५·६	३७·१	१५
१६	३०·७	३२·१	३३·६	३५·१	३६·६	३८·१	३९·७	१६
१७	३२·८	३४·३	३५·८	३७·४	३९·०	४०·७	४२·[illegible]	१७
१८	३४·९	३६·५	३८·१	३९·८	४१·५	४३·२	४५·०	१८
१९	३७·०	३८·७	४०·४	४२·२	४४·०	४५·९	४७·८	१९
२०	३९·१	४०·९	४२·७	४४·६	४६·६	४८·५	५०·५	२०
२१	४१·२	४३·२	४५·१	४७·१	४९·१	५१·२	५३·३	२१
२२	४३·४	४५·५	४७·५	४९·६	५१·८	५[illegible]·९	५६·२	२२
२३	४५·७	४७·८	५०·०	५२·२	५४·६	५६·७	५९·१	२३
२४	४७·९	५०·२	५२·४	५४·८	५७·१	५९·६	६२·१	२४
२५	५०·२	५२·६	५५·०	५७·४	५९·९	६२·५	६५·१	२५
२६	५२·६	५५·०	५७·५	६०·१	६२·७	६५·४	६८·२	२६
२७	५५·०	५७·५	६०·२	६२·९	६५·६	६८·४	७१·३	२७
२८	५७·४	६०·१	६२·८	६५·७	६८·६	७१·५	७४·५	२८
२९	५९·९	६२·७	६५·६	६८·६	७१·६	७४·७	७७·८	२९
३०	६२·५	६५·४	६८·४	७१·५	७४·७	७७·९	८१·२	३०
३१	६५·१	६८·२	७१·[illegible]	७४·५	७७·८	८१·२	८४·६	३१
३३	७०·५	७३·९	७७·[illegible]	८०·८	८४·[illegible]	८८·५	९१·९	३३
३५	७६·२	७९·९	८३·६	८७·४	९१·[illegible]	९५·४	९९·५	३५
४०	९२·१	९६·६	१०१·२	१०६·०	११०·९	११५·९	१२१·१	४०
४५	१११·२	११६·८	१२२·५	१२८·५	१३४·६	१४१·०	१४७·७	४५
५०	१३५·०	१४२·[illegible]	१४८·६	१५७·[illegible]	१६५·४	१७३·९	[illegible]	५०
५५	१६७·०	१७६·६	१८६·८	१९७·६	२०९·३	२२२·२	[illegible]	५५
१८°-५७'	३६·८	३८·६	४०·३	४२·१	४३·९	४५·७	[illegible]	१८°-५७'
२२°-३५'	४४·७	४६·८	४८·९	५१·१	५३·[illegible]	५५·६	[illegible]	२२°-३५'
२८°-३८'	५९·०	६१·८	६४·६	६७·५	७०·[illegible]	७३·५	[illegible]	२८°-३८'

स्पष्ट मध्याह्न, सूर्योदयास्त एवं दिनमान, मिश्रमानादि साधन

विभिन्न अक्षांशों और क्रांत्यंश १ से ३१ तकके लिए जो चर-सारणी गत पृष्ठ पर दी गयी है, उसमें यह संस्कार मिनिट तथा उसके दशमांश में है। दशमांश के अंक को ६ से गुणा कर देने से सेकेण्ड बन जायेगा—जैसे अक्षांश २ और १९ के लिए चर २·७ दिया गया है, अतएव मि.२ के बाद दशमलव ७ को ६ से गुणा कर दिया तो ४२ सेकेण्ड हुआ यानी २ मि. ४२ सेकेण्ड उपर्युक्त अक्षांश और क्रान्त्यंश क्रान्त्यंश का चर-संस्कार हुआ। इस चर-सारणी के सबसे निचले भाग में क्रमशः बम्बई, कलकत्ता और दिल्ली के चर-संस्कार दिये गये हैं। जंत्री के पाठकों को सूर्य-घड़ी के समय, स्थानिक मध्यम समय और स्टैं. टा. के भेद को खूब अच्छी तरह समझ लेना चाहिये।

किसी स्थान के 'उन्मण्डल' ★ में रोज घं.६ बजे सूर्योदय (स्पष्टार्कोदय), और घ. १८ बजे (यानी शाम के ६ बजे) सूर्यास्त हुआ करता है। इस सूर्योदयास्त के घं. ६ और घं. १८ में इष्ट देशीय चर-संकार § करने से वहाँ की सूर्य-घड़ी के समय में सूर्योदय और सूर्यास्तकाल प्राप्त होगा। सूर्य घड़ी के समय को स्पष्टकाल (एपेरेण्ट टाइम) भी कहते हैं। मध्याह्नकाल में चर-संस्कार नहीं लगता; अतः किसी स्थान की सूर्य-घड़ी से रोज १२ बज वहाँ स्पष्ट मध्याह्नकाल हुआ करता है। इस घं. १२ तथा चर-संस्कृत सूर्योदयास्त-काल में बेलांतर-संस्कार करने से यन्त्र-घड़ी के स्थानिक मध्यम समय में सूर्योदयास्त और मध्याह्नकाल प्राप्त होगा। किसी देश के एक नियत स्थल का जो 'स्थानिक मध्यम समय' (लोकल मीन टाइम L.M.T.) उस समूचे देश में समय-सम्बन्धी लौकिक व्यवहार जैसे, रेलवे, रेडियो आदि के समय के लिये प्रयुक्त होता है, उसको उस देश का 'प्रमाणित समय' (स्टैं. टा.) कहते हैं। उससे इष्ट स्थानीय मध्यम समय के अन्तर को स्टैं अन्तर कहा जाता है। पूर्वोक्त यन्त्र-घड़ी के स्थानिक सूर्योदयास्त तथा मध्याह्नकाल में भा. स्टैं-समय के अन्तर का संस्कार करने से सूर्य-अर्ध-बिम्बोदयास्त व स्पष्ट मध्याह्नकाल का भारतीय प्रमाणित समय (भा. स्टैं. टा.) ज्ञात हो जायेगा। अब उपरोक्त विषयको सरलतापूर्वक समझने और उपयोग करने के लिये नीचे सूत्ररूप में लिखते हैं—

स्पष्ट सूर्य-उदय

(१) घं. ६ ± चर ± बेलांतर = सूर्योदय (सूर्य-अर्ध-बिम्बोदय) का स्थानिक मध्यम समय

(२) स्थानिक मध्यम समय ± स्टैं -अन्तर = सूर्योदय का स्टैं. टा.

स्पष्ट सूर्य-अस्त

(१) सूर्यास्त घं. १८ ± चर ± बेलांतर = सूर्यास्त (सूर्य-अर्ध-बिम्बास्त का स्थानिक मध्यम समय

(२) स्था. मध्यम समय ± स्टैं.अन्तर = सूर्यास्त का स्टैं. टा.

स्पष्ट मध्याह्न

(१) स्पष्टमध्याह्न घं. १२' ± बेलान्तर = स्पष्ट मध्याह्न का यंत्र-घड़ी से स्थानिक मध्यम समय

(२) स्था. म. समय ± स्टैं. अंतर = स्पष्ट मध्याह्न का स्टैं. टा.

अभीष्ट स्थान के अक्षांश और अभीष्टकाल की क्रांति के सहारे चर-संस्कार ज्ञात होगा। यहाँ अभीष्ट काल घं. ६ या १२ या १८ सूर्य-घड़ी का है; उसे स्टैं टा. में बदल लेना चाहिये; क्योंकि जंत्री में सूर्य की दैनिक क्रान्ति स्टैं. टा. में ही प्रातः घं. ५ मि. ३० बजे की दी जाती है। इस क्रान्ति को उसकी दैनिक गति के द्वारा उपर्युक्त स्टैं.टा. के अभीष्ट काल का स्पष्ट करना होगा, जिस तरह ग्रह स्पष्ट किये जाते हैं। उस अभीष्टकाल की स्पष्ट क्रान्ति तथा अभीष्ट स्थल के भू केंद्रीय अक्षांशके सहारे चर-संस्कार ज्ञात कर लें। इस चर-संस्कार को धन + या − करने का नियम इस प्रकार है—

★ **प्राक् पश्चिमाश्रिता रेखा प्रोच्यते सम मण्डले।**
उन्मण्डले च विषुवन्मण्डले परिकीर्त्यते॥

व्याख्या—द्रष्टा के क्षितिज के ठीक पूर्व और पश्चिम-बिन्दुओं को मिलानेवाली व्यास रेखा के आश्रित सम-मण्डल है तथैव विषुवन्मण्डल और उन्मण्डल भी उसी व्यास-रेखाश्रित हैं। सममण्डल उस वृत्त को कहते हैं जो द्रष्टा के क्षितिजस्थ पूर्व, पश्चिम-बिन्दुओं तथा द्रष्टा के ख-स्वस्तिक (आकाशस्थ शिरोबिन्दु) से होकर जाता है। उन्मण्डल वह वृत्त है जो उक्त पूर्व-पश्चिम-बिन्दुओं एवं खगोलीय उत्तर-दक्षिण-ध्रुवों से होकर जाता है; यही द्रष्टा का निरक्ष-स्थानीय क्षितिज-वृत्त होता है; सममण्डल द्रष्टा के क्षितिज-वृत्त पर लम्बभूत होने से यह दृश्य खगोलार्ध को दो सम भागों में (दक्षिणोत्तर-विभाग में) बाँटता है। इसलिये उसे सममण्डल कहा गया है एवं द्रष्टा के क्षितिज का उत्तर-दक्षिण-बिन्दु सममण्डल का पृष्ठ-केन्द्र होता है। इसी प्रकार द्रष्टा के क्षितिजस्थ पूर्व-पश्चिम बिन्दुओं से जानेवाले विषुवन्मण्डल का पृष्ठ-केन्द्र दक्षिणोत्तर ध्रुव होते हैं जो साक्ष देश के क्षितिज से वहाँ के अक्षांशतुल्य नतोन्नत रहते हैं। खगोल के उक्त तीनों ही प्रधान महद् वृत्त एक ही व्यास-रेखाश्रित पूर्व पश्चिम-बिन्दुओं से सम्बद्ध रहते हैं, अतएव सूर्यसिद्धान्त के उपर्युक्त श्लोक में उसी रेखा को तीनों महद् वृत्तों के आधाररूपेण प्रतिपादित किया गया है।

—जगजीवनदास गुप्त कृत सूर्यसिद्धान्त की टीका से

§ **उन्मण्डलक्ष्मावलयान्तराले द्युरात्रवृत्ते चरखण्डकालः। तज्ज्यात्र कुज्या चरशिञ्जिनी स्याद्व्यासार्धवृत्ते परिणामिता सा॥१॥**

(सिद्धान्त शिरोमणि गोलाध्याय त्रिप्रश्न)

क्रान्ति और अक्षांश	सूर्योदय के लिये चर	सूर्यास्त के लिए चर
दोनों उत्तर या दोनों दक्षिण हों तब	− ऋण	+ धन
दोनों में-से एक उत्तर और दूसरा दक्षिण हो तब	+ धन	− ऋण

बेलांतर—स्थानाभाव से प्रत्येक वर्ष की 'चिंताहरण जंत्री' में बेलांतर का कोष्ठक नहीं दिया जा सका है। वह इस पुस्तक में दिया गया है। इसमें अंग्रेजी मास के प्रत्येक दिन का बेलांतर मिनट और उसके दशमांश में दिया गया है जो सर्व स्थलों के लिये उपयोगी है। प्रत्येक दिन के बेलांतर के साथ + या ऋण − का चिह्न भी लगा है जिसके अनुसार स्पष्टकाल (सूर्य-घड़ी के समय) में संस्कार (धन या ऋण) करने से उस दिन का स्थानिक मध्यम समय L. M. T. (यंत्र घड़ी का समय) ज्ञात हो जायेगा। किसी दिन एक घंटे में बेलांतर जितना घटता या बढ़ता है, वह उस दिन के बेलांतर की होरागति होती है। उसके द्वारा सूर्योदय, मध्याह्न, सूर्यास्त, मध्यरात्रि या अन्य किसी भी अभीष्ट क्षण पर बेलांतर को (ग्रह की भाँति) स्पष्ट कर आप उसका सूक्ष्म मान जान सकते हैं।

अतः कोष्ठक में प्रत्येक ता. के बेलांतर के साथ ही उसकी होरा-गति भी सेकेण्ड और उसके शतांश में दी गयी है। यह कोष्ठक अब से आगे-पीछे के अनेकशः वर्षों के लिए आप यथावत् उपयोग में ले सकते हैं।

किसी दिन के बेलांतर का धन या ऋण चिह्न उस दिन के सूर्योदयास्त, मध्याह्न आदि के स्पष्टकाल को यंत्र-घड़ी का मध्यम समय बनाने के लिए प्रयुक्त होगा। मध्यम-काल को स्पष्टकाल (सूर्य-घड़ी का समय) बनाना हो तो विपरीत चिह्न अर्थात् धन चिह्न को ऋण चिन्ह और ऋण को धन चिन्ह मानकर तदनुसार मध्यमकाल में बेलांतर का संस्कार करना चाहिये।

उदाहरण : ता. १ नवम्बर १९६२ ई० को लखनऊ का सूर्योदय-समय क्या होगा ?

अभीष्ट देश के उन्मण्डलीय सूर्योदय के स्टैं. टा में तात्कालिक सूर्य-क्रांति और अभीष्ट स्थान के भूकेंद्रीय अक्षांश के द्वारा चर-संकार करने से उस स्थान के स्पष्टार्कोदय का स्टैं. टा. ज्ञात होता है; अतः यहाँ अभीष्ट नगर लखनऊ के उन्मण्डलीय सूर्योदय का भा. स्टैं. टा जानने के लिए पहले उक्त ता. का बेलांतर निकालते हैं—

काशी में इस दिन का दिनमान घटी २७ प. ४३ है और सूर्योदय का स्टैं. टा. घं. ६ मि. ९ है;

घ. प. घं. मि. से, घं. मि. से.
२७-४३ = ११-५-१२ ÷ २ = ५-३२-३६ = दिनार्ध हुआ

	घं. मि. से.	घं. मि. से.
काशीका सूर्योदय	६–९–० स्टैं टा.	१२–०–०
काशीका दिनार्ध +	५-३२-३६	
काशी का मध्यान्ह	११-४१-३६ स्टैं.टा	-११-४३-३६ स्था.स.
+	०–२–० स्टैं.अन्तर	=०-१६-२४ बेलान्तर
काशी का ,,	११-४३-३६ स्था. स.	

अतः बेलान्तर ऋण − १६·४ मिनट आया। अब—

घं मि. से.
६ ० ० उन्मण्डलीय सूर्योदय का समय सूर्यघड़ी से;
इसमें उपर्युक्त बेलान्तर − १६-२४
घटाया तब शेष ५-४३-३६ उन्मण्डलीयसूर्योदयका समय यंत्र-घड़ीसे हुआ,
इसमें लखनऊ का
स्टैं.-अन्तर जोड़ा + ० ६ २०
तब = ५-४९- ५६ लखनऊ में उन्मण्डलीय सूर्योदय का समय स्टैं. टा. से हुआ।

लखनऊ का भौगोलिक अक्षांश उ २६°–५१′ है जिसमें भूकेन्द्रीय अक्षांश-संस्कार ९′·३ घटाने से लखनऊ का भूकेन्द्रीय अक्षांश २६°।४१′·७ हुआ। रेखांश ८०°–५५′ पूर्व है। स्टैं. टा. से लखनऊ के स्था. मध्यम समय का अन्तर ऋण मि. ६ से २० है। (देखें—इसी पुस्तक की 'देशकाल सुबोधिनी तालिका')।

ता० १ नवम्बर को स्टैं.टा से घ.५ मि.३० बजे सूर्य की क्रांति १४°-१२′ दक्षिण है और उसकी दैनिक गति यानी २४ घं की गति +२०′ कला है। घं.५ मि.३० से उक्त उन्मण्डलीय सूर्योदय घं ५ मि. ५० का अन्तर मि २० है; अतएव सूर्यक्रान्ति २४ घंटे = १४४० मि. में २० कला = १२०० विकला बढ़ती है तो २० मि. में कितनी ?

$\frac{१२०० \times २०}{१४४०}$ = १६·६″, इस अनुपात से आये हुए फल

१६·६″ को जंत्री में छपे घं. ५ मि ३० बजे की क्रान्ति १४°- २′ में जोड़ने से अभीष्टकालिक क्रांति १४°-१२′-१६·६″ होगी जिसे सुगमता के लिए १४° १२ ३′ ही समझना चाहिये। अब चर-संस्कार के लिए चर-सारणी में अक्षांश २६°–२७° तथा क्रान्ति १४°–१५° के लिए जो चर दिये गये हैं, उन्हीं पर से अपने इष्ट अक्षांश २६°-४१′·७ तथा इष्ट क्रान्ति १४°–१२·३′ की क्रांति के लिए चर का अनुपात करना होगा। पहले अक्षांश २६° के लिये क्रांत्यंश १४° और १५° अंश के चर से क्रांति १४°-१२′·३ के लिए अनुपात कीजिए। २६ अक्षांश में क्रान्ति १४ का चर २७·९ है और १५ का ३०·० है यानी क्रांति के १ अंश या ६० कला में चर (३०·०–२७·९) = २·१ बढ़ता

है तो १२ ३ कला में कितना ? इस अनुपात से ०·४ आया; उसे २७·९ में जोड़ा तो मि. २८·३ अक्षांश २६ के लिए १४°–१२ ३' क्रांति का चर मिला। इसी प्रकार २७ अक्षांश के लिए १४°–१२ ३' का चर निकाला तो २९·६ हुआ जिसमें २६ अक्षांश का उक्त चर २८·३ घटाया तो अन्तर १·३ मिला। अब चूंकि क्रांति १४°-१२·३' का चर २६ अक्षांश से २७ अक्षांश तक यानी ६०' में १ ३ बढ़ता है तो ४१·७ में कितना, इस अनुपात से फल ०·९ प्राप्त होता है। इसे उपर्युक्त २६ अक्षांश और १४°-१२ ३' क्रांति के चर २८·३ में जोड़ दिया तो अक्षांश २६°-४१' ७ के लिए क्रांति १४°-१२ ३' का सूक्ष्म, शुद्ध चर मि.२९ २ प्राप्त हो गया।

उपर्युक्त उनमण्डलीय सूर्योदय घं ५ मि. ४९·९ में + चर-संस्कार मि २९·२ को जोड़ने से उस रोज लखनऊ में स्पष्ट सूर्योदय का भा.स्टैं. टा. घं.६ मि.१९·१ ज्ञात हुआ जिसमें जातक के जन्म का स्टैं.टा. घटाने और शेष को ढाई गुना करने से घटी पलादि में शुद्ध जन्मेष्ट-काल सहज ही बन जायेगा।

इस प्रकार अपने इष्ट दिन ता० १-११-१९६२ को भा.स्टैं.टा. से घ. ६ मि १९·१ बजे लखनऊ में सूर्योदय निश्चित हुआ। बेलान्तर की झंझट नहीं चाहिये तो मात्र चर-संस्कार द्वारा ही काशी के मध्याह्न से इष्ट स्थल का सूर्योदय, सूर्यास्तकाल तथा दिनमान निकल सकता है। यह बहुत सरल रीति है :—

सूत्र— इष्टस्थल के मध्याह्न स्टैं. टा. में ऋण—दिनार्ध = वहाँ के सूर्योदय का स्टैं. टा.

इष्टस्थल के मध्याह्न स्टैं. टा. में धन + दिनार्ध = वहाँ के सूर्यास्त का स्टैं. टा.

दिनार्ध निम्न प्रकार से और मध्याह्न काशी के मध्याह्न पर से आयेगा।

(१) घ ६ ± चर संस्कार = दिनार्ध

चर निकालने की रीति ऊपर लिख आये है। दिनार्ध-साधन में चर-संस्कार देने की रीति सूर्योदय से उलटी है। जैसे :—

क्रांति	अक्षांक्ष	चर-संस्कार
+ या −	+ या −	+ धन
+ या −	− या +	− ऋण

गणित-ज्योतिष में अक्षांक्ष एवं क्रांति की उत्तर दिशा के लिए + चिह्न और दक्षिण दिशा के लिए —ऋण चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

(२) काशी का स्पष्ट मध्याह्न ± देशान्तर (यानी काशी से इष्ट स्थल का अन्तर) = इष्ट स्थल का स्पष्ट मध्याह्न। इष्ट स्थल काशी से पूर्व में हो तो देशान्तर — और पश्चिम हो तो + किया जाता है। दोनों स्थलों के रेखांश का अन्तर = देशान्तर है। इसे अंशादि से घंटादि में परिवर्तित कर लेना चाहिये। अं, क., वि. × ४ = मि., से., प्र. से.

अब उपरोक्त उदाहरण ही देखें। चर-संस्कार २९। मि. है; अत: घं. मि.

६–०
— ०— ९। चर-संस्कार

५–३०।।। दिनार्ध हुआ।

काशी का रेखांश ८३°–२'

लखनऊ का रेखांश — ८०°–५५'

देशान्तर अंशादि में २°–७' × ४ = मि. ८से. २८

काशी से लखनऊ पश्चिम है, अत: उक्त देशांतर + होगा।

		घं. मि.
अब	काशी का स्पष्ट-मध्याह्न	११–४१।। स्टैं. टा.
	देशान्तर	+ ८।।
	लखनऊ का स्पष्ट मध्याह्न	११–५० स्टैं.टा.
		— दिनार्ध ५ ३०।।।

लखनऊ के सूर्योदय का समय ६ १९। स्टैं.टा.में।

देखिये, कितनी सरलता से ज्ञात हो गया!

किसी स्थान के दिनार्ध घं. मि. को १२ घं. में घटा देने पर वहाँ का रात्र्यर्ध घं. मि. होता है। दिनार्ध का दूना दिनमान तथा रात्र्यर्ध का दूना रात्रिमान होता है। दिनमान घं. मि को २४ घं. में घटा देनेपर भी रात्रिमान के घं. मि ज्ञात हो जाते हैं। जिस तरह दिनार्ध घं. मि. को स्पष्ट मध्याह्न के स्टैं टा. में घटाने से स्पष्टार्कोदय (यानी सूर्य के अर्धबिम्बोदय) का भा. स्टैं टा (भारतीय प्रमाणित समय) आता है, उसी तरह स्पष्टमध्याह्न के स्टैं. टा. में दिनार्ध जोड़ने से स्पष्ट सूर्यास्त (सूर्य-अर्ध-बिम्बास्त) का स्टैं. टा. ज्ञात होता है। उसमें रात्र्यर्ध घं. मि. जोड़ देने से स्पष्ट मध्यरात्रि निशीथ) का स्टैं. टा बन जाता है अथवा स्पष्ट मध्याह्न के स्टैं. टा. में १२ घंटा जोड़ देने से भी स्पष्ट मध्यरात्रि वा निशीथ का स्टैं. टा. होता है। जैसे, ता. १ नवम्बर ६२ के उदाहरण में दिनार्ध ५ घ ३० मि. ४५ से. को दूना किया तो ११ घं. १ मि. ३० से. दिनमान हुआ इसको २४ घं. में घटा दिया तो शेष १२ घ. ५८ मि. ३० से. रात्रिमान आया। इसका आधा ६ घं. २९ मि. १५ से. रात्र्यर्ध

हुआ। १२ घं. में दिनार्ध ५ घं. ३० मि. ४५ से. घटा देने से भी यही रात्र्यर्ध प्राप्त होगा : स्पष्ट मध्याह्न के स्टैं. टा. ११ घं. ४९ मि. ४४ से. में दिनार्ध ५ घं. ३० मि. ४५ से. जोड़ने से सूर्यास्त का स्टैं. टा. १७ घं. २० मि. २९ से. हुआ। इसमें उपर्युक्त रात्र्यर्ध ६ घ. २९ मि. १५ से. जोड़ दिया तो २३ घं. ४९ मि. ४४ से. स्पष्ट मध्यरात्रि (निशीथ) का स्टैं. टा. ज्ञात हुआ। चूंकि १ घण्टे की ढाई घटी तथा १ मि. का ढाई पल होता है, अत: उपर्युक्त सब मानों को घटी पल में लाना हो तो उनको ढाई गुना कर लें। घं. मि. का घटी पल बनाने में सरलता के लिए घं. मि. को ५ से गुणा कर गुणनफल को आधा कर लेते हैं। इसी तरह घटी पल का घं. मि. बनाने के लिए घटी पल को २ से गुणा (दूना) कर उसमें ५ का भाग देते हैं। जैसे, उपर्युक्त उदाहरण के दिनार्ध ५ घं. ३० मि. ४४ से. का घटी पल बनाने के लिये पहले ५ घं. को ५ से गुणा किया तो २५ हुए, जिसका आधा १२ घटी ३० पल हुए; फिर ३० मि. को ५ से गुणा किया तो १५० हुए जिसका आधा ७५ पल यानी १ घटी १५ पल हुआ एवं ४४ से. को ५ से गुणा करने पर २२० हुआ जिसे २ से भाग देने पर ११० विपल यानी १ पल ५० विपल हुआ। तीनों फल को जोड़ने से दिनार्ध का घट्यात्मक मान १३ घटी ४६ पल ५० विपल प्राप्त हुआ। यही उस दिन लखनऊ में स्पष्ट मध्याह्न का इष्टकाल है अर्थात् उस दिन यानी ता. १ नवम्बर '६२ को लखनऊ में किसी बालक का जन्म ठीक मध्याह्न के समय होता तो उसका शुद्ध सूक्ष्म जन्मेष्ट काल यही १३ घ. ४६ प. ५० वि होता एवं तत्कालीन सूर्य स्पष्ट ही उसकी जन्मकुण्डली के दशमभाव का भी स्पष्ट (राशि अं. क. वि.) होता। दिनार्ध घट्यादि को दूना किया तो २७ घ. ३३ प. ४४ वि. दिनमान हुआ, जिसको ६० घटी में घटाने से शेष ३२ घ. २६ प. १६ वि. रात्रिमान आया। उसका आधा १६ घ. १३ प. ८ वि. रात्र्यर्ध हुआ। इस रात्र्यर्ध में दिनमान के घट्यादि जोड़ने से ४३ घ. ४६ प. ५२ वि. स्पष्ट मध्यरात्रि (निशीथ) का इष्टकाल ज्ञात हुआ। स्पष्ट मध्याह्न के इष्टकाल में १२ घं. = ३० घटी जोड़ने से भी वही इष्टकाल मध्यरात्रि का आयेगा। कई पुस्तकों में लिखा रहता है कि रात्रिमान को ५ से भाग देने पर लब्धि सूर्योदय का घं. मि. आता है एवं दिनमान को ५ से भाग देने पर लब्धि सूर्यास्त का घं. मि. होता है; किन्तु हमारे पाठकों को जान लेना चाहिए कि इस प्रकार के सूर्योदयास्त का घं. मि. स्थानिक सूर्य-घड़ी का समय होता है। उसमें बेलान्तर और स्टैं.-अन्तर का संस्कार करने के पश्चात् ही वह स्टैं. टा. का होगा। जैसे—लखनऊ के उपर्युक्त रात्रिमान ३२ घ. २६ प. १६ वि. को ५ से भाग दिया तो लब्धि ६ घ २९ मि. १५ से. सूर्य घड़ी का सूर्योदय-काल हुआ, इसमें बेलान्तर १६ मि. २० से. घटाया तो शेष ६ घं. १२ मि. ५५ से. सूर्योदय का स्थानिक मध्यम समय हुआ। उसमें स्टैं-अन्तर ६ मि. २० से. जोड़ने से ६ घं. १९ मि.१५ से. सूर्योदय का स्टैं.टा. ज्ञात हो गया। किसी स्थान में स्टैं टा. के सूर्योदय से ही जन्मेष्ट बनाना बिल्कुल सरल, सुगम और अशुद्धि से बचने का निरापद मार्ग है जिसका तरीका इसी पुस्तक के अन्य लेख में भलीभाँति समझा दिया गया है। इसके द्वारा किसी स्थान के सूर्योदय का जो स्टैं. टा. आयेगा, वह सूर्य-अर्ध-बिम्बोदय का वास्तविक समय होता है; इसे ही सिद्धान्त-ज्योतिष में 'स्पष्टार्कोदय' कहा गया है और वही जन्मेष्ट-साधन एवं धर्मकृत्य-सम्पादन में विहित है। काशी के दृश्य पञ्चाङ्ग और एक मकरन्दीय पञ्चाङ्ग में तथा अन्य प्रान्तों के भी अनेक दृश्य पञ्चाङ्गों में दैनिक सूर्योदय का जो समय दिया रहता है, वह पाश्चात्यरीत्या किरण-वक्रीभवन-संस्कार-युक्त सूर्य-बिम्बोदय-काल रहता है; किन्तु वह भारतीय त्रिस्कन्ध ज्योतिष एवं धर्मशास्त्र में ग्राह्य नहीं। अत: स्वसम्पादित 'चिन्ताहरण जंत्री' में इस लेख के गणितानुसार ही सूर्योदय, सूर्यास्त एवं दिनमान दिये जाते हैं। इनमें उपर्युक्त पाश्चात्य रीति के सूर्योदय आदि से अन्तर रहना स्वाभाविक है; इस कारण जंत्री के अथवा इस लेख की रीति से बने सूर्योदय आदि में अशुद्धि की व्यर्थ कल्पना न करनी चाहिये और न तत्सम्बन्धी निमल शंका के समाधानार्थ हमारा समय नष्ट करना चाहिये। काशी, लखनऊ आदि के प्राचीन सूर्यसिद्धान्तीय एवं मकरन्दीय पञ्चाङ्गों में 'मिश्रमान' काल के ग्रह दिये रहते हैं और एक बहुत बड़ा पंडितवर्ग आज भी उन्हीं का उपयोग करता हैं। उस मिश्रमान का रहस्य, सैद्धान्तिक शुद्ध स्वरूप और स्टैं. टा. में उसकी गणितविधि प्रचलित गणित फलित की किसी पुस्तक तो क्या उन पञ्चाङ्गों में भी नहीं प्रकट किया गया है जिनमें मिश्रमानकालिक दैनिक या साप्ताहिक ग्रह-स्पष्ट दिये जाते हैं; फलत: उनका उपयोग करनेवाले अधिकांश ज्योतिषीगण येनकेन प्रकारेण जातक के जन्म स्थल का 'इष्टकाल' बना लेने पर भी वहाँ का मिश्रमान नहीं बना पाते और काशी के मिश्रमानकालिक ग्रहों में ही चालन देकर स्वदेशीय ग्रह-स्पष्ट का अशुद्ध कार्य करते हैं; फिर फलित ठीक न मिलने के कारण अपने साथ ही शास्त्र को भी बदनाम कराते हैं; अस्तु। फलित की प्रसिद्ध पुस्तक 'मानसागरी' में मिश्रमान-साधन का यह प्रकार बतलाया गया है :—

स्पष्टार्कायन भाग युक्त भुजवद् भुक्तर्क्षतस्तच्चरं।
धृत्वा भोग्यचरघ्नबाहुलवत: खाग्न्युद्धृतैस्तैर्युत: ॥
मेषात्खं शरवारिधी ऋणमथो कुर्यात्तुलादौ स्फुटं।
तन्मिश्रं द्विगुणं द्युमानमुदितं रात्रस्तु षष्ट्यन्तरम् ॥

उक्त श्लोक के प्रथम दो चरणों में इष्ट स्थल और इष्ट दिन का चर-साधन बतलाया है। आगे कहा है कि सायन सूर्य मेषादि ६ राशि में हो तो उक्त चर को ४५

घटी में धन + और यदि सायन सूर्य तुलादि ६ राशि में हो तो चर को ४५ घटी में ऋण – करने से अभीष्ट स्थल और दिन का मिश्रमान होता है; किन्तु यह गलत है; वस्तुतः वह 'मिश्रमान काल' नहीं होता है; बल्कि स्पष्ट निशीथ (मध्यरात्रि) का इष्टकाल होता है। जैसे—गत उदाहरण में ता. १ नवम्बर सन् १९६९ ई. को लखनऊ के लिये चर २९। मि. = १ घटी १३ पल उपलब्ध हुआ। उस दिन सायन सूर्य तुलादि ६ राशि में होने से चर घ. १ प. १३ को घ. ४५ में घटाया तो शेष घ. ४३ प. ४७ ग्रंथोक्त मिश्रमान काल हुआ; लेकिन उसी उदाहरण में यह सिद्ध हो चुका है कि यह वस्तुतः उस दिन लखनऊ में स्पष्ट निशीथ (मध्यरात्रि) का इष्टकाल है। अतः इसको मिश्रमान मानना या कहना नितांत भूल है। फलित के ग्रंथों ये गणित-ज्योतिष और सैद्धांतिक विषयों की प्रायः ऐसी ही दुर्दशा कर दी जाती है; अतएव फलित-प्रेमियों को भी अपने उपयोगी सही गणित के ज्ञानार्थ फलित-ग्रंथों पर निर्भर न होकर सिद्धांतग्रंथों का ही सम्यक् अध्ययन करना चाहिये। सिद्धान्ततः ४५ घटी में चर रेखान्तर और उदयान्तर(बेलांतर) ये तीन संस्कार करने पर मिश्रमान सिद्ध होता है; केवल चर संस्कार से नहीं। इसका कारण यह है कि सूर्यसिद्धान्त तथा इसके आधार पर निर्मित मकरन्द-सारणी के अहर्गणोत्थ ग्रह भारतीय मध्यरेखा की मध्यम मध्यरात्रि के सिद्ध होते हैं। भारतीय मध्य रेखा की स्थिति के विषय में सिद्धान्त शिरोमणि में लिखा है :—पल्लंकोज्जयिनी पुरोपरि कुरुक्षेत्रादिदेशान् स्पृशन्। सूत्रं मेरुगतं बुधैर्निगदिता सामध्य रेखा भुवः ॥ सि शि मध्य ॥ २४ ॥ तदनुसार भारतीय मध्यरेखापुर उज्जयिनी में स्थानिक मध्यमकाल (L. M. T.) से जब २४ (यानी रात्रि के १२) बजते हैं, उसी समय के ग्रह सूर्यसिद्धान्त एवं मकरन्द से स्पष्ट होते हैं। उक्त घं. २४ बजे इष्ट स्थान के स्पष्ट काल से या मध्यम काल (L M.T.) से अथवा भा स्टैं टा (I.S T) से जो समय हो, उससे इष्ट स्थान के सजातीय सूर्योदय-समय का घट्यादि अन्तर 'मिश्रमान काल' होता है और वही काशी के सूर्यसिद्धान्तीय एवं मकरन्दीय पञ्चाङ्गों में दिया जाता है। उदाहरणार्थ, हिन्दू विश्वविद्यालय के 'विश्वपंचांग' में श्रीसवत् २०२६ कार्तिक कृष्ण ७ शनिवार ता. १ नवम्बर १९६९ ई० का मिश्रमान ४५ घटी ४१ पल छपा है। उस दिन काशी का चर ऋण १ घटी ९ पल तथा बेलांतर धन ४० पल है। काशी से उज्जयिनी का देशांतर उक्त पंचांगानुसार १ घटी ९ पल है। काशी से उज्जयिनी पश्चिम होने के कारण यहाँ निशीथ होने के देशांतर तुल्य समय बाद उज्जयिनी में निशीथ होगा। अतः यहाँ रेखांतर धन + संज्ञक है। इस प्रकार से—

घटी	५पल	० में
+१	९	देशांतर
+०	४१	बेलांतर
४६	५०	
−१	९	चर
शेष ४५	४१	

इस प्रकार ४५ घ. ४१ प. मिश्रमान काल सिद्ध होता है। गणेश आपाजी के पंचांग में भी उस दिन का यही मिश्रमान काल (४५घटी४१पल) छपा है, यद्यपि इनके पञ्चाङ्ग में काशी से उज्जयिनी का अन्तर १ घटी ११ पल छपा है; तदनुसार इनका शुद्ध मिश्रमान काल ४५।४३ होना चाहिये। काशी के ही श्रीगणेशदत्त ज्योतिषी के पंचांग में तो उक्त दिन का मिश्रमान ४५ घटी २० पल छपा है। इसका कारण यह है कि काशी से उज्जयिनी का देशांतर ये स्थूलतः ४७ पल मानते हैं जो दृग्गणितागत (वास्तव) देशान्तर (१ घटी १३ पल) से २६ पल न्यून होने के कारण बहुत अशुद्ध है। सूर्यसिद्धान्त के ही आधार पर बने 'भास्वती' करण ग्रंथ में लिखा है कि देशान्तर दृग्गणितागत ही लेना चाहिये; यथा 'देशान्तरं दृग्गणिताद् प्रसाध्यम्। इतीह कल्पान्तसमो ध्रुवः स्यात्।' (भास्वती।१२॥ ऐसा स्पष्ट निर्देश होने पर भी उक्त पचाङ्गनिर्माण में उसके वर्तमान विद्वान् रचयिता स्थूल विषुवती परमाक्रांति, देशान्तरादि का ही प्रयोग कर रहे हैं, यह बड़े खेद का विषय है। हमारे विज्ञ पाठक सहज ही समझ सकते हैं कि इस प्रकार से पञ्चाङ्गीय मिश्रमान में करीब आधी घटी की अशुद्धि होने पर चन्द्रस्पष्ट में ७ कला तक की अशुद्धि हो सकती है जिसके कारण सूर्य से शुक्र तक की महादशाओं १९ दिन से लेकर २ महीने तक का अन्तर पड़ जायेगा। अतएव शुद्ध मकरन्दीय या सूर्यसिद्धान्तीय चन्द्रस्पष्ट एवं उस पर से दशा-साधन के लिये भी आज दृक्सिद्ध देशान्तर, चर एवं बेलान्तर का उपयोग अनिवार्य है।

मिश्रमानकाल अभीष्ट स्थान के निशीथ (मध्यरात्रि) के इष्टकाल पर से भी बनाया जा सकता है; एतदर्थ चर की आवश्यकता न होगी। यह ध्यान रखना चाहिये कि मिश्रमान बनाने में बेलान्तर का संस्कार सूर्योदय-साधन से विपरीत करना पड़ता है अर्थात् सूर्योदय-साधन में बेलान्तर धन किया हो तो मिश्रमान-साधन में ऋण करे तथा सूर्योदय-साधन में बेलान्तर ऋण किया हो तो मिश्रमान-साधन में धन करना चाहिये। जैसे, पूर्वोक्त उदाहरण में ता. १ नवम्बर १९६९ ई. को लखनऊ की स्पष्ट मध्यरात्रि (निशीथ) का इष्टकाल ४३ घ. ४६ प. ५२ वि. सिद्ध हुआ है एवं वहाँ के लिए उस दिन के सूर्योदय-साधन में बेलान्तर ऋण किया गया है। अतः मिश्रमान-साधन में बेलान्तर को निशीथ के इष्टकाल में धन + करना होगा। लखनऊ से उज्जयिनी पश्चिम होने के कारण देशान्तर भी धन + करना होगा। लखनऊ का रेखांश ८०°। ५५' तथा उज्जयिनी का ७५° ४३' है। दोनों का अन्तर ५°।१२' हुआ। इसको ४ से गुणा करने पर २० मि. ४८ से. = ५२ पल देशान्तर हुआ एवं बेलान्तर १६। मि. के पल ४१ हुए। दोनों को उपर्युक्त निशीथकाल घट्यादि ४३।४६।५२ में जोड़ दिया जाय तो घट्यादि ४५।१९।५२ उस दिन लखनऊ का मिश्रमान हुआ। इसी प्रकार से अन्य किसी भी स्थान का शुद्ध

मिश्रमान आप बना सकते हैं; किन्तु सूर्यसिद्धान्तीय या मकरन्दीय पचाङ्ग से भी जन्मकुण्डली बनाने के लिये जातक के जन्म-स्थानीय सूर्योदय-काल को सूर्यघड़ी का बनाना एवं जन्मकालिक ग्रह-स्पष्टीकरण के लिए जन्मस्थान का मिश्रमान काल बनाना—यह सब गणित-प्रपंच, वास्तविक परिणाम पर पहुँचने के लिये, पुरातन शैली के ज्योतिषियों का द्रविड़ प्राणयाम मात्र है। आधुनिक स्टैं. टा. की गणितविधि से परिचित ज्योतिषज्ञों को इस पुरातन पद्धति के प्रपंच में पड़ने की कोई आवश्यकता नहीं। हमने उनको 'मिश्रमान' का रहस्य स्पष्टतया समझा दिया कि सूर्यसिद्धान्त और मकरन्द के ग्रह उज्जयिनी की मध्यम मध्यरात्रि (यानी L.M.T. से घं. २४ यानी ० बजे) के सिद्ध होते हैं अर्थात् उन ग्रहों में देशान्तर-संस्कार न करने से वे सदैव स्टैं. टा. से घं. २४ मि. २७ बजे के स्पष्ट होते हैं। अतः जातक के जन्म के स्टैं. टा. से उक्त घं २४ मि. २७ के अन्तर तुल्य काल का ही चालन काशी के सूर्यसिद्धान्तीय एवं मकरन्दीय पचाङ्गों के ग्रहस्पष्ट में देने से वे शुद्धतया जन्मकालिक स्पष्ट हो जायेंगे और यदि कुण्डली में घटी पलात्मक मिश्रमान लिखने का ही शौक हो तो वह भी स्टैं. टा. के द्वारा बड़ी सरलता से बन जायेगा। जातक के जन्म-स्थानीय सूर्योदय के स्टैं. टा. के घं. मि. को उक्त घ. २४ मि. २७ में घटाकर शेष को ढाई गुना कर लें; बस, घटयादि मिश्रमान बन जायेगा। जैसे, इस उदाहरण में घं. २४ मि. २७ में लखनऊ के सूर्योदय का स्टैं. टा. ६ घं. मि. १९ घटाया और शेष घं. १८ मि. ८ को ढाई गुना किया तो ४५ घ. २० प. लखनऊ में उस दिन का मिश्रमान बन गया। देखिए, कितना स्पष्ट सीधा, सहज मार्ग है। आशा है, सुविज्ञ ज्योतिर्विद् इसका अनुगमन कर शुद्ध, यथार्थ गणित-फलित-ज्योतिष के अभ्युत्थान एवं प्रचार में सहायक होंगे।

प्रत्येक अंग्रेजी तारीख का स्टैं. टा. से घ. ५ मि. ३० बजे की सूर्यक्रांति, होरा-गति तथा बेलान्तर †. होरा-गति

ता.	जनवरी				फरवरी			
	सूर्य-क्रांति	होरा गति	बेलांतर मि.	हो. ग. से.	सूर्य-क्रांति	होरा गति	बेलांतर मि.	हो. ग. से.
१	-२३ ०३ ·४	०·२०	+ ३·३	१·१८	-१७ १६′ ७	०′·७१	+१३·५	०·३४
२	-२२ ५८ ·५	०·२२	+ ३·७	१·१७	-१६ ५९ ·७	०·७२	+१३·७	०·३०
३	-२२ ५३ ·२	०·२४	+ ४·२	१·१५	-१६ ४२ ·३	०·७३	+१३·८	०·२७
४	-२२ ४७ ·४	०·२६	+ ४·६	१·१३	-१६ २४ ·७	०·७५	+१३·९	०·२३
५	-२२ ४१ ·१	०·२८	+ ५·१	१·१२	-१६ ०६ ·८	०·७६	+१४·०	०·२०
६	-२२ ३४ ·४	०·३०	+ ५·६	१·१०	-१५ ४८ ·६	०·७७	+१४·१	०·१७
७	-२२ २७ ·२	०·३१	+ ६·०	१·०८	-१५ ३० ·१	०·७८	+१४·२	०·१३
८	-२२ १९ ·६	०·३३	+ ६·४	१·०६	-१५ ११ ·४	०·७९	+१४·२	०·१०
९	-२२ ११ ·६	०·३५	+ ६·९	१·०४	-१४ ५२ ·४	०·८०	+१४·३	०·०७
१०	-२२ ०३ ·१	०·३७	+ ७·३	१·०१	-१४ ३३ ·२	०·८१	+१४·३	०·०४
११	-२१ ५४ ·२	०·३८	+ ७·७	०·९९	-१४ १३ ·७	०·८२	+१४·३	०·०१
१२	-२१ ४४ ·९	०·४०	+ ८·१	०·९७	-१३ ५४ ·०	०·८३	+१४·३	०·०२
१३	-२१ ३५ ·१	०·४२	+ ८·५	०·९४	-१३ ३४ ·०	०·८४	+१४·३	०·०६
१४	-२१ २४ ·९	०·४४	+ ८·९	०·९१	-१३ १३ ·९	०·८५	+१४·३	०·०९
१५	-२१ १४ ·३	०·४६	+ ९·२	०·८९	-१२ ५३ ·५	०·८५	+१४·२	०·१२
१६	-२१ ०२ ·३	०·४७	+ ९·६	०·८६	-१२ ३२ ·९	०·८७	+१४·२	०·१५
१७	-२० ५२ ·०	०·४९	+ ९·९	०·८३	-१२ १२ ·१	०·८८	+१४·१	०·१८
१८	-२० ४० ·२	०·५०	+१०·२	०·८०	-११ ५१ ·२	०·८८	+१४·१	०·२०
१९	-२० २८ ·०	०·५२	+१०·६	०·७७	-११ ३० ·०	०·८९	+१४·०	०·२३
२०	-२० १५ ·४	०·५४	+१०·९	०·७४	-११ ०८ ·७	०·९०	+१३·९	०·२६
२१	-२० ०२ ·५	०·५५	+११·२	०·७१	-१० ४७ ·०	०·९०	+१३·८	०·२९
२२	-१९ ४९ ·२	०·५७	+११·४	०·६८	-१० २५ ·५	०·९१	+१३·७	०·३१
२३	-१९ ३५ ·५	०·५९	+११·७	०·६५	-१० ०३ ·६	०·९२	+१३·५	०·३४
२४	-१९ २१ ·४	०·६०	+१२·०	०·६१	- ९ ४१ ·७	०·९२	+१३·४	०·३७
२५	-१९ ०७ ·०	०·६१	+१२·२	०·५८	- ९ १९ ·५	०·९३	+१३·२	०·३९
२६	-१८ ५२ ·३	०·६३	+१२·४	०·५५	- ८ ५७ ·२	०·९४	+१३·१	०·४२
२७	-१८ ३७ ·२	०·६५	+१२·७	०·५१	- ८ ३४ ·८	०·९४	+१२·९	०·४४
२८	-१८ २१ ·८	०·६५	+१२·९	०·४८	- ८ १२ ·९	०·९५	+१२·७	०·४६
२९	-१८ ०६ ·०	०·६७	+१३·०	०·४४	★-७ ४९ ·६	०·९५	★-१२·७	०·४७
३०	-१७ ४९ ·९	०·६८	+१३·२	०·४१	★प्लुत वर्ष		★प्लुत वर्ष	
३१	-१७ ३ ·४	०·७०	+१३·४	०·३७	(लीप ईयर) में		(लीप ईयर) में	

† (सूर्यघड़ी के) स्पष्टकाल से (यंत्रघडीके) मध्यमकाल का अंतर

सूर्यक्रांति और बेलान्तर-कोष्ठक—इन कोष्ठकों में प्रत्येक अंग्रेजी तारीख के लिये प्रातः ५॥ बजे की सूर्य-क्रांति अंश, कला और उसके दशमांश में दी गयी है जिसके आगे + या ऋण-चिह्न भी लगा है। उत्तर-क्रांति के लिये धन चिह्न और दक्षिण-क्रांति के लिये ऋण चिह्न लगाया गया है। बगल में क्रांति की होरा-गति कला और उसके शतांश में दी गयी है। अग्रिम खाने में बेलांतर मि. और उसके दशमांश में दिया गया है एवं बेलांतर की होरा-गति सेकेण्ड और उसके शतांश में गयी है। किसी दिन क्रांति और बेलांतर १ घंटे में जितना घटते या बढ़ते हैं, वही उनकी होरा-गति कही जाती है जिसका संयोजन कोष्ठक में इस तौर पर किया गया है कि सन् १९७० ई० से पीछे और आगे के अनेकश: वर्षों के लिये सूर्योदयादि-गणित में यह कोष्ठक पर्याप्त सूक्ष्मत पूर्वक काम देगा। क्रांति और बेलांतर को उनकी होरागति के सहारे सूर्योदयास्त, मध्याह्न या अन्य किसी भी क्षण के लिये आप (ग्रहस्पष्ट की भांति) स्पष्ट कर उनका सूक्ष्म मान ज्ञात कर सकते तथा उनके द्वारा अभीष्ट दिन के सूर्योदयास्त आदि का यथेष्ट सही समय सिद्ध कर सकते हैं। प्रतिदिन के बेलान्तर के साथ जो धन या ऋण का चिह्न लगाया गया है, वह सूर्यघड़ी के (स्पष्ट) काल को यंत्रघड़ी के (मध्यम) काल में बदलने के लिये है। मध्यम काल से स्पष्ट काल बनाने के लिये धन चिह्न को ऋणचिह्न और ऋण को धन चिह्नके रूपमें प्रयोग करना चाहिये।

❀ प्रत्येक अंग्रेजी तारीख को स्टैं॰ टा॰ से घं॰ ५ मि॰ ३० बजे की सूर्य-क्रांति, होरा-गति तथा बेलांतर ‡, होरा-गति ❀

ता.	मार्च सूर्य-क्रांति	मार्च होरा गति	मार्च बेलांतर मि.	मार्च हो. ग. से.	अप्रैल सूर्य-क्रांति	अप्रैल होरा गति	अप्रैल बेलांतर मि.	अप्रैल हो. ग. से.	मई सूर्य-क्रांति	मई होरा गति	मई बेलांतर मि.	मई हो. ग. से.
१	−७°४९′.६	०′.९५	+१२.५	०.४८	+ ४°१७′.७	०′.९७	+ ४.१	०.७५	+१४°५३′.०	०′.७७	− २.८	०.३१
२	−७ २६.८	०.९५	+१२.४	०.५१	+ ४ ४०.९	०.९६	+ ३.८	०.७५	+१५ ११.२	०.७६	− ३.०	०.२९
३	−७ ०३.९	०.९६	+१२.२	०.५३	+ ५ ०३.९	०.९६	+ ३.५	०.७४	+१५ २९.१	०.७५	− ३.१	०.२७
४	−६ ४०.९	०.९६	+११.९	०.५५	+ ५ २६.९	०.९६	+ ३.२	०.७४	+१५ ४६.८	०.७४	− ३.२	०.२५
५	−६ १७.८	०.९६	+११.७	०.५७	+ ५ ४९.८	०.९५	+ २.९	०.७३	+१६ ०४.३	०.७२	− ३.३	०.२२
६	−५ ५४.६	०.९७	+११.५	०.५८	+ ६ १२.६	०.९५	+ २.७	०.७२	+१६ २१.४	०.७२	− ३.४	०.२०
७	−५ ३१.४	०.९७	+११.३	०.६०	+ ६ ३५.३	०.९५	+ २.४	०.७१	+१६ ३८.३	०.७०	− ३.५	०.१८
८	−५ ८.०	०.९७	+११.०	०.६२	+ ६ ५७.९	०.९४	+ २.१	०.७०	+१६ ५४.९	०.६९	− ३.५	०.१५
९	−४ ४४.६	०.९७	+१०.८	०.६३	+ ७ २०.५	०.९४	+ १.८	०.६९	+१७ ११.३	०.६८	− ३.६	०.१३
१०	−४ २१.२	०.९८	+१०.५	०.६५	+ ७ ४२.७	०.९३	+ १.५	०.६८	+१७ २७.३	०.६७	− ३.६	०.१०
११	−३ ५७.७	०.९८	+१०.३	०.६६	+ ८ ०४.९	०.९३	+ १.३	०.६७	+१७ ४३.०	०.६६	− ३.७	०.०८
१२	−३ ३४.०	०.९८	+१०.०	०.६७	+ ८ २७.०	०.९२	+ १.०	०.६५	+१७ ५८.५	०.६४	− ३.७	०.०५
१३	−३ १०.५	०.९८	+ ९.८	०.६८	+ ८ ४८.९	०.९१	+ ०.७	०.६४	+१८ १३.६	०.६३	− ३.७	०.०३
१४	−२ ४६.८	०.९८	+ ९.५	०.६९	+ ९ १०.७	०.९१	+ ०.५	०.६३	+१८ २८.५	०.६२	− ३.७	०.००
१५	−२ २३.२	०.९९	+ ९.२	०.७०	+ ९ ३२.३	०.९०	+ ०.२	०.६१	+१८ ४३.०	०.६१	− ३.७	०.०२
१६	−१ ५९.५	०.९९	+ ८.९	०.७१	+ ९ ५३.८	०.९०	− ०.०	०.६०	+१८ ५७.२	०.५९	− ३.७	०.०४
१७	−१ ३५.८	०.९९	+ ८.६	०.७२	+१० १५.१	०.८९	− ०.२	०.५८	+१९ ११.१	०.५८	− ३.७	०.०७
१८	−१ १२.०	०.९९	+ ८.३	०.७३	+१० ३६.२	०.८८	− ०.५	०.५६	+१९ २४.७	०.५७	− ३.७	०.०९
१९	−० ४८.४	०.९९	+ ८.०	०.७३	+१० ५७.२	०.८७	− ०.७	०.५५	+१९ ३७.९	०.५५	− ३.६	०.१२
२०	−० २४.६	०.९९	+ ७.८	०.७४	+११ १७.९	०.८७	− ०.९	०.५३	+१९ ५०.८	०.५४	− ३.६	०.१४
२१	−० ०.९	०.९९	+ ७.५	०.७४	+११ ३८.५	०.८६	− १.१	०.५१	+२० ०३.३	०.५२	− ३.५	०.१६
२२	+० २२.८	०.९९	+ ७.२	०.७५	+११ ५८.९	०.८५	− १.३	०.४९	+२० १५.६	०.५१	− ३.५	०.१८
२३	+० ४६.४	०.९९	+ ६.९	०.७५	+१२ १९.१	०.८४	− १.५	०.४७	+२० २७.४	०.५०	− ३.४	०.२०
२४	+१ १०.०	०.९९	+ ६.६	०.७५	+१२ ३९.१	०.८३	− १.७	०.४६	+२० ३८.९	०.४८	− ३.३	०.२२
२५	+१ ३३.७	०.९८	+ ६.३	०.७६	+१२ ५८.९	०.८२	− १.९	०.४४	+२० ५०.१	०.४७	− ३.२	०.२४
२६	+१ ५७.३	०.९८	+ ५.९	०.७६	+१३ १८.५	०.८२	− २.१	०.४२	+२१ ००.९	०.४५	− ३.१	०.२६
२७	+२ २०.८	०.९८	+ ५.७	०.७६	+१३ ३७.८	०.८१	− २.३	०.४०	+२१ ११.४	०.४४	− ३.०	०.२८
२८	+२ ४४.३	०.९८	+ ५.३	०.७६	+१३ ५७.०	०.८०	− २.४	०.३८	+२१ २१.५	०.४२	− ३.९	०.३०
२९	+३ ०७.७	०.९७	+ ५.०	०.७६	+१४ १५.९	०.७९	− २.६	०.३६	+२१ ३१.२	०.४०	− २.८	०.३२
३०	+३ ३१.१	०.९७	+ ४.७	०.७६	+१४ ३४.६	०.७८	− २.७	०.३३	+२१ ४०.६	०.३९	− २.७	०.३४
३१	+३ ५४.४	०.९७	+ ४.४	०.७५	× ×	×	×	×	+२१ ४९.५	०.३८	− २.५	०.३६

ता.	जून सूर्य-क्रांति	जून होरा गति	जून बेलांतर मि.	जून हो. ग. से.	जुलाई सूर्य-क्रांति	जुलाई होरा गति	जुलाई बेलांतर मि.	जुलाई हो. ग. से.
१	+२१°५८′.१	०′.३६	− २.४	०.३७	+२३°०९′.४	०′.१५	+ ३.६	०.४८
२	+२२ ०६.३	०.३४	− २.२	०.३९	+२३ ०५.४	०.१७	+ ३.८	०.४७
३	+२२ १४.२	०.३३	− २.१	०.४०	+२३ ०१.०	०.१८	+ ४.०	०.४६
४	+२२ २१.६	०.३१	− १.९	०.४२	+२२ ५६.२	०.२०	+ ४.१	०.४५
५	+२२ २८.६	०.३०	− १.८	०.४३	+२२ ५१.१	०.२१	+ ४.३	०.४३
६	+२२ ३५.३	०.२७	− १.६	०.४५	+२२ ४५.५	०.२३	+ ४.५	०.४२
७	+२२ ४१.६	०.२६	− १.४	०.४६	+२२ ३९.५	०.२५	+ ४.७	०.४१
८	+२२ ४७.४	०.२५	− १.२	०.४७	+२२ ३३.१	०.२६	+ ४.८	०.३९
९	+२२ ५२.९	०.२३	− १.०	०.४८	+२२ २६.४	०.२८	+ ५.०	०.३७
१०	+२२ ५७.९	०.२१	− ०.८	०.४९	+२२ १९.२	०.३०	+ ५.१	०.३६
११	+२३ ०२.६	०.२०	− ०.६	०.५०	+२२ ११.७	०.३१	+ ५.३	०.३४
१२	+२३ ०६.८	०.१७	− ०.४	०.५१	+२२ ०३.८	०.३३	+ ५.४	०.३२
१३	+२३ १०.७	०.१६	− ०.२	०.५२	+२१ ५५.५	०.३४	+ ५.५	०.३०
१४	+२३ १४.१	०.१४	− ०.०	०.५३	+२१ ४६.९	०.३६	+ ५.७	०.२८
१५	+२३ १७.१	०.१३	+ ०.२	०.५४	+२१ ३७.८	०.३८	+ ५.८	०.२६
१६	+२३ १९.७	०.११	+ ०.४	०.५४	+२१ २८.४	०.३९	+ ५.९	०.२४
१७	+२३ २१.९	०.०९	+ ०.६	०.५४	+२१ १८.७	०.४०	+ ६.०	०.२२
१८	+२३ २३.७	०.०७	+ ०.८	०.५५	+२१ ०८.६	०.४२	+ ६.१	०.२०
१९	+२३ २५.०	०.०६	+ १.०	०.५५	+२० ५८.१	०.४३	+ ६.१	०.१८
२०	+२३ २६.०	०.०४	+ १.३	०.५५	+२० ४७.२	०.४५	+ ६.२	०.१५
२१	+२३ २६.६	०.०२	+ १.५	०.५५	+२० ३६.०	०.४६	+ ६.३	०.१३
२२	+२३ २६.७	०.००	+ १.७	०.५५	+२० २४.५	०.४८	+ ६.३	०.११
२३	+२३ २६.४	०.०१	+ १.९	०.५४	+२० १२.७	०.४९	+ ६.३	०.०८
२४	+२३ २५.७	०.०२	+ २.१	०.५४	+२० ००.५	०.५१	+ ६.४	०.०६
२५	+२३ २४ ६	०.०५	+ २.३	०.५३	+१९ ४७.९	०.५२	+ ६.४	०.०३
२६	+२३ २३.१	०.०६	+ २.५	०.५३	+१९ ३५.०	०.५४	+ ६.४	०.०१
२७	+२३ २१.२	०.०८	+ २.८	०.५२	+१९ २१.८	०.५५	+ ६.४	०.०२
२८	+२३ १८.८	०.१०	+ ३.०	०.५१	+१९ ०८.३	०.५६	+ ६.४	०.०५
२९	+२३ १६.१	०.११	+ ३.२	०.५०	+१८ ५४.४	०.५७	+ ६.४	०.०७
३०	+२३ १२.९	०.१३	+ ३.४	०.४९	+१८ ४०.३	०.५९	+ ६.४	०.१०
३१	× ×	×	×	×	+१८ २५.८	०.६०	+ ६.३	०.१२

‡ (सूर्य-घड़ी के) स्पष्टकाल से (यंत्र-घड़ी के) मध्यम काल का अंतर

❀ प्रत्येक अंग्रेजी तारीख को स्टैं. टा. से घं ५ मि. ३० बजे की सूर्य-क्रांति, होरा-गति तथा बेलांतर ‡, होरा-गति ❀

ता.	अगस्त सूर्य-क्रांति	अगस्त होरा गति	अगस्त बेलांतर मि.	अगस्त हो. ग. से.	सितम्बर सूर्य-क्रांति	सितम्बर होरा गति	सितम्बर बेलांत. मि.	सितम्बर हो. ग. से.	अक्टूबर सूर्य-क्रांति	अक्टूबर होरा गति	अक्टूबर बेलांतर मि.	अक्टूबर हो. ग. से.
१	+१८°११'.१	०'.६१	+ ६.३	०.१५	+ ८°३१'.०	०'.९०	+०.२	०.७९	− २°५६'.३	०'.९७	−१०.१	०.८१
२	+१७ ५६.०	०.६३	+ ६.२	०.१७	+ ८ ०९.२	०.९०	−०.१	०.८०	− ३ १९.६	०.९७	−१०.४	०.८०
३	+१७ ४०.६	०.६४	+ ६.२	०.२०	+ ७ ४७.४	०.९१	−०.४	०.८१	− ३ ४२.८	०.९७	−१०.७	०.७८
४	+१७ २४.९	०.६५	+ ६.१	०.२२	+ ७ २५.३	०.९१	−०.७	०.८२	− ४ ०६.०	०.९७	−११.०	०.७७
५	+१७ ०९.१	०.६७	+ ६.०	०.२५	+ ७ ०३.२	०.९३	−१.४	०.८३	− ४ २९.२	०.९६	−११.३	०.७५
६	+१६ ५२.८	०.६७	+ ५.९	०.२७	+ ६ ४१.०	०.९३	−१.४	०.८४	− ४ ५२.३	०.९६	−११.६	०.७४
७	+१६ ३६.४	०.६९	+ ५.८	०.३०	+ ६ १८.६	०.९३	−१.७	०.८५	− ५ १५.४	०.९६	−११.९	०.७२
८	+१६ १९.३	०.७०	+ ५.७	०.३२	+ ५ ५६.२	०.९४	−२.१	०.८६	− ५ ३८.४	०.९६	−१२.२	०.७०
९	+१६ ०२.६	०.७१	+ ५.६	०.३४	+ ५ ३३.६	०.९४	−२.४	०.८६	− ६ ०१.३	०.९५	−१२.५	०.६८
१०	+१५ ४५.४	०.७२	+ ५.४	०.३७	+ ५ ११.०	०.९५	−२.७	०.८७	− ६ २४.१	०.९५	−१२.८	०.६६
११	+१५ २७.९	०.७३	+ ५.३	०.३९	+ ४ ४८.२	०.९५	−३.१	०.८७	− ६ ४६.८	०.९५	−१३.०	०.६४
१२	+१५ १०.१	०.७४	+ ५.१	०.४१	+ ४ २५.४	०.९५	−३.४	०.८८	− ७ ०९.५	०.९५	−१३.३	०.६२
१३	+१४ ५२.१	०.७५	+ ४.९	०.४३	+ ४ ०२.६	०.९५	−३.८	०.८८	− ७ ३२.०	०.९४	−१३.५	०.६०
१४	+१४ ३३.९	०.७६	+ ४.८	०.४६	+ ३ ३९.६	०.९६	−४.१	०.८८	− ७ ५४.५	०.९४	−१३.८	०.५८
१५	+१४ १५.४	०.७७	+ ४.६	०.४८	+ ३ १६.६	०.९६	−४.५	०.८८	− ८ १६.८	०.९३	−१४.०	०.५६
१६	+१३ ५६.७	०.७८	+ ४.४	०.५०	+ २ ५३.५	०.९६	−४.९	०.८९	− ८ ३९.०	०.९३	−१४.२	०.५३
१७	+१३ ३७.८	०.७९	+ ४.२	०.५२	+ २ ३०.४	०.९७	−५.२	०.८९	− ९ ०१.१	०.९२	−१४.४	०.५१
१८	+१३ १८.७	०.८०	+ ४.०	०.५४	+ २ ०७.२	०.९७	−५.६	०.८९	− ९ २३.१	०.९२	−१४.७	०.४९
१९	+१२ ५९.३	०.८०	+ ३.८	०.५७	+ १ ४३.९	०.९७	−५.९	०.८९	− ९ ४४.९	०.९१	−१४.९	०.४६
२०	+१२ ३९.८	०.८२	+ ३.५	०.५९	+ १ २०.७	०.९७	−६.३	०.८९	−१० ०६.९	०.९०	−१५.०	०.४४
२१	+१२ २०.१	०.८२	+ ३.३	०.६१	+ ० ५७.४	०.९७	−६.७	०.८८	−१० २८.२	०.८९	−१५.२	०.४१
२२	+१२ ००.१	०.८३	+ ३.०	०.६३	+ ० ३४.१	०.९७	−७.०	०.८८	−१० ४९.६	०.८९	−१५.४	०.३८
२३	+११ ३९.९	०.८४	+ २.८	०.६५	+ ० १०.७	०.९७	−७.३	०.८८	−११ १०.८	०.८९	−१५.५	०.३५
२४	+११ १९.७	०.८५	+ २.५	०.६७	− ० १२.६	०.९८	−७.७	०.८७	−११ ३१.९	०.८८	−१५.७	०.३३
२५	+१० ५९.१	०.८६	+ २.३	०.६८	− ० ३६.०	०.९८	−८.१	०.८७	−११ ५२.८	०.८७	−१५.८	०.३०
२६	+१० ३८.५	०.८६	+ २.०	०.७०	− ० ५९.४	०.९८	−८.४	०.८६	−१२ १३.५	०.८५	−१५.९	०.२७
२७	+१० १७.६	०.८७	+ १.७	०.७२	− १ २२.८	०.९८	−८.७	०.८५	−१२ ३४.१	०.८५	−१६.०	०.२४
२८	+ ९ ५६.६	०.८८	+ १.४	०.७३	− १ ४६.२	०.९७	−९.१	०.८४	−१२ ५४.४	०.८५	−१६.१	०.२१
२९	+ ९ ३५.४	०.८८	+ १.१	०.७५	− २ ०९.६	०.९७	−९.४	०.८३	−१३ १४.५	०.८४	−१६.२	०.१७
३०	+ ९ १४.१	०.८९	+ ०.८	०.७६	− २ ३२.९	०.९७	−९.७	०.८२	−१३ ३४.५	०.८३	−१६.२	०.१४
३१	+ ८ ५२.६	०.९०	+ ०.५	०.७८	× ×	×	×	×	−१३ ५४.२	०.८२	−१६.३	०.११

ता.	नवम्बर सूर्य-क्रांति	नवम्बर होरा गति	नवम्बर बेलांतर मि.	नवम्बर हो. ग. से.	दिसम्बर सूर्य-क्रांति	दिसम्बर होरा गति	दिसम्बर बेलांतर मि.	दिसम्बर हो. ग. से.
१	−१४°१३'.७	०'.८१	−१६.३	०.०८	−२१°४२'.५	०'.४९	−११.२	०.९३
२	−१४ ३२.९	०.८०	−१६.४	०.०४	−२१ ५१.८	०.३९	−१०.८	०.९५
३	−१४ ५२.०	०.७९	−१६.४	०.०१	−२२ ००.८	०.३८	−१०.५	०.९८
४	−१५ १०.८	०.७८	−१६.४	०.०३	−२२ ०९.४	०.३५	−१०.१	१.००
५	−१५ २९.३	०.७७	−१६.४	०.०६	−२२ १७.५	०.३४	− ९.७	१.०३
६	−१५ ४७.६	०.७६	−१६.३	०.१०	−२२ २५.२	०.३२	− ९.२	१.०५
७	−१६ ०५.६	०.७५	−१६.३	०.१३	−२२ ३२.४	०.३०	− ८.८	१.०७
८	−१६ २३.४	०.७४	−१६.३	०.१७	−२२ ३९.२	०.२९	− ८.४	१.१०
९	−१६ ४०.८	०.७३	−१६.२	०.२१	−२२ ४५.६	०.२७	− ८.०	१.१२
१०	−१६ ५८.०	०.७२	−१६.१	०.२४	−२२ ५१.५	०.२५	− ७.५	१.१४
११	−१७ १४.९	०.७०	−१६.०	०.२८	−२२ ५७.०	०.२३	− ७.१	१.१५
१२	−१७ ३१.५	०.६९	−१५.९	०.३१	−२३ ०२.०	०.२१	− ६.६	१.१७
१३	−१७ ४७.८	०.६८	−१५.८	०.३५	−२३ ०६.५	०.१९	− ६.१	१.१८
१४	−१८ ०३.८	०.६७	−१५.६	०.३८	−२३ १०.६	०.१७	− ५.७	१.१९
१५	−१८ १९.५	०.६५	−१५.५	०.४२	−२३ १४.३	०.१५	− ५.२	१.२१
१६	−१८ ३४.८	०.६४	−१५.३	०.४५	−२३ १७.४	०.१३	− ४.७	१.२२
१७	−१८ ४९.९	०.६३	−१५.१	०.४९	−२३ २०.१	०.११	− ४.२	१.२२
१८	−१९ ०४.६	०.६१	−१५.०	०.५२	−२३ २२.४	०.१०	− ३.८	१.२३
१९	−१९ १८.९	०.६०	−१४.८	०.५५	−२३ २४.२	०.०७	− ३.२	१.२४
२०	−१९ ३२.९	०.५८	−१४.५	०.५९	−२३ २५.५	०.०६	− २.८	१.२४
२१	−१९ ४६.६	०.५७	−१४.३	०.६२	−२३ २६.३	०.०३	− २.३	१.२४
२२	−१९ ५९.९	०.५५	−१४.०	०.६५	−२३ २६.७	०.०२	− १.८	१.२४
२३	−२० १२.८	०.५४	−१३.८	०.६९	−२३ २६.६	०.००	− १.३	१.२४
२४	−२० २५.४	०.५२	−१३.५	०.७२	−२३ २६.०	०.०३	− ०.८	१.२४
२५	−२० ३७.६	०.५१	−१३.२	०.७५	−२३ २४.९	०.०४	− ०.३	१.२४
२६	−२० ४९.४	०.४९	−१२.९	०.७८	−२३ २३.४	०.०६	+ ०.२	१.२३
२७	−२१ ००.८	०.४८	−१२.६	०.८१	−२३ २१.४	०.०८	+ ०.७	१.२३
२८	−२१ ११.८	०.४६	−१२.३	०.८४	−२३ १९.०	०.१०	+ १.२	१.२२
२९	−२१ २२.४	०.४५	−११.९	०.८७	−२३ १६.०	०.१२	+ १.७	१.२१
३०	−२१ २३.७	०.४२	−११.६	०.९०	−२३ १२.७	०.१४	+ २.२	१.२१
३१	× ×	×	×	×	−२३ ०८.८	०.१६	+ २.७	१.१९

‡ (सूर्यघड़ी के) स्पष्ट काल से (यंत्रघड़ी के) मध्यम काल का अंतर

कला	क्रांत्यंश ०		१		२		३		४		५		कला	६		७		८		९		१०		कला
	मि.	से.	मि.	से.	मि.	से.	मि.	से.	मि.	से.	मि.	से.		मि.	से.	मि.	से.	मि.	से.	मि.	से.	मि.	से.	
१	०	१·८९	१	५५·३९	३	४८·९६	५	४२·६९	७	३६·६५	९	३०·९३	१	११	२५·५९	१३	२०·७३	१५	१६·४२	१७	१२·७५	१९	९·७९	१
२	०	३·७८	१	५७·२९	३	५०·८५	५	४४·५९	७	३८·५६	९	३२·८३	२	११	२७·५१	१३	२२·६५	१५	१८·३५	१७	१४·६९	१९	११·७४	२
३	०	५·६७	१	५९·१७	३	५२·७५	५	४६·४९	७	४०·४६	९	३४·७४	३	११	२९·४३	१३	२४·५८	१५	२०·२९	१७	१६·६३	१९	१३·७०	३
४	०	७·५७	२	१·०७	३	५४·६४	५	४८·३८	७	४२·३६	९	३६·६५	४	११	३१·३४	१३	२६·५०	१५	२२·२२	१७	१८·५८	१९	१५·६५	४
५	०	९·४६	२	२·९६	३	५६·५३	५	५०·२८	७	४४·२६	९	३८·५५	५	११	३३·२६	१३	२८·४२	१५	२४·१५	१७	२०·५२	१९	१७·६१	५
६	०	११·३५	२	४·८५	३	५८·४३	५	५२·१८	७	४६·१७	९	४०·४७	६	११	३५·१७	१३	३०·३५	१५	२६·०९	१७	२२·४७	१९	१९·५७	६
७	०	१३·२४	२	६·७५	४	०·३३	५	५४·०७	७	४८·०७	९	४२·३७	७	११	३७·०९	१३	३२·२७	१५	२८·०२	१७	२४·४१	१९	२१·५३	७
८	०	१५·१३	२	८·६३	४	२·२२	५	५५·९७	७	४९·९७	९	४४·२८	८	११	३९·०१	१३	३४·२०	१५	२९·९६	१७	२६·३६	१९	२३·४९	८
९	०	१७·०२	२	१०·५३	४	४·११	५	५७·८७	७	५१·८७	९	४६·१९	९	११	४०·९२	१३	३६·१२	१५	३१·८९	१७	२८·३१	१९	२५·४५	९
१०	०	१८·९१	२	१२·४२	४	६·०१	५	५९·७७	७	५३·७७	९	४८·१०	१०	११	४२·८३	१३	३८·०५	१५	३३·८३	१७	३०·२५	१९	२७·४१	१०
११	०	२०·८१	२	१४·३१	४	७·९०	६	१·६७	७	५५·६७	९	५०·०१	११	११	४४·७५	१३	३९·९७	१५	३५·७६	१७	३२·१९	१९	२९·३७	११
१२	०	२२·६९	२	१६·२१	४	९·७९	६	३·५७	७	५७·५८	९	५१·९२	१२	११	४६·६७	१३	४१·८९	१५	३७·६०	१७	३४·१४	१९	३१·३३	१२
१३	०	२४·५९	२	१८·०९	४	११·६९	६	५·४७	७	५९·४८	९	५३·८३	१३	११	४८·५८	१३	४३·८२	१५	३९·६३	१७	३६·०९	१९	३३·२९	१३
१४	०	२६·४८	२	१९·९९	४	१३·५९	६	७·३७	८	१·३९	९	५५·७३	१४	११	५०·५०	१३	४५·७५	१५	४१·५७	१७	३८·०३	१९	३५·२५	१४
१५	०	२८·३७	२	२१·८८	४	१५·४८	६	९·२७	८	३·२९	९	५७·६५	१५	११	५२·४३	१३	४७·६७	१५	४३·५०	१७	३९·९८	१९	३७·२१	१५
१६	०	३०·२६	२	२३·७७	४	१७·३७	६	११·१६	८	५·१९	९	५९·५५	१६	११	५४·३३	१३	४९·६०	१५	४५·४४	१७	४१·९३	१९	३९·१७	१६
१७	०	३२·१५	२	२५·६७	४	१९·२७	६	१३·०६	८	७·०९	१०	१·४७	१७	११	५६·२५	१३	५१·५२	१५	४७·३७	१७	४३·८७	१९	४१·१३	१७
१८	०	३४·०५	२	२७·५६	४	२१·१७	६	१४·९६	८	९·००	१०	३·३७	१८	११	५८·१७	१३	५३·४५	१५	४९·३१	१७	४५·८२	१९	४३·०९	१८
१९	०	३५·९३	२	२९·४५	४	२३·०६	६	१६·८५	८	१०·९०	१०	५·२९	१९	१२	०·०८	१३	५५·३७	१५	५१·२४	१७	४७·७७	१९	४५·०५	१९
२०	०	३७·८३	२	३१·३४	४	२४·९५	६	१८·७५	८	१२·८१	१०	७·१९	२०	१२	२·००	१३	५७·३०	१५	५३·१८	१७	४९·७२	१९	४७·०१	२०
२१	०	३९·७२	२	३३·२३	४	२६·८५	६	२०·६५	८	१४·७१	१०	९·११	२१	१२	३·९२	१३	५९·२३	१५	५५·११	१७	५१·६७	१९	४८·९७	२१
२२	०	४१·६१	२	३५·१३	४	२८·७५	६	२२·५५	८	१६·६१	१०	११·०१	२२	१२	५·८३	१४	१·१५	१५	५७·०५	१७	५३·६२	१९	५०·९४	२२
२३	०	४३·५०	२	३७·०२	४	३०·६४	६	२४·४५	८	१८·५२	१०	१२·९३	२३	१२	७·७५	१४	३·०८	१५	५८·९९	१७	५५·५७	१९	५२·९०	२३
२४	०	४५·३९	२	३८·९१	४	३२·५३	६	२६·३५	८	२०·४२	१०	१४·८३	२४	१२	९·६७	१४	५·०१	१६	०·९३	१७	५७·५१	१९	५४·८६	२४
२५	०	४७·२९	२	४०·८०	४	३४·४३	६	२८·२५	८	२२·३३	१०	१६·७५	२५	१२	११·५९	१४	६·९३	१६	२·८७	१७	५९·४६	१९	५६·८३	२५
२६	०	४९·१७	२	४२·६९	४	३६·३३	६	३०·१५	८	२४·२३	१०	१८·६५	२६	१२	१३·५१	१४	८·८६	१६	४·८०	१८	१·४१	१९	५८·७९	२६
२७	०	५१·०७	२	४४·५९	४	३८·२२	६	३२·०५	८	२६·१३	१०	२०·५७	२७	१२	१५·४३	१४	१०·७९	१६	६·७४	१८	३·३६	२०	०·७५	२७
२८	०	५२·९६	२	४६·४८	४	४०·११	६	३३·९४	८	२८·०४	१०	२२·४७	२८	१२	१७·३४	१४	१२·७१	१६	८·६८	१८	५·३१	२०	२·७१	२८
२९	०	५४·८५	२	४८·३७	४	४२·०१	६	३५·८४	८	२९·९४	१०	२४·३९	२९	१२	१९·२६	१४	१४·६५	१६	१०·६१	१८	७·२६	२०	४·६८	२९
३०	०	५६·७४	२	५०·२७	४	४३·९१	६	३७·७४	८	३१·८४	१०	२६·३०	३०	१२	२१·१८	१४	१६·५७	१६	१२·५५	१८	९·२२	२०	६·६४	३०
३१	०	५८·६३	२	५२·१६	४	४५·८०	६	३९·६४	८	३३·७५	१०	२८·२१	३१	१२	२३·१०	१४	१८·५०	१६	१४·४९	१८	११·१७	२०	८·६१	३१
३२	१	०·५३	२	५४·०५	४	४७·७०	६	४१·५४	८	३५·६५	१०	३०·१२	३२	१२	२५·०२	१४	२०·४३	१६	१६·४३	१८	१३·१२	२०	१०·५८	३२
३३	१	२·४१	२	५५·९५	४	४९·५९	६	४३·४४	८	३७·५६	१०	३२·०३	३३	१२	२६·९३	१४	२२·३६	१६	१८·३७	१८	१५·०७	२०	१२·५३	३३
३४	१	४·३१	२	५७·८४	४	५१·४९	६	४५·३४	८	३९·४७	१०	३३·९५	३४	१२	२८·८५	१४	२४·२९	१६	२०·३१	१८	१७·०३	२०	१४·५०	३४
३५	१	६·२०	२	५९·७३	४	५३·३९	६	४७·२४	८	४१·३७	१०	३५·८५	३५	१२	३०·७७	१४	२६·२१	१६	२२·२५	१८	१८·९७	२०	१६·४६	३५
३६	१	८·०९	३	१·६३	४	५५·२८	६	४९·१४	८	४३·२७	१०	३७·७७	३६	१२	३२·६९	१४	२८·१५	१६	२४·१९	१८	२०·९३	२०	१८·४३	३६
३७	१	९·९८	३	३·५२	४	५७·१८	६	५१·०४	८	४५·१८	१०	३९·६८	३७	१२	३४·६१	१४	३०·०७	१६	२६·१३	१८	२२·८८	२०	२०·३९	३७
३८	१	११·८७	३	५·४१	४	५९·०७	६	५२·९४	८	४७·०९	१०	४१·५९	३८	१२	३६·५३	१४	३२·००	१६	२८·०७	१८	२४·८३	२०	२२·३६	३८
३९	१	१३·७७	३	७·३१	५	०·९७	६	५४·८४	८	४८·९९	१०	४३·५०	३९	१२	३८·४५	१४	३३·९३	१६	३०·०१	१८	२६·७८	२०	२४·३३	३९
४०	१	१५·६६	३	९·२०	५	२·२८	६	५६·७४	८	५०·८९	१०	४५·४१	४०	१२	४०·३७	१४	३५·८६	१६	३१·९५	१८	२८·७३	२०	२६·२९	४०
४१	१	१७·५५	३	११·०९	५	४·७६	६	५८·६४	८	५२·८०	१०	४७·३३	४१	१२	४२·२९	१४	३७·०९	१६	३३·८९	१८	३०·६९	२०	२८·२६	४१
४२	१	१९·४५	३	१२·९९	५	६·६६	७	०·५४	८	५४·७१	१०	४९·२४	४२	१२	४४·२१	१४	३९·०२	१६	३५·८३	१८	३२·६४	२०	३०·२३	४२
४३	१	२१·३३	३	१४·८८	५	८·५५	७	२·४४	८	५६·६१	१०	५१·१५	४३	१२	४६·१३	१४	४१·६५	१६	३७·७७	१८	३४·५९	२०	३२·१९	४३
४४	१	२३·२३	३	१६·७७	५	१०·४५	७	४·३४	८	५८·५१	१०	५३·०६	४४	१२	४८·०५	१४	४३·५८	१६	३९·७२	१८	३६·५५	२०	३४·१६	४४
४५	१	२५·१२	३	१८·६७	५	१२·३५	७	६·२४	९	०·४२	१०	५४·९०	४५	१२	४९·९७	१४	४५·५१	१६	४१·६६	१८	३८·५०	२०	३६·१३	४५
४६	१	२७·०१	३	२०·५६	५	१४·२५	७	८·१४	९	२·३३	१०	५६·८९	४६	१२	५१·८९	१४	४७·४४	१६	४३·६०	१८	४०·४५	२०	३८·०९	४६
४७	१	२८·९१	३	२२·४५	५	१६·१४	७	१०·०४	९	४·२३	१०	५८·८०	४७	१२	५३·८२	१४	४९·३७	१६	४५·५४	१८	४२·४१	२०	४०·०६	४७
४८	१	३०·७९	३	२४·३५	५	१८·०३	७	११·९४	९	६·१४	११	०·७१	४८	१२	५५·७४	१४	५१·३०	१६	४७·४९	१८	४४·३६	२०	४२·०३	४८
४९	१	३२·६९	३	२६·२४	५	१९·९३	७	१३·८४	९	८·०५	११	२·६३	४९	१२	५७·६६	१४	५३·२३	१६	४९·४३	१८	४६·३१	२०	४४·००	४९
५०	१	३४·५८	३	२८·१३	५	२१·८३	७	१५·७४	९	९·९५	११	४·५४	५०	१२	५९·५८	१४	५५·१६	१६	५१·३७	१८	४८·२७	२०	४५·९७	५०
५१	१	३६·४७	३	३०·०३	५	२३·७२	७	१७·६४	९	११·८६	११	६·४५	५१	१३	१·५०	१४	५७·०९	१६	५३·३१	१८	५०·२२	२०	४७·९३	५१
५२	१	३८·३७	३	३१·९२	५	२५·६२	७	१९·५४	९	१३·७७	११	८·३७	५२	१३	३·४३	१४	५९·०२	१६	५५·२५	१८	५२·१७	२०	४९·९१	५२
५३	१	४०·२७	३	३३·८१	५	२७·५२	७	२१·४४	९	१५·६७	११	१०·२८	५३	१३	५·३५	१५	०·९५	१६	५७·१९	१८	५४·१३	२०	५१·८७	५३
५४	१	४२·१५	३	३५·७२	५	२९·४१	७	२३·३५	९	१७·५८	११	१२·१९	५४	१३	७·२७	१५	२·८९	१६	५९·१४	१८	५६·०९	२०	५३·८५	५४
५५	१	४४·०४	३	३७·६०	५	३१·३१	७	२५·२५	९	१९·४९	११	१४·११	५५	१३	९·१९	१५	४·८२	१७	१·०८	१८	५८·०४	२०	५५·८१	५५
५६	१	४५·९३	३	३९·४९	५	३३·२१	७	२७·१५	९	२१·३९	११	१६·०२	५६	१३	११·११	१५	६·७५	१७	३·०३	१९	०·००	२०	५७·७९	५६
५७	१	४७·८३	३	४१·३९	५	३५·११	७	२९·०५	९	२३·३०	११	१७·९३	५७	१३	१३·०३	१५	८·६९	१७	४·९७	१९	१·९५	२०	५९·७५	५७
५८	१	४९·७३	३	४३·२८	५	३७·०८	७	३०·९५	९	२५·२१	११	१९·८५	५८	१३	१४·९६	१५	१०·६२	१७	६·९१	१९	३·९१	२१	१·७३	५८
५९	१	५१·६१	३	४५·१७	५	३८·९०	७	३२·८५	९	२७·११	११	२१·७७	५९	१३	१६·८८	१५	१२·५५	१७	८·८५	१९	५·८७	२१	३·६९	५९
६०	१	५३·५०	३	४७·०७	५	४०·७९	७	३४·७५	९	२९·०२	११	२३·६८	६०	१३	१८·८१	१५	१४·४९	१७	१०·८०	१९	७·८३	२१	५·६७	६०

कला	क्रांत्यंश ११		१२		१३		१४		१५		१६		कला	१७		१८		१९		२०		२१		कला
	मि.	से.	मि.	से.	मि.	से.	मि.	से.	मि.	से.	मि.	से.		मि.	से.	मि.	से.	मि.	से.	मि.	से.	मि.	से.	
१	२१	७·६४	२३	६·३९	२५	६·१३	२७	६·९५	२९	८·९७	३१	१२·२७	१	३३	१६·९७	३५	२३·१७	३७	३१·०१	३९	४०·५९	४१	५२·०४	१
२	२१	९·६१	२३	८·३७	२५	८·१३	२७	८·९८	२९	११·०१	३१	१४·३४	२	३३	१९·०६	३५	२५·२९	३७	३३·१५	३९	४२·७६	४१	५४·२५	२
३	२१	११·५८	२३	१०·३६	२५	१०·१५	२७	११·०१	२९	१३·०६	३१	१६·४१	३	३३	२१·१५	३५	२७·४१	३७	३५·३०	३९	४४·९४	४१	५६·४६	३
४	२१	१३·५५	२३	१२·३५	२५	१२·१५	२७	१३·०३	२९	१५·११	३१	१८·४७	४	३३	२३·२५	३५	२९·५३	३७	३७·४५	३९	४७·११	४१	५८·६७	४
५	२१	१५·५३	२३	१४·३४	२५	१४·१५	२७	१५·०५	२९	१७·१५	३१	२०·५४	५	३३	२५·३४	३५	३१·६५	३७	३९·५९	३९	४९·२९	४२	०·८७	५
६	२१	१७·५०	२३	१६·३३	२५	१६·१५	२७	१७·०८	२९	१९·१९	३१	२२·६१	६	३३	२७·४३	३५	३३·७७	३७	४१·७४	३९	५१·४७	४२	३·०९	६
७	२१	१९·४७	२३	१८·३१	२५	१८·१६	२७	१९·१०	२९	२१·२४	३१	२४·६८	७	३३	२९·५२	३५	३५·८९	३७	४३·८९	३९	५३·६५	४२	५·२९	७
८	२१	२१·४५	२३	२०·३१	२५	२०·१७	२७	२१·१३	२९	२३·२९	३१	२६·७५	८	३३	३१·६१	३५	३८·०१	३७	४६·०३	३९	५५·८३	४२	७·५१	८
९	२१	२३·४२	२३	२२·२९	२५	२२·१७	२७	२३·१५	२९	२५·३३	३१	२८·८२	९	३३	३३·७१	३५	४०·१३	३७	४८·१९	३९	५८·०१	४२	९·७२	९
१०	२१	२५·३९	२३	२४·२९	२५	२४·१८	२७	२५·१८	२९	२७·३८	३१	३०·८९	१०	३३	३५·८१	३५	४२·२५	३७	५०·३३	४०	०·१८	४२	११·९३	१०
११	२१	२७·३७	२३	२६·२७	२५	२६·१९	२७	२७·२१	२९	२९·४३	३१	३२·९६	११	३३	३७·९०	३५	४४·३७	३७	५२·४८	४०	२·३६	४२	१४·१५	११
१२	२१	२९·३४	२३	२८·२७	२५	२८·१९	२७	२९·२३	२९	३१·४७	३१	३५·०३	१२	३३	३९·९९	३५	४६·४९	३७	५४·६३	४०	४·५४	४२	१६·३६	१२
१३	२१	३१·३१	२३	३०·२६	२५	३०·२०	२७	३१·२६	२९	३३·५३	३१	३७·१०	१३	३३	४२·०९	३५	४८·६१	३७	५६·७८	४०	६·७२	४२	१८·५७	१३
१४	२१	३३·२९	२३	३२·२५	२५	३२·२१	२७	३३·२९	२९	३५·५७	३१	३९·१७	१४	३३	४४·१९	३५	५०·७३	३७	५८·९३	४०	८·९०	४२	२०·७९	१४
१५	२१	३५·२७	२३	३४·२४	२५	३४·२२	२७	३५·३१	२९	३७·६२	३१	४१·२४	१५	३३	४६·२९	३५	५२·८५	३८	१·०९	४०	११·०९	४२	२३·००	१५
१६	२१	३७·२४	२३	३६·२३	२५	३६·२३	२७	३७·३५	२९	३९·६७	३१	४३·३१	१६	३३	४८·३८	३५	५४·९८	३८	३·२३	४०	१३·२७	४२	२५·२२	१६
१७	२१	३९·२१	२३	३८·२२	२५	३८·२४	२७	३९·३७	२९	४१·७२	३१	४५·३९	१७	३३	५०·४८	३५	५७·१०	३८	५·३९	४०	१५·४५	४२	२७·४३	१७
१८	२१	४१·१९	२३	४०·२१	२५	४०·२५	२७	४१·४०	२९	४३·७७	३१	४७·४६	१८	३३	५२·५७	३५	५९·२३	३८	७·५४	४०	१७·६३	४२	२९·६५	१८
१९	२१	४३·१७	२३	४२·२१	२५	४२·२६	२७	४३·४३	२९	४५·८२	३१	४९·५३	१९	३३	५४·६७	३६	१·३५	३८	९·६९	४०	१९·८२	४२	३१·८७	१९
२०	२१	४५·१४	२३	४४·१९	२५	४४·२७	२७	४५·४६	२९	४७·८७	३१	५१·६१	२०	३३	५६·७७	३६	३·४७	३८	११·८५	४०	२२·०१	४२	३४·०८	२०
२१	२१	४७·११	२३	४६·१९	२५	४६·२८	२७	४७·४९	२९	४९·९३	३१	५३·६८	२१	३३	५८·८७	३६	५·६०	३८	१४·००	४०	२४·१९	४२	३६·३०	२१
२२	२१	४९·०९	२३	४८·१८	२५	४८·२९	२७	४९·५२	२९	५१·९७	३१	५५·७५	२२	३४	०·९७	३६	७·७३	३८	१६·१५	४०	२६·३८	४२	३८·५२	२२
२३	२१	५१·०७	२३	५०·१७	२५	५०·३०	२७	५१·५५	२९	५४·०३	३१	५७·८३	२३	३४	३·०७	३६	९·८५	३८	१८·३१	४०	२८·५७	४२	४०·७४	२३
२४	२१	५३·०५	२३	५२·१७	२५	५२·३१	२७	५३·५८	२९	५६·०८	३१	५९·९१	२४	३४	५·१७	३६	११·९८	३८	२०·४७	४०	३०·७५	४२	४२·९६	२४
२५	२१	५५·०३	२३	५४·१६	२५	५४·३२	२७	५५·६१	२९	५८·१३	३२	१·९८	२५	३४	७·२७	३६	१४·११	३८	२२·६२	४०	३२·९४	४२	४५·१८	२५
२६	२१	५७·००	२३	५६·१५	२५	५६·३३	२७	५७·६५	३०	०·१९	३२	४·०६	२६	३४	९·३७	३६	१६·२३	३८	२४·७८	४०	३५·१३	४२	४७·४०	२६
२७	२१	५८·९८	२३	५८·१५	२५	५८·३५	२७	५९·६७	३०	२·२४	३२	६·१३	२७	३४	११·४७	३६	१८·३६	३८	२६·९४	४०	३७·३१	४२	४९·६२	२७
२८	२२	०·९६	२४	०·१४	२६	०·३६	२८	१·७१	३०	४·२९	३२	८·२१	२८	३४	१३·५७	३६	२०·४९	३८	२९·०९	४०	३९·५१	४२	५१·८४	२८
२९	२२	२·९३	२४	२·१३	२६	२·३७	२८	३·७४	३०	६·३५	३२	१०·२९	२९	३४	१५·६७	३६	२२·६२	३८	३१·२५	४०	४१·६९	४२	५४·०६	२९
३०	२२	४·९१	२४	४·१३	२६	४·३९	२८	५·७७	३०	८·४०	३२	१२·३७	३०	३४	१७·७७	३६	२४·७५	३८	३३·४१	४०	४३·८८	४२	५६·२९	३०
३१	२२	६·८९	२४	६·१३	२६	६·४०	२८	७·८१	३०	१०·४५	३२	१४·४५	३१	३४	१९·८७	३६	२६·८८	३८	३५·५७	४०	४६·०७	४२	५८·५२	३१
३२	२२	८·८७	२४	·१३	२६	८·४१	२८	९·८४	३०	१२·५१	३२	१६·५२	३२	३४	२१·९८	३६	२९·०१	३८	३७·७३	४०	४८·२६	४३	०·७४	३२
३३	२२	१०·८५	२४	[illegible]·१२	२६	१०·४३	२८	११·८७	३०	१४·५७	३२	१८·६०	३३	३४	२४·०९	३६	३१·१५	३८	३९·८९	४०	५०·४५	४३	२·९७	३३
३४	२२	१२·८३	२४	१२·१२	२६	१२·४५	२८	१३·९१	३०	१६·६२	३२	२०·६८	३४	३४	२६·१९	३६	३३·२८	३८	४२·०५	४०	५२·६५	४३	५·१९	३४
३५	२२	१४·८१	२४	१४·११	२६	१४·४६	२८	१५·९५	३०	१८·६८	३२	२२·७६	३५	३४	२८·२९	३६	३५·४१	३८	४४·२१	४०	५४·८४	४३	७·४२	३५
३६	२२	१६·७९	२४	१६·११	२६	१६·४७	२८	१७·९८	३०	२०·७३	३२	२४·८४	३६	३४	३०·४०	३६	३७·५४	३८	४६·३७	४०	५७·०२	४३	९·६५	३६
३७	२२	१८·७७	२४	१८·११	२६	२८·४९	२८	२०·०१	३०	२२·७९	३२	२६·९२	३७	३४	३२·५१	३६	३९·६७	३८	४८·५४	४०	५९·२३	४३	११·८७	३७
३८	२२	२०·७५	२४	२०·११	२६	२०·५१	२८	२२·०५	३०	२४·८५	३२	२९·००	३८	३४	३४·६१	३६	४१·८१	३८	५०·७०	४१	१·४२	४३	१४·१०	३८
३९	२२	२२·७३	२४	२२·११	२६	२२·५२	२८	२४·०९	३०	२६·९१	३२	३१·०८	३९	३४	३६·७२	३६	४३·९४	३८	५२·८७	४१	३·६१	४३	१६·३३	३९
४०	२२	२४·७२	२४	२४·१०	१६	२४·५४	२८	२६·१३	३०	२८·९७	३२	३३·१६	४०	३४	३८·८३	३६	४६·०७	३८	५५·०३	४१	५·८१	४३	१८·५६	४०
४१	२२	२६·७०	२४	२६·१०	१६	२६·५६	२८	२८·१७	३०	३१·०३	३२	३५·२४	४१	३४	४०·९३	३६	४८·२१	३८	५७·१९	४१	८·०१	४३	२०·७९	४१
४२	२२	२८·६९	२४	२८·१०	२६	२८·५७	२८	३०·३०	३०	३३·०९	३२	३७·३३	४२	३४	४३·०४	३६	५०·३५	३८	५९·३५	४१	१०·२१	४३	२३·०२	४२
४३	२२	३०·६७	२४	३०·०९	२६	३०·५९	२८	३२·२४	३०	३५·१४	३२	३९·४१	४३	३४	४५·१५	३६	५२·४८	३९	१·५२	४१	१२·४०	४३	२५·२५	४३
४४	२२	३२·६५	२४	३२·०९	२६	३२·६१	२८	३४·२७	३०	३७·२०	३२	४१·४९	४४	३४	४७·२६	३६	५४·६१	३९	३·६९	४१	१४·६०	४३	२७·४८	४४
४५	२२	३४·६३	२४	३४·०९	२६	३४·६३	२७	३६·३१	३०	३९·२६	३२	४३·५७	४५	३४	४९·३७	३६	५६·७५	३९	५·८५	४१	१६·८०	४३	२९·७१	४५
४६	२२	३६·६१	२४	३६·०९	२६	३६·६५	२८	३८·३५	३०	४१·३३	३२	४५·६६	४६	३४	५१·४८	३६	५८·८९	३९	८·०२	४१	१९·००	४३	३१·९५	४६
४७	२२	३८·६०	२४	३८·०९	२६	३८·६७	२८	४०·३९	३०	४३·३९	३२	४७·७४	४७	३४	५३·५९	३७	१·०३	३९	१०·१९	४१	२१·१९	४३	३४·१८	४७
४८	२२	४०·५८	२४	४०·०९	२६	४०·६८	२८	४२·४३	३०	४५·४५	३२	४९·८३	४८	३४	५५·७०	३७	३·१७	३९	१२·३५	४१	२३·३९	४३	३६·४१	४८
४९	२२	४२·५७	२४	४२·०९	२६	४२·७०	२८	४४·४७	३०	४७·५१	३२	५१·९१	४९	३४	५७·८१	३७	५·३१	३९	१४·५३	४१	२५·५९	४३	३८·६५	४९
५०	२२	४४·५५	२४	४४·१०	२६	४४·७२	२८	४६·५१	३०	४९·५७	३२	५४·००	५०	३४	५९·९२	३७	७·४५	३९	१६·६९	४१	२७·६९	४३	४०·८८	५०
५१	२२	४६·५३	२४	४६·१०	२६	४६·७४	२८	४८·५५	३०	५१·६३	३२	५६·०९	५१	३५	२·०३	३७	९·५९	३९	१८·८६	४१	२९·९९	४३	४३·११	५१
५२	२२	४८·५१	२४	४८·१०	२६	४८·७६	२८	५०·५९	३०	५३·६९	३२	५८·१७	५२	३५	४·१५	३७	११·७३	३९	२१·०३	४१	३२·१९	४३	४५·३५	५२
५३	२२	५०·५०	२४	५०·११	२६	५०·७८	२८	५२·६३	३०	५५·७५	३३	०·२६	५३	३५	६·२६	३७	१३·८७	३९	२३·२१	४१	३४·४०	४३	४७·५९	५३
५४	२२	५२·४९	२४	५२·११	२६	५२·८०	२८	५४·६७	३०	५७·८२	३३	२·३५	५४	३५	८·३७	३७	१६·०१	३९	२५·३७	४१	३६·६०	४३	४९·८३	५४
५५	२२	५४·४७	२४	५४·११	२६	५४·८२	२८	५६·७१	३०	५९·८८	३३	४·४३	५५	३५	१०·४९	३७	१८·१५	३९	२७·५५	४१	३८·८१	४३	५२·०७	५५
५६	२२	५६·४५	२४	५६·११	२६	५६·८५	२८	५८·७५	३१	१·९५	३३	६·५३	५६	३५	१२·६०	३७	२०·२९	३९	२९·७१	४१	४१·०१	४३	५४·३१	५६
५७	२२	५८·४४	२४	५८·११	२६	५८·८७	२९	०·७९	३१	४·०१	३३	८·६१	५७	३५	१४·७१	३७	२२·४३	३९	३१·८९	४१	४३·२१	४३	५६·५५	५७
५८	२३	०·४३	२५	०·१२	२७	०·८९	२९	२·८४	३१	६·०७	३३	१०·७०	५८	३५	१६·८३	३७	२४·५८	३९	३४·०७	४१	४५·४२	४३	५८·७९	५८
५९	२३	२·४१	२५	२·१२	२७	२·९१	२९	४·८८	३१	८·१४	३३	१२·७९	५९	३५	१८·९५	३७	२६·७२	३९	३६·२४	४१	४७·६३	४४	१·०३	५९
६०	२३	४·४०	२५	४·१३	२७	४·९३	२९	६·९३	३१	१०·२१	३३	१४·८८	६०	३५	२१·०६	३७	२८·८७	३९	३८·४१	४१	४९·८३	४४	३·२७	६०

कला	कात्यंश २२ मि. से.	२३ मि. से.	२४ मि. से.	२५ मि. से.	२६ मि. से.	२७ मि. से.	कला	२८ घं. मि. से.	२९ घं. मि. से.	३० घं. मि. से.	३१ घं. मि. से.	कला
१	४४ ५·५१	४६ २१·१३	४८ ३९·०७	५० ५९·४६	५३ २२·५०	५५ ४८·३६	१	० ५८ १६·२३	१ ० ४९·३३	१ ३ २४·८७	१ ६ ४·११	१
२	४४ ७·७५	४६ २३·४१	४८ ४१·३९	५१ १·८३	५३ २४·९१	५५ ५०·८२	२	० ५८ १९·७४	१ ० ५१·९०	१ ३ २७·५०	१ ६ ६·८०	२
३	४४ ९·९९	४६ २५·६९	४८ ४३·७१	५१ ४·१९	५३ २७·३१	५५ ५३·२७	३	० ५८ २२·२५	१ ० ५४·४७	१ ३ ३०·१२	१ ६ ९·४९	३
४	४४ १२·२४	४६ २७·९७	४८ ४६·०३	५१ ६·५५	५३ २९·७३	५५ ५५·७३	४	० ५८ २४·७६	१ ० ५७·०३	१ ३ ३२·७५	१ ६ १२·१७	४
५	४४ १४·४८	४६ ३०·२५	४८ ४८·३५	५१ ८·९१	५३ ३२·१३	५५ ५८·१९	५	० ५८ २७·२७	१ ० ५९·५९	१ ३ ३५·३७	१ ६ १४·८७	५
६	४४ १६·७३	४६ ३२·५४	४८ ५०·६७	५१ ११·२८	५३ ३४·५५	५६ ०·६५	६	० ५८ २९·७८	१ १ २·१६	१ ३ ३८·००	१ ६ १७·५५	६
७	४४ १८·९७	४६ ३४·८२	४८ ५२·९९	५१ १३·६५	५३ ३६·९५	५६ ३·११	७	० ५८ ३२·२९	१ १ ४·७३	१ ३ ४०·६३	१ ६ २०·२५	७
८	४४ २१·२२	४६ ३७·१०	४८ ५५·३१	५१ १६·०१	५३ ३९·३७	५६ ५·५७	८	० ५८ ३४·८१	१ १ ७·३०	१ ३ ४३·२६	१ ६ २२·९४	८
९	४४ २३·४७	४६ ३९·३९	४८ ५७·६४	५१ १८·३८	५३ ४१·७८	५६ ८·०३	९	० ५८ ३७·३२	१ १ ९·८७	१ ३ ४५·८९	१ ६ २५·६३	९
१०	४४ २५·७१	४६ ४१·६७	४८ ५९·९६	५१ २०·७५	५३ ४४·१९	५६ १०·४९	१०	० ५८ ३९·८४	१ १ १२·४४	१ ३ ४८·५२	१ ६ २८·३३	१०
११	४४ २७·९६	४६ ४३·९६	४९ २·२९	५१ २३·११	५३ ४६·६१	५६ १२·९६	११	० ५८ ४२·३५	१ १ १५·०१	१ ३ ५१·१५	१ ६ ३१·०२	११
१२	४४ ३०·२१	४६ ४६·२५	४९ ४·६१	५१ २५·४९	५३ ४९·०२	५६ १५·४२	१२	० ५८ ४४·८७	१ १ १७·५९	१ ३ ५३·७९	१ ६ ३३·७२	१२
१३	४४ ३२·४६	४६ ४८·५३	४९ ६·९४	५१ २७·८५	५३ ५१·४४	५६ १७·८९	१३	० ५८ ४७·३९	१ १ २०·१६	१ ३ ५६·४२	१ ६ ३६·४२	१३
१४	४४ ३४·७१	४६ ५०·८२	४९ ९·२७	५१ ३०·२३	५३ ५३·८५	५६ २०·३५	१४	० ५८ ४९·९१	१ १ २२·७३	१ ३ ५९·०५	१ ६ ३९·१२	१४
१५	४४ ३६·९६	४६ ५३·११	४९ ११·५९	५१ ३२·५९	५३ ५६·२७	५६ २२·८२	१५	० ५८ ५२·४३	१ १ २५·३१	१ ४ १·६९	१ ६ ४१·८२	१५
१६	४४ ३९·२१	४६ ५५·३९	४९ १३·९२	५१ ३४·९७	५३ ५८·६९	५६ २५·२९	१६	० ५८ ५४·९५	१ १ २७·८९	१ ४ ४·३३	१ ६ ४४·५२	१६
१७	४४ ४१·४६	४६ ५७·६९	४९ १६·२५	५१ ३७·३४	५४ १·११	५६ २७·७५	१७	० ५८ ५७·४७	१ १ ३०·४७	१ ४ ६·९७	१ ६ ४७·२३	१७
१८	४४ ४३·७१	४६ ५९·९७	४९ १८·५८	५१ ३९·७१	५४ ३·५३	५६ ३०·२३	१८	० ५८ ५९·९९	१ १ ३३·०५	१ ४ ९·६१	१ ६ ४९·९३	१८
१९	४४ ४५·९७	४७ २·२७	४९ २०·९१	५१ ४२·०९	५४ ५·९५	५६ ३२·६९	१९	० ५९ २·५२	१ १ ३५·६३	१ ४ १२·२५	१ ६ ५२·६३	१९
२०	४४ ४८·२१	४७ ४·५५	४९ २३·२५	५१ ४४·४६	५४ ८·३७	५६ ३५·१७	२०	० ५९ ५·०४	१ १ ३८·२१	१ ४ १४·८९	१ ६ ५५·३४	२०
२१	४४ ५०·४७	४७ ६·८५	४९ २५·५८	५१ ४६·८३	५४ १०·७९	५६ ३६·६४	२१	० ५९ ७·५७	१ १ ४०·७९	१ ४ १७·५३	१ ६ ५८·०५	२१
२२	४४ ५२·७२	४७ ९·१४	४९ २७·९१	५१ ४९·२१	५४ १३·२२	५६ ४०·११	२२	० ५९ १०·०९	१ १ ४३·३७	१ ४ २०·१८	१ ७ ०·७५	२२
२३	४४ ५४·९७	४७ ११·४३	४९ ३०·२५	५१ ५१·५९	५४ १५·६४	५६ ४२·५९	२३	० ५९ १२·६२	१ १ ४५·९५	१ ४ २२·८३	१ ७ ३·४७	२३
२४	४४ ५७·२३	४७ १३·७३	४९ ३२·५८	५१ ५३·९७	५४ १८·०७	५६ ४४·७६	२४	० ५९ १५·१५	१ १ ४८·५४	१ ४ २५·४७	१ ७ ६·१८	२४
२५	४४ ५९·४९	४७ १६·०२	४९ ३४·९१	५१ ५६·३५	५४ २०·४९	५६ ४७·५३	२५	० ५९ १७·६७	१ १ ५१·१३	१ ४ २८·१२	१ ७ ८·९९	२५
२६	४५ १·७५	४७ १८·३१	४९ ३७·२५	५१ ५८·७३	५४ २२·९२	५६ ५०·०१	२६	० ५९ २०·२१	१ १ ५३·७१	१ ४ ३०·७७	१ ७ ११·६०	२६
२७	४५ ४·००	४७ २०·६१	४९ ३९·५९	५२ १·११	५४ २५·३५	५६ ५२·४९	२७	० ५९ २२·७३	१ १ ५६·३०	१ ४ ३३·४१	१ ७ १४·३२	२७
२८	४५ ६·२६	४७ २२·९१	४९ ४१·९३	५२ ३·४९	५४ २७·७७	५६ ५४·९७	२८	० ५९ २५·२७	१ १ ५८·८९	१ ४ ३६·०७	१ ७ १७·०३	२८
२९	४५ ८·५२	४७ २५·२०	४९ ४४·२६	५२ ५·८७	५४ ३०·२१	५६ ५७·४५	२९	० ५९ २७·८०	१ २ १·४८	१ ४ ३८·७१	१ ७ १९·७५	२९
३०	४५ १०·७८	४७ २७·५०	४९ ४६·६०	५२ ८·२५	५४ ३२·६३	५६ ५९·९३	३०	० ५९ ३०·३३	१ २ ४·०७	१ ४ ४१·३७	१ ७ २२·४७	३०
३१	४५ १३·०४	४७ २९·८०	४९ ४८·९४	५२ १०·६४	५४ ३५·०७	५७ २·४१	३१	० ५९ ३२·८७	१ २ ६·६६	१ ४ ४४· २	१ ७ २५·१९	३१
३२	४५ १५·३०	४७ ३२·१०	४९ ५१·२८	५२ १३·०२	५४ ३७·४९	५७ ४·८९	३२	० ५९ ३५·४०	१ २ ९·२५	१ ४ ४६·६७	१ ७ २७·९१	३२
३३	४५ १७·५६	४७ ३४·४०	४९ ५३·६२	५२ १५·४१	५४ ३९·९३	५७ ७·३७	३३	० ५९ ३७·९४	१ २ ११·८५	१ ४ ४९·३३	१ ७ ३०·६३	३३
३४	४५ १९·८३	४७ ३६·७०	४९ ५५·९६	५२ १७·७९	५४ ४२·३६	५७ ९·८५	३४	० ५९ ४०·४८	१ २ १४·४४	१ ४ ५१·९९	१ ७ ३३·३५	३४
३५	४५ २२·०९	४७ ३९·००	४९ ५८·३१	५२ २०·१८	५४ ४४·७९	५७ १२·३४	३५	० ५९ ४३·०१	१ २ १७·०३	१ ४ ५४·६४	१ ७ ३६·०७	३५
३६	४५ २४·३५	४७ ४१·३०	५० ०·६५	५२ २२·५७	५४ ४७·२३	५७ १४·८३	३६	० ५९ ४५·५५	१ २ १९·६३	१ ४ ५७·३०	१ ७ ३८·८०	३६
३७	४५ २६·६१	४७ ४३·६०	५० २·९९	५२ २४·९५	५४ ४९·६७	५७ १७·३१	३७	० ५९ ४८·०९	१ २ २२·२३	१ ४ ५९·९६	१ ७ ४१·५२	३७
३८	४५ २८·८८	४७ ४५·९१	५० ५·३३	५२ २७·३५	५४ ५२·१०	५७ १९·८०	३८	० ५९ ५०·६३	१ २ २४·८३	१ ५ २·६२	१ ७ ४४·२५	३८
३९	४५ ३१·१४	४७ ४८·२१	५० ७·६८	५२ २९·७३	५४ ५४·५४	५७ २२·२९	३९	० ५९ ५३·१८	१ २ २७·४३	१ ५ ५·२८	१ ७ ४६·९८	३९
४०	४५ ३३·४१	४७ ५०·५१	५० १०·०३	५२ ३२·१३	५४ ५६·९७	५७ २४·७७	४०	० ५९ ५५·७२	१ २ ३०·०३	१ ५ ७·९५	१ ७ ४९·७१	४०
४१	४५ ३५·६७	४७ ५२·८२	५० १२·३७	५२ ३४·५२	५४ ५९·४१	५७ २७·२६	४१	० ५९ ५८·२७	१ २ ३२·६३	१ ५ १०·६१	१ ७ ५२·४४	४१
४२	४५ ३७·९४	४७ ५५·१३	५० १४·७२	५२ ३६·९१	५५ १·८५	५७ २९·७५	४२	१ ० ०·८१	१ २ ३५·२४	१ ५ १३·२७	१ ७ ५५·१७	४२
४३	४५ ४०·२१	४७ ५७·४३	५० १७·०७	५२ ३९·३०	५५ ४·२९	५७ ३२·२५	४३	१ ० ३·३५	१ २ ३७·८४	१ ५ १५·९४	१ ७ ५७·९०	४३
४४	४५ ४२·४७	४७ ५९·७४	५० १९·४२	५२ ४१·६९	५५ ६·७३	५७ ३४·७३	४४	१ ० ५·९०	१ २ ४०·४५	१ ५ १८·६१	१ ८ ०·६३	४४
४५	४५ ४४·७५	४८ २· ५	५० २१·७७	५२ ४४·०९	५५ ९·१७	५७ ३७·२३	४५	१ ० ८·४५	१ २ ४३·०५	१ ५ २१·२७	१ ८ ३·३७	४५
४६	४५ ४७·०१	४८ ४·३५	५० २४·१२	५२ ४६·४९	५५ ११·६२	५७ ३९·७२	४६	१ ० ११·००	१ २ ४५·६६	१ ५ २३·९५	१ ८ ६·११	४६
४७	४५ ४९·२९	४८ ६·६६	५० २६·४७	५२ ४८·८८	५५ १४·०७	५७ ४२·२२	४७	१ ० १३·५५	१ २ ४८·२७	१ ५ २६·६१	१ ८ ८·८४	४७
४८	४५ ५१·५५	४८ ८·९७	५० २८·८२	५२ ५१·२८	५५ १६·५१	५७ ४४·७१	४८	१ ० १६·०९	१ २ ५०·८७	१ ५ २९·२९	१ ८ ११·५८	४८
४९	४५ ५३·८३	४८ ११·२९	५० ३१·१७	५२ ५३·६७	५५ १८·९५	५७ ४७·२१	४९	१ ० १८·६५	१ २ ५३·४९	१ ५ ३१·९६	१ ८ १४·३२	४९
५०	४५ ५६·१०	४८ १३·५९	५० ३३·५३	५२ ५६·०७	५५ २१·२०	५७ ४९·७१	५०	१ ० २१·२०	१ २ ५६·०९	१ ५ ३४·६३	१ ८ १७·०६	५०
५१	४५ ५८·३७	४८ १५·९१	५० ३५·८८	५२ ५८·४७	५५ २३·८५	५७ ५२·२१	५१	१ ० २३·७५	१ २ ५८·७१	१ ५ ३७·३१	१ ८ १९·८०	५१
५२	४६ ०·६५	४८ १८·२२	५० ३८·२३	५३ ०·८७	५५ २६·२९	५७ ५४·७१	५२	१ ० २६·३१	१ ३ १·३२	१ ५ ३९·९९	१ ८ २२·५५	५२
५३	४६ २·९२	४८ २०·५३	५० ४०·५९	५३ ३·२७	५५ २८·७५	५७ ५७·२१	५३	१ ० २८·८६	१ ३ ३·९३	१ ५ ४२·९६	१ ८ २५·२९	५३
५४	४६ ५·१९	४८ २२·८५	५० ४२·९५	५३ ५·६७	५५ ३१·१९	५७ ५९·७१	५४	१ ० ३१·४२	१ ३ ६·५५	१ ५ ४५·३४	१ ८ २८·०३	५४
५५	४६ ७·४७	४८ २५·१६	५० ४५·३१	५३ ६·०७	५५ ३३·६५	५८ २·२१	५५	१ ० ३३·९७	१ ३ ९·१६	१ ५ ४८· २	१ ८ ३०·७८	५५
५६	४६ ९·७५	४८ २७·४७	५० ४७·६६	५३ १०·४८	५५ ३६·०९	५८ ४·७१	५६	१ ० ३६·५३	१ ३ ११·७८	१ ५ ५०·७०	१ ८ ३३·५३	५६
५७	४६ १२·०२	४८ २९·७९	५० ५०·०२	५३ १२·८८	५५ ३८·५५	५८ ७·२१	५७	१ ० ३९·०९	१ ३ १४·३९	१ ५ ५३·३८	१ ८ ३६·२८	५७
५८	४६ १४·३०	४८ ३२·११	५० ५२·३८	५३ १५·२९	५५ ४१·००	५८ ९·७२	५८	१ ० ४१·६५	१ ३ १७·०१	१ ५ ५६· ६	१ ८ ३९·०३	५८
५९	४६ १६·५८	४८ ३४·४३	५० ५४·७४	५३ १७·६९	५५ ४३·४५	५८ १२·२२	५९	१ ० ४४·२१	१ ३ १९·६३	१ ५ ५८·७५	१ ८ ४१·७८	५९
६०	४६ १८·८५	४८ ३६·७५	५० ५७·१०	५३ २०·०९	५५ ४५·९१	५८ १४·७३	६०	१ ० ४६·७७	१ ३ २२·२५	१ ६ १·४३	१ ८ ४४·५३	६०

बम्बई के भूकेंद्रीय अक्षांश १८-५८' की २३।° अयनांशीय निरयण लग्न सारणी—उपकरण : सांपातिक काल

राशि	० मेष ♈ सांपा. काल			गति	१ वृषभ ♉ सांपा. काल			गति	२ मिथुन ♊ सांपा. काल			गति
अंश क.	घं.	मि.	से.	से.	घं.	मि.	से.	से.	घं.	मि.	से.	से.
०	११	१३	३७	१९४	२०	२७	५	२२२	२२	५६	५१	२५६
१	११	१६	५१	१९६	२१	०	४७	२२४	२३	१	७	२५७
२	११	२०	७	१९६	२१	४	३१	२२६	२३	५	२४	२५९
३	११	२३	२३	६६	२१	८	१७	७५	२३	९	४३	८६
३ २०'	११	२४	२९	१३१	२१	९	३२	१५२	२३	११	९	१७३
४	११	२६	४०	१९७	२१	१२	२	२२७	२३	१४	२	२५९
५	११	२९	५७	१९०	२१	१५	४९	२२९	२३	१८	२१	२६१
६	११	३३	१६	१३४	२१	१९	३८	१५३	२३	२२	४२	१७४
६ ४०'	११	३५	३०	६६	२१	२२	११	७७	२३	२५	३६	८७
७	११	३६	३६	२००	२१	२३	२८	२३१	२३	२७	३	२६३
८	११	३९	५६	२००	२१	२७	११	२३२	२३	३१	२६	२६३
९	११	४३	१६	२०१	२१	३१	११	२३३	२३	३५	४३	२६३
१०	११	४६	३७	२०२	२१	३५	४	२३४	२३	४०	१२	२६४
११	११	४९	५९	२०३	२१	३८	५८	२३६	२३	४४	३६	२६५
१२	११	५३	२२	२०४	२१	४२	५४	२३७	२३	४९	१	२६५
१३	११	५६	४६	६८	२१	४६	५१	७९	२३	५३	२६	८९
१३ २०'	११	५७	५४	१३७	२१	४८	१०	१५९	२३	५४	५५	१७७
१४	२०	०	११	२०५	२१	५०	४९	२३९	२३	५७	५२	२६७
१५	२०	३	३६	२०७	२१	५४	४८	२४१	०	२	१९	२६७
१६	२०	७	३	१३९	२१	५८	४९	१६१	०	६	४६	१७८
१६ ४०'	२०	९	२२	६९	२२	१	३०	८१	०	९	४४	८९
१७	२०	१०	३१	२०९	२२	२	५१	२४२	०	११	१३	२६८
१८	२०	१४	०	२०९	२२	६	५३	२४४	०	१५	४१	२६८
१९	२०	१७	२९	२११	२२	१०	५७	२४५	०	२०	९	२६९
२०	२०	२१	०	२१२	२२	१५	२	२४६	०	२४	३८	२६९
२१	२०	२४	३२	२१२	२२	१९	८	२४८	०	२९	७	२६९
२२	२०	२८	४	२१४	२२	२३	१६	२४८	०	३३	३६	२६९
२३	२०	३१	३८	७१	२२	२७	२४	८३	०	३८	५	८९
२३ २०'	२०	३२	४९	१४४	२२	२८	४७	१६६	०	३९	३४	१८१
२४	२०	३५	१३	२१६	२२	३१	३३	२५१	०	४२	३५	२७०
२५	२०	३८	४९	२१६	२२	३५	४४	२५१	०	४७	५	२७०
२६	२०	४२	२५	१४५	२२	३९	५५	१६८	०	५१	३५	१७९
२६ ४०'	२०	४४	५०	७३	२२	४२	४३	८४	०	५४	३४	९१
२७	२०	४६	३	२२०	२२	४४	७	२५४	०	५६	५	२७०
२८	२०	४९	४३	२२०	२२	४८	२१	२५४	१	०	३५	२७०
२९	२०	५३	२३	२२२	२२	५२	३५	२५६	१	५	५	२७०
३०	२०	५७	५		२२	५६	५१		१	९	३५	
१.	१	४३	२८	××	१	५९	४६	××	२	१२	४४	××
२.	१	४३	११		१	५९	२६		२	१२	२२	

राशि	३ कर्क ♋ सांपा. काल			गति	४ सिंह ♌ सांपा. काल			गति	५ कन्या ♍ सांपा. काल			गति
अंश क.	घं.	मि.	से.	से.	घं.	मि.	से.	से.	घं.	मि.	से.	से.
०	१	९	३५	२७०	३	२३	१०	२६१	५	३१	३३	२५३
१	१	१४	५	२७०	३	२७	३१	२६१	५	३५	४६	२५३
२	१	१८	३५	२७०	३	३१	५२	२६१	५	३९	५९	२५३
३	१	२३	५	९०	३	३६	१३	८७	५	४४	१२	८४
३ २०'	१	२४	३५	१८०	३	३७	४०	१७४	५	४५	३६	१६९
४	१	२७	३५	२७०	३	४०	३४	२६०	५	४८	२५	२५३
५	१	३२	५	२७०	३	४४	५४	२६०	५	५२	३८	२५३
६	१	३६	३५	१८१	३	४९	१४	१७३	५	५६	५१	१६९
६ ४०'	१	३९	३६	९०	३	५२	७	८६	५	५९	४०	८४
७	१	४१	६	२६९	३	५३	३३	२५९	६	१	४	२५३
८	१	४५	३५	२६९	३	५७	५२	२५९	६	५	१७	२५३
९	१	५०	४	२६९	४	२	११	२५८	६	९	३०	२५३
१०	१	५४	३३	२६९	४	६	२९	२५८	६	१३	४३	२५३
११	१	५९	२	२६९	४	१०	४७	२५८	६	१७	५६	२५३
१२	२	३	३१	२६८	४	१५	५	२५७	६	२२	९	२५३
१३	२	७	५९	९०	४	१९	२२	८६	६	२६	२२	८४
१३ २०'	२	९	२९	१७८	४	२०	४८	१७१	६	२७	४५	१६९
१४	२	१२	२७	२६८	४	२३	३९	२५७	६	३०	३४	२५३
१५	२	१६	५५	२६८	४	२७	५६	२५६	६	३४	४७	२५३
१६	२	२१	२३	१७८	४	३२	१२	१६९	६	३९	०	१६९
१६ ४०'	२	२४	२१	८९	४	३५	१	८७	६	४१	४९	८४
१७	२	२५	५०	२६७	४	३६	२८	२५६	६	४३	१३	२५४
१८	२	३०	१९	२६६	४	४०	४४	२५५	६	४७	२६	२५४
१९	२	३४	४३	२६६	४	४४	५९	२५५	६	५१	४१	२५४
२०	२	३९	९	२६६	४	४९	१४	२५५	६	५५	५५	२५४
२१	२	४३	३५	२६६	४	५३	२९	२५४	७	०	९	२५५
२२	२	४८	१	२६५	४	५७	४३	२५४	७	४	२४	२५५
२३	२	५२	२६	८८	५	१	५७	८५	७	८	३९	८५
२३ २०'	२	५३	५४	१७६	५	३	२२	१६९	७	१०	४	१७०
२४	२	५६	५०	२६४	५	६	११	२५४	७	१२	५४	२५५
२५	३	१	१४	२६४	५	१०	२५	२५४	७	१७	९	२५५
२६	३	५	३८	१७६	५	१४	३९	१६९	७	२१	२४	१७१
२६ ४०'	३	८	३४	८७	५	१७	२८	८५	७	२४	१५	८५
२७	३	१०	१	२६३	५	१८	५३	२५४	७	२५	४०	२५६
२८	३	१४	२४	२६३	५	२३	७	२५३	७	२९	५६	२५६
२९	३	१८	४७	२६३	५	२७	२०	२५३	७	३४	१२	२५७
३०	३	२३	१०		५	३१	३३		७	३८	२९	
१.	२	१३	३५	××	२	८	२३	××	२	६	५६	××
२.	२	१३	१३		२	८	२		२	६	३५	

राशि	६ तुला ♎ सांपा. काल			गति	७ वृश्चिक ♏ सांपा. काल			गति	८ धनु ♐ सांपा. काल			गति
अंश क.	घं.	मि.	से.	से.	घं.	मि.	से.	से.	घं.	मि.	से.	से.
०	७	३८	२१	२५७	९	४९	४७	२६८	१२	४	२१	२६५
१	७	४२	४६	२५७	९	५४	१५	२६९	१२	८	४६	२६५
२	७	४७	३	२५८	९	५८	४४	२६९	१२	१३	११	२६५
३	७	५१	२१	८६	१०	३	१३	८९	१२	१७	३६	८८
३ २०'	७	५२	४७	१७२	१०	४	४२	१८०	१२	१९	४	१७६
४	७	५५	३९	२५९	१०	७	४२	२६९	१२	२२	०	२६३
५	७	५९	५८	२५९	१०	१२	११	२६९	१२	२६	२३	२६२
६	८	४	१७	१७३	१०	१६	४०	१८०	१२	३०	४५	१७५
६ ४०'	८	७	१०	८६	१०	१९	४०	८९	१२	३३	४०	८७
७	८	८	३६	२५९	१०	२१	९	२७०	१२	३५	७	२६१
८	८	१२	५५	२६०	१०	२५	३९	२७०	१२	३९	२८	२६१
९	८	१७	१५	२६१	१०	३०	९	२७०	१२	४३	४९	२५९
१०	८	२१	३६	२६१	१०	३४	३९	२७०	१२	४८	८	२५८
११	८	२५	५७	२६१	१०	३९	९	२७०	१२	५२	२६	२५८
१२	८	३०	१८	२६२	१०	४३	३९	२७०	१२	५६	४४	२५७
१३	८	३४	४०	८७	१०	४८	९	९१	१३	१	१	८५
१३ २०'	८	३६	७	१७५	१०	४९	४०	१८०	१३	२	२६	१७१
१४	८	३९	२	२६२	१०	५२	४०	२७१	१३	५	१७	२५५
१५	८	४३	२४	२६३	१०	५७	११	२७०	१३	९	३२	२५४
१६	८	४७	४७	१७५	११	१	४१	१८०	१३	१३	४६	१६८
१६ ४०'	८	५०	४२	८८	११	४	४१	९०	१३	१६	३४	८५
१७	८	५२	१०	२६४	११	६	११	२७०	१३	१७	५९	२५२
१८	८	५६	३४	२६४	११	१०	४१	२७०	१३	२२	११	२५१
१९	९	०	५८	२६४	११	१५	११	२७०	१३	२६	२२	२४९
२०	९	५	२२	२६५	११	१९	४१	२६९	१३	३०	३१	२४९
२१	९	९	४७	२६५	११	२४	१०	२६९	१३	३४	४०	२४८
२२	९	१४	१२	२६५	११	२८	३९	[illegible]	१३	३८	४८	२४७
२३	९	१८	३७	९०	११	३३	८	[illegible]	१३	४२	५५	८२
२३ २०'	९	२०	७	१७६	११	३४	३७	[illegible]	१३	४४	१७	१६४
२४	९	२३	३	२६७	११	३७	३७	२६८	१३	४७	१	२४४
२५	९	२७	३०	२६७	११	४२	५	२६८	१३	५१	५	२४४
२६	९	३१	५७	१७८	११	४६	३३	१७८	१३	५५	९	१६१
२६ ४०'	९	३४	५५	८९	११	४९	३१	९०	१३	५७	५०	८१
२७	९	३६	२४	२६७	११	५१	१	२६७	१३	५९	११	२४१
२८	९	४०	५१	२६८	११	५५	२८	२६७	१४	३	१२	२३९
२९	९	४५	१९	२६८	११	५९	५५	२६६	१४	७	११	२३९
३०	९	४९	४७		१२	४	२१		१४	११	१०	
१.	२	११	१८	××	२	१४	३४	××	२	६	४१	××
२.	२	१०	५६		२	१४	१२		२	६	२८	

राशि	९ मकर ♑ सांपा. काल			गति	१० कुम्भ ♒ सांपा. काल			गति	११ मीन ♓ सांपा. काल			गति
अंश क.	घं.	मि.	से.	से.	घं.	मि.	से.	से.	घं.	मि.	से.	से.
०	१४	११	१०	२३८	१६	१	३१	२०४	१७	३८	५२	१८८
१	१४	१५	८	२३६	१६	४	५५	२०४	१७	४२	०	१८८
२	१४	१९	४	२३५	१६	८	१९	२०३	१७	४५	८	१८८
३	१४	२२	५९	७८	१६	११	४२	६७	१७	४८	१६	६३
३ २०'	१४	२४	१७	१५६	१६	१२	४९	१३५	१७	४९	१९	१२५
४	१४	२६	५३	२३३	१६	१५	४	२०१	१७	५१	२४	१८८
५	१४	३०	४६	२३१	१६	१८	२५	२००	१७	५४	३२	१८८
६	१४	३४	३७	१५३	१६	२१	४५	१३३	१७	५७	४०	१२४
६ ४०'	१४	३७	१०	७६	१६	२३	५८	६६	१७	५९	४४	६२
७	१४	३८	२६	२३०	१६	२५	४	१९९	१८	०	४६	१८८
८	१४	४२	१६	२२८	१६	२८	२३	१९८	१८	३	५४	१८८
९	१४	४६	४	२२७	१६	३१	४१	१९७	१८	७	२	१८८
१०	१४	४९	५१	२२६	१६	३४	५८	१९७	१८	१०	१०	१८८
११	१४	५३	३७	२२४	१६	३८	१५	१९६	१८	१३	१८	१८८
१२	१४	५७	२१	२२३	१६	४१	३१	१९५	१८	१६	२६	१८८
१३	१५	१	४	७४	१६	४४	४६	६५	१८	१९	३४	६२
१३ २०'	१५	२	१८	१४८	१६	४५	५१	१२९	१८	२०	३६	१२६
१४	१५	४	४६	२२१	१६	४८	०	१९४	१८	२२	४२	१८८
१५	१५	८	२७	२२०	१६	५१	१४	१९३	१८	२५	५०	१८९
१६	१५	१२	७	१४६	१६	५४	२७	१२८	१८	२८	५९	१२६
१६ ४०'	१५	१४	३३	७२	१६	५६	३५	६५	१८	३१	५	६३
१७	१५	१५	४५	२१८	१६	५७	४०	१९३	१८	३२	८	१८९
१८	१५	१९	२३	२१६	१७	०	५३	१९३	१८	३५	१७	१८९
१९	१५	२२	५९	२१६	१७	४	६	१९१	१८	३८	२६	१९०
२०	१५	२६	३५	२१४	१७	७	१७	१९१	१८	४१	३६	१९०
२१	१५	३०	९	२१३	१७	१०	२८	१९१	१८	४४	४६	१९०
२२	१५	३३	४२	२१२	१७	१३	३९	१९०	१८	४७	५६	१९१
२३	१५	३७	१४	७०	१७	१६	४९	६३	१८	५१	७	६३
२३ २०'	१५	३८	२४	१४२	१७	१७	५२	१२७	१८	५२	१०	१२८
२४	१५	४०	४६	२१०	१७	१९	५९	१९०	१८	५४	१८	१९२
२५	१५	४४	१६	२०९	१७	२३	९	१९०	१८	५७	३०	१९२
२६	१५	४७	४५	१३८	१७	२६	१९	१२७	१९	०	४२	१२९
२६ ४०'	१५	५०	३	७०	१७	२८	२६	६२	१९	२	५१	६४
२७	१५	५१	१३	२०७	१७	२९	२८	१८८	१९	३	५५	१९३
२८	१५	५४	४०	२०६	१७	३२	३६	१८८	१९	७	८	१९४
२९	१५	५८	६	२०५	१७	३५	४४	१८८	१९	१०	२२	१९५
३०	१६	१	३१		१७	३८	५२		१९	१३	३७	
१.	१	५०	२१	××	१	३७	२१	××	१	३४	४५	××
२.	१	५०	३		१	३७	५		१	३४	२१	

१. सांपातिक काल (मध्यम सायन सूर्य) में लग्न-भोग। २. सावन काल (घड़ी के समय) में लग्न-भोग।

पटना के भौगोलिक अक्षांश २५°।३७ की २३°।३६' अयनांशीय निरयण लग्न-सारणी :—

उपकरण : इष्ट सांपातिक काल [R. A. M. C.]

गणितकर्त्ता—श्रीदिनेश्वर गोस्वामी (सारणी का गणितोपकरण : पटना का भू-केंद्रीय अक्षांश २५°।२७'।५८", परमाक्रांति २३°।२६'।२६")

अंश	० मेष ♈				१ वृषभ			♉	२ मिथुन			♊	३ कर्क			♋
	सांपा.का.			गति	सांपा.का.			गति	सांपा.का.			गति	सांपा.का.			गति
	घं.	मि.	से.	से.	घं.	मि.	से.	से.	घं.	मि.	से.	से.	घं.	मि.	से.	से.
०	१९	९	४५	१८२	२०	४७	४९	२१३	२२	४४	४९	२५४	०	५८	५२	२७७
१	१९	१२	४७	१८४	२०	५१	२२	२१६	२२	४९	३	२५७	१	३	२९	२७७
२	१९	१५	५१	१८४	२०	५४	५८	२१६	२२	५३	२०	२५७	१	८	६	२७७
३	१९	१८	५५	१८५	२०	५८	३४	२१८	२२	५७	३७	२५८	१	१२	४३	२७८
४	१९	२२	०	१८६	२१	२	१२	२१९	२३	१	५५	२६०	१	१७	२१	२७८
५	१९	२५	६	१८६	२१	५	५१	२२१	२३	६	१५	२६०	१	२१	५९	२७८
६	१९	२८	१२	१८८	२१	९	३२	२२२	२३	१०	३५	२६२	१	२६	३७	२७८
७	१९	३१	२०	१८८	२१	१३	१४	२२४	२३	१४	५७	२६३	१	३१	१५	२७८
८	१९	३४	२८	१८९	२१	१६	५८	२२५	२३	१९	२०	२६४	१	३५	५३	२७८
९	१९	३७	३७	१९०	२१	२०	४३	२२६	२३	२३	४४	२६४	१	४०	३१	२७८
१०	१९	४०	४७	१९१	२१	२४	२९	२२८	२३	२८	८	२६६	१	४५	९	२७८
११	१९	४३	५८	१९१	२१	२८	१७	२२९	२३	३२	३४	२६६	१	४९	४७	२७७
१२	१९	४७	९	१९३	२१	३२	६	२३०	२३	३७	०	२६८	१	५४	२४	२७७
१३	१९	५०	२२	१९४	२१	३५	५६	२३२	२३	४१	२८	२६८	१	५९	१	२७७
१४	१९	५३	३६	१९५	२१	३९	४८	२३४	२३	४५	५६	२६९	२	३	३८	२७७
१५	१९	५६	५१	१९५	२१	४३	४२	२३५	२३	५०	२५	२७०	२	८	१५	२७७
१६	२०	०	६	१९७	२१	४७	३७	२३६	२३	५४	५५	२७१	२	१२	५२	२७७
१७	२०	३	२३	१९८	२१	५१	३३	२३७	२३	५९	२५	२७२	२	१७	२९	२७७
१८	२०	६	४१	१९९	२१	५५	३०	२३९	०	३	५७	२७२	२	२२	६	२७७
१९	२०	१०	०	२००	२१	५९	२९	२४१	०	८	२९	२७२	२	२६	४३	२७६
२०	२०	१३	२०	२०२	२२	३	३०	२४२	०	१३	१	२७३	२	३१	१९	२७६
२१	२०	१६	४२	२०२	२२	७	३२	२४३	०	१७	३४	२७४	२	३५	५५	२७६
२२	२०	२०	४	२०४	२२	११	३५	२४५	०	२२	८	२७४	२	४०	३१	२७६
२३	२०	२३	२८	२०५	२२	१५	४०	२४५	०	२६	४२	२७५	२	४५	७	२७५
२४	२०	२६	५३	२०६	२२	१९	४५	२४८	०	३१	१७	२७५	२	४९	४२	२७५
२५	२०	३०	१९	२०७	२२	२३	५३	२४९	०	३५	५२	२७५	२	५४	१७	२७५
२६	२०	३३	४६	२०९	२२	२८	१	२५०	०	४०	२७	२७६	२	५८	५२	२७४
२७	२०	३७	१५	२१०	२२	३२	११	२५१	०	४५	३	२७६	३	३	२६	२७४
२८	२०	४०	४५	२११	२२	३६	२२	२५३	०	४९	३९	२७६	३	८	०	२७४
२९	२०	४४	१६	२१३	२२	४०	३५	२५४	०	५४	१५	२७७	३	१२	३४	२७४
३०	२०	४७	४९		२२	४४	४९		०	५८	५२		३	१७	८	
१.	१	३८	४	—	१	५६	०	—	२	१४	३	—	२	१८	५०	—
२.	१	३७	४८	—	१	५७	४१	—	२	१३	४२	—	२	१७	५२	—

अंश	४ सिंह			♌	५ कन्या			♍	६ तुला			♎	७ वृश्चिक			♏
	सांपा.का.			गति	सांपा.का.			गति	सांपा.का.			गति	सांपा.का.			गति
	घं.	मि.	से.	से.	घं.	मि.	से.	से.	घं.	मि.	से.	से.	घं.	मि.	से.	से.
०	३	१७	८	२७३	५	३१	४०	२६६	७	४४	५९	२६९	१०	१	५४	२७७
१	३	२१	४१	२७३	५	३६	६	२६६	७	४९	२८	२७०	१०	६	३१	२७८
२	३	२६	१४	२७२	५	४०	३२	२६६	७	५३	५८	२७१	१०	११	९	२७८
३	३	३०	४६	२७२	५	४४	५८	२६५	७	५८	२९	२७१	१०	१५	४७	२७८
४	३	३५	१८	२७२	५	४९	२३	२६५	८	३	०	२७१	१०	२०	२५	२७८
५	३	३९	५०	२७२	५	५३	४८	२६५	८	७	३१	२७१	१०	२५	३	२७८
६	३	४४	२२	२७१	५	५८	१३	२६५	८	१२	२	२७१	१०	२९	४१	२७८
७	३	४८	५३	२७१	६	२	३८	२६६	८	१६	३३	२७१	१०	३४	१९	२७८
८	३	५३	२४	२७१	६	७	४	२६६	८	२१	४	२७२	१०	३८	५७	२७८
९	३	५७	५५	२७०	६	११	३०	२६६	८	२५	३६	२७२	१०	४३	३५	२७७
१०	४	२	२५	२७०	६	१५	५६	२६६	८	३०	८	२७३	१०	४८	१२	२७७
११	४	६	५५	२७०	६	२०	२२	२६६	८	३४	४१	२७३	१०	५२	४९	२७७
१२	४	११	२५	२६९	६	२४	४८	२६६	८	३९	१४	२७३	१०	५७	२६	२७७
१३	४	१५	५४	२६९	६	२९	१४	२६६	८	४३	४७	२७४	११	२	३	२७७
१४	४	२०	२३	२६९	६	३३	४०	२६६	८	४८	२१	२७४	११	६	४०	२७६
१५	४	२४	५२	२६९	६	३८	६	२६६	८	५२	५५	२७४	११	११	१६	२७६
१६	४	२९	२१	२६८	६	४२	३२	२६६	८	५७	२९	२७४	११	१५	५२	२७६
१७	४	३३	४९	२६८	६	४६	५८	२६७	९	२	३	२७५	११	२०	२८	२७५
१८	४	३८	१७	२६८	६	५१	२५	२६७	९	६	३८	२७५	११	२५	३	२७५
१९	४	४२	४५	२६८	६	५५	५२	२६७	९	११	१३	२७५	११	२९	३८	२७५
२०	४	४७	१३	२६७	७	०	१९	२६७	९	१५	४८	२७५	११	३४	१३	२७४
२१	४	५१	४०	२६७	७	४	४६	२६७	९	२०	२३	२७६	११	३८	४७	२७४
२२	४	५६	७	२६७	७	९	१३	२६७	९	२४	५९	२७६	११	४३	२१	२७३
२३	५	०	३४	२६७	७	१३	४०	२६८	९	२९	३५	२७७	११	४७	५४	२७२
२४	५	५	१	२६७	७	१८	८	२६८	९	३४	१२	२७७	११	५२	२६	२७२
२५	५	९	२८	२६७	७	२२	३६	२६८	९	३८	४९	२७७	११	५६	५८	२७१
२६	५	१३	५५	२६७	७	२७	४	२६८	९	४३	२६	२७७	१२	१	२९	२७०
२७	५	१८	२२	२६६	७	३१	३२	२६९	९	४८	३	२७७	१२	५	५९	२७०
२८	५	२२	४८	२६६	७	३६	१	२६९	९	५२	४०	२७७	१२	१०	२९	२६९
२९	५	२७	१४	२६६	७	४०	३०	२६९	९	५७	१७	२७७	१२	१४	५८	२६८
३०	५	३१	४०		७	४४	५९		१०	१	५४		१२	१९	२६	
१.	२	१४	३२	—	२	१३	२१	—	२	१६	५५	—	२	१७	३१	—
२.	२	१४	१०	—	२	१२	५९	—	२	१६	३३	—	२	१७	९	—

अंश	८ धनु			♐	९ मकर			♑	१० कुम्भ			♒	११ मीन			♓
	सांपा.का.			गति	सांपा.का.			गति	सांपा.का.			गति	सांपा.का.			गति
	घं.	मि.	से.	से.	घं.	मि.	से.	से.	घं.	मि.	से.	से.	घं.	मि.	से.	से.
०	१२	१९	२६	२६७	१४	२४	५०	२३०	१६	१०	१६	१९३	१७	४१	२१	१७५
१	१२	२३	५३	२६६	१४	२८	४०	२२९	१६	१३	२९	१९२	१७	४४	१६	१७५
२	१२	२८	१९	२६६	१४	३२	२९	२२८	१६	१६	४१	१९०	१७	४७	११	१७५
३	१२	३२	४५	२६४	१४	३६	१७	२२६	१६	१९	५१	१९०	१७	५०	६	१७५
४	१२	३७	९	२६४	१४	४०	३	२२४	१६	२३	१	१८९	१७	५३	१	१७५
५	१२	४१	३३	२६२	१४	४३	४७	२२३	१६	२६	१०	१८८	१७	५५	५६	१७५
६	१२	४५	५५	२६२	१४	४७	३०	२२२	१६	२९	१८	१८७	१७	५८	५१	१७५
७	१२	५०	१७	२६०	१४	५१	१२	२२१	१६	३२	२५	१८६	१८	१	४६	१७५
८	१२	५४	३७	२६०	१४	५४	५३	२१९	१६	३५	३१	१८६	१८	४	४१	१७४
९	१२	५८	५७	२५८	१४	५८	३२	२१७	१६	३८	३७	१८५	१८	७	३५	१७४
१०	१३	३	१५	२५७	१५	२	९	२१६	१६	४१	४२	१८४	१८	१०	२९	१७४
११	१३	७	३२	२५६	१५	५	४५	२१५	१६	४४	४६	१८३	१८	१३	२३	१७५
१२	१३	११	४८	२५४	१५	९	२०	२१४	१६	४७	४९	१८३	१८	१६	१८	१७६
१३	१३	१६	२	२५४	१५	१२	५४	२१२	१६	५०	५२	१८२	१८	१९	१४	१७६
१४	१३	२०	१६	२५२	१५	१६	२६	२११	१६	५३	५४	१८१	१८	२२	१०	१७६
१५	१३	२४	२८	२५१	१५	१९	५७	२१०	१६	५६	५५	१८१	१८	२५	६	१७६
१६	१३	२८	३९	२५०	१५	२३	२७	२०८	१६	५९	५६	१८०	१८	२८	२	१७६
१७	१३	३२	४९	२४८	१५	२६	५५	२०७	१७	२	५६	१८०	१८	३०	५८	१७६
१८	१३	३६	५७	२४७	१५	३०	२२	२०६	१७	५	५६	१७९	१८	३३	५४	१७७
१९	१३	४१	४	२४५	१५	३३	४८	२०५	१७	८	५५	१७९	१८	३६	५१	१७७
२०	१३	४५	९	२४५	१५	३७	१३	२०३	१७	११	५४	१७८	१८	३९	४८	१७७
२१	१३	४९	१४	२४३	१५	४०	३६	२०३	१७	१४	५२	१७८	१८	४२	४५	१७८
२२	१३	५३	१७	२४१	१५	४३	५८	२०१	१७	१७	५०	१७८	१८	४५	४३	१७९
२३	१३	५७	१८	२४०	१५	४७	२०	२००	१७	२०	४८	१७७	१८	४८	४२	१७९
२४	१४	१	१८	२३९	१५	५०	४०	१९८	१७	२३	४५	१७६	१८	५१	४१	१७९
२५	१४	५	१७	२३८	१५	५३	५८	१९८	१७	२६	४१	१७६	१८	५४	४०	१८०
२६	१४	९	१५	२३६	१५	५७	१६	१९७	१७	२९	३७	१७६	१८	५७	४०	१८०
२७	१४	१३	११	२३४	१६	०	३३	१९५	१७	३२	३३	१७६	१९	०	४०	१८१
२८	१४	१७	५	२३३	१६	३	४८	१९५	१७	३५	२९	१७६	१९	३	४१	१८२
२९	१४	२०	५८	२३२	१६	७	३	१९३	१७	३८	२५	१७६	१९	६	४३	१८२
३०	१४	२४	५०		१६	१०	१६		१७	४१	२१		१९	९	४५	
१.	२	५	२४	—	१	४५	२७	—	१	३१	४	—	१	२८	२४	—
२.	२	५	४	—	१	४५	१०	—	१	३०	४९	—	१	२८	१०	—

१. लग्न-भोग सांपातिक काल में ।

२. लग्न-भोग सावनकाल(घड़ी के समय) में ।

सामान्य वर्ष को ० जनवरी, प्लुत वर्ष (लीप-ईयर) को १ जनवरी को विश्वकाल G.M.T. से घं.० बजे अर्थात् भा.प्र. समय I.S.T. से घ.५ मि.३० बजे के लिए

❋ ३०० वर्ष की सूर्य-सारणी ❋

शताब्दि	मध्यम सायन सूर्य अंश कला विकला	मन्द केन्द्र अंश कला विकला	मास	मध्यम सूर्य अंश कला विकला	मन्द केन्द्र अंश कला विकला	तारीख	मध्यम सूर्य अंश कला विकला	मन्द केन्द्र अंश कला विकला	घण्टा	म. सूर्य एवं मंदकेंद्र कला विकला
१८००	२७९-२५-१५·१७	३५५-५५- ७·४८	जनवरी (साधारण वर्ष)	०-५९- ८·३३	०-५९- ८·१६	१	०- ०- ०·००	०- ०- ०·००	१	२-२७·८५
१९००	२७९-१२-१३·८८	३५७-५८-५८·९६	जनवरी प्लुत वर्ष	०- ०- ०·००	०- ०- ०·००	२	०-५९- ८·३३	०-५९- ८·१६	२	४-५५·६९
२०००	२७९-५८-२३·१०	३५७- १-५८·९०	फरवरी साधारण वर्ष	३१-३२-२६·५७	३१-३२-२१·१५	३	१-५८-१६·६६	१-५८ १६·३२	३	७-२३·२४
वर्ष	—	—	—	—	—	४	२-५७-२५·००	२-५७-२४·४८	४	९-५१·३९
१	३५९-४५-४०·५८	३५९-४४-३८·७४	फरवरी प्लुत वर्ष	३०-३३-१८·२४	३०-३३-१२·९९	५	३-५६-३३·३३	३-५६-३२·६४	५	१२-१९·२४
२	३५९-३१-२१·१६	३५९-२९-१७·४९	—	—	—	—	—	—	६	१४-४७·०८
३	३५९-१७- १·७४	३५९-१३-५६·२०	मार्च	५९- ८-१९·२८	५९- ८- ९·६१	६	४-५५-४१·६६	४-५५-४०·८०	१२	२९-३४·१७
—	—	—	अप्रैल	८९-४१-३८·०६	८९-४१-२२·६४	७	५-५४-५०·००	५-५४-४८·९६	१८	४४-२१·२५
—	—	—	मई	११९-१५-४७·९०	११९-१५-२७·४८	८	६-५३-५८·३३	६-५३-५७·१२	मिनट	—
४	०- १-५०·७३	३५९-५७-४३·१६	जून	१४९-४९- ६·२२	१४९-४८-४०·४६	९	७-५३- ६·६६	७-५३- ५·२८	१	०- २·४६
८	०- ३-४१·४५	३५९-५५-२६·३३	जुलाई	१७९-२३-१६·१३	१७९-२२-४५·२९	१०	८-५२-१५·००	८-५२-१३·४४	२	०- ४·९३
१२	०- ५-३२·१८	३५९-५३- ९·५०	—	—	—	—	—	—	३	०- ७·३९
१६	०- ७-२२·९२	३५९-५०-५२·६६	अगस्त	२०९-५६-३४·३८	२०९-५५-५८·२९	१५	१३-४७-५६·६४	१३-४७-५४·२४	४	०- ९·८६
—	—	—	सितम्बर	२४०-२९-५२·६२	२४०-२९-११·२८	२०	१८-४३-३८·२७	१८-४३-३६·०४	५	०-१२·३२
२०	०- ९-१३·६७	३५९-४८-३५·८२	अक्टूबर	२७०- ४- २·५३	२७०- ३-१६·१०	—	—	—	१०	०-२४·६४
४०	०-१८-२७·४२	३५९-३७-११·५६	नवम्बर	३००-३७-२०·७७	३००-३६-२९·०९	२५	२३-३९-१९·९२	२३-३९-१५·८८	२०	०-४९·२८
६०	०-२७-४१·२७	३५९-२५-४७·२७	दिसम्बर	३३०-११-३०·६८	३३०-१०-३३·९२	३०	२८-३५- १·५७	२८-३४-५६·६४	३०	१-१३-९२
८०	०-३६-५५·२०	३५९-१४-२२·९३	—	—	—	३१	२९-३४- ९·९०	२९-३४- ४·८०	४०	१-३८·५६

इस सारणी का उपयोग बड़ा सरल है। शताब्दि, वर्ष, मास, दिनांक (तारीख) के घण्टा-मिनट के सामने लिखे मध्यम सायन-सूर्य और मन्दकेन्द्र के अंश, कला, विकला को क्रमशः जोड़ दीजिए तो इष्ट शताब्दि के इष्ट वर्ष, मास, दिनांक, घण्टा-मिनट का मध्यम सायन सूर्य और मन्दकेन्द्र ज्ञात हो जायेगा। पाठक यह तो जानते ही हैं कि सम्पूर्ण राशिचक्र में ३६० अंश होते हैं ; अतः उपर्युक्त शताब्दि, वर्ष, मासादि के मध्यम सायन सूर्य और मन्दकेन्द्र के अंकों का जोड़ ३६० से अधिक हो तो उसमें ३६० अंश जितनी बार घट सके, उतनी बार घटा दीजिए ; तब जो ३६० अंश से न्यून अंशादि बचेगा, वही अभीष्ट मध्यम सायन सूर्य और उसका मन्दकेन्द्र होगा। मन्दकेन्द्र वह उपकरण होता है जिसके द्वारा मन्दफल ज्ञात किया जाता है। मन्दफल का संस्कार मध्यम सूर्य में करने से स्पष्ट सूर्य ज्ञात होता है। मन्दफल का सूत्र हमने द्विपदीय रखा है अर्थात् उसका गणित दो पद (हिस्से) में कर, दो फल लाना होगा। दोनों पदों का फलैक्य मंदफल होगा। इसके अलावा एक और मुख्य संस्कार होता है किरण-पुरस्सरण(Aberration)संस्कार ; किन्तु हमने इसके मध्यममान २१″ का उपयोग स्थिरांक के रूप में किया है। यहाँ पहले मध्यम सूर्य और मन्दकेन्द्र का उदाहरण, तत्पश्चात् मन्दफल के गणित-सूत्र दिये गये हैं ; फिर गणित-सूत्र से मन्दकेन्द्रानुसार मंदफल का संस्कार मध्यम सूर्य में कर स्पष्ट सूर्य-साधन किया गया है। किरण-पुरस्सरण संस्कार हमेशा मध्यम सूर्य में ऋण किया जाता है।

उदाहरण—ता. १ जनवरी सन् १९५७ को भा. प्र. समय से घं. ५ मि. ३० बजे का सूर्य स्पष्ट कीजिए।

वर्ष	मध्यम सूर्य	मन्दकेन्द्र
१९००	२७९-१२-१३·८८	३५७-५८-५८·९६
४०	०-१८-२७·४२	३५९-३७-११·५६
१६	०- ७-२२·९३	३५९-५०-५२·६६
१	३५९-४५-४०·५८	३५९-४४-३८·७४
१ जनवरी१	०-५९- ८·३३	०-५९- ८·१६
योग	६४०-२२-५३·१४	योग १४३८-१०-५०·०८
−१ चक्र	३६०- ०- ०-	३ चक्र १०८०- ०-०

म.सायनसूर्य २८०-२२-५३·१४ मन्दकेन्द्र ३५८-१०-५०·०८

रवि मन्दफल का सूत्र—

(६९०४″·६ − १७″·५९ ट) ज्या मं. + ७२·२″ ज्या २ मं.

यह $ट = \frac{\text{वर्ष-संख्या}}{१००}$ तथा मं. = मन्दकेन्द्र

है। जैसे, यह सन् १९५७ ई. के वर्ष की संख्या ५७ ÷ १०० = ०·५७ = ट है और मन्दकेन्द्र ३५८।१०।५० है। अतः मन्दफलानयन के लिये इसको ३६० में घटाया तो शेष अंशादि १।४९।१० चतुर्थपदीय भुज = मं. (−) हुआ। इसको द्विगुणित किया तो अंशादि ३।३८।२० = २ मन्दकेन्द्र (−) हुआ। १७″·५९ को ०·५७ से गुणाकर गुणन-फल १०″·० को ६९०४″·६ में घटाया तो शेष ६८९४″·६ रहा जिसका लाघवांक ३·८३८५१ है। अब—

ला ज्या मन्दकेन्द्र	८·५०१७४	(−)
+ ला ६८९४″·६	३·८३८५१	(+)
= ला प्रथम फल २१८″·९	१२·३४०२५	(−)
ला ज्या २ मं.	८·८०२५५	(−)
+ ला ७२″·२	१·८५८५४	(+)
= ला द्वितीय फल ४″·५८	१०·६६१०९	(−)

२१८″·९(−) + ४″·५८(−) = ३′−४३″·४८ मन्दफल (−) हुआ; क्योंकि चतुर्थपद में भुजज्या ऋण होती है। १ जनवरी १९५७ ई० को अयनांश २३°।१५′।२३″ है। इसको सायन मध्यम सूर्य अंशादि २८०।२२।५३ में घटाया तो शेष २५७°-७′-३०″ मध्यम निरयण सूर्य हुआ। इसमें मन्दफल ०-३′-४३″ तथा स्थिरांक [किरण-पुरस्सरण] २१″ विकला घटाने से शेष २५७°।३′।२६″ रहा। २५७° में ३० का भाग देकर राश्यादि बनाने पर रा. ८।१७°।३′।२६″ स्पष्ट सूर्य हुआ।

जिन लोगों को त्रिकोणमितीय गणित का ज्ञान नहीं है, उनके उपयोग के लिए आगे सूर्य-मंदफल और मंदकर्ण की सारणी भी इस वर्ष दी जा रही है। उसमें मंदकेंद्र के एक-एक अंश का मंदफल अंश, कला, विकला में दिया गया है। अभीष्ट मंदकेंद्र के अंश के साथ जो कला, विकला हो, उसके फल को सामान्य अनुपात से जान कर मंद-केंद्रांश के मंदफल में यथा-क्रम जोड़ या घटा लेना चाहिए। सारणी की पाद टिप्पणी के नियमानुसार मंदलफ को मध्यम सूर्य में जोड़ने या घटाने से स्पष्ट सूर्य ज्ञात होता है जिसका उदाहरण आगे दिया जा रहा है। खगोल-गणित में सूर्य-चंद्रादि ग्रहों के मंदकर्ण की भी आवश्यकता पड़ा करती है; देखिए इसी 'चिन्ताहरण पञ्चाङ्ग' के पृष्ठ-संख्या ८३ पर सूक्ष्म 'सितकोण'-साधन' का उदाहरण। मंदकर्ण का परिचय और गणित-विधि तथा शुद्ध सायन-सूर्य-साधन का गणितोदाहरण अगले वर्ष के पञ्चाङ्ग में प्रकाशित किया जायेगा। इस वर्ष मंदफल की सारणी द्वारा नयी-पुरानी कुण्डलियों के लिए सूक्ष्म शुद्ध निरयण सूर्य स्पष्ट करने का अभ्यास गणित-ज्योतिष-प्रेमियों को कर लेना चाहिए।

उदाहरण—उपर्युक्त उदाहरण में मंदकेंद्र ३५८°-१०′-५०″ का मंदफल सारणी से लाने के लिए मंदकेंद्र-अंश ३५८ के सामने मंदफल ०°-४′-६″ तथा मंदकेंद्र अंश ३५९ के सामने मंदफल ०°-२′-३″ मिला। दोनों का अन्तर २′-३″ उक्त मंदकेंद्र के १ अंश की गति हुई अर्थात् मंदकेंद्र ३५८° के बाद १ अंश = ३६०० विकला में २′-३″ = १२३ विकला घटता है। हमें ३५८ अंश के बाद १०′-५०″ = ६५० विकला का फल चाहिए; अतः अनुपात किया कि ३६०० विकला में मंदफल १२३″ घटता है तो ६५० विकला में कितना घटेगा?

$$\therefore \frac{१२३ \times ६५०}{३६००} = २२·२$$ विकला, जिसे मंदकेंद्र ३५८ के मंदफल ०-४′-६″ में घटा दिया तो मंदकेंद्र ३५८°-१०′-५०″ का मंदफल ०°-३′-४३″·८ प्राप्त हुआ। मंदकेंद्र १८०° से अधिक होने के कारण यह मंदफल ऋणात्मक है। अतः उक्त निरयण मध्यम सूर्य २५७°-७′-३०″ में इस मंदफल ०°-३′-४४″ तथा स्थिरांक (किरण-पुरस्सरण-संस्कार) २१″ विकला को घटाने से अंशादि २५७°-३′-२५″ शेष रहा है। २५७° में पूर्ववत् ३० का भाग देकर राश्यादि बनाने पर सूर्य रा. ८-१७°-३′-२५″ सारणी से सहज ही स्पष्ट हो गया। उक्त दिन श्रीलाहिरीजी की ग्रह-पञ्जिका (Indian Ephemeries) में भा. प्र. समय से घं. ५ मि. ३० बजे का सूर्य स्पष्ट रा. ८-१७°-३′-२४″ छपा है; इस सारणी से बने स्पष्ट सूर्य का अन्तर सिर्फ १″ विकला है जो सारणी की सरलता को देखते हुए उपेक्ष्य है। इतनी सूक्ष्म और सरल सूर्य-सारणी आज तक किसी भाषा में प्रकाशित नहीं हुई।

—श्री ए० पी० सिंह, कलकत्ता।

॥ सूर्य-मंदफल एवं मंदकर्ण-सारणी ॥

मं. के. अं.	मंदफल अं. क. वि.	मंदकर्ण	मंद केंद्र अंश	मं. कें. अं.	मंदफल अं. क. वि.	मंदकर्ण	मंद केंद्र अंश	मंद केंद्र अंश	मंदफल अं. क. वि.	मंदकर्ण	मंद केंद्र अंश	मंद केंद्र अंश	मंदफल अं. क. वि.	मंदकर्ण	मंद केंद्र अंश
०	० ० ०	०·९८३२८२४	३६०	४५	१ २२ २९	०·९८८३१९५	३१५	९०	१ ५४ ५७	१·०००२८०१	२७०	१३५	१ २० ४	१·०११९६१३	२२५
१	० २ ३	२८६१	३५९	४६	१ २३ ५३	५३२४	३१४	९१	१ ५४ ५३	५७१३	२६९	१३६	१ १८ ३९	१·०१२१६१०	२२४
२	० ४ ६	२९३४	३५८	४७	१ २५ १६	७४९०	३१३	९२	१ ५४ ४७	१·०००८६३१	२६८	१३७	१ १७ ११	३५६७	२२३
३	० ६ ८	३०७२	३५७	४८	१ २६ ३७	०·९८८९६९०	३१२	९३	१ ५४ ४०	१·००११५४८	२६७	१३८	१ १५ ४३	५४९१	२२२
४	० ८ ११	३२५६	३५६	४९	१ २७ ५६	०·९८९१९२३	३११	९४	१ ५४ ३०	४४४८	२६६	१३९	१ १४ १४	७३७७	२२१
५	० १० १४	३४९२	३५५	५०	१ २९ १४	४१९०	३१०	९५	१ ५४ १८	१·००१३३४९	२६५	१४०	१ १२ ४२	१·०१२९२२९	२२०
६	० १२ १६	३७८१	३५४	५१	१ ३० ३०	६४८९	३०९	९६	१ ५४ ४	१·००२०२४४	२६४	१४१	१ ११ ९	१·०१३१०३१	२१९
७	० १४ १८	४१२३	३५३	५२	१ ३१ ४५	०·९८९८८२१	३०८	९७	१ ५३ ४८	३१३२	२६३	१४२	१ ९ ३६	२८००	२१८
८	० १६ २०	४५१५	३५२	५३	१ ३२ ५७	०·९९०११८२	३०७	९८	१ ३ २९	६०१३	२६२	१४३	१ ८ १	४५२९	२१७
९	० १८ २१	४९६१	३५१	५४	१ ३४ ८	३५७४	३०६	९९	१ ५३ ९	१·००२८८८४	२६१	१४४	१ ६ २५	६२१७	२१६
१०	० २० २३	५४५८	३५०	५५	१ ३५ १७	५९९६	३०५	१००	१ ५२ ४७	१·००३१७४६	२६०	१४५	१ ४ ४८	७८६६	२१५
११	० २२ २४	६००८	३४९	५६	१ ३६ २४	०·९९०८४८५	३०४	१०१	१ ५२ २३	४५९७	२५९	१४६	१ ३ १०	१·०१३९४७३	२१४
१२	० २४ २३	६६०३	३४८	५७	१ ३७ ३०	०·९९१०९२३	३०३	१०२	१ ५१ ५६	१·००३७४३७	२५८	१४७	१ १ ३०	१·०१४१०३९	२१३
१३	० २६ २	७२६०	३४७	५८	१ ३८ ३३	३४२८	३०२	१०३	१ ५१ २८	१·००४०२९६	२५७	१४८	० ५९ ५०	२५६२	२१२
१४	० २८ २१	७९६४	३४६	५९	१ ३९ ३५	५९६०	३०१	१०४	१ ५० ५८	३०८०	२५६	१४९	० ५८ ८	४०४३	२११
१५	० ३० २१	८७१८	३४५	६०	१ ४० ३५	०·९९१८५१६	३००	१०५	१ ५० २५	५८८१	२५५	१५०	० ५६ २६	५४७७	२१०
१६	० ३२ १९	०·९८३९५२३	३४४	६१	१ ४१ ३३	०·९९२१०२७	२९९	१०६	१ ४९ ५१	१·००४८६६७	२५४	१५१	० ५४ ४२	६८७६	२०९
१७	० ३४ १७	०·९८४०३७८	३४३	६२	१ ४२ २९	३७००	२९८	१०७	१ ४९ १५	१·००५१४३९	२५३	१५२	५२ ५८	८२२८	२०८
१८	० ३६ १४	१२७५	३४२	६३	१ ४३ २३	६३३०	२९७	१०८	१ ४८ ३७	४१९३	२५२	१५३	० ५१ १३	१·०१४९५३५	२०७
१९	० ३८ १०	२२३९	३४१	६४	१ ४४ १५	०·९९२८९८०	२९६	१०९	१ ४७ ५६	६९३०	२५१	१५४	० ४९ २६	१·०१५०७९८	२०६
२०	० ४० ५	३२४३	३४०	६५	१ ४५ ६	०·९९३१६५८	२९५	११०	१ ४७ १४	१·००५९६५०	२५०	१५५	० ४७ ३९	२०१६	२०५
२१	० ४२ ०	४२९७	३३९	६६	१ ४५ ५४	४३४८	२९४	१११	१ ४६ ३०	१·००६२३५१	२४९	१५६	० ४५ ५१	३१८९	२०४
२२	० ४३ ५४	५३९९	३३८	६७	१ ४६ ४०	७०५४	२९३	११२	१ ४५ ४४	५०३३	२४८	१५७	० ४४ ३	४३१७	२०३
२३	० ४५ ४७	६५५१	३३७	६८	१ ४७ २४	०·९९३९७८५	२९२	११३	१ ४४ ५६	१·००६७६९४	२४७	१५८	० ४२ १३	५३९९	२०२
२४	० ४७ ३९	७७४९	३३६	६९	१ ४८ ७	०·९९४२५३३	२९१	११४	१ ४४ ७	१·००७०३३४	२४६	१५९	० ४० २३	६४३५	२०१
२५	० ४९ ३०	०·९८४८९९६	३३५	७०	१ ४८ ४७	५२९८	२९०	११५	१ ४३ १५	२९५२	२४५	१६०	० ३८ ३२	७४२५	२००
२६	० ५१ २०	०·९८५०२९०	३३४	७१	१ ४९ २५	०·९९४८०३८	२८९	११६	१ ४२ २२	५५४८	२४४	१६१	० ३६ ४१	८३६९	१९९
२७	० ५३ ९	१६३१	३३३	७२	१ ५० १	०·९९५०८७५	२८८	११७	१ ४१ २९	१·००७८१२०	२४३	१६२	० ३४ ४९	१·०१५९२५५	१९८
२८	० ५४ ५८	३०१८	३३२	७३	१ ५० ३६	३६८५	२८७	११८	१ ४० २९	१·००८०६६८	२४२	१६३	० ३२ ५६	१·०१६०११४	१९७
२९	० ५६ ४५	४४५२	३३१	७४	१ ५१ ८	६५०९	२८६	११९	१ ३९ ३१	३१९१	२४१	१६४	० ३१ ३	०९१७	१९६
३०	० ५८ ३१	०·९८५५९३५	३३०	७५	१ ५१ ३८	०·९९५९३४७	२८५	१२०	१ ३८ ३०	५६८८	२४०	१६५	० २९ ९	१६७०	१९५
३१	१ ० १६	७४५३	३२९	७६	१ ५२ ५	०·९९६२१९४	२८४	१२१	१ ३७ २८	१·००८८१६०	२३९	१६६	० २७ १५	२३७८	१९४
३२	१ २ ०	०·९८५९०२२	३२८	७७	१ ५२ ३१	५०५४	२८३	१२२	१ ३६ २४	१·००९०६०४	२३८	१६७	० २५ २०	३०३६	१९३
३३	१ ३ ४३	०·९८६०६३३	३२७	७८	१ ५२ ५५	०·९९६७९२३	२८२	१२३	१ ३५ १८	३०२१	२३७	१६८	० २३ २४	३६४७	१९२
३४	१ ५ २३	२२८९	३२६	७९	१ ५३ १७	०·९९७०८०१	२८१	१२४	१ ३४ ११	५४०९	२३६	१६९	० २१ २९	४२१०	१९१
३५	१ ७ ४	३९८६	३२५	८०	१ ५३ ३६	३६८८	२८०	१२५	१ ३३ १	१·००९७७६८	२३५	१७०	० १९ ३३	४७२४	१९०
३६	१ ८ ४२	५७२७	३२४	८१	१ ५३ ५४	६५८०	२७९	१२६	१ ३१ ५१	१·०१०००९६	२३४	१७१	० १७ ३७	५१९०	१८९
३७	१ १० २०	७५०९	३२३	८२	१ ५४ ९	०·९९७९४८१	२७८	१२७	१ ३० ३८	२३९६	२३३	१७२	० १५ ४०	५६०७	१८८
३८	१ ११ ५६	०·९८६९३३२	३२२	८३	१ ५४ २३	०·९९८२३८६	२७७	१२८	१ २९ २४	४६६२	२३२	१७३	० १३ ४३	५९७५	१८७
३९	१ १३ ३१	०·९८७११९७	३२१	८४	१ ५४ ३४	५२९६	२७६	१२९	१ २८ ९	६८९९	२३१	१७४	० ११ ४६	६२९५	१८६
४०	१ १५ ४	३१०१	३२०	८५	१ ५४ ४३	०·९९८८२०९	२७५	१३०	१ २६ ५२	१·०१०९१००	२३०	१७५	० ९ ४९	६५६५	१८५
४१	१ १६ ३६	५०४३	३१९	८६	१ ५४ ५०	०·९९९११२९	२७४	१३१	१ २५ ३३	१·०१११२७३	२२९	१७६	० ७ ५१	६७८६	१८४
४२	१ १८ ६	७०२५	३१८	८७	१ ५४ ५५	४०४४	२७३	१३२	१ २४ १३	३४१०	२२८	१७७	० ५ ५३	६९५८	१८३
४३	१ १९ ३५	०·९८७९०४७	३१७	८८	१ ५४ ५७	६९६३	२७२	१३३	१ २२ ५२	५५१२	२२७	१७८	० ३ ५६	७०८२	१८२
४४	१ २१ ३	०·९८८११०२	३१६	८९	१ ५४ ५८	०·९९९९८८३	२७१	१३४	१ २१ २९	७५८०	२२६	१७९	० १ ५८	७१५५	१८१
४५	१ २२ २९	३१९५	३१५	९०	१ ५४ ५७	१·०००२८०१	२७०	१३५	१ २० ४	१·०११९६१३	२२५	१८०	० ० ०	१·०१६७१८०	१८०

टिप्पणी—मंदकेंद्र के ० अंश से १८० अंश तक का मंदफल + धनात्मक तथा मंदकेंद्र के १८० अंश से ३६० अंश तक का मंदफल – ऋणात्मक है। तदनुसार मंदफल को मध्यम सूर्य में धन या ऋण करना चाहिए।

लाघवांक-कोष्ठक से इष्ट-कालीन ग्रह-स्पष्टीकरण की विधि—जिस एक खास समय के लिये हम ज्योतिर्षीय गणना जैसे लग्न एवं ग्रह स्पष्टादि करते हैं, वही हमारा इष्टकाल होता है। वह इष्टकाल सूर्य-घड़ी के घंटा मिनटात्मक समय में, स्थानिक समय के घं. मि. में, भारतीय प्रमाणित समय (रेलवे-रेडियो-टाइम) में अथवा स्थानिक स्पष्ट सूर्योदयात् घटी पल में हो सकता है और इनमें-से प्रत्येक अपने रूप में शुद्ध होगा; किसी को अशुद्ध अथवा अनुपयोगी नहीं कहा जा सकता; बेशक, उपयोग ठीक से, अपनी जगह, होना चाहिये। इष्ट-काल तभी अशुद्ध कहा जा सकता है, जब किसी भी प्रकार के समय में उसका ठीक ज्ञान अथवा निश्चय नहीं किया जा सका हो। बहुत से पुरातनपंथी ज्योतिषीगण स्टैं. टा. के इष्टकाल अथवा स्थानिक समय (लोकल टाइम) के इष्टकाल को अशुद्ध मानते अथवा भोली जनता के समक्ष अशुद्ध बतलाते हैं। वे स्थानीय सूर्यघड़ी के सूर्योदय-समय को जन्म-समय में घटाकर शेष को ढाई गुना कर घटी, पल बनाते तथा उसी घटी पलात्मक इष्टकाल को शास्त्रसम्मत शुद्ध इष्टकाल मानते हैं; लेकिन इस प्रक्रिया में भी

❀ लाघवाङ्क-कोष्ठक ❀

मि.	घं. ०	घं. १	घं. २	घं. ३	घं. ४	घं. ५	घं. ६	घं. ७	घं. ८	मि.
०	अनन्त	१.३८०२	१.०७९२	९०३१	७७८१	६८१२	६०२१	५३५१	४७७१	०
१	३.१५८४	१.३७३०	१.०७५६	९००७	७७६३	६७९८	६००९	५३४१	४७६२	१
२	२.८५७३	१.३६६०	१.०७२०	८९८३	७७४५	६७८४	५९९७	५३३०	४७५३	२
३	२.६८१२	१.३५९०	१.०६८५	८९५९	७७२८	६७६९	५९८५	५३२०	४७४४	३
४	२.५५६३	१.३५२२	१.०६४९	८९३५	७७१०	६७५५	५९७३	५३१०	४७३५	४
५	२.४५९४	१.३४५४	१.०६१४	८९१२	७६९२	६७४१	५९६१	५३००	४७२६	५
६	२.३८०२	१.३३८८	१.०५८०	८८८८	७६७४	६७२६	५९४९	५२८९	४७१७	६
७	२.३१३३	१.३३२३	१.०५४६	८८६५	७६५७	६७१२	५९३७	५२७९	४७०८	७
८	२.२५५३	१.३२५८	१.०५११	८८४२	७६३९	६६९८	५९२५	५२६९	४६९९	८
९	२.२०४१	१.३१९५	१.०४७८	८८१९	७६२२	६६८४	५९१३	५२५९	४६९०	९
१०	२.१५८४	१.३१३३	१.०४४४	८७९६	७६०४	६६७०	५९०२	५२४९	४६८२	१०
११	२.११७०	१.३०७१	१.०४११	८७७३	७५८७	६६५६	५८९०	५२३९	४६७३	११
१२	२.०७९२	१.३०१०	१.०३७८	८७५१	७५७०	६६४२	५८७८	५२२९	४६६४	१२
१३	२.०४४४	१.२९५०	१.०३४५	८७२८	७५५२	६६२८	५८६६	५२१९	४६५५	१३
१४	२.०१२२	१.२८९१	१.०३१३	८७०६	७५३५	६६१४	५८५५	५२०९	४६४६	१४
१५	१.९८२३	१.२८३३	१.०२८०	८६८३	७५१८	६६००	५८४३	५१९९	४६३८	१५
१६	१.९५४२	१.२७७५	१.०२४८	८६६१	७५०१	६५८७	५८३२	५१८९	४६२९	१६
१७	१.९२७९	१.२७१९	१.०२१६	८६३९	७४८४	६५७३	५८२०	५१७९	४६२०	१७
१८	१.९०३१	१.२६६३	१.०१८५	८६१७	७४६७	६५५९	५८०९	५१६९	४६११	१८
१९	१.८७९६	१.२६०७	१.०१५३	८५९५	७४५१	६५४६	५७९७	५१५९	४६०३	१९
२०	१.८५७३	१.२५५३	१.०१२२	८५७३	७४३४	६५३२	५७८६	५१४९	४५९४	२०
२१	१.८३६१	१.२४९९	१.००९१	८५५२	७४१७	६५१९	५७७४	५१३९	४५८५	२१
२२	१.८१५९	१.२४४५	१.००६१	८५३०	७४०१	६५०५	५७६३	५१२९	४५७७	२२
२३	१.७९६६	१.२३९३	१.००३०	८५०९	७३८४	६४९२	५७५२	५१२०	४५६८	२३
२४	१.७७८१	१.२३४१	१.००००	८४८७	७३६८	६४७८	५७४०	५११०	४५५९	२४
२५	१.७६०४	१.२२८९	०.९९७०	८४६६	७३५१	६४६५	५७२९	५१००	४५५१	२५
२६	१.७४३४	१.२२३९	०.९९४०	८४४५	७३३५	६४५१	५७१८	५०९०	४५४२	२६
२७	१.७२७०	१.२१८८	०.९९१०	८४२४	७३१८	६४३८	५७०६	५०८१	४५३४	२७
२८	१.७११२	१.२१३९	०.९८८१	८४०३	७३०२	६४२५	५६९५	५०७१	४५२५	२८
२९	१.६९६०	१.२०९०	०.९८५२	८३८२	७२८६	६४१२	५६८४	५०६१	४५१६	२९
३०	१.६८१२	१.२०४१	०.९८२३	८३६१	७२७०	६३९८	५६७३	५०५१	४५०८	३०
३१	१.६६७०	१.१९९३	०.९७९४	८३४१	७२५४	६३८५	५६६२	५०४२	४४९९	३१
३२	१.६५३२	१.१९४६	०.९७६५	८३२०	७२३८	६३७२	५६५१	५०३२	४४९१	३२
३३	१.६३९८	१.१८९९	०.९७३७	८३००	७२२२	६३५९	५६४०	५०२३	४४८२	३३
३४	१.६२६९	१.१८५२	०.९७०८	८२७९	७२०६	६३४६	५६२९	५०१३	४४७४	३४
३५	१.६१४३	१.१८०६	०.९६८०	८२५९	७१९०	६३३३	५६१८	५००३	४४६६	३५
३६	१.६०२१	१.१७६१	०.९६५२	८२३९	७१७४	६३२०	५६०७	४९९४	४४५७	३६
३७	१.५९०२	१.१७१६	०.९६२५	८२१९	७१५९	६३०७	५५९६	४९८४	४४४९	३७
३८	१.५७८६	१.१६७१	०.९५९७	८१९९	७१४३	६२९४	५५८५	४९७५	४४४०	३८
३९	१.५६७३	१.१६२७	०.९५७०	८१७९	७१२८	६२८२	५५७४	४९६५	४४३२	३९
४०	१.५५६३	१.१५८४	०.९५४२	८१५९	७११२	६२६९	५५६३	४९५६	४४२४	४०
४१	१.५४५६	१.१५४०	०.९५१५	८१४०	७०९७	६२५६	५५५२	४९४७	४४१५	४१
४२	१.५३५१	१.१४९८	०.९४८८	८१२०	७०८१	६२४३	५५४१	४९३७	४४०७	४२
४३	१.५२४९	१.१४५५	०.९४६२	८१०१	७०६६	६२३१	५५३१	४९२८	४३९९	४३
४४	१.५१४९	१.१४१३	०.९४३५	८०८१	७०५०	६२१८	५५२०	४९१८	४३९०	४४
४५	१.५०५१	१.१३७२	०.९४०९	८०६२	७०३५	६२०५	५५०९	४९०९	४३८२	४५
४६	१.४९५६	१.१३३१	०.९३८३	८०४३	७०२०	६१९३	५४९८	४९००	४३७४	४६
४७	१.४८६३	१.१२९०	०.९३५६	८०२३	७००५	६१८०	५४८८	४८९०	४३६५	४७
४८	१.४७७१	१.१२४९	०.९३३०	८००४	६९९०	६१६८	५४७७	४८८१	४३५७	४८
४९	१.४६८२	१.१२०९	०.९३०५	७९८५	६९७५	६१५५	५४६६	४८७२	४३४९	४९
५०	१.४५९४	१.११७०	०.९२७९	७९६६	६९६०	६१४३	५४५६	४८६३	४३४१	५०
५१	१.४५०८	१.११३०	०.९२५४	७९४७	६९४५	६१३१	५४४५	४८५३	४३३३	५१
५२	१.४४२४	१.१०९१	०.९२२८	७९२९	६९३०	६११८	५४३५	४८४४	४३२४	५२
५३	१.४३४१	१.१०५३	०.९२०३	७९१०	६९१५	६१०६	५४२४	४८३५	४३१६	५३
५४	१.४२६०	१.१०१५	०.९१७८	७८९१	६९००	६०९४	५४१४	४८२६	४३०८	५४
५५	१.४१८०	१.०९७७	०.९१५३	७८७३	६८८५	६०८१	५४०३	४८१७	४३००	५५
५६	१.४१०२	१.०९३९	०.९१२८	७८५४	६८७१	६०६९	५३९३	४८०८	४२९२	५६
५७	१.४०२५	१.०९०२	०.९१०४	७८३६	६८५६	६०५७	५३८२	४७९९	४२८४	५७
५८	१.३९४९	१.०८६५	०.९०७९	७८१८	६८४१	६०४५	५३७२	४७८९	४२७६	५८
५९	१.३८७५	१.०८२८	०.९०५५	७८००	६८२७	६०३३	५३६१	४७८०	४२६८	५९

अधिकतर ज्योतिषी यह भयंकर भूल कर जाते हैं कि वे जन्म के मध्यमकाल (यत्रघड़ी के समय) में-से स्थानिक स्पष्टकाल (सूर्यघड़ी) के सूर्योदय का समय घटा देते हैं। इस प्रकार उनका शास्त्रीय इष्टकाल शुद्ध के बजाय और भी अशुद्ध हो जाता है। वस्तुतः जन्मादि-समय रेलवे-रेडियो के समय (I. S. T.) में नोट किया गया हो (जैसाकि आजकल प्रायः समस्त भारत में किया जाता है) तो जन्मादि-स्थान के सूर्योदय का समय भी स्टैं. टा. वाला ही उसमें-से घटाना चाहिये और शेष को ढाईगुना कर घटी, पलात्मक इष्टकाल बनाना चाहिये। जन्म के स्टैं. टा. को सूर्य-घड़ी का स्पष्टकाल बनाने की आवश्यक्ता नहीं; यदि बनाया ही जावे तो उसमें-से उस स्थान के सूर्योदय का भी स्पष्टकाल घटाना चाहिये, न कि स्थानिक मध्यम समय (लोकल मीन टाइम) अथवा स्टैं. टा. के सूर्योदय को घटाकर शेष को ढाई-गुना करे। मतलब, जन्म-समय तथा सूर्योदय का समय सजातीय (एक ही प्रकार का) होना चाहिय, भिन्न प्रकार का नहीं। काशी के स्थूल, अशुद्ध ग्रहलाघवीय आदि कई पञ्चाङ्गों में काशी की सूर्य-घड़ी का सूर्योदय-काल दिया रहता है, उसको बिना स्टैं. टा. बनाये जो लोग प्रचलित घड़ियों के (स्टैं.) जन्मादि समय में-से घटा लेते तथा शेष को ढाई-गुना कर इष्टकाल बनाते हैं, वे जान या अनजान में ज्योतिष-

❀ लाघवाङ्क-कोष्ठक ❀

मि.	घं. ९	घं. १०	घं. ११	घं. १२	घं. १३	घं. १४	घं. १५	घं. १६	घं. १७	घं. १८	घं. १९	घं. २०	घं. २१	घं. २२	घं. २३	मि.
०	४२६०	३८०२	३३८८	३०१०	२६६३	२३४१	२०४१	१७६१	१४९८	१२४९	१०१५	०७९२	०५८०	०३७८	०१८५	०
१	४२५२	३७९५	३३८२	३००४	२६५७	२३३६	२०३६	१७५६	१४९३	१२४५	१०११	०७८८	०५७७	०३७५	०१८२	१
२	४२४४	३७८८	३३७५	२९९८	२६५२	२३३०	२०३२	१७५२	१४८९	१२४१	१००७	०७८५	०५७३	०३७१	०१७९	२
३	४२३६	३७८०	३३६८	२९९२	२६४६	२३२५	२०२७	१७४७	१४८५	१२३७	१००३	०७८१	०५७०	०३६८	०१७५	३
४	४२२८	३७७३	३३६२	२९८६	२६४०	२३२०	२०२२	१७४३	१४८१	१२३३	०९९९	०७७७	०५६६	०३६५	०१७२	४
५	४२२०	३७६६	३३५५	२९८०	२६३५	२३१५	२०१७	१७३८	१४७६	१२२९	०९९५	०७७४	०५६३	०३६१	०१६९	५
६	४२१२	३७५९	३३४९	२९७४	२६२९	२३१०	२०१२	१७३४	१४७२	१२२५	०९९२	०७७०	०५५९	०३५८	०१६६	६
७	४२०४	३७५२	३३४२	२९६८	२६२४	२३०५	२००८	१७२९	१४६८	१२२१	०९८८	०७६७	०५५६	०३५५	०१६३	७
८	४१९६	३७४५	३३३६	२९६२	२६१८	२३००	२००३	१७२५	१४६४	१२१७	०९८४	०७६३	०५५२	०३५२	०१६०	८
९	४१८८	३७३७	३३२९	२९५६	२६१३	२२९५	१९९८	१७२०	१४५९	१२१३	०९८०	०७५९	०५४९	०३४८	०१५७	९
१०	४१८०	३७३०	३३२३	२९५०	२६०७	२२८९	१९९३	१७१६	१४५५	१२०९	०९७६	०७५६	०५४६	०३४५	०१५४	१०
११	४१७२	३७२३	३३१६	२९४४	२६०२	२२८४	१९८८	१७११	१४५०	१२०५	०९७३	०७५२	०५४२	०३४२	०१५०	११
१२	४१६४	३७१६	३३१०	२९३८	२५९६	२२७९	१९८४	१७०७	१४४७	१२०१	०९६९	०७४९	०५३९	०३३९	०१४७	१२
१३	४१५६	३७०९	३३०३	२९३३	२५९१	२२७४	१९७९	१७०२	१४४३	११९७	०९६५	०७४५	०५३५	०३३५	०१४४	१३
१४	४१४८	३७०२	३२९७	२९२७	२५८५	२२६९	१९७४	१६९८	१४३८	११९३	०९६२	०७४१	०५३२	०३३२	०१४१	१४
१५	४१४१	३६९५	३२९१	२९२१	२५८०	२२६४	१९६९	१६९४	१४३४	११९०	०९५८	०७३८	०५२९	०३२९	०१३८	१५
१६	४१३३	३६८८	३२८४	२९१५	२५७४	२२५९	१९६५	१६८९	१४३०	११८६	०९५४	०७३४	०५२५	०३२६	०१३५	१६
१७	४१२५	३६८१	३२७८	२९०९	२५६९	२२५४	१९६०	१६८५	१४२६	११८२	०९५०	०७३१	०५२२	०३२२	०१३२	१७
१८	४११७	३६७४	३२७१	२९०३	२५६४	२२४९	१९५५	१६८०	१४२२	११७८	०९४७	०७२७	०५१८	०३१९	०१२९	१८
१९	४१०९	३६६७	३२६५	२८९७	२५५८	२२४४	१९५०	१६७६	१४१७	११७४	०९४३	०७२४	०५१५	०३१६	०१२६	१९
२०	४१०२	३६६०	३२५८	२८९१	२५५३	२२३९	१९४६	१६७१	१४१३	११७०	०९३९	०७२०	०५१२	०३१३	०१२३	२०
२१	४०९४	३६५३	३२५२	२८८५	२५४७	२२३४	१९४१	१६६७	१४०९	११६६	०९३५	०७१६	०५०८	०३०९	०११९	२१
२२	४०८६	३६४६	३२४६	२८८०	२५४२	२२२९	१९३६	१६६२	१४०५	११६२	०९३२	०७१३	०५०५	०३०६	०११६	२२
२३	४०७९	३६३९	३२३९	२८७४	२५३६	२२२३	१९३२	१६५८	१४०१	११५८	०९२८	०७०९	०५०१	०३०३	०११३	२३
२४	४०७१	३६३२	३२३३	२८६८	२५३१	२२१८	१९२७	१६५४	१३९७	११५४	०९२४	०७०६	०४९८	०३००	०११०	२४
२५	४०६३	३६२५	३२२७	२८६२	२५२६	२२१३	१९२२	१६४९	१३९२	११५०	०९२०	०७०२	०४९५	०२९६	०१०७	२५
२६	४०५५	३६१८	३२२०	२८५६	२५२०	२२०८	१९१७	१६४५	१३८८	११४६	०९१७	०६९९	०४९१	०२९३	०१०४	२६
२७	४०४८	३६११	३२१४	२८५०	२५१५	२२०३	१९१३	१६४०	१३८४	११४२	०९१३	०६९५	०४८८	०२९०	०१०१	२७
२८	४०४०	३६०४	३२०८	२८४५	२५०९	२१९८	१९०८	१६३६	१३८०	११३८	० ०९	०६९२	०४८४	०२८७	००९८	२८
२९	४०३२	३५९७	३२०१	२८३९	२५०४	२१९३	१९०३	१६३२	१३७६	११३४	०९०६	०६८८	०४८१	०२८४	००९५	२९
३०	४०२५	३५९०	३१९५	२८३३	२४९९	२१८८	१८९९	१६२७	१३७२	११३०	०९०२	०६८५	०४७८	०२८०	००९१	३०
३१	४०१७	३५८३	३१८९	२८२७	२४९३	२१८३	१८९४	१६२३	१३६८	११२७	०८ ८	०६८१	०४७४	०२७७	००८८	३१
३२	४०१०	३५७६	३१८३	२८२१	२४८८	२१७८	१८८९	१६१८	१३६४	११२३	०८९४	०६७८	०४७१	०२७४	००८५	३२
३३	४००२	३५७०	३१७६	२८१६	२४८३	२१७३	१८८५	१६१४	१३५९	१११९	०८९१	०६७४	०४६८	०२७१	००८२	३३
३४	३९९४	३५६३	३१७०	२८१०	२४७७	२१६८	१८८०	१६१०	१३५५	१११५	०८८७	०६७१	०४६४	०२६७	००७९	३४
३५	३९८७	३५५६	३१६४	२८०४	२४७२	२१६४	१८७५	१६०५	१३५१	११११	०८८३	०६६७	०४६१	०२६४	००७६	३५
३६	३९७९	३५४९	३१५७	२७९८	२४६७	२१५९	१८७१	१६०१	१३४७	११०७	०८८०	०६६३	०४५८	०२६१	००७३	३६
३७	३९७२	३५४२	३१५१	२७९३	२४६१	२१५४	१८६६	१५९७	१३४३	११०३	०८७६	०६६०	०४५४	०२५८	००७०	३७
३८	३९६४	३५३५	३१४५	२७८७	२४५६	२१४९	१८६२	१५९२	१३३९	१०९९	० ७२	०६५६	०४५१	०२५५	००६७	३८
३९	३९५७	३५२९	३१३९	२७८१	२४५१	२१४४	१८५७	१५८८	१३३५	१० ५	०८६९	०६५३	०४४८	०२५१	००६४	३
४०	३९४९	३५२२	३१३३	२७७५	२४४५	२१३९	१८५२	१५८४	१३३१	१०९१	०८६५	०६४९	०४४४	०२४८	००६	४०
४१	३९४२	३५१५	३१२६	२७७०	२४४०	२१३४	१८४८	१५७९	१३२६	१०८८	०८६१	०६४६	०४४१	०२४५	००५८	४१
४२	३९३४	३५०८	३१२०	२७६४	२४३५	२१२९	१८४३	१५७५	१३२२	१०८४	०८५८	०६४२	०४३८	०२४२	००५५	४२
४३	३९२७	३५०१	३११४	२७५८	२४३०	२१२४	१८३८	१५७१	१३१८	१०८०	०८५४	०६३९	०४३४	०२३९	००५२	४३
४४	३९१९	३४९५	३१०८	२७५३	२४२४	२११९	१८३४	१५६६	१३१४	१०७६	०८५०	०६३५	०४३१	०२३६	००४९	४४
४५	३९१२	३४८८	३१०२	२७४७	२४१९	२११४	१८२९	१५६२	१३१०	१०७२	०८४७	०६३२	०४२८	०२३२	००४६	४५
४६	३९०५	३४८१	३०९६	२७४१	२४१४	२१०९	१८२५	१५५८	१३०६	१०६८	०८४३	०६२८	०४२४	०२२९	००४२	४६
४७	३८९७	३४७५	३०८९	२७३६	२४०९	२१०४	१८२०	१५५३	१३०२	१०६४	०८३९	०६२५	०४२१	०२२६	००३९	४७
४८	३८९०	३४६८	३०८३	२७३०	२४०३	२०९९	१८१६	१५४९	१२९८	१०६१	०८३५	०६२२	०४१८	०२२३	००३६	४८
४९	३८८२	३४६१	३०७७	२७२४	२३९८	२०९५	१८११	१५४५	१२९४	१०५७	०८३२	०६१८	०४१४	०२२०	००३३	४९
५०	३८७५	३४५४	३०७१	२७१९	२३९३	२०९०	१८०६	१५४०	१२९०	१०५	०८२८	०६१५	०४११	०२१६	००३०	५०
५१	३८६८	३४४८	३०६५	२७१३	२३८८	२०८५	१८०२	१५३६	१२८६	१०४९	०८२५	०६११	०४०८	०२१३	००२७	५१
५२	३८६०	३४४१	३०५९	२७०७	२३८२	२०८०	१७९७	१५३२	१२८२	१०४५	०८२१	०६०८	०४०४	०२१०	००२४	५२
५३	३८५३	३४३४	३०५३	२७०२	२३७७	२०७५	१७९३	१५२८	१२७८	१०४१	०८१७	०६०४	०४०१	०२०७	००२१	५३
५४	३८४६	३४२८	३०४७	२६९६	२३७२	२०७०	१७८८	१५२३	१२७४	१०३८	०८१४	०६०१	०३९८	०२०४	००१८	५४
५५	३८३८	३४२१	३०४१	२६९१	२३६७	२०६५	१७८४	१५१९	१२७०	१०३४	०८१०	०५९७	०३९४	०२०१	००१५	५५
५६	३८३१	३४१५	३०३४	२६८५	२३६२	२०६१	१७७९	१५१५	१२६६	१०३०	०८०६	०५९४	०३९१	०१९७	००१२	५६
५७	३८२४	३४०८	३०२८	२६७९	२३५६	२०५६	१७७४	१५१०	१२६१	१०२६	०८०३	०५९०	०३८८	०१९४	०००९	५७
५८	३८१७	३४०१	३०२२	२६७४	२३५१	२०५१	१७७०	१५०६	१२५७	१०२२	०७९९	०५८७	०३८४	०१९१	०००६	५८
५९	३८०९	३३९५	३०१६	२६६८	२३४६	२०४६	१७६५	१५०२	१२५३	१०१८	०७९५	०५८३	०३८१	०१८८	०००३	५९

शास्त्र के प्रति अक्षम्य अपराध करते हैं। इसी कारण हम विगत अनेक वर्षों से "चिन्ताहरण जंत्री" द्वारा उसके सभी पाठकों को यह समझाते रहे हैं कि शुद्ध इष्टकाल क्या है? उस काल का शुद्ध लग्न तथा शुद्ध ग्रह-स्पष्ट किस प्रकार करना, आदि। गणित-ज्योतिष के प्रचलित विषयों को अति सरल रूप में सम्बन्धित सारणियों एवं उदाहरणों सहित हमारी इस पुस्तक में भली-भाँति समझाया गया है तथापि एतद्विषयक एक अन्य विधि भी यहाँ प्रकाशित की जा रही है। मान लीजिए, ता० ४ जून '६७ को स्टैं. टा. से घं. १० मिनट १५ बजे (दिन के सवा दस बजे) किसी बालक का जन्म हुआ तो यही (दिन के सवा दस बजे का) समय उसका शुद्ध इष्टकाल है और कुण्डली के लिये इसी समय का शुद्ध लग्न एवं ग्रह-स्पष्टादि बनाना होगा। इष्टकाल और कोई हौवा नहीं है। अलबत् उक्त इष्टकाल घण्टा, मिनट में है। इसको प्रचलित रीत्या घटी पल में बनाने के लिये उक्त तारीख को जन्म-स्थान का स्टैं. सूर्योदय-समय जानना होगा। जंत्री में काशी का प्रतिदिन का सूर्योदय-समय स्टैं. टा. में ही दिया जाता है। अत: यदि बालक का जन्म काशी में हुआ है तो उक्त ता. को जंत्री में लिखे सूर्योदय-समय घं. ५ मि. १२ को जन्म-समय घं. १० मि. १५ में-से घटाने पर शेष

घं. ५ मि. ३ बचता है ; इसको ढाई गुना कर लिया तो १२ घटी ३७ पल ३० विपल का यथार्थ इष्टकाल शुद्ध रूप में ज्ञात हो गया; इसमें तनिक भी शंका न करनी चाहिये। यदि कोई नामधारी ज्योतिषी इस प्रकार के 'इष्टकाल' को स्थूल, अशुद्ध या अशास्त्रीय बतलाते हैं तो समझिये कि वे वास्तविक सिद्धान्तवेत्ता ज्योतिषी ही नहीं। अतः उनसे कुण्डली बनवाने में अपना द्रव्य व्यर्थ व्यय मत कीजिए। कुण्डली का गणित तो सिद्धान्तज्ञ ज्योतिषी से ही कराना चाहिये—फल चाहे जिनसे पूछें; वह अपनी श्रद्धा की बात है। जन्म-काल यदि प्रचलित रेडियो-रेलवे-टाइम (स्टैं. टा.) में ज्ञात किया गया है तो उस समय का ग्रह-स्पष्ट भी इस जंत्री की ग्रह-पंक्ति तथा प्रस्तुत लाघवांक-सारणी की सहायता से बड़ी सरलतापूर्वक किया जा सकता है—यहाँ तककि ग्रह-स्पष्टीकरण में त्रैराशिक अथवा गोमूत्रिका रीति के समान गुणा भाग भी नहीं करना होगा, केवल कुछ अंक जोड़ने-मात्र से कार्य सिद्ध हो जायेगा। ऐसी चमत्कारी 'लाघवांक-सारणी' की उपयोग-विधि जानने के पूर्व 'ग्रह-स्पष्ट' किसे कहते हैं, यह जान लेना उचित और आवश्यक है।

आकाशस्थ राशिमण्डल में मेषादि द्वादश राशियों की स्थिति क्रमशः पश्चिम से पूर्व की ओर है; अतः जो ग्रह अपनी दैनिक गति से राशिचक्र में पश्चिम से पूर्व की ओर सीधे भ्रमण करते हैं वे मार्गी कहलाते हैं और जो उल्टे यानी पूर्व के बजाय पश्चिम की ओर राशिचक्र में भ्रमण करते देखे जाते हैं, वे वक्री। ग्रह वक्री और मार्गी होने के समय कुछ क्षणों के लिए स्तम्भी होता है, अन्यथा हर समय अपनी दैनिक गति से राशिचक्र में भ्रमण करता रहता है। ग्रहों की दैनिक गति भी बराबर घटती-बढ़ती रहती है। किस तिथि, तारीख और समय पर ग्रह राशि-मण्डल की किस राशि के कितने अंश, कला, विकला पर है, यह पंचांग या जंत्री में दिया रहता है। इसे ही ग्रह-स्पष्ट कहते हैं। ग्रह-स्पष्ट में ग्रह की वर्तमान राशि नहीं; बल्कि गत राशि दी गई रहती है; जैसे किसी ग्रह का स्पष्ट राश्यादि १०।२८°।८'।३५" है तो मेषादि अनुक्रम से १०वीं राशि मकर गत हुई अर्थात् वह ग्रह मकर राशि पार कर अगली कुम्भ राशि के २८ अंश ८ कला एवं ३५ विकला को भोग रहा है। सब ग्रहों में सूर्य, चन्द्रमा कभी वक्री नहीं होते, सदैव मार्गी रहते हैं; फलतः उनके भोगांश बराबर बढ़ते जाते हैं। इसी प्रकार मध्यम राहु, केतु कभी मार्गी नहीं होते; उनके भोगांश घटते ही रहते हैं। इनके अलावा अन्य सभी ग्रह मार्ग-गति के अलावा कभी वक्र-गति से भी भ्रमण करते हैं, तब उनके भोगांश घटने लगते हैं एवं मार्गी गति से चलने पर भोगांश बढ़ने लगते हैं।

इस विवरण से पाठक समझ गये कि किसी दिन के ग्रह-स्पष्ट से हमें उस दिन के एक निश्चित समय पर ग्रह के भोगांश ज्ञात होते हैं; जैसे, ४ जून १९६७ ई० को प्रातः ५॥ बजे बुध-स्पष्ट जंत्री के पृष्ठ ३८ पर २°।११'।२९" दिया गया है। उसके बगल में बुध की दैनिक (यानी अगले २४ घंटे की) गति भी ८१' यानी १ अंश २१ कला दी गयी है। अब मान लीजिये, कुण्डली-गणित के लिये उक्त दिन के स्टैं. टा. घं. १० मि. १५ बजे का बुध स्पष्ट हमें करना है तो यह समय बुध-स्पष्ट के समय प्रातः ५॥ बजे से ४॥। घंटा आगे हम पाते हैं। अतः हमें सवा दस बजे का बुध स्पष्ट करने के लिये देखना होगा कि जब बुध उस रोज २४ घंटे में ८१' चलता है तो ४॥। घंटे में कितना चलेगा ? यह फल हम ज्ञात कर लें तो बुध-ग्रह के मार्गी रहने के कारण उसके ५॥ बजे प्रातः के स्पष्ट में इस फल को जोड़ देने से हमें अपने अभीष्ट समय सवा दस बजे का बुध-स्पष्ट ज्ञात हो जायेगा। इस फल को ज्योतिषीगण "चालन" कहते हैं। किन्हीं पञ्चाङ्गों में प्रति दिन का ग्रह-स्पष्ट दिया रहता है, किन्हीं में साप्ताहिक। इसी प्रकार कुछ पञ्चाङ्गों में औदयिक यानी स्थानिक सूर्योदयकाल के तथा कुछ में मिश्रमानकालिक ग्रह-स्पष्ट दिये जाते हैं। चिताहरण जंत्रीमें चन्द्रका अर्ध दैनिक स्पष्ट तथा शेष १० ग्रहों के दैनिक स्पष्ट दिये जाते हैं। सर्व ग्रहों का स्पष्ट भारतीय प्रमाणित समय (I. S. T.) से प्रातः ५॥ बजे का होता है। अतः पुरातन प्रणाली के पञ्चाङ्गों की अपेक्षा जंत्री के ग्रह-स्पष्ट सबके लिए अधिक सुबोध एवं सुविधाजनक हैं। इस ग्रहस्पष्ट को 'ग्रह-पंक्ति' भी कहा जाता है। इस पंक्ति के समय से अपना इष्टकाल आगे हो और ग्रह मार्गी हो तो चालन को पंक्ति में + धन, ग्रह वक्री हो तो चालन को पंक्ति में — ऋण किया जाता है; इसी प्रकार पंक्ति से अपना इष्टकाल पीछे हो और ग्रह मार्गी हो तो चालन — ऋण तथा ग्रह वक्री हो तो चालन + धन पंक्ति में करना चाहिए। इस उदाहरण में पंक्ति से इष्ट समय आगे तथा ग्रह (बुध) मार्गी रहने से चालन को पंक्ति में + धन करना होगा। चालन लाने के लिये यह सारणी कितनी सरल और सद्यः फलप्रद है, यह आप एक बार के प्रयोग से ही जान लेंगे। सारणी में सबसे ऊपरी खाने में १ से २४ घं. तक के अंक क्रमशः बायें से दाहिनी ओर दिये गये हैं तथा ऊपर से नीचे की ओर पहले तथा आखिरी खानों में मि. के ० से लेकर ५९ तक के अंक दिये गये हैं। लाघवांक-सारणी में घं. को अंश तथा मि० को कला का समानार्थक समझना चाहिये। अब अभीष्ट घं. के स्तम्भ में तथा अभीष्ट मिनट की सीध में दाहिनी ओर जो अंक हैं, वही उक्त घं. मि. का 'लाघवांक है' है; इसी प्रकार

अंश कला का लाघवांक जानने के लिये अंश को घं. की जगह तथा कला को मि. की जगह देखकर उनका लाघवांक प्राप्त कर लीजिये। चालन के घं. मि. के लाघवांक तथा ग्रह की दैनिक गति के अंश, कला के लाघवांक लेकर दोनों (लाघवांकों) को जोड़ दें। योग-फल को इसी सारणी में तलाश कर देखिए, कि वह कितने घं. मि. वा अंश कला का लाघवांक है। योग-फल के सर्वथा तुल्य अंक सारणी में न मिले तो उसके निकटतम अंक को ढूंढ़ें; उसी का घं. और मि. आपके अभीष्ट चालन का अंश, कला होगा, जिसको पूर्वोक्त विधि से पंक्ति के ग्रह में धन ऋण करने पर इष्टकालिक ग्रह-स्पष्ट हो जायेगा। निम्न उदाहरण से आपको सब-कुछ स्पष्टतः समझ में आ जायेगा। ऊपर हमने बुध का चालन ४।।। घंटा यानी घं. ४ मि. ४५ तथा बुध की दैनिक गति ८१ कला यानी १ अंश २१ कला प्राप्त किया है। अतः सारणी में घं. ४ के स्तम्भ में नीचे ४५ मि. की सीध में देखा तो ७०३५ लाघवांक ४।।। घं. का प्राप्त हुआ, इसी तरह १ अंश को घं. तथा २१ कला को मि. मानकर लाघवांक १.२४९९ प्राप्त किया।

दोनों को जोड़ा तो $\begin{array}{r} .७०३५ \\ १.२४९९ \\ \hline १.९५३४ \end{array}$ योगफल प्राप्त हुआ। सारणी में इसका निकटतम अंक १.९५४२ घं. ० के नीचे एवं मि. १६ की बगल में है यानी यह अंक ० घं. १६ मि. अथवा ० अंश १६ कला का लाघवांक है। अतः ज्ञात हो गया कि बुध ८१' की दैनिक गति से ४।।। पौने पाँच घंट में करीब १६' कला चलेगा। यहाँ बुध ग्रह के मार्गी तथा पंक्ति के समय से इष्टकाल आगे होने से चालन-फल पंक्तिस्थ ग्रह में धन होगा। अतः पंक्तिस्थ ग्रह राश्यादि २-११°-२९' में चालन-फल १६' कला जोड़ दिया तो इष्टकालिक बुध २।११°।४५' स्पष्ट हो गया। इसी प्रकार से किसी भी आकाशीय पिंडकी दैनिक गति मालूम होने से उसको इष्टकाल पर आप स्पष्ट कर सकते हैं।

* राशियों का परस्पर शुभाशुभ योग *

शुभ नव-पञ्चम		मध्यम नव-पञ्चम		श्रेष्ठ द्विर्द्वादश		अशुभ द्विर्द्वादश		प्रीति-षडाष्टक		शत्रु-षडाष्टक		अशुभ केंद्र	
९	५	९	५	२	१२	२	१२	६	८	६	८	४	१०
मेष	सिंह	कुम्भ	मिथुन	मेष	मीन	वृश्चि.	तुला	मेष	वृश्चि.	वृषभ	धनु	मेष	कर्क
वृष	कन्या	मीन	कर्क	मिथुन	वृष	मकर	धनु	मिथुन	मकर	कर्क	कुम्भ	वृष	सिंह
मिथुन	तुला	कर्क	वृश्चि.	सिंह	कर्क	मीन	कुंभ	सिंह	मीन	कन्या	मेष	कर्क	तुला
सिंह	धनु	कन्या	मकर	तुला	कन्या	वृष	मेष	तुला	वृष	वृश्चि.	मिथुन	कन्या	धनु
तुला	कुम्भ	**अशुभ सम-सप्तक**		धनु	वृश्चिक	कर्क	मिथुन	धनु	कर्क	मकर	सिंह	वृश्चिक	कुम्भ
वृश्चिक	मीन	७	७	कुम्भ	मकर	टिप्पणी :—		कुम्भ	कन्या	मीन	तुला	मकर	कर्क
		मकर	कर्क										
धनु	मेष	कुम्भ	सिंह	अपवाद								मीन	मिथुन
मकर	वृष			कन्या	सिंह								

तृतीय-एकादश संबंध किन्हीं भी राशियों का शुभ ही होता है; किंतु सम-सप्तक (राशि-प्रतियोग) तथा केंद्र (चतुर्थ-दशम) संबन्ध उपर्युक्त अशुभ समसप्तक तथा अशुभ केंद्र की राशियों के अलावा शेष राशियों का ही शुभ होता है।

* ग्रह-स्पष्टीकरण-सारणियाँ *

जिन लोगों को लाघवांक द्वारा ग्रह स्पष्टीकरण में कठिनाई या असुविधा प्रतीत हो, उनके लिये और भी सरलतापूर्वक ग्रहस्पष्ट करने की सारणियाँ आगे दी जा रही हैं जिनमें सूर्य स्पष्टीकरण के लिये २ सारणियाँ, चन्द्र स्पष्टीकरण के लिये ३ सारणियाँ तथा शेष सर्व ग्रहों के स्पष्टीकरणार्थ २ सारणियाँ हैं। सारणियों में ग्रह की पाँच-पाँच कला के अन्तर से दैनिक गति का फल, चालनवाले समय के पाँच-पाँच मिनिट के अन्तर से १ घंटा से लेकर क्रमशः २४ घंटा तक के लिए दिया गया है। ग्रह-गति का खाना सारणी के सिरे पर तथा समय का खाना सारणी के एकदम शुरू और मध्य में ऊपर से नीचे की ओर दिया गया है। मान लीजिए, यहाँ हमें सूर्य की दैनिक गति ५७'–२६" का फल घं. ४ मि. ४५ के लिए चाहिए। अतः सूर्य-सारणी की गति के खाने में (पृष्ठ५०पर) देखा तो ५७'–२६" से निकटतम गति हमें ५७'–२५" मिली। उसके नीचे ४५ मि. की सीध में फल १'–४८" मिला एवं और भी नीचे ४ घंटा के लिए फल ९'–३४" मिला; दोनों फलों को जोड़ दिया तो घं. ४ मि. ४५ के लिए ९'–३४"+१'–४८"=११'–२२" चालन— फल मिल गया। इसे ५।। बजे के सूर्यस्पष्ट १–१९°–२०'–१०" में जोड़ दिया तो अपने इष्ट समय १०। बजे का सूर्यस्पष्ट राश्यादि १–१९°–३१'–३२" तत्क्षण ज्ञात हो गया। एक और उदाहरण उसी तारीख ४–६–१९६२ के इष्ट समय घं. १० मि. १५ बजे के लिए शुक्र ग्रह के स्पष्टीकरण का लीजिए। जंत्री में जून मास की ग्रह-पंक्तियों में देखा तो ४ जून को प्रातः ५।। बजे शुक्र का स्पष्ट ०–२५°–५७' तथा दैनिक गति ७३ कला यानी १°।१३' मिली। इस दैनिक गति का फल ४।।। घंटा के लिए मालूम करने को पृष्ठ ५५ की ग्रह-स्पष्टीकरण सारणी–२ में देखी तो १°–१३' कला की निकटतम गति १°–१५' मिली। उस खाने में नीचे ४५ मिनट की सीध में फल २'–२१" एवं ४ घंटे के लिए फल १२'–३०" मिला। इन दोनों फलों को ५।। बजे के शुक्र स्पष्ट ०–२५°–२७' में जोड़ दिया तो उस दिन १०। बजे का शुक्रस्पष्ट राश्यादि ०–२५°–४१'–५१" ज्ञात हो गया। इसी प्रकार किसी भी कुण्डली आदि के इष्टकाल पर सब ग्रह आप बड़ी सरलता व शीघ्रतापूर्वक स्पष्ट कर सकते हैं।

ग. →	५७′ ०५″	५७′ १०″	५७′ १५″	५७′ २०″	५७′ २५″	५७′ ३०″	५७′ ३५″
मि. ५	१२″	१२″	१२″	१२″	१२″	१२″	१२″
१०	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२४
१५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६
२०	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४८
२५	१′ ००″	१′ ००″	१′ ००″	१′ ००″	१′ ००″	१′ ००″	१′ ००″
३०	१ ११	१ ११	१ ११	१ १२	१ १२	१ १२	१ १२
३५	१ २३	१ २३	१ २३	१ २४	१ २४	१ २४	१ २४
४०	१ ३५	१ ३५	१ ३५	१ ३६	१ ३६	१ ३६	१ ३६
४५	१ ४७	१ ४७	१ ४७	१ ४८	१ ४८	१ ४८	१ ४८
५०	१ ५९	१ ५९	१ ५९	२ ००	२ ००	२ ००	२ ००
५५	२ ११	२ ११	२ १२	२ १२	२ १२	२ १२	२ १२
घं. १	२ २३	२ २३	२ २३	२ २३	२ २४	२ २४	२ २४
२	४ ४६	४ ४६	४ ४६	४ ४७	४ ४७	४ ४८	४ ४८
३	७ ०८	७ ०९	७ ०९	७ १०	७ ११	७ ११	७ १२
४	९ ३१	९ ३२	९ ३२	९ ३३	९ ३४	९ ३५	९ ३६
५	११ ५४	११ ५५	११ ५६	११ ५७	११ ५८	११ ५९	१२ ००
६	१४ १६	१४ १७	१४ १८	१४ २०	१४ २१	१४ २३	१४ २४
७	१६ ३९	१६ ४०	१६ ४२	१६ ४३	१६ ४५	१६ ४६	१६ ४७
८	१९ ०२	१९ ०३	१९ ०५	१९ ०७	१९ ०८	१९ १०	१९ ११
९	२१ २४	२१ २६	२१ २८	२१ ३०	२१ ३२	२१ ३४	२१ ३६
१०	२३ ४७	२३ ४९	२३ ५१	२३ ५३	२३ ५५	२३ ५८	२४ ००
११	२६ १०	२६ १२	२६ १४	२६ १७	२६ १९	२६ २१	२६ २३
१२	२८ ३३	२८ ३५	२८ ३८	२८ ४०	२८ ४२	२८ ४५	२८ ४७
१३	३० ५५	३० ५८	३१ ०१	३१ ०३	३१ ०६	३१ ०९	३१ १२
१४	३३ १८	३३ २१	३३ २४	३३ २७	३३ ३०	३३ ३३	३३ ३६
१५	३५ ४१	३५ ४४	३५ ४७	३५ ५०	३५ ५३	३५ ५६	३५ ५९
१६	३८ ०३	३८ ०७	३८ १०	३८ १३	३८ १७	३८ २०	३८ २३
१७	४० २६	४० ३०	४० ३४	४० ३७	४० ४०	४० ४४	४० ४८
१८	४२ ४९	४२ ५३	४२ ५७	४३ ००	४३ ०४	४३ ०८	४३ ११
१९	४५ ११	४५ १५	४५ १९	४५ २३	४५ २७	४५ ३१	४५ ३५
२०	४७ ३४	४७ ३८	४७ ४२	४७ ४७	४७ ५१	४७ ५५	४७ ५९
२१	४९ ५७	५० ०१	५० ०५	५० १०	५० १४	५० १९	५० २३
२२	५२ २०	५२ २४	५२ २९	५२ ३३	५२ ३८	५२ ४३	५२ ४७
२३	५४ ४२	५४ ४७	५४ ५२	५४ ५७	५५ ०१	५५ ०६	५५ ११
२४	५७′ ०५″	५७′ १०″	५७′ १५″	५७′ २०″	५७′ २५″	५७′ ३०″	५७′ ३५″

ग. →	५७′ ४०″	५७′ ४५″	५७′ ५०″	५७′ ५५″	५८′ ००″	५८′ ०५″	५८′ १०″
मि. ५	१२″	१२″	१२′	१२″	१२″	१२″	१२″
१०	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२४
१५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६
२०	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४८
२५	१′ ००″	१′ ००″	१′ ००″	१′ ००″	१′ ००″	१′ ००″	१′ ००″
३०	१ १२	१ १२	१ १२	१ १२	१ १२	१ १२	१ १२
३५	१ २४	१ २४	१ २४	१ २४	१ २४	१ २५	१ २५
४०	१ ३६	१ ३६	१ ३६	१ ३६	१ ३६	१ ३७	१ ३७
४५	१ ४८	१ ४८	१ ४८	१ ४८	१ ४८	१ ४९	१ ४९
५०	२ ००	२ ००	२ ००	२ ००	२ ००	२ ०१	२ ०१
५५	२ १२	२ १२	२ १२	२ १२	२ १२	२ १३	२ १३
घं. १	२ २४	२ २४	२ २५	२ २५	२ २५	२ २५	२ २५
२	४ ४८	४ ४९	४ ४९	४ ५०	४ ५०	४ ५०	४ ५१
३	७ १३	७ १३	७ १४	७ १४	७ १५	७ १६	७ १६
४	९ ३७	९ ३७	९ ३८	९ ३९	९ ४०	९ ४१	९ ४२
५	१२ ०१	१२ ०२	१२ ०३	१२ ०४	१२ ०५	१२ ०६	१२ ०७
६	१४ २५	१४ २६	१४ २७	१४ २९	१४ ३०	१४ ३१	१४ ३२
७	१६ ४९	१६ ५१	१६ ५२	१६ ५४	१६ ५५	१६ ५६	१६ ५८
८	१९ १३	१९ १५	१९ १७	१९ १९	१९ २०	१९ २२	१९ २३
९	२१ ३८	२१ ३९	२१ ४१	२१ ४३	२१ ४५	२१ ४७	२१ ४९
१०	२४ ०२	२४ ०४	२४ ०६	२४ ०८	२४ १०	२४ १२	२४ १४
११	२६ २६	२६ २८	२६ ३०	२६ ३३	२६ ३५	२६ ३७	२६ ४०
१२	२८ ५०	२८ ५२	२८ ५५	२८ ५८	२९ ००	२९ ०२	२९ ०५
१३	३१ १४	३१ १७	३१ २०	३१ २३	३१ २५	३१ २८	३१ ३०
१४	३३ ३८	३३ ४१	३३ ४४	३३ ४७	३३ ५०	३३ ५३	३३ ५६
१५	३६ ०२	३६ ०६	३६ ०९	३६ १२	३६ १५	३६ १८	३६ २१
१६	३८ २७	३८ ३०	३८ ३३	३८ ३७	३८ ४०	३८ ४३	३८ ४६
१७	४० ५१	४० ५४	४० ५८	४१ ०१	४१ ०५	४१ ०८	४१ १२
१८	४३ १५	४३ १९	४३ २२	४३ २६	४३ ३०	४३ ३४	४३ ३७
१९	४५ ३९	४५ ४३	४५ ४७	४५ ५१	४५ ५५	४५ ५९	४६ ०३
२०	४८ ०३	४८ ०७	४८ १२	४८ १६	४८ २०	४८ २४	४८ २८
२१	५० २७	५० ३२	५० ३६	५० ४०	५० ४५	५० ४९	५० ५३
२२	५२ ५१	५२ ५६	५३ ०१	५३ ०६	५३ १०	५३ १४	५३ १९
२३	५५ १६	५५ २१	५५ २५	५५ ३०	५५ ३५	५५ ४०	५५ ४५
२४	५७′ ४०″	५७′ ४५″	५७′ ५०″	५७′ ५५″	५८′ ००″	५८′ ०५″	५८′ १०″

ग. →	५८′ १५″	५८′ २०″	५८′ २५″	५८′ ३०″	५८′ ३५″	५८′ ४०″	५८′ ४५″
मि. ५	१२″	१२″	१२″	१२″	१२″	१२″	१२″
१०	२४	२४	२४	२४	३४	२४	२४
१५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७
२०	४९	४९	४९	४९	४९	४९	४९
२५	१′ १″	१′ ०१″	१′ ०१″	१′ ०१″	१′ ०१″	१′ ०१″	१′ ०१″
३०	१ १३	१ १३	१ १३	१ १३	१ १३	१ १३	१ १३
३५	१ २५	१ २५	१ २५	१ २५	१ २५	१ २५	१ २६
४०	१ ३७	१ ३७	१ ३७	१ ३८	१ ३८	१ ३८	१ ३८
४५	१ ४९	१ ४९	१ ४९	१ ४९	१ ५०	१ ५०	१ ५०
५०	२ ०१	२ ०१	२ ०२	२ ०२	२ ०२	२ ०२	२ ०२
५५	२ १३	२ १३	२ १४	२ १४	२ १४	२ १४	२ १४
घं. १	२ २६	२ २६	२ २६	२ २६	२ २६	२ २७	२ २७
२	४ ५१	४ ५२	४ ५२	४ ५२	४ ५३	४ ५३	४ ५४
३	७ १७	७ १७	७ १८	७ १८	७ १९	७ २०	७ २१
४	९ ४२	९ ४३	९ ४४	९ ४५	९ ४६	९ ४६	९ ४७
५	१२ ०८	१२ ०९	१२ १०	१२ १०	१२ १२	१२ १३	१२ १४
६	१४ ३४	१४ ३५	१४ ३६	१४ ३८	१४ ३९	१४ ४०	१४ ४१
७	१६ ५९	१७ ०१	१७ ०२	१७ ०४	१७ ०५	१७ ०६	१७ ०८
८	१९ २५	१९ २६	१९ २८	१९ ३०	१९ ३२	१९ ३३	१९ ३५
९	२१ ५१	२१ ५३	२१ ५४	२१ ५६	२१ ५८	२२ ००	२२ ०२
१०	२४ १६	२४ १८	२४ २०	२४ २२	२४ २५	२४ २७	२४ २९
११	२६ ४२	२६ ४४	२६ ४६	२६ ४९	२६ ५१	२६ ५३	२६ ५६
१२	२९ ०७	२९ १०	२९ १३	२९ १५	२९ १८	२९ २०	२९ २२
१३	३१ ३३	३१ ३६	३१ ३९	३१ ४१	३१ ४४	३१ ४७	३१ ४९
१४	३३ ५९	३४ ०२	३४ ०४	३४ ०७	३४ १०	३४ १४	३४ १६
१५	३६ २४	३६ २७	३६ ३०	३६ ३३	३६ ३७	३६ ४०	३६ ४३
१६	३८ ५०	३८ ५३	३८ ५६	३९ ००	३९ ०३	३९ ०७	३९ १०
१७	४१ १६	४१ १९	४१ २३	४१ २६	४१ ३०	४१ ३३	४१ ३७
१८	४३ ४१	४३ ४५	४३ ४९	४३ ५२	४३ ५६	४४ ००	४४ ०४
१९	४६ ०७	४६ ११	४६ १५	४६ १९	४६ २३	४६ २७	४६ ३१
२०	४८ ३२	४८ ३६	४८ ४१	४८ ४५	४८ ४९	४८ ५३	४८ ५७
२१	५० ५८	५१ ०२	५१ ०७	५१ ११	५१ १६	५१ २०	५१ २४
२२	५३ २४	५३ २८	५३ ३३	५३ ३७	५३ ४२	५३ ४६	५३ ५१
२३	५५ ४९	५५ ५४	५५ ५९	५६ ०४	५६ ०९	५६ १३	५६ १८
२४	५८′ १५″	५८′ २०″	५८′ २५″	५८′ ३०″	५८′ ३५″	५८′ ४०″	५८′ ४५″

ग. →	५८′ ५०″	५८′ ५५″	५९′ ००″	५९′ ०५″	५९′ १०″	५९′ १५″	५९′ २०′
मि. ५	१२″	१२″	१२″	१२″	१२″	१२″	१२″
१०	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५
१५	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३७
२०	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०
२५	१′ ०१″	१′ ०१″	१′ ०१″	१′ ०२″	१′ ०२″	१′ ०२″	१′ ०२″
३०	१ १३	१ १३	१ १४	१ १४	१ १४	१ १४	१ १४
३५	१ २६	१ २६	१ २६	१ २६	१ २६	१ २६	१ २७
४०	१ ३८	१ ३८	१ ३८	१ ३८	१ ३९	१ ३९	१ ३९
४५	१ ५०	१ ५०	१ ५१	१ ५१	१ ५१	१ ५१	१ ५१
५०	२ ०२	२ ०२	२ ०३	२ ०३	२ ०३	२ ०३	२ ०४
५५	२ १५	२ १५	२ १५	२ १५	२ १६	२ १६	२ १६
घं. १	२ २७	२ २७	२ २८	२ २८	२ २८	२ २८	२ २८
२	४ ५४	४ ५५	४ ५५	४ ५५	४ ५६	४ ५६	४ ५७
३	७ २१	७ २२	७ २३	७ २३	७ २४	७ २४	७ २५
४	९ ४८	९ ४९	९ ५०	९ ५१	९ ५२	९ ५३	९ ५३
५	१२ १५	१२ १७	१२ १८	१२ १९	१२ २०	१२ २१	१२ २२
६	१४ ४२	१४ ४४	१४ ४५	१४ ४६	१४ ४८	१४ ४९	१४ ५०
७	१७ १०	१७ ११	१७ १३	१७ १४	१७ १५	१७ १७	१७ १८
८	१९ ३७	१९ ३८	१९ ४०	१९ ४२	१९ ४३	१९ ४५	१९ ४७
९	२२ ०४	२२ ०६	२२ ०८	२२ ०९	२२ ११	२२ १३	२२ १५
१०	२४ ३१	२४ ३३	२४ ३५	२४ ३७	२४ ३९	२४ ४१	२४ ४३
११	२६ ५८	२७ ००	२७ ०३	२७ ०५	२७ ०७	२७ ०९	२७ १२
१२	२९ २५	२९ २८	२९ ३०	२९ ३३	२९ ३५	२९ ३७	२९ ४०
१३	३१ ५२	३१ ५५	३१ ५८	३२ ००	३२ ०३	३२ ०६	३२ ०८
१४	३४ १९	३४ २२	३४ २५	३४ २८	३४ ३१	३४ ३४	३४ ३७
१५	३६ ४६	३६ ४९	३६ ५३	३६ ५६	३६ ५९	३७ ०२	३७ ०५
१६	३९ १३	३९ १७	३९ २०	३९ २३	३९ २७	३९ ३०	३९ ३३
१७	४१ ४०	४१ ४४	४१ ४८	४१ ५१	४१ ५५	४१ ५८	४२ ०२
१८	४४ ०७	४४ ११	४४ १५	४४ १९	४४ २३	४४ २६	४४ ३०
१९	४६ ३५	४६ ३९	४६ ४३	४६ ४६	४६ ५०	४६ ५४	४६ ५८
२०	४९ ०२	४९ ०६	४९ १०	४९ १४	४९ १८	४९ २३	४९ २७
२१	५१ २९	५१ ३३	५१ ३८	५१ ४२	५१ ४६	५१ ५१	५१ ५५
२२	५३ ५६	५४ ००	५४ ०५	५४ १०	५४ १४	५४ १९	५४ २३
२३	५६ २३	५६ २८	५६ ३३	५६ ३७	५६ ४२	५६ ४७	५६ ५२
२४	५८′ ५०″	५८′ ५५″	५९′ ००″	५९′ ०५″	५९′ १०″	५९′ १५″	५९′ २०″

ग.→	५९′ २५″	५९′ ३०″	५९′ ३५″	५९′ ४०″	५९′ ४५″	५९′ ५०″	५९′ ५५″
मि. ५	१२″	१२″	१२″	१२″	१२″	१२″	१२″
१०	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५
१५	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८
२०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०
२५	१′ ०२″	१′ ०२″	१′ ०२″	१′ ०२″	१′ ०२″	१′ ०३″	१′ ०३″
३०	१ १४	१ १४	१ १४	१ १५	१ १५	१ १५	१ १५
३५	१ २७	१ २७	१ २७	१ २७	१ २७	१ २८	१ २८
४०	१ ३९	१ ३९	१ ३९	१ ३९	१ ४०	१ ४०	१ ४०
४५	१ ५१	१ ५२	१ ५२	१ ५२	१ ५२	१ ५२	१ ५२
५०	२ ०४	२ ०४	२ ०४	२ ०४	२ ०५	२ ०५	२ ०५
५५	२ १६	२ १६	२ १७	२ १७	२ १७	२ १७	२ १७
घं. १	२ २९	२ २९	२ २९	२ २९	२ २९	२ ३०	२ ३०
२	४ ५७	४ ५८	४ ५८	४ ५८	४ ५९	४ ५९	५ ००
३	७ २६	७ २६	७ २७	७ २८	७ २८	७ २९	७ २९
४	९ ५४	९ ५५	९ ५६	९ ५७	९ ५८	९ ५८	५ ५९
५	१२ २३	१२ २४	१२ २५	१२ २६	१२ २७	१२ २८	१२ २९
६	१४ ५१	१४ ५३	१४ ५४	१४ ५५	१४ ५६	१४ ५७	१४ ५९
७	१७ २०	१७ २१	१७ २३	१७ २४	१७ २६	१७ २७	१७ २९
८	१९ ४८	१९ ५०	१९ ५२	१९ ५३	१९ ५५	१९ ५७	१९ ५८
९	२२ १७	२२ १९	२२ २१	२२ २३	२२ २४	२२ २६	२२ २८
१०	२४ ४५	२४ ४८	२४ ५०	२४ ५२	२४ ५४	२४ ५६	२४ ५८
११	२७ १४	२७ १६	२७ ५९	२७ २१	२७ २३	२७ २५	२७ २८
१२	२९ ४२	२९ ४५	२९ ४८	२९ ५०	२९ ५३	२९ ५५	२९ ५७
१३	३२ ११	३२ १४	३२ १६	३२ १९	३२ २२	३२ २५	३२ २७
१४	३४ ४०	३४ ४३	३४ ४५	३४ ४८	३४ ५१	३४ ५४	३४ ५७
१५	३७ ०८	३७ ११	३७ १४	३७ १८	३७ २१	३७ २४	३७ २४
१६	३९ ३७	३९ ४०	३९ ४३	३९ ४७	३९ ५०	३९ ५३	३९ ५७
१७	४२ ०५	४२ ०९	४२ १२	४२ १६	४२ १९	४२ २३	४२ २६
१८	४४ ३४	४४ ३८	४४ ४१	४४ ४५	४४ ४९	४४ ५२	४४ ५६
१९	४७ ०२	४७ ०६	४७ १०	४७ १४	४७ १८	४७ २२	४७ २६
२०	४९ ३१	४९ ३५	४९ ३९	४९ ४३	४९ ४८	४९ ५२	४९ ५६
२१	५१ ५९	५२ ०८	५२ ०८	५२ १३	५२ १७	५२ २१	५२ २६
२२	५४ २८	५४ ३३	५४ ३७	५४ ४२	५४ ४६	५४ ५१	५४ ५५
२३	५६ ५६	५७ ०१	५७ ०६	५७ ११	५७ १६	५७ २०	५७ २५
२४	५९′ २५″	५९′ ३०″	५९′ ३५″	५९′ ४०″	५९′ ४५″	५९′ ५०″	५९′ ५५″

ग.→	१°००′ ००″	१°००′ ०५″	१°००′ १०″	१°००′ १५″	१°००′ २०″
मि. ५	१२″	१३″	१३″	१३″	१३″
१०	२५	२५	२५	२५	२५
१५	३८	३८	३८	३८	३८
२०	५०	५०	५०	५०	५०
२५	१′ ०३″	१′ ०३″	१′ ०३″	१′ ०३″	१′ ०३″
३०	१ १५	१ १५	१ १५	१ १५	१ १५
३५	१ २८	१ २८	१ २८	१ २८	१ २८
४०	१ ४०	१ ४०	१ ४०	१ ४०	१ ४१
४५	१ ५३	१ ५३	१ ५३	१ ५३	१ ५३
५०	२ ०५	२ ०५	२ ०५	२ ०६	२ ०६
५५	२ १८	२ १८	२ १८	२ १८	२ १८
घं. १	२ ३०	२ ३०	२ ३०	२ ३१	२ ३१
२	५ ००	५ ००	५ ०१	५ ०१	५ ०२
३	७ ३०	७ ३१	७ ३१	७ ३२	७ ३२
४	१० ००	१० ०१	१० ०२	१० ०२	१० ०३
५	१२ ३०	१२ ३१	१२ ३२	१२ ३३	१२ ३४
६	१५ ००	१५ ०१	१४ ०२	१५ ०४	१५ ०५
७	१७ ३०	१७ ३१	१७ ३३	१७ ३४	१७ ३६
८	२० ००	२० ०२	२० ०३	२० ०५	२० ०७
९	२२ ३०	२२ ३२	२२ ३४	२२ ३६	२२ ३७
१०	२५ ००	२५ ०२	२५ ०४	२५ ०६	२५ ०८
११	२७ ३०	२७ ३२	२७ ३५	२७ ३७	२७ ३९
१२	३० ००	३० ०३	३० ०५	३० ०७	३० १०
१३	३२ ३०	३२ ३३	३२ ३५	३२ ३८	३२ ४१
१४	३५ ००	३५ ०३	३५ ०६	३५ ०९	३५ १२
१५	३७ ३०	३७ ३३	३७ ३६	३७ ३९	३७ ४२
१६	४० ००	४० ०३	४० ०७	४० १०	४० १३
१७	४२ ३०	४२ ३४	४२ ३७	४२ ४१	४२ ४४
१८	४५ ००	४५ ०४	४५ ०७	४५ ११	४५ १५
१९	४७ ३०	४७ ३४	४७ ३८	४७ ४२	४७ ४६
२०	५० ००	५० ०४	५० ०८	५० १२	५० १७
२१	५२ ३०	५२ ३४	५२ ३९	५२ ४३	५२ ४७
२२	५५ ००	५५ ०५	५५ ०९	५५ १४	५५ १८
२३	५७ ३०	५७ ३५	५७ ३९	५७ ४४	५७ ४९
२४	१°००′ ००″	१°००′ ०५″	१°००′ १०″	१°००′ १५″	१°००′ २०″

ग.→	१°००′ २५″	१°००′ ३०″	१°००′ ३५″	१°००′ ४०″	१°००′ ४५″
मि. ५	१३″	१३″	१३″	१३″	१३″
१०	२५	२५	२५	२५	२५
१५	३८	३८	३८	३८	३८
२०	५०	५०	५०	५१	५१
२५	१′ ०३″	१′ ०३″	१′ ०३″	१′ ०३″	१′ ०३″
३०	१ १६	१ १६	१ १६	१ १६	१ १६
३५	१ २८	१ २८	१ २८	१ २८	१ २९
४०	१ ४१	१ ४१	१ ४१	१ ४१	१ ४१
४५	१ ५३	१ ५३	१ ५४	१ ५४	१ ५४
५०	२ ०६	२ ०६	२ ०६	२ ०६	२ ०७
५५	२ १८	२ १९	२ १९	२ १९	२ १९
घं. १	२ ३१	२ ३१	२ ३१	२ ३१	२ ३२
२	५ ०२	५ ०२	५ ०३	५ ०३	५ ०४
३	७ ३३	७ ३४	७ ३४	६ ३५	७ ३६
४	१० ०४	१० ०५	१० ०६	१० ०७	१० ०८
५	१२ ३५	१२ ३६	१२ ३७	१२ ३८	१२ ३९
६	१५ ०६	१५ ०७	१५ ०९	१५ १०	१५ ११
७	१७ ३७	१७ ३९	१७ ४०	१७ ४२	१७ ४३
८	२० ०८	२० १०	२० १२	२० १३	२० १५
९	२२ ३९	२२ ४१	२२ ४३	२२ ४५	२२ ४७
१०	२५ १०	२५ १२	२५ १५	२५ १७	२५ १९
११	२७ ४१	२७ ४४	२७ ४६	२७ ४८	२७ ५१
१२	३० १२	३० १५	३० १८	३० २०	३० २३
१३	३२ ४३	३२ ४६	३२ ४९	३२ ५२	३२ ५४
१४	३५ १४	३५ १७	३५ २०	३५ २३	३५ २६
१५	३७ ४५	३७ ४९	३७ ५२	३७ ५५	३७ ५८
१६	४० १७	४० २०	४० २३	४० २६	४० ३०
१७	४२ ४८	४२ ५१	४२ ५५	४२ ५८	४३ ०२
१८	४५ १९	४५ २२	४५ २६	४५ ३०	४५ ३४
१९	४७ ५०	४७ ५४	४७ ५८	४८ ०१	४८ ०६
२०	५० २१	५० २५	५० २९	५० ३३	५० ३८
२१	५२ ५२	५२ ५६	५३ ०१	५३ ०५	५३ १०
२२	५५ २३	५५ २७	५५ ३२	५५ ३६	५५ ४१
२३	५७ ५४	५७ ५९	५८ ०४	५८ ०८	५८ १३
२४	००′ २५″	१°०० ३०″	१°००′ ३५″	१°००′ ४०″	१°००′ ४५″

ग.→	१°००′ ५०″	१°००′ ५५″	१°०१′ ००″	१°०१′ ०५″	१°०१′ १०″
मि. ५	१३″	१३″	१३″	१३″	१३″
१०	२५	२५	२५	२५	२५
१५	३८	३८	३८	३८	३८
२०	५१	५१	५१	५१	५१
२५	१′ ०३″	१′ ०३″	१′ ०४″	१′ ०४″	१′ ०४″
३०	१ १६	१ १६	१ १६	१ १६	१ १६
३५	१ २९	१ २९	१ २९	१ २९	१ २९
४०	१ ४१	१ ४२	१ ४२	१ ४२	१ ४२
४५	१ ५४	१ ५४	१ ५४	१ ५५	१ ५५
५०	२ ०७	२ ०७	२ ०७	२ ०७	२ ०७
५५	२ १९	२ २०	२ २०	२ २०	२ २०
घं. १	२ ३२	२ ३२	२ ३२	२ ३३	२ ३३
२	५ ०४	५ ०५	५ ०५	५ ०५	५ ०६
३	७ ३६	७ ३७	७ ३७	७ ३८	७ ३८
४	१० ०८	१० ०९	१० १०	१० ११	१० १२
५	१२ ४०	१२ ४१	१२ ४२	१२ ४४	१२ ४५
६	१५ १२	१५ १४	१५ १५	१५ १६	१५ १७
७	१७ ४५	१७ ४६	१७ ४७	१७ ४९	१७ ५०
८	२० १७	२० १८	२० २०	२० २२	२० २३
९	२२ ४९	२२ ५१	२२ ५२	२२ ५४	२२ ५६
१०	२५ २१	२५ २३	२५ २५	२५ २७	२५ २९
११	२७ ५३	२७ ५५	२७ ५७	२८ ००	२८ ०२
१२	३० २५	३० २८	३० ३०	३० ३२	३० ३५
१३	३२ ५७	३३ ००	३३ ०२	३० ०५	३३ ०८
१४	३५ २९	३५ ३२	३५ ३५	३५ ३८	३५ ४१
१५	३८ ०१	३८ ०४	३८ ०७	३८ ११	३८ १४
१६	४० ३३	४० ३७	४० ४०	४० ४३	४० ४७
१७	४३ ०५	४३ ०९	४३ १२	४३ १६	४३ २०
१८	४५ ३७	४५ ४१	४५ ४५	४५ ४९	४५ ५२
१९	४८ ०९	४८ १४	४८ १७	४८ २१	४८ २५
२०	५० ४२	५० ४६	५० ५०	५० ५४	५० ५८
२१	५३ १४	५३ १८	५३ २२	५३ २७	५३ ३१
२२	५५ ४६	५५ ५०	५५ ५५	५५ ५९	५६ ०४
२३	५८ १८	५८ २३	५८ २७	५८ ३२	५८ ३७
२४	१°००′ ५०″	१°००′ ५५″	१°०१′ ००″	१°०१′ ०५″	१°०१′ १०″

ग.→	११°४५′	११°५०′	११°५५′	१२°००′	१२°०५′
मि. ५	२′ २७″	२′ २८″	२′ २९″	२′ ३०″	२′ ३१″
१०	४ ५४	४ ५६	४ ५८	५ ००	५ ०२
१५	७ २१	७ २४	७ २७	७ ३०	७ ३३
२०	९ ४७	९ ५२	९ ५६	१० ००	१० ०४
२५	१२ १४	१२ २०	१२ २५	१२ ३०	१२ ३५
३०	१४ ४१	१४ ४८	१४ ५४	१५ ००	१५ ०६
३५	१७ ०८	१७ १५	१७ २३	१७ ३०	१७ ३७
४०	१९ ३५	१९ ४३	१९ ५२	२० ००	२० ०८
४५	२२ ०२	२२ ११	२२ २१	२२ ३०	२२ ३९
५०	२४ २९	२४ ३९	२४ ५०	२५ ००	२५ १०
५५	२६ ५६	२७ ०७	२७ १९	२७ ३०	२७ ४१
घ. १	२९ २३	२९ ३५	२९ ४८	३० ००	३० १३
२	५८ ४५	५९ १०	५९ ३५	१°००′००″	१°००′२५′
३	१°२८′०८″	१°२८′४५″	१°२९′२३″	१ ३० ००	१ ३० ३८
४	१ ५७ ३०	१ ५८ २०	१ ५९ १०	२ ०० ००	२ ०० ५०
५	२ २६ ५३	२ २७ ५५	२ २८ ५८	२ ३० ००	२ ३१ ०३
६	२ ५६ १५	२ ५७ ३०	२ ५८ ४५	३ ०० ००	३ ०१ १५
७	३ २५ ३९	३ २७ ०५	३ २८ ३३	३ ३० ००	३ ३१ २८
८	३ ५५ ०१	३ ५६ ४०	३ ५८ २०	४ ०० ००	४ ०१ ४०
९	४ २४ २४	४ २६ १५	४ २८ ०८	४ ३० ००	४ ३१ ५३
१०	४ ५३ ४६	४ ५५ ५०	४ ५७ ५५	५ ०० ००	५ ०२ ०५
११	५ २३ ०८	५ २५ २५	५ २७ ४३	५ ३० ००	५ ३२ १८
१२	५ ५२ ३१	५ ५५ ००	५ ५७ ३०	६ ०० ००	६ ०२ ३०
१३	६ २१ ५४	६ २४ ३५	६ २७ १८	६ ३० ००	६ ३२ ४३
१४	६ ५१ १०	६ ५४ १०	६ ५७ ०५	७ ०० ००	७ ०२ ५५
१५	७ २० ३९	७ २३ ४५	७ २६ ५३	७ ३० ००	७ ३३ ०८
१६	७ ५० ०१	७ ५३ २०	७ ५६ ४०	८ ०० ००	८ ०३ २०
१७	८ १९ २४	८ २२ ५५	८ २६ २८	८ ३० ००	८ ३३ ३३
१८	८ ४८ ४६	८ ५२ ३०	८ ५६ १५	९ ०० ००	९ ०३ ४५
१९	९ १८ ०९	९ २२ ०५	९ २६ ०३	९ ३० ००	९ ३३ ५८
२०	९ ४७ ३१	९ ५१ ४०	९ ५५ ५०	१० ०० ००	१० ०४ १०
२१	१० १६ ५४	१० २१ १५	१० २५ ५८	१० ३० ००	१० ३४ २३
२२	१० ४६ १६	१० ५० ५०	१० ५५ २५	११ ०० ००	११ ०४ ३५
२३	११ १५ ३९	११ २० २५	११ २५ १३	११ ३० ००	११ ३४ ४८
२४	११°४५′ ००″	११°५०′ ००″	११°५५′ ००″	१२°००′ ००″	१२°०५′ ००″

ग.→	१२°१०′	१२°१५′	१२°२०′	१२°२५′
मि. ५	२′ ३२″	२′ ३३″	२′ ३४″	२′ ३५″
१०	५ ०४	५ ०६	५ ०८	५ १०
१५	७ ३६	७ ३९	७ ४३	७ ४६
२०	१० ०८	१० १३	१० १७	१० २१
२५	१२ ४०	१२ ४६	१२ ५१	१२ ५६
३०	१५ १३	१५ १९	१५ २५	१५ ३१
३५	१७ ४५	१७ ५२	१७ ५९	१८ ०७
४०	२० १७	२० २५	२० ३३	२० ४२
४५	२२ ४९	२२ ५८	२३ ०८	२३ १७
५०	२५ २१	२५ ३१	२५ ३२	२५ ५२
५५	२७ ५३	२८ ०४	२८ १६	२८ २७
घं. १	३० २५	३० ३८	३० ५०	३१ ०३
२	१°००′५०″	१°०१′१५″	१°०१′४०″	१°०२′०५″
३	१ ३१ १५	१ ३१ ५३	१ ३२ ३०	१ ३३ ०८
४	२ ०१ ४०	२ ०२ ३०	२ ०३ २०	२ ०४ १०
५	२ ३२ ०५	२ ३३ ०८	२ ३४ १०	२ ३५ १३
६	३ ०२ ३०	३ ०३ ४५	३ ०५ ००	३ ०६ १५
७	३ ३२ ५५	३ ३४ २३	३ ३५ ००	३ ३७ १८
८	४ ०३ २०	४ ०५ ००	४ ०६ ४०	४ ०८ २०
९	४ ३३ ४५	४ ३५ ३८	४ ३७ ३०	४ ३९ २३
१०	५ ०४ १०	५ ०६ १५	५ ०८ २०	५ १० २५
११	५ ३४ ३५	५ ३६ ५३	५ ३९ १०	५ ४१ २८
१२	६ ०५ ००	६ ०७ ३०	६ १० ००	६ १२ ३०
१३	६ ३५ २५	६ ३८ ०८	६ ४० ५०	६ ४३ ३३
१४	७ ०५ ५०	७ ०८ ४५	७ ११ ४०	७ १४ ३५
१५	७ ३६ १५	७ ३९ २३	७ ४२ ३०	७ ४५ ३८
१६	८ ०६ २०	८ १० ००	८ १३ २०	८ १६ ४०
१७	८ ३७ ०५	८ ४० ३८	८ ४४ १०	८ ४७ ४३
१८	९ ०७ ३०	९ ११ १५	९ १५ ००	९ १८ ४५
१९	९ ३७ ५५	९ ४१ ५३	९ ४५ ५०	९ ४९ ४८
२०	१० ०८ २०	१० १२ ३०	१० १६ ४०	१० २० ५०
२१	१० ३८ ४५	१० ४३ ०८	१० ४७ ३०	१० ५१ ५३
२२	११ ०९ १०	११ १३ ४५	११ १८ २०	११ २२ ५६
२३	११ ३९ ३५	११ ४४ २३	११ ४९ १०	११ ५३ ५८
२४	१२°१०′ ००″	१२°१५′ ००″	१२°२०′ ००″	१२°२५′ ००″

ग.→	१२°३०′	१२°३५′	१२°४०′	१२°४५′	१२°५०′
मि. ५	२′ ३६″	२′ ३७″	२′ ३८″	२′ ३९″	२′ ४०″
१०	५ १३	५ १५	५ १७	५ १९	५ २१
१५	७ ४९	७ ५२	७ ५५	७ ५८	८ ०१
२०	१० २५	१० ३०	१० ३३	१० ३८	१० ४२
२५	१३ ०१	१३ ०७	१३ १२	१३ १७	१३ २२
३०	१५ ३८	१५ ४४	१५ ५०	१५ ५६	१६ ०३
३५	१८ १४	१८ २१	१८ २८	१८ ३६	१८ ४३
४०	२० ५०	२० ५९	२१ ०७	२१ १५	२१ २३
४५	२३ २६	२३ ३६	२३ ४५	२३ ५४	२४ ०४
५०	२६ ०३	२६ १३	२६ २३	२६ ३४	२६ ४४
५५	२८ ३९	२८ ५१	२९ ०२	२९ १३	२९ २५
घं. १	३१ १५	३१ २८	३१ ४०	३१ ५३	३२ ०५
२	१°०२′३०″	१°०२′५५″	१°०३′२०″	१°०३′४५″	१°०४′१०″
३	१ ३३ ४५	१ ३४ २३	१ ३५ ००	१ ३५ ३८	१ ३६ १५
४	२ ०५ ००	२ ०५ ५०	२ ०६ ४०	२ ०७ ३०	२ ०८ २०
५	२ ३६ १५	२ ३७ १८	२ ३८ २०	२ ३९ २३	२ ४० २५
६	३ ०७ ३०	३ ०८ ४५	३ १० ००	३ ११ १५	३ १२ ३०
७	३ ३८ ४५	३ ४० १३	३ ४१ ४०	३ ४३ ०८	३ ४४ ३५
८	४ १० ००	४ ११ ४०	४ १३ २०	४ १५ ००	४ १६ ४०
९	४ ४१ १५	४ ४३ ०८	४ ४५ ००	४ ४६ ५३	४ ४८ ४५
१०	५ १२ ३०	५ १४ ३५	५ १६ ४०	५ १८ ४५	५ २० ५०
११	५ ४३ ४५	५ ४६ ०३	५ ४८ २०	५ ५० ३८	५ ५२ ५५
१२	६ १५ ००	६ ४७ ३०	६ २० ००	६ २२ ३०	६ २५ ००
१३	६ ४६ १५	६ ४८ ५८	६ ५१ ४०	६ ५४ २३	६ ५७ ०५
१४	७ १७ ३०	७ २० २५	७ २३ २०	७ २६ १५	७ २९ १०
१५	७ ४८ ४५	७ ५१ ५३	७ ५५ ००	७ ५८ ०८	७ ०१ १५
१६	८ २० ००	८ २३ २०	८ २६ ४०	८ ३० ००	८ ३३ २०
१७	८ ५१ १५	८ ५४ ४८	८ ५८ २०	८ ०१ ५३	८ ०५ २५
१८	९ २२ ३०	९ २६ १५	९ ३० ००	९ ३३ ४५	९ ३७ ३०
१९	९ ५३ ४५	९ ५७ ४३	९ ०१ ४०	९ ०५ ३८	९ ०९ ३५
२०	१० २५ ००	१० २९ १०	१० ३३ २०	१० ३७ ३०	१० ४१ ४०
२१	१० ५६ १५	१० ०० ३८	१० ०५ ००	१० ०९ २३	१० १३ ४५
२२	११ २७ ३०	११ ३२ ०५	११ ३६ ४०	११ ४१ १५	११ ४५ ५०
२३	११ ५८ ४५	११ ०३ ३३	११ ०८ २०	११ १३ ०८	११ १७ ५५
२४	१२°३०′ ००″	१२°३५′ ००″	१२°४०′ ००″	१२°४५′ ००″	१२°५०′ ००″

ग.→	१२°५५′	१३°००′	१३°०५′	१३°१०′
मि. ५	२′ ४२″	२′ ४३″	२′ ४४″	२′ ४५″
१०	५ २३	५ २५	५ २७	५ २९
१५	८ ०४	८ ०८	८ ११	८ १४
२०	१० ४६	१० ५०	१० ५४	१० ५८
२५	१३ २७	१३ ३३	१३ ३८	१३ ४३
३०	१६ ०९	१६ १५	१६ २१	१६ २८
३५	१८ ५०	१८ ५८	१९ ०५	१९ १२
४०	२१ ३२	२१ ४०	२१ ४८	२१ ५७
४५	२४ १३	२४ २३	२४ ३२	२४ ४१
५०	२६ ५५	२७ ०५	२७ १५	२७ २६
५५	२९ ३६	२९ ४८	२९ ५९	३० १०
घं. १	३२ १८	३२ ३० ०	३२ ४२ ५	३२ ५५ ०
२	१°०४′३५″	१°०५′००″	१°०५′२५″	१°०५′५०″
३	१ ३६ ५३	१ ३७ ३०	१ ३८ ०८	१ ३८ ४५
४	२ ०९ १०	२ १० ००	२ १० ५०	२ ११ ४०
५	२ ४१ २८	२ ४२ ३०	२ ४३ ३३	२ ४४ ३५
६	३ १३ ४५	३ १५ ००	३ १६ १५	३ १७ ३०
७	३ ४६ ०३	३ ४७ ३०	३ ४८ ५८	३ ५० २५
८	४ १८ २०	४ २० ००	४ २१ ४०	४ २३ २०
९	४ ५० ३८	४ ५२ ३०	४ ५४ २३	४ ५६ १५
१०	५ २२ ५५	५ २५ ००	५ २७ ०५	५ २९ १०
११	५ ५५ १३	५ ५७ ३०	५ ५९ ४८	६ ०२ ०५
१२	६ २७ ३०	६ ३० ००	६ ३२ ३०	६ ३५ ००
१३	६ ५९ ४८	७ ०२ ३०	७ ०५ १३	७ ०७ ५५
१४	७ ३२ ०५	७ ३५ ००	७ ३७ ५५	७ ४० ५०
१५	८ ०४ २३	८ ०७ ३०	८ १० ३८	८ १३ ४५
१६	८ ३६ ४०	८ ४० ००	८ ४३ २०	८ ४६ ४०
१७	९ ०८ ५८	९ १२ ३०	९ १६ ०३	९ १९ ३५
१८	९ ४१ १५	९ ४५ ००	९ ४८ ४५	९ ५२ ३०
१९	१० १३ ३३	१० १७ ३०	१० २१ २८	१० २५ २५
२०	१० ४५ ५०	१० ५० ००	१० ५४ १०	१० ५८ २०
२१	११ १८ ०८	११ २२ ३०	११ २६ ५३	११ ३१ १५
२२	११ ५० २५	११ ५५ ००	११ ४९ ३५	१२ ०४ १०
२३	१२ २२ ४३	१२ २७ ३०	१२ ३२ १८	१२ ३७ ०५
२४	१२°५५′ ००″	१३°००′ ००″	१३°०५′ ००″	१३°१०′ ००″

ग.→	१३°१५'	१३°२०'	१३°२५	१३°३०'	१३°३५'
मि. ५	२' ४६"	२' ४७"	२' ४८"	२' ४९"	२' ५०"
१०	५ ३१	५ ३३	५ ३५	५ ३८	५ ४०
१५	८ १७	८ २०	८ २३	८ २६	८ २९
२०	११ ०३	११ ०७	११ ११	११ १५	११ १९
२५	१३ ४८	१३ ५३	१३ ५९	१४ ०४	१४ ०९
३०	१६ ३४	१६ ४०	१६ ४६	१६ ५३	१६ ५९
३५	१९ १९	१९ २७	१९ ३४	१९ ४१	१९ ४९
४०	२२ ०५	२२ १३	२२ २२	२२ ३०	२२ ३८
४५	२४ ५१	२५ ००	२५ ०९	२५ १९	२५ २८
५०	२७ ३६	२७ ४७	२७ ५७	२८ ०८	२८ १८
५५	३० २२	३० ३३	३० ४५	३० ५६	३१ ०८
घं. १	३३ ०८	३३ २०	३३ ३३	३३ ४५	३३ ५८
२	१°०६' १५"	१°०६' ४०"	१°०७' ०५"	१°०७' ३०"	१°०७' ५५"
३	१ ३९ २३	१ ४० ००	१ ४० ३८	१ ४१ १५	१ ४१ ५३
४	२ १२ ३०	२ १३ २०	२ १४ १०	२ १५ ००	२ १५ ५०
५	२ ४५ ३८	२ ४६ ४०	२ ४७ ४३	२ ४८ ४५	२ ४९ ४८
६	३ १८ ४५	३ २० ००	३ २१ १५	३ २२ ३०	३ २३ ४५
७	३ ५१ ५३	३ ५३ २०	३ ५४ ४८	३ ५६ १५	३ ५७ ४३
८	४ २५ ००	४ २६ ४०	४ २८ २०	४ ३० ००	४ ३१ ४०
९	४ ५८ ०८	५ ०० ००	५ ०१ ५३	५ ०३ ४५	५ ०५ ३८
१०	५ ३१ १५	५ ३३ २०	५ ३५ २५	५ ३७ ३०	५ ३९ ३५
११	६ ०४ २३	६ ०६ ४०	६ ०८ ५८	६ ११ १५	६ १३ ३३
१२	६ ३७ ३०	६ ४० ००	६ ४२ ३०	६ ४५ ००	६ ४७ ३०
१३	७ १० ३८	७ १३ २०	७ १६ ०३	७ १८ ४५	७ २१ २८
१४	७ ४३ ४५	७ ४६ ४०	७ ४९ ३५	७ ५२ ३०	७ ५५ २५
१५	८ १६ ५३	८ २० ००	८ २३ ०८	८ २६ १५	८ २९ २३
१६	८ ५० ००	८ ५३ २०	८ ५६ ४०	९ ०० ००	९ ०३ २०
१७	९ २३ ०८	९ २६ ४०	९ ३० १३	९ ३३ ४५	९ ३७ १८
१८	९ ५६ १५	१० ०० ००	१० ०३ ४५	१० ०७ ३०	१० ११ १५
१९	१० २९ २३	१० ३३ २०	१० ३७ १८	१० ४१ १५	१० ४५ १३
२०	११ ०२ ३०	११ ०६ ४०	११ १० ५०	११ १५ ००	११ १९ १०
२१	११ ३५ ३८	११ ४० ००	११ ४४ २३	११ ४८ ४५	११ ५३ ०८
२२	१२ ०८ ४५	१२ १३ २०	१२ १७ ५५	१२ २२ ३०	१२ २७ ०५
२३	१२ ४१ ५३	१२ ४६ ४०	१२ ५१ २८	१२ ५६ १५	१३ ०१ ०३
२४	१३°१५' ००"	१३°२०' ००"	१३°२५' ००"	१३°३०' ००"	१३°३५' ००"

ग.→	१३°४०'	१३°४५'	१३°५०'	१३°५५'
मि. ५	२' ५१"	२' ५२"	२' ५३"	२' ५४"
१०	५ ४२	५ ४४	५ ४६	५ ४८
१५	८ ३२	८ ३६	८ ३९	८ ४२
२०	११ २३	११ २८	११ ३२	११ ३६
२५	१४ १४	१४ १९	१४ २५	१४ ३०
३०	१७ ०५	१७ ११	१७ १८	१७ २४
३५	१९ ५६	२० ०३	२० १०	२० १८
४०	२२ ४७	२२ ५५	२३ ०३	२३ १२
४५	२५ ३७	२५ ४७	२५ ५६	२६ ०६
५०	२८ २८	२८ ३९	२८ ४९	२९ ००
५५	३१ १९	३१ ३१	३१ ४२	३१ ५४
घं. १	३४ १०	३४ २३	३४ ३५	३४ ४८
२	१°०८' २०"	१°०८' ४५"	१°०९' १०"	१°०९' ३५"
३	१ ४२ ३०	१ ४३ ०८	१ ४३ ४५	१ ४४ २३
४	२ १६ ४०	२ १७ ३०	२ १८ २०	२ १९ १०
५	२ ५० ५०	२ ५१ ५३	२ ५२ ५५	२ ५३ ५८
६	३ २५ ००	३ २६ १५	३ २७ ३०	३ २८ ४५
७	३ ५९ १०	४ ०० ३८	४ ०२ ०५	४ ०३ ३३
८	४ ३३ २०	४ ३५ ००	४ ३६ ४०	४ ३८ २०
९	५ ०७ ३०	५ ०९ २३	५ ११ १५	५ १३ ०८
१०	५ ४१ ४०	५ ४३ ४५	५ ४५ ५०	५ ४७ ५५
११	६ १५ ५०	६ १८ ०८	६ २० २५	६ २२ ४३
१२	६ ५० ००	६ ५२ ३०	६ ५५ ००	६ ५७ ३०
१३	७ २४ १०	७ २६ ५३	७ २९ ३५	७ ३२ १८
१४	७ ५८ २०	८ ०१ १५	८ ०४ १०	८ ०७ ०५
१५	८ ३२ ३०	८ ३५ ३८	८ ३८ ४५	८ ४१ ५३
१६	९ ०६ ४०	९ १० ००	९ १३ २०	९ १६ ४०
१७	९ ४० ५०	९ ४४ २३	९ ४७ ५५	९ ५१ २८
१८	१० १५ ००	१० १८ ४५	१० २२ ३०	१० २६ १५
१९	१० ४९ १०	१० ५३ ०८	१० ५७ ०५	११ ०१ ०३
२०	११ २३ २०	११ २७ ३०	११ ३१ ४०	११ ३५ ५०
२१	११ ५७ ३०	१२ ०१ ५३	१२ ०६ १५	१२ १० ३८
२२	१२ ३१ ४०	१२ ३६ १५	१२ ४० ५०	१२ ४५ २५
२३	१३ ०५ ५०	१३ १० ३८	१३ १५ २५	१३ २० १३
२४	१३°४०' ००"	१३°४५' ००"	१३°५०' ००"	१३°५५' ००"

ग.→	१४°००'	१४°०५'	१४°१०'	१४°१५'	१४°२०'
मि. ५	२' ५५"	२' ५६"	२' ५७"	२' ५८"	२' ५९"
१०	५ ५०	५ ५२	५ ५४	५ ५६	५ ५८
१५	८ ४५	८ ४८	८ ५१	८ ५४	८ ५८
२०	११ ४०	११ ४४	११ ४८	११ ५३	११ ५७
२५	१४ ३५	१४ ४०	१४ ४५	१४ ५१	१४ ५६
३०	१७ ३०	१७ ३६	१७ ४३	१७ ४९	१७ ५५
३५	२० २५	२० ३२	२० ४०	२० ४७	२० ५४
४०	२३ २०	२३ २८	२३ ३७	२३ ४५	२३ ५३
४५	२६ १५	२६ २४	२६ ३४	२६ ४३	२६ ५३
५०	२९ १०	२९ २०	२९ ३१	२९ ४१	२९ ५२
५५	३२ ०५	३२ १६	३२ २८	३२ ३९	३२ ५१
घं. १	३५ ००	३५ १३	३५ २५	३५ ३८	३५ ५०
२	१°१०' ००"	१°१०' २५"	१°१०' ५०"	१°११' १५"	१°११' ४०"
३	१ ४५ ००	१ ४५ ३८	१ ४६ १५	१ ४६ ५३	१ ४७ ३०
४	२ २० ००	२ २० ५०	२ २१ ४०	२ २२ ३०	२ २३ २०
५	२ ५५ ००	२ ५६ ०३	२ ५७ ०५	२ ५८ ०८	२ ५९ १०
६	३ ३० ००	३ ३१ १५	३ ३२ ३०	३ ३३ ४५	३ ३५ ००
७	४ ०५ ००	४ ०६ २८	४ ०७ ५५	४ ०९ २३	४ १० ५०
८	४ ४० ००	४ ४१ ४०	४ ४३ २०	४ ४५ ००	४ ४६ ४०
९	५ १५ ००	५ १६ ५३	५ १८ ४५	५ २० ३८	५ २२ ३०
१०	५ ५० ००	५ ५२ ०५	५ ५४ १०	५ ५६ १५	५ ५८ २०
११	६ २५ ००	६ २७ १८	६ २९ ३५	६ ३१ ५३	६ ३४ १०
१२	७ ०० ००	७ ०२ ३०	७ ०५ ००	७ ०७ ३०	७ १० ००
१३	७ ३५ ००	७ ३७ ४३	७ ४० २५	७ ४३ ०८	७ ४५ ५०
१४	८ १० ००	८ १२ ५५	८ १५ ५०	८ १८ ४५	८ २१ ४०
१५	८ ४५ ००	८ ४८ ०८	८ ५१ १५	८ ५४ २३	८ ५७ ३०
१६	९ २० ००	९ २३ २०	९ २६ ४०	९ ३० ००	९ ३३ २०
१७	९ ५५ ००	९ ५८ ३३	१० ०२ ०५	१० ०५ ३८	१० ०९ १०
१८	१० ३० ००	१० ३३ ४५	१० ३७ ३०	१० ४१ १५	१० ४५ ००
१९	११ ०५ ००	११ ०८ ५८	११ १२ ५५	११ १६ ५३	११ २० ५०
२०	११ ४० ००	११ ४४ १०	११ ४८ २०	११ ५२ ३०	११ ५६ ४०
२१	१२ १५ ००	१२ १९ २३	१२ २३ ४५	१२ २८ ०८	१२ ३२ ३०
२२	१२ ५० ००	१२ ५४ ३५	१२ ५९ १०	१३ ०३ ४५	१३ ०८ २०
२३	१३ २५ ००	१३ २९ ४८	१३ ३४ ३५	१३ ३९ २३	१३ ४४ १०
२४	१४°००' ००"	१४°०५' ००"	१४°१०' ००"	१४°१५' ००"	१४°२०' ००"

ग.→	१४°२५'	१४°३०'	१४°३५'	१४°४०'
मि. ५	३' ००"	३' ०१"	३' ०२"	३' ०३"
१०	६ ००	६ ०३	६ ०५	६ ०७
१५	९ ०१	९ ०४	९ ०७	९ १०
२०	१२ ०१	१२ ०५	१२ ०९	१२ १३
२५	१५ ०१	१५ ०६	१५ १२	१५ १७
३०	१८ ०१	१८ ०८	१८ १४	१८ २०
३५	२१ ०२	२१ ०९	२१ १६	२१ २३
४०	२४ ०२	२४ १०	२४ १८	२४ २७
४५	२७ ०२	२७ ११	२७ २१	२७ ३०
५०	३० ०२	३० १३	३० २३	३० ३३
५५	३३ ०२	३३ १४	३३ २५	३३ ३७
घं. १	३६ ०३	३६ १५	३६ २८	३६ ४०
२	१°१२' ०५"	१°१२' ३०"	१°१२' ५५"	१°१३' २०"
३	१ ४८ ०८	१ ४८ ४५	१ ४९ २३	१ ५० ००
४	२ २४ १०	२ २५ ००	२ २५ ५०	२ २६ ४०
५	३ ०० १३	३ ०१ १५	३ ०२ १८	३ ०३ २०
६	३ ३६ १५	३ ३७ ३०	३ ३८ ४५	३ ४० ००
७	४ १२ १८	४ १३ ४५	४ १५ १३	४ १६ ४०
८	४ ४८ २०	४ ५० ००	४ ५१ ४०	४ ५३ २०
९	५ २४ २३	५ २६ १५	५ २८ ०८	५ ३० ००
१०	६ ०० २५	६ ०२ ३०	६ ०४ ३५	६ ०६ ४०
११	६ ३६ २८	६ ३८ ४५	६ ४१ ०३	६ ४३ २०
१२	७ १२ ३०	७ १५ ००	७ १७ ३०	७ २० ००
१३	७ ४८ ३३	७ ५१ १५	७ ५३ ५८	७ ५६ ४०
१४	८ २४ ३५	८ २७ ३०	८ ३० २५	८ ३३ २०
१५	९ ०० ३८	९ ०३ ४५	९ ०६ ५३	९ १० ००
१६	९ ३६ ४०	९ ४० ००	९ ४३ २०	९ ४६ ४०
१७	१० १२ ४३	१० १६ १५	१० १९ ४८	१० २३ २०
१८	१० ४८ ४५	१० ५२ ३०	१० ५६ १५	११ ०० ००
१९	११ २४ ४८	११ २८ ४५	११ ३२ ४३	११ ३६ ४०
२०	१२ ०० ५०	१२ ०५ ००	१२ ०९ १०	१२ १३ २०
२१	१२ ३६ ५३	१२ ४१ १५	१२ ४५ ३८	१२ ५० ००
२२	१३ १२ ५५	१३ १७ ३०	१३ २२ ०५	१३ २६ ४०
२३	१३ ४८ ५८	१३ ५३ ४५	१३ ५८ ३३	१४ ०० २०
२४	१४°२५' ००"	१४°३०' ००"	१४°३५' ००"	१४°४०' ००"

ग.→	१४°४५′	१४°५०′	१४°५५′	१५°००′	१५°०५′	ग.→	१५°१०′	१५°१५′	१५°२०′	१५°२५′
मि. ५	३′०४″	३′०५″	३′०७″	३′०८″	३′०९″	मि. ५	३′१०″	३′११″	२′१२″	३′१३″
१०	६ ०९	६ ११	६ १३	६ १५	६ १७	१०	६ १९	६ २१	६ २३	६ २५
१५	९ १३	९ १६	९ १९	९ २३	९ २६	१५	९ २९	९ ३२	९ ३५	९ ३८
२०	१२ १८	१२ २२	१२ २६	१२ ३०	१२ ३४	२०	१२ ३८	१२ ४३	१२ ४७	१२ ५१
२५	१५ २२	१५ २७	१५ ३२	१५ ३८	१५ ४३	२५	१५ ४८	१५ ५३	१५ ५८	१६ ०४
३०	१८ २६	१८ ३३	१८ ३९	१८ ४५	१८ ५१	३०	१८ ५८	१९ ०४	१९ १०	१९ १६
३५	२१ ३१	२१ ३८	२१ ४५	२१ ५३	२२ ००	३५	२२ ०७	२२ १४	२२ २२	२२ २९
४०	२४ ३५	२४ ४३	२४ ५२	२५ ००	२५ ०८	४०	२५ १७	२५ २५	२५ ३३	२५ ४२
४५	२७ ३९	२७ ४९	२७ ५८	२८ ०८	२८ १७	४५	२८ २६	२८ ३६	२८ ४५	२८ ५४
५०	३० ४४	३० ५४	३१ ०५	३१ १५	३१ २५	५०	३१ ३६	३१ ४६	३१ ५७	३२ ०७
५५	३३ ४८	३४ ००	३४ ११	३४ २३	३४ ३४	५५	३४ ४५	३४ ५७	३५ ०८	३५ २०
घं. १	००°३६′५३″	००°३७′०५″	००°३७′१८″	००°३७′३०″	०० ३७′४२″	घं. १	००°३७ ५५″	००°३८′०८″	००°३८′२०″	०० ३८′३३″
२	१ १३ ४५	१ १४ १०	१ १४ ३५	१ १५ ००	१ १५ २५	२	१ १५ ५०	१ १६ १५	१ १६ ४०	१ १७ ०५
३	१ ५० ३८	१ ५१ १५	१ ५१ ५३	१ ५२ ३०	१ ५३ ०८	३	१ ५३ ४५	१ ५४ २३	१ ५५ ००	१ ५५ ३८
४	२ २७ ३०	२ २८ २०	२ २९ १०	२ ३० ००	२ ३० ५०	४	२ ३१ ४०	२ ३२ ३०	२ ३३ २०	२ ३४ १०
५	३ ०४ २३	३ ०५ २५	३ ०६ २८	३ ०७ ३०	३ ०८ ३३	५	३ ०९ ३५	३ १० ३८	३ ११ ४०	३ १२ ४३
६	३ ४१ १५	३ ४२ ३०	३ ४३ ४५	३ ४५ ००	३ ४६ १५	६	३ ४७ ३०	३ ४८ ४५	३ ५० ००	३ ५१ १५
७	४ १८ ०८	४ १९ ३५	४ २१ ०३	४ २२ ३०	४ २३ ५८	७	४ २५ २५	४ २६ ५३	४ २८ २०	४ २९ ४८
८	४ ५५ ००	४ ५६ ४०	४ ५८ २०	५ ०० ००	५ ०१ ४०	८	५ ०३ २०	५ ०५ ००	५ ०६ ४०	५ ०८ २०
९	५ ३१ ५३	५ ३३ ४५	५ ३५ ३८	५ ३७ ३०	५ ३९ २३	९	५ ४१ १५	५ ४३ ०८	५ ४५ ००	५ ४६ ५३
१०	६ ०८ ४५	६ १० ५०	६ १२ ५५	६ १५ ००	६ १७ ०५	१०	६ १९ १०	६ २१ १५	६ २३ २०	६ २५ २५
११	६ ४५ ३८	६ ४७ ५५	६ ५० १३	६ ५२ ३०	६ ५४ ४८	११	६ ५७ ०५	६ ५९ २३	७ ०१ ४०	७ ०३ ५८
१२	७ २२ ३०	७ २५ ००	७ २७ ३०	७ ३० ००	७ ३२ ३०	१२	७ ३५ ००	७ ३७ ३०	७ ४० ००	७ ४२ ३०
१३	७ ५९ २३	८ ०२ ०५	८ ०४ ४८	८ ०७ ३०	८ १० १३	१३	७ १२ ५५	८ १५ ३८	८ १८ २०	८ २१ ०३
१४	८ ३६ १५	८ ३९ १०	८ ४२ ०५	८ ४५ ००	८ ४७ ५५	१४	८ ५० ५०	८ ५३ ४५	८ ५६ ४०	८ ५९ ३५
१५	९ १३ ०८	९ १६ १५	९ १९ २३	९ २२ ३०	९ २५ ३८	१५	९ २८ ४५	९ ३१ ५३	९ ३५ ००	९ ३८ ०८
१६	९ ५० ००	९ ५३ २०	९ ५६ ४०	१० ०० ००	१० ०३ २०	१६	१० ०६ ४०	१० १० ००	१० १३ २०	१० १६ ४०
१७	१० २६ ५३	१० ३० २५	१० ३३ ५८	१० ३७ ३०	१० ४१ ०३	१७	१० ४४ ३५	१० ४८ ०८	१० ५१ ४०	१० ५५ १३
१८	११ ०३ ४५	११ ०७ ३०	११ ११ १५	११ १५ ००	११ १८ ४५	१८	११ २२ ३०	११ २६ १५	११ ३० ००	११ ३३ ४५
१९	११ ४० ३८	११ ४४ ३५	११ ४८ ३३	११ ५२ ३०	११ ५६ २८	१९	१२ ०० २५	१२ ०४ २३	१२ ०८ २०	१२ १२ १८
२०	१२ १७ ३०	१२ २१ ४०	१२ २५ ५०	१२ ३० ००	१२ ३४ १०	२०	१२ ३८ २०	१२ ४२ ३०	१२ ४६ ४०	१२ ५० ५०
२१	१२ ५४ २३	१२ ५८ ४५	१३ ०३ ०८	१३ ०७ ३०	१३ ११ ५३	२१	१३ १६ १५	१३ २० ३८	१३ २५ ००	१३ २९ २३
२२	१३ ३१ १५	१३ ३५ ५०	१३ ४० २५	१३ ४५ ००	१३ ४९ ३५	२२	१३ ५४ १०	१३ ५८ ४५	१४ ०३ २०	१४ ०७ ५५
२३	१४ ०८ ०८	१४ १२ ५५	१४ १७ ४३	१४ २२ ३०	१४ २७ १८	२३	१४ ३२ ०५	१४ ३६ ५३	१४ ४१ ४०	१४ ४६ २८
२४	१४°४५′००″	१४°५०′००″	१४°५५′००″	१५°००′००″	१५°०५′००″	२४	१५°१०′००″	१५°१५′००″	१५°२०′००″	१५°२५′००″

ग्रह स्पष्टीकरण सारणी–१

ग. →	१′	२′	३′	४′	५′	६′	७′	८′	ग. →	९′	१०′	१५′	२०′	२५′	३०′
मि. ५	—	—	१″	१″	१″	१″	१″	२″	मि. ५	२″	२″	३″	४″	५″	६″
१०	—	१″	१	२	२	३	३	३	१०	४	४	६	८	१०	१३
१५	१″	१	२	२	३	४	४	५	१५	६	६	९	१३	१६	१९
२०	१	२	३	३	४	५	६	७	२०	८	८	१३	१७	२१	२५
२५	१	२	३	४	५	६	७	८	२५	९	१०	१६	२१	२६	३१
३०	१	३	४	५	६	८	९	१०	३०	११	१२	१९	२५	३१	३८
३५	१	३	४	६	७	९	१०	१२	३५	१३	१५	२२	२९	३६	४४
४०	२	३	५	७	८	१०	१२	१३	४०	१५	१७	२५	३३	४२	५०
४५	२	४	६	७	९	११	१३	१५	४५	१७	१९	२८	३८	४७	५६
५०	२	४	६	८	१०	१३	१५	१७	५०	१९	२१	३१	४२	५२	१′०३″
५५	२	५	७	९	११	१४	१६	१८	५५	२१	२३	३४	४६	५७	१ ०९
घं. १	३	५	८	१०	१३	१५	१८	२०	घं. १	२३	२५	३८	५०	१′०३″	१ १५
२	५	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४०	२	४५	५०	१′१५″	१′४०″	२ ०५	२ ३०
३	८	१५	२३	३०	३८	४५	५३	१′००″	३	१′०८″	१′१५″	१ ५३	२ ३०	३ ०८	३ ४५
४	१०	२०	३०	४०	५०	१′००″	१′१०″	१ २०	४	१ ३०	१ ४०	२ ३०	३ २०	४ १०	५ ००
५	१३	२५	३८	५०	१′०३″	१ १५	१ २८	१ ४०	५	१ ५३	२ ०५	३ ०८	४ १०	५ १३	६ १५
६	१५	३०	४५	१′००″	१ १५	१ ३०	१ ४५	२ ००	६	२ १५	२ ३०	३ ४५	५ ००	६ १५	७ ३०
७	१८	३५	५३	१ १०	१ २८	१ ४५	२ ०३	२ २०	७	२ ३८	२ ५५	४ २३	५ ५०	७ १८	८ ४५
८	२०	४०	१′००	१ २०	१ ४०	२ ००	२ २०	२ ४०	८	३ ००	३ २०	५ ००	६ ४०	८ २०	१० ००
९	२३	४५	१ ०८	१ ३०	१ ५३	२ १५	२ ३८	३ ००	९	३ २३	३ ४५	५ ३८	७ ३०	९ २३	११ १५
१०	२५	५०	१ १५	१ ४०	२ ०५	२ ३०	२ ५५	३ २०	१०	३ ४५	४ १०	६ १५	८ २०	१० २५	१२ ३०
११	२८	५५	१ २३	१ ५०	२ १८	२ ४५	३ १३	३ ४०	११	४ ०८	४ ३५	६ ५३	९ १०	११ २८	१३ ४५
१२	३०	१′००	१ ३०	२ ००	२ ३०	३ ००	३ ३०	४ ००	१२	४ ३०	५ ००	७ ३०	१० ००	१२ ३०	१५ ००
१३	३३	१ ०५	१ ३८	२ १०	२ ४३	३ १५	३ ४८	४ २०	१३	४ ५३	५ २५	८ ०८	१० ५०	१३ ३३	१६ १५
१४	३५	१ १०	१ ४५	२ २०	२ ५५	३ ३०	४ ०५	४ ४०	१४	५ १५	५ ५०	८ ४५	११ ४०	१४ ३५	१७ ३०
१५	३८	१ १५	१ ५३	२ ३०	३ ०८	३ ४५	४ २३	५ ००	१५	५ ३८	६ १५	९ २३	१२ ३०	१५ ३८	१८ ४५
१६	४०	१ २०	२ ००	२ ४०	३ २०	४ ००	४ ४०	५ २०	१६	६ ००	६ ४०	१० ००	१३ २०	१६ ४०	२० ००
१७	४३	१ २५	२ ०८	२ ५०	३ ३३	४ १५	४ ५८	५ ४०	१७	६ २३	७ ०५	१० ३८	१४ १०	१७ ४३	२१ १५
१८	४५	१ ३०	२ १५	३ ००	३ ४५	४ ३०	५ १५	६ ००	१८	६ ४५	७ ३०	११ १५	१५ ००	१८ ४५	२२ ३०
१९	४८	१ ३५	२ २३	३ १०	३ ५८	४ ४५	५ ३३	६ २०	१९	७ ०८	७ ५५	११ ५३	१५ ५०	१९ ४८	२३ ४५
२०	५०	१ ४०	२ ३०	३ २०	४ १०	५ ००	५ ५०	६ ४०	२०	७ ३०	८ २०	१२ ३०	१६ ४०	२० ५०	२५ ००
२१	५३	१ ४५	२ ३८	३ ३०	४ २३	५ १५	६ ०८	७ ००	२१	७ ५३	८ ४५	१३ ०८	१७ ३०	२१·५३	२६ १५
२२	५५	१ ५०	२ ४५	३ ४०	४ ३५	५ ३०	६ ३५	७ २०	२२	८ १५	९ १०	१३ ४५	१८ २०	२२ ५५	२७ ३०
२३	५८	१ ५५	२ ५३	३ ५०	४ ४८	५ ४५	६ ४३	७ ४०	२३	८ ३८	९ ३५	१४ २३	१९ १०	२३ ५८	२८ ४५
दि. १	१′००″	२ ००	३ ००	४ ००	५ ००	६ ००	७ ००	८ ००	दि. १	९ ००	१० ००	१५ ००	२० ००	२५ ००	३० ००
२	२′००″	४′००″	६′००″	८′००″	१०′००″	१२′००″	१४′००″	१६′००″	२	१८′००″	२०′००″	३०′००″	४०′००″	५०′००″	०१°००′

ग. →	३५′	४०′	४५′	५०′	५५′	१°००′
मि. ५	७″	८″	९″	१०″	११″	१३″
१०	१५	१७	१९	२१	२३	२५
१५	२२	२५	२८	३१	३४	३८
२०	२९	३३	३८	४२	४६	५०
२५	३६	४२	४७	५२	५७	१′०३″
३०	४४	५०	५६	१′०३″	१′०९″	१ १५
३५	५१	५८	१′०६″	१ १३	१ २०	१ २८
४०	५८	१′०७″	१ १५	१ २३	१ ३२	१ ४०
४५	१′०६″	१ १५	१ २४	१ ३४	१ ४३	१ ५३
५०	१ १३	१ २३	१ ३४	१ ४४	१ ५५	२ ०५
५५	१ २०	१ ३२	१ ४३	१ ५५	२ ०६	२ १८
घ. १	१ २८	१ ४०	१ ५३	२ ०५	२ १८	२ ३०
२	२ ५५	३ २०	३ ४५	४ १०	४ ३५	५ ००
३	४ २३	५ ००	५ ३८	६ १५	६ ५३	७ ३०
४	५ ५०	६ ४०	७ ३०	८ २०	९ १०	१० ००
५	७ १८	८ २०	९ २३	१० २५	११ २८	१२ ३०
६	८ ४५	१० ००	११ १५	१२ ३०	१३ ४५	१५ ००
७	१० १३	११ ४०	१३ ०८	१४ ३५	१६ ०३	१७ ३०
८	११ ४०	१३ २०	१५ ००	१६ ४०	१८ २०	२० ००
९	१३ ०८	१५ ००	१६ ५३	१८ ४५	२० ३८	२२ ३०
१०	१४ ३५	१६ ४०	१८ ४५	२० ५०	२२ ५५	२५ ००
११	१६ ०३	१८ २०	२० ३८	२२ ५५	२५ १३	२७ ३०
१२	१७ ३०	२० ००	२२ ३०	२५ ००	२७ ३०	३० ००
१३	१८ ५८	२१ ४०	२४ २३	२७ ०५	२९ ४८	३२ ३०
१४	२० २५	२३ २०	२६ १५	२९ १०	३२ ०५	३५ ००
१५	२१ ५३	२५ ००	२८ ०८	३१ १५	३४ २३	३७ ३०
१६	२३ २०	२६ ४०	३० ००	३३ २०	३६ ४०	४० ००
१७	२४ ४८	२८ २०	३१ ५३	३५ २५	३८ ५८	४२ ३०
१८	२६ १५	३० ००	३३ ४५	३७ ३०	४१ १५	४५ ००
१९	२७ ४३	३१ ४०	३५ ३८	३९ ३५	४३ ३३	४७ ३०
२०	२९ १०	३३ २०	३७ ३०	४१ ४०	४५ ५०	५० ००
२१	३० ३८	३५ ००	३९ २३	४३ ४५	४८ ०८	५२ ३०
२२	३२ ०५	३६ ४०	४१ १५	४५ ५०	५० २५	५५ ००
२३	३३ ३३	३८ २०	४३ ०८	४७ ५५	५२ ४३	५७ ३०
दि. १	३५ ००	४० ००	४५ ००	५० ००	५५ ००	१°००′००″
२	१°१०′	१°२०′	१°३०′	१°४०′	१°५०′	२°००′००″

ग. →	१°०५′	१°१०′	१°१५′	१°२०′	१°२५′
मि. ५	१४″	१५″	१६″	१७″	१८″
१०	२७	२९	३१	३३	३५
१५	४१	४४	४३	५०	५३
२०	५३	५८	१′०३″	१′०७″	१′११″
२५	१′०८″	१′१३″	१ १८	१ २३	१ २९
३०	१ २१	१ २७	१ ३४	१ ४०	१ ४६
३५	१ ३५	१ ४२	१ ४९	१ ५७	२ ०४
४०	१ ४८	१ ५७	२ ०५	२ १३	२ २२
४५	२ ०२	२ ११	२ २१	२ ३०	२ ३९
५०	२ १५	२ २६	२ ३६	२ ४७	२ ५७
५५	२ २९	२ ४०	२ ५२	३ ०३	३ १५
घं. १	२ ४३	२ ५५	३ ०८	३ २०	३ ३३
२	५ २५	५ ५०	६ १५	६ ४०	७ ०५
३	८ ०८	८ ४५	९ २३	१० ००	१० ३८
४	१० ५०	११ ४०	१२ ३०	१३ २०	१४ १०
५	१३ ३३	१४ ३५	१५ ३८	१६ ४०	१७ ४३
६	१६ १५	१७ ३०	१८ ४५	२० ००	२१ १५
७	१८ ५८	२० २५	२१ ५३	२३ २०	२४ ४८
८	२१ ४०	२३ २०	२५ ००	२६ ४०	२८ २०
९	२४ २३	२६ १५	२८ ०८	३० ००	३१ ५३
१०	२७ ०५	२९ १०	३१ १५	३३ २०	३५ २५
११	२९ ४८	३२ ०५	३४ २३	३६ ४०	३८ ५८
१२	३२ ३०	३५ ००	३७ ३०	४० ००	४२ ३०
१३	३५ १३	३७ ५५	४० ३८	४३ २०	४६ ०३
१४	३७ ५५	४० ५०	४३ ४५	४६ ४०	४९ ३५
१५	४० ३८	४३ ४५	४६ ५३	५० ००	५३ ०८
१६	४३ २०	४६ ४०	५० ००	५३ २०	५६ ४०
१७	४६ ०३	४९ ३५	५३ ०८	५६ ४०	१°००′१३″
१८	४८ ५५	५२ ३०	५६ १५	१°००′००″	१ ०३ ४५
१९	५१ ३८	५५ २५	५९ २३	१ ०३ २०	१ ०७ १८
२०	५४ १०	५८ २०	१°०२″३०″	१ ०६ ४०	१ १० ५०
२१	५६ ५३	१°०१′१५″	१ ०५ ३८	१ १० ००	१ १४ २३
२२	५९ ४५	१ ०४ १०	१ ०८ ४५	१ १३ २०	१ १७ ५५
२३	१°०२′२८″	१ ०७ ०५	१ ११ ५३	१ १६ ४०	१ २१ २८
दि. १	१ ०५ ००	१ १० ००	१ १५ ००	१ २० ००	१ २५ ००
२	२°१०′००″	२°२०′००″	२°३०″००″	२°४०′००″	२°५०′००″

ग. →	१°३०′	१°३५′	१°४०′	१°४५′	१°५०″
मि. ५	१९″	२०″	२१″	२२″	२३″
१०	३८	४०	४२	४४	४६
१५	५६	५९	१′०२″	१′०६″	१′०९″
२०	१′१५″	१′१९″	१ २३	१ २८	१ ३२
२५	१ ३४	१ ३९	१ ४४	१ ४९	१ ५५
३०	१ ५३	१ ५९	२ ०५	२ ११	२ १८
३५	२ ११	२ १९	२ २६	२ ३३	२ ४०
४०	२ ३०	२ ३८	२ ४७	२ ५५	३ ०३
४५	२ ४९	२ ५८	३ ०७	३ १७	३ २६
५०	३ ०८	३ १८	३ २८	३ ३९	३ ४९
५५	३ २६	३ ३८	३ ४९	४ ०१	४ १२
घं. १	३ ४५	३ ५८	४ १०	४ २३	४ ३५
२	७ ३०	७ ५५	८ २०	८ ४५	९ १०
३	११ १५	११ ५३	१२ ३०	१३ ०८	१३ ४५
४	१५ ००	१५ ५०	१६ ४०	१७ ३०	१८ २०
५	१८ ४५	१९ ४८	२० ५०	२१ ५३	२२ ५५
६	२२ ३०	२३ ४५	२५ ००	२६ १५	२७ ३०
७	२६ १५	२७ ४३	२९ १०	३० ३८	३२ ०५
८	३० ००	३१ ४०	३३ २०	३५ ००	३६ ४०
९	३३ ४५	३५ ३८	३७ ३०	३९ २३	४१ १५
१०	३७ ३०	३९ ३५	४१ ४०	४३ ४५	४५ ५०
११	४१ १५	४३ ३३	४५ ५०	४८ ०८	५० २५
१२	४५ ००	४७ ३०	५० ००	५२ ३०	५५ ००
१३	४८ ४५	५१ २८	५४ १०	५६ ५३	५९ ३५
१४	५२ ३०	५५ २५	५८ २०	१°०१′१५″	१°०४′१०″
१५	५६ १५	५९ २३	१°०२′३०″	१ ०५ ३८	१ ०८ ४५
१६	१°००′००″	१°०३′२०″	१ ०६ ४०	१ १० ००	१ १३ २०
१७	१ ०३ ४५	१ ०७ १८	१ १० ५०	१ १४ २३	१ १७ ५५
१८	१ ०७ ३०	१ ११ १५	१ १५ ००	१ १८ ४५	१ २२ ३०
१९	१ ११ ११	१ १५ १३	१ १९ १०	१ २३ ०८	१ २७ ०५
२०	१ ११ ००	१ १९ १०	१ २३ २०	१ २७ ३०	१ ३१ ४०
२१	१ १८ ४१	१ २३ ०८	१ २७ ३०	१ ३१ ५३	१ ३६ १५
२२	१ २२ ३०	१ २७ ०५	१ ३१ ४०	१ ३६ १५	१ ४० ५०
२३	१ २६ ११	१ ३१ ०३	१ ३५ ५०	१ ४० ३८	१ ४५ २५
दि. १	१ ३० ००	१ ३५ ००	१ ४० ००	१ ४५ ००	१ ५० ००
२	३°००′००″	३°१०′००″	३°२०′००″	३°३०′००′	३°४०′००″

ग. →	१°५५′	२°००′	२°०५′	२°१०′	२°१५′
मि. ५	२४″	२५″	२६″	२७″	२८″
१०	४८	५०	५२	५४	५६
१५	१′१२″	१′१५″	१′१८″	१′२१″	१′२४″
२०	१ ३६	१ ४०	१ ४४	१ ४८	१ ५३
२५	२ ००	२ ०५	२ १०	२ १५	२ २१
३०	२ २४	२ ३०	२ ३६	२ ४२	२ ४९
३५	२ ४८	२ ५५	३ ०२	३ १०	३ १७
४०	३ १२	३ २०	३ २८	३ ३७	३ ४५
४५	३ ३६	३ ४५	३ ५४	४ ०४	४ १३
५०	४ ००	४ १०	४ २०	४ ३१	४ ४१
५५	४ २४	४ ३५	४ ४६	४ ५८	५ ०९
घं. १	४ ४८	५ ००	५ १३	५ २५	५ ३८
२	९ ३५	१० ००	१० २५	१० ५०	११ १५
३	१४ २३	१५ ००	१५ ३८	१६ १५	१६ ५३
४	१९ १०	२० ००	२० ५०	२१ ४०	२२ ३०
५	२३ ५८	२५ ००	२६ ०३	२७ ०५	२८ ०८
६	२८ ४५	३० ००	३१ १५	३२ ३०	३३ ४५
७	३३ ३३	३५ ००	३६ २८	३७ ५५	३९ २३
८	३८ २०	४० ००	४१ ४०	४३ २०	४५ ००
९	४३ ०८	४५ ००	४६ ५३	४८ ४५	५० ३८
१०	४७ ५५	५० ००	५२ ०५	५४ १०	५६ १५
११	५२ ४३	५५ ००	५७ १८	५९ ३५	१°०१′५३″
१२	५७ ३०	१°००′००″	१°०२′३०″	१°०५′००″	१ ०७ ३०
१३	१°०२′१८″	१ ०५ ००	१ ०७ ४३	१ १० २५	१ १३ ०८
१४	१ ०७ ०५	१ १० ००	१ १२ ५५	१ १५ ५०	१ १८ ४५
१५	१ ११ ५३	१ १५ ००	१ १८ ०८	१ २१ १५	१ २४ २३
१६	१ १६ ४०	१ २० ००	१ २३ २०	१ २६ ४०	१ ३० ००
१७	१ २१ २८	१ २५ ००	१ २८ ३३	१ ३२ ०५	१ ३५ ३८
१८	१ २६ १५	१ ३० ००	१ ३३ ४५	१ ३७ ३०	१ ४१ १५
१९	१ ३१ ०३	१ ३५ ००	१ ३८ ५८	१ ४२ ५५	१ ४६ ५३
२०	१ ३५ ५०	१ ४० ००	१ ४४ १०	१ ४८ २०	१ ५२ ३०
२१	१ ४० ३८	१ ४५ ००	१ ४९ २३	१ ५३ ४५	१°५८ ०८
२२	१ ४५ २५	१ ५० ००	१ ५४ ३५	१ ५९ १०	२ ०३ ४५
२३	१ ५० १३	१ ५५ ००	१ ५९ ४८	१ ०४ ३५	२ ०९ २३
दि. १	१ ५५ ००	२ ०० ००	२ ०५ ००	२ १० ००	२ १५ ००
२	३°५०′००″	४°००′००″	४°१०′००″	४°२०′००″	४°३०′००″

✻ विकलांत सूक्ष्म ग्रह-स्पष्टीकरण ✻

हमारे कुछ पाठकों को "इष्ट काल" का ही ठीक-ठीक मतलब समझ में नहीं आता। अतः इस शब्द का वास्तविक अर्थ पुनः हम यहाँ समझा रहे हैं। अब यह उनके हृदय में बिलकुल स्पष्ट रूप से जम जायेगा। कोई घटना जिस क्षण में घटित होती है, वही क्षण उस घटना का इष्टकाल होता है यानी उस घटना के भावी शुभाशुभ परिणामों को ज्योतिष-शास्त्ररीत्या जानने के लिए हमें यही क्षण इष्ट, अभीष्ट या आवश्यक होता है। उस क्षण की जानकारी न होने से तात्कालिक कुण्डली नहीं बन सकती। इसी प्रकार यदि उस क्षण की सही जानकारी न हुई तो कुण्डली भी सही नहीं बन पायेगी। अब काल के प्रत्येक क्षण को नापने के कई साधन प्रचलित हैं, जैसे प्राचीन तरीके की जल-घड़ी, रेणुका-घड़ी, सूर्य-घड़ी आदि या आधुनिक रेल्वे, रेडियो आदि के समय। मान लीजिये, रेल्वे, रेडियो-समय के, जिसे 'भारतीय प्रमाणित समय' (I. S. T.) भी कहते हैं, अनुसार काशी में ता० १२ मार्च सन् '६० को १० बजे दिन में कोई घटना घटित हुई या किसी बालक का जन्म हुआ तो उस घटना या बालक के जन्म का इष्टकाल वही '१० बजे का समय' हुआ। यह बिल्कुल सीधा-सादा स्पष्ट इष्टकाल है; किन्तु पुराने ढर्रे से जिसे इष्टकाल कहते हैं, उसमें थोड़ा-सा फर्क है। वहाँ इष्टकाल घं. मि. में न होकर घटी पलों में होता है और उसकी गिनती घटना-स्थल के सूर्योदय-समय से की जाती है यानी घटना-स्थल के सूर्योदय-समय से जितने घटी पल बाद कोई घटना होती है, वही घटी पल उस घटना का इष्टकाल माना जाता है। अतः यदि हमें उपरोक्त घं. १० बजे का पुराने ढर्रे से घटी पलात्मक इष्टकाल बनाना हो तो देखना होगा कि उस दिन घटना-स्थल पर सूर्योदय भा० प्र० समय से कितने बजे हुआ। यहाँ काशी में ता० १२ मार्च को सूर्योदय स्टैं. टा. से ६। बजे होता है। सो ६। से १० तक ३ घंटे ४५ मि. बाद घटना घटित हुई। बस, इसी ३ घं. ४५ मि० को २॥ से गुणा कर घटी पल बना लिया तो घटी ९ पल २२ विपल ३० प्राचीन शैली का इष्टकाल हुआ; किन्तु आज के वैज्ञानिक युग में सूर्य-घड़ी के समय की भाँति इस प्रकार के घटी-पलात्मक इष्टकाल के घोल-घपले की कोई आवश्यकता नहीं। समस्त ज्योतिष-गणना भा० प्र० समय यानी रेल्वे, रेडियो-टाइम के सहारे बड़ी सरलता, स्पष्टता और शुद्धतापूर्वक सम्पन्न हो सकती है। इसी कारण जन्त्री के सारे ग्रह-गणित में हम भा० प्र० समय का ही प्रयोग करते हैं; केवल तिथ्यादि के धर्मशास्त्रीय निर्णय की सुविधा के विचार से उनका स्थानीय घटी-पलात्मक मान दिया जाता है। इस प्रकार यदि किसी का जन्म भा० स्टैं० टा० से १० बजे दिन को हुआ तो हमें उस दिन के १० बजे समय पर जन्म-स्थल के लिए लग्न स्पष्ट करना होगा। इस १० बजे के समय को यदि हम सांपातिक काल में बदल दें तो लग्न, दशम-साधन बड़ी शीघ्रता, साथ ही सूक्ष्मता-शुद्धतापूर्वक सम्पन्न हो जाता है। इसकी रीति चिंताहरणजंत्री के पाठक बखूबी समझ चुके हैं; उसे पुनः यहाँ दुहराने की आवश्यकता नहीं। हमारे जिन नये पाठकों के पास विगत वर्षों की जन्त्री न हो, वे हम से सन् १९६३, १९६६ और १९६९ ई० की जंत्रियाँ मँगा लें, जिनकी कुछ ही प्रतियाँ हमारे पास अब शेष हैं : मूल्य २) प्रति जंत्री है; अन्य किसी वर्ष की जन्त्री की एक भी प्रति किसी मूल्य पर उपलब्ध नहीं है। अतः उसे भेजने के लिए आग्रह करने का कोई सज्जन कष्ट न उठायें।

पता—**श्रीजगजीवनदास गुप्त**, ए. ११/७० शिव-निवास, राजघाट, वाराणसी–१

पहले यह समझ लीजिये कि 'ग्रह-स्पष्ट' कहते किसे हैं? आकाशस्थ राशि-मण्डल में मेषादि द्वादश राशियों की स्थिति क्रमशः पश्चिम से पूर्व की ओर है; अतः जो ग्रह, अपनी दैनिक गति से, राशि-चक्र में पश्चिम से पूर्व की ओर सीधे भ्रमण करते हैं वे मार्गी कहलाते हैं और जो उल्टे यानी पूर्व के बजाय पश्चिम की ओर राशिचक्र में भ्रमण करते देखे जाते हैं, वे वक्री। ग्रह वक्री, मार्गी होने के समय कुछ क्षणों के लिए स्तम्भी होता है, अन्यथा हर समय अपनी दनिक गति से राशि-चक्र में भ्रमण ही करता रहता है। ग्रहों की दैनिक गति भी बराबर घटती-बढ़ती रहती है। किसी तिथि, तारीख और समय पर ग्रह राशि-मण्डल की किस राशि के कितने अंश, कला, विकला पर है, यह पञ्चाङ्ग या जन्त्री में दिया रहता है। इसे ही 'ग्रह-स्पष्ट' कहते हैं। यह ध्यान रखना चाहिये कि ग्रह-स्पष्ट में ग्रह की वर्तमान राशि नहीं; बल्कि गत राशि दी गयी रहती है। जैसे, १२ मार्च सन् '६० शनिवार को भारतीय प्रमाणित समय (I. S. T.) से घं. ५ मि. ३० बजे सूर्य का स्पष्ट राश्यादि १०-२८°-८′-३५″ है एवं उसकी उस दिन की गति ५९′-४९″ जन्त्री म छपी है तो मेषादि अनुक्रम से १०वीं राशि मकर गत हुई अर्थात् सूर्य मकर राशि पार कर अग्रिम कुम्भ राशि के २८ अंश ८ कला एवं ३५ विकला को भोग रहा है। भोगने की गति उस दिन के २४ घंटों के लिये ५९ कला ४९ विकला है। सूर्य का यह भोगांश उपरोक्त दिन-ता० और समय के लिए है। अतः २४ घंटे के बाद अगली तारीख यानी १३ मार्च को प्रातः ५॥ बजे वह गत दिन के भोगांश १०-२८°-८′-३५″ से अपनी

दैनिक गति जितना '५९'-४९" आगे बढ़ जायेगा अर्थात् उसका भोगांश १०-२८°-८'-३५"+५९'-४९" =१०-९°-८'-२४" हो जायेगा; यदि सूर्य उल्टी यानी वक्र गति से से चलता होता तो उसके उक्त भोगांश १०-२८°-८'-३५" में-से उसकी दैनिक गति ५९'-४९" घट जाती और अगले दिन ५॥ बजे प्रातः उसका भोगांश १०-२७°-८'-४६" ही रह जाता; किन्तु सूर्य, चन्द्रमा कभी वक्री नहीं होते, सदैव मार्गी रहते हैं; फलतः उनके भोगांश बढ़ते ही जाते हैं। इसी प्रकार राहु, केतु कभी मार्गी नहीं होते—सदा वक्री रहते हैं, अतः उनका भोगांश घटता रहता है। उनके अलावा अन्य सर्व ग्रह मार्ग गति के अलावा कभी वक्र गति से भी भ्रमण करते हैं। अतः वे मार्गी रहते हैं तो पश्चिम से पूर्व की ओर द्वादश राशियों का अनुक्रम से अतिक्रमण करने के कारण उनके भोगांश बढ़ते रहते हैं और जब वक्री रहते हैं तो राशि-मण्डल में उनके वक्र यानी उल्टा चलने (पीछे की ओर हटते जाने) से भोगांश क्रमशः घटते जाते हैं। इतना लिखने का हमारा तात्पर्य यह है कि यदि किसी पञ्चाङ्ग जन्त्री के ग्रह-स्पष्ट में असावधानी से ग्रह के मार्गी वक्री होने का चिह्न या उल्लेख न हो तो उनके वर्तमान और अग्रिम स्पष्ट को देखकर पाठक उनके मार्गत्व या वक्रत्व को जान सकते हैं।

इस विवरण से पाठक जान गये कि किसी दिन के 'ग्रह-स्पष्ट' से हमें उस दिन के एक निश्चित समय पर ग्रह के भोगांश ज्ञात होते हैं। जैसे ता० १२ मार्च १९६० को प्रातः ५॥ बजे सूर्य का भोगांश १०-२८°-८'-३५" है; किन्तु हमारे पूर्वोक्त उदाहरण में हमारा उस दिन का इष्टकाल घट्यादि९-२२-३० यानी स्टैं. टा. से '१० बजे' है और सूर्य का उक्त भोगांश प्रातः ५॥ बजे का है अर्थात् ग्रह-स्पष्ट के समय ५॥ बजे से हमारा इष्टकाल ४॥ घंटा आगे है। अतः हमें अपने इष्टकाल का सूर्य स्पष्ट करने के लिए देखना होगा कि जब सूर्य इस दिन २४ घंटे में ५९'-४९" चलता है तो ४॥ घंटे में कितना चलेगा? यह फल हम ज्ञात कर लें तो सूर्य के मार्गी होने के कारण उसके ५॥ बजे प्रातः के स्पष्ट में इस फल को जोड़ देने से हमे इष्टकाल '१० बजे का' सूर्यस्पष्ट ज्ञात हो जायेगा। इस फल को ज्योतिषीगण "चालन" कहते हैं। किन्हीं पञ्चाङ्गों में प्रति दिन का ग्रह-स्पष्ट दिया रहता है; किन्हीं में साप्ताहिक। इसी प्रकार कुछ पञ्चाङ्गों में औदयिक यानी स्थानिक सूर्योदय-काल के तथा कुछ में मिश्रमानकालिक ग्रह-स्पष्ट दिये जाते हैं। 'चिंताहरण जंत्री' में सूर्य, चन्द्र का दैनिक स्पष्ट तथा शेष १० ग्रहों के स्पष्ट २ दिन के अन्तर से दिये जाते हैं। सर्व ग्रहों का स्पष्ट भा० प्रमाणित समय (I. S. T.) से प्रातः ५॥ बजे का होता है। अतः पुरातन प्रणाली के पञ्चाङ्गों की अपेक्षा जंत्री के ग्रह-स्पष्ट सबके लिए अधिक सुबोध एवं सुविधाजनक हैं। इस ग्रह-स्पष्ट को 'ग्रह-पंक्ति' भी कहा जाता है।

इस पंक्ति से अपना इष्टकाल आगे हो और ग्रह मार्गी हो तो चालन को पंक्ति में + धन, ग्रह वक्री हो तो चालन को पंक्ति में − ऋण किया जाता है।

इसी प्रकार पंक्ति से अपना इष्टकाल पीछे हो और ग्रह मार्गी हो तो चालन − ऋण तथा ग्रह वक्री हो तो चालन + धन पंक्ति में करना चाहिये।

उपर्युक्त उदाहरण में पंक्ति से इष्टकाल आगे तथा ग्रह (सूर्य) मार्गी होने से चालन को पंक्ति में धन करना होगा। यह चालन लाने के लिए अभीतक दो रीतियाँ प्रचलित रही हैं: १—गोमूत्रिका की, २—लाघवांक की। गोमूत्रिका की रीति से गणित करने के लिये ग्रह की दैनिक यानी २४ घंटे की गति से पहले १ घंटे की गति बनानी पड़ती है; फिर काफ़ी गुणन-क्रिया करनी पड़ती है, जिसमें विशेष समय और श्रम लगता है। लाघवांक की रीति में केवल कुछ अंकों के जोड़-मात्र से काम चल जाता है; किंतु परिणाम सामान्यतः कलापर्यन्त ही सूक्ष्म आता है। अतः ज्योतिष-साहित्य में ऐसी सारणी के निर्माण की हमारी बहुत दिनों से अभिलाषा थी, जो लाघवांक से भी सुगम हो; किन्तु परिणाम विकला पर्यन्त सूक्ष्म शुद्ध मिल जाय—केवल मामूली जोड़-बाकी से। और हमारे परिश्रम के फलस्वरूप वह अपूर्व सारणी यहाँ प्रकाशित की जा रही है। इससे हमारे ज्योतिष-प्रेमियों को कितना सुख, कितनी प्रसन्नता होगी, इसका अनुमान कर ही हम कृतकृत्य हो जाते हैं।

उक्त सारणी में सिरे पर बाईं से दाहिनी ओर ग्रह की दैनिक (२४ घंटे की) गति के अंक दिये गये हैं तथा सारणी के एकदम शुरू, मध्य और अन्त में ऊपर से नीचे की ओर 'काल' के अंक दिये गये हैं। 'गति' के अंक को आप अंश या कला अथवा विकला, इन तीनों में-से किसी भी रूप में प्रयोग कर सकते हैं। इसी प्रकार 'काल' के अंक को घंटा या मिनिट या सेकेण्ड के रूप में प्रयोग कर सकते हैं अर्थात् कोई ग्रह २४ घं० में अमुक 'गति' (अंश, कला या विकला) से चलता है तो अमुक 'काल' (घं० मि० या से०) में कितना चलेगा, यह "चालन" आपको सारणी में तैयार मिलेगा, त्रैराशिक नहीं करना पड़ेगा। चालन के लिए सारणी के प्रयोग में प्रथम 'गति' एवं 'काल' के परस्पर अधिकतम विभाग का फल लेना चाहिये। तत्पश्चात् क्रमशः छोटे विभागों का फल लेकर सबको यथारीति जोड़ लेना चाहिये। जैसे, उपर्युक्त उदाहरण में हमें यह मालूम करना है कि सूर्य अपनी दैनिक गति ५९'-४९" से ४ घं० ३० मि० में कितना

चलेगा तो पहले हम यहाँ 'गति' के अधिकतम विभाग ५९' तथा 'काल' के अधिकतम विभाग ४ घंटा का फल लेंगे। सारणी पृष्ठ ६३ पर 'गति' ५९ के खाने में नीचे तथा काल ४ की सीध में फल ९।५०।० मिला। इसका अर्थ हुआ कि सूर्य २४ घंटे में ५९' कला चलता है तो ४ घण्टे में ९ कला ५० विकला ० प्रतिविकला चलेगा। इसमें ३० मिनट का फल और जोड़ा जाय तो ४॥ घंटे का फल आ जायेगा। काल के क्रमशः घं. मि. से. प्र. से. इत्यादि एव गति के अंश, कला, विकला, प्रतिविकलादि में-से हर अग्रिम जाति अपने से पूर्व जाति का ६० वाँ हिस्सा होती है। अब यह नियम यहाँ समझ लीजिये कि गति का सम्बन्ध 'घण्टा' से होने पर फल का आदि-भाग गति का स्वजातीय होता है; जैसे यहाँ गति कला (५९) है और काल 'घण्टा' (४) है; अतः उपर्युक्त फल भी कलादि होगा यानी ९ कला ५० विकला ० प्रतिविकला। यदि यहाँ काल 'घण्टा' न होकर घंटा का अग्रिम जातीय यानी 'मिनट' होता तो फल भी यहाँ गति का स्वजातीय यानी कलादि न होकर उसका अग्रिम जातीय (विकलादि) होता। इसी प्रकार काल मिनट के बजाय यहाँ 'सेकेण्ड' होता तो फल भी विकलादि से अग्रिम जातीय यानी प्रतिविकलादि होता। ऐसा ही सारणी में सर्वत्र फलों का तारतम्य समझना चाहिये। सारणी के दो-चार बार प्रयोग करने से ही पाठक सहज बुद्धि से फलों का परिणाम समझ जाया करेंगे, जरा भी दिक्कत नहीं होगी, अस्तु। हमें उपर्युक्त रीति से सूर्य की दैनिक गति ५६ कला ४६ विकला तथा काल के घं.४ मि० ३० के लिए सारणी से निम्न फल प्राप्त होते हैं :—

५९ कला का ४ घं. के लिए फल—कलादि ९।५०।०
" " ३० मि० " " विकलादि ७३।४५।०
४९ विकला " ४ घंटे " " " ८।१०।०
" " ३० मि० " " प्रतिविकलादि ६१।१५
सबका योगफल—कलादि ११।१२।५६।१५

सूर्य की गति मार्गी होने से प्रातः ५॥ बजे के सूर्य के भोग में इस फल को जोड़ने से स्टैं. टा. के १० बजे का सूर्य-स्पष्ट हो जायेगा। जैसे—

१०-२८-८-३५
+ ११-१३
१०-२८-१९-४८

अभ्यास हो जाने से गति के किसी भी विभाग का घं. मिनट के लिए आये हुए फल का जोड़ मौखिक रीति से हो सकेगा। जैसे, उपरोक्त उदाहरण में गति ५९' के प्रथम फल ९'-५०" में द्वितीय फल ७३"-४५'" (=१'-१३"-४५'") का जोड़ ११'-३"-४५'" और गति ४९ विकला के प्रथम फल ८"।१०'" तथा द्वितीय फल ६१।१५'" (=१"-१'"-१५) का जोड़ ९"।११'"।१५ जबानी हो जाता है तो ११'।३"।४५'" और ९"।११"।१५ को लिखकर जोड़ने से इष्टफल कलादि ११।१२।५६।१५ आ जाता है। प्रति-विकलाएँ ३० से ज्यादा होने पर विकला में १ बढ़ाकर शेष फल का लोप हो जाता है।

अब उसी तारीख १२।३।१९६० एवं इष्टकाल घं० १० बजे के लिए एक और दृष्टान्त बुध के स्पष्टीकरण का हम लें। जंत्री के पृष्ठ २७ पर मार्च मास की ग्रह-पंक्तियों को हमने देखा तो उसमें ता. १० और ता. १३ के ग्रह-स्पष्ट मिले; अपने इष्ट दिन ता. १२ की ग्रह-पंक्ति नहीं मिली। जन्त्री में सूर्य, चन्द्र का दैनिक स्पष्ट एवं दैनिक गति दी जाती है; शेष १० ग्रहों का स्पष्ट २ दिन के अन्तर से दिया जाता है। इन दस ग्रहों में-से मंगल से शनि तक के ग्रहों के स्पष्ट के साथ उनकी दैनिक गति का भी उल्लेख रहता है। बाकी राहु, हर्शल, नेप्च्यून और प्लूटो की दैनिक गति मालूम करने के लिए उनकी वर्तमान और अग्रिम पंक्तियों के अन्तर में ३ का भाग दे देने से उनकी वर्तमान दैनिक गति मालूम हो जायेगी। अस्तु, हमें यहाँ बुध का स्पष्ट करना है तो हम अपने इष्ट दिन १२ मार्च के निकटतम १३ मार्च की पंक्ति को लें। उस दिन बुध का स्पष्ट १०।२४°।५९' एवं दैनिक गति ५७' है। पंक्ति की तारीख से इष्ट तारीख १ दिन पीछे है और ग्रह (बुध) वक्री है; अतः पूर्वकथित नियमानुसार बुध के भोग १०। २४°।५९' में उसकी १ दिन की गति ५७' को जोड़ दिया तो ता. १२ के ५॥ बजे प्रातःकाल का बुध-स्पष्ट १०।२५°।५६' ज्ञात हो गया। सूर्य-स्पष्ट की भाँति इसमें भी ४॥ घण्टे का चालन सारणी ६३ से लिया तो निम्नोक्त फल मिले :—

५७ कला का ४ घं० के लिए फल कलादि ९-'-३०"-०'"
" " ३० मि. " " विकलादि ७१-"-१५'"
योग-फल १०'-४१-"-१५'"

यहाँ पंक्ति-काल (५॥ बजे) से अपना इष्टकाल (१० बजे) आगे होने और बुध वक्री होने के कारण योगफल १०'-४१" को बुध के उपर्युक्त स्पष्ट १०-२५°-५६' में घटा दिया तो तारीख १२-३-१९६० के इष्टकाल घण्टा '१० बजे' का बुध-स्पष्ट १०।२५°।४५'।१९" बिल्कुल सरलता से ज्ञात हो गया। इसी प्रकार शेष सर्वग्रहों को कुण्डली के इष्ट-काल पर स्पष्ट कर लेना चाहिये।

विकलान्त सूक्ष्म ग्रह-स्पष्टीकरण की इस अपूर्व सारणी के निर्माण एवं प्रचार के लिए भारत के सुविख्यात खगोलवेत्ता और भारतीय नॉटिकल एल्मनाक के प्रधान सम्पादक गणिताचार्य श्रीनिर्मलचन्द्र लाहिड़ी ने अपने प्रशंसापूर्ण उद्गार से हमें बड़ा प्रोत्साहन प्रदान किया है। आपने इस सारणी को अन्य भाषाओं में भी छपवाने का अनुरोध किया है। एतदर्थ हम उनके प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करते हुए यह लेख समाप्त करते हैं।

इष्टकाल पर विकलान्त सूक्ष्म ग्रह-स्पष्टीकरण की अपूर्व सारणी १.

काल	गति १→	२	३	३-११	४	काल	५	६	७	८	९	१०	काल
१	० २ ३०	० ५ ०	० ७ ३०	० ७ ५७	० १० ०	१	० १२ ३०	० १५ ०	० १७ ३०	० २० ०	० २२ ३०	० २५ ०	१
२	० ५ ०	० १० ०	० १५ ०	० १५ ५५	० २० ०	२	० २५ ०	० ३० ०	० ३५ ०	० ४० ०	० ४५ ०	० ५० ०	२
३	० ७ ३०	० १५ ०	० २२ ३०	० २३ ५२	० ३० ०	३	० ३७ ३०	० ४५ ०	० ५२ ३०	१ ० ०	१ ७ ३०	१ १५ ०	३
४	० १० ०	० २० ०	० ३० ०	० ३१ ५०	० ४० ०	४	० ५० ०	१ ० ०	१ १० ०	१ २० ०	१ ३० ०	१ ४० ०	४
५	० १२ ३०	० २५ ०	० ३७ ३०	० ३९ ४७	० ५० ०	५	१ २ ३०	१ १५ ०	१ २७ ३०	१ ४० ०	१ ५२ ३०	२ ५ ०	५
६	० १५ ०	० ३० ०	० ४५ ०	० ४७ ४५	१ ० ०	६	१ १५ ०	१ ३० ०	१ ४५ ०	२ ० ०	२ १५ ०	२ ३० ०	६
७	० १७ ३०	० ३५ ०	० ५२ ३०	० ५५ ४२	१ १० ०	७	१ २७ ३०	१ ४५ ०	२ २ ३०	२ २० ०	२ ३७ ३०	२ ५५ ०	७
८	० २० ०	० ४० ०	१ ० ०	१ ३ ४०	१ २० ०	८	१ ४० ०	२ ० ०	२ २० ०	२ ४० ०	३ ० ०	३ २० ०	८
९	० २२ ३०	० ४५ ०	१ ७ ३०	१ ११ ३७	१ ३० ०	९	१ ५२ ३०	२ १५ ०	२ ३७ ३०	३ ० ०	३ २२ ३०	३ ४५ ०	९
१०	० २५ ०	० ५० ०	१ १५ ०	१ १९ ३५	१ ४० ०	१०	२ ५ ०	२ ३० ०	२ ५५ ०	३ २० ०	३ ४५ ०	४ १० ०	१०
११	० २७ ३०	० ५५ ०	१ २२ ३०	१ २७ ३२	१ ५० ०	११	२ १७ ३०	२ ४५ ०	३ १२ ३०	३ ४० ०	४ ७ ३०	४ ३५ ०	११
१२	० ३० ०	१ ० ०	१ ३० ०	१ ३५ ३०	२ ० ०	१२	२ ३० ०	३ ० ०	३ ३० ०	४ ० ०	४ ३० ०	५ ० ०	१२
१३	० ३२ ३०	१ ५ ०	१ ३७ ३०	१ ४३ २७	२ १० ०	१३	२ ४२ ३०	३ १५ ०	३ ४७ ३०	४ २० ०	४ ५२ ३०	५ २५ ०	१३
१४	० ३५ ०	१ १० ०	१ ४५ ०	१ ५१ २५	२ २० ०	१४	२ ५५ ०	३ ३० ०	४ ५ ०	४ ४० ०	५ १५ ०	५ ५० ०	१४
१५	० ३७ ३०	१ १५ ०	१ ५२ ३०	१ ५९ २२	२ ३० ०	१५	३ ७ ३०	३ ४५ ०	४ २२ ३०	५ ० ०	५ ३७ ३०	६ १५ ०	१५
१६	० ४० ०	१ २० ०	२ ० ०	२ ७ २०	२ ४० ०	१६	३ २० ०	४ ० ०	४ ४० ०	५ २० ०	६ ० ०	६ ४० ०	१६
१७	० ४२ ३०	१ २५ ०	२ ७ ३०	२ १५ १७	२ ५० ०	१७	३ ३२ ३०	४ १५ ०	४ ५७ ३०	५ ४० ०	६ २२ ३०	७ ५ ०	१७
१८	० ४५ ०	१ ३० ०	२ १५ ०	२ २३ १५	३ ० ०	१८	३ ४५ ०	४ ३० ०	५ १५ ०	६ ० ०	६ ४५ ०	७ ३० ०	१८
१९	० ४७ ३०	१ ३५ ०	२ २२ ३०	२ ३१ १२	३ १० ०	१९	३ ५७ ३०	४ ४५ ०	५ ३२ ३०	६ २० ०	७ ७ ३०	७ ५५ ०	१९
२०	० ५० ०	१ ४० ०	२ ३० ०	२ ३९ १०	३ २० ०	२०	४ १० ०	५ ० ०	५ ५० ०	६ ४० ०	७ ३० ०	८ २० ०	२०
२१	० ५२ ३०	१ ४५ ०	२ ३७ ३०	२ ४७ ७	३ ३० ०	२१	४ २२ ३०	५ १५ ०	६ ७ ३०	७ ० ०	७ ५२ ३०	८ ४५ ०	२१
२२	० ५५ ०	१ ५० ०	२ ४५ ०	२ ५५ ५	३ ४० ०	२२	४ ३५ ०	५ ३० ०	६ २५ ०	७ २० ०	८ १५ ०	९ १० ०	२२
२३	० ५७ ३०	१ ५५ ०	२ ५२ ३०	३ ३ २	३ ५० ०	२३	४ ४७ ३०	५ ४५ ०	६ ४२ ३०	७ ४० ०	८ ३७ ३०	९ ३५ ०	२३
२४	१ ० ०	२ ० ०	३ ० ०	३ ११ ०	४ ० ०	२४	५ ० ०	६ ० ०	७ ० ०	८ ० ०	९ ० ०	१० ० ०	२४
२५	१ २ ३०	२ ५ ०	३ ७ ३०	३ १८ ५७	४ १० ०	२५	५ १२ ३०	६ १५ ०	७ १७ ३०	८ २० ०	९ २२ ३०	१० २५ ०	२५
२६	१ ५ ०	२ १० ०	३ १५ ०	३ २६ ५५	४ २० ०	२६	५ २५ ०	६ ३० ०	७ ३५ ०	८ ४० ०	९ ४५ ०	१० ५० ०	२६
२७	१ ७ ३०	२ १५ ०	३ २२ ३०	३ ३४ ५२	४ ३० ०	२७	५ ३७ ३०	६ ४५ ०	७ ५२ ३०	९ ० ०	१० ७ ३०	११ १५ ०	२७
२८	१ १० ०	२ २० ०	३ ३० ०	३ ४२ ५०	४ ४० ०	२८	५ ५० ०	७ ० ०	८ १० ०	९ २० ०	१० ३० ०	११ ४० ०	२८
२९	१ १२ ३०	२ २५ ०	३ ३७ ३०	३ ५० ४७	४ ५० ०	२९	६ २ ३०	७ १५ ०	८ २७ ३०	९ ४० ०	१० ५२ ३०	१२ ५ ०	२९
३०	१ १५ ०	२ ३० ०	३ ४५ ०	३ ५८ ४५	५ ० ०	३०	६ १५ ०	७ ३० ०	८ ४५ ०	१० ० ०	११ १५ ०	१२ ३० ०	३०
३१	१ १७ ३०	२ ३५ ०	३ ५२ ३०	४ ६ ४२	५ १० ०	३१	६ २७ ३०	७ ४५ ०	९ २ ३०	१० २० ०	११ ३७ ३०	१२ ५५ ०	३१
३२	१ २० ०	२ ४० ०	४ ० ०	४ १४ ४०	५ २० ०	३२	६ ४० ०	८ ० ०	९ २० ०	१० ४० ०	१२ ० ०	१३ २० ०	३२
३३	१ २२ ३०	२ ४५ ०	४ ७ ३०	४ २२ ३७	५ ३० ०	३३	६ ५२ ३०	८ १५ ०	९ ३७ ३०	११ ० ०	१२ २२ ३०	१३ ४५ ०	३३
३४	१ २५ ०	२ ५० ०	४ १५ ०	४ ३० ३५	५ ४० ०	३४	७ ५ ०	८ ३० ०	९ ५५ ०	११ २० ०	१२ ४५ ०	१४ १० ०	३४
३५	१ २७ ३०	२ ५५ ०	४ २२ ३०	४ ३८ ३२	५ ५० ०	३५	७ १७ ३०	८ ४५ ०	१० १२ ३०	११ ४० ०	१३ ७ ३०	१४ ३५ ०	३५
३६	१ ३० ०	३ ० ०	४ ३० ०	४ ४६ ३०	६ ० ०	३६	७ ३० ०	९ ० ०	१० ३० ०	१२ ० ०	१३ ३० ०	१५ ० ०	३६
३७	१ ३२ ३०	३ ५ ०	४ ३७ ४०	४ ५४ २७	६ १० ०	३७	७ ४२ ३०	९ १५ ०	१० ४७ ३०	१२ २० ०	१३ ५२ ३०	१५ २५ ०	३७
३८	१ ३५ ०	३ १० ०	४ ४५ ०	५ २ २५	६ २० ०	३८	७ ५५ ०	९ ३० ०	११ ५ ०	१२ ४० ०	१४ १५ ०	१५ ५० ०	३८
३९	१ ३७ ३०	३ १५ ०	४ ५२ ३०	५ १० २२	६ ३० ०	३९	८ ७ ३०	९ ४५ ०	११ २२ ३०	१३ ० ०	१४ ३७ ३०	१६ १५ ०	३९
४०	१ ४० ०	३ २० ०	५ ० ०	५ १८ २०	६ ४० ०	४०	८ २० ०	१० ० ०	११ ४० ०	१३ २० ०	१५ ० ०	१६ ४० ०	४०
४१	१ ४२ ३०	३ २५ ०	५ ७ ३०	५ २६ १७	६ ५० ०	४१	८ ३२ ३०	१० १५ ०	११ ५७ ३०	१३ ४० ०	१५ २२ ३०	१७ ५ ०	४१
४२	१ ४५ ०	३ ३० ०	५ १५ ०	५ ३४ १५	७ ० ०	४२	८ ४५ ०	१० ३० ०	१२ १५ ०	१४ ० ०	१५ ४५ ०	१७ ३० ०	४२
४३	१ ४७ ३०	३ ३५ ०	५ २२ ३०	५ ४२ १२	७ १० ०	४३	८ ५७ ३०	१० ४५ ०	१२ ३२ ३०	१४ २० ०	१६ ७ ३०	१७ ५५ ०	४३
४४	१ ५० ०	३ ४० ०	५ ३० ०	५ ५० १०	७ २० ०	४४	९ १० ०	११ ० ०	१२ ५० ०	१४ ४० ०	१६ ३० ०	१८ २० ०	४४
४५	१ ५२ ३०	३ ४५ ०	५ ३७ ३०	५ ५८ ७	७ ३० ०	४५	९ २२ ३०	११ १५ ०	१३ ७ ३०	१५ ० ०	१६ ५२ ३०	१८ ४५ ०	४५
४६	१ ५५ ०	३ ५० ०	५ ४५ ०	६ ६ ५	७ ४० ०	४६	९ ३५ ०	११ ३० ०	१३ २५ ०	१५ २० ०	१७ १५ ०	१९ १० ०	४६
४७	१ ५७ ३०	३ ५५ ०	५ ५२ ३०	६ १४ २	७ ५० ०	४७	९ ४७ ३०	११ ४५ ०	१३ ४२ ३०	१५ ४० ०	१७ ३७ ३०	१९ ३५ ०	४७
४८	२ ० ०	४ ० ०	६ ० ०	६ २२ ०	८ ० ०	४८	१० ० ०	१२ ० ०	१४ ० ०	१६ ० ०	१८ ० ०	२० ० ०	४८
४९	२ २ ३०	४ ५ ०	६ ७ ३०	६ २९ ५७	८ १० ०	४९	१० १२ ३०	१२ १५ ०	१४ १७ ३०	१६ २० ०	१८ २२ ३०	२० २५ ०	४९
५०	२ ५ ०	४ १० ०	६ १५ ०	६ ३७ ५५	८ २० ०	५०	१० २५ ०	१२ ३० ०	१४ ३५ ०	१६ ४० ०	१८ ४५ ०	२० ५० ०	५०
५१	२ ७ ३०	४ १५ ०	६ २२ ३०	६ ४५ ५२	८ ३० ०	५१	१० ३७ ३०	१२ ४५ ०	१४ ५२ ३०	१७ ० ०	१९ ७ ३०	२१ १५ ०	५१
५२	२ १० ०	४ २० ०	६ ३० ०	६ ५३ ५०	८ ४० ०	५२	१० ५० ०	१३ ० ०	१५ १० ०	१७ २० ०	१९ ३० ०	२१ ४० ०	५२
५३	२ १२ ३०	४ २५ ०	६ ३७ ३०	७ १ ४७	८ ५० ०	५३	११ २ ३०	१३ १५ ०	१५ २७ ३०	१७ ४० ०	१९ ५२ ३०	२२ ५ ०	५३
५४	२ १५ ०	४ ३० ०	६ ४५ ०	७ ९ ४५	९ ० ०	५४	११ १५ ०	१३ ३० ०	१५ ४५ ०	१८ ० ०	२० १५ ०	२२ ३० ०	५४
५५	२ १७ ३०	४ ३५ ०	६ ५२ ३०	७ १७ ४२	९ १० ०	५५	११ २७ ३०	१३ ४५ ०	१६ २ ३०	१८ २० ०	२० ३७ ३०	२२ ५५ ०	५५
५६	२ २० ०	४ ४० ०	७ ० ०	७ २५ ४०	९ २० ०	५६	११ ४० ०	१४ ० ०	१६ २० ०	१८ ४० ०	२१ ० ०	२३ २० ०	५६
५७	२ २२ ३०	४ ४५ ०	७ ७ ३०	७ ३३ ३७	९ ३० ०	५७	११ ५२ ३०	१४ १५ ०	१६ ३७ ३०	१९ ० ०	२१ २२ ३०	२३ ४५ ०	५७
५८	२ २५ ०	४ ५० ०	७ १५ ०	७ ४१ ३५	९ ४० ०	५८	१२ ५ ०	१४ ३० ०	१६ ५५ ०	१९ २० ०	२१ ४५ ०	२४ १० ०	५८
५९	२ २७ ३०	४ ५५ ०	७ २२ ३०	७ ४९ ३२	९ ५० ०	५९	१२ १७ ३०	१४ ४५ ०	१७ १२ ३०	१९ ४० ०	२२ ७ ३०	२४ ३५ ०	५९
६०	२ ३० ०	५ ० ०	७ ३० ०	७ ५७ ३०	१० ० ०	६०	१२ ३० ०	१५ ० ०	१७ ३० ०	२० ० ०	२२ ३० ०	२५ ० ०	६०

इष्टकाल पर विकलान्त सूक्ष्म ग्रह-स्पष्टीकरण की अपूर्व सारणी २.

काल	गति→ ११	१२	१३	१३-२०	१४	काल	१५	१६	१७	१८	१९	२०	काल
१	० २७ ३०	० ३० ०	० ३२ ३०	० ३३ २०	० ३५ ०	१	० ३७ ३०	० ४० ०	० ४२ ३०	० ४५ ०	० ४७ ३०	० ५० ०	१
२	० ५५ ०	१ ० ०	१ ५ ०	१ ६ ४०	१ १० ०	२	१ १५ ०	१ २० ०	१ २५ ०	१ ३० ०	१ ३२ ०	१ ४० ०	२
३	१ २२ ३०	१ ३० ०	१ ३७ ३०	१ ४० ०	१ ४५ ०	३	१ ५२ ३०	२ ० ०	२ ७ ३०	२ १५ ०	२ २५ ३०	२ ३० ०	३
४	१ ५० ०	२ ० ०	२ १० ०	२ १३ २०	२ २० ०	४	२ ३० ०	२ ४० ०	२ ५० ०	३ ० ०	३ १० ०	३ २० ०	४
५	२ १७ ३०	२ ३० ०	२ ४२ ३०	२ ४६ ४०	२ ५५ ०	५	३ ७ ३०	३ २० ०	३ ३२ ३०	३ ४५ ०	३ ५७ ३०	४ १० ०	५
६	२ ४५ ०	३ ० ०	३ १५ ०	३ २० ०	३ ३० ०	६	३ ४५ ०	४ ० ०	४ १५ ०	४ ३० ०	४ ४५ ०	५ ० ०	६
७	३ १२ ३०	३ ३० ०	३ ४७ ३०	३ ५३ २०	४ ५ ०	७	४ २२ ३०	४ ४० ०	४ ५७ ३०	५ १५ ०	५ ३२ ३०	५ ५० ०	७
८	३ ४० ०	४ ० ०	४ २० ०	४ २६ ४०	४ ४० ०	८	५ ० ०	५ २० ०	५ ४० ०	६ ० ०	६ २० ०	६ ४० ०	८
९	४ ७ ३०	४ ३० ०	४ ५२ ३०	५ ० ०	५ १५ ०	९	५ ३७ ३०	६ ० ०	६ २२ ३०	६ ४५ ०	७ ७ ३०	७ ३० ०	९
१०	४ ३५ ०	५ ० ०	५ २५ ०	५ ३३ २०	५ ५० ०	१०	६ १५ ०	६ ४० ०	७ ५ ०	७ ३० ०	७ ५५ ०	८ २० ०	१०
११	५ २ ३०	५ ३० ०	५ ५७ ३०	६ ६ ४०	६ २५ ०	११	६ ५२ ३०	७ २० ०	७ ४७ ३०	८ १५ ०	८ ४२ ३०	९ १० ०	११
१२	५ ३० ०	६ ० ०	६ ३० ०	६ ४० ०	७ ० ०	१२	७ ३० ०	८ ० ०	८ ३० ०	९ ० ०	९ ३० ०	१० ० ०	१२
१३	५ ५७ ३०	६ ३० ०	७ २ ३०	७ १३ २०	७ ३५ ०	१३	८ ७ ३०	८ ४० ०	९ १२ ३०	९ ४५ ०	१० १७ ३०	१० ५० ०	१३
१४	६ २५ ०	७ ० ०	७ ३५ ०	७ ४६ ४०	८ १० ०	१४	८ ४५ ०	९ २० ०	९ ५५ ०	१० ३० ०	११ ५ ०	११ ४० ०	१४
१५	६ ५२ ३०	७ ३० ०	८ ७ ३०	८ २० ०	८ ४५ ०	१५	९ २२ ३०	१० ० ०	१० ३७ ३०	११ १५ ०	११ ५२ ३०	१२ ३० ०	१५
१६	७ २० ०	८ ० ०	८ ४० ०	८ ५३ २०	९ २० ०	१६	१० ० ०	१० ४० ०	११ २० ०	१२ ० ०	१२ ४० ०	१३ २० ०	१६
१७	७ ४७ ३०	८ ३० ०	९ १२ ३०	९ २६ ४०	९ ५५ ०	१७	१० ३७ ३०	११ २० ०	१२ २ ३०	१२ ४५ ०	१३ २७ ३०	१४ १० ०	१७
१८	८ १५ ०	९ ० ०	९ ४५ ०	१० ० ०	१० ३० ०	१८	११ १५ ०	१२ ० ०	१२ ४५ ०	१३ ३० ०	१४ १५ ०	१५ ० ०	१८
१९	८ ४२ ३०	९ ३० ०	१० १७ ३०	१० ३३ २०	११ ५ ०	१९	११ ५२ ३०	१२ ४० ०	१३ २७ ३०	१४ १५ ०	१५ २ ३०	१५ ५० ०	१९
२०	९ १० ०	१० ० ०	१० ५० ०	११ ६ ४०	११ ४० ०	२०	१२ ३० ०	१३ २० ०	१४ १० ०	१५ ० ०	१५ ५० ०	१६ ४० ०	२०
२१	९ ३७ ३०	१० ३० ०	११ २२ ३०	११ ४० ०	१२ १५ ०	२१	१३ ७ ३०	१४ ० ०	१४ ५२ ३०	१५ ४५ ०	१६ ३७ ३०	१७ ३० ०	२१
२२	१० ५ ०	११ ० ०	११ ५५ ०	१२ १३ २०	१२ ५० ०	२२	१३ ४५ ०	१४ ४० ०	१५ ३५ ०	१६ ३० ०	१७ २५ ०	१८ २० ०	२२
२३	१० ३२ ३०	११ ३० ०	१२ २७ ३०	१२ ४६ ४०	१३ २५ ०	२३	१४ २२ ३०	१५ २० ०	१६ १७ ३०	१७ १५ ०	१८ १२ ३०	१९ १० ०	२३
२४	११ ० ०	१२ ० ०	१३ ० ०	१३ २० ०	१४ ० ०	२४	१५ ० ०	१६ ० ०	१७ ० ०	१८ ० ०	१९ ० ०	२० ० ०	२४
२५	११ २७ ३०	१२ ३० ०	१३ ३२ ३०	१३ ५३ २०	१४ ३५ ०	२५	१५ ३७ ३०	१६ ४० ०	१७ ४२ ३०	१८ ४५ ०	१९ ४७ ३०	२० ५० ०	२५
२६	११ ५५ ०	१३ ० ०	१४ ५ ०	१४ २६ ४०	१५ १० ०	२६	१६ १५ ०	१७ २० ०	१८ २५ ०	१९ ३० ०	२० ३५ ०	२१ ४० ०	२६
२७	१२ २२ ३०	१३ ३० ०	१४ ३७ ३०	१५ ० ०	१५ ४५ ०	२७	१६ ५२ ३०	१८ ० ०	१९ ७ ३०	२० १५ ०	२१ २२ ३०	२२ ३० ०	२७
२८	१२ ५० ०	१४ ० ०	१५ १० ०	१५ ३३ २०	१६ २० ०	२८	१७ ३० ०	१८ ४० ०	१९ ५० ०	२१ ० ०	२२ १० ०	२३ २० ०	२८
२९	१३ १७ ३०	१४ ३० ०	१५ ४२ ३०	१६ ६ ४०	१६ ५५ ०	२९	१८ ७ ३०	१९ २० ०	२० ३२ ३०	२१ ४५ ०	२२ ५७ ३०	२४ १० ०	२९
३०	१३ ४५ ०	१५ ० ०	१६ १५ ०	१६ ४० ०	१७ ३० ०	३०	१८ ४५ ०	२० ० ०	२१ १५ ०	२२ ३० ०	२३ ४५ ०	२५ ० ०	३०
३१	१४ १२ ३०	१५ ३० ०	१६ ४७ ३०	१७ १३ २०	१८ ५ ०	३१	१९ २२ ३०	२० ४० ०	२१ ५७ ३०	२३ १५ ०	२४ ३२ ३०	२५ ५० ०	३१
३२	१४ ४० ०	१६ ० ०	१७ २० ०	१७ ४६ ४०	१८ ४० ०	३२	२० ० ०	२१ २० ०	२२ ४० ०	२४ ० ०	२५ २० ०	२६ ४० ०	३२
३३	१५ ७ ३०	१६ ३० ०	१७ ५२ ३०	१८ २० ०	१९ १५ ०	३३	२० ३७ ३०	२२ ० ०	२३ २२ ३०	२४ ४५ ०	२६ ७ ३०	२७ ३० ०	३३
३४	१५ ३५ ०	१७ ० ०	१८ २५ ०	१८ ५३ २०	१९ ५० ०	३४	२१ १५ ०	२२ ४० ०	२४ ५ ०	२५ ३० ०	२६ ५५ ०	२८ २० ०	३४
३५	१६ २ ३०	१७ ३० ०	१८ ५७ ३०	१९ २६ ४०	२० २५ ०	३५	२१ ५२ ३०	२३ २० ०	२४ ४७ ३०	२६ १५ ०	२७ ४२ ३०	२९ १० ०	३५
३६	१६ ३० ०	१८ ० ०	१९ ३० ०	२० ० ०	२१ ० ०	३६	२२ ३० ०	२४ ० ०	२५ ३० ०	२७ ० ०	२८ ३० ०	३० ० ०	३६
३७	१६ ५७ ३०	१८ ३० ०	२० २ ३०	२० ३३ २०	२१ ३५ ०	३७	२३ ७ ३०	२४ ४० ०	२६ १२ ३०	२७ ४५ ०	२९ १७ ३०	३० ५० ०	३७
३८	१७ २५ ०	१९ ० ०	२० ३५ ०	२१ ६ ४०	२२ १० ०	३८	२३ ४५ ०	२५ २० ०	२६ ५५ ०	२८ ३० ०	३० ५ ०	३१ ४० ०	३८
३९	१७ ५२ ३०	१९ ३० ०	२१ ७ ३०	२१ ४० ०	२२ ४५ ०	३९	२४ २२ ३०	२६ ० ०	२७ ३७ ३०	२९ १५ ०	३० ५२ ३०	३२ ३० ०	३९
४०	१८ २० ०	२० ० ०	२१ ४० ०	२२ १३ २०	२३ २० ०	४०	२५ ० ०	२६ ४० ०	२८ २० ०	३० ० ०	३१ ४० ०	३३ २० ०	४०
४१	१८ ४७ ३०	२० ३० ०	२२ १२ ३०	२२ ४६ ४०	२३ ५५ ०	४१	२५ ३७ ३०	२७ २० ०	२९ २ ३०	३० ४५ ०	३२ २७ ३०	३४ १० ०	४१
४२	१९ १५ ०	२१ ० ०	२२ ४५ ०	२३ २० ०	२४ ३० ०	४२	२६ १५ ०	२८ ० ०	२९ ४५ ०	३१ ३० ०	३३ १५ ०	३५ ० ०	४२
४३	१९ ४२ ३०	२१ ३० ०	२३ १७ ३०	२३ ५३ २०	२५ ५ ०	४३	२६ ५२ ३०	२८ ४० ०	३० २७ ३०	३२ १५ ०	३४ २ ३०	३५ ५० ०	४३
४४	२० १० ०	२२ ० ०	२३ ५० ०	२४ २६ ४०	२५ ४० ०	४४	२७ ३० ०	२९ २० ०	३१ १० ०	३३ ० ०	३४ ५० ०	३६ ४० ०	४४
४५	२० ३७ ३०	२२ ३० ०	२४ २२ ३०	२५ ० ०	२६ १५ ०	४५	२८ ७ ३०	३० ० ०	३१ ५२ ३०	३३ ४५ ०	३५ ३७ ३०	३७ ३० ०	४५
४६	२१ ५ ०	२३ ० ०	२४ ५५ ०	२५ ३३ २०	२६ ५० ०	४६	२८ ४५ ०	३० ४० ०	३२ ३५ ०	३४ ३० ०	३६ २५ ०	३८ २० ०	४६
४७	२१ ३२ ३०	२३ ३० ०	२५ २७ ३०	२६ ६ ४०	२७ २५ ०	४७	२९ २२ ३०	३१ २० ०	३३ १७ ३०	३५ १५ ०	३७ १२ ३०	३९ १० ०	४७
४८	२२ ० ०	२४ ० ०	२६ ० ०	२६ ४० ०	२८ ० ०	४८	३० ० ०	३२ ० ०	३४ ० ०	३६ ० ०	३८ ० ०	४० ० ०	४८
४९	२२ २७ ३०	२४ ३० ०	२६ ३२ ३०	२७ १३ २०	२८ ३५ ०	४९	३० ३७ ३०	३२ ४० ०	३४ ४२ ३०	३६ ४५ ०	३८ ४७ ३०	४० ५० ०	४९
५०	२२ ५५ ०	२५ ० ०	२७ ५ ०	२७ ४६ ४०	२९ १० ०	५०	३१ १५ ०	३३ २० ०	३५ २५ ०	३७ ३० ०	३९ ३५ ०	४१ ४० ०	५०
५१	२३ २२ ३०	२५ ३० ०	२७ ३७ ३०	२८ २० ०	२९ ४५ ०	५१	३१ ५२ ३०	३४ ० ०	३६ ७ ३०	३८ १५ ०	४० २२ ३०	४२ ३० ०	५१
५२	२३ ५० ०	२६ ० ०	२८ १० ०	२८ ५३ २०	३० २० ०	५२	३२ ३० ०	३४ ४० ०	३६ ५० ०	३९ ० ०	४१ १० ०	४३ २० ०	५२
५३	२४ १७ ३०	२६ ३० ०	२८ ४२ ३०	२९ २६ ४०	३० ५५ ०	५३	३३ ७ ३०	३५ २० ०	३७ ३२ ३०	३९ ४५ ०	४१ ५७ ३०	४४ १० ०	५३
५४	२४ ४५ ०	२७ ० ०	२९ १५ ०	३० ० ०	३१ ३० ०	५४	३३ ४५ ०	३६ ० ०	३८ १५ ०	४० ३० ०	४२ ४५ ०	४५ ० ०	५४
५५	२५ १२ ३०	२७ ३० ०	२९ ४७ ३०	३० ३३ २०	३२ ५ ०	५५	३४ २२ ३०	३६ ४० ०	३८ ५७ ३०	४१ १५ ०	४३ ३२ ३०	४५ ५० ०	५५
५६	२५ ४० ०	२८ ० ०	३० २० ०	३१ ६ ४०	३२ ४० ०	५६	३५ ० ०	३७ २० ०	३९ ४० ०	४२ ० ०	४४ २० ०	४६ ४० ०	५६
५७	२६ ७ ३०	२८ ३० ०	३० ५२ ३०	३१ ४० ०	३३ १५ ०	५७	३५ ३७ ३०	३८ ० ०	४० २२ ३०	४२ ४५ ०	४५ ७ ३०	४७ ३० ०	५७
५८	२६ ३५ ०	२९ ० ०	३१ २५ ०	३२ १३ २०	३३ ५० ०	५८	३६ १५ ०	३८ ४० ०	४१ ५ ०	४३ ३० ०	४५ ५५ ०	४८ २० ०	५८
५९	२७ २ ३०	२९ ३० ०	३१ ५७ ३०	३२ ४६ ४०	३४ २५ ०	५९	३६ ५२ ३०	३९ २० ०	४१ ४७ ३०	४४ १५ ०	४६ ४२ ३०	४९ १० ०	५९
६०	२७ ३० ०	३० ० ०	३२ ३० ०	३३ २० ०	३५ ० ०	६०	३७ ३० ०	४० ० ०	४२ ३० ०	४५ ० ०	४७ ३० ०	५० ० ०	६०

इष्टकाल पर विकलान्त सूक्ष्म ग्रह-स्पष्टीकरण की अपूर्व सारणी ३.

कला	गति→२१			२२			२३			२४			२५		
१	०	५२	३०	०	५५	०	०	५७	३०	१	०	०	१	२	३०
२	१	४५	०	१	५०	०	१	५५	०	२	०	०	२	५	०
३	२	३७	३०	२	४५	०	२	५२	३०	३	०	०	३	७	३०
४	३	३०	०	३	४०	०	३	५०	०	४	०	०	४	१०	०
५	४	२२	३०	४	३५	०	४	४७	३०	५	०	०	५	१२	३०
६	५	१५	०	५	३०	०	५	४५	०	६	०	०	६	१५	०
७	६	७	३०	६	२५	०	६	४२	३०	७	०	०	७	१७	३०
८	७	०	०	७	२०	०	७	४०	०	८	०	०	८	२०	०
९	७	५२	३०	८	१५	०	८	३७	३०	९	०	०	९	२२	३०
१०	८	४५	०	९	१०	०	९	३५	०	१०	०	०	१०	२५	०
११	९	३७	३०	१०	५	०	१०	३२	३०	११	०	०	११	२७	३०
१२	१०	३०	०	११	०	०	११	३०	०	१२	०	०	१२	३०	०
१३	११	२२	३०	११	५५	०	१२	२७	३०	१३	०	०	१३	३२	३०
१४	१२	१५	०	१२	५०	०	१३	२५	०	१४	०	०	१४	३५	०
१५	१३	७	३०	१३	४५	०	१४	२२	३०	१५	०	०	१५	३७	३०
१६	१४	०	०	१४	४०	०	१५	२०	०	१६	०	०	१६	४०	०
१७	१४	५२	३०	१५	३५	०	१६	१७	३०	१७	०	०	१७	४२	३०
१८	१५	४५	०	१६	३०	०	१७	१५	०	१८	०	०	१८	४५	०
१९	१६	३७	३०	१७	२५	०	१८	१२	३०	१९	०	०	१९	४७	३०
२०	१७	३०	०	१८	२०	०	१९	१०	०	२०	०	०	२०	५०	०
२१	१८	२२	३०	१९	१५	०	२०	७	३०	२१	०	०	२१	५२	३०
२२	१९	१५	०	२०	१०	०	२१	५	०	२२	०	०	२२	५५	०
२३	२०	७	३०	२१	५	०	२२	२	३०	२३	०	०	२३	५७	३०
२४	२१	०	०	२२	०	०	२३	०	०	२४	०	०	२५	०	०
२५	२१	५२	३०	२२	५५	०	२३	५७	३०	२५	०	०	२६	२	३०
२६	२२	४५	०	२३	५०	०	२४	५५	०	२६	०	०	२७	५	०
२७	२३	३७	३०	२४	४५	०	२५	५२	३०	२७	०	०	२८	७	३०
२८	२४	३०	०	२५	४०	०	२६	५०	०	२८	०	०	२९	१०	०
२९	२५	२२	३०	२६	३५	०	२७	४७	३०	२९	०	०	३०	१२	३०
३०	२६	१५	०	२७	३०	०	२८	४५	०	३०	०	०	३१	१५	०
३१	२७	७	३०	२८	२५	०	२९	४२	३०	३१	०	०	३२	१७	३०
३२	२८	०	०	२९	२०	०	३०	४०	०	३२	०	०	३३	२०	०
३३	२८	५२	३०	३०	१५	०	३१	३७	३०	३३	०	०	३४	२२	३०
३४	२९	४५	०	३१	१०	०	३२	३५	०	३४	०	०	३५	२५	०
३५	३०	३७	३०	३२	५	०	३३	३२	३०	३५	०	०	३६	२७	३०
३६	३१	३०	०	३३	०	०	३४	३०	०	३६	०	०	३७	३०	०
३७	३२	२२	३०	३३	५५	०	३५	२७	३०	३७	०	०	३८	३२	३०
३८	३३	१५	०	३४	५०	०	३६	२५	०	३८	०	०	३९	३५	०
३९	३४	७	३०	३५	४५	०	३७	२२	३०	३९	०	०	४०	३७	३०
४०	३५	०	०	३६	४०	०	३८	२०	०	४०	०	०	४१	४०	०
४१	३५	५२	३०	३७	३५	०	३९	१७	३०	४१	०	०	४२	४२	३०
४२	३६	४५	०	३८	३०	०	४०	१५	०	४२	०	०	४३	४५	०
४३	३७	३७	३०	३९	२५	०	४१	१२	३०	४३	०	०	४४	४७	३०
४४	३८	३०	०	४०	२०	०	४२	१०	०	४४	०	०	४५	५०	०
४५	३९	२२	३०	४१	१५	०	४३	७	३०	४५	०	०	४६	५२	३०
४६	४०	१५	०	४२	१०	०	४४	५	०	४६	०	०	४७	५५	०
४७	४१	७	३०	४३	५	०	४५	२	३०	४७	०	०	४८	५७	३०
४८	४२	०	०	४४	०	०	४६	०	०	४८	०	०	५०	०	०
४९	४२	५२	३०	४४	५५	०	४६	५७	३०	४९	०	०	५१	२	३०
५०	४३	४५	०	४५	५०	०	४७	५५	०	५०	०	०	५२	५	०
५१	४४	३७	३०	४६	४५	०	४८	५२	३०	५१	०	०	५३	७	३०
५२	४५	३०	०	४७	४०	०	४९	५०	०	५२	०	०	५४	१०	०
५३	४६	२२	३०	४८	३५	०	५०	४७	३०	५३	०	०	५५	१२	३०
५४	४७	१५	०	४९	३०	०	५१	४५	०	५४	०	०	५६	१५	०
५५	४८	७	३०	५०	२५	०	५२	४२	३०	५५	०	०	५७	१७	३०
५६	४९	०	०	५१	०२	०	५३	४०	०	५६	०	०	५८	२०	०
५७	४९	५२	३०	५२	१५	०	५४	३७	३०	५७	०	०	५९	२२	३०
५८	५०	४५	०	५३	१०	०	५५	३५	०	५८	०	०	६०	२५	०
५९	५१	३७	३०	५४	५	०	५६	३२	३०	५९	०	०	६१	२७	३०
६०	५२	३०	०	५५	०	०	५७	३०	०	६०	०	०	६२	३०	०

कला	२६			२७			२८			२९			३०			३१			कला
१	१	५	०	१	७	३०	१	१०	०	१	१२	३०	१	१५	०	१	१७	३०	१
२	२	१०	०	२	१५	०	२	२०	०	२	२५	०	२	३०	०	२	३५	०	२
३	३	१५	०	३	२२	३०	३	३०	०	३	३७	३०	३	४५	०	३	५२	३०	३
४	४	२०	०	४	३०	०	४	४०	०	४	५०	०	५	०	०	५	१०	०	४
५	५	२५	०	५	३७	३०	५	५०	०	६	२	३०	६	१५	०	६	२७	३०	५
६	६	३०	०	६	४५	०	७	०	०	७	१५	०	७	३०	०	७	४५	०	६
७	७	३५	०	७	५२	३०	८	१०	०	८	२७	३०	८	४५	०	९	२	३०	७
८	८	४०	०	९	०	०	९	२०	०	९	४०	०	१०	०	०	१०	२०	०	८
९	९	४५	०	१०	७	३०	१०	३०	०	१०	५२	३०	११	१५	०	११	३७	३०	९
१०	१०	५०	०	११	१५	०	११	४०	०	१२	५	०	१२	३०	०	१२	५५	०	१०
११	११	५५	०	१२	२२	३०	१२	५०	०	१३	१७	३०	१३	४५	०	१४	१२	३०	११
१२	१३	०	०	१३	३०	०	१४	०	०	१४	३०	०	१५	०	०	१५	३०	०	१२
१३	१४	५	०	१४	३७	३०	१५	१०	०	१५	४२	३०	१६	१५	०	१६	४७	३०	१३
१४	१५	१०	०	१५	४५	०	१६	२०	०	१६	५५	०	१७	३०	०	१८	५	०	१४
१५	१६	१५	०	१६	५२	३०	१७	३०	०	१८	७	३०	१८	४५	०	१९	२२	३०	१५
१६	१७	२०	०	१८	०	०	१८	४०	०	१९	२०	०	२०	०	०	२०	४०	०	१६
१७	१८	२५	०	१९	७	३०	१९	५०	०	२०	३२	३०	२१	१५	०	२१	५७	३०	१७
१८	१९	३०	०	२०	१५	०	२१	०	०	२१	४५	०	२२	३०	०	२३	१५	०	१८
१९	२०	३५	०	२१	२२	३०	२२	१०	०	२२	५७	३०	२३	४५	०	२४	३२	३०	१९
२०	२१	४०	०	२२	३०	०	२३	२०	०	२४	१०	०	२५	०	०	२५	५०	०	२०
२१	२२	४५	०	२३	३७	३०	२४	३०	०	२५	२२	३०	२६	१५	०	२७	७	३०	२१
२२	२३	५०	०	२४	४५	०	२५	४०	०	२६	३५	०	२७	३०	०	२८	२५	०	२२
२३	२४	५५	०	२५	५२	३०	२६	५०	०	२७	४७	३०	२८	४५	०	२९	४२	३०	२३
२४	२६	०	०	२७	०	०	२८	०	०	२९	०	०	३०	०	०	३१	०	०	२४
२५	२७	५	०	२८	७	३०	२९	१०	०	३०	१२	३०	३१	१५	०	३२	१७	३०	२५
२६	२८	१०	०	२९	१५	०	३०	२०	०	३१	२५	०	३२	३०	०	३३	३५	०	२६
२७	२९	१५	०	३०	२२	३०	३१	३०	०	३२	३७	३०	३३	४५	०	३४	५२	३०	२७
२८	३०	२०	०	३१	३०	०	३२	४०	०	३३	५०	०	३५	०	०	३६	१०	०	२८
२९	३१	२५	०	३२	३७	३०	३३	५०	०	३५	२	३०	३६	१५	०	३७	२७	३०	२९
३०	३२	३०	०	३३	४५	०	३५	०	०	३६	१५	०	३७	३०	०	३८	४५	०	३०
३१	३३	३५	०	३४	५२	३०	३६	१०	०	३७	२७	३०	३८	४५	०	४०	२	३०	३१
३२	३४	४०	०	३६	०	०	३७	२०	०	३८	४०	०	४०	०	०	४१	२०	०	३२
३३	३५	४५	०	३७	७	३०	३८	३०	०	३९	५२	३०	४१	१५	०	४२	३७	३०	३३
३४	३६	५०	०	३८	१५	०	३९	४०	०	४१	५	०	४२	३०	०	४३	५५	०	३४
३५	३७	५५	०	३९	२२	३०	४०	५०	०	४२	१७	३०	४३	४५	०	४५	१२	३०	३५
३६	३९	०	०	४०	३०	०	४२	०	०	४३	३०	०	४५	०	०	४६	३०	०	३६
३७	४०	५	०	४१	३७	३०	४३	१०	०	४४	४२	३०	४६	१५	०	४७	४७	३०	३७
३८	४१	१०	०	४२	४५	०	४४	२०	०	४५	५५	०	४७	३०	०	४९	५	०	३८
३९	४२	१५	०	४३	५२	३०	४५	३०	०	४७	७	३०	४८	४५	०	५०	२२	३०	३९
४०	४३	२०	०	४५	०	०	४६	४०	०	४८	२०	०	५०	०	०	५१	४०	०	४०
४१	४४	२५	०	४६	७	३०	४७	५०	०	४९	३२	३०	५१	१५	०	५२	५७	३०	४१
४२	४५	३०	०	४७	१५	०	४९	०	०	५०	४५	०	५२	३०	०	५४	१५	०	४२
४३	४६	३५	०	४८	२२	३०	५०	१०	०	५१	५७	३०	५३	४५	०	५५	३२	३०	४३
४४	४७	४०	०	४९	३०	०	५१	२०	०	५३	१०	०	५५	०	०	५६	५०	०	४४
४५	४८	४५	०	५०	३७	३०	५२	३०	०	५४	२२	३०	५६	१५	०	५८	७	३०	४५
४६	४९	५०	०	५१	४५	०	५३	४०	०	५५	३५	०	५७	३०	०	५९	२५	०	४६
४७	५०	५५	०	५२	५२	३०	५४	५०	०	५६	४७	३०	५८	४५	०	६०	४२	३०	४७
४८	५२	०	०	५४	०	०	५६	०	०	५८	०	०	६०	०	०	६२	०	०	४८
४९	५३	५	०	५५	७	३०	५७	१०	०	५९	१२	३०	६१	१५	०	६३	१७	३०	४९
५०	५४	१०	०	५६	१५	०	५८	२०	०	६०	२५	०	६२	३०	०	६४	३५	०	५०
५१	५५	१५	०	५७	२२	३०	५९	३०	०	६१	३७	३०	६३	४५	०	६५	५२	३०	५१
५२	५६	२०	०	५८	३०	०	६०	४०	०	६२	५०	०	६५	०	०	६७	१०	०	५२
५३	५७	२५	०	५९	३७	३०	६१	५०	०	६४	२	३०	६६	१५	०	६८	२७	३०	५३
५४	५८	३०	०	६०	४५	०	६३	०	०	६५	१५	०	६७	३०	०	६९	४५	०	५४
५५	५९	३५	०	६१	५२	३०	६४	१०	०	६६	२७	३०	६८	४५	०	७१	२	३०	५५
५६	६०	४०	०	६३	०	०	६५	२०	०	६७	४०	०	७०	०	०	७२	२०	०	५६
५७	६१	४५	०	६४	७	३०	६६	३०	०	६८	५२	३०	७१	१५	०	७३	३७	३०	५७
५८	६२	५०	०	६५	१५	०	६७	४०	०	७०	५	०	७२	३०	०	७४	५५	०	५८
५९	६३	५५	०	६६	२२	३०	६८	५०	०	७१	१७	३०	७३	४५	०	७६	१२	३०	५९
६०	६५	०	०	६७	३०	०	७०	०	०	७२	३०	०	७५	०	०	७७	३०	०	६०

काल	गति → ३२	३३	३४	३५	३६	काल	३७	३८	३९	४०	४१	४२	काल
१	१ २० ०	१ २२ ३०	१ २५ ०	१ २७ ३०	१ ३० ०	१	१ ३२ ३०	१ ३५ ०	१ ३७ ०	१ ४० ०	१ ४२ ३०	१ ४५ ०	१
२	२ ४० ०	२ ४५ ०	२ ५० ०	२ ५५ ०	३ ० ०	२	३ ५ ०	३ १० ०	३ १५ ०	३ २० ०	३ २५ ०	३ ३० ०	२
३	४ ० ०	४ ७ ३०	४ १५ ०	४ २२ ३०	४ ३० ०	३	४ ३७ ३०	४ ४५ ०	४ ५२ ३०	५ ० ०	५ ७ ३०	५ १५ ०	३
४	५ २० ०	५ ३० ०	५ ४० ०	५ ५० ०	६ ० ०	४	६ १० ०	६ २० ०	६ ३० ०	६ ४० ०	६ ५० ०	७ ० ०	४
५	६ ४० ०	६ ५२ ३०	७ ५ ०	७ १७ ३०	७ ३० ०	५	७ ४२ ३०	७ ५५ ०	८ ७ ३०	८ २० ०	८ ३२ ३०	८ ४५ ०	५
६	८ ० ०	८ १५ ०	८ ३० ०	८ ४५ ०	९ ० ०	६	९ १५ ०	९ ३० ०	९ ४५ ०	१० ० ०	१० १५ ०	१० ३० ०	६
७	९ २० ०	९ ३७ ३०	९ ५५ ०	१० १२ ३०	१० ३० ०	७	१० ४७ ३०	११ ५ ०	११ २२ ३०	११ ४० ०	११ ५७ ३०	१२ १५ ०	७
८	१० ४० ०	११ ० ०	११ २० ०	११ ४० ०	१२ ० ०	८	१२ २० ०	१२ ४० ०	१३ ० ०	१३ २० ०	१३ ४० ०	१४ ० ०	८
९	१२ ० ०	१२ २२ ३०	१२ ४५ ०	१३ ७ ३०	१३ ३० ०	९	१३ ५२ ३०	१४ १५ ०	१४ ३७ ३०	१५ ० ०	१५ २२ ३०	१५ ४५ ०	९
१०	१३ २० ०	१३ ४५ ०	१४ १० ०	१४ ३५ ०	१५ ० ०	१०	१५ २५ ०	१५ ५० ०	१६ १५ ०	१६ ४० ०	१७ ५ ०	१७ ३० ०	१०
११	१४ ४० ०	१५ ७ ३०	१५ ३५ ०	१६ २ ३०	१६ ३० ०	११	१६ ५७ ३०	१७ २५ ०	१७ ५२ ३०	१८ २० ०	१८ ४७ ३०	१९ १५ ०	११
१२	१६ ० ०	१६ ३० ०	१७ ० ०	१७ ३० ०	१८ ० ०	१२	१८ ३० ०	१९ ० ०	१९ ३० ०	२० ० ०	२० ३० ०	२१ ० ०	१२
१३	१७ २० ०	१७ ५२ ३०	१८ २५ ०	१८ ५७ ३०	१९ ३० ०	१३	२० २ ३०	२० ३५ ०	२१ ७ ३०	२१ ४० ०	२२ १२ ३०	२२ ४५ ०	१३
१४	१८ ४० ०	१९ १५ ०	१९ ५० ०	२० २५ ०	२१ ० ०	१४	२१ ३५ ०	२२ १० ०	२२ ४५ ०	२३ २० ०	२३ ५५ ०	२४ ३० ०	१४
१५	२० ० ०	२० ३७ ३०	२१ १५ ०	२१ ५२ ३०	२२ ३० ०	१५	२३ ७ ३०	२३ ४५ ०	२४ २२ ३०	२५ ० ०	२५ ३७ ३०	२६ १५ ०	१५
१६	२१ २० ०	२२ ० ०	२२ ४० ०	२३ २० ०	२४ ० ०	१६	२४ ४० ०	२५ २० ०	२६ ० ०	२६ ४० ०	२७ २० ०	२८ ० ०	१६
१७	२२ ४० ०	२३ २२ ३०	२४ ५ ०	२४ ४७ ३०	२५ ३० ०	१७	२६ १२ ३०	२६ ५५ ०	२७ ३७ ३०	२८ २० ०	२९ २ ३०	२९ ४५ ०	१७
१८	२४ ० ०	२४ ४५ ०	२५ ३० ०	२६ १५ ०	२७ ० ०	१८	२७ ४५ ०	२८ ३० ०	२९ १५ ०	३० ० ०	३० ४५ ०	३१ ३० ०	१८
१९	२५ २० ०	२६ ७ ३०	२६ ५५ ०	२७ ४२ ३०	२८ ३० ०	१९	२९ १७ ३०	३० ५ ०	३० ५२ ३०	३१ ४० ०	३२ २७ ३०	३३ १५ ०	१९
२०	२६ ४० ०	२७ ३० ०	२८ २० ०	२९ १० ०	३० ० ०	२०	३० ५० ०	३१ ४० ०	३२ ३० ०	३३ २० ०	३४ १० ०	३५ ० ०	२०
२१	२८ ० ०	२८ ५२ ३०	२९ ४५ ०	३० ३७ ३०	३१ ३० ०	२१	३२ २२ ३०	३३ १५ ०	३४ ७ ३०	३५ ० ०	३५ ५२ ३०	३६ ४५ ०	२१
२२	२९ २० ०	३० १५ ०	३१ १० ०	३२ ५ ०	३३ ० ०	२२	३३ ५५ ०	३४ ५० ०	३५ ४५ ०	३६ ४० ०	३७ ३५ ०	३८ ३० ०	२२
२३	३० ४० ०	३१ ३७ ३०	३२ ३५ ०	३३ ३२ ३०	३४ ३० ०	२३	३५ २७ ३०	३६ २५ ०	३७ २२ ३०	३८ २० ०	३९ १७ ३०	४० १५ ०	२३
२४	३२ ० ०	३३ ० ०	३४ ० ०	३५ ० ०	३६ ० ०	२४	३७ ० ०	३८ ० ०	३९ ० ०	४० ० ०	४१ ० ०	४२ ० ०	२४
२५	३३ २० ०	३४ २२ ३०	३५ २५ ०	३६ २७ ३०	३७ ३० ०	२५	३८ ३२ ३०	३९ ३५ ०	४० ३७ ३०	४१ ४० ०	४२ ४२ ३०	४३ ४५ ०	२५
२६	३४ ४० ०	३५ ४५ ०	३६ ५० ०	३७ ५५ ०	३९ ० ०	२६	४० ५ ०	४१ १० ०	४२ १५ ०	४३ २० ०	४४ २५ ०	४५ ३० ०	२६
२७	३६ ० ०	३७ ७ ३०	३८ १५ ०	३९ २२ ३०	४० ३० ०	२७	४१ ३७ ३०	४२ ४५ ०	४३ ५२ ३०	४५ ० ०	४६ ७ ३०	४७ १५ ०	२७
२८	३७ २० ०	३८ ३० ०	३९ ४० ०	४० ५० ०	४२ ० ०	२८	४३ १० ०	४४ २० ०	४५ ३० ०	४६ ४० ०	४७ ५० ०	४९ ० ०	२८
२९	३८ ४० ०	३९ ५२ ३०	४१ ५ ०	४२ १७ ३०	४३ ३० ०	२९	४४ ४२ ३०	४५ ५५ ०	४७ ७ ३०	४८ २० ०	४९ ३२ ३०	५० ४५ ०	२९
३०	४० ० ०	४१ १५ ०	४२ ३० ०	४३ ४५ ०	४५ ० ०	३०	४६ १५ ०	४७ ३० ०	४८ ४५ ०	५० ० ०	५१ १५ ०	५२ ३० ०	३०
३१	४१ २० ०	४२ ३७ ३०	४३ ५५ ०	४५ १२ ३०	४६ ३० ०	३१	४७ ४७ ३०	४९ ५ ०	५० २२ ३०	५१ ४० ०	५२ ५७ ३०	५४ १५ ०	३१
३२	४२ ४० ०	४४ ० ०	४५ २० ०	४६ ४० ०	४८ ० ०	३२	४९ २० ०	५० ४० ०	५२ ० ०	५३ २० ०	५४ ४० ०	५६ ० ०	३२
३३	४४ ० ०	४५ २२ ३०	४६ ४५ ०	४८ ७ ३०	४९ ३० ०	३३	५० ५२ ३०	५२ १५ ०	५३ ३७ ३०	५५ ० ०	५६ २२ ३०	५७ ४५ ०	३३
३४	४५ २० ०	४६ ४५ ०	४८ १० ०	४९ ३५ ०	५१ ० ०	३४	५२ २५ ०	५३ ५० ०	५५ १५ ०	५६ ४० ०	५८ ५ ०	५९ ३० ०	३४
३५	४६ ४० ०	४८ ७ ३०	४९ ३५ ०	५१ २ ३०	५२ ३० ०	३५	५३ ५७ ३०	५५ २५ ०	५६ ५२ ३०	५८ २० ०	५९ ४७ ३०	६१ १५ ०	३५
३६	४८ ० ०	४९ ३० ०	५१ ० ०	५२ ३० ०	५४ ० ०	३६	५५ ३० ०	५७ ० ०	५८ ३० ०	६० ० ०	६१ ३० ०	६३ ० ०	३६
३७	४९ २० ०	५० ५२ ३०	५२ २५ ०	५३ ५७ ३०	५५ ३० ०	३७	५७ २ ३०	५८ ३५ ०	६० ७ ३०	६१ ४० ०	६३ १२ ३०	६४ ४५ ०	३७
३८	५० ४० ०	५२ १५ ०	५३ ५० ०	५५ २५ ०	५७ ० ०	३८	५८ ३५ ०	६० १० ०	६१ ४५ ०	६३ २० ०	६४ ५५ ०	६६ ३० ०	३८
३९	५२ ० ०	५३ ३७ ३०	५५ १५ ०	५६ ५२ ३०	५८ ३० ०	३९	६० ७ ३०	६१ ४५ ०	६३ २२ ३०	६५ ० ०	६६ ३७ ३०	६८ १५ ०	३९
४०	५३ २० ०	५५ ० ०	५६ ४० ०	५८ २० ०	६० ० ०	४०	६१ ४० ०	६३ २० ०	६५ ० ०	६६ ४० ०	६८ २० ०	७० ० ०	४०
४१	५४ ४० ०	५६ २२ ३०	५८ ५ ०	५९ ४७ ३०	६१ ३० ०	४१	६३ १२ ३०	६४ ५५ ०	६६ ३७ ३०	६८ २० ०	७० २ ३०	७१ ४५ ०	४१
४२	५६ ० ०	५७ ४५ ०	५९ ३० ०	६१ १५ ०	६३ ० ०	४२	६४ ४५ ०	६६ ३० ०	६८ १५ ०	७० ० ०	७१ ४५ ०	७३ ३० ०	४२
४३	५७ २० ०	५९ ७ ३०	६० ५५ ०	६२ ४२ ३०	६४ ३० ०	४३	६६ १७ ३०	६८ ५ ०	६९ ५२ ३०	७१ ४० ०	७३ २७ ३०	७५ १५ ०	४३
४४	५८ ४० ०	६० ३० ०	६२ २० ०	६४ १० ०	६६ ० ०	४४	६७ ५० ०	६९ ४० ०	७१ ३० ०	७३ २० ०	७५ १० ०	७७ ० ०	४४
४५	६० ० ०	६१ ५२ ३०	६३ ४५ ०	६५ ३७ ३०	६७ ३० ०	४५	६९ २२ ३०	७१ १५ ०	७३ ७ ३०	७५ ० ०	७६ ५२ ३०	७८ ४५ ०	४५
४६	६१ २० ०	६३ १५ ०	६५ १० ०	६७ ५ ०	६९ ० ०	४६	७० ५५ ०	७२ ५० ०	७४ ४५ ०	७६ ४० ०	७८ ३५ ०	८० ३० ०	४६
४७	६२ ४० ०	६४ ३७ ३०	६६ ३५ ०	६८ ३२ ३०	७० ३० ०	४७	७२ २७ ३०	७४ २५ ०	७६ २२ ३०	७८ २० ०	८० १७ ३०	८२ १५ ०	४७
४८	६४ ० ०	६६ ० ०	६८ ० ०	७० ० ०	७२ ० ०	४८	७४ ० ०	७६ ० ०	७८ ० ०	८० ० ०	८२ ० ०	८४ ० ०	४८
४९	६५ २० ०	६७ २२ ३०	६९ २५ ०	७१ २७ ३०	७३ ३० ०	४९	७५ ३२ ३०	७७ ३५ ०	७९ ३७ ३०	८१ ४० ०	८३ ४२ ३०	८५ ४५ ०	४९
५०	६६ ४० ०	६८ ४५ ०	७० ५० ०	७२ ५५ ०	७५ ० ०	५०	७७ ५ ०	७९ १० ०	८१ १५ ०	८३ २० ०	८५ २५ ०	८७ ३० ०	५०
५१	६८ ० ०	७० ७ ३०	७२ १५ ०	७४ २२ ३०	७६ ३० ०	५१	७८ ३७ ३०	८० ४५ ०	८२ ५२ ३०	८५ ० ०	८७ ७ ३०	८९ १५ ०	५१
५२	६९ २० ०	७१ ३० ०	७३ ४० ०	७५ ५० ०	७८ ० ०	५२	८० १० ०	८२ २० ०	८४ ३० ०	८६ ४० ०	८८ ५० ०	९१ ० ०	५२
५३	७० ४० ०	७२ ५२ ३०	७५ ५ ०	७७ १७ ३०	७९ ३० ०	५३	८१ ४२ ३०	८३ ५५ ०	८६ ७ ३०	८८ २० ०	९० ३२ ३०	९२ ४५ ०	५३
५४	७२ ० ०	७४ १५ ०	७६ ३० ०	७८ ४५ ०	८१ ० ०	५४	८३ १५ ०	८५ ३० ०	८७ ४५ ०	९० ० ०	९२ १५ ०	९४ ३० ०	५४
५५	७३ २० ०	७५ ३७ ३०	७७ ५५ ०	८० १२ ३०	८२ ३० ०	५५	८४ ४७ ३०	८७ ५ ०	८९ २२ ३०	९१ ४० ०	९३ ५७ ३०	९६ १५ ०	५५
५६	७४ ४० ०	७७ ० ०	७९ २० ०	८१ ४० ०	८४ ० ०	५६	८६ २० ०	८८ ४० ०	९१ ० ०	९३ २० ०	९५ ४० ०	९८ ० ०	५६
५७	७६ ० ०	७८ २२ ३०	८० ४५ ०	८३ ७ ३०	८५ ३० ०	५७	८७ ५२ ३०	९० १५ ०	९२ ३७ ३०	९५ ० ०	९७ २२ ३०	९९ ४५ ०	५७
५८	७७ २० ०	७९ ४५ ०	८२ १० ०	८४ ३५ ०	८७ ० ०	५८	८९ २५ ०	९१ ५० ०	९४ १५ ०	९६ ४० ०	९९ ५ ०	१०१ ३० ०	५८
५९	७८ ४० ०	८१ ७ ३०	८३ ३५ ०	८६ २ ३०	८८ ३० ०	५९	९० ५७ ३०	९३ २५ ०	९५ ५२ ३०	९८ २० ०	१०० ४७ ३०	१०३ १५ ०	५९
६०	८० ० ०	८२ ३० ०	८५ ० ०	८७ ३० ०	९० ० ०	६०	९२ ३० ०	९५ ० ०	९७ ३० ०	१०० ० ०	१०२ ३० ०	१०५ ० ०	६०

काल	गति ४३	४४	४५	४६	४७	काल	४८	४९	५०	५१	५२	काल
१	१ ४७ ३०	१ ५० ०	१ ५२ ३०	१ ५५ ०	१ ५७ ३०	१	२ ० ०	२ २ ३०	२ ५ ०	२ ७ ३०	२ १० ०	१
२	३ ३५ ०	३ ४० ०	३ ४५ ०	३ ५० ०	३ ५५ ०	२	४ ० ०	४ ५ ०	४ १० ०	४ १५ ०	४ २० ०	२
३	५ २२ ३०	५ ३० ०	५ ३७ ३०	५ ४५ ०	५ ५२ ३०	३	६ ० ०	६ ७ ३०	६ १५ ०	६ २२ ३०	६ ३० ०	३
४	७ १० ०	७ २० ०	७ ३० ०	७ ४० ०	७ ५० ०	४	८ ० ०	८ १० ०	८ २० ०	८ ३० ०	८ ४० ०	४
५	८ ५७ ३०	९ १० ०	९ २२ ३०	९ ३५ ४	९ ४७ ३०	५	१० ० ०	१० १२ ३०	१० २५ ०	१० ३७ ३०	१० ५० ०	५
६	१० ४५ ०	११ ० ०	११ १५ ०	११ ३० ०	११ ४५ ०	६	१२ ० ०	१२ १५ ०	१२ ३० ०	१२ ४५ ०	१३ ० ०	६
७	१२ ३२ ३०	१२ ५० ०	१३ ७ ३०	१३ २५ ०	१३ ४२ ३०	७	१४ ० ०	१४ १७ ३०	१४ ३५ ०	१४ ५२ ३०	१५ १० ०	७
८	१४ २० ०	१४ ४० ०	१५ ० ०	१५ २० ०	१५ ४० ०	८	१६ ० ०	१६ २० ०	१६ ४० ०	१७ ० ०	१७ २० ०	८
९	१६ ७ ३०	१६ ३० ०	१६ ५२ ३०	१७ १५ ०	१७ ३७ ३०	९	१८ ० ०	१८ २२ ३०	१८ ४५ ०	१९ ७ ३०	१९ ३० ०	९
१०	१७ ५५ ०	१८ २० ०	१८ ४५ ०	१९ १० ०	३९ ३५ ०	१०	२० ० ०	२० २५ ०	२० ५० ०	२१ १५ ०	२१ ४० ०	१०
११	१९ ४२ ३०	२० १० ०	२० ३७ ३०	२१ ५ ०	२१ ३२ ३०	११	२२ ० ०	२२ २७ ३०	२२ ५५ ०	२३ २२ ३०	२३ ५० ०	११
१२	२१ ३० ०	२२ ० ०	२२ ३० ०	२३ ० ०	२३ ३० ०	१२	२४ ० ०	२४ ३० ०	२५ ० ०	२५ ३० ०	२६ ० ०	१२
१३	२३ १७ ३०	२३ ५० ०	२४ २२ ३०	२४ ५५ ०	२५ २७ ३०	१३	२६ ० ०	२६ ३२ ३०	२७ ५ ०	२७ ३७ ३०	२८ १० ०	१३
१४	२५ ५ ०	२५ ४० ०	२६ १५ ०	२६ ५० ०	२७ २५ ०	१४	२८ ० ०	२८ ३५ ०	२९ १० ०	२९ ४५ ०	३० २० ०	१४
१५	२६ ५२ ३०	२७ ३० ०	२८ ७ ३०	२८ ४५ ०	२९ २२ ३०	१५	३० ० ०	३० ३७ ३०	३१ १५ ०	३१ ५२ ३०	३२ ३० ०	१५
१६	२८ ४० ०	२९ २० ०	३० ० ०	३० ४० ०	३१ २० ०	१६	३२ ० ०	३२ ४० ०	३३ २० ०	३४ ० ०	३४ ४० ०	१६
१७	३० २७ ३०	३१ १० ०	३१ ५२ ३०	३२ ३५ ०	३३ १७ ३०	१७	३४ ० ०	३४ ४२ ३०	३५ २५ ०	३६ ७ ३०	३६ ५० ०	१७
१८	३२ १५ ०	३३ ० ०	३३ ४५ ०	३४ ३० ०	३५ १५ ०	१८	३६ ० ०	३६ ४५ ०	३७ ३० ०	३८ १५ ०	३९ ० ०	१८
१९	३४ २ ३०	३४ ५० ०	३५ ३७ ३०	३६ २५ ०	३७ १२ ३०	१९	३८ ० ०	३८ ४७ ३०	३९ ३५ ०	४० २२ ३०	४१ १० ०	१९
२०	३५ ५० ०	३६ ४० ०	३७ ३० ०	३८ २० ०	३९ १० ०	२०	४० ० ०	४० ५० ०	४१ ४० ०	४२ ३० ०	४३ २० ०	२०
२१	३७ ३७ ३०	३८ ३० ०	३९ २२ ३०	४० १५ ०	४१ ७ ३०	२१	४२ ० ०	४२ ५२ ३०	४३ ४५ ०	४४ ३७ ३०	४५ ३० ०	२१
२२	३९ २५ ०	४० २० ०	४१ १५ ०	४२ १० ०	४३ ५ ०	२२	४४ ० ०	४४ ५५ ०	४५ ५० ०	४६ ४५ ०	४७ ४० ०	२२
२३	४१ १२ ३०	४२ १० ०	४३ ७ ३०	४४ ५ ०	४५ २ ३०	२३	४६ ० ०	४६ ५७ ३०	४७ ५५ ०	४८ ५२ ३०	४९ ५० ०	२३
२४	४३ ० ०	४४ ० ०	४५ ० ०	४६ ० ०	४७ ० ०	२४	४८ ० ०	४९ ० ०	५० ० ०	५१ ० ०	५२ ० ०	२४
२५	४४ ४७ ३०	४५ ५० ०	४६ ५२ ३०	४७ ५५ ०	४८ ५७ ३०	२५	५० ० ०	५१ २ ३०	५२ ५ ०	५३ ७ ३०	५४ १० ०	२५
२६	४६ ३५ ०	४७ ४० ०	४८ ४५ ०	४९ ५० ०	५० ५५ ०	२६	५२ ० ०	५३ ५ ०	५४ १० ०	५५ १५ ०	५६ २० ०	२६
२७	४८ २२ ३०	४९ ३० ०	५० ३७ ३०	५१ ४५ ०	५२ ५२ ३०	२७	५४ ० ०	५५ ७ ३०	५६ १५ ०	५७ २२ ३०	५८ ३० ०	२७
२८	५० १० ०	५१ २० ०	५२ ३० ०	५३ ४० ०	५४ ५० ०	२८	५६ ० ०	५७ १० ०	५८ २० ०	५९ ३० ०	६० ४० ०	२८
२९	५१ ५७ ३०	५३ १० ०	५४ २२ ३०	५५ ३५ ०	५६ ४७ ३०	२९	५८ ० ०	५९ १२ ३०	६० २५ ०	६१ ३७ ३०	६२ ५० ०	२९
३०	५३ ४५ ०	५५ ० ०	५६ १५ ०	५७ ३० ०	५८ ४५ ०	३०	६० ० ०	६१ १५ ०	६२ ३० ०	६३ ४५ ०	६५ ० ०	३०
३१	५५ ३२ ३०	५६ ५० ०	५८ ७ ३०	५९ २५ ०	६० ४२ ३०	३१	६२ ० ०	६३ १७ ३०	६४ ३५ ०	६५ ५२ ३०	६७ १० ०	३१
३२	५७ २० ०	५८ ४० ०	६० ० ०	६१ २० ०	६२ ४० ०	३२	६४ ० ०	६५ २० ०	६६ ४० ०	६८ ० ०	६९ २० ०	३२
३३	५९ ७ ३०	६० ३० ०	६१ ५२ ३०	६३ १५ ०	६४ ३७ ३०	३३	६६ ० ०	६७ २२ ३०	६८ ४५ ०	७० ७ ३०	७१ ३० ०	३३
३४	६० ५५ ०	६२ २० ०	६३ ४५ ०	६५ १० ०	६६ ३५ ०	३४	६८ ० ०	६९ २५ ०	७० ५० ०	७२ १५ ०	७३ ४० ०	३४
३५	६२ ४२ ३०	६४ १० ०	६५ ३७ ३०	६७ ५ ०	६८ ३२ ३०	३५	७० ० ०	७१ २७ ३०	७२ ५५ ०	७४ २२ ३०	७५ ५० ०	३५
३६	६४ ३० ०	६६ ० ०	६७ ३० ०	६९ ० ०	७० ३० ०	३६	७२ ० ०	७३ ३० ०	७५ ० ०	७६ ३० ०	७८ ० ०	३६
३७	६६ १७ ३०	६७ ५० ०	६९ २२ ३०	७० ५५ ०	७२ २७ ३०	३७	७४ ० ०	७५ ३२ ३०	७७ ५ ०	७८ ३७ ३०	८० १० ०	३७
३८	६८ ५ ०	६९ ४० ०	७१ १५ ०	७२ ५० ०	७४ २५ ०	३८	७६ ० ०	७७ ३५ ०	७९ १० ०	८० ४५ ०	८२ २० ०	३८
३९	६९ ५२ ३०	७१ ३० ०	७३ ७ ३०	७४ ४५ ०	७६ २२ ३०	३९	७८ ० ०	७९ ३७ ३०	८१ १५ ०	८२ ५२ ३०	८४ ३० ०	३९
४०	७१ ४० ०	७३ २० ०	७५ ० ०	७६ ४० ०	७८ २० ०	४०	८० ० ०	८१ ४० ०	८३ २० ०	८५ ० ०	८६ ४० ०	४०
४१	७३ २७ ३०	७५ १० ०	७६ ५२ ३०	७८ ३५ ०	८० १७ ३०	४१	८२ ० ०	८३ ४२ ३०	८५ २५ ०	८७ ७ ३०	८८ ५० ०	४१
४२	७५ १५ ०	७७ ० ०	७८ ४५ ०	८० ३० ०	८२ १५ ०	४२	८४ ० ०	८५ ४५ ०	८७ ३० ०	८९ १५ ०	९१ ० ०	४२
४३	७७ २ ३०	७८ ५० ०	८० ३७ ३०	८२ २५ ०	८४ १२ ३०	४३	८६ ० ०	८७ ४७ ३०	८९ ३५ ०	९१ २२ ३०	९३ १० ०	४३
४४	७८ ५० ०	८० ४० ०	८२ ३० ०	८४ २० ०	८६ १० ०	४४	८८ ० ०	८९ ५० ०	९१ ४० ०	९३ ३० ०	९५ २० ०	४४
४५	८० ३७ ३०	८२ ३० ०	८४ २२ ३०	८६ १५ ०	८८ ७ ३०	४५	९० ० ०	९१ ५२ ३०	९३ ४५ ०	९५ ३७ ३०	९७ ३० ०	४५
४६	८२ २५ ०	८४ २० ०	८६ १५ ०	८८ १० ०	९० ५ ०	४६	९२ ० ०	९३ ५५ ०	९५ ५० ०	९७ ४५ ०	९९ ४० ०	४६
४७	८४ १२ ३०	८६ १० ०	८८ ७ ३०	९० ५ ०	९२ २ ३०	४७	९४ ० ०	९५ ५७ ३०	९७ ५५ ०	९९ ५२ ३०	१०१ ५० ०	४७
४८	८६ ० ०	८८ ० ०	९० ० ०	९२ ० ०	९४ ० ०	४८	९६ ० ०	९८ ० ०	१०० ० ०	१०२ ० ०	१०४ ० ०	४८
४९	८७ ४७ ३०	८९ ५० ०	९१ ५२ ३०	९३ ५५ ०	९५ ५७ ३०	४९	९८ ० ०	१०० २ ३०	१०२ ५ ०	१०४ ७ ३०	१०६ १० ०	४९
५०	८९ ३५ ०	९१ ४० ०	९३ ४५ ०	९५ ५० ०	९७ ५५ ०	५०	१०० ० ०	१०२ ५ ०	१०४ १० ०	१०६ १५ ०	१०८ २० ०	५०
५१	९१ २२ ३०	९३ ३० ०	९५ ३७ ३०	९७ ४५ ०	९९ ५२ ३०	५१	१०२ ० ०	१०४ ७ ३०	१०६ १५ ०	१०८ २२ ३०	११० ३० ०	५१
५२	९३ १० ०	९५ २० ०	९७ ३० ०	९९ ४० ०	१०१ ५० ०	५२	१०४ ० ०	१०६ १० ०	१०८ २० ०	११० ३० ०	११२ ४० ०	५२
५३	९४ ५७ ३०	९७ १० ०	९९ २२ ३०	१०१ ३५ ०	१०३ ४७ ३०	५३	१०६ ० ०	१०८ १२ ३०	११० २५ ०	११२ ३७ ३०	११४ ५० ०	५३
५४	९६ ४५ ०	९९ ० ०	१०१ १५ ०	१०३ ३० ०	१०५ ४५ ०	५४	१०८ ० ०	११० १५ ०	११२ ३० ०	११४ ४५ ०	११७ ० ०	५४
५५	९८ ३२ ३०	१०० ५० ०	१०३ ७ ३०	१०५ २५ ०	१०७ ४२ ३०	५५	११० ० ०	११२ १७ ३०	११४ ३५ ०	११६ ५२ ३०	११९ १० ०	५५
५६	१०० २० ०	१०२ ४० ०	१०५ ० ०	१०७ २० ०	१०९ ४० ०	५६	११२ ० ०	११४ २० ०	११६ ४० ०	११९ ० ०	१२१ २० ०	५६
५७	१०२ ७ ३०	१०४ ३० ०	१०६ ५२ ३०	१०९ १५ ०	१११ ३७ ३०	५७	११४ ० ०	११६ २२ ३०	११८ ४५ ०	१२१ ७ ३०	१२३ ३० ०	५७
५८	१०३ ५५ ०	१०६ २० ०	१०८ ४५ ०	१११ १० ०	११३ ३५ ०	५८	११६ ० ०	११८ २५ ०	१२० ५० ०	१२३ १५ ०	१२५ ४० ०	५८
५९	१०५ ४२ ३०	१०८ १० ०	११० ३७ ३०	११३ ५ ०	११५ ३२ ३०	५९	११८ ० ०	१२० २७ ३०	१२२ ५५ ०	१२५ २२ ३०	१२७ ५० ०	५९
६०	१०७ ३० ०	११० ० ०	११२ ३० ०	११५ ० ०	११७ ३० ०	६०	१२० ० ०	१२२ ३० ०	१२५ ० ०	१२७ ३० ०	१३० ० ०	६०

इष्टकाल पर विकलान्त सूक्ष्म ग्रह-स्पष्टीकरण की अपूर्व सारणी ६.

काल	गति ५३	५४	५५	५६	५७	काल	५८	५९	६०	६१	७५	काल
१	२ १२ ३०	२ १५ ०	२ १७ ३०	२ २० ०	२ २२ ३०	१	२ २५ ०	२ २७ ३०	२ ३० ०	२ ३२ ३०	३ ७ ३०	१
२	४ २५ ०	४ ३० ०	४ ३५ ०	४ ४० ०	४ ४५ ०	२	४ ५० ०	४ ५५ ०	५ ० ०	५ ५ ०	६ १५ ०	२
३	६ ३७ ३०	६ ४५ ०	६ ५२ ३०	७ ० ०	७ ७ ३०	३	७ १५ ०	७ २२ ३०	७ ३० ०	७ ३७ ३०	९ २२ ३०	३
४	८ ५० ०	९ ० ०	९ १० ०	९ २० ०	९ ३० ०	४	९ ४० ०	९ ५० ०	१० ० ०	१० १० ०	१२ ३० ०	४
५	११ २ ३०	११ १५ ०	११ २७ ३०	११ ४० ०	११ ५२ ३०	५	१२ ५ ०	१२ १७ ३०	१२ ३० ०	१२ ४२ ३०	१५ ३७ ३०	५
६	१३ १५ ०	१३ ३० ०	१३ ४५ ०	१४ ० ०	१४ १५ ०	६	१४ ३० ०	१४ ४५ ०	१५ ० ०	१५ १५ ०	१८ ४५ ०	६
७	१५ २७ ३०	१५ ४५ ०	१६ २ ३०	१६ २० ०	१६ ३७ ३०	७	१६ ५५ ०	१७ १२ ३०	१७ ३० ०	१७ ४७ ३०	२१ ५२ ३०	७
८	१७ ४० ०	१८ ० ०	१८ २० ०	१८ ४० ०	१९ ० ०	८	१९ २० ०	१९ ४० ०	२० ० ०	२० २० ०	२५ ० ०	८
९	१९ ५२ ३०	२० १५ ०	२० ३७ ३०	२१ ० ०	२१ २२ ३०	९	२१ ४५ ०	२२ ७ ३०	२२ ३० ०	२२ ५२ ३०	२८ ७ ३०	९
१०	२२ ५ ०	२२ ३० ०	२२ ५५ ०	२३ २० ०	२३ ४५ ०	१०	२४ १० ०	२४ ३५ ०	२५ ० ०	२५ २५ ०	३१ १५ ०	१०
११	२४ १७ ३०	२४ ४५ ०	२५ १२ ३०	२५ ४० ०	२६ ७ ३०	११	२६ ३५ ०	२७ २ ३०	२७ ३० ०	२७ ५७ ३०	३४ २२ ३०	११
१२	२६ ३० ०	२७ ० ०	२७ ३० ०	२८ ० ०	२८ ३० ०	१२	२९ ० ०	२९ ३० ०	३० ० ०	३० ३० ०	३७ ३० ०	१२
१३	२८ ४२ ३०	२९ १५ ०	२९ ४७ ३०	३० २० ०	३० ५२ ३०	१३	३१ २५ ०	३१ ५७ ३०	३२ ३० ०	३३ २ ३०	४० ३७ ३०	१३
१४	३० ५५ ०	३१ ३० ०	३२ ५ ०	३२ ४० ०	३३ १५ ०	१४	३३ ५० ०	३४ २५ ०	३५ ० ०	३५ ३५ ०	४३ ४५ ०	१४
१५	३३ ७ ३०	३३ ४५ ०	३४ २२ ३०	३५ ० ०	३५ ३७ ३०	१५	३६ १५ ०	३६ ५२ ३०	३७ ३० ०	३८ ७ ३०	४६ ५२ ३०	१५
१६	३५ २० ०	३६ ० ०	३६ ४० ०	३७ २० ०	३८ ० ०	१६	३८ ४० ०	३९ २० ०	४० ० ०	४० ४० ०	५० ० ०	१६
१७	३७ ३२ ३०	३८ १५ ०	३८ ५७ ३०	३९ ४० ०	४० २२ ३०	१७	४१ ५ ०	४१ ४७ ३०	४२ ३० ०	४३ १२ ३०	५३ ७ ३०	१७
१८	३९ ४५ ०	४० ३० ०	४१ १५ ०	४२ ० ०	४२ ४५ ०	१८	४३ ३० ०	४४ १५ ०	४५ ० ०	४५ ४५ ०	५६ १५ ०	१८
१९	४१ ५७ ३०	४२ ४५ ०	४३ ३२ ३०	४४ २० ०	४५ ७ ३०	१९	४५ ५५ ०	४६ ४२ ३०	४७ ३० ०	४८ १७ ३०	५९ २२ ३०	१९
२०	४४ १० ०	४५ ० ०	४५ ५० ०	४६ ४० ०	४७ ३० ०	२०	४८ २० ०	४९ १० ०	५० ० ०	५० ५० ०	६२ ३० ०	२०
२१	४६ २२ ३०	४७ १५ ०	४८ ७ ३०	४९ ० ०	४९ ५२ ३०	२१	५० ४५ ०	५१ ३७ ३०	५२ ३० ०	५३ २२ ३०	६५ ३७ ३०	२१
२२	४८ ३५ ०	४९ ३० ०	५० २५ ०	५१ २० ०	५२ १५ ०	२२	५३ १० ०	५४ ५ ०	५५ ० ०	५५ ५५ ०	६८ ४५ ०	२२
२३	५० ४७ ३०	५१ ४५ ०	५२ ४२ ३०	५३ ४० ०	५४ ३७ ३०	२३	५५ ३५ ०	५६ ३२ ३०	५७ ३० ०	५८ २७ ३०	७१ ५२ ३०	२३
२४	५३ ० ०	५४ ० ०	५५ ० ०	५६ ० ०	५७ ० ०	२४	५८ ० ०	५९ ० ०	६० ० ०	६१ ० ०	७५ ० ०	२४
२५	५५ १२ ३०	५६ १५ ०	५७ १७ ३०	५८ २० ०	५९ २२ ३०	२५	६० २५ ०	६१ २७ ३०	६२ ३० ०	६३ ३२ ३०	७८ ७ ३०	२५
२६	५७ २५ ०	५८ ३० ०	५९ ३५ ०	६० ४० ०	६१ ४५ ०	२६	६२ ५० ०	६३ ५५ ०	६५ ० ०	६६ ५ ०	८१ १५ ०	२६
२७	५९ ३७ ३०	६० ४५ ०	६१ ५२ ३०	६३ ० ०	६४ ७ ३०	२७	६५ १५ ०	६६ २२ ३०	६७ ३० ०	६८ ३७ ३०	८४ २२ ३०	२७
२८	६१ ५० ०	६३ ० ०	६४ १० ०	६५ २० ०	६६ ३० ०	२८	६७ ४० ०	६८ ५० ०	७० ० ०	७१ १० ०	८७ ३० ०	२८
२९	६४ २ ३०	६५ १५ ०	६६ २७ ३०	६७ ४० ०	६८ ५२ ३०	२९	७० ५ ०	७१ १७ ३०	७२ ३० ०	७३ ४२ ३०	९० ३७ ३०	२९
३०	६६ १५ ०	६७ ३० ०	६८ ४५ ०	७० ० ०	७१ १५ ०	३०	७२ ३० ०	७३ ४५ ०	७५ ० ०	७६ १५ ०	९३ ४५ ०	३०
३१	६८ २७ ३०	६९ ४५ ०	७१ २ ३०	७२ २० ०	७३ ३७ ३०	३१	७४ ५५ ०	७६ १२ ३०	७७ ३० ०	७८ ४७ ३०	९६ ५२ ३०	३१
३२	७० ४० ०	७२ ० ०	७३ २० ०	७४ ४० ०	७६ ० ०	३२	७७ २० ०	७८ ४० ०	८० ० ०	८१ २० ०	१०० ० ०	३२
३३	७२ ५२ ३०	७४ १५ ०	७५ ३७ ३०	७७ ० ०	७८ २२ ३०	३३	७९ ४५ ०	८१ ७ ३०	८२ ३० ०	८३ ५२ ३०	१०३ ७ ३०	३३
३४	७५ ५ ०	७६ ३० ०	७७ ५५ ०	७९ २० ०	८० ४५ ०	३४	८२ १० ०	८३ ३५ ०	८५ ० ०	८६ २५ ०	१०६ १५ ०	३४
३५	७७ १७ ३०	७८ ४५ ०	८० १२ ३०	८१ ४० ०	८३ ७ ३०	३५	८४ ३५ ०	८६ २ ३०	८७ ३० ०	८८ ५७ ३०	१०९ २२ ३०	३५
३६	७९ ३० ०	८१ ० ०	८२ ३० ०	८४ ० ०	८५ ३० ०	३६	८७ ० ०	८८ ३० ०	९० ० ०	९१ ३० ०	११२ ३० ०	३६
३७	८१ ४२ ३०	८३ १५ ०	८४ ४७ ३०	८६ २० ०	८७ ५२ ३०	३७	८९ २५ ०	९० ५७ ३०	९२ ३० ०	९४ २ ३०	११५ ३७ ३०	३७
३८	८३ ५५ ०	८५ ३० ०	८७ ५ ०	८८ ४० ०	९० १५ ०	३८	९१ ५० ०	९३ २५ ०	९५ ० ०	९६ ३५ ०	११८ ४५ ०	३८
३९	८६ ७ ३०	८७ ४५ ०	८९ २२ ३०	९१ ० ०	९२ ३७ ३०	३९	९४ १५ ०	९५ ५२ ३०	९७ ३० ०	९९ ७ ३०	१२१ ५२ ३०	३९
४०	८८ २० ०	९० ० ०	९१ ४० ०	९३ २० ०	९५ ० ०	४०	९६ ४० ०	९८ २० ०	१०० ० ०	१०१ ४० ०	१२५ ० ०	४०
४१	९० ३२ ३०	९२ १५ ०	९३ ५७ ३०	९५ ४० ०	९७ २२ ३०	४१	९९ ५ ०	१०० ४७ ३०	१०२ ३० ०	१०४ १२ ३०	१२८ ७ ३०	४१
४२	९२ ४५ ०	९४ ३० ०	९६ १५ ०	९८ ० ०	९९ ४५ ०	४२	१०१ ३० ०	१०३ १५ ०	१०५ ० ०	१०६ ४५ ०	१३१ १५ ०	४२
४३	९४ ५७ ३०	९६ ४५ ०	९८ ३२ ३०	१०० २० ०	१०२ ७ ३०	४३	१०३ ५५ ०	१०५ ४२ ३०	१०७ ३० ०	१०९ १७ ३०	१३४ २२ ३०	४३
४४	९७ १० ०	९९ ० ०	१०० ५० ०	१०२ ४० ०	१०४ ३० ०	४४	१०६ २० ०	१०८ १० ०	११० ० ०	१११ ५० ०	१३७ ३० ०	४४
४५	९९ २२ ३०	१०१ १५ ०	१०३ ७ ३०	१०५ ० ०	१०६ ५२ ३०	४५	१०८ ४५ ०	११० ३७ ३०	११२ ३० ०	११४ २२ ३०	१४० ३७ ३०	४५
४६	१०१ ३५ ०	१०३ ३० ०	१०५ २५ ०	१०७ २० ०	१०९ १५ ०	४६	१११ १० ०	११३ ५ ०	११५ ० ०	११६ ५५ ०	१४३ ४५ ०	४६
४७	१०३ ४७ ३०	१०५ ४५ ०	१०७ ४२ ३०	१०९ ४० ०	१११ ३७ ३०	४७	११३ ३५ ०	११५ ३२ ३०	११७ ३० ०	११९ २७ ३०	१४६ ५२ ३०	४७
४८	१०६ ० ०	१०८ ० ०	११० ० ०	११२ ० ०	११४ ० ०	४८	११६ ० ०	११८ ० ०	१२० ० ०	१२२ ० ०	१५० ० ०	४८
४९	१०८ १२ ३०	११० १५ ०	११२ १७ ३०	११४ २० ०	११६ २२ ३०	४९	११८ २५ ०	१२० २७ ३०	१२२ ३० ०	१२४ ३२ ३०	१५३ ७ ३०	४९
५०	११० २५ ०	११२ ३० ०	११४ ३५ ०	११६ ४० ०	११८ ४५ ०	५०	१२० ५० ०	१२२ ५५ ०	१२५ ० ०	१२७ ५ ०	१५६ १५ ०	५०
५१	११२ ३७ ३०	११४ ४५ ०	११६ ५२ ३०	११९ ० ०	१२१ ७ ३०	५१	१२३ १५ ०	१२५ २२ ३०	१२७ ३० ०	१२९ ३७ ३०	१५९ २२ ३०	५१
५२	११४ ५० ०	११७ ० ०	११९ १० ०	१२१ २० ०	१२३ ३० ०	५२	१२५ ४० ०	१२७ ५० ०	१३० ० ०	१३२ १० ०	१६२ ३० ०	५२
५३	११७ २ ३०	११९ १५ ०	१२१ २७ ३०	१२३ ४० ०	१२५ ५२ ३०	५३	१२८ ५ ०	१३० १७ ३०	१३२ ३० ०	१३४ ४२ ३०	१६५ ३७ ३०	५३
५४	११९ १५ ०	१२१ ३० ०	१२३ ४५ ०	१२६ ० ०	१२८ १५ ०	५४	१३० ३० ०	१३२ ४५ ०	१३५ ० ०	१३७ १५ ०	१६८ ४५ ०	५४
५५	१२१ २७ ३०	१२३ ४५ ०	१२६ २ ३०	१२८ २० ०	१३० ३७ ३०	५५	१३२ ५५ ०	१३५ १२ ३०	१३७ ३० ०	१३९ ४७ ३०	१७१ ५२ ३०	५५
५६	१२३ ४० ०	१२६ ० ०	१२८ २० ०	१३० ४० ०	१३३ ० ०	५६	१३५ २० ०	१३७ ४० ०	१४० ० ०	१४२ २० ०	१७५ ० ०	५६
५७	१२५ ५२ ३०	१२८ १५ ०	१३० ३७ ३०	१३३ ० ०	१३५ २२ ३०	५७	१३७ ४५ ०	१४० ७ ३०	१४२ ३० ०	१४४ ५२ ३०	१७८ ७ ३०	५७
५८	१२८ ५ ०	१३० ३० ०	१३२ ५५ ०	१३५ २० ०	१३७ ४५ ०	५८	१४० १० ०	१४२ ३५ ०	१४५ ० ०	१४७ २५ ०	१८१ १५ ०	५८
५९	१३० १७ ३०	१३२ ४५ ०	१३५ १२ ३०	१३७ ४० ०	१४० ७ ३०	५९	१४२ ३५ ०	१४५ २ ३०	१४७ ३० ०	१४९ ५७ ३०	१८४ २२ ३०	५९
६०	१३२ ३० ०	१३५ ० ०	१३७ ३० ०	१४० ० ०	१४२ ३० ०	६०	१४५ ० ०	१४७ ३० ०	१५० ० ०	१५२ ३० ०	१८७ ३० ०	६०

❋ लग्न-परिवर्तन-तालिका ❋

चिन्ताहरण जंत्री की दैनिक लग्नसारणी में प्रतिदिन के स्पष्ट अयनांश के आधार पर प्रत्येक लग्न का काशी में आरम्भ-काल भारतीय प्रमाणित समय (I. S. T.) में दिया जाता है। इसमें मेष लग्न का आरम्भ-काल सेकेण्ड पर्यन्त सूक्ष्म रहता है। इतनी सूक्ष्म दैनिक लग्नसारणी अन्य किसी भी संस्कृत या हिन्दी पञ्चाङ्ग, जंत्री में नहीं प्रकाशित होती। वर्ष के किसी भी दिन का किसी लग्न का आरम्भ-काल इसी प्रकार का सेकेण्ड पर्यन्त सूक्ष्म निम्नांकित १४ सुप्रसिद्ध नगरों के लिए भी बड़ी सरलतापूर्वक ज्ञात किया जा सके—इस उद्देश्य से यह 'लग्न-परिवर्तन-तालिका' ज्योतिष-प्रेमियों को भेंट की जा रही है।

प्रयोग-विधि—जिस नगर के लिए जिस तारीख को अभीष्ट लग्न का आरम्भ-काल जानना हो, पहले उस तारीख को काशी में 'मेष' लग्न के आरम्भ का समय जंत्री की दैनिक लग्नसारणी से ज्ञात कर लें; पश्चात् तालिका में अभीष्ट शहर और अभीष्ट लग्न दोनों के खाने आपस में जहाँ मिलते हों, वहाँ पर जो समय-संस्कार लिखा हो, उस समय-संस्कार को + धन या – ऋण चिह्न के अनुसार उपर्युक्त काशी के मेषारम्भ-काल में जोड़ या घटा दें। बस, वही भारतीय प्रमाणित समय आपके अभीष्ट लग्न का, अभीष्ट नगर में आरम्भ-काल होगा।

उदाहरण—ता० २ जनवरी १९६० ई० को बम्बई में सिंह लग्न भारतीय प्रमाणित समय (स्टैं. टा.) से कितने बजे शुरू होगा, यह जानना हो तो जंत्री की दैनिक लग्न-सारणी से उक्त तारीख को मेष लग्नके आरम्भ का समय घं. १२ मि० २३ से० ६ ज्ञात किया। पश्चात् निम्न तालिका में बम्बई का खाना तथा 'सिंह' लग्न का खाना जहाँ परस्पर मिलते हैं, वहाँ समय-संस्कार + घं. ८ मि० ५३ से० २७ लिखा पाया। इसको उक्त मेषारम्भ-काल घं० १२ मि० २३ से० ६ में जोड़ देने से घं० २१ मि० १६ से० ३३ बजे स्टैं. टा. से बम्बई में 'सिंह' लग्न के आरम्भ का समय ज्ञात हो गया। इसी दिन बम्बई में 'तुला' लग्न का आरम्भ-समय जानना हो तो उक्त मेषारम्भ काल घं० १२ मि० २३ से० ६ में उसी भाँति बम्बई के लिए तुला लग्नारम्भ-संस्कार + घं० १३ मि० ८ से० ४ को जोड़ा तो योग-फल घं० २५ मि० ३१ से० १० आया। पाठक जानते हैं कि मध्यरात्रि २४ यानी ० बजे तारीख बदल जाती है। अतः उपर्युक्त योगफल में-से २४ घं० घटा देने पर शेष १ घं० ३१ मि० ९ से० अगले दिन ता० ३ जनवरी सन् ६० को बम्बई में 'तुला' लग्न का आरम्भ-काल आया; पर हमें ता० २ जनवरी '६० को तुला लग्न का आरम्भ-काल जानना है। अतः काशी का मेषारम्भकाल यहाँ ता० २ जनवरी के बजाय १ जनवरी का लेना होगा। १ जनवरी को काशी का मेषारम्भकाल घं० १२ मि० २७ से० २ है। इसमें तुला का उक्त समय-संस्कार + घं० १३ मि० ८ से० ४ को जोड़ा तो घं० २५ मि० ३५ से० ६ बजे यानी (घं. में २४ बाद कर शेष) घं. १ मि. ३५ से. ५ बजे भारतीय प्रमाणित समय (I. S. T.) से बम्बई में तुला लग्न का आरम्भ होगा। इसी प्रकार तालिका के अन्य नगरों के हर लग्न का आरम्भ-काल आप जान सकते हैं।

स्थल	मद्रास				हैदराबाद				बम्बई				नागपुर			
अक्षांश	उ. १३° ६′				उ. १७°२७′				उ. १८°५७′				उ. २१° ९′			
रेखांश	पू. ८०°१५′				पू. ७८°३०′				पू. ७२°५०′				पू. ७९° ६′			
स्टैं.टा.से. अन्तर	—	मि. से. ९- ०			—	मि. से. १६- ०			—	मि. से. ३८-४०			—	मि. से. १३-३६		
राशि		घं.	मि.	से.		घं.	मि.	से.		घं.	मि.	से.		घं.	मि.	से.
मेष	+	०	११	३९	+	०	२३	४१	+	०	४५	१५	+	०	१८	४०
वृष	+	२	७	१९	+	२	८	३	+	२	२८	२६	+	२	०	५
मिथुन	+	४	९	९	+	४	८	८	+	४	२७	५२	+	३	५८	३५
कर्क	+	६	२०	३४	+	६	२०	१५	+	६	४०	१४	+	६	११	१९
सिंह	+	८	३०	१	+	८	३२	२८	+	८	५३	२७	+	८	२६	२
कन्या	+	१०	३३	४	+	१०	३९	१२	+	११	१	२९	+	१०	३६	३
तुला	+	१२	३४	२९	+	१२	४४	२५	+	१३	८	४	+	१२	४४	४०
वृश्चिक	+	१४	४०	५५	+	१४	५४	९	+	१५	१९	१	+	१४	५७	२२
धनु	+	१६	५२	४३	+	१७	७	४३	+	१७	३३	१३	+	१७	१२	३०
मकर	+	१९	०	१०	+	१९	१४	२७	+	१९	३९	४१	+	१९	१८	३६
कुम्भ	+	२०	५३	५९	+	२१	५	३१	+	२१	२९	४४	+	२१	७	१०
मीन	+	२२	३६	३	+	२२	४३	५५	+	२३	६	४९	+	२२	४२	१७

स्थल	सूरत				कलकत्ता				इन्दौर			
अक्षांश	उ. २१°१२′				उ. २२°३५′				उ. २२°४३′			
रेखांश	पू. ७२°५०′				पू. ८८°२१′				पू. ७५°५३′			
स्टैं.टा.से. अन्तर	—	सि. से. ३८-४०			+	मि. से. २३-२४			—	मि. से. २६-२८		
राशि		घं.	मि.	से.		घं.	मि.	से.		घं.	मि.	से.
मेष	+	०	४३	३८	—	०	१८	५९	+	०	३०	२१
वृष	+	२	२५	०	+	१	२०	५६	+	२	१०	२७
मिथुन	+	४	२३	२९	+	३	१८	४७	+	४	८	१४
कर्क	+	६	३६	१३	+	५	३१	४७	+	६	२१	१६
सिंह	+	८	५०	५८	+	७	४७	३०	+	८	३७	४
कन्या	+	११	१	१	+	९	५८	५०	+	१०	४८	३१
तुला	+	१३	९	४१	+	१२	८	३१	+	१२	५८	३८
वृश्चिक	+	१५	२२	२५	+	१४	२२	४३	+	१५	१२	३९
धनु	+	१७	३७	३५	+	१६	३८	३०	+	१७	२८	३०
मकर	+	१९	४३	४१	+	१८	४४	२०	+	१९	३४	१९
कुम्भ	+	२१	३२	१३	+	२०	३१	५४	+	२१	२२	११
मीन	+	२३	७	१८	+	२२	५	४२	+	२२	५५	२८

स्थल	अहमदाबाद				जबलपुर				भुज-कच्छ				कानपुर			
अक्षांश	उ. २३° २′				उ. २३°१०′				उ. २३°१५′				उ. २६°२७′			
रेखांश	पू. ७२°३७′				पू. ७९°५८′				पू. ६९°४०′				पू. ८०°२१′			
स्टैं.टा.से. अन्तर	—		मि. से. ३९-३२		—		मि. से. १०- ८		—		मि. से. ५१-२०		—		मि. से. ८-३६	
राशि		घं.	मि.	से.		घं.	मि.	से.		घं.	मि.	से.		घं.	मि.	से.
मेष	+	०	४३	८	+	०	१३	४३	+	०	५४	४५	+	०	९	३९
वृष	+	२	२२	५९	+	१	५३	२७	+	२	३४	२५	+	१	४६	३२
मिथुन	+	४	२०	३७	+	३	५१	२	+	४	३१	५८	+	३	४२	३४
कर्क	+	६	३३	४२	+	६	४	८	+	६	४५	५	+	५	५६	१८
सिंह	+	८	४९	४३	+	८	२०	१५	+	९	१	१६	+	८	१४	५०
कन्या	+	११	१	२८	+	१०	३२	७	+	११	१३	१३	+	१०	२९	५२
तुला	+	१३	११	५४	+	१२	४२	४०	+	१३	२३	५१	+	१२	४३	४१
वृश्चिक	+	१५	२६	११	+	१४	५७	४	+	१५	३८	१९	+	१५	०	५५
धनु	+	१७	४२	१०	+	१७	१३	७	+	१७	५४	२४	+	१७	१८	३१
मकर	+	१९	४७	५५	+	१९	१८	५१	+	२०	०	७	+	१९	२३	३८
कुंभ	+	२१	३५	११	+	२१	६	१	+	२१	४७	१३	+	२१	८	२२
मीन	+	२३	८	३३	+	२२	३९	१६	+	२३	२०	२३	+	२२	३८	२८

स्थल	जयपुर				दिल्ली (नयी)				भारतकेन्द्रस्थल			
अक्षांश	उ. २६°५५′				उ. २८°३८′				उ. २३°११′			
रेखांश	पू. ७५°५०′				पू. ७७°१४′				पू. ८२°३०′			
स्टैं.टा.से. अन्तर	—		मि. से. २६-४०		—		मि. से. २१- ४		±		मि. से. ०- ०	
राशि		घं.	मि.	से.		घं.	मि.	से.		घं.	मि.	से.
मेष	+	०	२७	२०	+	०	२०	२२	+	०	३	३६
वृष	+	२	३	४६	+	१	५५	१४	+	१	४३	१९
मिथुन	+	३	५९	३५	+	३	५०	१०	+	३	४०	५३
कर्क	+	६	१३	२४	+	६	४	२०	+	५	५४	०
सिंह	+	८	३२	१७	+	८	२४	३३	+	८	१०	८
कन्या	+	१०	४७	४७	+	१०	४१	४७	+	१०	२२	१
तुला	+	१३	२	४	+	१२	५७	५१	+	१२	३२	३६
वृश्चिक	+	१५	१९	४५	+	१५	१७	६	+	१४	४७	०
धनु	+	१७	३७	३५	+	१७	३५	४७	+	१७	३	३
मकर	+	१९	४२	३६	+	१९	४०	२८	+	१९	८	४७
कुंभ	+	२१	२६	५९	+	२१	२३	३२	+	२०	५५	५६
मीन	+	२२	५६	३७	+	२२	५१	२६	+	२२	२९	१०

* होड़ा-चक्र का विवरण *

जिस प्रकार किसी भाषा को सीखने के लिए सर्व प्रथम उसकी वर्णमाला को जानना होता है, उसी प्रकार ज्योतिष-शास्त्र में प्रवेश के लिये अबकहड़ा चक्र का अवलम्बन किया जाता है; वस्तुतः इसे ज्योतिष की वर्णमाला कह सकते हैं; क्योंकि (भारतीय) निरयण राशि-चक्रान्तर्गत प्रत्येक नक्षत्र चरण के आद्यवर्ण का उल्लेख इसमें है। सम्प्रति जो अबकहड़ा (या होड़ा) चक्र हिन्दी-संस्कृत पुस्तकों एवं पंचागों में दिये रहते हैं वे सब त्रुटिपूर्ण, अशुद्ध एवं अधूरे हैं। अतः बहुत संशोधन एवं विचारपूर्वक यह नूतन चक्र तैयार कर प्रकाशित किया जा रहा है, जिसमें वर्तमान चक्रों की अपेक्षा अनेक विशिष्ठ एवं महत्त्वपूर्ण जानकारियों का समावेश किया गया है। चक्र में सबसे उपर क्रमानुसार प्रत्येक राशि, उसके स्वामी-ग्रह एवं चिह्न दिए गये हैं। हर राशि के नीचे ही राशि-नामका आदि(पहला)अक्षर दिया गया है। जैसे, किसी की जन्म-राशि का नाम 'ट' या 'म' से आरम्भ होता है तो उसकी राशि सिंह होगी; क्योंकि सिंह राशि के खाने में नीचे कोष्ठ में [ट-म] अक्षर अंकित है। इसी प्रकार से अन्य राशियों के विषय में समझें। इसके बाद प्रत्येक राशि के वर्ण, हंसक यानी तत्व, वश्य का उल्लेख है। नीचे राश्यन्तर्गत नक्षत्र एवं उनकी चरण-संख्या, चरण के आद्य अक्षर, **वर्ग, योनि, गण, युंजा, नाड़ी** का परिचय है। उसके नीचे हर चरण का राश्यादि स्पष्ट मान दिया है; जैसे मघा नक्षत्र के प्रथम चरण का मान राश्यादि ४।३।२० दिया है अर्थात् पूर्ण(गत)राशि ४(कर्क) के बाद सिंह राशि के ३ अंश २० कला पर मघा के प्रथम चरण की पूर्ति होती है तथा द्वितीय चरण का आरम्भ होता है एवं आगे द्वितीय चरण की पूर्ति राश्यादि ४।६।४० पर होती है। अतः यदि किसी ग्रह का स्पष्ट ४।३।२० से ४।६।४० के बीच है तो हमें सहज ही ज्ञात हो जायेगा कि वह मघा के द्वितीय चरण पर चल रहा है; अस्तु। इसके नीचे पुनः नक्षत्र-चरण-संख्या, उसके नीचे नवांश-राशि की संख्या और उसके स्वामी का उल्लेख है। और भी नीचे पंचाङ्ग-प्रकरण के योगों के नाम दिये गये हैं। अन्त में राशियों के हिन्दी अंग्रेजी नाम एवं चिह्न दिये गये हैं; इन सायन राशियों में चलता हुआ सूर्य जिस गोल और अयन में रहता है एवं तब जो ऋतु प्रवर्तित रहती है, उसका उल्लेख कर चक्र समाप्त किया गया है।

टिप्पणी १—जन्म-काल में चन्द्रमा जिस राशि और जिस नक्षत्र पर होता है, वही राशि, नक्षत्र जातक की जन्म-राशि और नक्षत्र होता है एवं नक्षत्र के जिस चरण पर चन्द्रमा होता है, उस चरण के अक्षर से प्रारम्भ होनेवाला नाम जातक का रक्खा जाता है, जिसे राशिनाम या जन्मनाम कहते हैं। अतएव किसी के राशिनाम का पहला अक्षर भी ज्ञात हो तो उसे होड़ाचक्र में देखकर उसकी जन्म-राशि, नक्षत्र और नक्षत्र की चरण-संख्या जान सकते हैं। पुकारने के नाम से भी इसी तरह जो राशि निश्चित होती है, उसे नाम-राशि कहते हैं। नाम के अक्षरों में श, स; ब, व; तथा छोटी-बड़ी मात्राओं का फ़र्क आचार्यों ने नहीं माना है तथा नाम का पहला अक्षर संयुक्ताक्षर हो तो उसके प्रथम वर्ण को ग्रहण

करना चाहिए। जैसे—किसी का नाम श्रीपति है तो 'श्री' संयुक्ताक्षर में प्रथम वर्ण 'श' हुआ और श, स, सा में कोई फर्क माना नहीं गया है; अतः होड़ाचक्र में 'सा' के ऊपर २ चरण शतभिषा नक्षत्र तथा सिरे पर कुम्भराशि अङ्कित है। अतः 'श्रीपति' की राशि कुम्भ तथा नक्षत्र शतभिषा का दूसरा चरण निश्चित हुआ। मनुष्यों को अपने जन्म-नाम तथा पुकारने के नाम दोनों से उपर्युक्त प्रकार अपनी राशियाँ निश्चित कर निम्नोक्त कार्यों में उनका यथायोग्य उपयोग करना चाहिये। **जन्म-राशि और नाम-राशि का विचार**—देश, ग्राम, गृह, ज्वर, व्यापार, जूआ, दान, मंत्र, राज-सेवा, पुनर्विवाह, विधवा-विवाह, काकिणी, वर्ग-शुद्धि तथा युद्ध में नामराशि ग्रहण करनी चाहिये। इनके अतिरिक्त समस्त कार्यों में, जैसे यात्रा, ग्रह-गोचर-विचार, षोडश-संस्कार तथा विवाहादि सर्व मंगल-कृत्यों में जन्म-राशि से विचार करना चाहिए, नामराशि से नहीं।

टिप्पणी २—सामान्यतः पञ्चाङ्ग-जंत्रियों के होड़ाचक्र में वर्ण, वश्य, योनि, गण और नाड़ी का उल्लेख रहता है तथा विवाहार्थ वर कन्या के गुण-मेलन में इनके उपयोग की विधि से प्रायः सभी ज्योतिष-प्रेमी परिचित हैं; अतः इनका विवरण यहाँ नहीं दिया जा रहा है। इनके अलावा हंसक (यानी तत्व), युंजा तथा वर्ग का समावेश भी इस होड़ाचक्र में किया गया है; अतः इनका उपयोग यहाँ बतला देना आवश्यक है। युञ्जा-विवरण–पूर्व-युंजा में वर और कन्या दोनों के जन्म-नक्षत्र पड़ते हों तो स्त्री का पति में अधिक प्रेम होता है। मध्य-युंजा में दोनों के जन्म-नक्षत्र पड़ें तो दम्पति में परस्पर समान प्रेम होता है और अन्त्य-युंजा में वर-कन्या का जन्म-नक्षत्र हो तो स्त्री में पति का अधिक प्रेम होता है, यह नारद संहितोक्त आर्ष-वचन है। **वर्ग वैर-विचार**–गरुड़ और सर्प में, मार्जार और मूषक में, सिंह और मृग में, श्वान और मेष में महा वैर होता है। **हंसक-विचार**—अग्नि, पृथ्वी, वायु, जल—इन चार तत्वों में-से जो तत्व जिस राशि का होता है, उसे ही हंसक कहा जाता है। और उन्हीं के आधार पर किन्हीं दो राशियों की आपस में शत्रुता, मित्रता और उत्कृष्ट मित्रता का निर्णय किया जाता है। प्रत्येक तत्त्व (हंसक) के शत्रु, मित्र और उत्कृष्ट मित्र तत्त्वों को बगल के चक्र से जान लें।

तत्व	शत्रु	मित्र	उत्कृष्ट मित्र
अग्नि	जल	पृथ्वी	वायु
पृथ्वी	वायु	अग्नि	जल
वायु	पृथ्वी	जल	अग्नि
जल	अग्नि	वायु	पृथ्वी

❀ अवकहडा चक्र : भुक्त नक्षत्र, चरण, राश्यादि स्वामी : गोल-अयन-ऋतु-ज्ञान ❀

चन्द्र-राशि एवं राशि-नामाक्षर	१-मेष (स्वामी : मंगल ♂) [च-ल-अ]									२-वृषभ (स्वामी : शुक्र ♀) [इ-उ-ब-व]									३-मिथुन (स्वामी : बुध ☿) [क-घ-छ]									४-कर्क (स्वामी : चंद्र ☽) [ड-ह]								
	वर्ण			हंसक (तत्व)			वश्य			वर्ण			हंसक (तत्त्व)			वश्य			वर्ण			हंसक (तत्व)			वश्य			वर्ण			हंसक (तत्व)			वश्य		
	क्षत्रिय			अग्नि			चतुष्पाद			वैश्य			पृथ्वी			चतुष्पाद			शूद्र			वायु			मानव			ब्राह्मण			जल			जलचर		
नक्षत्र	१. अश्विनी Ch. L.				२. भरणी L.				३. कृत्तिका A.E.I.U.				४. रोहिणी O.V.W.				५. मृगशीर्ष K.V.W.				६. आर्द्रा K.C.Q.				७. पुनर्वसु K.M.				८. पुष्य D.H.				९. आश्लेषा D.			
चरण	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४
अक्षर	चू	चे	चो	ला	ली	लु	ले	लो	अ	इ	उ	ए	ओ	वा	वी	वू	वे	वो	का	को	कु	घ	ङ	छ	के	को	हा	ही	हु	हे	हो	डा	डी	डू	डे	डो
वैर	सिंह	सिंह	सिंह	मृग	मृग	मृग	मृग	मृग	गरुड़	गरुड़	गरुड़	गरुड़	गरुड़	मृग	मृग	मृग	मृग	मृग	मार्जार	मार्जार	मार्जार	मार्जार	मार्जार	सिंह	मार्जार	मार्जार	मेष	मेष	मेष	मेष	मेष	श्वान	श्वान	श्वान	श्वान	श्वान
होड़ाचक्र का प्रथम खण्ड	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी
	अश्व	देव	पूर्व	आद्या	गज	मनुष्य	पूर्व	मध्या	मेष	राक्षस	पूर्व	अन्त्या	सर्प	मनुष्य	पूर्व	अन्त्या	सर्प	देव	पूर्व	मध्या	श्वान	मनुष्य	मध्या	आद्या	मार्जार	देव	मध्या	आद्या	मेष	देव	मध्या	मध्या	मार्जार	राक्षस	मध्या	अन्त्या
पूर्ण रा.	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	४
अंश	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०
कला	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
चरण	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४
नवमां.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
स्वामी	म.	शु.	बु.	चं.	सू.	बु.	शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु.	मं.	शु.	बु.	चं.	सू.	बु.	शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु.	मं.	शु.	बु.	चं.	सू.	बु.	शु.	मं.	गु.	श.	शु.	गु.
योग	१. विष्कुम्भ				२. प्रीति				३. आयुष्मान				४. सौभाग्य				५. शोभन				६. अतिगण्ड				७. सुकर्मा				८. धृति				९. शूल			
सूर्य की सायन राशि से	(१) मेष राशि ARIES ♈									(२) वृषभ राशि TAURUS ♉									(३) मिथुन राशि GEMINI ♊									(४) कर्क राशि CANCER ♋								
	गोल			अयन			ऋतु			गोल			अयन			ऋतु			गोल			अयन			ऋतु			गोल			अयन			ऋतु		
	उत्तर			उत्तर			बसंत			उत्तर			उत्तर			ग्रीष्म			उत्तर			उत्तर			ग्रीष्म			उत्तर			दक्षिण			वर्षा		

❀ अवकहडा चक्र : भुक्त नक्षत्र, चरण, राश्यादि स्वामी : गोल अयन ऋतु-ज्ञान ❀

चन्द्र-राशि एवं राशि-नामाक्षर	५-सिंह (स्वामी : सूर्य ☉) [ट-म]	६-कन्या (स्वामी : बुध ☿) [ठ-ण-प-ष]	७-तुला (स्वामी : शुक्र ♀) [त-र]	८-वृश्चिक (स्वामी : मंगल ♂) [न-य]
वर्ण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	ब्राह्मण
हंसक (तत्व)	अग्नि	पृथ्वी	वायु	जल
वश्य	वनचर	मानव	मानव	कीट

नक्षत्र	१०. मघा M.				११. पू.फा. B.P.				१२. उ.फा. T.P.U.				१३. हस्त P.F.				१४. चित्रा P.R.			
चरण	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४
अक्षर	मा	मी	मू	मे	मो	टा	टी	टू	टे	टो	पा	पी	पू	ष	ण	ठ	पे	पो	रा	री
वर्ग	मूषक	मूषक	मूषक	मूषक	मूषक	श्वान	श्वान	श्वान	श्वान	श्वान	मूषक	मूषक	मूषक	मेष	श्वान	श्वान	मूषक	मूषक	मृग	मृग
होड़ाचक्र का द्वितीय खण्ड	योनि	गण	युञ्जा	नाड़ी	योनि	गण	युञ्जा	नाड़ी	योनि	गण	युञ्जा	नाड़ी	योनि	गण	युञ्जा	नाड़ी	योनि	गण	युञ्जा	नाड़ी
	मूषक	राक्षस	मध्या	अन्त्या	मूषक	मनुष्य	मध्या	मध्या	गौ	मनुष्य	मध्या	आद्या	महिषी	देव	मध्या	आद्या	व्याघ्र	राक्षस	मध्या	अन्त्या
पूर्ण रा.	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६
अंश	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६
कला	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०
चरण	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४
नवमां.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८
स्वामी	मं.	शु.	बु.	चं.	सू.	बु.	शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु.	मं.	शु.	बु.	चं.	सू.	बु.	शु.	मं.
योग	१०. गण्ड				११. वृद्धि				१२. ध्रुव				१३. व्याघात				१४. हर्षण			

नक्षत्र	१५. स्वाती R.Th.				१६. विशाखा Th.				१७. अनुराधा N.				१८. ज्येष्ठा N.Y.			
चरण	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४
अक्षर	रू	रे	रो	ता	ती	तू	ते	तो	ना	नी	नू	ने	नो	य	यी	यू
वर्ग	मृग	मृग	मृग	सर्प	सर्प	सर्प	सर्प	सर्प	सर्प	सर्प	सर्प	सर्प	सर्प	मृग	मृग	मृग
होड़ाचक्र का द्वितीय खण्ड	योनि	गण	युञ्जा	नाड़ी	योनि	गण	युञ्जा	नाड़ी	योनि	गण	युञ्जा	नाड़ी	योनि	गण	युञ्जा	नाड़ी
	महिषी	देव	मध्या	अन्त्या	व्याघ्र	राक्षस	मध्या	अन्त्या	मृग	देव	मध्या	मध्या	मृग	राक्षस	अन्त्या	आद्या
पूर्ण रा.	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	७	७	८
अंश	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०
कला	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
चरण	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४
नवमां.	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
स्वामी	गु.	श.	श.	गु.	मं.	शु.	बु.	चं.	सू.	बु.	शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु.
योग	१५. वज्र				१६. सिद्धि				१७. व्यतीपात				१८. वरीयान			

सूर्य की सायन राशि से	(५) सिंह LEO ♌	(६) कन्या VIRGO ♍	(७) तुला LIBRA ♎	(८) वृश्चिक SCORPIO ♏
गोल	उत्तर	उत्तर	दक्षिण	दक्षिण
अयन	दक्षिण	दक्षिण	दक्षिण	दक्षिण
ऋतु	वर्षा	शरद	शरद	हेमन्त

❀ अवकहडा चक्र : भुक्त नक्षत्र, चरण, राश्यादि स्वामी : गोल अयन ऋतु-ज्ञान ❀

चन्द्र-राशि एवं राशि-नामाक्षर	९-धनु (स्वामी : गुरु ♃) [ढ-ध-फ-भ]	१०-मकर (स्वामी : शनि ♄) [ख-ज]	११-कुंभ (स्वामी : शनि ♄) [ग-स]	१२-मीन (स्वामी : गुरु ♃) [च-झ-थ-द]
वर्ण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	ब्राह्मण
हंसक (तत्व)	अग्नि	पृथ्वी	वायु	जल
वश्य	मानव-चतु.	चतु. जल.	मानव	जलचर

नक्षत्र	१९. मूला Y.B.				२०. पूषा B.T.				२१. उषा B.J.				२२. श्रवण Sh.				२३. धनिष्ठा G.			
चरण	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४
अक्षर	ये	यो	भा	भी	भू	धा	फा	ढा	भे	भो	जा	जी	खी	खू	खे	खो	गा	गी	गू	गे
वर्ग	मृग	मृग	मूषक	मूषक	मूषक	सर्प	मूषक	श्वान	मूषक	मूषक	सिंह	सिंह	मार्जार	मार्जार	मार्जार	मार्जार	मार्जार	मार्जार	मार्जार	मार्जार
होड़ाचक्र का तृतीय खण्ड	योनि	गण	युञ्जा	नाड़ी	योनि	गण	युञ्जा	नाड़ी	योनि	गण	युञ्जा	नाड़ी	योनि	गण	युञ्जा	नाड़ी	योनि	गण	युञ्जा	नाड़ी
	श्वान	राक्षस	अन्त्या	आद्या	वानर	मनुष्य	अन्त्या	मध्या	नकुल	मनुष्य	अन्त्या	अन्त्या	वानर	देव	अन्त्या	अन्त्या	सिंह	राक्षस	अन्त्या	मध्या
पूर्ण रा.	८	८	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०
अंश	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६
कला	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०
चरण	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४
नवमां.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८
स्वामी	मं.	शु.	बु.	चं.	सू.	बु.	शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु.	मं.	शु.	बु.	चं.	सू.	बु.	शु.	मं.
योग	१९. परिघ				२०. शिव				२१. सिद्धि				२२. साध्य				२३. शुभ			

नक्षत्र	२४. शतभिषा G. Dh.				२५. पू.भाद्र. S. Dh.				२६. उ.भाद्र. S.X.Z.				२७. रेवती S. Ch.			
चरण	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४
अक्षर	गो	सा	सी	सू	से	सो	दा	दी	दू	थ	झ	ञ	दे	दो	चा	ची
वर्ग	मार्जार	मेष	मेष	मेष	मेष	मेष	सर्प	सर्प	सर्प	सर्प	सिंह	सिंह	सर्प	सर्प	सिंह	सिंह
होड़ाचक्र का तृतीय खण्ड	योनि	गण	युञ्जा	नाड़ी	योनि	गण	युञ्जा	नाड़ी	योनि	गण	युञ्जा	नाड़ी	योनि	गण	युञ्जा	नाड़ी
	आद्या	राक्षस	अन्त्या	आद्या	सिंह	मनुष्य	अन्त्या	आद्या	गौ	मनुष्य	अन्त्या	मध्या	गज	देव	पूर्व	अन्त्या
पूर्ण रा.	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	११	११	११	०
अंश	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०
कला	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
चरण	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४
नवमां.	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
स्वामी	गु.	श.	श.	गु.	मं.	शु.	बु.	चं.	सू.	बु.	शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु.
योग	२४. शुक्ल				२५. ब्रह्म				२६. ऐन्द्र				२७. वैधृति			

सूर्य की सायन राशि से	(९) धनु SAGITTARIUS ♐	(१०) मकर CAPRICORN ♑	(११) कुंभ AQUARIUS ♒	(१२) मीन PISCES ♓
गोल	दक्षिण	दक्षिण	दक्षिण	दक्षिण
अयन	दक्षिण	उत्तर	उत्तर	उत्तर
ऋतु	हेमंत	शिशिर	शिशिर	वसंत

टि०—धन के पूर्वार्ध का वश्य मानव और द्वितीयार्ध का चतुष्पाद है और मकर के पूर्वार्ध का वश्य चतुष्पाद और उत्तरार्ध का जलचर है।

ज्योतिष-रहस्य

जगजीवनदास गुप्त

द्वितीय खण्ड

सिद्धान्त-संहिता-होरारूपं स्कन्धत्रयात्मकम्।
वेदस्य निर्मलं चक्षुर्ज्योतिषशास्त्रमकल्मषम्॥

ज्योतिष-रहस्य

(द्वितीय खण्ड)

सिद्धान्त : संहिता : होरा

प्रणेता और संपादक
जगजीवनदास गुप्त

मोतीलाल बनारसीदास
दिल्ली वाराणसी पटना बंगलौर मद्रास कलकत्ता

प्रथम संस्करण का प्राक्कथन

सन् १९४८ ई० में जब 'चिंताहरण-जंत्री' का प्रकाशन एवं संपादन-कार्य मैंने आरम्भ किया तो उसमें सूक्ष्म, शुद्ध दृग्गणित के समावेश के लिए कई सारणियाँ बनायी गयीं। अपने तथा संपादन-विभाग के सहकारियों और सहयोगी पञ्चाङ्गकर्ताओं के उपयोग के लिए उनकी कई प्रतिलिपियों की आवश्यकता हुई। अतएव उन सारणियों की कुछ प्रतियाँ छपवा लेने का निश्चय किया गया; किंतु थोड़ी प्रतियाँ छपवाने में अपेक्षाकृत अधिक खर्च अनिवार्य होने से उनकी अधिक प्रतियाँ पुस्तकरूप में विक्रयार्थ छपवाई गयी थीं और इस प्रकार 'ज्योतिष-रहस्य' के गणितभाग के प्रथम खण्ड का प्रथम संस्करण ज्योतिष-जगत के सम्मुख आया था। जिस पुस्तक में फलित का विषय बिलकुल न हो, जो केवल गणित-ज्योतिष विषयक सारणियों का संग्रह हो, ऐसी हिंदी पुस्तक का द्वितीय संस्करण हमें अपने जीवन-काल में देख पाने की आशा नहीं थी; किंतु उसके विपरीत सन् १९६८ ई० में उसका द्वितीय संशोधित और परिवर्धित संस्करण प्रकाशित कराने का अवसर प्राप्त हुआ। सर्वसामान्य ज्योतिष-प्रेमियों से लेकर विभिन्न प्रान्तों के हिन्दीविद् विद्वान् ज्योतिर्विदों तक ने उक्त द्वितीय संस्करण* का हार्दिक स्वागत किया; इतना ही नहीं, उसके फलित-खण्ड के प्रकाशन का प्रबल आग्रह करनेवाले महानुभावों की संख्या भी बढ़ती गयी; किन्तु मैं उस दिशा में कुछ नहीं कर पाया। सन १९६८ ई० में मेरी पूज्यनीया माताजी के गंगा-लाभ के बाद मेरे जीवन में भयावह उतार-चढ़ाव आया। तब से जीवन में मानसिक चिंता, व्यथा, उद्वेग और अन्तर्द्वन्द्व का जो क्रम आरम्भ हुआ, वह आज तक चल रहा है। अत्यधिक मानसिक अशांति की स्थिति में किस अज्ञात शक्ति के अदृश्य हाथों से 'ज्योतिष-रहस्य' का यह द्वितीय खण्ड पाठकों तक पहुँच रहा है—मैं नहीं जानता! भौतिक समृद्धि मेरे जीवन का लक्ष्य नहीं रहा; किन्तु वह मुझे मिला। जो लक्ष्य था, उसकी प्राप्ति के मेरे सभी प्रयत्न विफल रहे; किन्तु मेरी विफलता, एक व्यक्ति की विफलता, से भाग्य के मुकाबिले मानव के पुरुषकार की पराजय कदापि न समझनी चाहिए। मैं अपने पाठकों को तनिक भी भाग्यवादी बनते देखना नहीं चाहता। इस पुस्तक की फलित विषयक सामग्री व्यक्ति को भाग्यवादी बनाने के लिए नहीं है; बल्कि जीवन-संघर्ष में उसे भाग्य से लोहा लेने में सक्षम बनाने के लिए है और उसी निमित्त मेरे पाठक उसका उपयोग करें—यह मेरी आकांक्षा है। भारतीय ज्योतिष के सिद्धान्त, संहिता और होरा विषयक जो प्रामाणिक साहित्य मैं अब तक प्रणीत, सङ्कलित और संपादित कर पाया हूँ, उसका अधिकांश इस पुस्तक के रूप में ज्योतिष-जगत के सम्मुख प्रस्तुत है। यह सभी सन् १९४९ ई० से लेकर सन् १९८५ ई० तक की चिंताहरण जंत्री में प्रकाशित और प्रकाश्य हैं। फलित का जो अवशिष्ट अंश इसमें नहीं दिया गया है, वह सर्वसाधारण में प्रकाश्य नहीं है, अधिकारी सत्पात्रों को ही दिया जा सकता है जो सांसारिक प्रलोभनों अथवा आपत्ति-विपत्ति में भी उसका दुरुपयोग न करें। सिद्धान्त और गणित ज्योतिष के वे अवशिष्ट अंश भी इसमें नहीं दिये गये हैं जो सामान्य ज्योतिषज्ञों को सुगम नहीं हैं; फिर भी इसमें प्रकाशित कुछ लेख, जैसे तिथि-तत्त्व, लग्न दशम-साधनोपपत्ति, दिगंश उन्नतांश-साधन आदि सामान्य ज्योतिषज्ञों के लिए दुरूह और कठिन हो सकते हैं। उनको क्षेत्रों (रेखा-चित्रों) तथा गणित-प्रक्रिया के विस्तृत विवरण एवं उदाहरण के द्वारा अधिकाधिक सुबोध बनाने का मैंने पूर्ण प्रयत्न किया है। वे सैद्धान्तिक ज्योतिष और उच्च गणित के अध्येताओं के लिए विशेष रूप से पठनीय और मननीय हैं। शेष सभी सामग्री ऐसी सरल भाषा शैली में है कि प्रतिपाद्य विषय को हृदयंगम करने में पाठकों को कहीं कोई कठिनाई नहीं होगी। इस पुस्तक के द्वारा हिन्दी ज्योतिष-वाङ्मय की कितनी श्रीवृद्धि होगी, इसका निर्णय तो सहृदय विद्वज्जन करेंगे; किन्तु पुस्तक की व्यावहारिक उपयोगिता को देखते मैं आशा करता हूँ कि हिन्दी जगत इसका पूर्ववत् सोत्साह स्वागत करेगा। हिन्दी पुस्तकों के मुद्रण में किसी अक्षर का टाइप उखड़ जाने तथा मात्रादि टूट जाने के कारण कुछ-न-कुछ अशुद्धि रह जाना अनिवार्य है। इस पुस्तक में भी कुछ वैसी अशुद्धियाँ हो गयी हैं, विशेषत: संस्कृत के श्लोकों में; किन्तु पुस्तक की जिन खास अशुद्धियों को ठीक कर लेने की ओर मैं पाठकों का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ, वे आगे लिखी गयी हैं। अन्त में मैं अपनी स्वर्गस्थ माँ को श्रद्धाञ्जलिरूप में यह ग्रंथ समर्पित करता हुआ पाठकों से विदा लेता हूँ।

ए. ११/७०, 'शिव-निवास', राजघाट, वाराणसी —जगजीवनदास गुप्त

---

*अब उक्त प्रथम खण्ड का तृतीय परिवर्धित संस्करण प्रकाशित हो गया है, मूल्य ३५)

शुद्धिपत्र

पृष्ठ-संख्या	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
९७	११	कग्न-साधन	लग्न-साधन
९७	११	स्प क = स्प क	स्प क = स्प अ
९७	१९	उमी	उसी
९८	२३	उत्तर अशांश	उत्तर अक्षांश
१२१	३७	(त्रिज्या − चरज्या)	(त्रिज्या + चरज्या)
१२२	२१	$\frac{\text{क्रांकोज्या} + \text{अक्षकोज्या}}{\text{त्रि}}$	$\frac{\text{क्रांकोज्या} \times \text{अक्षकोज्या}}{\text{त्रि}^{२}}$
१२४	१६	प्रश्नाधिकार	त्रिप्रश्नाधिकार
१२५	५	५·६८१·०८३३३	५·६८१ × ·०८३३३
१२५	२३	१४२८०० ÷ ६७८०	१४२८०० ÷ ५७८०
१२५	३४	=२४०	=३४०
१२६	२५	१४ घं०=	२४ घं०=
१२७	३२	२४°/३४′	२५°/३४′
१२७	३२	क्रांति उत्तर १८°।१६′।४४″	क्रांति उत्तर १८°।३६′।४४″
१२८	३	५/५१	५/५२
१२८	१९	१२ + त्रि १०००००	१२ × त्रि१०००००
१२८	३०	षट्यादि	घट्यादि
१२८	३२	क्रान्तिकोज्या ०.९४७ + ०.१०१	क्रान्तिकोज्या ०.९४७ × ०.९०१
१२८	३३	भाजक = ०.१७५	भाजक = ०.९७५
१४०	३२	२८.८ ÷ ६६.८	२८.८ × ६६.८
१४०	३१	भाज्य × भाजक	भाज्य ÷ भाजक
१४०	३८	६६१.९ ÷ ०.९९४६	६६१.९ ÷ ०.९९४९४६
१४७	२	अन्तर घ.	= घ.
१४७	१२	−घं० ०।८९।१६	−घं० ०।८।१६
१५५	३०	कल्प भभ्रम	महायुगीय भभ्रम
१५६	७	२६५.२५६३६२८	३६५.२५६३६२८
१८२	१०	=५१′।५३=	=५१′।५३″=

विषय-सूची

क्रमांक	विषय	पृष्ठ-संख्या
१.	कुण्डली-निर्माण	१
२.	आयुर्दाय-साधन	७
३.	आयुर्दाय-सारणी	११
४.	यात्रा-मुहुर्त-विचार	१३
५.	गोरख पतरा	१६
६.	चौघड़िया मुहूर्त	१७
७.	सर्व कार्यसिद्धि के लिए होरा-मुहूर्त	१८
८.	व्यापारिक यात्रा-मुहूर्त	१८
९.	चंद्र की बारह अवस्थाएं	१९
१०.	अंग-स्फुरण-फल	२०
११.	गृह, भूमि (वास्तु)-विचार	२२
१२.	समय-शुद्धि-विवेक	२३
१३.	छींक-विचार	२६
१४.	छिपकिली गिरने तथा गिरगिट चढ़ने का फल	२७
१५.	तारा-बल-बोधिनी तालिका	२८
१६.	साभिजित् अभिनव होड़ाचक्र	२९
१७.	मंगअ से अमंगल क्यों ?	३०
१८.	जन्मकुण्डली मेलापक-विचार	३१
१९.	विवाहादि विषयक आवश्यक ज्ञान	३२
२०.	त्रिबल-शुद्धि, विवाह-मुहूर्त पर धर्मशास्त्रीय विचार	३६
२१.	वर-कन्या गुणमेलापक सारणी	३७
२२.	वधू-प्रवेश, द्विरागमन-मीमांसा	४०
२३.	गर्भाधान एवं गर्भ-निरोध	४२
२४.	ज्योतिष का वरदान – १	४४
२५.	ज्योतिष का वरदान – २	४५
२६.	लत्ताबोधक यंत्र	४७
२७.	होरा-सार	४८
२८.	जन्मकुण्डली के अनुभूत योग	५६
२९.	चमत्कारी फलादेश की सरल युक्ति	६०
३०.	अशुभ फलकारी ग्रहों का उपाय	६१
३१.	नवग्रह-स्तोत्र	६२
३२.	ग्रहशांत्यर्थ रत्नादि-धारण	६३
३३.	स्वप्न-विचार	६४
३४.	महान् शुभ और अशुभ फलदायी स्वप्न-सूची	७१
३५.	भारतीय वृष्टि-विज्ञान	७२
३६.	इच्छित कार्य किस देवता की आराधना से सफल होगा ?	७३

३७.	वर्षा-विज्ञान	७४
३८.	घाघ-भड्डरी का वर्षा-वायु-विज्ञान	७५
३९.	वृष्टि-विज्ञान-सारणी	७७
४०.	अर्घकाण्ड	८१
४१.	तेजी-मन्दी-ज्ञान की सरल रीति	८४
४२.	अंशात्मक दृष्टि-योग (Aspects)	८६
४३.	ग्रहाधीन व्यापारिक वस्तुएँ और उनकी तेजी-मन्दी जानने की सरल पद्धति	८७
४४.	सस्य-जातक	८८
४५.	कुण्डली-निर्माण की वैज्ञानिक पद्धति	९०
४६.	राहु-केतु का स्पष्ट भोगांश-साधन	१०२
४७.	राहु-केतु का मार्गत्व	१०४
४८.	खगोल-विज्ञान विषयक केप्लर और न्यूटन के नियम	१०५
४९.	निरयण राहु-सारणी	१०६
५०.	२०० वर्षों की सायन राहु-सारणी	१०९
५१.	राहु-सारणी की प्रयोगविधि	११०
५२.	काशी के लग्न राश्युदयमान और सर्वत्रोपयोगी दशम राश्युदयमान की सारणी	१११
५३.	वाराणसी की सायन लग्न एवं दशम सारणी	११२
५४.	लग्नोदयगणित का तुलनात्मक अध्ययन	११४
५५.	उन्नतांश-साधन	११६
५६.	कुण्डली-विज्ञान और मुहूर्त-काल-साधन	१२०
५७.	मुहूर्त-माहात्म्य	१२८
५८.	ग्रहों की अष्टधा गति, पञ्चधा युति	१३१
५९.	दिक् काळ एवं सूर्यग्रहण-गणित	१३२
६०.	ग्रहण-निर्णायक नियम	१३८
६१.	चन्द्रग्रहण-गणित	१३९
६२.	सूर्यग्रहण-गणितोदाहरण	१४२
६३.	काल परिमाण और परिणमन	१४३
६४.	शाश्वत जीवन कैलेण्डर	१५९
६५.	सन्, शक, संवत्सर सम्बन्धी जरूरी जानकारी	१६०
६६.	राश्यंश एवं समय-परिवर्तन सारणी	१६१
६७.	एकादशी व्रत-निर्णय	१६२
६८.	अन्यान्य व्रत-निर्णय	१६६
६९.	तिथि-तत्त्व	१६७
७०.	कलातिथि का ग्रहण-गणित में विनियोग	१७१
७१.	चन्द्र एवं शुक्र का रोहिणी शकट-भेद	१७२
७२.	संक्रांति-पुण्यकाल-व्यवस्था	१७४
७३.	श्राद्ध-विवेचन	१७४
७४.	संसर्पमास-निर्णय	१७७
७५.	क्षयाधिक मासनिर्णय	१७८
७६.	गणित ज्योतिष के सम्बन्ध में—	१८०

कुण्डली-निर्माण

के लिए लग्नादि द्वादश भाव-साधन की विभिन्न रीतियाँ

अक्षांश २५°-२०′ (काशी की पलभा ५.७ अं.) की

* सायन लग्न-सारणी *

अंश	स्वोदय भुक्त पल	प्रत्यंश उदय-गति पल	स्वोदय भुक्त पल	अंश
०	००.००	७ ३	३६००.००	३६०
१०	७३.१९	७.४	३५२६.८१	३५०
२०	१४७.९५	७.७	३ ५२.०५	३४०
३०	२२५.२८	८.०	३३७४.७२	३३०
४०	३०५.७५	८.५	३२९४.२५	३२०
५०	३९०.९३	९.०	३२०९.०७	३१०
६०	४८१.३९	९.५	३११८.६१	३००
७०	५७६.७०	१०.१	३०२३.३०	२९०
८०	६७७.४३	१० ५	२९२२ ५७	२८०
९०	७८३.१५	११.०	२८१६.८५	२७०
१००	८९३.४३	११.३	२७०६.५७	२६०
११०	१००६ ७०	११.४	२५९३.३०	२५०
१२०	११२१ ३९	११.५	२४७८.६१	२४०
१३०	१२३६.९३	११.४	२३६३.०७	२३०
१४०	१३५१.७५	११.३	२२४८.२५	२२०
१५०	१४६५.२८	११.२	२१३४ ७२	२१०
१६०	१५७७.९५	११.१	२०२२.०५	२००
१७०	१६८९.१९	११.०	१९१०.८१	१९०
१८०	१८००.००		१८००.००	१८०

* सर्वत्रोपयोगी सायन दशम-सारणी *

अंश	लंकादय भुक्तपल	प्रत्यंश उदय-गति	गुणक पल	लंकादय भुक्तपल	अंश
०	०	९.२	—३.३	३२००	३६०
१०	९२	९.३	— ३.२	३५०८	३५०
२०	१८५	९.५	—३.१	३४१५	३४०
३०	२८०	९.०	—२.९	३३२०	३३०
४०	३७७	१० ७	—२.६	३२२३	३२०
५०	४७७	१०.३	—२.२	३१२३	३१०
६०	५८०	१०.५	—१.७	३०२०	३००
७०	६८५	१०.७	—१.१	२९१५	२९०
८०	७९२	१०.८	+०.४	२८०८	२८०
९०	९००	१०.८	+०.४	२७००	२७०
१००	१००८	१०.७	+११	२५९२	२६०
११०	१११५	१०.५	+१.७	२४८५	२५०
१२०	१२२०	१०.३	+२.२	२३८०	२४०
१३०	१३२३	१०.०	+२.६	२२७७	२३०
१४०	१४२३	९.७	+२.९	२१७७	२२०
१५०	१५२०	९.५	+३.१	२०८०	२१०
१२०	१६१५	९.३	+३.२	१९८५	२००
१७०	१७०८	९.२	+३.३	१८९२	१९०
१८०	१८००			१८००	१८०

क्षेत्राणां स्थूलत्वात् स्थूला उदया भवन्ति राशीनाम् ।
सूक्ष्मार्थी होराणां कुर्याद्द्रेक्काणकानां वा ॥
—सिद्धान्तशिरोमणि स्पष्टा. ॥६०॥

सारणी का विवरण—सारणी के पहले खाने में सायन लग्न-राशि के अंश दस-दस अंश के अन्तर से दिये गये हैं । उनके उदय होने में जितने पल लगते हैं यानी जो पल भुक्त होते हैं, वे पल दशमलव के दो अंक सहित दूसरे खाने में दिये गये हैं । पल के साथ उसका साठवाँ भाग विपल न देकर उसका १००वाँ भाग दशमलव के दो अंक में दिये हैं । इस दशमलव-प्रणाली से लग्न दशमादि का गणित सूक्ष्म होने के साथ सरल भी हो जाता है; गोमूत्रिका आदि पुरानी रीतियों के भारी गुणा-भाग से बचत हो जाती है, जैसाकि निम्न उदाहरण से पाठकों को स्वयं विदित हो जायेगा । सारणी के तीसरे खाने में लग्नांश की जो उदय-गति दी गई है, वह दस-दस अंश की नहीं, बल्कि उनके मध्यवर्ती प्रति एक-एक अंश की है । गति पल और उसके दशमांश में है । चौथे पाँचवें खाने में पुन: स्वोदय भुक्तफल और उनके अंश क्रमश: दिये गये हैं । उनके प्रत्यंश की उदय-गति वही है जो बायीं ओर के प्रथम खाने के अंशों की है । सारणी के उपयोग की रीति बड़ी सरल है और प्रचलित सभी रीतियों तथा सारणियों की अपेक्षा अधिक सूक्ष्म लग्नस्पष्ट अत्यल्प समय में सम्पन्न हो जाता है ।

रीति—इस सारणी का उपयोग करने के पहले इष्टकाल को पलात्मक बना लेना चाहिये तथा इष्टकालिक सायन राश्यादि सूर्यस्पष्ट को भी अंशात्मक बना बना लेना चाहिये । इष्टकाल के विपल को तथा सायन सूर्य की कला विकला को दशमलव में बदल लेना चाहिये । विपल को ६० से भाग देने पर उसका दशमलव बन जाता है तथा सायन सूर्यस्पष्ट में केवल कला हो यानी विकला ० शून्य हो तो कला को ६० से भाग देने पर दशमलव बन जायेगा और यदि कला के साथ विकला भी हो तो कला को ६० से गुणाकर विकला में जोड़ दें, तब कुल विकला में ३६०० का भाग देने पर दशमलव बन जायेगा ।

अब सारणी से यह ज्ञात करना होगा कि उक्त दशमलव सहित सायन सूर्य के अंशों में कितने पल भुक्त होते हैं । अत: उक्त सायन सूर्य के अंशों में सारणी का जो आसन्न अंश घट सके, वह घटा दीजिये और शेष को उस आसन्न अंश के भुक्त स्वोदय-पल की उदय-गति से गुणा कीजिये । गुणा दशमलव की रीति से करना चाहिये जिससे सायन सूर्य के अवशिष्ट भाग के स्वोदय भुक्तपल प्राप्त होंगे; उनको आसन्न अंश के स्वोदय भुक्तपलों में जोड़ दीजिये तो अपने पूरे सायन सूर्य के भुक्तपल ज्ञात होंगे । अब इसमें पलात्मक इष्टकाल भी दशमलव सहित जोड़ दीजिये एवं 'योगफल' के निकटतम स्वोदय भुक्तपल सारणी में तलाश कीजिये; वह जिस विशेष अंश के खाने में मिले,

उसके स्वोदय भुक्तपल को 'योगपल' में घटा दीजिये, शेष को उक्त विशेष-अंश की उदय-गति से भाग दीजिये; लब्धि को उस विशेष अंश में जोड़ने से सायन लग्न-अंश एवं दशमलव में प्राप्त होगा। अंश के दशमलव को ६० से गुणा करने पर कला तथा अवशिष्ट दशमलव के अंकों को पुनः ६० से गुणा करने पर विकला प्राप्त होती है। अंश ३० से अधिक होने पर उसमें ३० का भाग देकर राश्यादि लग्नस्पष्ट कर लीजिए। सायन लग्नस्पष्ट में इष्ट दिन का स्पष्ट अयनांश घटाने पर शुद्ध निरयण लग्न स्पष्ट हो जाता है। उपर्युक्त गणित-क्रिया एक उदाहरण से बखूबी समझ में आ जायेगी।

उदाहरण—श्रीजगजीवनदास गुप्त, सम्पादक 'चिताहरण जंत्री' का जन्मेष्टकाल घट्यादि ३५।३५।५५ है तात्कालिक सायन सूर्यस्पष्ट राश्यादि ५-१३°-५४'-२९" दैनिक गति ५८'-१५" है; दशम-साधनार्थ काशी के मध्याह्नात् इष्टकाल घ. २० प ६ वि० २५ है; इष्ट(जन्म)—दिन का अयनांश २२°-४३'-१४" है।

लग्न-साधन-गणित—पहले सायन राश्यादि सूर्य को अंश एवं दशमलव में तथा इष्टकाल को पल एवं उसके दशमलव में बदल लेना है। अतः सायन सूर्य की राशि ५ को ३० से गुणा किया तो १५०° हुआ, उसमें १३° अंश जोड़ने से सायन सूर्य के १६३° अंश हुये, कला ५४' के साथ विकला २९" भी है। अतः ५४ × ६०=३२४०" में २९" जोड़ने से कुल विकला ३२६९" हुई, उसमें ३६०० का भाग दशमलव की रीति से दिया सो दशमलव-चिह्न के बाद ·९०८०६ पांच अंक उपलब्ध हुये। सूर्य की कला विकला के लिये दशमलव के ५ अंक तक तथा इष्टकाल के विपल के लिये दशमलव के दो अंक तक का गणित पर्याप्त है। इष्टकाल की घटी ३५ को ६० से गुणा किया तो २१०० हुआ, उसमें ३५ मिलाने से कुल २१३५ पल हुये, ५५ विपल का दशमलव बनाने के लिये उसमें ६० का भाग देने से दशमलव के बाद दो अंक ९१ उपलब्ध हुये। इस प्रकार सारणी के लिये उपयोगी सायन सूर्य १६३°·९०८०६ तथा इष्टकाल २१३५·९१ पल बन गया। सासरणी में सायन सूर्य के निकटतम अङ्क १६० अंश है जिसे अपने सायन सूर्य १६३°·९०८०६ में घटा दिया तो शेष ३°·९०८०६ बचा। इसका भुक्तपल लाने के लिये सारणी के १६० और १७० अंशों के मध्यवर्ती प्रत्यंश-उदय-गति १११ पल से ३°·९०८०६ को गुणा किया तो ४३.३७९४६६ पल प्राप्त हुये। यहाँ ४३ के बाद दशमलव के सिर्फ दो अंक ·३७ लेकर शेष को त्याग दिया और ४३·३७ को १६० अंश के स्वोदय भुक्तपल १५७७·९५ में जोड़ दिया तो १६२१·३२ पल हुये, उसी में इष्टकाल २१३५·९१ भी जोड़ने से 'योगफल' ३७५७·२३ हुआ। सारणी का अधिकतम स्वोदय भुक्तपल ३६०० है जो सम्पूर्ण राशिचक्र का उदय-काल है। अतः उपर्युक्त ३७५७·२३ में ३६०० घटाकर शेष १५७.२३ पल का निकटतम अंक सारणी में देखा तो १४७.९५ स्वोदय भुक्तपल २० अंशविशेष का मिला; अब १४७.९५ को १५७·२३ में घटाने से शेष ९·२८ रहा; इसको २० तथा ३० अंश के मध्यवर्ती प्रत्यंश की उदय-गति पल ७·७ से भाग दिया तो १°·२०५२ प्राप्त हुआ जिसे उपर्युक्त अंश-विशेष २० में जोड़ देने से २१°.२०५२ सायन लग्न सिद्ध हुआ। लग्न की कला विकला लाने के लिये ·२०५२ में ६० का गुणा किया तो १२'·३१२० प्राप्त हुआ, पुनः ३१२० में ६० का गुणा किया तो १८"·७२ विकला प्राप्त हुई। यहाँ लग्न के अंश ३० से कम हैं, अतः राशि ० अंश २१° कला १२' विकला १९" सायन लग्न सिद्ध हुआ। उसमें अयनांश २२°-४३'-१४" घटाने से राश्यादि ११-२८°-२९'-५" निरयण लग्न स्पष्ट हो गया।

दशम-साधन—जिस तरह लग्न-सारणी से लग्न स्पष्ट किया गया, उसी तरह दशम-सारणी से दशम स्पष्ट होगा। दशम साधन के लिए निरक्षोदय (लंकोदय)मान की सारणी ठीक लग्न सारणी के प्रकार की दी गयी है। उसमें केवल गुणक का एक खाना अधिक है। यह गुणक पल और उसके दशमांश में हर दस-दस अंश के लिए ऋण, धन चिह्न* के साथ दिया गया है जिसके द्वारा १ से लेकर ६० अक्षांश तक के किसी भी स्थान की वैसी ही लग्न-सारणी बड़ी सरलता से बनाई जा सकती है, जैसी काशी के लिए बनाकर यहाँ छापी गयी है। सारणी बनाने की विधि बताने के पहले दशम के गणित का उदाहरण यहाँ दे देते है :—दशम-साधनार्थ मध्याह्नात् इष्टकाल की घटी २० पल ६ विपल २५ है। घटी २० को ६० से गुणा किया तो १२०० हुआ, जिसमें ६ पल युक्त करने से कुल १२०६ पल हुए; विपल २५ का दशमलव बनाने के लिये उसमें ६० का भाग दिया तो ·४१ मिला। अतः सारणी के लिये उपयोगी दशमेष्ट १२०६·४१ हुआ। सायन सूर्य पूर्वोक्त १६३°·९०८०६ है। १६३ अंश के आसन्न अंश सारणी में १६० है जिसे १६३·९०८०६ में घटाने से शेष ३·९०८०६ रहा। १६० तथा १७० अंश के मध्यवर्ती प्रत्यंश की उदय-गति ९·३ है, उससे ३·९०८०६ को गुणा किया तो ३६·३४४९५८ प्राप्त हुआ। यहाँ ३६ के बाद दशमलव के दो अंक ·३४ लेकर शेष त्याग दिया और इसमें १६० अंश का भुक्तपल १६१५ जोड़ दिया तो १६५१·३४ पल हुआ। उसी में इष्टकाल १२०६·४१ भी जोड़ दिया तो कुल 'योगफल' २८५७·७५ हुआ। सारणी में इसके निकटतम अंक २८०८ पल मिलता है जो २८० अंश का भुक्तपल है। २८५७.७५ में २८०८ घटाने पर शेष ४९·७५ रहा। २८० तथा २९०

* प्रत्येक गुणक के साथ जो ऋण − धन + का चिन्ह लगाया गया है, वह उत्तर आक्षांशों की लग्न-सारणी बनाने के लिए है। दक्षिण अक्षांशों की लग्न-सारणी बनानी हो तो गुणक के चिन्ह विपरीत लेने चाहिएं यानी ऋण चिन्ह की जगह धन और धन की जगह ऋण-चिन्ह का प्रयोग करना चाहिए।

अंश के मध्यवर्ती प्रत्यंश की उदय-गति १०·७ है। इससे ४९·७५ में भाग देने से ४·६४९५ प्राप्त हुआ जिसे २८० अंश में युक्त कर देने से २८४°·६४९५ सायन दशम सिद्ध हुआ। ·६४९५ की कला विकला बनाने के लिये ६० से गुणा किया तो कला ३८′·९७ प्राप्त हुई; पुनः ·९७ को ६० से गुणा किया तो ५८″·२ विकला मिली। दशम के अंश २८४ में ३० का भाग देने पर ९ राशि १४ अंश हुये—अर्थात् राश्यादि ९·१४°-३८′-५८″ सायन दशम सिद्ध हुआ; उसमें अयनांश २२°-४३′-१४″ घटाने से राश्यादि ८·२१°-५५′-४३″ निरयण दशम स्पष्ट हो गया।

अभीष्ट स्थान की लग्न-सारणी बनाने की विधि—अब इस लंकोदय सारणी के द्वारा १ से ६० अक्षांशों के विभिन्न स्थानों की स्वोदय(लग्न)सारणी बनाने की विधि लिखते हैं। पाठक यह तो जानते हैं कि हर राशि के लंकोदय मान के द्वारा सर्वत्रोपयोगी दशम-सारणी बनती है तथा स्वोदय द्वारा एतत्स्थानीय लग्न-सारणी बनती है। किसी स्थान में प्रत्येक राशि के उदय होने में जो समय लगता है, वही उस स्थान में उस राशि का स्वोदय होता है। किसी स्थान का स्वोदय लाने के लिए उस स्थान की पलभा और हर राश्यंश की क्रांति के द्वारा चर ज्ञात करना होता है। उस चर का संस्कार सम्बन्धित राश्यंश के लंकोदय-मान में करने से स्वोदय बनते हैं। यहाँ दशम-सारणी में प्रत्येक राशि के तृतीयांश यानी १०–१० अंश के लंकोदय-मान उपलब्ध हैं; हर दस अंश के साथ जो प्रत्यंश की उदय-गति दी गयी है उसमें-से दशमलव-चिह्न निकाल देने पर वह दस अंश की गति यानी उदयमान हो जायेगा; उसके बगल में ऋण या धन चिह्न के साथ जो गुणक दिया गया है, उससे इष्ट पलभा को गुणा करने से चर ज्ञात होगा। उस चर को धन या ऋण चिह्न के अनुसार सम्बन्धित १० अंश के उदयमान में जोड़ या घटा दें तो उक्त १०° का स्वोदय बन जायेगा। जैसे, काशी की पलभा ५·७ अंगुल है और हमें १० अंश का स्वोदय बनाना है। १०° के प्रत्यंश की उदय-गति ९·२ सारणी में दी गयी है; जिसमें-से दशमलव-चिह्न हटा दिया तो १० अंश का लंकोदय ९२ पल हुआ; इसी में चर-संस्कार करना है। अतः उसके सामने के गुणक–३·३ से पलभा ५·७ को गुणा किया तो चर ऋण–१८·८१ मिला। इसे लंकोदय ९२ पल में घटा दिया तो काशी के लिए १० अंश का स्वोदय ७३·१९ बन गया। इस प्रकार आप १० अंश से १८० अंश तक के स्वोदय बनायेंगे तो क्रमशः ये पलात्मक मान दशमलव सहित उपलब्ध होंगे—७३·१९, ७४·७६, ७७·३३, ८०·४७, ८५·१८, ९०·४६, ९५·३१, १००·७३, १०५·७२, ११०·२८, ११३·२७, ११४·६९, ११५·५४, ११४·८२, ११३·५३, ११२·६७, १११·२४, ११०·८१; ये ही स्वोदयमान उत्क्रम से (उल्टे क्रम से) १८० से लेकर ३६० अंश तक के भी स्वोदय हैं। जैसे, १८० अंश से १९० अंश तक के १० अंश का स्वोदय ११०·८१ पल, १९० से २०० तक के १० अंश का स्वोदय १११·२४; अग्रिम २०० से २१० तक के १० अंश का स्वोदय ११२·६७ इत्यादि समझ लें। अब हर १० अंश के स्वोदय बन जाने पर सारणी में स्वोदय भुक्तपल की खाना-पूर्ति के लिए उपर्युक्त प्रत्येक स्वोदयपलों को उत्तरोत्तर जोड़ते चले जायँ तो १८० अंश का स्वोदय भुक्तपल १८०० आयेगा। यदि इससे न्यूनाधिक आता है तो कहीं गणित में गलती हुई हैं, जाँचकर ठीक कर लें। आगे १८०० पल में उल्टे क्रम से स्वोदय पलों को उत्तरोत्तर जोड़ते चले जायेंगे तो क्रमशः १८० से ३६० अंश तक के हर दस-दस अंश के स्वोदय भुक्तपल बन जायेंगे, जैसे १८००·०० में ११०·८१ जोड़ा तो १९१०·८१ पल १९० अंश का स्वोदय भुक्त हुआ; १९१०·८१ में १११·२४ जोड़ा तो २०२२·०५ पल २०० अंश का स्वोदय भुक्तपल हुआ, इत्यादि; अन्त में ३६० अंश का स्वोदय भुक्तल ३६००=६० घटी आयेगा; क्योंकि ६० घटी में ३६० अंशों के सम्पूर्ण राशि-चक्र का एक बार उदय हो जाया करता है। उपर्युक्त रीति से आप काशी के लिए गणित करके देखेंगे तो यहाँ की प्रस्तुत सारणी में जो दस-दस अंश के भुक्तपल दिये गये हैं, वे ही आपके गणित से भी सिद्ध होंगे। दस-दस अंश के स्वोदय में दशमलव-बिन्दु को बायीं ओर हटाकर एक अंक के बाद रखने से उसी दस अंश के प्रत्यंश की उदय-गति बन जायेगी; जैसे ० अंश से १० अंश का स्वोदय ७३·१९ है; इसमें दशमलव-बिन्दु को बायीं तरफ हटाकर एक अंक के बाद (३ के बाद) रखा तो ७·३ पल इस दस अंश के प्रत्यंश की उदयगति बन गयी; आप देखें, वही सारणी में भी अंकित है। इस प्रकार आप चाहे जिस नगर, गाँव की लग्न-सारणी सहज ही बना सकते हैं जो उस स्थान के अक्षांश के निकटवर्ती तमाम अन्य स्थानों के लिए लग्न-साधनार्थ सदैव काम देगी; जैसे, काशी की लग्न सारणी उत्तर-अक्षांश २५°·२०° के निकटवर्ती गाजीपुर, मिर्जापुर, प्रतापगढ़, इलाहाबाद, बाँदा, झाँसी, चित्रकूट, बूँदी, हैदराबाद सिंध, बलिया, छपरा, पटना, मुँगेर, भागलपुर, हाजीपुर, पूर्णिया, आरा, सहसराम, कुदरा, डुमराँव, मालदह आदि स्थानों के लिए भी स्वल्पान्तर से उपयोगी है।

पलभा-ज्ञान— अपने नगर या गाँव की पलभा की जानकारी के बिना लग्न-सारणी नहीं बन सकती। पलभा की परिभाषा भारतीय ज्योतिष-सिद्धान्त ग्रन्थों में यह लिखी है–'मेषादिगे सायन भाग सूर्ये दिनार्धभा या पलभा भवेत्सा'–अर्थात् जिस दिन सूर्य सायन मेष या तुला राशि में प्रवेश करता है, उस दिन स्वस्थान में १२ अंगुल शंकु की मध्याह्न-कालिक छाया का जो अंगुलादि मान हो, वही पलभा होती है। पलभा ज्ञात होने से उस स्थान का अक्षांश अथवा स्थान का अक्षांश ज्ञात होने से वहाँ की पलभा गणित से जान सकते हैं। आज-कल प्रमुख नगरों के अक्षांश जानना सहज है—वे एटलस (मान-चित्र-संग्रहों) में दिये रहते हैं। अतः यहाँ अक्षांश पर से पलभा जानने की विधि लिखते हैं—

तत्वारयो दिग्घ्नपलांशहीनात्तेभ्यः पदं तेन विवर्जितानि। तत्त्वानि वै स्युः पलभाङ्गुलानिच्छायार्कवर्गैक्यपदं हि कर्णः *—अर्थात् दस गुणित अक्षांश को ६२५ में बाद करने से जो शेष बचे उस के वर्गमूल को २५ में बाद करने से अंगुलादि पलभा ज्ञात होती है। यथा—वाराणसी के अक्षांश २५°-२०′ को दस गुणित किया तो २५३।२० हुआ, इसे ६२५ में घटाया तो ३७१।४० बचा। इसका वर्गमूल १९।१७ हुआ जिसे २५।० में घटाने से वाराणसी की पलभा ५ अंगुल ४३ व्यंगुल अथवा अं. ५·७ ज्ञात हो गयी। पलभा ज्ञात होने पर पूर्वोक्त प्रकारेण स्वोदय द्वारा इष्टकाल का लग्न (प्रथम भाव-मध्य) एवं लंकोदय द्वारा दशमलग्न (दशमभाव-मध्य) स्पष्ट करना परमावश्यक है; क्योंकि अखिल विश्व के फलित ज्योतिष में कुण्डली के इन दो स्पष्ट राश्यंश का सर्वाधिक महत्व है। लग्न एवं दशम के अंश कुण्डली के तीव्र प्रभावकारी बिन्दु होते हैं अर्थात् इन अंशों से शुभाशुभ ग्रहों के शुभाशुभ अंशात्मक दृष्टि-योग बनने पर अथवा इन अंशों पर शुभाशुभ ग्रहों के गोचर-भ्रमण से जातक को उनके तीव्र प्रभाव का अनुभव करना ही पड़ता है; किन्तु इन दोनों (लग्न एवं दशमस्पष्ट) के द्वारा षष्ठ्यंश की रीति से अन्यान्य भाव एवं उनकी संधियों का जो स्पष्टीकरण किया जाता है, उनका कोई विशेष महत्त्व आज के फलित-विशेषज्ञ नहीं मानते हैं। कुण्डली के द्वादश भावों के स्पष्टीकरण की अनेक रीतियाँ पाश्चात्य फलित ज्योतिष में प्रचलित है जिनमें सर्व-प्रमुख हैं १ कैम्पेनस् और २ सेमीआर्क। यद्यपि खगोलीय गणित-शास्त्र की दृष्टि से कैम्पेनस् सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण हैं; किन्तु प्रचार की दृष्टि से सेमीआर्क को प्रथम स्थान प्राप्त हैं। प्रसिद्ध आंग्ल ज्योतिषी रैफल की विश्वप्रिय लग्नादि द्वादशभाव-सारणी इसी पद्धति से बनाई गयी हैं। भारत में भावकुण्डली-साधन की चार पद्धतियाँ प्रचलित हैं जिनमें से एक को 'हिन्दू भाव साधन-पद्धति' के नाम से पाश्चात्य ज्योतिष में भी स्थान प्राप्त है। यद्यपि पाश्चात्यों ने इसके साथ 'पॉरफिरी' का नाम भी जोड़ रखा है। भारत में इस पद्धति के साथ श्रीपति का नाम संयुक्त है। यह श्रीपति-पद्धति वही षष्ठ्यंश-पद्धति है जिसका उल्लेख हम ऊपर कर चुके हैं और जिसका इन दिनों सर्वाधिक प्रचलन है; किन्तु वस्तुतः इस पद्धति की अपेक्षा अन्य तीन भाव-साधन-रीतियों की विशेष महत्ता एवं उपयोगिता है। इनमें पहली रीति तो बहुत ही सीधी सरल है। लग्न-स्पष्ट में एक-एक राशि जोड़ते जाने से क्रमशः द्वादश भाव स्पष्ट हो जाते हैं अर्थात् प्रत्येक भाव समानरूपेण ३० अंश के होते हैं और उनके मध्य से १५ अंश आगे-पीछे संलग्न भावों की संधियाँ होती हैं। अतएव ससन्धि द्वादश भाव स्पष्ट करना हो तो लग्नस्पष्ट में १५ अंश जोड़ने से लग्न (प्रथम भाव) एवं द्वितीय भाव की संधि होगी—उसमें १५ अंश जोड़ने से द्वितीय भाव-मध्य स्पष्ट होगा; पुनः उसमें १५ अंश जोड़ने से द्वितीय भाव एवं तृतीय भाव की संधि स्पष्ट होगी। इसी प्रकार क्रमशः १५-१५ अंश तब तक जोड़ते जाँय, जब तक आगे की संधियाँ एव द्वादश भाव स्पष्ट न हो जाँय। इस रीति के प्रबल समर्थन एवं प्रचार का श्रेय काशी के स्व० पं० श्रीरामयत्नजी ओझा को है। दूसरी पद्धति के उन्नायक और प्रबल प्रचारक त्रिस्कन्ध ज्योतिषाचार्य स्व० श्री पं० सीतारामजी झा थे। अतः भाव-लग्न-कुण्डली एवं होरालग्न कुण्डली-साधन की रीति उन्हीं के शब्दों में यहाँ दी जा रही है:—

लग्न दो प्रकार के होते हैं। एक, भबिम्बीय (नक्षत्र-बिम्बोदय वश); द्वितीय, भवृत्तीय स्थान (क्रान्तिवृत्तीय बिन्दु) के उदय वश। जन्म यात्रा विवाह यज्ञादि सत्कर्मों में भबिम्बीय लग्न फलप्रद होता है तथा ग्रहण, ग्रह बिम्बोदयास्त आदि दृग्विषय के काल-ज्ञानादि के लिये भवृत्तीय लग्न का प्रयोजन होता है। अतएव 'अदृष्टफल सिद्ध्यर्थं' विवाह यात्रादि कार्यों में बिम्बीय लग्न का उपयोग करना चाहिए एवं ग्रहणादि के काल-ज्ञानार्थ स्थानीय भवृत्तीय लग्न प्रयोजनीय है। मुनियों ने राश्यन्तर्गत तारा-समूह के बिम्बोदय से लग्न (तनु) आदि द्वादशभावों के फल-ज्ञानार्थ तुल्यमान से १२ भावों की कल्पना की है। इसीलिये बिम्बीय लग्न का नाम 'भाव-लग्न' रखा गया है। सामान्यतः सभी व्यक्तियों के मन में शरीर धन पराक्रम सुख संतान आरोग्य स्त्री आयु धर्म कर्म आय व्यय सम्बन्धी भावों का उदय हुआ करता है। इनका शुभाशुभत्व जिस काल के आधार से होता है, उसको भाव-लग्न कहते हैं। सूर्योदय के अनन्तर ६० घटी में पूरे भचक्र का एक बार भ्रमण हो जाने के कारण भचक्रस्थ १२ राशियों का भी उदय हो जाता है। अतएव एक नाक्षत्र अहोरात्र में ६० घटी होने से ५-५ घटी (यानी २-२ घंटे) में एक-एक भाव-राशि का उदय सर्वत्र हुआ करता है; इसीलिए महर्षि पराशर ने कहा है— अथाहं संप्रवक्ष्यामि तवाग्रे द्विजसत्तम! भाव-होरा-घटी संज्ञ लग्नानीति पृथक्-पृथक्॥' अर्थात हे द्विजश्रेष्ठ! अब मैं भाव-लग्न, होरा-लग्न और घटी-लग्न को पृथक्-पृथक् कहता हूँ।

अदृष्ट फलोपयोगी भाव-लग्न साधन-प्रकार—इष्टकाल के घट्यादि को ६ से गुणा करने पर गुणनफल अंशादि होगा, उसे राश्यादि बनाकर औदयिक सूर्य स्पष्ट में जोड़ने से प्रथम भाव-लग्न (स्पष्ट) होता है। औदयिक सूर्य बनाने के लिए तात्कालिक यानी (इष्टकाल के) सूर्य की गति को इष्ट घटी पल से गुणाकर ६० से भाग दें, लब्धि को तात्कालिक सूर्य की कला विकला में घटाने से सूर्योदयकालिक (औदयिक) सूर्य स्पष्ट हो जायगा अथवा अत्यल्पान्तर होने के कारण इष्ट घटी पल तुल्य कला विकला को तात्कालिक सूर्य में घटाने से भी उदयकालिक सूर्य बन जाता है।

---

* $२५ - \sqrt{२५^2 - १०\phi}$, यहाँ ϕ = अभीष्ट स्थान का अक्षांश।

उदाहरण—पूर्वोक्त तात्कालिक स्पष्ट सूर्य राश्यादि ५।१३°।५४′।२९″ और दैनिक गति ५८′।१५″ है। इष्टकाल घट्यादि ३५।३५।५५ है। इसको सूर्य की दैनिक गति ५८′।१५″ द्वारा गोमूत्रिका रीति से गुणा किया तो २०७३।२६१७।३७२८ हुआ जिसे ६० का भाग देकर सवर्णन करने पर कलादि ३४′।३३″।३७‴ हुए; अतः पूर्वोक्त तात्कालिक सूर्य राश्यादि ५।१३।°५४′।२९″ में कलादि ३४′।३४″ को घटा दिया तो शेष राश्यादि ५।१३°।१९′।५५″ औदयिक सूर्य स्पष्ट हुआ अथवा स्वल्पान्तर से इष्टकाल के घटी पल को कला विकला मानकर स्पष्ट सूर्य में घटाया तो राश्यादि ५।१३।°१८′।५३″ औदयिक सूर्य स्पष्ट हुआ। अब इष्टकाल घटयादि ३५।३५।५५ को ६ से गुणा किया तो राश्यादि ७।३°।३५′।३०″ हुआ, जिसे औदयिक सूर्य के राश्यादि ५।१३°।१९′।५५″ में जोड़ने से राश्यादि ०।१६°।५५′।२५″ लग्न (प्रथम भावमध्य) सायन मानेन सिद्ध हुआ, उसमें अयनांश २२°।४३′।१४″ घटाया तो राश्यादि ११।२४°।१२′।११″ निरयण लग्न स्पष्ट हो गया। प्रथम स्वोदयसिद्ध (दृश्य) निरयण लग्न राश्यादि ११।२८°।२९′।४″ सिद्ध कर चुके हैं और स्व० पं० श्रीरामयत्नजी ओझा के मतानुसार उसी में १५-१५ अंश क्रमशः जोड़ते जाने से ससंधि अग्रिम भाव स्पष्ट होंगे; किन्तु श्री पं० सीतारामजी झा के मतानुसार इस तुल्योदय (अदृश्य) लग्न राश्यादि ११।२४°।१२′।११″ में १५-१५ अंश जोड़कर ससन्धि द्वादशभाव सिद्ध करना चाहिए। इस तरह प्रस्तुत उदाहरण के दोनों लग्न (प्रथम भावस्पष्ट) में ही एकदम ४°।१६′।५३″ का अन्तर प्रत्यक्ष है; अस्तु।

भाव-साधन का अन्य प्रकार—लग्नादि द्वादश भाव-साधन का एक अन्य शास्त्रीय प्रकार 'मुहूर्त-मार्तण्ड' में श्रीनारायण दैवज्ञ ने दिया है जिसके अनुसार अनेक ज्योतिर्विद् भावचलित कुण्डली बनाते हैं; विशेषतः वर-कन्या मेलापक में मंगला-मंगली का विचार इसी भावचलित कुण्डली में मंगल की स्थिति परखकर करते हैं। भाव-साधन की यह रीति मुख्यतः तात्कालिक निरयण सूर्य पर आधारित है। इसमें पहले सायन सूर्य के आधार पर सायन लग्न दशम लाने फिर उनमें अयनांश घटाकर निरयण लग्न दशम स्पष्ट करने की आवश्यकता नहीं; तात्कालिक निरयण सूर्य के द्वारा ही निरयण लग्न, दशम स्पष्ट किया जाता है। इष्ट घटी पलादि को राश्यादि में बदलकर तात्कालिक सूर्य में जोड़ने मात्र से लग्न स्पष्ट हो जाता है एवं मध्यान्हात् इष्ट घट्यादि को राश्यादि में परिवर्तित कर तात्कालिक सूर्य में जोड़ने से दशमभाव स्पष्ट हो जाता है। लग्न और दशम स्पष्ट हो जाने पर उनके आधार से अन्यान्य भावों को ससंधि स्पष्ट करने की रीति प्रकारान्तर से वही है जो नीलकण्ठ श्रीपति आदि द्वारा षष्ठ्यंश-पद्धति के नाम से प्रचलित है और जिसके अनुसार ही आजकल अधिकांश कुण्डलियाँ बनायी जा रही हैं। हम घटी पलादि को राश्यादि में बदलने की रीति पहले लिख आये हैं। वह गुणन-क्रिया की रीति है जिसका उदाहरण 'अदृष्ट फलोपयोगी भाव-लग्न-साधन-प्रकार' में दिया है। दूसरी भजन-क्रिया की जो रीति है, उसका उदाहरण आगे 'होरालग्न-साधन-प्रकार' में दिया जायेगा। बिना गुणन भजन, केवल जोड़ मात्र से घट्यादि का राश्यादि मान बनाने के लिए सारणी भी इसी पुस्तक में अन्यत्र दी गई है। इनमें-से किसी भी रीति से सूर्योदयात् एवं मध्याह्नात् इष्ट घट्यादि को राश्यशादि में बदलकर उनके द्वारा क्रमशः लग्न व दशम स्पष्ट करना चाहिए जिसका उदाहरण नीचे दिया जा रहा है—

उदाहरणः—पूर्वोक्त तात्कालिक सायन सूर्य स्पष्ट राश्यादि ५।१३°।५४′।२९″ और अयनांश २२।°४३′।१४′ है जिसे सायन सूर्य में घटाने से तात्कालिक निरयण सूर्य स्पष्ट राश्यादि ४।२१।११।१५ हुआ। जन्मेष्ट काल के घट्यादि ३५।३५।५५ को राश्यादि में बदलने से रा. ७।३°।३५′।३०″ हुआ जिसे उक्त निरयण सूर्यस्पष्ट में जोड़ने से प्रथम भाव-लग्न राश्यादि ११।२४।४६।४५ स्पष्ट हो गया। इसी प्रकार से मध्याह्नात इष्ट घट्यादि २०।६।२५ को राश्यंशादि में बदलने से रा. ४।०°।३८′।३०″ हुआ जिसे उक्त निरयण सूर्य स्पष्ट रा. ४।२१°।११′।१५″ में जोड़ने से राश्यादि ८।२१°।४९′।४५″ निरयण दशम स्पष्ट हो गया। टि०—मध्याह्नात् इष्ट बनाने के लिये सूर्योदयात् इष्टकाल में दिनार्घ न घटे तो सूर्योदयात् इष्टकाल में ६० घटी जोड़कर दिनार्द्ध घटाना और शेष घट्यादि को दशम-साधनार्थ उपयोग में लाना चाहिये। इस प्रकार से पाठक पूर्वा-पर-नतकाल बनाने की झंझट से बच जायेंगे। 'मुहूर्त-मार्तण्ड की टीका में श्रीझाजी ने लिखा है कि रात्रि में इष्ट घटी हो तो रात्रिशेष को ६ से गुणा कर अंशादिफल को सूर्य में घटाने से प्रथम (भाव) लग्न होता है। यह भी अनावश्यक है; क्योंकि इस क्रिया से भी फल वही प्राप्त होता है जो जन्मेष्ट काल को राश्यादि में बदल कर सूर्यस्पष्ट में जोड़ने से। अतः इस रीति से दिन शेष एवं पूर्वा-पर नतकालादि का साधन द्रविण प्राणायाम-मात्र है। हमने पाठकों के सुखार्थ सही सरल विधि लिख दी है। आगे श्रीझाजी ने अपनी टीका में यह भी लिखा है कि—'लग्नादि-साधन का यह स्थूल प्रकार है; सूक्ष्म के लिये सिद्धान्त देखो।' किन्तु तब वे जिस तुल्योदयमान की लग्न-साधन-पद्धति के प्रचारार्थ आन्दोलन कर रहे थे, उस दृष्टि से तो यही रीति शुद्ध सूक्ष्म सिद्ध होती है; बल्कि इसके द्वारा दशम भाव दृक्तुल्य स्पष्ट होता है। कुछ ज्योतिर्विदों का तो यह अभिमत है कि इस (मुहूर्त-मार्तण्डोक्त) रीति से दशम स्पष्ट कर उसमें सीधे एक-एक राशि जोड़ते हुए क्रमशः एकादश, द्वादश, लग्न, द्वितीयादि नवम भाव-पर्यन्त स्पष्ट कर लेना चाहिये—जिस तरह पं० रामयत्नजी ओझा दृक्तुल्य लग्न में एक-एक राशि जोड़कर क्रमशः अन्य सब भाव स्पष्ट करने को कहते हैं। उनकी रीति का मुख्य आधार दृक्तुल्य लग्न-बिन्दु है और इस रीति का मुख्य आधार दशमस्थ शीर्ष-बिन्दु है। सूक्ष्म शुद्ध दशम-बिन्दु का साधन सांपातिक काल के द्वारा और भी सरलतापूर्वक किया जा

सकता है ; क्योंकि एतदर्थ स्थानीय सूर्योदय, तज्जन्य इष्टकाल तथा दिनार्ध-काल आदि के गणित-प्रपञ्च की आवश्यकता नहीं। बस, जिस क्षण की कुण्डली बनानी है, उस क्षण का सांपातिक काल सारणी से ज्ञात करें ; फिर उसके द्वारा इस 'ज्योतिष-रहस्य' प्रथम खण्ड के पृष्ठ १८ की सारणी से किसी भी स्थान का निरयण दशमभाव मिनटों में स्पष्ट हो जायेगा। दशमभाव स्पष्ट हो जाने पर उसमें १५-१५ अंश तब तक जोड़ते चले जायँ, जब तक ससंधि एकादश, द्वादश, लग्न, द्वितीयादि, नवम भाव पर्यन्त स्पष्ट न हो जायँ। इस प्रकार से सहज ही सूक्ष्म शुद्ध भाव-चलित-कुण्डली बन जायेगी। अब फलितानुसंधान कर्त्ताओं का यह कर्त्तव्य है कि वे इन विभिन्न रीतियों के तुलनात्मक फलादेश सम्बन्धी अपने अनुभवजन्य ज्ञान को ज्योतिष-जगत के लाभार्थ प्रकाशित करें। इस विषय में श्रीझाजी का—

विशेष मंतव्य—यह है कि कुण्डली के भावों (तनु आदि द्वादश भावों) के फल जानने के लिए एक भाव-चक्र (चलित कुण्डली) पृथक् लिखनी चाहिये। उसमें सन्धि से अल्पांशी ग्रह को उससे पहले के भाव में, संधि से अधिकांशी ग्रह को उससे अगले भाव में तथा संधि के समान अंशवाले ग्रह को उसी संधि-स्थान में लिखना चाहिये। कुण्डली के ग्रहों के उच्च नीच स्वक्षेत्र मित्र शत्रु ग्रहादि का, सूर्य से वेशि वोशि आदि तथा चन्द्रमा से अनफा सुनफा आदि योग, संख्या, आश्रय, नाभस आदि योग, द्विग्रहादियोग, ग्रह राशियोग इत्यादि का विचार स्वोदयसिद्ध लग्नराशि-चक्र से करना; किन्तु ग्रह के केन्द्र त्रिकोणादि भाव स्थिति एवं उनके भावाधिपत्य आदि को भावलग्न-कुण्डली एवं उक्त दृश्य कुण्डली दोनों के चक्रों से समझकर फलादेश करना चाहिये।

होरालग्न-साधन प्रकार—ढाई-ढाई घटी के तुल्य मान से हर-एक राशि का जो उदय होता है, उसे 'होरा-लग्न' कहा गया है। उसके साधनार्थ इष्ट घटी पालादि को २ से गुणाकर घटी में ५ का तथा पल विपल में १० का भाग देने से जो राश्यादि लब्धि हो, उसे उदयकालिक सूर्यस्पष्ट में जोड़ने से राश्यादि होरा लग्न सिद्ध होगा। यथा—पूर्वोक्त इष्ट घट्यादि ३५।३५।५५ को दुगुना किया तो ७०।७०।११० हुआ। ७० में ५ का भाग दिया तो राशि १४ और पल ७० में १० का भाग देने से अंश ७ एवं विपल ११० में १० का भाग देने से कला ११ अर्थात् राश्यादि २।७°।११' उपलब्ध हुए जिसे औदयिक सूर्य राश्यादि ५।१३°।१९'।५५" में जोड़ दिया तो राश्यादि ७।२०°।३०'।५५" सायन होरा-लग्न सिद्ध हुआ। उसमें अयनांश २२°।४३'।१४" घटाने से निरयण राश्यादि ६।२७।४७।४१ होरा लग्न स्पष्ट हो गया।

मतान्तर—१ किसी दीर्घदर्शी फलिताचार्य का मत है कि '**समे लग्नभाद्विषमे सूर्यभात्**' अर्थात् उपर्युक्त प्रकारेण इष्टघटी से लब्ध राश्यादि को उदयकालिक सूर्य में तभी जोड़ना चाहिये जब लग्न-राशि विषम (मेष, मिथुन, सिंह आदि) हो, अन्यथा लग्न में सम राशि होने पर उपर्युक्त राश्यादि लब्धि को लग्नस्पष्ट में ही जोड़ने से होरा-लग्न स्पष्ट होगा। यथा —उपर्युक्त उदाहरण में जन्मलग्न-राशि मीन सम संज्ञक है। अतः मतान्तरेण उपर्युक्त लब्ध राश्यादि २।७°।११' को जन्मलग्न-राश्यादि ११।२४°।१२'।११" में अथवा दृश्य जन्म-लग्नस्पष्ट रा. ११।२८°।२९'।५" में जोड़ना चाहिए ; तब होरा-लग्न क्रमशः रा. २।१°।२३'।११" या २।५°।४०'।१५" होगा।

२. अन्य फलिताचार्य तो यहाँ तक कहते हैं कि—'**तनुः समा वा विषमा प्रजायतां तस्यां विदध्यात्फल योजनं सदा।**' अर्थात् तनुभाव (लग्न) में समराशि हो या विषम, किन्तु लब्धि राश्यादि को लग्नस्पष्ट में ही जोड़ना चाहिए। इन सब मतान्तरों में प्रथम मत ही (औदयिक सूर्य में जोड़ने का) युक्तियुक्त होने से विशेष ग्राह्य है ; क्योंकि प्रत्येक लग्न-प्रवृत्ति का आधार सूर्य ही है, यानी सूर्योदयकालिक सूर्यस्पष्ट ही एतत्कालीन लग्नस्पष्ट भी होता है। अतः उपर्युक्त प्रथम प्रकार मुख्य तथा द्वितीय प्रकार गौण है। प्रथम प्रकार से कभी फलित में गतिरोध पैदा हो जाने पर ही दूसरे प्रकार (मतान्तर) का प्रयोग करना चाहिए।

नीलकंठी आदि की स्थूल रीत्या लग्न और दशम का साधन दो प्रकार से किया जाता है : भुक्त और भोग्य। गणित-लघवार्थ कब, कौन-सी क्रिया करनी चाहिए, इसके वास्ते यहाँ नियम बतलाया जा रहा है :—

नतोन्नत काल-ज्ञान—दिन सूर्योदय से आरम्भ होता और सूर्यास्त के साथ समाप्त होता है। अतः सूर्योदय से व्यतीत समय को दिनभुक्त और सूर्यास्त होने में बाकी समय को दिनशेष कहते हैं। इसी भाँति सूर्यास्त के साथ रात्रि शुरू होती है और अग्रिम सूर्योदय पर समाप्त होती है ; अतः सूर्यास्त से व्यतीत समय को रात्रिगत तथा अग्रिम सूर्योदय होने में बाकी समय को रात्रिशेष कहते हैं। दिन के पूर्वार्ध में इष्टकाल हो तो दिनगत घटी पूर्व-उन्नतकाल होता है। यदि दिन के परार्ध में इष्टकाल हो तो दिनशेष घटी पर-उन्नतकाल होता है। पूर्वा-पर उन्नत घटी को दिनार्ध में घटाने से क्रमशः पूर्वा-पर नतकाल होता है। **यातः शेषः प्राकपरोन्नतः स्यात् कालस्तेनोनं द्युखण्डं नतः स्यात॥ ग्र. ला.** इसी भाँति रात्रिगत घटी, रात्रिशेष घटी एवं रात्यर्ध से रात्रिकालीन पूर्वा-पर नतोन्नतकाल समझना चाहिए।

उन्नतकाल और स्वोदय द्वारा लग्न-साधन—

दिवा-पूर्व-उन्नतकाल एवं तात्कालिक सूर्य से तथा रात्रि-पूर्वोन्नत-काल एवं षड्भ सूर्य से भोग्य प्रकारेण
रात्रि पर-उन्नतकाल ,, ,, तथा दिवा पर-उन्नतकाल ,, ,, भुक्त ,,

नतकाल और राशियों के लंकोदय द्वारा दशम-साधन—पूर्व-नत हो तो भुक्त क्रिया, पर-नत हो तो भोग्य क्रिया करना। रात्रि का इष्ट हो तो सायनार्क में ६ राशि जोड़कर पूर्वापर नत के लिए क्रमशः भुक्त, भोग्य क्रिया करनी चाहिय जिसका विवरण पुरानी शैली की पुस्तकों में दिया ही गया है। इसलिये पुनः लिखना व्यर्थ है।

कुण्डली-निर्माण : आयुर्दाय-साधन

फलित ज्योतिष में जातक के आयु निर्धारण की अनेक रीतियाँ वर्णित हैं। उन सब में महर्षि जैमिनी प्रोक्त आयुर्दाय गणित-पद्धति की सर्वोपरि मान्यता है; किन्तु एतद्विषयक कई सूत्र बड़े क्लिष्ट, दुरूह, लाक्षणिक एवं गूढ़ाभिप्रायिक हैं। इसीलिए उनके अर्थ, टीका, व्याख्या एवं भाष्य में प्राचीनाचार्यों से लेकर अर्वाचीन विद्वानों तक में परस्पर मतभेद मिलता है। उन सब मत-मतान्तरों पर गहन-गम्भीर विचार के सहारे ही मैं इस प्रकरण के मर्मोद्घाटन में सफल हो सका हूँ, अतएव उन सभी टीकाकारों का कृतज्ञ हूँ। यों तो जैमिनी कृत आयुर्दाय-साधन की यह पद्धति अनेक भाषाटीका युक्त फलित-ग्रन्थों में भी छपी है; किन्तु वे मत-विशेष की अनुवाद-मात्र हैं। काशी के अधिकांश पञ्चाङ्गों में प्रति वर्ष यथावत् छपनेवाले एतद्विषयक लेख भी सब एक-से हैं, किसी में कोई विशेषता नहीं; इसी कारण आज के प्रबुद्ध फलितज्ञों के लिए उनका विशेष महत्त्व एवं व्यावहारिक उपयोग नहीं; केवल व्यावसायिक ज्योतिषीगण विशेष दक्षिणा मिलने पर उक्त लेख के सहारे अपनी मान्यतानुसार आयुर्दाय-गणित का कुण्डली में समावेश कर महर्षि जैमिनी के नाम पर उसका गौरव बढ़ा देते हैं। मैं इस फलित-पद्धति के ऊहापोह में न पड़ता, यदि सन् १९७० में जंत्री-सञ्चालक स्वर्गीय बाबू ठाकुर प्रसादजी गुप्त ने इसके लिए मुझे प्रेरित न किया होता। उनकी हार्दिक इच्छा थी कि काशी के प्रचलित पञ्चाङ्गों में फलित-विषयक जो भी महत्त्वपूर्ण शास्त्रीय विषय हों, उन सबको सामान्य-ज्योतिष-प्रेमियों के लाभार्थ अति सरल रूप में, उदाहरण द्वारा भली-भाँति समझाकर जंत्री में प्रकाशित किया जाय ताकि जो लोग अर्थ-संकोच के कारण पञ्चाङ्ग न खरीद सकें, वे केवल इस जंत्री द्वारा पञ्चाङ्गापेक्षित समस्त कार्य सुचारुरूपेण संपादित कर लें! तदनुसार ही मैंने यह लेख तैयार किया था जो स्थानाभाव से सन् '७१ की जंत्री में न छप सकने के कारण सन् १९७२ ई० की जंत्री में प्रकाशित हुआ था। इससे ज्योतिष-जगत् को जो-कुछ लाभ पहुँचेगा, उसका श्रेय उक्त स्वर्गस्थ बाबू साहब को ही है; अस्तु।

महर्षि जैमिनी के मत से आयुर्दाय के ३ भेद होते हैं १—दीर्घायु, २—मध्यायु, ३—अल्पायु। प्रत्येक का निर्णय भी ३ प्रकार से किया जाता है और प्रत्येक प्रकार में दो-दो अधिनायकों का विचार किया जाता है : वे हैं—(१) लग्नेश और अष्टमेश, (२) शनि और चन्द्रमा, (३) लग्न और होरा-लग्न। प्रत्येक प्रकार के दो अधिनायकों में-से दोनों चर-राशि में हों या कोई एक द्विस्वभाव में, दूसरा स्थिर राशि में हो तो जातक की दीर्घायु समझना। यदि दोनों द्विस्वभाव-राशि में हों अथवा कोई एक स्थिर राशि में, दूसरा चर में हो तो मध्यायु समझना। इसके अलावा यदि दोनों स्थिर राशि में हों अथवा कोई एक चर राशि में दूसरा द्विस्वभाव राशि में हों तो अल्पायु समझना। यह सरलता से समझने और उपयोग के लिए आगे चक्र में दिया है—

* आयुर्दाय-निर्णायक-चक्र *

दीर्घायु	मध्यायु	अल्पायु
एक चर में	एक द्विस्वभाव में	एक स्थिर में
दूसरा चर में	दूसरा द्विस्वभाव में	दूसरा स्थिर में
एक स्थिर में	एक चर में	एक चर में
दूसरा द्विस्वभाव में	दूसरा स्थिर मे	दूसरा द्विस्वभाव में

दीर्घायु, मध्यायु और अल्पायु इन तीन आयु-कक्षाओं का निर्णय उपर्युक्त तीन प्रकार से होने के कारण प्रत्येक कक्षा के ३ खण्ड एवं कुल ९ खण्ड होंगे, जिनके वर्ष-मासादि सब विवरण आगे दिये गये हैं। मेष, कर्क, तुला, मकर राशियाँ चर हैं, वृष, सिंह, वृश्चिक, कुम्भ राशियाँ स्थिर तथा मिथुन, कन्या, धनु, मीन द्विस्वभाव राशियाँ हैं। उपर्युक्त तीनों प्रकार से दीर्घायु, मध्यायु या अल्पायु का निर्णय करना चाहिए तथा 'संवादात्प्रामाण्यम्' के अनुसार तीनों या दो प्रकार से जो आये, उसे प्रमाण माने। विसंवाद में यानी तीनों प्रकार से भिन्न-भिन्न आयु आये (किसी से दीर्घायु, किसी से मध्यायु और किसी से अल्पायु आये) तो द्वितीय और तृतीय प्रकारों में-से कौन ग्रहण करना, इसका नियम बतलाते हैं—पितृलाभगे चन्द्रे सति, चन्द्र मन्दाभ्यां यदायुः समागच्छेत तदेव ग्राह्यम् अन्यथा विसंवादे पितृ(लग्न) काल(होरा) लग्नाभ्यामदायुः समागच्छेत तदेव ग्राह्यम्॥ अर्थात् यदि चन्द्रमा लग्न में या सप्तम भाव में पड़ा हो तो द्वितीय प्रकार (चन्द्र शनि की स्थिति) से प्राप्त आयु को प्रमाण माने। यदि चन्द्र लग्न या सप्तम के सिवा अन्य किसी भाव में हो तो तृतीय प्रकार (लग्न और होरालग्न* की स्थिति) से प्राप्त आयु को प्रमाण माने। विसंवाद में योगकर्त्ता चन्द्र के विषय में नियम बतलाने के बाद संवाद की स्थिति में मतैक्यकर्त्ता ग्रह शनि या गुरु हो तो उसके द्वारा होनेवाला कक्षा-ह्रास और कक्षा-वृद्धि का नियम बतलाते हैं—शनियोगहेतो कक्ष्याह्रासः। अन्ये (केनाचार्याः) विपरीतं (विलोम) न कक्ष्याह्रास इति वदन्ति प्रत्युत केनाचार्याः कक्ष्यावृद्धि इति वदन्ति। अर्थात् शनि योग (आयु के त्रिविध भेद) का हेतु (निर्णायक) हो तो कक्षा-ह्रास होता है; इसके विपरीत कुछ आचार्यों के मतानुसार शनि-योग से कक्षा-ह्रास नहीं होता है; बल्कि कुछ के मतानुसार शनि-योग से कक्षा-वृद्धि होती है; किन्तु महर्षि जैमिनी के

* भावलग्न एवं होरालग्न-साधन की बड़ी सरल विधियाँ गत लेख में सोदाहरण प्रकाशित हैं; वहाँ देखिए!

मत से, शनि उच्च का या स्वक्षेत्री न हो तथा अन्यत्र, केवल पापदृष्ट, युक्त न हो; बल्कि शत्रुक्षेत्री नीचास्तादि दोषयुक्त हो तभी कक्षा-ह्रास होता है, अन्यथा नहीं—यह अर्थात्सिद्ध है; (अर्थान्नीचराशौ शत्रुराशौ वा स्थिते शनौ कक्षाह्रासो नान्यत्र ।) इसी तरह आयु के त्रिविध भेद का निर्णायक गुरु हो और वह लग्न या सप्तम में पापयुक्त, दृष्ट न हो तथा अन्यत्र केवल शुभ ग्रह से युत, दृष्ट हो तब कक्षा-वृद्धि होती है (लग्न सप्तमगे गुरौ पापदृग्योग रहिते अन्यत्र केवल शुभ दृग्योगिनौ च कक्षा-वृद्धिः ।) यहाँ 'कक्षा' उपलक्षण है। इससे वस्तुतः कक्षागत 'खण्ड'(श्रेणी) निपात-वृद्धि अभिलक्षित है; एदतर्थ आगे चक्र में जो ९ खण्ड दिये गये हैं, क्रमानुसार उन्हीं का उपयोग करना युक्तियुक्त है। यहाँ प्रश्न उपस्थित होता है कि यदि दीर्घायु के प्रथम खण्ड में कक्षा-वृद्धि का योग अथवा अल्पायु के तृतीय खण्ड में कक्षा-ह्रास का योग बने तो वहाँ ऊर्ध्वाधर खण्डाभाव में यह प्रक्रिया कैसे चरितार्थ होगी ? इस विषय में नये पुराने टीकाकारों के अनेक मत हैं ; उन सबका विवेचन एवं समीक्षा यहाँ सम्भव नहीं। केवल गणितशास्त्रदृष्ट्या एतद्विषयक अपने विचार मैं यहाँ प्रस्तुत करता हूँ। इस शास्त्र से परिचित प्रत्येक व्यक्ति यह भली-भाँति जानता है कि ज्योतिष-गणित में मध्यममान के बगैर स्पष्टमानानयन कथमपि सम्भव नहीं, तदनुसार प्रस्तुत पद्धति में मानव का मध्यम (औसत) आयुष्य १२० वर्ष मान कर उसके स्पष्ट आयुर्दाय के तखमीने (Estimation) का गणितीय प्रयास किया गया है। यद्यपि इससे वर्ष, मास, दिन, घटी, पल, विपल पर्यन्त आयु स्पष्ट होता है; किन्तु पारमार्थिक रूपेण वह इत्थंभूत नहीं है; अर्थात् ठीक उसी वर्ष मास दिन घटयादि पर जातक का प्राणान्त नहीं हो जायेगा; प्रत्युत् यहाँ गणितोपलब्ध आयुर्दाय पूर्वजन्मार्जित कर्मफल-बोधक ग्रहों के योगायोगवशात् वर्तमान जन्म के भोग्य वर्षादि का प्राक्कलन-मात्र है जिसमें केवल जन्माङ्गस्थ शनि, गुरु-कृत ह्रास-वृद्धि ही नहीं, बल्कि वर्तमान जन्म में स्वयं मानवकृत कर्म-जन्य न्यूनाधिक्य होना भी निसर्गसिद्ध एवं शास्त्र-सम्मत है, अन्यथा धर्म-ग्रन्थों में नैतिकता एवं सदाचार के समस्त उपदेश और श्रुतिवाक्य 'शतायुर्वै पुरुषः । पश्येम शरदः शतम्, जीवेम शरदः शतम् ।' इत्यादि व्यर्थ हो जायेंगे। अतः जिस जातक के दीर्घायु १ खण्ड में कक्षा-वृद्धि का योग प्राप्त हो, उसे आयुर्दाय की दृष्टि से 'औसत-मानव' से परे 'अति-मानव' की कोटि का समझना चाहिए। ऐसा व्यक्ति अपने वर्तमान जीवन में नैसर्गिक यम-नियमों के सम्यक् पालन से निर्बाधरूपेण १२० या उससे भी अधिक आयु का उपभोग कर सकते हैं जिसके अनेक प्रमाण देश-विदेश में आज भी अक्सर मिलते रहते हैं।*

* कर्म-पत्री—यदि रामा यदि च रमा, यदि तनयो विनय गुणोपेतः । तनयात्तनयोत्पत्तिः सुरनगरेधिमाधिक्यम् । अर्थात्—जिस पुरुष के पास लक्ष्मी हो उसकी धर्मपत्नी जीवित हो; उसका लड़का विनय गुण-संयुक्त हो, पुत्र के पुत्र हो—अर्थात् जिसके पौत्र हो, ऐसे पुरुष के लिए यहीं साक्षात् वैकुण्ठ है। राजा बलदेवदास बिड़ला रामारमा विनय गुण-सम्पन्न ४ पुत्र, ६ पौत्र और ५ प्रपौत्र छोड़कर गये हैं अर्थात् स्वर्ग-सुख से बहुत अधिक आनन्ददायक स्थान का स्वामित्व भी उनको आसक्त नहीं कर सका।

राजा बिड़ला ने जब अपनी जन्मपत्री किसी ज्योतिषी को दिखलाया, तब ज्योतिषी ने उनकी आयु ५६ वर्ष बतलाई। मृत्युञ्जय-जप की भी सलाह न दी। मृत्यु अवश्यम्भावी है, यही कहा। ज्योतिषी के संवाद ने उन्हें प्रेरित किया और ५५ वर्ष की अवस्था में वे काशी आ गये। ५६ वाँ वर्ष बीत गया। तब उन्होंने ज्योतिषी महाराज को फिर जन्मपत्री दिखलाई। उन्होंने ६५ वर्ष की अवधि पक्की रखी। ६५ वाँ वर्ष भी बीत गया। तब ज्योतिषीजी ने फिर जन्मपत्री देखी। इस बार राजा बिड़ला ने कहा—"ज्योतिषी जी ! जन्म-पत्री देखने का काम तो आप जानते हैं; पर हमारी कर्म-पत्री आपने नहीं देखी। कर्म-पत्री जन्म-पत्री से बहुत बढ़कर है; कर्म-पत्री का फल भगवान् के हाथ में है।" इस प्रकार फलित ज्योतिष से वे उपराम हो गये थे। कर्म-पत्री के चमत्कार ने उन्हें जीवित रखा।

—स्थानीय 'दैनिक आज' में राजा बलदेव दासजी बिड़ला के काशी-लाभ पर प्रकाशित संस्मरण से उद्धृत।
[अनावधानतावश तारीख नहीं नोट कर सका, अखबार की कतरन सुरक्षित है।—लेखक]

उड़ीसा में १२० वर्षीय वृद्ध का देहान्त—कटक, १६ दिसम्बर '६८—संत सेठी नामक व्यक्ति को जो उड़ीसा में सब से बड़ी आयु के व्यक्ति समझे जाते थे, पुरी जिले के बल्ली पटना नामक स्थान में १२० वर्ष की आयु में मृत्यु हो गयी है। श्री सेठी मृत्यु-पर्यन्त स्वस्थ तथा प्रसन्न थे। उड़ीसा में जो १८६५-६६ में भीषण अकाल पड़ा था और जिसमें एक लाख आदमी मर गये थे तथा १८५७ के गदर की अनेक बातें उन्हें अभीतक याद थीं।—नाफेन (स्थानीय 'दैनिक आज')।

१२० वर्षीय महात्मा का निधन—बैतालपुर (देवरिया) उत्तर प्रदेश ५ मई '७०-स्थानीय श्रीसत्यनारायण संस्कृत आदर्श महाविद्यालय बरारी के संस्थापक, १२० वर्षीय वयोवृद्ध श्रीसरयूदास वैष्णव का देहान्त गत् ३ मई को ३ बजे दिन में श्रीहनुमानजी की मूर्ति के समक्ष अचानक हृदय-गति रुक जाने से हो गया। उक्त समाचार के सुनते ही बैतालपुर बाजार के लोग मन्दिर की तरफ दौड़ पड़े। आपने १० वर्ष की अवस्था में श्री-सम्प्रदाय के वैष्णव रघुबरजी महाराज से दीक्षा ग्रहण की थी। बाबाजी के पार्थिव शरीर की शोभा-यात्रा स्थानीय संस्कृत-विद्यालय से प्रारम्भ हुई। देवरिया नगर का भ्रमण करते हुए १२ बजे रात्रि में बरहज में सरयू की पावन धारा के मध्य उनके

ऐसी स्थिति में दीर्घायु के प्रथम खण्ड में कक्षा-वृद्धि का योग बन जाने पर आगे स्पष्टायु गणित की आवश्यकता ही नहीं रह जाती। इसी तरह अल्पायु के तृतीय खण्ड में कक्षा-ह्रास का योग बनने पर वहाँ तृतीय खण्ड-परक स्पष्टायु से भी पहले किसी प्रबलारिष्ट या मारक-ग्रहों की दशान्तरदशा में जातक के अकाल-मृत्यु की सम्भावना समझनी चाहिए एवं उसके निवारणार्थ शास्त्रोक्त महा-मृत्युञ्जयादि प्रयोगों का निर्देश ज्योतिषी को कर देना चाहिए। अदृष्ट के आधार को लेकर जो गणित प्रवृत्त होता है, उसका परिणाम सम्भावनात्मक होता है, सर्वथा निश्चयात्मक नहीं—यह तथ्य किसी भी बुद्धिमान को समझने में कठिनाई नहीं होनी चाहिए ; अस्तु। अब हम फलित ज्योतिषानुरागियों के हितार्थ इस पद्धति का गणित-विवरण एवं उदाहरण यहाँ दे रहे हैं—

लेखारम्भ में कथित आयुर्दाय के १—दीर्घायु, २—मध्यायु, ३—अल्पायु की त्रिविध कक्षाओं के वर्षमान ३२, ३६, ४० में से प्रत्येक को क्रमशः १, २, ३ से गुण दें तो इन त्रिविध कक्षाओं के भी तीन-तीन खण्ड के वर्षमान हो जायेंगे, जिनमें १ से गुणित वर्ष-संख्या पूर्वोक्त एक प्रकार से आगत तीनों कक्षाओं के एक-एक खण्ड का वर्षमान होगा। इसी तरह दो और तीन से गुणित वर्ष-संख्यायें भी क्रमशः दो और तीन प्रकार से आगत प्रत्येक कक्षा के दूसरे-तीसरे खण्डों के वर्षमान होंगे; जैसा 'आयु-खण्ड-चक्र' में सर्वथा स्पष्टांकित है—

आयु-खण्ड-चक्र	कक्षा-आयु	प्रकार	खण्ड	वर्षमान
	प्रथम कक्षा दीर्घायु	तीनों प्रकार से	१	१२०
		दो प्रकार से	२	१०८
		एक प्रकार से	३	९६
	द्वितीय कक्षा मध्यायु	तीनों प्रकार से	१	८०
		दो प्रकार से	२	७२
		एक प्रकार से	३	६४
	तृतीय कक्षा अल्पायु	तीनों प्रकार से	१	४०
		दो प्रकार से	२	३६
		एक प्रकार से	३	३२

आयुर्दायक ग्रहों के राश्यारम्भ में रहने से वे स्व-कक्षा के वर्षमान (३२, ३६ या ४० के) तुल्य आयु देते हैं तथा राश्यन्त में रहने से वे कुछ भी आयु नहीं देते। इस तरह राशि के आरम्भ से अन्त तक के ३० अंशों में कक्षा-वर्ष का क्रमिक ह्रास होता है। अतः राश्यन्तर्गत ग्रह-भोगांश के वर्षादि-ज्ञान के लिए अनुपात करना चाहिए कि यदि ३० अंश में कक्षा-वर्ष तो ग्रह के भोगांश में क्या ? यह अनुपात प्रत्येक आयुर्दायक ग्रह-भोगांश के लिए अलग-अलग न कर सम्मिलित रूपेण कर लेना चाहिए—तदर्थ सब आयुकारक ग्रहों के अंश, कला, विकला को जोड़कर योगफल में ग्रहों की संख्या का भाग दें एवं लब्धि अंशादि को उपर्युक्त अनुपात द्वारा वर्ष, मासादि में बदल लें। यह क्रिया निम्न सूत्रों से बड़ी सरलतापूर्वक सम्पन्न की जा सकती है—

प्रथम कक्षा-वर्ष ४० के लिए सूत्र—अंश × $\frac{४}{३}$=वर्षादि, कला × $\frac{४}{१५}$=मासादि, विकला × $\frac{३}{१५}$=दिनादि।

द्वितीय कक्षा-वर्ष ३६ के लिए सूत्र—अंश × $\frac{६}{५}$=वर्षादि, कला × $\frac{६}{२५}$=मासादि, विकला × $\frac{३}{२५}$=दिनादि।

तृतीय कक्षा-वर्ष ३२ के लिए सूत्र—अंश × $\frac{१६}{१५}$=वर्षादि, कला × $\frac{१६}{७५}$=मासादि, विकला × $\frac{८}{७५}$=दिनादि। सूत्र से प्राप्त वर्ष मासादि को स्वकक्षा सम्बन्धी खण्ड की वर्ष-संख्या में घटा दें तो शेष स्पष्ट-आयु के वर्ष मासादि होंगे। उपर्युक्त गणित, क्रिया को भली-भाँति समझ लेने के लिए यहाँ उदाहरण भी दिए जा रहे हैं—

(१) उदाहरण—इस जन्माङ्ग का पहले आयुर्दाय-निर्णायक-चक्र द्वारा विचार करें—

पार्थिव शरीर का प्रवाह किया गया। आपका समस्त जीवन सार्वजनिक सेवा में व्यतीत हुआ। आपकी मृत्यु से चारो तरफ शोक की लहर छा गई है। आपने कई शिक्षा-संस्थाएँ, कूप और जलाशय का निर्माण कराया था।

—(दैनिक 'आज')।

१३३ वर्षीय किसान की मृत्यु—टिहरी (डाक से)। बिलम्ब से प्राप्त समाचार के अनुसार सीमान्त जिला उत्तर काशी के आराकोट बगाण क्षेत्र के ग्राम किराणू के निवासी किसान श्रीशेरसिंह की १३३ वर्ष की आयु में देहांत हो गया। उक्त किसान के दीर्घजीवी होने का मुख्य कारण उसके दैनिक भोजन में दूध, मट्ठा और सुरा का नियमित रूप से सेवन करना था। वह मृत्यु के समय ही जीवन में पहली बार अन्तिम रूप से बीमार पड़ा। मृत्यु से दो वर्ष पूर्व उसकी आँखे कुछ कमजोर हो गई थीं; फिर भी वह किसानी करने की पूरी क्षमता रखता था। शेरसिंह की चार पत्नियाँ थीं। उनकी चौथी पत्नी से १२० वर्ष की आयु में लड़की का जन्म हुआ था। चौथी पत्नी की आयु इस समय लगभग ५० वर्ष है और लड़की १३ वर्ष की है। (दैनिक 'आज')

१४५ वर्ष की अवस्था में निधन—मास्को, १८ मई '७१—संवाद-समिति 'तास' की सूचना है कि काकेशिया के १४५ वर्षीय कृषक शिरान गैसेनोव का कल देहान्त हो गया। अजर बैजान गणराज्य का उक्त कृषक जीवन के अन्तिम क्षण तक सक्रिय था तथा ग्राम-परिषद् में वह कृषि-आयोग की अध्यक्षता भी कर चुका था। दीर्घायु किसान के रूप में गैसेनोव अपने आस-पास के क्षेत्र में काफी प्रसिद्ध था। —(दैनिक 'आज')

जन्माङ्ग
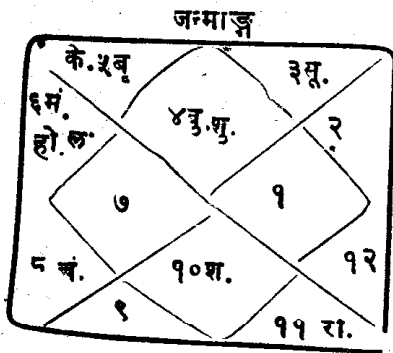
लग्नेश चन्द्र स्थिर (वृश्चिक ८) राशि में अष्टमेश शनि चर (मकर १०) राशि में, = मध्यमायु।

शनि चर (मकर १०) राशि में, चन्द्र स्थिर (वृश्चिक ८) राशि में मध्यमायु।

जन्म-लग्न चर (कर्क ४) राशि में, होरा लग्न द्विस्वभाव (कन्या ६) राशि में = अल्पायु।

'संवादात्प्रामाण्यम्' के अनुसार दो प्रकार से मध्यमायु तथा 'आयुखण्ड-चक्र' के द्वारा द्वितीय कक्षा-मध्यमायु का द्वितीय-खण्ड (७२ वर्ष) निश्चित हुआ। यहाँ आयुर्दायक ४ हैं: १-लग्नेश, २-अष्टमेश, ३-शनि और ४-चन्द्र। अतः चारों के अंशादि का योग किया—

लग्नेश (चन्द्र)	१७°।२९'।४८"
अष्टमेश (शनि)	१५।१३।५५
शनि	१५।१३।५५
चन्द्र	१७।२९।४८

योग अंशादि ६५।२७।२६ हुआ, इसमें आयुकारक ग्रह-संख्या ४ का भाग दिया तो लब्धि-अंशादि १६°।२१'।५१"।३०"' हुए, जिसे वर्षादि में परिवर्तित करने के लिए—अंश १६° × ६/५ = ९६/५ = ९६ ÷ ५=१९ वर्ष शेष १×१२=१२÷५=२ मास, शेष २×३०=६०÷५=१२ दिन, कला २१' × ६/२५=१२६/२५=१२६÷२५=५ मास, शेष १×३०=३०÷२५=१ दिन, शेष ५×६०=३००÷२५=१२ घटी, विकला ५१½=१०३/२ × ३/२५=३०९/५०=३०९÷५०=६ दिन, शेष ९×६०=५४०÷५०=१० घटी, शेष ४०×६०=२४००÷५०=४८ पल।

अर्थात्		वर्ष	मास	दिन	घटी	पल
१६	अंश=	१९	२	१२	०	०
२१	कला=	०	५	१	१२	०
५१½	विकला=	०	०	६	१०	४८
योग वर्षादि		१९	७	१९	२२	४८ को

मध्यमायु द्वितीय कक्षा के द्वितीय खण्ड की वर्ष-संख्या ७२ में घटाया तो शेष वर्षादि ५२।४।१०।३७।१२ बचे, अतः यही ५२ वर्ष ४ मास १० दिन ३७ घटी १२ पल जातक की स्पष्ट-आयु निर्णीत हुई।

(२) उदाहरण—जन्माङ्ग
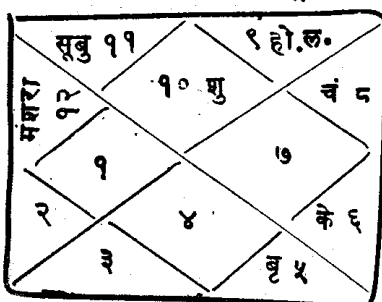
लग्नेश शनि द्विस्वभाव (मीन १२) राशि में, अष्टमेश सूर्य स्थिर (कुम्भ ११) राशि में = दीर्घायु।

शनि द्विस्वभाव (मीन १२) राशि में, चन्द्र स्थिर (वृश्चिक ८) राशि में = दीर्घायु।

जन्म-लग्न चर (मकर १०) राशि में, होरा-लग्न द्विस्वभाव (धनु ९) राशि में=अल्पायु।

यहाँ दो प्रकार से दीर्घायु सिद्ध होने के कारण प्रथम कक्षा के द्वितीय खण्ड का १०८ वर्षमान प्राप्त होता है। आयुकारक ४ हैं। उनके अंशादि हैं—

लग्नेश (शनि)	१६°।१४'।५६"
अष्टमेश (सूर्य)	३।०।४
शनि	१६।१४।५६
चन्द्र	१८।५४।४०

योग-फल अंशादि ५४।२४।३६ हुए। इसमें आयुकारक ग्रह-संख्या ४ का भाग दिया तो लब्धि अंशादि १३°।३६'।९" हुए, जिसे वर्षादि में परिवर्तित करने के लिए अंश १३ × ४/३=५२/३=५२÷३=१७ वर्ष, शेष १×१२ =१२÷३=४ मास, कला ३६ × ४/२५=४८/५=४८÷५=९ मास, शेष ३×३०=९०÷५=१८ दिन, विकला ९ × २/२५=६/५=६÷५=१ दिन, शेष १×६०=६०÷५=१२ घटी।

अर्थात्		वर्ष	मास	दिन	घटी
१३	अंश=	१७	४	०	०
३६	कला=	०	९	१८	०
९	विकला=	०	०	१	१२
योगफल		१८	१	१९	१२ वर्षादि

प्राप्त हुए। प्रस्तुत उदाहरण में आयु-कारक ग्रहों में शनि है तथा वह पाप-ग्रह राहु, मंगल से युत एवं केतु से दृष्ट ही नहीं, बल्कि शत्रु-क्षेत्री भी है। अतः यहाँ कक्षा-ह्रास की स्थिति उत्पन्न होती है। इसलिए दीर्घायु द्वितीय खण्ड के बजाय अधस्थ तृतीय खण्ड के वर्ष-मान ९६ में उपर्युक्त वर्षादि १८।१।१९।१२ को घटाया तो शेष ७७ वर्ष १० मास १० दिन ४८ घटी स्पष्ट आयु जातक की सिद्ध हुई।

उपर्युक्त सूत्रों के गणित में गुणा भाग के श्रम की बचत के लिए आगे सारणियाँ भी दी जा रही हैं जिनके अंशादि फलों के योग-मात्र से वर्षादि ज्ञात हो जायेंगे। जैसे, प्रस्तुत उदाहरण में दीर्घायु अंशादि फल-सारणी के द्वारा भी १३ अंश का फल वर्षादि १७।४, ३६ कला का मासादि ९।१८ तथा ९ विकला का दिनादि १।१२ उपलब्ध होगा, जिनका यथा रीति योग करने से वर्षादि १८।१।१९।१२ होंगे। सारणी के अभाव में गणित सम्पन्न करने के लिए ही उपर्युक्त सूत्र दिये गये हैं, अन्यथा सारणी के द्वारा बड़ी सरलता से फल वही प्राप्त होगा जो सूत्रों के द्वारा; क्योंकि उन्हीं सूत्रों के आधार पर सारणियाँ बनायी गयी हैं।

१. दीर्घायु अंश-फल-सारणी

	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
	४०	१	२	४	५	६	८	९	१०	१२	१३	१४	१६	१७	१८	२०	२१	२२	२४	२५	२६	२८	२९	३०	३२	३३	३४	३६	३७	३८	४०
	०	४	८	०	४	८	०	४	८	०	४	८	०	४	८	०	४	८	०	४	८	०	४	८	०	४	८	०	४	८	०

कला-फल-सारणी

आ	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मास	०	०	०	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८
दिन	८	१६	२४	२	१०	१८	२६	४	१२	२०	२८	६	१४	२२	०	८	१६	२४	२	१०	१८	२६	४	१२	२०	२८	६	१४	२२	०
आ	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
मास	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१६
दिन	८	१६	२४	२	१०	१८	२८	४	१२	२०	२८	६	१४	२२	०	८	१६	२४	२	१०	१८	२६	४	१२	२०	२८	६	१४	२२	०

विकला और प्रतिविकला-फल-सारणी

प्र.वि.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
घटी	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	४
पल	८	१६	१४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०
प्र.वि.	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
घटी	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८
पल	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०

२. मध्यायु-अंश-फल-सारणी

	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
	३६	१	२	३	४	६	७	८	९	१०	१२	१३	१४	१५	१६	१८	१९	२०	२१	२२	२४	२५	२६	२७	२८	३०	३१	३२	३३	३४	३६
	०	२	४	७	९	०	२	४	७	९	०	२	४	७	९	०	२	४	७	९	०	२	४	७	९	०	२	४	७	९	०
	०	१२	२४	६	१८	०	१२	२४	६	१८	०	१२	२४	६	१८	०	१२	२४	६	१८	०	१२	२४	६	१८	०	१२	२४	६	१८	०

कला-फल-सारणी

	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
	०	०	०	०	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	६	७
	७	१४	२१	२८	६	१३	२०	२७	४	१२	१९	२६	३	१०	१८	२५	२	९	१६	२४	१	८	१५	२२	०	७	१४	२१	२८	६
	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१४	१४
	१३	२०	२७	४	१२	१९	२६	३	१०	१८	२५	२	९	१६	२४	१	८	१५	२२	०	७	१४	२१	२८	६	१३	२०	२७	४	१२
	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०

विकला और प्रतिविकला-फल-सारणी

प्र.वि.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
घटी	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३
पल	७	१४	२१	२८	३६	४३	५०	५७	४	१२	१९	२६	३३	४०	४८	५५	२	९	१६	२४	३१	३८	४५	५२	०	७	१४	२१	२८	३६
विप.	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०
प्र वि.	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
घटी	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	६	६	७	७
पल	४३	५०	५७	४	१२	१९	२६	३३	४०	४८	५५	२	९	१६	२४	३१	३८	४५	५२	०	७	१४	२१	२८	३६	४३	५०	५७	४	१२
विप	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०

३. अल्पायु अंश-फल-सारणी

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
वर्ष	३२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मास	०	०	१	२	३	४	४	५	६	७	८	८	९	१०	११	०	०	१	२	३	४	४	५	६	७	८	८	९	१०	११
दिन	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६

कला-फल-सारणी

कला	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२९	२९	३०
मास	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	६	६
दिन	६	१२	१९	२५	२	८	१४	२१	२७	४	१०	१६	२३	२९	६	१२	१८	२५	१	८	१४	२०	२७	३	१०	१६	२२	२९	५	१२
घटी	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०
कला	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
मास	६	६	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२
दिन	१८	२४	१	७	१४	२०	२६	३	९	१६	२२	२८	५	११	१८	२४	०	७	१३	२०	२६	२	९	१५	२२	२८	४	११	१७	२४
घटी	२४	२८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	५६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०

विकला और प्रतिविकला-फल-सारणी

विक.	प्र.वि.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
दिन	घटी	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३
घटी	पल	६	१२	१९	२५	३२	३८	४४	५१	५७	४	१०	१६	२३	२९	३६	४२	४८	५५	१	८	१४	२०	२७	३३	४०	४६	५२	५९	५	१२
पल	विपल	२४	२८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०
विक.	प्र.वि.	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
दिन	घटी	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६
घटी	पल	१८	२४	३१	३७	४४	५०	५६	३	९	१६	२२	२८	३५	४१	४८	५४	०	७	१३	२०	२६	३२	३९	४५	५२	५८	४	११	१७	२४
पल	विपल	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०

आयुर्दाय के अनुभूत योग—रहै लग्नपति बहु बली शुभ खेचर से दृष्ट । साठ वर्ष सो जीवई मेटैं सर्व अरिष्ट ॥ तनु ते, शनि ते पूर्ण शशि, बुध गुरु भार्गव केन्द्र । रहै लग्न गुरु सो जियै सत्तर वर्ष नरेन्द्र ॥ रहै चन्द्र-सुत बहु बली शुभ खग कण्टक[1] माँहि । खेटहीन अष्टम भवन जीवै त्रिंश-समाँहि[2] ॥ लहै निधन गृह[3] सौम्य ग्रह सौम्य चतुष्टय बासि । चत्वारिंशत[4] वर्ष सो नर जीवैं सुखभासि ॥ चन्द्र रहै निज भवन मँह तनु मद सौम्य न भोग । साठ वर्ष सो जन जियै यह भाषैं बुध लोग ॥ शुभ ग्रह पञ्चम नवम गृह सुरगुरु लग्न कुलीर । असी वर्ष सो जन जियै, कहैं देव चित धीर ॥ अष्टमपति तनु मँह रहै, तनु-पति अष्टम भाव । क्रूर-दृष्ट चौबीस बरष तासु अयुर्दा गाव ॥ लग्नाष्टम-पति मृतु-भवन, क्रूर विलोकति होइ । वर्ष सताइस जीवनो तासु कहै सब कोइ । खलयुत गुरु तनु शशि बलहीना । अष्टम गृह मँह पाप मलीना ॥ आयुर्बल द्वाविंशति साला । भाषै ताको बुद्धि विशाला । खल ग्रह हीन लग्न औ' चन्दा । लग्ने गुरु त्रिषडाय[5] गमन्दा । खग-बिहीन मृतुगृह, शुभ केन्द्रा । सत्तरि वर्ष आयु कहि ज्ञेन्द्रा ॥ रहै जीव तनु कर्कट रासी । शुक्र वीर्ययुत केन्द्र निवासी । जीवै सो मानव सत वर्षा । सुत संपतियुत सदा सहर्षा । कर्क लग्न तनुगत बागीशा । निज गृह केन्द्रे सौम्य कवीशा । राहु शनैश्चर थिर त्रिषडाया । जीवन तासु वर्ष शत गाया ॥ नवम भवन निवसै जो मंदा । वीर्यवान तनु-मंदिर चंदा ॥ रहै चंद्र बाला भव धर्मा । सो जीवै शत वर्ष सुकर्मा । लग्न चन्द्र ते अष्टम भावा । होइ खेट को बास अभावा । कविगुरु केन्द्र रहै बलवंता । कहि पूर्णायु तासु मतिमंता ॥ तनु-पति गुरु केन्द्रालय राजै । कोण भवन महँ पाप समाजै ॥ वर्ष एक से बीस प्रमाना । आयुर्बल तेहि केर बखाना । इन्दु रहै आपोक्लिम[6] ग्रामी । आपोक्लिम गृह मँह तनु-स्वामी ॥ लग्न चंद्र को देखैं पापा । जीवै बत्तिस वर्ष सतापा ॥ गुरु व्यय कंटक[1] पाप समाजा । तनु पति नव रिपु सहज विराजा । तीनि वर्ष आयुर्बल ताको । रक्षक मृत्युञ्जय जप वाको ॥

मृत्यु-समय-विचार— जिन अरिष्ट योगों में मरण नहीं कथित है, उन अरिष्ट योग-कारक ग्रहों में जो ग्रह बली हो, वह जन्म-समय जिस राशि में स्थित हो, उस राशि में जब चन्द्रमा आवे, तब कहना । (२) जन्म-काल में चन्द्रमा जिस राशि नक्षत्र में स्थित हो, जब फिर उसी राशि नक्षत्र में गोचर का चन्द्रमा आता हो, तब मरण कहना अथवा (३) चन्द्रमा जब लग्न राशि में आता है, तब मरण कहना । (४) वर्ष के भीतर जिस योगयुक्त स्थान में जाकर चन्द्रमा बली हो एवं पापग्रहों द्वारा देखा जाता हो, तब मरण कहना चाहिए; किन्तु जबतक आयु का निर्णय न हो सके तब तक अन्य विचार करना निरर्थक है ; इस वास्ते आयु का प्रथम विचार कर फिर मृत्यु-काल कहे ।

---

(१) १,४,७,१० भाव । (२) ३० वर्ष । (३) अष्टम भाव । (४) ४० वर्ष । (५) ३,६,११ भाव । (६) ३,६,९,१२ भाव

※ यात्रा-मुहूर्त-विचार ※

यात्रा-मुहूर्त के लिए दिशा-शूल, नक्षत्र-शूल, योगिनी, भद्रा, चन्द्रमा, तारा, शुभतिथि, शुभनक्षत्र इत्यादि का विचार किया जाता है।

शुभ तिथि—भद्रादि दोषरहित २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, तथा कृष्णपक्ष की प्रतिपदा।

शुभ नक्षत्र—अश्विनी, मृग, पुन, पुष्य, हस्त अनु, श्रवण, धनि, रेवती।

सर्व दिग्गमन-नक्षत्र—अश्विनी, पुष्य, अनुराधा और हस्त।

मध्यम नक्षत्र—रोहि, तीनों उत्तरा, तीनों पूर्वा., ज्ये.,

श्रेष्ठ चौघड़िया—अमृत, चर, लाभ और शुभ।

शुभ होरा—चन्द्र, बुध, गुरु, और शुक्र का होरा।

जन्म-राशि से शुभाशुभ चन्द्र—

दूजे तीजे पाँचवें, सप्तम दसवें जोई।
एकादश ये शुभ कहैं, मध्यम नेष्ट सुनोई॥
षष्ठ जन्म अरु नवम जो मध्यम जानहु मीत।
अष्टम चौथे बारहें सब राशिन को भीत॥

शुभ चन्द्र—जन्म-राशि से गिनने पर १, ३, ६, ७, १०, ११वीं राशि का चन्द्र शुभ होता है। इसके अलावा शुक्लपक्ष में २, ५, ९ वीं राशि का भी चन्द्र शुभ होता है।

शुभ तारा—जन्म-नक्षत्र से दिन-नक्षत्र तक गिनने पर जो संख्या आये, उसमें ९ से भाग दें; शेष १, २, ४, ६, ८ ० बचे तो शुभ है।

यात्रा में शुभाशुभ लग्न—कुम्भ या कुम्भ के नवांश में यात्रा कभी न करे। शुभ लग्न वह है जिसमें १, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभग्रह और ३, ६, १०, ११, में पापग्रह हों। अशुभ लग्न वह है जिससे चन्द्रमा १, ६, ८, १२वें, अथवा किसी भी ग्रह से युत हो। शनि १०वें, शुक्र ७वें, गुरु ८वें, अस्तमित बुध १२वें, लग्नेश ६, ७, ८, १२वें हो।

दिशा(वार)-शूल—सोम सनीचर पुरब न चालू। मंगल बुध उत्तर दिसि कालू॥ रबी सुक्र जो पच्छिम जाय। हानि होय पथ सुख नहिं पाय॥ बीफे दक्खिन करे पयाना। फिर नहिं समझे ताको आना॥

सोम शनि को पूर्व, सोम गुरु को अग्नि-कोण, गुरु को दक्षिण, रवि शुक्र को नैऋत्य और पश्चिम, मंगल को वायव्य, बुध को उत्तर, बुध शुक्र को ईशान-कोण में वार-(दिशा)-शूल होने के कारण यात्रा न करें।

काल-राहु का वास—शनिवार को पूर्व में, शुक्र को अग्नि कोण, गुरुवार को दक्षिण, बुध को नैऋत्य, मंगल को पश्चिम, सोमवार को वायव्य, रविवार को उत्तर दिशा एवं ईशान कोण में कालराहु का वास रहता है। सम्मुख (यात्रा की) दिशा में कालराहु नेष्ट है। अतः जिस वार को यात्रा की दिशा में कालराहु का वास हो, उसे त्याग दे।

नक्षत्र-शूल—पूर्व में ज्ये., पू.षा., उ.षा., दक्षिण में विशाखा, श्रवण, पू.भा., पश्चिम में रो., पुष्य, मूल, उत्तर में पू.फा., उ.फा., हस्त, विशाखा नक्षत्र-शूल हैं; यात्रा-दिशा के शूल नक्षत्रों में कभी यात्रा न करें। दक्षिण दिशा की यात्रा में पञ्चक नक्षत्र-धनि., शत., पू. भा., उ. भा., रेवती वर्जित हैं।

योगिनी-वास की तिथियाँ—१,९ को पूर्व में, ३, ११ को अग्नि-कोण, ५,१३ को दक्षिण, ४,१२ को नैऋत्य, ६, १४ को पश्चिम, ७,१५, को वायव्य, २,१० को उत्तर, ८, ३० को ईशान में योगिनी-वास रहता है; यात्रा में सम्मुख तथा दाहिने (दिशा की) योगिनी अशुभ होती है, बायें और पीछे की योगिनी शुभ होती हैं। युद्ध-यात्रा में बायें और सम्मुख योगिनी त्याज्य है।

चन्द्र-दिशा—यात्रा में चन्द्रमा सम्मुख या दाहिने (दिशा में) शुभ होता है। पीछे होने से मृत्यु और बायीं ओर होने से हानि होती है। सम्मुख लाभद चन्द्रमा, दक्खिन सुभ सुख जान। पीछे सोक सँताप है, बायें धन-हर मान॥ चन्द्रमा की दिशा उसकी तात्कालिक राशि से जानी जाती है यथा—मेष सिंह धनु पूरब चंदा। दक्खिन कन्या वृष मकरंदा। पच्छिम कुम्भ तुलायो मिथुना। उत्तर कर्कट वृश्चिक मीना॥

अर्थात्—मेष, सिंह और धनु राशि का चन्द्रमा पूर्व में, वृष, कन्या और मकर राशि का दक्षिण, मिथुन तुला और कुम्भ राशि का पश्चिम तथा कर्क, वृश्चिक और मीन राशि का चन्द्रमा उत्तर में रहता है।

समय-शूल—उषःकाल में पूर्व, गोधूलि में पश्चिम, अर्धरात्रि में उत्तर और मध्यान्ह-काल में दक्षिण को नहीं जाना चाहिए।

प्रत्येक दिशा को यात्रा में अवश्यमेव वर्जनीय तिथि वारादि को आगे चक्र में एकत्र दिया जा रहा है ताकि प्रिय पाठकगण सरलता और शीघ्रतापूर्वक यात्रा का शुद्ध मुहूर्त स्वतः निकाल सकें।

नोट—अग्नि, नैऋत्य, वायव्य और ईशान विदिशाओं के लिए नक्षत्र-शूल, चन्द्र-राशियों और समय-शूल का अलग से उल्लेख नहीं मिलता। अतः "आग्नेया पूर्वदिज्ञेया दक्षिण दिक्च नैऋता। वायवी पश्चिमादिक् स्यादेशानी च तथोत्तरा" इस वचनानुसार अग्नि-कोण के लिए पूर्व, नैऋत्य के लिए दक्षिण, वायव्य के लिए पश्चिम, ईशान के लिए उत्तर दिशा के नक्षत्र-शूल, चन्द्र-राशियों और समय-शूल को ही ग्रहण करना चाहिए।

दिशा स्वामी	वार-शूल	काल-राहु का वास	नक्षत्र-शूल	सम्मुख और दक्षिण योगिनी-वास की तिथियाँ	पृष्ठ और वाम चन्द्र की राशियाँ	समय-शूल
पूर्व सूर्य	श. सो.	श.	ज्ये. पू. षा उ. षा.	१—९ ५—१३	मि.तु.कुं. क बृ.मी.	उष-काल
अग्नि शुक्र	सो गु.	शु.	,,	३—११ ४—१२	,,	,,
दक्षिण मंगल	गु.	गु.	वि.श्र.ध. श.पू.भा. उ.भा.रे.	५—१३ ६—१४	क.बृ.मी. मे.सि.ध.	मध्या.
नैऋत्य के. रा.	र. शु.	बु.	,,	४—१२ ७—१५	,,	,,
पश्चिम शनि	र. शु.	मं.	रो. पुष्य. मू.	६—१४ २—१०	मे.सि.ध. बृ.कं.म.	गोधूलि
वायव्य चंद्र	मं.	सो.	,,	७—१५ ८—३०	,,	,,
उत्तर बुध	मं. बु.	र.	पू.फा.उ. फा.ह.वि.	२—१० १—९	बृ.कं.म. मि.तु.कुं.	अर्धरा.
ईशान गुरु	बु. शु.	,,	,,	८—३० ३—११	,,	,,

यात्रा-समय लग्न-विचार—

दहिने सम्मुख लग्न जो, होई सिद्ध सब काज ।
बायें मध्यम जानिये, पृष्ठे महा अकाज ।।
जौन लग्न में रवि तपै, ताको यहै विचार ।
पूर्व अग्नि तामे चलै, सो ह्वै अतिहि ख्वार ।।

लग्न के दाहिने, सम्मुखादि का विचार चन्द्रमा की ही भाँति करना अर्थात् जिन राशियों में चन्द्रमा जिस दिशा में रहता है, उन्हीं राशियों का लग्न भी उस दिशा में रहता है । लग्न में सूर्य हो तो पूर्व एवं अग्निकोण की दिशा में यात्रा न करे ।

प्रस्थान-विधान—यदि कहीं जरूरी कारणों से यात्रा-मुहूर्त में न जा सकें तो उसी मुहूर्त में ब्राह्मण जनेऊ-माला, क्षत्रिय शस्त्र, वैश्य शहद-घी, शूद्र फल को अपने वस्त्र में बाँधकर किसी के घर में व नगर से बाहर जाने की दिशा में प्रस्थान रक्खे । उपर्युक्त चीजों के बजाय मन की सबसे प्यारी वस्तु को भी प्रस्थान में रख सकते हैं ।

यात्रा के पहले त्याज्य वस्तुएँ—यात्रा के तीन दिन पहले दूध, पाँच दिन पहले हजामत, तीन दिन पहले तेल, सात दिन पहले मैथुन त्याग देना चाहिए । यदि इतना न हो सके तो कम-से-कम एक दिन पहले तो ऊपर की सब त्याज्य वस्तुओं को अवश्य ही छोड़ देना चाहिए ।

यात्रा के पहले ग्राह्य वस्तुएँ—रवि को पान सोम को दर्पण । मंगल को गुड़ करिये अर्पण ।। बुधे धनिया, बीफै जीर । सुक्र कहै मोहि दही की पीर ।। कहै सनो मैं अदरख पावौं । सुख-संपति निहचय घर लावौं ।। रवि को पान खाकर, सोम को शीशे में मुँह देखकर, मंगल को गुड़, बुध को धनिया, गुरु को जीरा, शुक्र को दही और शनि को आदी खाकर यात्रा करने से शुभ होता है ।

यात्रा सम्बन्धी विशेष विचार—अभीष्ट कार्य की सिद्धि के लिए एक स्थान से किसी अन्य स्थानविशेष में जाने को यात्रा कहते हैं । वह यात्रा सामान्य, विशिष्ट भेद से दो प्रकार की होती है । इस लक्षण से विशिष्ट कार्य के लिए विशिष्ट यात्रा में अधिक शुद्ध मुहूर्त की आवश्यकता होती है । सामान्य यात्रा में यथासम्भव अनिवार्य दोष रहित समय विचार लेना चाहिए । यद्यपि विवाह और यात्रा के लिए आचार्यों ने कितने ही गुण-दोषों का विवेचन किया है तथापि आवश्यकतानुसार यथासम्भव दोषों के परिहारादि से भी निर्वाह बताये गये हैं; तदनुसार अनुकूल समय में मनःशुद्धि से यात्रा मुहूर्त का उपयोग किया जाता है । यहाँ यात्राविषयक कुछ विशेष विचार दिये जाते हैं—

(१) जन्म राश्येश, जन्म-लग्नेश तथा वर्तमान दशापति और शुक्र के अस्त रहने पर यात्रा नहीं करनी चाहिए ।

(२) गुरु शुक्र के अस्त रहने पर पहली तीर्थ-यात्रा नहीं करनी चाहिए ।

(३) यात्रा में सम्मुख और दाहिना चन्द्रमा शुभ होता है । चन्द्रमा के बायें और पीछे रहने पर यात्रा नहीं होती; किन्तु सर्व दिग्गमन-नक्षत्र में चन्द्र-दोष नहीं लगता । इन नक्षत्रों में हर दिशा की यात्रा होती है ।

(४) दिक्शूल में यात्रा भय, कष्ट और अनर्थप्रदा होती है । इसलिए यात्रा में दिशा-शूल वर्जित करना ही चाहिए; किन्तु जहाँ एक ही दिन में यात्रा कर गन्तव्य स्थान में पहुँचना सम्भव हो, वहाँ दिशाशूल, योगिनी आदि के विचार की आवश्यकता नहीं ।

(५) पूर्व दिशा में १,५,९, दक्षिण में २,६,१०, पश्चिम में ३, ७, ११ और उत्तर में ४,८,१२ लग्नों में यात्रा करनी चाहिए । लग्न से ८ वें स्थान में किसी भी ग्रह का रहना ठीक नहीं है । पृष्ठ और वाम-लग्न में यात्रा करना अशुभ होता है । दक्षिण लग्न आवश्यक में ग्राह्य है । कुम्भ लग्न और कुम्भ का नवांश यात्रा में त्याज्य है । मनीषियों का आदेश है कि लग्नशुद्धि से तिथ्यादिजनित दोष नष्ट हो जाते हैं तथा किसी भी कार्य में मनोत्साह (आत्मतुष्टि) हो तो समस्त दोषों का नाश होकर कार्य में सिद्धि होती है । अतः जिस समय, मन खूब प्रसन्न, उत्साहित हो और शकुन अच्छे दीख पड़ें, उस समय निःशंक यात्रा करें और उत्तम-से-उत्तम लग्न मुहूर्त में भी मनःशुद्धि न हो तो यात्रादि कार्य नहीं करना चाहिए । लिखा है—'सर्वत्र प्रबलं चेता न व्रजेत् तद्बलं बिना ।'

(६) यात्रा-काल की लग्नकुण्डली के केन्द्र (१,४,७, १०वें घर) और त्रिकोण (९,५,वें) में बुध, गुरु, शुक्र इनमें-से कोई एक होने से 'योग' होता है । इनमे-से कोई दो ग्रह केन्द्र, त्रिकोण में होने से 'अधियोग' तथा उन तीनों

के केन्द्र, त्रिकोण में होने से 'योगाधियोग' होता है। यात्रा में तीनों योग उत्तरोत्तर विशेष फलप्रद होते हैं। उसमें निम्नांकित गुणों में-से जितने अधिक होंगे, उतना ही उत्तम मुहूर्त होगा।

(७) वक्री ग्रह केन्द्र में न हो। वक्री ग्रह का वार न हो। वक्री ग्रह की राशि लग्न में न हो। लग्न में वक्री ग्रह का षड्वर्ग न हो। यात्रा के दिन पञ्चाङ्ग-शुद्धि हो।

यात्रा भङ्गी लग्न न हो। यात्रा-भङ्गी लग्न यात्रा में अति अनिष्टकर होता है। यात्रा-समय की लग्न-कुण्डली में निम्नांकित ग्रह-स्थिति में-से एक भी हो तो उस लग्न-भङ्गी-योग में यात्रा न करे। जैसे—केवल शुक्र सप्तम में हो या दशम में शनि हो या चन्द्रमा लग्न में अथवा अष्टम भाव में हो तो वह अन्य सब प्रकार के शुभ योगों को बिगाड़ देगा, जिस तरह चाहे जितनी चीनी, लाइची मिले हुए दूध को कण भर नमक बिगाड़ देता है।

यात्रा-भङ्गी लग्न का परिहार—(१) लग्न में गुरु, छठें में सूर्य हो तो यात्रा-भङ्गी अष्ठमस्थ चन्द्र का दोष नहीं होता। (२) गुरु या चन्द्र लग्न में हो; शुक्र चौथे, बुध पाँचवें, सूर्य छठा हो तो दशम का शनि यात्रा-भङ्गी न होकर मातृवत् रक्षक होगा।

यात्रा में पन्था राहु-चक्र के नक्षत्र और उनके फल—

धर्मपक्ष के नक्षत्र	अ.	पुष्य	आश्ले	वि.	अनु.	ध.	शत.
अर्थपक्ष के नक्षत्र	भ	पुन.	मघा	स्वा	ज्ये.	श्रवण	पू. भा.
कामपक्ष के नक्षत्र	कृ	आर्द्रा	पू. फा.	चि.	मूल	अभि.	उ.भा.
मोक्षपक्ष के नक्षत्र	रो.	मृ	उ. फा.	ह.	पू. षा.	उ.षा.	रेवती

सूर्य धर्म-नक्षत्र में और चन्द्रमा अर्थ या मोक्ष में हो तो यात्रा शुभ होती हैं। सूर्य अर्थ में और चन्द्रमा धर्म या मोक्ष में शुभद, सूर्य काम में और चन्द्रमा धर्म, अर्थ या मोक्ष में शुभद, सूर्य मोक्ष में और चन्द्रमा धर्म में शुभद होता हैं। इनसे अन्यथा सूर्य, चन्द्र की स्थितियाँ अशुभ होती हैं। यात्रा के समय इष्टदेवता और दिक्पति को प्रणाम कर पाँव उठावे एवं यह श्लोक पढ़े—मंगलं भगवान् विष्णुः मंगलं गरुड़ध्वजः। मंगलं पुण्डरीकाक्ष मंगलायतनो हरिः॥

यात्रा के समय शुभ-स्मरण—राम लखन कौसिक सहित, सुमिरहु करहु पयान। लच्छि लाभ लै जगत जसु, मंगल सगुन प्रमान॥ अर्थ—श्रीविश्वामित्रजी सहित श्रीराम लक्ष्मण का स्मरण करके यात्रा करो और लक्ष्मी-प्राप्ति के साथ जगत में यश-लाभ करो। यह शकुन सच्चा मङ्गलमय है।

शुभ शकुन कौन-से हैं?

नकुल, सुदरसन, दरसनी, क्षेमकरी, चक, चाष।
दसदिसि देखत सगुन सुभ, पूजहिं मन-अभिलाष॥
सुधा, साधु, सुरतरु, सुमन, सुफल सुहावनी बात।
'तुलसी' सीतापति-भगति, सगुन सुमङ्गल सात॥

नेवला, मछली, दर्पण, क्षेमकरी चिड़िया, चकवा और नीलकण्ठ, इन्हें दसों दिशाओं में किसी ओर भी देखना शुभ शकुन है और ये मन की अभिलाषा पूर्ण करते हैं। गोस्वामी तुलसीदासजी कहते हैं कि अमृत, साधु, कल्पवृक्ष, सुन्दर पुष्प, सुन्दर फल, सुहावनी बात, श्रीसीताराम भगवान् की भक्ति ये सात सुन्दर शकुन हैं।

चलत समय नेउरा मिलि जाय। बाम भाग चारा चख[1] खाय॥
काग दाहिने खेत सुहाय। सफल मनोरथ समझहु भाय॥
लोमा[2] फिरि-फिरि दरस दिखावै। बायें ते दहिने मृग आवै॥
मृग बायें ते दाहिने, जो आवै तत्काल॥
अन-धन-लछमी बहु मिलै, चलत प्रातः काल॥
भड्डर ऋषि यह सगुन बतावैं। सगरे काज सिद्ध होइ जावैं॥
नारि सुहागिन जलघट लावै। दधि मछली जो सनमुख आवै॥
सनमुख धेनु पियावै बाछा। यही सगुन है सब ते आछा॥

समस्त मङ्गलों की जड़—

भरत सत्रुसूदन लखन, सहित सुमिरि रघुनाथ।
करहु काज शुभ साज सब मिलिहि सुमंगल साथ॥

भरत, शत्रुघ्न और लक्ष्मण सहित श्रीरघुनाथजी का स्मरण कर सब शुभ साधनों के द्वारा कार्य करो तो साथ-ही-साथ सुन्दर मंगल भी मिलता जायेगा अर्थात् मनोरथ सफल होते जायेंगे।

अशुभ शकुन—

गवन-समय जो स्वान। फरफराय दे कान॥
एक सूद्र दो बैस असार। तीनि बिप्र औ' छत्री चार॥
सनमुख आवैं जो नौ नार। कहै भड्डरी अशुभ विचार॥
स्वान धुनै जो अङ्ग, अथवा लोटै भूमि पर।
तौ निज कारज भंग, अतिहि कुसगुन जानियै॥
बैस पाँच षट् स्वान, एक बैल यक बकरा जान॥
तीनि धेनु गज सात प्रमान, चलत मिलैं मति करौ पयान॥
सगुन सुभासुभ निकट हो, अथवा होवै दूर।
दूरि ते दूरि, निकट ते निकट, समझो फल भरपूर॥

काक-स्पर्श-फल—कौवा अगर मस्तक स्पर्श करे तो धन का नाश, मरण तथा कलह होता है। कमर और कन्धे का स्पर्श भी अशुभ होता है। स्त्री के मस्तक पर कौवे का बैठना पति, पुत्र का नाश करता है। वृक्ष के नीचे दही आदि के उत्तम भोजन के कारण काक का स्पर्श दोष-कारक नहीं होता; किन्तु अकस्मात् स्पर्श दोष करता है। काक-मैथुन का देखना छः मास में मृत्यु अथवा मृत्युतुल्य कष्ट या इच्छित कार्य का नाश करता है। इसका दोष दूर करने के लिए उड़द के आटे की काक-प्रतिमा मिट्ठी के बर्तन में स्थापित कर उड़द, चावल, घी, मीठा का नैवेद्य देवे।

१. नीलकण्ठ। २. लोमड़ी।

गोरख पतरा (यात्रा-मुहूर्त) * श्रीगोकुलनाथजी का वचनामृत *

पौष	माघ	फाल्गु.	चैत्र	वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ़	श्रावण	भाद्र.	आश्विन	कार्तिक	अगह्न.	* मासों की तिथियों का फल *	प्रहर १	प्रहर २	प्रहर ३	प्रहर ४	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	बहुत सुख और अर्थ पूर्ण हो ; क्लेश न हो ।	अर्थ	सुख	शोक	सुख	सुख	क्लेश	भीत	द्रव्यलाभ
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	महाभय और जीव-नाश हो ; पछतावा हो ।	भय	क्लेश	सुख	सुख	शून्य	नेष्ट	दारिद्रय	समता
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	कामना सिद्ध हो ; अर्थ पूर्ण हो । [* घर आवे ।	लाभ	सुख	सुख	हानि	क्लेश	दुख	इष्ट-लाभ	धन-प्राप्ति
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	क्लेश व जीव-नाश हो ; कुशल से घर न आवे ।	क्लेश	शुभ	क्लेश	विनाश	लाभ	सुख	मङ्गल	वित्त-लाभ
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	वस्तु-लाभ हो ; व्याधि व संकट मिटे ; मित्र मिले ।	संकट	क्लेश	भाग्य	सुख	लाभ	द्रव्य	धन	सुख
६	८	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	घर की चिन्ता, मित्र-संकट हो ; कदाचित् घर आवे ।	संकट	क्लेश	भय	अर्थ	भीति	लाभ	मृत्यु	अर्थागम
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	भाग्योदय, मित्र और साधनों की प्राप्ति हो; रत्नादि सहित*	विनाश	लाभ	सुख	सुख	लाभ	कष्ट	द्रव्यलाभ	सुख
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	बहुत बुरा हो ; लेन-देन करना नहीं ; जीव नाश हो ।	शून्य	शून्य	शून्य	शून्य	कष्ट	सुख	क्लेश	सुख
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	कामना सिद्ध हो ; आशा पूर्ण हो ; सौभाग्य का उदय हो ।	लाभ	भाग्य	मित्र	मित्र	सुख	लाभ	कार्यसिद्धि	कष्ट
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	सौभाग्य प्राप्त हो; बहुत दिन लगे; किन्तु कुशल से घर आवे।	लाभ	सम्पूर्ण	मरण	कुशल	क्लेश	कष्टसेसि	अर्थ	धन-प्राप्ति
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	क्लेश हो ; किन्तु जीव-नाश नहीं ; सौभाग्य पावे नहीं ।	मरण	अर्थ	कुशल	मरण	मृत्यु	लाभ	द्रव्यलाभ	शून्य
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	मार्ग में सिद्धि, मित्र मिले, विघ्न मिटे ; धन-लाभ हो ।	मरण	सुख	सुख	सुख	शून्य	सुख	मृत्यु	अति कष्ट

श्रीगोरखनाथ के पूछने पर गुरु मत्स्येन्द्रनाथ ने कहा था कि इस चक्रोक्त मुहूर्त में जो यात्रा करेगा, कुशल पावेगा । यह मुहूर्त-राज है । उसे चन्द्र-दोष, भद्रा, दिशाशूल, योगिनी, काल, घातवार इत्यादि किसी कुयोग का दोष नहीं होगा । यात्रा के लिए इस चक्र का राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्रादि प्रान्तों में व्यापक उपयोग होता है । वैष्णवजन इसे श्रीगोकुलनाथजी का वचनामृत मानकर इस पर और भी श्रद्धा रखते हैं । उनके यथोक्त फल-लाभ के अनुभवों को सुनकर उत्तर भारतीय जनता में भी इसके प्रचार के लिए यहाँ यह प्रकाशित किया जाता है । इसमें प्रत्येक मास की प्रत्येक तिथि और प्रत्येक प्रहर में हर दिशा की यात्रा का फल निर्दिष्ट किया गया है । हर मास के नीचे दी गई तिथियों को उस मास के कृष्णपक्ष और शुक्लपक्ष दोनों की तिथियाँ समझनी चाहिए । इसमें १३-१४-१५ और ३० तिथियों का उल्लेख नहीं है । सो १३ तिथि का फल ठीक ३ तिथि के समान, १४ का फल ४ तिथि के समान १५ तिथि का फल ५ तिथि के समान समझना चाहिए । ३० (अमावस्या) तिथि वर्ज्य है । इसी तरह १ से ४ तक के प्रहरों को दिन और रात दोनों के लिए समझें । दिनमान का चतुर्थांश दिन के एक प्रहर का मान तथा रात्रिमान का चतुर्थांश रात्रि के एक प्रहर का मान होता है । किसी दिन के दिनमान को ६० घटी में घटाने पर उस रोज का स्पष्ट रात्रिमान निकल आता है । उदाहरण—किसी को ज्येष्ठ शुक्ल १४ को पूरब दिशा की यात्रा करनी है । १४ तिथि का फल ४ तिथि के तुल्य होने से चक्र में ज्येष्ठ मास के नीचे ४ तिथि के सामने फल देखा तो क्लेश हो···आदि लिखा मिला । अतः उस तिथि को यात्रा न बनने से उसके बाद की पूर्णिमा तिथि के लिए पञ्चमी का फल देखने पर शुभद मिला; किन्तु उसकी सीध में पूर्वदिशा के नीचे फल 'शून्य' (अशुभ) लिखा है; अतः पूर्णिमा भी यात्रा योग्य नहीं सिद्ध हुई । उसके बाद की तिथि आषाढ़ कृष्ण १ के सामने देखा तो भाग्योदय आदि शुभद फल लिखा मिला एवं पूर्व दिशा के लिए भी यह प्रतिपद तिथि लाभदायक ज्ञात हुई; किन्तु इस तिथि में भी यात्रा दिन या रात के पहले प्रहर में न होनी चाहिए; क्योंकि उस तिथि की सीध में १ प्रहर के नीचे 'विनाश' लिखा है, शेष २-३-४ प्रहरों में यात्रा करना शुभ फलदायक होगा । इसी प्रकार अन्य मासों की तिथियों का भी पाठक उपयोग कर लाभ उठावें । मुनियों का आदेश है कि जिस समय मन खूब प्रसन्न हो तथा शकुन अच्छे दीख पड़ें, उस समय निःशंक यात्रा करें । उत्तम-से-उत्तम मुहूर्त में भी मनःशुद्धि न हो और अशुभ शकुन दीख पड़ें तो यात्रा न करनी चाहिए । यात्रा में शुभ शकुन—विप्र, दो अश्व, गज, मद, फल, अन्न, दुग्ध, गो, दधि, सर्षप, कमल, निर्मल वस्त्र, वाद्य, वेश्या, मयूर, नकुल, सिंहासन, शस्त्र, मांस, दीप्ताग्नि, मत्स्य, ससुत स्त्री, गोरी कन्या, धोबी, कार्यसिद्धि-वाक्य, जलपूर्ण घट, पश्चाद्रिक्त घट, यात्रा-समय देखने में शुभ हैं । अशुभ शकुन—वन्ध्या स्त्री, चर्म, अस्थि, ईंधन, संन्यासी, बिल्लियों भैंसों का युद्ध, सर्प, शत्रु, कुटुम्ब-कलह, विधवा, जातिभ्रष्ट, अंगहीन, छिक्का, दुष्ट वाणी, दुखिया का रोना, भैंस पर सवार या नंगा मनुष्य यात्रा-समय देखना अशुभ तथा कष्टप्रद है ।

चौघड़िया-मुहूर्त

उदवेगश्चामृतो रोगो लाभः शुभचरौ मृतिः । सूर्यः शुक्रो बुधश्चन्द्रो मंदो जीवो धरासुतः ॥
सूर्यादौ क्रमतो ज्ञेयो रात्रौ पञ्चमगोऽह्नि षट् । सूर्यो बृहस्पतिश्चन्द्रः शुक्रो भौमः शनिर्बुधः ॥

॥ दिन की चौघड़िया ॥

	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
पहली चौ.	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
दूसरी चौ.	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
तीसरी चौ.	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
चौथी चौ.	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
पाँचवीं चौ.	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
छठवीं चौ.	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
सातवीं चौ.	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
आठवीं चौ.	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल

॥ रात की चौघड़िया ॥

	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
पहला चौ.	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
दूसरी चौ.	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
तीसरी चौ.	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
चौथी चौ.	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
पाँचवीं चौ.	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
छठवीं चौ.	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	उद्वेग	रोग
सातवीं चौ.	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
आठवीं चौ.	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

शीघ्रता में कोई भी यात्रा-मुहूर्त न बनता हो या यकायक यात्रा करने का मौका आ पड़े तो उस अवसर के लिए विशेष रूप से चौघड़िया-मुहूर्त का उपयोग है; लेकिन अब तो प्रायः हर आवश्यकीय शुभ कार्यारम्भ के लिए चौघड़िया-मुहूर्त ने जनता के हृदय पर अपना सिक्का जमा लिया है।

दिन और रात के आठ-आठ बराबर हिस्से का एक-एक चौघड़िया मुहूर्त होता है। जब दिन और रात बराबर, यानी २ घण्टे का दिन और १२ घण्टे की रात होती है तब एक चौघड़िया-मुहूर्त १॥ घण्टा यानी पौने चार घड़ी का होता है, इसलिए इसका नाम चौघड़िया मुहूर्त पड़ा। रविवार, सोमवार आदि प्रत्येक बार सूर्योदय से शुरू होकर अगले सूर्योदय पर समाप्त होता है एवं उसी समय से अगला 'वार' आरम्भ हो जाता है। प्रत्येक वार के सूर्योदय से सूर्यास्त तक का समय उस 'वार' का 'दिनमान' और सूर्यास्त से अग्रिम सूर्योदय तक का समय 'रात्रिमान' होता है। दिनमान और रात्रि-मान न्यूनाधिक भी (यानी दिन रात छोटे-बड़े) हुआ करते हैं; पर 'वार' हमेशा २४ घण्टे यानी ६० घड़ी का होता है अर्थात् दिनमान और रात्रि-मान का योग हमेशा ६० घड़ी होता है। जंत्री-पञ्चाङ्ग में हर रोज का 'दिनमान' दिया रहता है; अतः जिस रोज का रात्रिमान जानना हो, उस रोज के दिनमान को ६० घड़ी में घटा देने से रात्रि-मान निकल आयेगा। अब जिस रोज दिन में यात्रा करनी हो, उस रोज के दिनमान के अष्टमांश घटी-पल का घण्टा-मिनट बनाकर उस रोज के सूर्योदय-समय में जोड़ते जायँ तो क्रमशः उस दिन की आठों चौघड़िया के समय ज्ञात होते जायँगे। उन आठों चौघड़िया में-से कौन-सा ग्राह्य और त्याज्य है, यह ऊपर 'दिन' की चौघड़िया के चक्र में उस दिन के 'वार' के सामने खाने में देखकर जान लें। इसी प्रकार जिस रोज रात्रि में यात्रा करनी हो, उस रोज के रात्रिमान के अष्टमांश घटी-पल का घण्टा-मिनट बनाकर सूर्यास्त-समय में जोड़ते जाने जाने से क्रमशः रात की प्रत्येक चौघड़िया का समय ज्ञात हो जायगा और उनका शुभाशुभत्व उपर्युक्त रात की चौघड़ियों के चक्र में उस रोज के 'वार' के सामने खाने में देखकर जान लें। श्रेष्ठ समय शुभ, चर, अमृत और लाभ की चौघड़िया का है; अशुभ समय उद्वेग, रोग और काल का होता है, इनको त्याग देना चाहिए। २॥ घड़ी का १ घण्टा तथा २॥ पल का एक मिनट होता है। अतः घटी-पल का घण्टा मिनट बनाने के लिए उनमें ५ का भाग देकर लब्धि को दूना कर ले।

टिप्पणी—प्रत्येक चौघड़िया के स्वामी-ग्रह क्रमशः ये हैं—उद्वेग का रवि, चर का शुक्र, लाभ का बुध, अमृत का चन्द्र, काल का शनि, शुभ का गुरु और रोग-चौघड़िया का स्वामी भौम है। ऊपर जो शुभ, चर, अमृत और लाभ की चौघड़िया का समय श्रेष्ठ कहा गया है, वह इसीलिए कि उन सबके स्वामी क्रमशः शुभग्रह गुरु, शुक्र, चन्द्र और बुध हैं। अतः इन सबके श्रेष्ठ चौघड़िया-मुहूर्त में प्रत्येक शुभ कार्य किये जा सकते हैं; किन्तु यात्रा में इनके स्वामी का सूक्ष्म विचार कर लेना अत्यावश्यक है। प्रायः सभी लोग उक्त चारों श्रेष्ठ चौघड़िया में-से किसी भी दिशा की यात्रा कर लेते हैं; किन्तु फल कभी-कभी उल्टा यानी शुभ की जगह अशुभ और हानिकर हो जाता है। इसका कारण यह है कि यदि किसी को पूर्व में जाना है और उपर्युक्त चारों श्रेष्ठ चौघड़िया में-से "अमृत" चौघड़िया के समय में वह चला गया तो उस चौघड़िया का स्वामी चन्द्र होने के कारण पूर्व दिशा के लिए वह चन्द्र दिशाशूलकारक होगा—'सोम, सनीचर पुरब न चालू', जिससे शुभ फल के बजाय अशुभ होना निश्चितप्राय है। अतः चारों श्रेष्ठ चौघड़िया में भी जिस चौघड़िया का स्वामी अपनी यात्रा के लिए दिशाशूलकारक हो, उस चौघड़िया को यत्नपूर्वक वर्जित करना चाहिए। आशा है, हमारे प्रिय पाठक इस सुझाव से जरूर लाभ उठायेंगे।

सर्व कार्य-सिद्धि के लिए होरा-मुहूर्त

सर्व कार्य सिद्धि के लिए होरा-मुहूर्त पूर्ण फलदायक और अचूक है। पाठक अमल में लाकर सफल मनोरथ हों।

सात ग्रहों के सात होरे हैं जो दिन-रात के २४ घण्टों में घूमकर मनुष्य को कार्य-सिद्धि के लिए अशुभ समय में भी सुसमय सुअवसर प्रदान करते हैं। सूर्य का होरा राज-सेवा के लिए उत्तम है; प्रवास के लिए शुक्र का होरा; ज्ञानार्जन के लिए बुध का होरा; सर्वसिद्धि के लिए चन्द्रमा का होरा; द्रव्य-संग्रह के लिए शनि का; विवाह के लिए गुरु का तथा युद्ध, कलह और विवाद के लिए मंगल का होरा श्रेष्ठ होता है। प्रत्येक होरा १ घण्टे का होता है। जिस दिन जो 'वार' होता है, उस वार के प्रवृत्तिकाल (यानी सूर्योदय के समय) से १ घण्टा तक उसी वार का होरा रहता है। उसके बाद १ घण्टे का दूसरा होरा उस वार से छठे वार का होता है; इसी प्रकार दूसरे होरे के वार से छठे वार का होरा तीसरे घण्टे तक रहता है। इस क्रम से २४ घण्टे में २४ होरे बीतने पर अगले वार के सूर्योदय-समय उसी (अगले) वार का होरा आ जाता है। जिस कार्य की सिद्धि के लिए ऊपर जो होरा श्रेष्ठ लिख आये हैं, किसी भी दिन उस होरे के १ घण्टे-मुहूर्त में वह कार्य करेंगे तो सफलता आपके हाथ रहेगी। प्रत्येक वार के २४ घण्टों का होरा ज्योतिष-प्रेमी तत्काल मालूम कर सकें, इस वास्ते नीचे चक्र भी दिया जा रहा है। साथ ही खूब अच्छी तरह समझ लेने के लिए उदाहरण दिया गया है। मान लीजिये, आज गुरुवार है और आज ही आपको कहीं प्रवास करना (जाना) है। ऊपर प्रवास के लिए शुक्र का होरा श्रेष्ठ लिख आये हैं; अतः मालूम करना है कि आज गुरुवार के दिन शुक्र का होरा किस-किस समय रहेगा। चक्र में गुरुवार के सामने खाने में देखा तो चौथे, ग्यारहवें और अठारहवें घण्टे में शुक्र काहोरा मिला। अतः आज बृहस्पतिवार को सूर्योदय-समय से ३ या १० अथवा १७ घण्टे बाद के एक-एक घण्टे तकके शुक्र-होरा में आपको जाना चाहिये। इसी प्रकार अन्य दिनों के होराओं के विषय में भी समझ लें।

वार	हो. १	हो. २	हो. ३	हो. ४	हो. ५	हो. ६	हो. ७	हो. ८	हो. ९	हो. १०	हो. ११	हो. १२	हो. १३	हो. १४	हो. १५	हो. १६	हो. १७	हो. १८	हो. १९	हो. २०	हो. २१	हो. १२	हो. २३	हो. २४
सू.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	म.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शू.	बु.
चं.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं	श.	गु.	मं.	सू	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू	शु.	बु.	चं.	श.	गु.
मं.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं	श	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.
बु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	च.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.
गु.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.
शु.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं	श.	गु.	म.	सू	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं
श.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शू.	बू.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.

भारत के हर स्थान के लिए शास्त्रोक्त वार-प्रवृत्ति का स्टैं० टा० जानने की विधि—जिस ता० की वार-प्रवृत्ति यानी वार के आरम्भ होने का स्टैं० टा० जानता हो, उस ता० के बेलान्तर मिनिट को उसके धन या ऋण चिह्न के अनुसार घं० ६ मि० २७ में जोड़ या घटा देने से उस ता० के वार-प्रवेश का सूक्ष्म, शुद्ध स्टैं० टा० सहज ही ज्ञात हो जायेगा जो होरा-मुहूर्त-साधन में विशेषतः उपयोगी है। 'ज्योतिष-रहस्य' के प्रथम खण्ड में पृष्ठ ४३ से ४५ तक हर वर्ष काम देनेवाली बेलांतर-सारणी छपी है जिसमें प्रत्येक तारीख का बेलान्तर मिनट +, − चिह्न के साथ दिया गया है।

विशेष—प्रत्येक व्यक्ति को अपनी राशि के स्वामी-ग्रह के शत्रु-ग्रहों की होरा को यात्रा, विवाद, युद्धादि में यत्नपूर्वक त्याग करना चाहिए। जैसे मान लीजिए, देवदत्तजी की जन्म-राशि के स्वामी गुरु हैं और गुरु के शत्रु ग्रह बुध और शुक्र हैं। अतः देवदत्तजी को बुध और शुक्र के नैसर्गिक शुभ-ग्रह होने के नाते उनकी होराओं में उक्त कार्य न करने चाहियें अन्यथा परिणाम में शुभ के बजाय अशुभ फल होगा। इसी प्रकार गुरु के मित्र शुभग्रह चन्द्र हैं। अतः इनकी होरा में ही यत्नपूर्वक उक्त कार्य करना होगा।

दिसासूल ले आओ बायें, राहु जोगिनी पूठ।
सम्मुख लेवे चन्द्रमा, लावे लच्छमी लूट॥

पूर्व	तिथि	६, १४
	वार	मंगलवार, बुधवार
	चन्द्र-राशि	मेष, सिंह, धनु।
पश्चिम	तिथि	५, ९
	वार	गुरुवार, शनिवार
	चन्द्र-राशि	मिथुन, तुला, कुम्भ।
उत्तर	तिथि	५, १३
	वार	गुरुवार, शुक्रवार
	चन्द्र-राशि	कर्क, वृश्चिक, मीन।
दक्षिण	तिथि	२, १०
	वार	सोमवार, शनिवार
	चन्द्र-राशि	वृष, कन्या, मकर।

व्यापारिक यात्रा-मुहूर्त—आज के युग में व्यापार के सिलसिले में आवागमन बहुत बढ़ गया है; प्रायः व्यापारीगण लाभदायक यात्रा का मुहूर्त पूछते रहते हैं। अतः व्यापार में अभीष्ट सफलता एवं लाभ-प्राप्ति के लिए वर्तमान सदी के अद्भुत प्रतिभाशाली ज्योतिषी महाकवि 'घाघ' की उक्ति और तदनुसार यात्रा-मुहूर्त का चक्र बगल में दिया जा रहा है। आशा है, पाठकगण इससे लाभान्वित होकर हमें और भी प्रोत्साहन प्रदान करेंगे।

दृष्टान्त—जैसे उत्तर दिशा में जाना है तो गुरु या शुक्रवार को तिथि ५ या १३ हो तथा उसी समय में चन्द्रमा कर्क, वृश्चिक या मीन, इन तीन राशियों में-से किसी राशि पर हो तो उत्तर दिशा में यात्रा करने से पर्याप्त लाभ होगा। इसी भाँति चक्र से अन्य दिशाओं के विषय में समझें।

चंद्र की बारह अवस्थाएँ

आश्रित्य चंद्रस्य बलानि सर्वेग्रहाः प्रयच्छंति शुभाऽशुभानि ।
मनः समेतानि यथेंद्रियाणि कर्मण्यतां यांति न केवलानि ॥

क्रियाद् द्वादशेन्दो रवस्था प्रदिष्टाः प्रवासश्च नाशश्च मृत्युर्जयश्च ।
हास्याद्रतिः क्रीडितं सुप्ति भुक्तीज्वरः कम्पन स्यात् स्थिरत्वं क्रमेण ॥

किसी भी शुभ कार्य के मुहूर्त-साधन में कार्य के मुख्य कर्ता को चन्द्र-बल प्राप्त करना अत्यावश्यक होता है। एतदर्थ चन्द्र की सूक्ष्म राशि जानने का भी सरलतम साधन, उदाहरण के साथ, शुद्ध रूप में यहाँ प्रकाशित किया जा रहा है। चन्द्र का सूक्ष्म राशि-भोग ही मुहूर्त-शास्त्रोक्त चन्द्र की १२ अवस्थाएँ हैं। जिस प्रकार चन्द्रमा १ नक्षत्र में रहता हुआ सूक्ष्मतया सभी नक्षत्रों को भोग लेता है, एक दिशा में रहता हुआ सभी दिशाओं में दो बार घूम जाता है, उसी प्रकार वह एक राशि में रहता हुआ सभी (बारहों) राशियों में घूम जाता है; वही चन्द्र की द्वादश अवस्थाओं के नाम से मुहूर्तशास्त्र में वर्णित है। प्रत्येक राशि में चन्द्रमा करीब सवा दो दिन (१३५ घटी) तक रहता है; किन्तु सतत इतने समय तक वह अपनी राश्यानुसार शुभ या अशुभ फल नहीं दिया करता, यह तथ्य प्रायः सबको प्रत्यक्ष अनुभवगम्य है। इसका कारण भी वही द्वादश अवस्था में चन्द्र का रहना ही है। अतः स्थूल राशि परत्वेन अशुभ चन्द्र होने पर भी उसकी सूक्ष्म शुभ अवस्था के बल से विज्ञ पाठक अपना अभीष्ट-साधन कर सकते हैं; एतदर्थ हम चन्द्र की १२ अवस्थाओं को सरलतया ज्ञात कर लेने के लिए निम्न चक्र प्रकाशित कर रहे हैं। इसका उपयोग भी अति सरल है। मान लो, आपके अभीष्ट समय में चन्द्रमा कन्या राशि में है और चन्द्रमा का स्पष्ट अंशादि २१°-२०'-३८" है। अब निम्न चक्र में चन्द्र-राशि भोगांश के खाने में देखा तो यह अंशादि २०° और २२°-३०' के बीच में पड़ता है; अतः २२°-३०' के खाने में दाहिनी ओर चलकर कन्या राशि के नीचे देखा तो 'नाश' अवस्था मिली; उसके बाद भी अशुभ मरणावस्था २५ अंश तक रहेगी। अतः जब चन्द्रमा कन्या का २५ अंश पूरा करके 'जय' एवं 'हास्य' अवस्था में यानी कन्या के २५ से ३० अंश तक चलता रहे, तभी आपको अपना अभीष्ट कार्य-सम्पादन करना चाहिए। इसी प्रकार से अन्यान्य राशियों के चन्द्र-भोग के विषय में समझें। अभीष्टकाल का चन्द्र स्पष्ट करने की जैसी सरल सारणी "ज्योतिष-रहस्य" प्रथम-खण्ड में प्रकाशित की गई है, वैसी सरल शुद्ध सारणी आज तक भारत के किसी भी पंचांग, जंत्री या ग्रंथ में नहीं छपी। जिनके पास अभी तक 'ज्योतिष-रहस्य प्रथम-खण्ड' न हो, वे तुरंत मँगवा लें। नये बृहद् संस्करण की थोड़ी ही प्रतियाँ छपी हैं; अस्तु। किसी अभीष्ट समय पर चन्द्रमा की अवस्था जानने की रीति हमने ऊपर बतलाई; किन्तु किसी खास दिन अथवा रोज-ब-रोज चन्द्रमा एक या कई शुभाशुभ अवस्थाओं में कितने समय तक रहेगा, इसकी जानकारी भी अनेक लोगों को आवश्यक होगी। एतदर्थ जिस सूक्ष्म रीति से अर्ध-दैनिक चन्द्र-गति की अंतर्न्यास पद्धति का उपयोग हम करते हैं, वह सामान्य पाठकों के लिए क्लिष्ट है; अतः हम उनके लिए अन्य सहज रीति बतलाते हैं। यह कुछ स्थूल होने पर भी व्यावहारिक दृष्टि से पर्याप्त उपयोगी है।

रीति—जिस किसी राशि के चन्द्रमा की अवस्था जाननी हो, उस राशि में चन्द्रमा के प्रवेश की तारीख व समय तथा उससे अग्रिम राशि में चन्द्र-प्रवेश की तारीख व समय जंत्री से ज्ञात करें। अग्रिम राशि-प्रवेश के समय में पूर्व-राशि-प्रवेश के समय को घटाकर शेष में

चन्द्र-राशि भोगांश व अवस्था	मेष	बृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	बृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
२°–३०' अवस्था–१	प्रवास	नाश	मरण	जय	हास्य	रति	रति	सुप्त	भुक्त	ज्वर	कम्प	स्थिर
५°–००' अवस्था–२	नाश	मरण	जय	हास्य	रति	क्रीड़ा	क्रीड़ा	भुक्त	ज्वर	कम्प	स्थिर	प्रवास
७°–३०' अवस्था–३	मरण	जय	हास्य	रति	क्रीड़ा	सुप्त	सुप्त	ज्वर	कम्प	स्थिर	प्रवास	नाश
१०°–००' अवस्था–४	जय	हास्य	रति	क्रीड़ा	सुप्त	भुक्त	भुक्त	कम्प	स्थिर	प्रवास	नाश	मरण
१२°–३०' अवस्था–५	हास्य	रति	क्रीड़ा	सुप्त	भुक्त	ज्वर	ज्वर	स्थिर	प्रवास	नाश	मरण	जय
१५°–००' अवस्था–६	रति	क्रीड़ा	सुप्त	भुक्त	ज्वर	कम्प	कम्प	प्रवास	नाश	मरण	जय	हास्य
१७°–३०' अवस्था–७	क्रीडा	सुप्त	भुक्त	ज्वर	कम्प	स्थिर	स्थिर	नाश	मरण	जय	हास्य	रति
२०°–००' अवस्था–८	सुप्त	भुक्त	ज्वर	कम्प	स्थिर	प्रवास	प्रवास	मरण	जय	हास्य	रति	क्रीड़ा
२२°–३०' अवस्था–९	भुक्त	ज्वर	कम्प	स्थिर	प्रवास	नाश	नाश	जय	हास्य	रति	क्रीड़ा	सुप्त
२५°–००' अवस्था–१०	ज्वर	कम्प	स्थिर	प्रवास	नाश	मरण	मरण	हास्य	रति	क्रीड़ा	सुप्त	भुक्त
२७°–३०' अवस्था–११	कम्प	स्थिर	प्रवास	नाश	मरण	जय	जय	रति	क्रीडा	सुप्त	भुक्त	ज्वर
३०°–००' अवस्था–१२	स्थिर	प्रवास	नाश	मरण	जय	हास्य	हास्य	क्रीड़ा	सुप्त	भुक्त	ज्वर	कम्प

१२.से भाग दें, लब्धि में ४ घटा जोड़ दें तो घंटादि समय चन्द्र की १ अवस्था का भोग-काल होगा। पूर्व-राशि के चन्द्र-प्रवेश-समय में उक्त घंटादि भोग-काल को जोड़ते जाने से क्रमशः चन्द्र की १२ अवस्थाओं के समय सिद्ध हो जायेंगे। उक्त समयों के २४ घंटे से अधिक होने पर २४ घटा दीजिए और तब उसे अगली तारीख का समय समझिये।

उदाहरण—मान लें, हमें २२ जनवरी १९६९ ई० को मीन के चन्द्र की द्वादश अवस्थाओं का समय जानना है तो जत्री-पृष्ठ २० पर उस दिन चन्द्र के मीन में प्रवेश का स्टैं० टा० घं० ७ मि० २४ छपा है और अग्रिम राशि मेष में जाने का समय घं० १५ मि० है। अतः घ० १५ मि० ० में घं० ७ मि० २४ घटाया तो घं० ७ मि० ३६ यानी ४५६ मिनिट शेष रहा; इसमें १२ का भाग दिया तो लब्धि ३८ मिनिट मिला; उसमें ४ घं० जोड़ने से प्रत्येक अवस्था का भोग-काल घं० ४ मि० ३८ हुआ। किसी राशि में चन्द्र-प्रवेश के समय से ही उस राशि की पहली चन्द्र-अवस्था शुरू होती है। यहाँ चन्द्र के मीन राशि-प्रवेश का समय घं० ७ मि० २४ है; उसमें उक्त भोग-काल घं० ४ मि० ३८ को जोड़ा तो मीन के चन्द्र की पहली अवस्था 'स्थिर' की समाप्ति का तथा अग्रिम अवस्था 'प्रवास' के आरम्भ का समय स्टैं० टा० से घं० १२ मि० २ ज्ञात हुआ।

इसी प्रकार से उपर्युक्त मीन के चन्द्र की क्रमशः बारह अवस्थाओं के समय का निम्न चार्ट तैयार होता है—

	घं० मि०
चन्द्र के मीन राशि-प्रवेश व उसकी 'स्थिर' अवस्था के आरम्भ का समय ···	७　२४
चन्द्र की स्थिर अवस्था की समाप्ति एवं	+४—३८
दूसरी प्रवास अवस्था के आरम्भ का समय ··	१२—२
प्रवास अवस्था की समाप्ति एवं	+ ४—३८
तीसरी नाश अवस्था के प्रारंभ का समय···	१६—४०
नाश अवस्था की समाप्ति व चौथी मरण	+ ४—३८
अवस्था के प्रारंभ का समय··· ···	२१—१८
ता० २३ जनवरी को मरण-अवस्था की समाप्ति	+४—३८
एवं ५वीं जय अवस्था के प्रारंभ का समय ··	१—५६
,, ,, जय की समाप्ति व हास्य-	+ ४—३८
अवस्था के प्रारंभ का समय ··· ···	६—३४
हास्य की समाप्ति व रति अवस्था	+ ४—३८
के प्रारंभ का समय ··· ···	११—१२
रति की समाप्ति व क्रीड़ा अवस्था	+ ४—३८
के प्रारंभ का समय ··· ···	१५—५०
क्रीड़ा की समाप्ति व सुप्त अवस्था	+ ४—३८
के प्रारंभ का समय ···· ···	२०—२८
ता० २४ जनवरी को सुप्तावस्था की समाप्ति	+४—३८
व भुक्त अवस्था के प्रारंभ का समय ···	१—६
,, ,, भुक्तावस्था की समाप्ति व	+ ४—३८
ज्वरावस्था के प्रारंभ का समय··· ···	५—४४
,, ,, ज्वरावस्था की समाप्ति व	+ ४—३८
कम्प अवस्था के प्रारंभ का समय ···	१०—२२
	+ ४—३८
कम्प अवस्था की समाप्ति का समय ···	१५—००

इस तरह का चार्ट बनाकर पाठकगण ढाई दिन के चन्द्र की किसी राशि की बारहों अवस्था के आदि अन्त का समय स्टैं० टा० में सरलता से जान सकते हैं। चन्द्र की हर अवस्था अपने नाम के अनुरूप शुभाशुभ फल प्रदान करती है; पाठक अनुभव कर लाभ उठावें और हमें अपना अधिकाधिक स्नेह प्रदान करें।

अङ्गस्फुरण-फल

स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल
मस्तक	पृथ्वी-लाभ	ग्रीवा(गर्दन)	शत्रु-भय	नाभि	स्त्री-नाश
ललाट	स्थान-लाभ	ओष्ठ	प्रियवस्तु-लाभ	आँत	कोष-वृद्धि
दोनों भौं	सुख-प्राप्ति	पृष्ठ (पीठ)	पराजय	भग	पति-प्राप्ति
बीच भौं	महान-सुख	उदर	कोष-लाभ	लिङ्ग	स्त्री-लाभ
कपोल	वारांगना प्रा.	कुक्षि (कोंख)	सुप्रीति-लाभ	गुदा	वाहन-लाभ
नेत्र	प्रिय-दर्शन	मुख	मधुर भोजन	वृषण	पुत्र-लाभ
नेत्रका कोना	लक्ष्मी- लाभ	भुज	प्रिय-प्राप्ति	वस्ति(पेड़ू)	अभ्युदय
नेत्र-समीप	प्रिय-समागम	भुज-मध्य	धनागम	उरु	वस्त्र-लाभ
नेत्र-पक्ष	राज्य-लाभ	हस्त	सद्द्रव्य-लाभ	जानु(घुटना)	शत्रु-वृद्धि
नेत्रोर्ध्व	विजय	वक्षस्थल	विजय	जाँघ	स्वामी-प्राप्ति
कन्धा	भोग, समृद्धि	हृदय	इष्ट-सिद्धि	पाद	स्थान-लाभ
हनु (ठोढ़ी)	महाभय	कटि	प्रमोद	पाद-तल	नृपत्व-बुद्धि
कण्ठ	ऐश्वर्य-लाभ	कटि-पार्श्व	उत्तम प्रीति	पादोपरि	स्थान-लाभ

इन्हीं अंगों में तिल, लहसुन मस्सा हो या खुजली उठे तो इस चक्र में लिखा फल जानना। पैर के तलुओं में खुजली उठे तो यात्रा हो। राजाओं के हाथ में तिल या खाज हो तो जय होती है; साधारण व्यक्ति को लाभ होता है। सामान्यतः पुरुषों का दायाँ अङ्ग और स्त्रियों का बायाँ अङ्ग फड़कना शुभ है। मस्तक फड़कना स्त्री-पुरुष दोनों का शुभ होता है तथा स्त्री का दाहिना अङ्ग और पुरुष का बायाँ अङ्ग फड़कने से अशुभ फल होता है। इसके लिए यथाशक्ति दान करना चाहिये।

(१) **चन्द्र-बल-प्रशंसा**—प्रत्येक सुकार्य में निश्चित सफलता-लाभ के लिये चन्द्रबल अत्यावश्यक है अर्थात् वह क्षीणबली न हो, गोचर से शुद्ध हो, पाप-ग्रहों के मध्य में, पापग्रहों के साथ या पापग्रह से ७वें स्थान में न हो। मुहूर्त-शास्त्र में यह भी कहा गया है कि यह शुभग्रह के अथवा अपने अधिमित्र ग्रह के नवांश में हो या बृहस्पति से दृष्ट हो तो गोचर से अशुभ होने पर भी शुभद होता है। अधिमित्र उसे कहते हैं जो नैसर्गिक और तात्कालिक दोनों प्रकार से मित्र हों। चन्द्र के नैसर्गिक मित्र रवि, बुध हैं। ये यदि चन्द्रमा से २।३।४।१०।११।१२ स्थानों में हों तो वे अधिमित्र हो जाते हैं। शुक्ल ६ से कृष्ण ९ तिथि तक पूर्णचन्द्र तथा कृष्ण १० से शुक्ल ५ तक क्षीणबली चन्द्र रहता है।

(२) **जन्म-चन्द्र-प्रशंसा**—भगवान् वराह के वचनानुसार जन्म-राशि का चन्द्र कृषि, भवन, विवाह, अन्न-प्राशन, यज्ञोपवीत, प्रथम युवती-समागम, कूपादि-निर्माण, पट-विधि, अभिषेक में प्रशस्त (शुभावह) है; किन्तु क्षौर-कर्म और यात्रा में वर्ज्य है।

(३) **द्वादश भावस्थ चन्द्र-प्रशंसा**—गर्भाधान, जन्म-काल, अन्न-प्राशन, अभिषेक, यज्ञोपवीत, पाणिग्रहण (विवाह), यात्रा, विवाद, युद्धारम्भ में बारहवाँ चन्द्र शुभद होता है।

(४) **चन्द्रादि ग्रहों की दिशा का ज्ञान**—चन्द्र की दिशा का ज्ञान उसकी तात्कालिक राशि के द्वारा किया जाता है। मेष सिंह धनु राशि की स्थिति पूर्व में, वृष कन्या मकर की दक्षिण में, मिथुन तुला कुम्भ की पश्चिम में तथा कर्क वृश्चिक मीन राशि की स्थिति उत्तर दिशा में मानी गयी है। अतएव चन्द्रमा जिस राशि में रहता है, उसी की दिशा में उसका निवास माना जाता है।

(५) **चंद्र-दिशा का फल**—सम्मुख (सामने की दिशा यानी जिस दिशा में जाना है, उस दिशा में) चन्द्रमा होने से अर्थ-लाभ, दाहिनी ओर की दिशा में होने से सुख-सम्पत्ति की प्राप्ति, पृष्ठ(पीछे) की दिशा में होने से मरण या मृत्युतुल्य कष्ट और बायीं दिशा में होने से धन का क्षय होता है। सामने का पूर्ण चन्द्रमा समस्त दोषों का नाश करता है। कुम्भ और मीन के चन्द्रमा में दक्षिण को कदापि न जाय।

(६) **यात्रा में जन्म-राशि से द्वादश राशिगत चन्द्र-फल**—यात्रा के समय जन्मराशि में चन्द्र हो तो प्रिय कारक होता है। जन्म-राशि से दूसरी राशि में हो तो धन-धान्य देनेवाला होता है। इसी तरह तीसरे होने से राज-सम्मानप्रद, चौथे होने से कलहकारक, पाँचवें होने से ज्ञान-बुद्धिकारक, छठे होने से द्रव्य-लाभद, सातवें होने से सुखकारी, आठवें होने से मरण वा मृत्युतुल्य कष्टकारक होता है। नौवें चन्द्र होने से भाग्योदय, दसवें से सुख-सम्पत्ति की प्राप्ति, ग्यारहवें से सब प्रकार से लाभ तथा बारहवें होने से अशुभ फल होता है। आवश्यकता पड़ने पर जन्म-राशि से बारहवें चन्द्र होने पर भी चन्द्र-दान करके यात्रा किया जा सकता है। दान में दही, चावल, घी, चाँदी, मोती आदि श्वेत पदार्थ दिये जाते हैं।

आवश्यक में तात्कालिक चन्द्र के सूक्ष्म दिशा-निवास का काल-ज्ञान—प्रत्येक राशि में चन्द्रमा मध्यमान से सवा दो दिन यानी १३५ घटी रहता है। अतएव इतने ही समय तक उस राशि की दिशा में भी निवास करता है; किन्तु आवश्यक कार्यों में उसके सूक्ष्म दिशा-वास के समय का उपयोग भी किया जाता है। तब एक राशि में रहने पर भी पूर्वादि चारों दिशाओं में दो बार उसका भ्रमण हो जाता है। निम्न चक्र में क्रमशः १ से ८ तक की संख्याओं के साथ पूर्वादि चारों दिशाओं में दो बार के चन्द्र-वास की घटियाँ दी गई हैं। सं० १ से ४ तक की उसी दिशा से चन्द्र का भ्रमण आरम्भ होता है जिस दिशा की राशि में वह प्रवेश करता है। जैसे—किसी दिन चन्द्रमा तुला राशि में आया तो हम पहले तुला राशि की दिशा पश्चिम बतला आये हैं। और निम्न चक्र में १ से ८ तक की संख्या में तीसरी संख्या पश्चिम की है जिसके नीचे २१ घटी लिखी है। अतः चन्द्र तुला में आने के समय से २१ घटी तक पश्चिम दिशा में रहेगा, पश्चात् वहाँ से अगली दिशा उत्तर में जाकर वहाँ १६ घटी तक निवास करेगा। इसी प्रकार से क्रमशः पूर्व, द०, प०, उत्तर एवं पुनः पूर्व, दक्षिण में उन-उन दिशाओं के नीचे लिखी घटियों के समय तक निवास करेगा; पश्चात् अग्रिम राशि वृश्चिक में प्रवेश के साथ वृश्चिक की दिशा 'उत्तर' में चला जायेगा और वहाँ १६ घटी तक रहकर फिर पूर्ववत् अग्रिम दिशाओं में भ्रमण व निवास करता रहेगा।

१ पूर्व	२ दक्षिण	३ पश्चिम	४ उत्तर	५ पूर्व	६ दक्षिण	७ पश्चिम	८ उत्तर
१७ घटी	१५ घटी	२१ घटी	१६ घटी	१७ घटी	१४ घटी	२० घटी	१५ घटी

(गृह-भूमि)-वास्तु-विचार

गजपृष्ठ—जिस स्थान में दक्षिण, पश्चिम, नैर्ऋत्य और वायव्यकोण की ओर भूमि उच्च हो, उसको गजपृष्ठ कहा गया है। उसमें घर बनाकर बसने से धन-धान्य, सन्तान, आयु की वृद्धि होती है।

कूर्मपृष्ठ—जहाँ मध्य में उच्च हो और चारों दिशाओं में झुकाव हो, वह कूर्मपृष्ठ कहलाता है। उस स्थान में वास करने से नित्य उत्साह, धन-धान्य, सन्तान, आरोग्य, यश और प्रतिष्ठा की वृद्धि होती है।

दैत्यपृष्ठ—ईशानकोण, पूर्व और अग्निकोण में उच्च हो, और पश्चिम में नीचा हो तो वह दैत्यपृष्ठ कहलाता है। उसमें वास करने से अशुभ फल कहा गया है।

नागपृष्ठ—जहाँ दक्षिण और उत्तर दोनों दिशा में उच्च हो, बीच में नीचा हो, वह स्थान नागपृष्ठ कहलाता है जो वास करने में अत्यन्त अशुभ कहा गया है।

ब्राह्मणी भूमि—जहाँ की मिट्टी श्वेत वर्ण की और कोमल हो, वह ब्राम्हणी भूमि कही गयी है जो ब्राह्मणों के लिए विशेष शुभप्रद है।

क्षत्रिया भूमि—जहाँ की मिट्टी लाल देखने में आवे, वह क्षत्रियों के लिए शुभप्रद है।

वैश्या भूमि—जहाँ की मिट्टी का वर्ण पीला हो, वह भूमि वैश्यों के लिए शुभप्रद है।

शूद्रा भूमि—जहाँ की मिट्टी कृष्णवर्ण हो, वह शूद्रों के बसने योग्य है।

चारों वर्ण अपने वर्ण की भूमि में वास करें तो शुभ फल कहा गया है। ब्राह्मणों के लिए सब भूमि बसने-योग्य कही गयी है।

उपर्युक्त विचार वास्तव में राजाओं आदि के लिये (जिनके पास अधिक भूमि हो उनके लिए) कहा गया है। बहुत से ऋषियों का मत है कि "मानश्चक्षुषोर्यत्र संतोषो जायते भूवि। तत्र कार्यं गृहं सर्वैरितिगर्गादि सम्मतम् ॥" जिस मनुष्य को जहाँ की भूमि पसन्द हो, वहाँ घर बनाकर बसे--ऐसी गर्गादि कतिपय मुनियों की सम्मति है।

वास्तु-भूमि की लम्बाई उत्तर-दक्षिण होनी चाहिए अथवा चौकोर भूमि में वास करना चाहिए। पूर्व-पश्चिम लम्बाई में अशुभ फल कहा गया है।

शुभाशुभ भूमि-विचार--जिस भूमि पर मकान बनाना है, उस भूमि में सूर्यास्त समय एक हाथ चौकोर और एक हाथ गहरा गड्ढा खोद कर जल से भर दें। प्रातः यदि जल रहे तो शुभ, नहीं रहे तो मध्यम, गड्ढा फट जाय तो अशुभ भूमि समझें।

नींव खोदने में पत्थर आदि मिलने का फल--नींव खोदने में पहले पत्थर, ईंट, धन,तांबा आदि मिलने से सुख-लाभ; कपाल, हड्डी, कोयला, केशादि मिलने से कष्ट होता है।

मण्डलेश का निर्णय—गृह-स्वामी के हाथ से लम्बाई चौड़ाई नाप कर दोनों के योग को दूना करके ८ से भाग देने पर शेष १ में इन्द्र, २ में विष्णु, ३ में यम, ४ में वायु, ५ में कुबेर, ६ में शिव, ७ में ब्रह्मा, ८ शेष में गणेश मण्डलेश होते हैं।

दूसरा प्रकार—लम्बाई-चौड़ाई के योग में ९ से भाग देने पर शेष १ में दाता, २ में भूपति, ३ में नपुंसक, ४ में चौर, ५ में विचक्षण, ६ में भोगी, ७ में धनाढ्य, ८ में दरिद्र एवं ९ में कुबेर मण्डलेश होता है।

चन्द्र सूर्य-वेध-विचार--चन्द्र-वेधी गृह होना चाहिए और सूर्य-वेधी जलाशय होना चाहिए। ह्रद या वाटिका सूर्यवेधी और चन्द्रवेधी दोनों शुभ मानी जाती है। पूर्व-पश्चिम लम्बा मकान सूर्यवेधी होता है और उत्तर-दक्षिण लम्बा मकान चन्द्रवेधी होता है। मकान चन्द्रवेधी शुभ होता है। चन्द्रवेधी मकान में धन और कुल की वृद्धि होती है। सूर्यवेधी मकान धन, कुल का नाशक होता है। बाग-बगीचा सूर्य-वेधी और चन्द्रवेधी दोनों प्रशस्त माना गया है। देवालय, मन्दिर के लिये सूर्यवेधी और चन्द्रवेधी का विचार नहीं होता।

शिलान्यास—पहिले दक्षिण-पूर्व के कोण में नींव के अन्दर पूजा करके शिला की स्थापना करनी चाहिए, बाकी ४ शिलाओं को स्तम्भ-शिला के चारों तरफ स्थापित करना चाहिए।

राशि-द्वार का निर्णय--ब्राह्मण वर्ण (कर्क, वृश्चिक, मीन, राशिवालों) पूर्व दिशा का, क्षत्रिय वर्ण (मेष, सिंह, धनु राशिवालों) को उत्तर दिशा का, वैश्य वर्ण (वृष, कन्या, मकर राशिवालों) को दक्षिण दिशा का और शूद्र (मिथुन, तुला, कुम्भ राशिवालों) को उत्तरदिशा का द्वार शुभ होता है।

गृह-द्वार का निर्णय—मकान के जिस भाग में द्वार करना हो, उस भाग के ९ भाग करके पाँच भाग दक्षिण और तीन भाग उत्तर में छोडकर शेष भाग में द्वार बनाना चाहिए। वाम दक्षिण का अर्थ मकान से निकलते समय का लेना चाहिए।

देव-मन्दिर के पास मकान बनाने का निषेध—ब्रह्मा के मन्दिर के बगल में तथा विष्णु, सूर्य, शिव-मन्दिर के सामने, जैन-मन्दिर के पिछे, देवी-मन्दिर के किसी भी भाग में गृह बनाना शुभ नहीं होता है।

दरवाजों (किवाड़ों) का फल—कपाट (दरवाजा) स्वयं खुलता है तो उन्माद, स्वयं बन्द हो तो कुल-नाश, प्रमाण से अधिक हो तो राज-भय, प्रमाण से कम चोर भय, कष्ट हो। द्वार के ऊपर द्वार नहीं रखना। किवाड़ पतले अशुभ, विशेष मोटे होने से क्षुधा-भय, टेढ़े से गृह-स्वामी को कष्ट, अन्दर की तरफ टेढ़े होने से स्वामी की मृत्युकारक, बाहर की तरफ टेढ़े होने से विदेश-वास, दूसरी दिशा में चोर-भय करता है।

समय-शुद्धि-विवेक

विश्व के उत्पादन, पालन, प्रलय करनेवाले भगवान् काल के अनन्त अवयवों में वर्ष, मास, दिन, लग्न और होरा ये ५ अङ्ग, प्रकारान्तर से तिथि, वार, नक्षत्र योग और करण ये ५ अङ्ग, प्रधान है। इनकी शुद्धि देखकर शुभ कार्य करने का शास्त्रादेश है। इसलिये हम इनके परिचय और शुद्धि-अशुद्धि को कहते हैं।

वर्ष के भेद और मान—सौर, चान्द्र, सावन और बार्हस्पत्य-भेद से वर्ष चार प्रकार के होते हैं।

१. **सौर**—सूर्य के मेष-संक्रमण-काल से पुनः अग्रिम मेष-संक्रान्ति पर्यन्त (सूर्य का १२ राशियों का भोग-काल) सौर वर्ष होता है; इसमें सावयव ३६५ दिन होते हैं।

२. **चान्द्र**—चैत्र शुक्ल प्रदिपदादि से अग्रिम चैत्र शुक्ल प्रतिप्रदारंभ पर्यन्त चान्द्र वर्ष कहलाता है। इसमें सावयव ३५४ दिन होते हैं।

३. **सावन**—वर्ष पूरे ३६० दिन होते हैं।

४. **बार्हस्पत्य वर्ष**—मध्यमगति से गुरु का एक-एक राशि का भोग-काल बार्हस्पत्य वर्ष कहलाता है जो सदा एक रूप रहता है; किन्तु अहोरात्र की ६० घटी में १२ राशियों के उदय होने के कारण प्रत्येक घटी के सम्बन्धजन्य गुणभेद से उसके ६० नाम कहे गये हैं जो सृष्टियादि से 'विजय' आदि और शकादिसे 'प्रभवादि' नाम से प्रसिद्ध हैं।

मेषादि राशियों में स्पष्ट गुरु के रहने पर उपर्युक्त जिस बार्हस्पत्य वर्ष की समाप्ति (पूर्ति) होती है, उसका आश्विन आदि नाम होता है; जैसे मेष में आश्विन, वृष में कार्तिक, मिथुन में मार्गशीर्ष इत्यादि; पूरी सूची निम्न तालिका में देखिए—

मेष	आश्विन	विजय	विश्वावसु	पिंगल	शुक्ल	वृष
वृषभ	कार्तिक	जय	पराभव	कालयुक्त	प्रमोद	चित्र.
मिथुन	मार्गशर्ष	मन्मथ	प्लवङ्ग	सिद्धार्थी	प्रजापति	सुभानु
कर्क	पौष	दुर्मुख	कीलक	रौद्र	अंगिरा	तारण
सिंह	माघ	हेमलंब	सौम्य	दुर्मति	श्रीमुख	पार्थिव
कन्या	फाल्गुन	विलंब	साधारण	दुंदुभि	भाव	व्यय
तुला	चैत्र	विकारी	विरोधकृ	रुधिरो.	युवा	सर्वजित्
वृश्चि.	वैशाख	शर्वरी	परिधावी	रक्ताक्षो	धाता	सर्वधारी
धनु	ज्येष्ठ	प्लव	प्रमादी	क्रोधन	ईश्वर	विरोधी
मकर	आषाढ़	शुभकृत	आनन्द	क्षय	बहुधान्य	विकृत
कुम्भ	श्रावण	शोभन	राक्षस	प्रभव	प्रमाथी	खर
मीन	भाद्रपद	क्रोधी	नल	विभव	विक्रम	नन्दन

कादाचित् एक ही राशिस्थ स्पष्ट गुरु में २ संवत्सर की पूर्ति (समाप्ति) हो तो दोनों के एक ही नाम होते हैं। उनमें प्रथम शुद्ध वर्ष और द्वितीय अधिक वर्ष (मल वर्ष) कहलाता है जो शुभ कर्म में त्याज्य कहा गया है।

एवं कदाचित् किसी राशिस्थ स्पष्ट गुरु में उक्त संवत्सर की पूर्ति न हो तो उसकी संज्ञा का लोप हो जाता है। इसलिए यह लुप्त या क्षयसंज्ञक संवत्सर कहलाता है। यह भी शुभ कर्म में त्याज्य कहा गया है।

बार्हस्पत्य वर्ष में व्यवहारार्थ मकरन्दादि करण ग्रन्थानुसार ३६० दिन होते हैं; किन्तु सिद्धान्त गणितेन वास्तव मध्यगति से सावयव ३६१ दिन होते हैं। इस वर्ष के आरम्भ और समाप्ति (पूर्ति) का ज्ञान गणित द्वारा किया जाता है। जैसे—

"शकेन्द्रकालः पृथगाकृतिघ्नः.
शशाङ्कनन्दाश्वियुगैः ४२६१ समेतः।
शराद्रिवस्विन्दुहृतः १८७५
सलब्ध षष्टयाप्तशेषे प्रभवादयोऽब्दः॥"

इस रीति से पञ्चाङ्गकार अपने-अपने पञ्चाङ्ग में सौर वर्षारम्भ (मेषार्क-संक्रान्ति-काल) में वर्तमान बार्हस्पत्य संवत्सर के भुक्त और भोग्य मासादि काल लिखते हैं। भोग्य मासादि तुल्य सूर्य के राश्यादि में संवत्सर की पूर्ति होती है। उस समय में देखना चाहिए कि स्पष्ट गुरु किस राशि में हैं; उसी राशि-सम्बन्धी संवत्सर का नाम वर्षारम्भ में समझे और तदनुसार वर्षभर संकल्पादि में उसी नाम का उल्लेख करे; किन्तु बहुत से पञ्चाङ्गकार इस प्रकार से भुक्त, भोग्य मासदि-साधन करके भी स्वयं नहीं समझते कि इसका प्रयोजन क्या है? ज्योतिष-संहितादि ग्रन्थों में कहा गया है—

"कल्पादितो कध्यमजीवभुक्ता ये राशयः षष्टिहृतावशेषाः।
संवत्सरास्तेविजयाश्विनाद्या इतिज्यमानं किल संहितोक्तम्॥

शुद्ध अधिक और क्षय-वर्षों के लक्षण—

"स्फुटेज्येऽजादिगे यो यो वत्सरः परिपूर्यते।
आश्विनादिकसंज्ञकोऽसौ ज्ञेयो विज्ञैश्च मासवत्॥"
अतीचारेण यो राशिर्लंध्यते देवमन्त्रिणा।
तद्राशिवत्सरो लुप्तो गर्हितः शुभकर्मसु॥

यहाँ अतिचार के स्थान में अतीचार शब्दका प्रयोग है—इससे गुरु के अति-अतिचार (मर्यादा उल्लंघनपूर्वक अति-

चार) का बोध होता है। यह ज्योतिर्विद् का सम्प्रदाय है; क्योंकि अतिचार का अर्थ कोशकार ने भी दो प्रकार किया है, यथा—शब्दकल्पद्रुम में अतिचार = अतिचरणम् शीघ्र गमनम्। अतिक्रम्य चरणम्। ग्रह के अतिचार (शीघ्रगति) के दो भेद होते हैं। अतिचार (शीघ्रचार) तथा अत्यतिचार (अतिशीघ्रचार) जो सिद्धान्त एवं संहिता-ज्योतिष में प्रतिपादित हैं। उसे बहुत से ज्योतिषी पढ़ लेने पर भी नहीं जानते हैं; देखिये सूर्य-सिद्धान्त एवं ज्योतिर्विदाभरण में सूर्यादि ग्रहों के ८ प्रकार के चार कहे गये हैं, यथा—

१ वक्रचार, २ अतिवक्रचार, ३ विकलचार, ४ मन्दचार, ५ अतिमन्दचार, ६ मध्यचार, ७ अतिचार, ८ अति-अतिचार।

ये सूर्यादि सातों ग्रह के होते हैं; किन्तु आलसी अल्पज्ञ ज्योतिषी समझते हैं कि सूर्य और चन्द्रमा वक्री और अतिचारी नहीं होते हैं। वे म. म. महेश ठक्कुरकृत निबन्ध को ही देखें, जिसमें लिखा है—

"क्वचिद्वक्रातिचाराभ्यां यदाक्रामति भास्करः।"

म. म. महेश ठक्कुरने लुप्त संवत्सर का निर्णय बहुत ही स्पष्ट शब्दों में सोहरण गुरु-चार के अनुसार बतलाया है जिसमें उन्होंने संहितोक्त लुप्त संवत्सर के अनेक वाक्यों में कहे हुए लक्षणों में सबसे सुबोध यह लक्षण दिया है—

"पूर्वराशिं परित्यज्याऽपूर्णे संवत्सरे गुरुः।
अतीचारस्तदा ज्ञेयः परराशिगतो यदा॥

इसका स्पष्ट शास्त्रसम्मत अर्थ यह है कि यदि किसी अपूर्ण (वर्तमान) संवत्सर में गुरु पूर्व-राशि का त्याग करे (अर्थात् वर्तमान संवत्सर सम्बन्धी राशि में प्रवेश करे, पश्चात् संवत्सर-पूर्ति (समाप्ति) से पहिले ही पर(अग्रिम) राशि में चला जाय तो यह गुरु का अतीचार (अत्यतिचार) होता है।

इस प्रकार का अतीचार होने पर उपर्युक्त लक्षण के अनुसार लुप्त संवत्सर होता है; उदाहरणार्थ—

मेष-संवत्सर के पूर्ति-समय में गुरु मेष में रहे, वृष संवत्सरारम्भ हो जाने पर पूर्व राशि(मेष) को त्याग कर वृष में प्रवेश करके वृष-संवत्सर-पूर्ति से पहले ही पर-राशि (मिथुन) में चला जाय तो गुरु का अतीचार (अत्यतिचार) माना जायेगा। अत्यतिचार होने पर उसके ३ भेद होते हैं—लघु, विशिष्टलघु(मध्य), और महाअतिचार।

जैसे, संवत २०२१ और २२ के पञ्चाङ्गों को देखिए। संवत् २०२१ के पञ्चाङ्ग में मेषार्ककालीन बार्हस्पत्य संवत्सर ५१वें 'पिंगल' के भुक्त भोग्य मासादि दिये हैं। भोग्य मासादि तुल्य सूर्य-राश्यादि के समय में जब 'पिङ्गल' नामक संवत्सर की पूर्ति(समाप्ति) हुई तब स्पष्ट गुरु मेष में था। अतः उस राशि सम्बन्धी इसका नाम आश्विन हुआ तथा संवत् २०२२ में ५२वें 'कालयुक्त' नामक संवत्सर की पूर्ति के समय गुरु को वृष में रहना चाहिए था, जिससे शुद्ध संवत्सर होता एवं उसका राशि-सम्बन्धी नाम 'कार्तिक' होता; किन्तु संवत्सर-पूर्ति के पूर्व ही अतिचार गति से वह मिथुन में चला गया था तथा मिथुनस्थ गुरु में ही संवत्सर-पूर्ति हुई थी। इस तरह वृषराशि का उल्लंघन हो गया था। अतः वृष में संवत्सर-पूर्ति नहीं होने से उस राशि सम्बन्धी 'कार्तिक' संज्ञा का लोप गुरु के अत्यतिचारवशात् हो गया था; परञ्च पुनः वक्र-गति होकर पूर्व-राशि वृष में गुरु ने त्रिधा भोग किया था; अतएव उस समय केवल २८ दिन त्याज्यवाला लघ्वातिचार माना गया जिसको कई प्रान्त के पञ्चाङ्गकार महातिचार कहते थे; पीछे समझाने पर समझ सके।

इस तरह जब सं. २०२२ में मिथुन राशि में संवत्सर की पूर्ति होने के बाद सं० २०२३ में अग्रिम राशि कर्क में संवत्सर की पूर्ति हो गयी तो फिर वह लुप्त संवत्सर कदापि नहीं माना जा सकता था। ज्योतिषशास्त्र का यह अकाट्य सिद्धान्त है कि किसी एक राशि में अत्यतिचार होने पर १२ वर्ष पर्यन्त पुनः अत्यतिचार नहीं हो सकता है।

मास-भेद—सौर, चांद्र, सावन भेद से मास तीन प्रकार के होते हैं। बार्हस्पत्य मान से मास और दिन नहीं होते।

सौर—एक रवि-संक्रान्ति से दूसरी संक्रान्ति पर्यन्त सौर मास।

चांद्र—शुक्ल प्रतिपदादि से कृष्ण अमान्तपर्यन्त ३० तिथियों का चान्द्र मास।

सावन—३० सावन दिन (सूर्योदयावधिक) का सावन मास होता है। सावन मास में क्षय और अधिक मास नहीं होते हैं।

मास-शुद्धि—एक सौर वर्ष में जब तक सौर मास और चान्द्र मास की संख्या समान रहती है तब तक मास शुद्ध समझा जाता है अर्थात् सौर वर्ष में १२ संक्रान्ति और १२ अमान्त होने पर सब मास शुद्ध होते हैं। संक्रान्ति-संख्या से अमान्त-संख्या न्यूनाधिक होने पर क्षय-मास और अधिक-मास होता है।

शुद्ध, क्षय, अधिक मास के लक्षण—

"यत्रार्वभेऽब्जमासस्य पूर्तिः स शुद्धसंज्ञकः।
पूर्त्यभावे क्षयाख्या स्यात् पूर्तिद्विऽस्वेधिकाऽग्रिमा"॥

सूर्य के मेषादि प्रत्येक राशि में रहते जिस एक चान्द्र मास की पूर्ति(समाप्ति, अमान्त) हो वह शुद्ध, जिस राशिस्थ सूर्य में मास-पूर्ति (अमान्त) नहीं हो, वह क्षय (लुप्त)संज्ञक मास होता है। किसी राशिस्थ सूर्य में २ मास की पूर्ति (२ अमान्त) हो तो उन दोनों मास की एक ही संज्ञा होती है और उनमें प्रथम मास शुद्ध और द्वितीय अधिमास कहलाता है।

शुद्धतिथि-लक्षण—

"यत्र वारस्य पूर्तिः स्यात् सा शुद्धा तिथिरुच्यते।
पूर्त्यभावे क्षयाख्या स्यात् पूर्तिद्विस्वेऽधिकाग्रिमा"॥

जिस तिथि में रवि आदि किसी एक वार की पूर्ति (समाप्ति यानी सूर्योदय) हो वह शुद्ध तिथि, जिस तिथि

में वार-पूर्ति(सूर्योदय) नहीं हो, वह क्षय(लुप्त)संज्ञक तिथि होती है तथैव जिस तिथि में २ वार-पूर्ति(२ सूर्योदय) हो, उनमें प्रथम शुद्ध और द्वितीय अधितिथि कहलाती है; कहा भी है—

"यां तिथिं समनुप्राप्य ह्युदयं याति भास्करः।
सा तिथिः सकला ज्ञेया स्नानदानादि कर्मसु॥"

खेद का विषय है कि 'पूर्ति' शब्द के अर्थ में वैयाकरण के द्वारा अनेकार्थ करने पर बहुत से ज्योतिषी कहलानेवाले भी भ्रान्त हो जाते हैं। गणित में केवल प्रत्यक्ष प्रमाण माना जाता है। प्रत्यक्ष प्रमाणसिद्ध शब्द का विश्व के विद्वान एक ही अर्थ कर सकते हैं।

नक्षत्र-शुद्धि—भी तिथि के समान सूर्योदय से ही समझी जाती है। उ. षा. के अंतिम चतुर्थांश और श्रवण के आरम्भिक पञ्चदशांश को किसी-किसी कार्य में "अभिजित्" नाम से उपयोग में लेते हैं; तारा चन्द्रमा बनाने में उसकी आवश्यक्ता नहीं होती है।

लग्न—राशि के पूर्व-क्षितिज में उदय को लग्न कहते हैं। राशि के २ भेद होने के कारण लग्न के भी २ भेद होते हैं। १. दृष्ट फलार्थ, जिनके उदय-मान, देश-भेद से, अतुल्य होते हैं। २. अदृष्ट-फलार्थ, जिनका उदय-मान विश्वभर के लिए तुल्य ५, ५ घटी का होता है। विस्तृत विवरण 'लग्न-विवेक' नामक पुस्तक में देखिये।

होरा—एक राशि के आधे (१५ अंश) को होरा कहते हैं। राश्युदयमान का आधा अढ़ाई घटी अर्थात् १ घंटा होरा का मान होता है।

राशियों की दिशा—मेष, वृष, धनु की दिशा पूर्व है; वृष, कन्या, मकर की दक्षिण; मिथुन, तुला, कुम्भ की, पश्चिम; कर्क, वृश्चिक, मीन की उत्तर दिशा है। राशियों की दिशा ही उस राशि के चन्द्र और लग्न की दिशा होती है।

तारा-विचार—जन्म या नाम-नक्षत्र से इष्ट दिन के नक्षत्र तक गिने; जो संख्या हो, उसमें ९ के भाग देने से शेष तारा होता है। उनमें २, ४, ६, ८, ९ शुभ ३, ५, ७ अशुभ, १ मध्यम है।

चन्द्रमा-विचार—अपनी राशि से इष्ट दिन के चन्द्र-राशि तक जो संख्या होती है, वही चन्द्रमा समझा जाता है; जिनमें ४, ८, १२, अशुभ और बाकी शुभ होता है।

आवश्यक कार्य के लिए मुहूर्त-विचार—महर्षियों का आदेश है कि नित्य और आवश्यकीय कार्य के लिए मुहूर्त देखने की आवश्यकता नहीं होती है। ऐसे कार्यों को जभी अनुकूलता देखने में आये, तभी कर लेना चाहिये; जैसे—कृषि-कर्म एवं नित्य-यात्रादि।

प्रायः सब लोगों को कहीं-न-कहीं यात्रा करनी पड़ती है। यदि गन्तव्य स्थान में एक ही दिन में पहुँच जाने की संभावना हो तो वहाँ वाम, पृष्ठ चन्द्र या दिक्शूलादि का दोष नहीं लगता है।

युद्धादि में विजय या व्यापर में लाभ की इच्छा से यात्रा कननी हो तो वहाँ तिथि, चन्द्र, तारा आदि में अधिकांश श्रेष्ठ हो, तब यात्रा करनी चाहिये।

किसी भी कार्य के लिए सब प्रकार समय अनुकूल नहीं हो सकता है। अतः अधिकांश शुभ(सुयोग) हो तो कार्य का प्रारम्भ कर देना चाहिए। आर्ष वचन है कि—

"अयोगश्च सुयोगश्च द्वावेतौ भवतो यदि।
अयोगो हन्यते तत्र सुयोगश्च प्रवर्तते॥

शुभ और अशुभ फल देने में समय के ५ अङ्ग प्रधान हैं। १ वर्ष, २ मास, ३ दिन (तिथि), ४ लग्न और ५ मुहूर्त। किसी कार्य में पाँचों शुद्ध मिल जाँय तो कार्य की सिद्धि प्रायः होती है। ये उपरोक्त पाँचों काल उत्तरोत्तर बली हैं। जैसे वर्ष अशुद्ध हो तो मास की शुद्धि से वह शुद्ध हो जाता है। एवं तिथि (दिन) की शुद्धि से अशुद्ध मास भी शुद्ध समझा जाता है। तथैव लग्न की शुद्धि से तिथि (दिन) भी शुद्ध हो जाता है। इसलिए कहा है कि—"सर्वे दोषाः विनश्यन्ति लग्नशुद्धिर्यदा भवेत्। यह ध्यान रखना चाहिए कि एक-एक लग्न का समय-मान ५-५ घटी और एक-एक मुहूर्त का २-२ घटी होता है। सर्व कार्य लिए यह लग्न-शुद्धि कही गयी है—

"व्ययाष्ट शुद्धोपचये लग्नगे शुभदृग्युते।
चन्द्रे त्रिषड्दशायस्ते सर्वारम्भः प्रसिद्ध्यति॥

अर्थात्—अहोरात्र में १२ राशियों के लग्न बीतते हैं। इष्ट लग्न यदि अपनी जन्म-राशि से ३, ६, १०, ११वीं राशि हो तो अति श्रेष्ठ; ८, १२ राशि अशुभ और लग्न की बाकी राशियाँ मध्यम कही गयी हैं। लग्न ऐसा लेना जिसमें १२, ८वें स्थान में कोई ग्रह नहीं हो और लग्न शुभ ग्रह से युत, दृष्ट हो तथा चन्द्रमा लग्न से ३, ६, १०, ११ में-से किसी स्थान में हो तो कार्य की सिद्धि होती ही है।

पूर्व समय में भारत में कोई भी किसी कार्य को अपने अनुकूल समय में सुलग्न देखकर ही कर लेते थे जो प्रत्येक दिन मिलते ही रहते हैं। इधर मुसलमानी शासन काल में नाना ग्रन्थकार प्राचीन प्रथा को नष्ट कर अपने-अपने अनुभव से नाना प्रकार के प्रतिबन्ध लगाते गये जो प्रत्यक्षविरुद्ध हैं; किन्तु उन लोगों ने भी आर्षवचन की रक्षा के लिए आदेश दे दिया है कि तिथि, वार, नक्षत्र और लग्न ये स्थूल और सूक्ष्म दो प्रकार के होते हैं। यदि स्थूल वारादि अशुभ हों तो सूक्ष्म शुभ वारादि देखकर कार्य कर लेना चाहिए। उसमें स्थूल का दोष नहीं रहता जैसे, रवि आदि वार दो प्रकार के हैं: एक तो २४ होरा घंटों का और दूसरा एक-एक होरा (घंटा) का अर्थात् एक स्थूल (अहोरात्र) वार में २४ क्षणवार (होरा) बीतते हैं। उदाहरण—मान लीजिए, किसी को पूर्व दिशा में लाभ या विजय-कामना से जाना जरूरी हो जाय और उस दिन स्थूल वार शनि हो तो पूर्व दिशा में दिशाशूल-दोष कहा गया है। अतः उस दिन जब रवि या शुक्र की होरा (क्षणवार) प्राप्त हो, उस समय के स्थूल शनिवार में भी

पूर्वदिशा में दिग्बल ही प्राप्त होगा और शनिवार का दोष न होकर शुभ फल-ही होगा। क्षणवार जानने की सरल रीति इसी पुस्तक के होरा-मुहूर्त-प्रकरण में देखें।

सूक्ष्म तिथि—प्रत्येक तिथि में आरम्भ से ४,४ घटी उसी तिथि से आरम्भ कर क्रमशः १५तिथियाँ बीतती है। जैसे, चतुर्थी के आरम्भ से ४ घटी तक चतुर्थी, उसके बाद ४ घटी पञ्चमी, फिर उसके बाद ४ घटी तक षष्ठी आदि होती है। अतः चतुर्थी में ४ घटी के बाद जो ४ घटी पञ्चमी की होती है, उसमें कार्य करने से पञ्चमी तिथि का ही शुभ फल होगा; चतुर्थी (रिक्ता) का दोष नष्ट हो जायेगा।

सूक्ष्म क्षण-नक्षत्र—प्रत्येक दिन सूर्योदय-काल से अहोरात्र में २, २ घटी सब नक्षत्र आगे लिखे क्रम से बीतते हैं जो मुहूर्त कहलाते हैं; उनके नाम ये हैं—रौद्र[१]श्चैत्र[२]श्च मैत्रश्च[३] तथा सारभाटः[४] स्मृतः। सावित्रश्च[५] जयन्तश्च[६] गांधर्वः[७]कुतपः[८]स्मृतः॥ रौहिण[९]श्च विरिचश्च[१०] त्रिजयो[११] नैऋत[१२]स्तपः[१३]। माहेन्द्रो[१४] वारुणश्चैव[१५] भेदाः पञ्चदश-स्मृतः॥ अशुभ स्थूल नक्षत्र में भी शुभ क्षणनक्षत्र देखकर काम करना चाहिए। जैसे—प्रतिदिन १ आर्द्रा, २ आश्लेषा, ३ अनुराधा, ४ मघा, ५ धनिष्ठा, ६ पूर्वाषाढ़ा ७ उत्तराषाढ़ा, ८ अभिजित्, ९ रोहिणी, १० ज्येष्ठा, ११ विशाखा, १२ मूल, १३ शततारका, १४ उत्तराफाल्गुनी, १५ पूर्वाफाल्गुनी, १६ आर्द्रा, १७ पूर्वाभाद्रपदा, १८ उत्तराभाद्रपदा, १९ रेवती, २० अश्विनी, २१ भरणी, २२ कृत्तिका, २३ रोहिणी, २४ मृगशिरा, २५ पुनर्वसु, २६ पुष्य, २७ श्रवण, २८ हस्त, २९ चित्रा, ३० स्वाती—इस क्रम से क्षण-नक्षत्र भुक्त होते हैं।

उदाहरण—स्थूल नक्षत्र भरणी हो तथा उसी दिन यात्रा करनी हो तो भरणी में यात्रा निषिद्ध है। अतः उस दिन विहित मुहूर्त (क्षण-नक्षत्र) अनुराधा, धनिष्ठा या मृगशिरा आदि में यात्रा करने से भरणी का दोष न होकर शुभ फल ही होगा।

इस प्रकार महर्षियों के आदेशानुसार आवश्यकता में सब दिन शुभ वार, शुभ तिथि और शुभ नक्षत्र प्राप्त होते रहते हैं। इसीलिये पूर्व समय में स्वयं महर्षिगण योग्य कन्या प्राप्त होने पर उक्त शुभ समय और सुलग्न देखकर सभी दिनों में पाणिग्रहण कर लिया करते थे। अतः गृह्यसूत्रादि में भी 'विवाहः सार्वकालिकः' आदि वचन देखने में आते हैं।

अतः पञ्चाङ्गकारों एवं पुरोहितों को लग्न और मुहूर्त का ज्ञान आवश्यक है। आजकल आलस्यवश बहुत से लोग सूक्ष्म लग्न, मुहूर्त न जानकर स्थूल नक्षत्र, वार का ही मुहूर्त कह देते हैं जिसका सुधार होना आवश्यक है। स्थूल और सूक्ष्म दोनों ही शुभ मिल जायें तो सुवर्ण में सुगन्ध समझना।

* वार-कृत्य *

रविवार—राज्याभिषेक, गाना बजाना, नयी सवारी पर चढ़ना, राज-सेवा, गाय-बैल का लेन-देन, हवन, यज्ञादि, मन्त्रोपदेश लेना-देना, औषधि एवं शस्त्र-व्यवहार, युद्ध, क्रय-विक्रय।

सोमवार—पेड़-पौधे, उपवन लगाना, बीजारोपण स्त्रीसङ्ग, गायन, यज्ञादि कार्य, पुष्प, वस्त्रादि धारण।

मंगलवार—फूट डालना, अनृत, चोरी, विष, अग्नि और शस्त्र-प्रयोग, संग्राम, वध, कपट, दम्भ, सैन्यकर्म, विराम।

बुधवार—चातुरी, पुण्यकार्य, लिखना-पढ़ना, कला-कौशल, चित्र बनाना, धातु क्रिया, नौकरी, प्रवेश, युक्ति, मैत्री, सन्धि, व्यायाम और वाद-विवाद।

गुरुवार—धर्मकृत्य, नवग्रहादि-पूजा, यज्ञ, विद्याभ्यास, माङ्गलिक कृत्य, वस्त्र-व्यवहार, गृह-कार्य, यात्रारम्भ, रथ, घोड़ा, औषधि, आभूषण सम्बन्धी सभी शुभ कार्य।

शुक्रवार—स्त्री, गायन, शय्या, मणि, रत्न, हीरा, सुगन्धि, वस्त्रालंकार, जमीन, जायदाद, वाणिज्य, गौ, द्रव्य, भण्डार, खेती-बारी के काम।

शनिवार—पाप, मिथ्या भाषण, चोरी, विष, अर्क निकालना, शस्त्र, नौकर-चाकर सम्बन्धी कार्य, हाथी बाँधना, मंत्र-दीक्षा लेना, गृह-प्रवेश एवं सर्व स्थिर कार्य।

आवश्यक कार्य में अनुपयुक्त दिन की शान्ति के लिए रविवार में पान-दान, सोमवार में श्रीखण्ड दान, मंगलवार में भोजन-दान बुधवार में फूल-दान, गुरुवार में विष्णु, शिव को नमस्कार, शुक्रवार में श्वेत वस्त्र-दान करना चाहिए और शनिवार में तेल लगाकर स्नान करना चाहिए।

नोट—१. आवश्यक में किसी वार के कृत्य उसी वार के होरा में अन्य दिनों में भी किये जा सकते हैं, क्योंकि शास्त्र में होरा को क्षण-वार कहा गया है। 'होरा-चक्र' पृष्ठ १८ पर देखें।

२. सोम बुध गुरु शुक्रवार में लिखे कृत्यों के अलावा अन्य सब सुकार्य भी किये जा सकते है; किन्तु रवि, मंगल शनिवार को जो कार्य लिखा है, वही करना चाहिए।

—स्व० पं० श्रीसीताराम झा

छींक-विचार—छींक प्रायः सब दिशाओं की खराब होती है। अपनी छींक महा अशुभ होती है; गौ की छींक मरण करती है। बायीं ओर और पीछे की ओर छींक हो तो दोषकारक नहीं है, 'सम्मुख छींक लड़ाई भाखे, छींक दाहिनी द्रव्य बिनासे। ऊँची छींक कहै जयकारी, नीची छींक होय भयकारी॥' कन्या बिधवा, मालिन, धोबिन, रजस्वला, वेश्या, चमाइन की छींक विशेष अशुभ होती है; आसन, शयन, शौच, दान, भोजन, औषधि-सेवन, विद्यारम्भ और बीज बोने के समय, युद्ध या विवाह में जाते समय छींक हो तो शुभ फलदायक होती है। शराब, सुँघनी, पीनस सर्दी से होनेवाली छींक, बच्चे और बूढ़े की छींक तथा हठ से छींकना निष्फल होता है। कोशिश करने पर यदि छींक न रुके तो मनुष्य जिस काम के लिए जा रहा हो, उसमें विघ्न अवश्य होगा। 'एक नाक दो छींक, काम बने सब ठीक' यह भी लोकोक्ति है।

स्त्री पुरुष के अंगों पर छिपकली गिरने तथा गिरगिट चढ़ने का फल—

अंग	फल	अंग	फल
ब्रह्मरन्ध्र(मस्तक)	राज्य-प्राप्ति	दाहिनामणिबन्ध	मानसिक चिन्ता
केशान्त	मरण-कष्ट	बाया मणिबन्ध	धान्य-लाभ
ललाट	स्थान-लाभ	नख	द्रव्य-क्षय
केश-बन्ध	रोग-भय	दाहिनापार्श्व पँसु.	बन्धु-दर्शन
चोटी	निधन-भय	बाँयापार्श्व पँसुली	हृदय-वेदना
दाहिना कान	भूषण-प्राप्ति	हृदय	सौख्य-वृद्धि
बाँया कान	आयु-वृद्धि	दाहिना स्तन	मनोरञ्जन-लाभ
नासिका (नाक)	सौभाग्य-लाभ	बाँया स्तन	हार्दिक क्लेश
मुख	मधुर भोजन	दाहिना कुक्षि	सन्तानलाभसुख
नासाग्र	व्यसन विग्रह	बाँया कुक्षि	सन्तान-पीड़ा
बाँया गाल	इष्टमित्र-मिलन	उदर (पेट)	भूषण-लाभ
दाहिना गाल	आयु-वृद्धि	दाहिना कटि	वस्त्र-प्राप्ति
गला	सुख-प्राप्ति	बायाँ कटि	सुख का अभाव
गर्दन	यश-लाभ	कमर का मध्य	अर्थ-लाभ
हनु (दाढ़ी)	भय कारक		
मूंछ	सम्मान-प्राप्ति	नाभि	मनोरथ सिद्धि
भृकुटी (भौंह)	धन-हानि	गुह्याङ्ग	मृत्यु-भय
भौंह-मध्य	धन-लाभ	मूत्रेन्द्रिय	भोग प्राप्ति
दाहिना नेत्र	बन्धु-दर्शन	योनि	विलास-भावना
बाँया नेत्र	हानिकारक	गुदा	रोगागमन
कण्ठ	शत्रु-नाश	अण्डकोष	दुर्भावना
पृष्ठ-वंश(पीठ-म.	कलह	दाहिनी जाँघ	सुख-प्राप्ति
दाहिना पीठ	सुखार्थलाभ	बायीं जाँघ	शारीरिक पीड़
बाँया पीठ	रोग-भय	दाहिना स्फिग्	अर्थ वृद्धि
उत्तरोष्ठ	धन-हानि	बायाँ स्फिग्	स्त्री-वियोग
अधरोष्ठ	प्रिय-मिलन	दाहिना घुटना	प्रियागम
दाहिना कन्धा	विजय	बायाँ घुटना	बुद्धि-हानि
बाँया कन्धा	दुश्मन से भय	दाहिनापैर(पाँव)	भ्रमण
दाहिनी भुजा	धन एवं इष्ट-लाभ	बायाँ पैर (पाँव)	रोग, क्लेश
बाँयी भुजा	धनक्षय, राज-भय	पाँव के बीच	स्त्री-पीड़ा
दाहिनी हथेली	वस्त्र-लाभ	दाहिनी एड़ी	यात्रा
बाँयी हथेली	धन-हानि	बाँयीं एड़ी	दुःखद संवाद
दाहिनाकरतलपृष्ठ	द्रव्यकासदुपयोग	दाहिना पद-तल	ऐश्वर्य-लाभ
बाँयाकरतलपृष्ठ	द्रव्यकादुरुपयोग	बायाँ पद-तल	व्यापार-हानि
दाहिना अंगुष्ठ	अर्थ-लाभ	दाहिनीपादांगुली	प्रीति-वर्धन
बाँया अंगुष्ठ	अर्थ-हानि	बायी पादांगुली	शोक, रोग

अवस्था	फल
रोते हुए	मनोरथ-सिद्धि
हँसते हुए	भयानक घटना
सोते हुए	देर में फल प्राप्त हो
तन्द्रावस्था में	अति देर में फल प्राप्त हो
जागृतावस्था में	तत्काल फल प्राप्त हो
भोजन करते समय	कुछ भी फल न हो

'मुहूर्त्त मार्त्तण्ड' ग्रन्थ के अनुसार—

स्त्री पुरुष दोनों के पेट, नाभि, छाती (दाढ़ी) को छोड़कर उसके ऊपर मस्तकपर्यन्त किसी भाग पर छिपकिली गिरे तो दोनों को शुभ फल होता है; इन अंगों के सिवा पुरुष के अन्यान्य दाहिने अंगो पर, एवं स्त्री के बायें अंगो पर छिपकिलो का गिरना सामन्यतः शुभ होता है, तथैव पुरुष के बायें अंग एवं स्त्री के दाहिने अंग पर छिपकिली का गिरना अशुभ होता है। इसी प्रकार सरठ (गिरगिट) के आरोहण (अंगों पर चढ़ने) का फल होता है। किसी आचार्य के मत से छिपकिली के गिरने से विपरीत फल गिरगिट के चढ़ने का होता है तथा अन्य आचार्य के मतानुसार छिपकिली के अंग पर चढ़ने तथा गिरगिट के गिरने का फल व्यर्थ (कुछ नहीं) होता। छिपकिली तथा गिरगिट का अंग से स्पर्श होने पर पहने हुए कपड़े सहित स्नान करना चाहिये। रात में शरीर पर छिपकिली के चढ़ने और गिरगिट के गिरने का विशेष फल नहीं होता; किन्तु छिपकिली के गिरने और गिरगिट के चढ़ने का अशुभ फल अति तीव्र एवं पीड़ाकारक होता है।

मृत्युयोग, जन्म-नक्षत्र, भद्रा, व्यतीपात, वैधृति अष्टम चन्द्र के समय छिपकिली का गिरना बड़ा विघ्नकारी होता है। शरीर के दाहिने तरफ से चढ़कर बाँयी तरफ उतर जाय तो दोष नहीं माना जाता। दोष-शान्ति के लिए पञ्चगव्य पीना, मृत्युञ्जय-मंत्र का जप, होम, तिल-स्वर्ण-दान या घृत का छायापात्र दान करना चाहिये। निम्नोक्त तिथि, वार और नक्षत्रों में छिपकिली गिरना शुभ है: तिथि—१, २, ३, ५, ६, ११, १२, १३; वार—सोम, बुध, गुरु, शुक्र; नक्षत्र—अश्विनी, रोहिणी, पुनर्वसु, पुष्य, उ० फा०, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, मूल, धनिष्ठा, शतभिषा और रेवती; अतोऽन्येषुभेषुनिन्द्याः।

— तारा-बल-बोधिनी तालिका —

शुभाशुभत्व	जन्म-नक्षत्र →	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७
	फल-संज्ञा ↓	अश्वि	भ	कृ	रो	मृ	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा	उ.फा	ह	चि.	स्वा	वि.	अनु.	ज्ये.	मूला	पू.षा	उ.षा	श्र	धनि.	शत.	पू.भा	उ.भा	रे.
अशुभ	जन्मर्क्ष	अश्वि	भ	कृ	रो	मृ	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा	उ.फा	ह	चि.	स्वा	वि.	अनु.	ज्ये.	मूला	पू.षा	उ.षा	श्र	धनि.	शत.	पू.भा	उ.भा	रे.
	कर्मर्क्ष	मघा	पू.फा	उ.फा	ह	चि.	स्वा	वि.	अनु.	ज्ये.	मूला	पू.षा	उ.फा	श्र	धनि.	शत.	पू.भा	उ.भा	रे.	अश्वि	भ	कृ	रो	मृ	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले
	केतु आधान	मूला	पू.षा	उ.षा	श्र	धनि.	शत.	पू.भा	उ.भा	रे.	अश्वि	भ	कृ	रो	मृ	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा	उ.फा	ह	चि.	स्वा	वि.	अनु.	ज्ये.
	सूर्य विपत	कृ	रो	मृ	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा	उ.फा	ह	चि.	स्वा	वि.	अनु.	ज्ये.	मूला	पू.षा	उ.षा	श्र	धनि.	शत	पू.भा	उ.भा	रे.	अश्वि	भ
		उ.फा	ह	चि.	स्वा	वि.	अनु.	ज्ये.	मूला	पू.षा	उ.षा	श्र	धनि.	शत.	पू.भा	उ.भा	रे.	अश्वि	भ	कृ	रो	मृ	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा
		उ.षा	श्र	धनि.	शत.	पू.भा	उ.फा	रे.	अश्वि	भ	कृ	रो	मृ	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा	उ.फा	ह	चित्रा	स्वा	वि.	अनु.	ज्ये.	मूला	पू.षा
	भौम प्रत्यरि	मृ	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा	उ.फा	ह	चि.	स्वा	वि.	अनु.	ज्ये.	मूला	पू.षा	उ.षा	श्र	धनि.	शत.	पू.भा	उ.भा	रे.	अश्वि.	भ	कृ	रो
		चि.	स्वा	वि.	अनु.	ज्ये.	मूला	पू.षा	उ.षा	श्र	धनि.	शत.	पू.भा	उ.भा	रे.	अश्वि	भ	कृ	रो	मृ	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा	उ.फा	ह
		धनि.	शत.	पू.भा	उ.भा	रे.	अश्वि	भ	कृ	रो	मृ	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा	उ.फा	ह	चि.	स्वा	वि.	अनु.	ज्ये.	मूला	पू.षा	उ.षा	श्र
	गुरु वध	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा	उ.फा	ह	चि.	स्वा	वि.	अनु.	ज्ये.	मूला	पू.षा	उ.षा	श्र	धनि.	शत.	पू.भा	उ.भा	रे.	अश्वि	भ	कृ	रो	मृ	आर्द्रा
		वि.	अनु.	ज्ये.	मूला	पू.षा	उ.षा	श्र	धनि.	शत.	पू.भा	उ.भा	रे.	अश्वि	भ	कृ	रो	मृ	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा	उ.फा	ह	चि.	स्वा
		पू.भा	उ.भा	रे.	अश्वि	भ	कृ	रो	मृ	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा	उ.फा	ह	चि.	स्वा	वि.	अनु.	ज्ये.	मूला	पू.षा	उ.षा	श्र	धनि.	शत.
शुभ	शुक्र सम्पत	भ	कृ	रो	मृ	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा	उ.फा	ह	चि.	स्वा	वि.	अनु.	ज्ये.	मूला	पू.षा	उ.षा	श्र	धनि.	शत.	पू.भा	उ.भा	रे.	अश्वि
		पू.फा	उ.फा	ह	चि.	स्वा	वि.	अनु.	ज्ये.	मूला	पू.षा	उ.षा	श्र	धनि.	शत.	पू.भा	उ.भा	रे.	अश्वि	भ	कृ	रो	मृ	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा
		पू.षा	उ.षा	श्र	धनि.	शत.	पू.भा	उ.भा	रे.	अश्वि	भ	कृ	रो	मृ	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा	उ.फा	ह	चि.	स्वा	वि.	अनु.	ज्ये.	मूला
	चन्द्र क्षेम	रो	मृ	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा	उ.फा	ह	चि.	स्वा	वि.	अनु.	ज्ये.	मूला	पू.षा	उ.षा	श्र	धनि.	शत.	पू.भा	उ.भा	रे.	अश्वि	भ	कृ
		ह	चि.	स्वा	वि.	अनु.	ज्ये.	मूला	पू.षा	उ.षा	श्र	धनि.	शत.	पू.भा	उ.भा	रे.	अश्वि	भ	कृ	रो	मृ	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा	उ.फा
		श्र	धनि.	शत.	पू.भा	उ.भा	रे.	अश्वि	भ	कृ	रो	मृ	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा	उ.फा	ह	चि.	स्वा	वि.	अनु.	ज्ये.	मूला	पू.षा	उ.षा
	राहु साधक	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा	उ.फा	ह	चि.	स्वा	वि.	अनु.	ज्ये.	मूला	पू.षा	उ.षा	श्र	धनि.	शत.	पू.भा	उ.भा	रे.	अश्वि	भ	कृ	रो	मृ
		स्वा	वि.	अनु.	ज्ये.	मूला	पू.षा	उ.षा	श्र	धनि.	शत.	पू.भा	उ.भा	रे.	अश्वि	भ	कृ	रो	मृ	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा	उ.फा	ह	चि.
		शत.	पू.भा	उ.भा	रे.	अश्वि	भ	कृ	रो	मृ	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा	उ.फा	ह	चि.	स्वा	वि.	अनु.	ज्ये.	मूला	पू.षा	उ.षा	श्र	धनि.
	शनि मित्र	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा	उ.फा	ह	चि.	स्वा	वि.	अनु.	ज्ये.	मूला	पू.षा	उ.षा	श्र	धनि.	शत.	पू.भा	उ.भा	रे.	अश्वि	भ	कृ	रो	मृ	आर्द्रा	पुन.
		अनु.	ज्ये.	मूला	पू.षा	उ.षा	श्र	धनि.	शत.	पू.भा	उ.भा	रे.	अश्वि	भ	कृ	रो	मृ	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा	उ.फा	ह	चि.	स्वा	वि.
		उ.भा	रे.	अश्वि	भर.	कृ	रो	मृ	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा	उ.फा	ह	चि.	स्वा	वि.	अनु	ज्ये.	मूला	पू.षा	उ.षा	श्र	धनि.	शत.	पू.भा
	बुध अतिमित्र	आश्ले	मघा	पू.फा	उ.फा	ह	चि.	स्वा	वि.	अनु.	ज्ये.	मूला	पू.षा	उ.षा	श्र	धनि.	शत.	पू.भा	उ.भा	रे.	अश्वि	भ	कृ	रो	मृ	आर्द्रा	पुन.	पुष्य
		ज्ये.	मूला	पू.षा	उ.षा	श्र	धनि.	शत.	पू.भा	उ.भा	रे.	अश्वि	भ	कृ	रो	मृ	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा	उ.फा	ह	चि.	स्वा	वि.	अनु.
		रे.	अश्वि	भ	कृ	रो	मृ	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा	उ.फा	ह	चित्रा	स्वा	वि.	अनु.	ज्ये.	मूला	पू.षा	उ.षा	श्र	धनि.	शत.	पू.भा	उ.भा

नोट—~~~~ लहरदार रेखा से अंकित जन्म-नक्षत्र विवाहादि शुभ कार्यों में शुभ होता है तथा 'प्रत्यरि' के रेखांकित नक्षत्रों को भी सामान्यतः शुभ समझा जाता है। दुष्ट नक्षत्रों की शान्ति :—प्रत्यरि नक्षत्र में लवण दान करे ; जन्म-नक्षत्र में शाक, विपत में गुड़, वध नक्षत्र में तिल और सुवर्ण दान करे, तो शुभ फल होता है। **चन्द्र-विचार**—जन्म राशि से इष्ट दिन की चन्द्र-राशि पर्यन्त गिनने से जो संख्या हो, उसके अनुसार शुभाशुभ फल यह है:—१ शुभ, २ मानस-तुष्टि, ३ धन सम्पत्ति-लाभ, ४ कलह, ५ ज्ञान-वृद्धि, ६ धन-धान्य-प्राप्ति, ७ राज-सम्मान, ८ प्राण-संशय, ९ धर्म-लाभ, १० सिद्धि, ११ जय-लाभ; १२ सर्वथा हानि। कृष्णपक्ष में २, ५, ९ वाँ चन्द्र भी अशुभ होता है।

● साभिजित् अभिनव होड़ा-चक्र ●

अभी तक किसी पंचांग या जंत्री में ऐसा होड़ा-चक्र नहीं छपा था जिसमें अभिजित् सहित हर नक्षत्र-चरण के भोगांश दिये गये हों; यद्यपि इसका उपयोग जातक के नाम-करण एवं पञ्च-शलाका-सप्तश-लाका चक्रों में नक्षत्र-चरण-वेध के ज्ञानार्थ अनि-वार्य है, अत: ऐसा ही होड़ा-चक्र तैयार कर पाठकों के लाभार्थ इस पुस्तक में *

राशि एवं स्वामी: [१] मेषराशि ARIES ♈ स्वामी मङ्गल MARS ♂

अक्षर	चू	च	चो	ला	ली	लू	ले	लो	अ
नक्षत्रचरण	१	२	३	४	१	२	३	४	१
पूर्ण राशि	०	०	०	०	०	०	०	०	१
अंश	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०
कला	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
नक्षत्र मु०	अश्विनी मु.३०				भरणी मु.१५				कृ

राशि एवं स्वामी: [२] वृषराशि TAURUS ♉ स्वामी शुक्र VENUS ♀

अक्षर	इ	उ	ए	ओ	वा	वी	वू	वे	वो
नक्षत्रचरण	२	३	४	१	२	३	४	१	२
पूर्ण राशि	१	१	१	१	१	१	१	१	२
अंश	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०
कला	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
नक्षत्र मु०	ति मु ३०			रोहिणी मु.४५				मृगशि	

राशि एवं स्वामी: [३] मिथुनराशि CEMINI ♊ स्वामी बुध MERCURY ☿

अक्षर	का	की	कु	घ	ङ	छ	के	को	हा
नक्षत्रचरण	३	४	१	२	३	४	१	२	३
पूर्ण राशि	२	२	२	२	२	२	२	२	३
अंश	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२२	०
कला	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
नक्षत्र मु०	रा मु.३०		आर्द्रा मु. १५				पुनर्वसु मु		

राशि एवं स्वामी: [४] कर्कराशि CANCER ♋ स्वामी चन्द्रमा MOON ☾

अक्षर	ही	हू	हे	हो	डा	डी	डू	डे	डो
नक्षत्रचरण	४	१	२	१	४	१	२	३	४
पूर्ण राशि	३	३	३	३	३	३	३	३	४
अंश	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०
कला	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
नक्षत्र मु०	४५	पुष्य मु. ४५				आश्ले.मु.१५			

राशि एवं स्वामी: (५) सिंहराशि LEO ♌ स्वामी सूर्य SUN ☉

अक्षर	मा	मी	मू	मे	मो	टा	टी	टू	टे
नक्षत्रचरण	१	६	३	४	१	२	३	४	१
पूर्ण राशि	४	४	४	४	४	४	४	४	५
अंश	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०
कला	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
नक्षत्र मु०	मघा मु. ३०				पूर्वाफा.मु.४५				उ

राशि एवं स्वामी: (६) कन्याराशि VIRGO ♍ स्वामी बुध MERCURY ☿

अक्षर	टो	पा	पी	पू	ष	ण	ठ	पे	पो
नक्षत्रचरण	२	३	४	१	२	३	४	१	२
पूर्ण राशि	५	५	५	५	५	५	५	५	६
अंश	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०
कला	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
नक्षत्र मु०	फा.मु.४५			हस्त. सु. ३०				चित्रा	

राशि एवं स्वामी: (७) तुलाराशि LIBRA ♎ स्वामी शुक्र VENUS ♀

अक्षर	रा	री	रू	रे	रो	ता	ती	तू	ते
नक्षत्रचरण	३	४	१	२	३	४	१	२	३
पूर्ण राशि	६	६	६	६	२	६	६	६	७
अंश	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०
कला	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
नक्षत्र मु०	मु ३०		स्वाती मु.१५				विशा नु.		

राशि एवं स्वामी: (८) वृश्चिकरा. SCORPIO ♏ स्वामी मङ्गल MARS ♂

अक्षर	तो	ना	नी	नू	ने	नो	या	यी	यू
नक्षत्रचरण	४	१	२	३	४	१	२	३	४
पूर्ण राशि	७	७	७	७	७	७	७	७	८
अंश	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०
कला	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
नक्षत्र मु०	४५	अनुरा. मु.३०				ज्येष्ठा मु.१५			

राशि एवं स्वामी: (९) धनुराशि AGITTARIUS ♐ स्वामी गुरु JUPITER ♃

अक्षर	ये	यो	भा	भी	भू	ध	फ	ढ	भे
नक्षत्रचरण	१	२	३	४	१	२	३	४	१
पूर्ण राशि	८	८	८	८	८	८	८	८	८
अंश	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	२९
कला	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	१०
नक्षत्र मु०	मुल मू. ३०				पूर्वाषाढ़ा मु.३०				उ

राशि एवं स्वामी: (१०) मकरराशि CAPRICORN ♑ स्वामी शनि SATURN ♄

अक्षर	भो	जा	जी	जू	जे	जो	खा	खी	खू	खे	खो	गा	गी
नक्षत्रचरण	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२
पूर्ण राशि	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	१०
अंश	१	४	६	७	८	९	१०	१४	१७	२०	२३	२६	०
कला	४०	१०	४०	४३/२०	४६/४०	५०/००	५३/२०	०/०	६/४०	१३/२०	२०/००	४०	०
नक्षत्र मु०	षा. मु.४५			अभिजित्				श्रवण मु.३०				धनिष्ठा	

राशि एवं स्वामी: (११) कुंभराशि AQUARIUS ♒ स्वामी शनि SATURN ♄

अक्षर	गू	गे	गो	सा	सी	सू	से	सो	दा
नक्षत्रचरण	३	४	१	२	३	४	१	२	३
पूर्ण राशि	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११
अंश	३	१	१०	१३	१२	२०	२३	२६	०
कला	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
नक्षत्र मु०	मु.३०		शत. मु.			१५	पू.भा. मु.		

राशि एवं स्वामी: (१२) मीनराशि PISCES ♓ स्वामी गुरु JUPITER ♃

अक्षर	दी	दू	थ	झ	ञ	दे	दो	चा	ची
नक्षत्रचरण	४	१	२	३	४	१	२	३	४
पूर्ण राशि	११	११	११	११	११	११	११	११	०
अंश	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०
कला	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
नक्षत्र मु०	४५	उ.भा.मु.४५				रेवती मु.३०			

*में प्रकाशित किया जा रहा है। जन्मकालीन चन्द्रस्पष्ट को इस चक्र में देखने से वे सहज ही जातक की जन्मराशि नक्षत्र-चरण एवं तदनुसार जन्मनाम के आद्य अक्षर का निश्चय कर सकते हैं; जैसे, किसी के जन्म-समय का चन्द्रस्पष्ट राश्यादि ९।७°।४३′८″ है तो उसे इस चक्र में देखने से ज्ञात होगा कि चन्द्र का यह भोगांश अभिजित् नक्षत्र के १ (प्रथम) चरण के अन्दर आता है; क्योंकि रा. ९।६°।४०′ पर उ. षा. का ४ (चौथा) चरण पूर्ण(समाप्त) होकर अभिजत् का प्रथम चरण आरम्भ होता है तथा रा. ९।७°।४३′।२०″ पर वह पूर्ण(समाप्त) होता है। अतएव जातक का चन्द्र रा. ९।७°।४३′।८″ उ. षा. के चौथे चरण के भोगांश से अधिक तथा अभिजित् के प्रथम चरण के भोगांश से अल्प होने के कारण उसका जन्म अभिजित् नक्षत्र के १(प्रथम) चरण एवं मकर राशि में निश्चित हुआ। अभिजित् के प्रथम चरण का आद्य(पहला) अक्षर जू है; इसलिए जातक का जन्म(राशि)नाम ऐसा ही रखना चाहिए जिसका पहला अक्षर 'जू' हो। इसी तरह किसी के जन्म या पुकारने के नाम के पहले अक्षर से उसकी जन्म या नाम-राशि, नक्षत्र-चरण सहज ही जाना जा सकता है। नाम के अक्षरों में श,स,ब,व तथा छोटी बड़ी मात्राओं का फर्क आचार्यों ने नहीं माना है तथा नाम का पहला अक्षर संयुक्ताक्षर हो तो उसके प्रथम वर्ण को ग्रहण करना चाहिए (संयोगाक्षरे नाम्नि ग्राह्यं तत्रादिमाक्षरम्।) पञ्चशलाका एवं सप्तशलाका चक्रों में क्रूर ग्रह पूरे नक्षत्र को वेध करते हैं; किन्तु शुभ ग्रह नक्षत्र के केवल चरण को वेध करते हैं। विशेष जानकारी के लिए 'ज्योतिष-रहस्य' का प्रथम खण्ड देखिए।

नोट—अभिजित् और श्रवण नक्षत्र के हर चरण के भोगांश विकलात्मक दिये गये हैं। कला के खाने में ही छोटे अंकों में ऊपर कला नीचे विकला दे दी गयी है।

मङ्गल से अमङ्गल क्यों ?

वर्त्तमान समय में ज्योतिषशास्त्र के प्रति लोगों का अन्ध विश्वास तो बढ़ रहा है; किन्तु इस प्रत्यक्ष फलप्रद शास्त्र के वास्तविक उपयोग पर बहुत कम लोगों का ध्यान है। जैसे पगड़ी-मंगल और चूनड़ी-मंगल के प्रसंग को इतना तूल दे दिया गया है कि विवाह-सम्बन्धार्थ जन्म-पत्रिका-मेलन के समय अनेक शुभ योगों के रहते भी यदि लड़की के जन्म-लग्न से १-४-७-८-१२वें स्थान में मङ्गल हुआ और यदि लड़के की कुण्डली में ऐसा न हुआ तो सम्बन्ध नहीं हो पाता। मारवाड़ी समाज में तो इसकी भयानकता गम्भीरतम होती जा रही है। ज्योतिष का विषय शास्त्रानाभिज्ञ व्यक्तियों के हाथ में आ जाने से मङ्गल इतना अमङ्गलकारी हो रहा है। यदि विद्वान् ज्योतिषी इधर ध्यान दें तो इस मङ्गलजनित क्लेश से लोगों को मुक्ति मिल सकती है।

अब यहाँ विचार किया जाता है कि वास्तव में बात क्या है? ज्योतिष-सिद्धांत और जातक ग्रन्थों में तो इसका कोई उल्लेख नहीं मिलता। संहिता ग्रन्थों में भी इसका मूल नहीं दिखाई दिया। मुहूर्त-ग्रन्थों में मुहूर्त-चिन्तामणि और मुहूर्त-मार्तण्ड प्रमुख है। इनमें इस प्रसंग का जिक्र नहीं है। होता कैसे? महर्षियों ने जो भी लिखा, वह समूल लिखा है। जैसे, मकर, मेष, वृश्चिक, सिंह, धनु और मीन राशि के मङ्गल को शुभ माना है तथा केन्द्रत्रिकोण-पति होने से कर्क, सिंह लग्न में मंगल को योगकारक माना है। 'सर्वे त्रिकोणनेतारो ग्रहाः शुभफलप्रदाः' इस महर्षि पराशर के बचनानुसार उक्त भावाधिपति मङ्गल १-४-७ ८-१२ स्थान-मात्र में होने से सर्वथा नेष्ट कैसे हो सकता है, इस पर ध्यान देने की आवश्यकता है। हमारे पास बहुत से महापुरुषों की जन्म-पत्रिकाओं का संग्रह है जिनके उक्त स्थानों में स्थित मंगल की दशान्तर्दशा में योग (भाग्योन्नति)कारक फल की प्राप्ति हुई है। ज्योतिष-शास्त्र में ग्रहों की स्थिति की अपेक्षा उनके भावाधिपत्य, सप्तविध सम्बन्ध और दृष्टि-बल को सर्वाधिक मान्यता दी गई हैं। यदि हम जन्मचक्रों और ग्रहों को दृग्गणित की कसौटी पर कसें और उनका आकाशीय मानचित्र बनावें तो भाव और ग्रह पर्याप्त अन्तरित हो जाते हैं। ऐसी स्थिति में मंगल के उक्त स्थान में होने का महत्व ही समाप्त हो जाता है।*

अब इस मङ्गल के मूल का रहस्योद्घाटन किया जाता है। अनुकूल देश, काल पाकर किसी ज्योतिःशास्त्रतत्वान-भिज्ञ चतुर व्यक्ति ने इस श्लोक की कल्पना की 'लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाऽष्टमे कुजे। कन्या भर्त्तुर्विनाशाय भर्तृ कन्याविनाशकः॥' अर्थात् उक्त १-४-७-८-१२वें स्थानों में मंगल हो तो कन्या भर्ता का नाश करती है और भर्त्ता कन्या का नाश करता है। यह कितना असंगत श्लोक है! इसका विचार ज्योतिष-संसार ने नहीं किया; बल्कि कुछ स्वार्थी लोगों ने समाज को यहाँ तक सिखलाया कि लड़की के जीवन का कोई मूल्य नहीं है अर्थात् लड़के के मंगल हो और लड़की के न हो तो उसका कोई विचार न करो; सम्बन्ध कर दो। इसका क्या अर्थ? जब लड़के लड़की दोनों के लिए यह समान फल करता है, तब इतना पक्षपात क्यों? गृहलक्ष्मी के चले जाने वा अपंग हो जाने के दुःख को भुक्तभोगी ही जानता है। पुरुषों को प्रौढ़ावस्था में फिर से कुमारी से विवाह करने का प्रोत्साहन देने और स्त्रियों से आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत निभाने या जल मरने की आशा रखनेवालों की प्रशंसा किसी हालत में नहीं की जा सकती। मातृ-जाति की इतनी अवहेलना, उपेक्षा और तिरस्कार की भावना रखनेवालों के सहयोग और शिक्षा से समाज सुखी नहीं हो सकता।

अब श्लोक-निर्माता की अल्पज्ञता पर ज्योतिष-प्रेमियों का ध्यान आकर्षित किया जाता है। श्लोक में कन्या और भर्तृ शब्द का प्रयोग एक साथ किया गया है जो कथमपि युक्तियुक्त नहीं है। वर की भर्तृ संज्ञा विवाह के बाद होती है; फिर वधू की कन्या संज्ञा नहीं रह जाती। बुद्धिमान विचार करें कि विवाह हो जाने के बाद वधू कन्या कहाँ रही जो भर्त्ता का विनाश करेगी? यदि इसमें कुछ तथ्य होता या वास्तव में यह दैवज्ञ की वाणी होती तो भर्त्ता के साथ पत्नी वा परिणीता शब्द का प्रयोग होता; किन्तु खेद है कि ऐसे निर्मूल और परस्पर विरोधी शब्दोंवाले अनार्ष श्लोक के प्रचलित हो जाने से आज अच्छे-से-अच्छा सम्बन्ध अनादृत हो जाता है। क्या हमारा समाज अन्ध-विश्वास से बाहर निकल कर 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' के अनमोल वचनानुसार ज्योतिःशास्त्र के वास्तविक तत्त्वों का अनुशीलन एवं अनुसरण करेगा?

—स्व० पं० श्रीगोपालदत्त शर्मा

[ज्योतिष में ऐसे ही निर्मूल मतों के रूढ़ हो जानेसे इस शास्त्र के प्रति जन-वर्ग की आस्था क्रमशः विनष्ट होती जा रही है। सनातनी कहे जानेवालों में भी कितने ही लोग कन्याओं की नकली कुण्डलियाँ बनवाकर तथा कितने बिना कुण्डली मिलाये 'राम' नाम पर विवाह कर दे रहे हैं, गोया ज्योतिषशास्त्र का राम नाम (सत्य) से सहज विरोध हो। ऐसी दशा में शास्त्र के वास्तविक मर्मोद्घाटन के लिए एतद्विषयक लेख यहाँ प्रकाशित करना आवश्यक हो गया; किन्हीं रुढ़िवादी ज्योतिषी महानुभावों को इससे दुःख हो तो वे हमें क्षमा करेंगे। —सम्पादक]

* विशेषतः मङ्गल-दोष का निर्णय भावचलित से ही करना चाहिए—सम्पादक

जन्मकुण्डली-मेलापक विचार

प्रायः वर कन्या के कुण्डली-मेलापक में मंगल-दोष का विशेष रूप से विचार किया जाता है। जन्मकुण्डली में प्रथम, द्वितीय, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम या द्वादश स्थान में मंगल हो तो कुण्डली मंगल-दोषयुक्त मानी जाती है। इसी भाँति लग्न, चन्द्र और कभी-कभी शुक्र की राशि से भी मंगल की उपर्युक्त स्थितियों का विचार किया जाता है। मंगल-दोषयुक्त कुण्डली के लिए, मंगल-दोषयुक्त अथवा शनि-दोषयुक्त कुण्डली ही विवाह सम्बन्धार्थ उपयुक्त मानी जाती है।

यदि यह मंगल अपनी उच्च राशि मकर में, स्वराशि मेष या वृश्चिक में, मित्र सूर्य की राशि सिंह में, गुरु की राशि धनु या मीन में-से किसी भी राशि में स्थित हो तो वह अधिक दोषकारक नहीं होता है। अन्य कोई तो यहाँ तक मानते हैं कि यदि मंगल को गुरु पूर्ण दृष्टि (५, ७ या ९वीं दृष्टि) से देखता हो तो भी मंगल का दोष नष्ट हो जाता है। मेरी मान्यतानुसार वर्षों पहले जब बाल-विवाह की प्रथा प्रचलित थी और वर-वधू की उम्र में अधिक अन्तर नहीं रहता था, तब वहाँ मंगल-दोष के विचार की अधिक आवश्यकता रहती थी। जन्म-कुण्डली के प्रथम, चतुर्थ, सप्तम और द्वादश भाव में स्थित मंगल के सप्तम स्थान पर पूर्ण दृष्टि, स्थिति के कारण वह अधिक दुष्प्रभाव करता है; लेकिन वस्तुतः मंगल-दोष का अर्थ क्या है? सप्तम स्थान प्रजनन-अवयव और दाम्पत्य कामोपभोग का निर्देशक स्थान है। अष्टम स्थान जीवन-साथी यानी पति या पत्नी का कुटुम्ब-स्थान है। उस पर प्रथम या द्वितीय भाव के मंगल की दृष्टि का पड़ना कुटुम्ब-सुख में बाधक बनता है; किन्तु उस पर गुरु की दृष्टि या युति से यह दोष नष्ट हो जाता है। अनुभव से ज्ञात हुआ है कि वृष और तुला लग्न की कुण्डली में केन्द्र त्रिकोण का अधिपति होने से शनि शुभ बनता है; लेकिन द्वितीय, अष्टम या दशम स्थान स्थित शनि वैवाहिक जीवन में विच्छेदकारक बनता है और सप्तम स्थान पर शनि की दृष्टि भी अशुभ फल देती है। इसके अतिरिक्त यदि सप्तमस्थानाधिपति नीच राशि में स्थित हो या अन्योन्य सम्बन्ध से नीच बनता हो या पाप सम्बन्धित* हो तो वह मंगल-दोष से भी अधिक अशुभ है। मंगल-दोष अल्प होता है; किन्तु शनि के बारे में ऐसा नहीं है। जन्म-कुण्डली के अष्टम और द्वादश स्थान का शनि मंगल से भी अधिक अशुभ और दोषकर्ता है। ज्योतिषी के लिए कुण्डली के ग्रहों का बलाबल विचार करना आवश्यक है। कर्क (नीच) का मंगल अशुभ नहीं होता।

वर-वधू का कुण्डली-मेलन दस प्रकार से किया जाता है और हर प्रकार का अपना-अपना अलग महत्त्व है, जिसमें नाड़ी, वर्ण और योनि मुख्य हैं। योनि के लिए तो अधिक स्पष्टता की आवश्यकता नहीं है। शारीरिक गठन की भिन्नता से ही हाथी और कुत्ते का या बकरा और सर्प का मेल नहीं मिलता; किन्तु मेरे अभिप्रायानुसार वर-कन्या की कुण्डलियों के मिलान में सतत अभ्यासी ज्योतिषी को आजकल बहुत विचारपूर्वक यह देखने की जरूरत है कि दोनों में कितना लेन-देन है, कितना ताल-मेल है और हर दृष्टि से उनका वैवाहिक जीवन किस प्रकार का बन सकेगा। उदाहरणार्थ : मंगल अग्नि-तत्त्व का ग्रह है और बुध पृथ्वी-तत्त्व का। इन दोनों का मेल नहीं हो सकता; किन्तु मंगल-सूर्य और मंगल-गुरु में अच्छा मेल रहता है। मंगल और शनि का मेल नहीं बैठता। यदि एक कुण्डली में महा दरिद्र योग है तो उसके साथ सम्बन्ध होने से लाभ के बजाय हानि ही होती है। कुण्डली-मेलापक का विचार करते समय वर-कन्या दोनों की कुण्डलियों के लग्न का स्वामी और चन्द्र-राशि का स्वामी परस्पर मित्र होने पर भी षडाष्टक योग या द्विर्द्वादश योग में नहीं होने चाहिए। एक कुण्डली में सन्तान-योग और दूसरी कुण्डली में वंध्यत्व योग हो तो उनका परस्पर विवाह नहीं करना चाहिए एवं एक में उत्साह, चैतन्य और दूसरे में जड़ता दारिद्र्य होने से वह सम्बन्ध भी वर्जित करना चाहिए।

सिंह और कुम्भ राशि में कभी मेल नहीं हो सकता; भले ही इन राशिवाली कुण्डलियों के ग्रह असामान्य रूप से अच्छे ही क्यों न हों। अतः उनकी कुण्डलियों के द्वादश भावों का संपूर्ण विचार किये बिना ज्योतिषी को उन्हें परस्पर विवाह-सम्बन्ध करने की राय नहीं देनी चाहिए।

विवाहित होने के बाद पश्चाताप की अग्नि में जलकर दुःखी होने की अपेक्षा अविवाहित रहकर ही वृद्ध होना अधिक अच्छा है। आजकल की समाज-व्यवस्था में अनेक वैवाहिक दम्पत्तियों के सम्बन्ध मानसिक त्रास के कारण भग्न होते देखे जाते हैं और विवाह-विच्छेद के मुकद्दमों की संख्या बढ़ती जा रही है। ऐसी दुःखद घटनाओं को रोकने के लिए ज्योतिषी को विवाह-मेलापक में सिर्फ नाड़ी-दोष या मंगल-दोष का विचार कर लेने में ही इति कर्तव्यता न मानकर वर-कन्या दोनों की कुण्डलियों की ग्रह-स्थिति का सम्यक् रूपेण विचार करके ही अपनी सुनिश्चित राय देनी चाहिए। —स्व० श्री सी.जे. कृष्णस्वामी

* ध्यान रहे, सम्बन्ध सात प्रकार के होते हैं—देखो मेरी 'दशाफल-विचार' नामक पुस्तक, मूल्य मात्र रु. १०

❋ विवाहादि विषयक आवश्यक ज्ञान ❋

मुहूर्त-शास्त्रानुसार विवाह, वास्तु, उपनयन के शुद्ध मुहूर्त निर्णीत कर जंत्री-पञ्चाङ्गों में दिये गये रहते हैं। व्यक्ति विशेष के लिए उनमें-से कौन मुहूर्त सर्वाधिक उपयोगी होगा, इसका निर्णय करने के लिए नीचे आवश्यक जानकारी दी जाती हैं:—

१. उपनयन और विवाह-मुहूर्त में बटुक और वर-कन्या की जन्म-राशि लेनी चाहिये; नाम-राशि नहीं। जन्म-राशि का ज्ञान न होने पर ही नाम-राशि का उपयोग किया जा सकता है। वर की नाम-राशि तथा कन्याकी जन्म-राशि, अथवा कन्या की नाम-राशि और वर की जन्म-राशि, ऐसा विपरीत कदापि न लें; यह वर कन्या के लिए हानि-प्रद है। या तो दोनों की जन्म-राशि लें और दोनों में-से किसी एक को जन्म-राशि का पता न हो तो दोनों के प्रसिद्ध (पुकारने के)नाम की राशि लेनी चाहिए। शास्त्रानुसार तो दोनों का जन्म-नाम लेना ही आवश्यक है।

२. विवाह में कन्या का गुरु-बल और वर का सूर्य-बल तथा वर-कन्या दोनों का चन्द्र-बल देखना चाहिए; साथ ही कन्या-दान करनेवाले का भी चन्द्र-बल देखना चाहिए। उपनयन-मुहूर्त में बटुक का गुरु-बल तथा उसके वेद-स्वामी का बल देखना चाहिये; अन्य सब कार्य में चन्द्र-बल देखा जाता है। जंत्री-पञ्चांगों में विवाह, उपनयन और वास्तु के जो मुहूर्त दिये रहते हैं, उनमें-से जिस दिन के मुहूर्त में उपर्युक्त प्रकार का बल प्राप्त हो; उसी को विवाहादि-कार्य के लिए निश्चित करना चाहिये।

३. **चन्द्र-बल**—जन्म-राशि से गिनने पर १-३-६-७-१० और ११वाँ चन्द्र बलवान गिना जाता है। शुक्लपक्ष में २-५-९ वां चन्द्र भी बलवान माना जाता है। यहाँ शुक्ल द्वितीया से कृष्ण पञ्चमी तक को शुक्लपक्ष और कृष्ण षष्ठी से शुक्ल प्रतिपदा तक कृष्णपक्ष समझना चाहिए। शुक्लपक्ष में चन्द्र-बल और कृष्णपक्ष में ताराबल देखा जाता है।

४. **चन्द्रदोष का परिहार**—जन्म-राशि से २-४-५-८-९ और १२ वाँ चन्द्र नेष्ट होता है; किन्तु शुक्लपक्ष में २-५-९ वाँ चन्द्र भी शुभ तथा कृष्णपक्ष में और विवाह-मुहूर्त में १२ वाँ चन्द्र भी ग्राह्य होता है। चौथा और आठवाँ चन्द्र विशेष नेष्ट माना जाता है। अतः आवश्यकता में चन्द्रमा के दान और चौगुने जप से उसकी शान्ति कराके मुहूर्त का उपयोग करें।

५. **तारा-बल**—जन्म-नक्षत्र से मुहूर्त-नक्षत्र तक गिनने से जो संख्या आये उसमें ९ का भाग दें। ३, ५, या ७ शेष रहे तो वह नक्षत्र दूषित समझें। इससे अन्य संख्या शेष रहे तो नक्षत्र (तारा) बलवान समझें।

६. **सूर्य-बल**—जन्म-राशि से गिरने पर ३-६-१० या ११वीं राशि का सूर्य हो तो शुभ; बाकी राशियों का सूर्य बलहीन और नेष्ट होता है। नेष्ट सूर्य में विवाह करना आवश्यक हो तो सूर्य-मंत्र के चौगुना जप और दानादि से उसकी शांति करा लेनी चाहिये।

७. **गुरु-बल**—जन्म-राशि से गिनने पर २-५-७-९ या ११वीं राशि का गुरु हो तो वह बलवान होता है; इससे अन्य राशियों का नेष्ट होता है; किन्तु उच्च मित्र स्वराशि, स्व नवांश या वर्गोत्तम का होने पर नेष्ट गुरु भी ग्राह्य माना जाता है। यदि नेष्ट गुरु में विवाह करना आवश्यक हो तो गुरु के दान और चौगुने जप सेउसकी शांति करा देनी चाहिये।

८. **चार वेदों के स्वामी**—ऋग्वेद के स्वामी गुरु, यजुर्वेद के स्वामी शुक्र, सामवेद के स्वामी मंगल और अथर्ववेद के स्वामी बुधदेव हैं।

९. **शुभ मंगल और बुध**—जन्म-राशि से ३-६-११ वें मंगल और २-३-६-१० और ११वें बुध शुभ होते हैं। शुभकार्य में ग्रह से विद्ध और पापग्रह से युक्त सम्पूर्ण नक्षत्र को मदिरा मिश्रित पञ्चगव्य के समान त्याग देना चाहिये। यदि नक्षत्र शुभग्रह से विद्ध हो तो उसका विद्ध चरण-मात्र त्याज्य है, सम्पूर्ण नक्षत्र नहीं; किन्तु पापग्रह से विद्ध नक्षत्र शुभ कार्य में सम्पूर्ण रूप से त्याग देने योग्य है। ग्रह जिस नक्षत्र के १, २, ३, ४ चरण पर रहता है उससे विद्ध नक्षत्र के क्रमशः ४, ३, २, १ चरण पर उसका वेध होता है। सम्पर्ण ग्रहों का नक्षत्र-चरण-चार तथा नक्षत्र-वेध चिताहरण जंत्री में दिया जाता है।

विवाह सम्बन्धी कुछ नियम—दो सगी बहनों का विवाह दो सगे भाइयों से या एक वर के साथ दो सगी बहनों का विवाह न करे। दो सगी बहनों का, दो सगे भाइयों का या भाई-बहनों का एक संस्कार ६ मास में साथ ही न करे। लड़की के विवाह के पीछे लड़के का विवाह हो सकता है। पृथक् माता से हुए भाई-बहनों का एक संस्कार द्वार-भेद, मण्डप-भेद और आचार्य-भेद से हो सकता है। यमल (जोड़े) भाई-बहनों का विवाह एक ही मण्डप में करने में हानि नहीं। इसी प्रकार विवाह से पीछे मुण्डन यज्ञोपवीत ६ मास तक न करे। विवाह, उपनयन, चूडा, सीमान्त, केशान्त से ६ मास तक लघु मंगल कार्य न करे। संवत्सर-भेद से जैसे माघ, फाल्गुन में एक मंगल-कार्य हो तो आगे चैत्र के बाद, दूसरा मंगलकार्य कर सकते हैं, उसमें कोई दोष नहीं। उपर्युक्त ६ मास का बन्धन तीन पीढ़ी तक के ही पुरुषों के लिए है, अन्य पीढ़ी के पुरुषों को यह बन्धन नहीं है।

मंगल-कार्य के मध्य पितृकर्म श्राद्धादि अमंगल कार्य न करे। वाग्दान के अनन्तर वर-कन्या की तीन पीढ़ी में से किसी की मृत्यु हो जाय तो एक मास के बाद अथवा सूतक-निवृत्ति होने पर शान्ति करके विवाह करने में हानि नहीं। विवाह के पूर्व नान्दीमुख श्राद्ध के बाद तथा विनायक-स्थापन (बड़ा बिनायक हुए) बाद तीन पीढ़ी तक किसी की मृत्यु हो जाय तो वर-कन्या तथा वर-कन्या के माता-पिता को अशौच नहीं लगता; निश्चित समय पर विवाह कर देना चाहिये।

विवाह-काल-निर्णय—प्रथम गर्भ के (ज्येष्ठ) वर कन्या का विवाह ज्येष्ठ मास में नहीं होता। इसको विज्येष्ठ कहते हैं। वर कन्या में कोई एक ज्येष्ठ हो तो ज्येष्ठ मास में विवाह करना मध्यम लिखा है; फिर भी आवश्यकता में कृत्तिका से सूर्य निकल जाने पर दानादि करके विवाह करने में हानि नहीं। ऐसे ही कार्तिक में भी वृश्चिक का सूर्य होने से विवाह होते हैं। चैत्र, पौष मास को छोड़कर देशाचारानुसार मासों में रोहि मृग. तीनों उत्तरा, मघा, हस्त स्वा, अनु, मूल, रेवती नक्षत्रों में विवाह होते हैं। द्विजातियों के विवाह-मूहुर्त में ८१ दोष शास्त्र में बतलाये गये है; किन्तु उनमें १ लत्ता, २ पात, ३ युति, ४ वेध, ५ जामित्र, ६ बाण, ७ एकार्गल ८ उपग्रह ९. क्रान्तिसाम्य महापात और १० दग्धा तिथि, ये क्रमशः दस महादोष मुख्य हैं। विवाह-मुहूर्तनिर्णय में इनका मुख्यतः विचार किया जाता है। इन दस महादोषों में-से वेध, मृत्युबाण, क्रांतिसाम्य, ये तीन महादोष अपरिहार्य होने से विवाह में सर्वत्र सर्वथा वर्ज्य हैं—शेष सात दोषों में-से चार से अल्प दोष रहने पर वे विवाह-मुहूर्त की लग्न-शुद्धि से नष्ट हो जाते हैं। विवाह-मुहूर्त में उपरोक्त दस महादोषों में-से क्रमशः जो महादोष वर्तमान रहता है, उसे वक्ररेखा (ऽ) से तथा जो महादोष नहीं रहता, उसे खड़ी रेखा (।) से सूचित किया जाता है, जैसाकि चिंताहरण जंत्री के विवाह-मुहूर्तो में दस महादोषान्तर्गत शुद्धि-रेखा के स्तम्भ में आपको मिलेगा। ये रेखायें इस जन्त्री या अन्य किसी भी पञ्चागं में यथाक्रम शुद्धतापूर्वक लगायी गयी हैं या नहीं, इसकी जाँच आप चाहें तो सरलता से कर सकें तथा स्वयं विवाह-मुहूर्त-शोधन में सुयोग्य बन जांय, इस वास्ते प्रत्येक महादोष-ज्ञानार्थ अपूर्व चक्र उनके विवरण सहित यहाँ दिये जा जा रहे हैं। इस विषय की इतनी सुस्पष्ट; शुद्ध एवं विस्तृत सामग्री आपको अन्य किसी पुस्तक में नहीं मिलेगी।

विवाह-मुहूर्त बनाने की रीति—सर्व प्रथम जंत्री में समय-शुद्धि का प्रकरण देखिये। उसमें जो अशुद्ध समय दिये गये हैं, वे विवाह में त्याज्य होने से केवल शुद्ध समय में पड़नेवाले विवाह-नक्षत्रों पर ध्यान दें। नक्षत्र-काल में भद्रादि कुयोग रहित पञ्चांग-शुद्धि हो तो पहले दशदोषान्तर्गत वेध, मृत्यु-बाण और क्रांतिसाम्य दोषों का विचार करें। इनसे विवाह-नत्रत्र के शुद्ध होने पर क्रमशः सर्व दोषों के लिये उपर्युक्त प्रकार से रेखायें लगा लें; फिर आगे दिये गये विवाह-लग्न के इष्ट एवं नेष्ट ग्रहों के आधार से नक्षत्रकालीन लग्न कुण्डलियों में सर्वोत्तम ग्रह-स्थितिवाले विवाह-लग्न का मुहूर्त निश्चित कर लें।

१. विवाह-नक्षत्रों का लत्तादोष-चक्र

विवाह नक्षत्र	रोहि.	मृग	मघा	उ.फा.	हस्त	स्वाती.	अनु.	मूल	उ.षा.	उ.भा.	रेवती	विवाह नक्षत्र
सूर्य	पू. षा.	उ.षा.	उ.भा.	अश्वि.	भरणी.	रोहि	आर्द्रा	पुष्य	मघा.	स्वाती	विशा.	सूर्य
चन्द्र	पू.भा.	उ.भा.	रोहिणी	आर्द्रा	पुन.	आश्ले.	पू.फा	हस्त	स्वाती	पू.षा.	उ.षा.	चन्द्र
मंगल	भरणी	कृत्ति	पुष्य	मघा	पू.फा.	हस्त	स्वाती	अनु.	मूला	शत.	पू.भा.	मंगल
बुध	मघा	पू फा.	विशा	ज्येष्ठा	मूल	उ.षा.	धनिष्ठा	पू.भा	रेवती	मृग.	आर्द्रा	बुध
बृह.	उ भा.	रेवती	मृग	पुन.	पुष्य	मघा	उ.फा.	चित्रा	विशा.	उ.षा	श्रवण	बृह.
शुक्र	पुष्य	अश्ले.	चित्रा	विशा.	अनु	मूल	उ.षा.	धनिष्ठा	पू.भा.	कृत्ति	रोहि.	शक्र
शनि	शत.	पू.भा.	कृत्ति	मग	आर्द्रा	पुष्य	मघा	उ फा.	चित्रा	मूल	पू.षा.	शनि
रा. के.	धनिष्ठा	शत.	भरणी	रोहि.	मग.	पुन.	आश्ले	पू फा.	हस्त	ज्येष्ठा	मूल	रा.के.

१. लत्तादोष—में ऊपर बायें से दाहिने क्रमशः ११ वैवाहिक नक्षत्र तथा बगल के पहले खाने में ऊपर से नीचे की ओर रवि आदि ग्रह दिये गये हैं। यदि कोई ग्रह अपने सामनेवाले खाने के नक्षत्र पर चल रहा हो तो वह उसी खाने के ऊपरी सिरे पर के वैवाहिक नक्षत्र को लत्ता-दोष से दूषित करेगा। चन्द्र के लत्ता-दोष-विचार में गत पूर्णिमा की घटी समाप्त हो, उस समय में जो नक्षत्र भोगे, उसी नक्षत्र का पूर्ण चन्द्र लेना चाहिये। लत्ता-दोष का विवाह मालव देश में नहीं होता और सब देशों में होता है।

२. पातदोष-चक्र

रोहि.	मृग	मघा	उ.फा.	हस्त	स्वाती	अनु.	मूल	उ.षा.	उ.भा.	रेवती
आर्द्रा	मृग	अश्वि.	कृत्ति	भरणी	कृत्ति.	अश्वि.	रोहि.	भरणी	भरणी	अश्वि
पुन.	आर्द्रा	मृग.	आर्द्रा	मृग.	पुष्य	आर्द्रा	आश्ले	पुन.	पू.फा.	मघा
पू.फा.	मघा	पुष्य	पू.फा.	मघा	हस्त	पू.फा.	ज्येष्ठा	विशा.	उ.फा.	पू फा.
चित्रा	हस्त	हस्त	विशा.	स्वाती	श्रवण	पू.षा	मूल	अनु.	विशा	स्वाती
मूल	ज्येष्ठा	ज्येष्ठा	पू.भा.	शत.	धनिष्ठा	उ षा	धनि	उ षा.	मूल	ज्येष्ठा
शत.	धनि.	रेवती	उ.भा	पू.भा.	रेवती	पू भा	उ.भा.	शत.	शत.	धनि.

२. पातदोष—में भी उपर्युक्त प्रकार से सिरे पर वैवाहिक नक्षत्र तथा प्रत्येक के नीचे रविग्रह के नक्षत्र दिए गये हैं। हर वैवाहिक नक्षत्र के नीचेवाले खानों के किसी भी नक्षत्र पर रवि के होने से वह वैवाहिक नक्षत्र पातदोष से दूषित होता है।

टि०—हर्षण, वैधृति, साध्य व्यतीपात, गण्ड, और शूल, योगों का अन्त जिस नक्षत्र में हो वह भी पात-दूषित होता है। इस नक्षत्र में विवाह करने से पात-दोष होता है।

३. युतिदोष—जिस नक्षत्र का विवाह हो, उसी नक्षत्र में यदि कोई ग्रह हो तो उस ग्रह की युति का दोष समझा जाता है। चन्द्र उच्च, मित्र, स्वक्षेत्री हो तो युति-दोष नहीं होता; किन्तु श्रेष्ठ होता है। सू. मं. शु. श. रा. के. की युति दारिद्य, मृत्यु आदि भयप्रद मानी गयी है। शुक्र की युति विशेषतः वर्जित है।

४. वेधदोष-चक्र

रोहि	मृग.	मघा	उ.फा.	हस्त	स्वाती	अनु.	मूल	उ.षा.	उ.भा.	रेवती
अभि.	उ.षा.	श्रवण	रेवती	उ.भा.	शत.	भरणी	पुन.	मृग.	हस्त	उ.फा

४. वेधदोष—हर विवाह-नक्षत्र के नीचेवाले खाने के नक्षत्र पर कोई भी ग्रह के होने पर वह विवाह-नक्षत्र उस ग्रह के वेध-दोष से दूषित होगा।

५. जामित्रदोष-चक्र

रोहि.	मृग	मघा	उ.फा.	हस्त	स्वाती	अनु.	मूल	उ.षा.	उ.भा.	रेवती
अनु.	ज्येष्ठा	धनि.	पू.भा.	उ.भा.	अश्वि.	कृत्ति	मृग	पुन.	उ.फा.	हस्त

५. जामित्रदोष—विवाह-कालीन लग्न या चन्द्र-राशि से सप्तमस्थ ग्रह होने पर जामित्र दोष होता है। चक्र में ऊपर प्रत्येक विवाह नक्षत्र और नीचे के खाने में उससे १४वाँ नक्षत्र हैं जिस पर कोई भी ग्रह होने से वह ऊपरी खाने के विवाह-नक्षत्र को जामित्र-दोष से दूषित करेगा। पापी ग्रह का जामित्र-दोष विशेष वर्ज्य है। लग्न या चन्द्रमा से ५५वें नवांश यानी उनसे सातवीं राशि के उतने ही अंश पर कोई ग्रह हो तो सूक्ष्म जामित्र होता हैं। यह विशेष अशुभकारक है।

६. बाणदोष-चक्र

बाण नाम	सूर्य के गतांश	वर्ज्य कर्म	वर्ज्य वार	वर्ज्य काल
रोग	८।१७।२६	उपनयन में	रविवार	रात्रि
अग्नि	२।११।२०।२९	गृहारम्भ में	भौमवार	सदैव वर्ज्य
राज	४।१३।२२	राज-सेवा में	शनिवार	दिवाकाल
चोर	६।१५।२४	यात्रा में	भौमवार	रात्रि
मृत्यु	१।१०।१९।२८	विवाह में	बुधवार	संध्याकाल

६. बाणदोष—रोगादि पाँचों बाणों का सम्बन्ध सूर्य के खास-खास अंश से है, चाहे वह किसी राशि का हो। प्रत्येक राशि के जिन अंशों का सम्बन्ध जिस बाण से है, उससे पहले के अंश (गतांश) उस बाण के सामने चक्र में दिए गये हैं; क्योंकि जंत्री-पञ्चांगों में दैनिक सूर्य स्पष्ट के गत राश्यंश के साथ अग्रिमांश की भुक्त कला विकला दी जाती है। अतः उस कला विकला को सूर्य अपनी दैनिक गति से जितने समय में भोग कर चुका, उतना समय सूर्य-स्पष्ट के समय में घटा देने से बाणारम्भ-काल ज्ञात हो जाता हैं। इसी तरह उक्त कला विकला को १ अंश में घटा दें तो शेष (भोग्य) कला विकला को सूर्य दैनिक गति से जितने समय में भोगेगा, सूर्य-स्पष्ट के समय से उतने ही समय बाद बाण-वर्ज्य-काल समाप्त हो जायेगा। यों तो विवाह में बुध-पञ्चक (यानी पाँचों बाणों) के समय त्याज्य माने गये हैं; किन्तु मृत्युबाण का समय सब देशों के लिये वर्जित है। प्रत्येक बाण का समय अपने ही वर्ज्य कर्म में नेष्ट होता है जो अपने वर्ज्य वार और वर्ज्य काल से युक्त होने पर अधिकाधिक दोषावह हो जाता है।

७. एकार्गलदोष-चक्र

योग ↓ नक्षत्र →	रोहि.	मृग	मघा	उ.फा.	हस्त	स्वाती	अनु.	मूल	उ.षा.	उ. भा.	रेवती	← नक्षत्र योग ↓
विष्कुम्भ	पू.भा.	शत.	पू.षा.	ज्येष्ठा	अनु.	स्वाती	हस्त	पू.फा	आश्ले	कृत्ति.	भरणी	प्रीति
आयुष्मान्	रेवती.	उ.भा.	अभि.	पू.षा.	मूल	अनु.	स्वाती	हस्त	पू.फा.	मृग.	रोहि.	सौभाग्य
शोभन	भरणी	अश्वि	धनि	अभि.	उ.षा.	मूल	अनु.	स्वाती	हस्त	पुन	आर्द्रा	अतिगण्ड
सुकर्मा	रोहि.	कृत्ति.	पू.भा.	धनि.	श्रवण	उ.षा.	मूल	अनु.	स्वाती	आश्ले	पुष्य	धृति
शूल	आर्द्रा	मृग.	रेवती	पू.भा.	शत	श्रवण	उ.षा.	मूल	अनु.	पू.फा.	मघा	गण्ड
वृद्धि	पुष्य	पुन.	भरणी	रेवती	उ.भा	शत.	श्रवण	उ.षा	मूल	हस्त	उ.फा.	ध्रुव
व्याघात	मघा	आश्ले.	रोहि.	भरणी	अश्वि.	उ.भा.	शत.	श्रवण	उ.षा.	स्वाती	चित्रा	हर्षण
वज्र	उ.फा.	पू.फा.	आर्द्रा	रोहि.	कृत्ति.	अश्वि.	उ.भा.	शत.	श्रवण	अनु.	विशा	सिद्धि
व्यतीपात	चित्रा	हस्त	पुष्य	आर्द्रा	मृग.	कृत्ति	अश्वि	उ.भा.	शत.	मूल	ज्येष्ठा	वरीयान
परिघ	विशा	स्वाती	मघा	पुष्य	पुन.	मृग.	कृत्ति.	अश्वि.	उ.भा	उ.षा.	पू.षा.	शिव
सिद्धि	ज्येष्ठा	अनु.	उ.फा.	मघा	आश्ले.	पुन	मृग	कृत्ति.	अश्वि	श्रवण	अभि	साध्य
शुभ	पू.षा	मूल	चित्रा	उ.फा.	पू.फा.	आश्ले.	पुन.	मृग.	कृत्ति.	शत.	धनि.	शुक्ल
ब्रह्म	अभि.	उ.षा.	विशा.	चित्रा	हस्त	पू.फा.	आश्ले.	पुन.	मृग.	उ.भा.	पू.भा.	ऐन्द्र
वैधृति	धनि.	श्रवण	ज्येष्ठा	विशा.	स्वाती	हस्त	पू.फा.	आश्ले.	पुन.	अश्वि.	रेवती	विष्कुम्भ
योग ↑ सूर्य →	सूर्य	सूर्य	सूर्य	सूर्य	सूर्य	सूर्य	सूर्य	सूर्य	सूर्य	सूर्य	सूर्य	← सूर्य योग ↑

७. **एकार्गलदोष**—व्याघात, गण्ड, व्यतीपात, विष्कुम्भ, शूल, वैधृति, वज्र, परिघ, अतिगण्ड इन अशुभ योगों में सूर्य के नक्षत्र से विवाह का नक्षत्र अभिजित् सहित गिनने से विषम हो तो एकार्गल दोष होता है। अतः चक्र में

प्रत्येक वैवाहिक नक्षत्र से विषम संख्यक नक्षत्रों को उस नक्षत्र के नीचेवाले खानों में दिया गया है जिनमें-से किसी नक्षत्र पर सूर्य के होने से उस खाने का विवाह-नक्षत्र एकार्गल दोष से दूषित होता है। एकार्गल-दोष का विवाह कश्मीर देश में नहीं होता और सब देशों में होता है।

८. उपग्रहदोष-चक्र

चन्द्र / सूर्य	रोहि.	मृग	मघा	उ.फा	हस्त	स्वाती	अनु.	मूल	उ.षा.	उ.भा.	रेवती
५	रेवती	अश्वि.	आर्द्रा	पुष्य	आश्ले.	पू.फा.	हस्त	स्वाती	अनु.	श्रवण	धनिष्ठा
८	शत.	पू.भा.	कृत्ति.	मृग	आर्द्रा	पुष्य	मघा	उ.फा.	चित्रा	मूल	पू.षा.
१४	ज्येष्ठा	मूल	शत.	उ.भा	रेवती	भरणी	रोहिणी	आर्द्रा	पुष्य	हस्त	चित्रा.
१८	चित्रा	स्वाती	पू.षा	श्रवण	धनिष्ठा	पू.भा.	रेवती	भरणी	रोहिणी	अश्वि.	मघा
१९	हस्त	चित्रा	मूल	उ.षा.	श्रवण	शत.	उ.भा.	अश्वि.	कृत्ति.	पुष्य.	अश्ले.
२०	मघा	पू.फा.	विशा.	ज्येष्ठा	मूल	उ.षा.	धनिष्ठा	पू.भा.	रेवती	मृग.	आर्द्रा
२३	आश्ले	मघा	स्वाती	अनु.	ज्येष्ठा	पू.षा.	श्रवण	शत.	उ.भा.	रोहि.	मृग.
२४	पुष्य	आश्ले.	चित्रा	विशा.	अनु	मूल	उ.षा.	धनिष्ठा	पू.भा.	कृत्ति.	रोहि.

८. उपग्रहदोष—प्रत्येक वैवाहिक नक्षत्र के नीचे खानों में ५, ८ १४ वें आदि नक्षत्र क्रमशः दिये गये हैं, जिनमें से किसी नक्षत्र पर सूर्य के होने से उस खाने का वैवाहिक नक्षत्र उपग्रह-दोष से दूषित होता है। यह दोष कुरु, वाह्लिक देशों में त्याज्य है, अन्यत्र नहीं।

९. स्थूल क्रांतिसाम्यदोष-चक्र

मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु	मी	सूर्य
मि.	म.	ध.	बृ.	मे.	मी.	कु.	क	मि.	वृ.	तु.	कं.	चन्द्र

९. क्रांतिसाम्य दोष—चक्र के ऊपरी खाने में क्रमशः द्वादश राशियाँ सूर्य की दी गई है। उनमें-से जिस राशि पर सूर्य हो उस खाने की नीचेवाली राशि पर चंद्रमा के होने से क्रांतिसाम्य दोष होता है। क्रांतिसाम्य का विवाह सभी देशों में त्याज्य है; किन्तु उपर्युक्त प्रकार का क्रांतिसाम्य नितान्त स्थूल होता है। वास्तव क्रांतिसाम्यजन्य दूषित काल के ज्ञानार्थ महापात का गणित सिद्धान्त-ग्रन्थों में कथित है; किन्तु वह अत्यन्त क्लिष्ट एवं श्रमसाध्य होने के कारण पुरातन स्थूल गणितवाले पञ्चांङ्गों में उसे देने का कष्ट पञ्चाङ्गकर्ता नहीं उठाते और उक्त स्थूल क्रांतिसाम्य पर ही विवाह-मुहूर्त लगा देते हैं। चिन्ताहरण जंत्री के पञ्चाङ्ग-प्रकरण में वास्तव क्रांतिसाम्यजन्य महापात के समय भा. स्टैं. टा. में दिये जाते हैं और विवाह-मुहूर्तों के निर्णय में भी उनका विशेषतः विचार किया जाता है।

१०. दग्धातिथिदोष-चक्र

मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	सूर्य
६	४	८	६	१०	८	१२	१०	२	१२	४	२	चन्द्र

१०. दग्धातिथि दोष-चक्र—के ऊपरी खाने में लिखी क्रमशः मेषादि द्वादश राशियों में-से जिस राशि पर सूर्य हो उस राशि के नीचे खाने की तिथि, वह चाहे शुक्ल पक्ष की हो या कृष्ण-पक्ष की, दग्धातिथि होती है। अतः विवाह में वर्जित की जाती हैं।

विवाह-लग्न के नेष्ट ग्रह

विवाह-लग्न के इष्ट ग्रह

चं.बु.गु.शु.
रचंमंबुगुशु रा.के.
बु. गु. शु.
सर्व
बु.गु.शु.
बु.गु.शु.
बु.गु.शु.
बु.गु.शु
रा
रमंबुगुश के
र.श.रा.के.
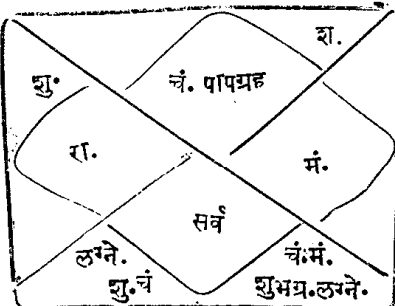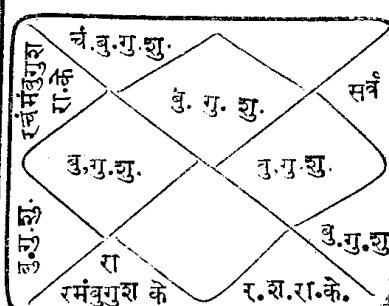
विवाह-लग्न के शुभ नवांश—किसी भी लग्न में मिथुन, कन्या, तुला, धनु और मीन के नवांश विवाह में प्रशस्त कहे गये हैं। मीन का नवांश सर्वसम्मत नहीं हैं; किन्तु आवश्यक में उसका ग्रहण होता है। इसलिए श्रीरामाचार्य ने मूल श्लोक में 'झषगे वा' इस वाक्य से मीन नवांश को विकल्प पक्ष में रखा है। प्रत्येक लग्न-राशि का अन्तिम नवांश त्याज्य है; किन्तु यदि वह वर्गोत्तम (यानी लग्न और नवांश की राशि एक ही) हो तो वह शुभ होता है। जब चन्द्रमा तुला और मकर राशि में हो तो चर लग्न में चर नवांश (वर्गोत्तमी होने पर भी) अशुभ एवं त्याज्य होता है।

विवाह लग्न के नेष्ट एवं लग्नभंगी ग्रह—विवाह की लग्न-कुण्डली में जो ग्रह जिस-जिस भाव में नेष्ट तथा लग्नभंगी होते हैं, वे इस कुण्डली के उन्हीं भावों में दिखाये गये हैं। शुक्र यदि अपनी शत्रुराशि या नीच(कन्या) राशि

में हो तो छठें स्थान में होने का, मंगल सूर्य से अस्त, शत्रु-राशि या नीच(कर्क) में हो तो ८वें स्थान का, चन्द्रमा नीच (वृश्चिक) राशि या नवांश में हो तो उसके छठें, आठवें और बारहवें स्थान में होने का दोष नहीं लगता।

विवाह-लग्न के इष्ट ग्रह— विवाह की लग्नकुण्डली में जो ग्रह जिन भावों में शुभद होते हैं, वे इस कुण्डली के उन्हीं भावों में दिखायें गये हैं। सूर्य यथोक्त भाव में हो तो उसका ३॥ विशोपक बल होता है। इसी प्रकार चन्द्र का का यथोक्त भाव में ५ विंशोपक बल, मंगल का १॥ विशोपक बल, बुध का २, गुरु का ३, शुक्र का २, शनि का १॥, राहु का भी १॥ विंशोपक होता है। दस से अधिक विश्वा प्रशस्त होता है।

त्रिबल-शुद्धि यानी वर-कन्या की राशि से विवाह-मुहूर्त-विचार

विवाह-मुर्हूत का निश्चय करने में देखना होता है कि उस समय वर-कन्या की राशि से सूर्य, गुरु, चन्द्रमा किस स्थान मे भ्रमण कर रहे हैं। जिन स्थानों मे वे शुद्ध, श्रेष्ठ(पूज्य) और अशुद्ध(नेष्ट) होते हैं, वे नीचे दिये जा रहे हैं—

	शुद्ध	पूज्य	अशुद्ध (नेष्ट)
सूर्य	३।६।१०।११	१।२।५।७।९	४।८।१२
गुरु	२।५।७।९।११	५।३।६।१०	४।८।१२
चन्द्र	१।२।३।५।६।७।९।१०।११	१२	४।८

कन्या के लिए गुरु की शुद्धि से, वर के लिये रवि की शुद्धि से, कन्या और वर दोनों के लिए चन्द्र की शुद्धि से विवाह होना शुभ है है। उच्च, मित्र, स्वराशि, स्वनवांश एवं वर्गोत्तम का होने पर नेष्ट गुरु भी ग्राह्य माना जाता है। यदि कन्या के विवाह के आवश्यक समय में गुरु-शुद्धि नहीं भी हो तो उसकी शांति करके विवाह करना चाहिए। १० वर्ष से अधिक वय की कन्या के विवाह में गुरु-शुद्धि की आवश्यकता नहीं।

विवाह-मुहूर्त पर धर्मशास्त्रीय विचार—सम्प्रति सभी पंचांगकार अपने पंचांगों में विवाहोपनयनादि के मुहूर्त देते हैं। प्रायः मुहूर्त चिन्तामणि, निर्णयसिंधु आदि ग्रंथों को प्रमाण मानकर वे मुहूर्तों का निर्धारण करते हैं। इन ग्रन्थों का मुख्य दोष यह है कि उनमें ज्योतिष तथा धर्मशास्त्र दोनों को समान प्रतिष्ठा देकर विचार किया गया है। कहीं-कहीं तो धर्मशास्त्रीय ग्रन्थों की अपेक्षा ज्योतिष-ग्रन्थों को अधिक श्रेष्ठ मानकर निर्णय किया गया है। इसमें जो दोष है, वह धर्मशास्त्रीय ग्रन्थ तथा ज्योतिष ग्रन्थ दोनों में रहनेवाले भेद को जानने से ही प्रतीत होगा। सामान्य जन तो क्या, बड़े-बड़े पण्डित भी इस भेद का ध्यान नहीं रखते, ऐसा देखने में आता है। धर्मशास्त्रीय मुहूर्तों को भलीभांति जान लेने के लिये तथा हमारा दृष्टिकोण कहाँ तक शस्त्रसम्मत है, इसका विचार करने के लिए धर्मशास्त्रीय ग्रन्थ तथा ज्योतिष-ग्रन्थों में रहनेवाले भेद की ओर तथा उनके प्रामाण्य में किनकी प्रतिष्ठा किनसे श्रेष्ठ है, इस तथ्य की ओर भी विद्वानों का ध्यान आकृष्ट करना परमावश्यक है।

धर्मशास्त्र की ज्योतिष से श्रेष्ठता— बौधायनमें इस विषय में स्पष्टता से विवेचन किया है। उन्होंने कहा कि 'ज्योतिषोक्त तथा धर्मशास्त्रोक्त आदेश में जहाँ विरोध पड़ता हो, वहाँ ज्योतिषोक्त का त्याग कर धर्मशास्त्रोक्त आदेशों का पालन करना चाहिए'। यस्मिन् काले विरोधोऽस्ति ज्योतिषोक्तागमोक्तयोः। ज्योतिषोक्तं परित्यज्य स्मृतिचोदितमाचरेत्॥ बौधायन, स्मृतिमुक्ताफल १.१४८। प्रयोगशास्त्रविहितः कालो यत्र न कश्चन। विधत्ते ज्योतिषं तत्र विहितेऽत्र विरोधि तत्॥ विद्यामाधवीय टीका मुहूर्तदीपिका १.३८] सूत्रग्रन्थोक्त के विरोधी ज्योतिषोक्त वचन त्याज्य हैं, ऐसा इन गृह्यसूत्रकारों ने स्पष्टता से कहा है। ऐसे विधानों का वास्तविक अर्थ तभी ध्यान में आ सकता हैं जब धर्मशास्त्र तथा ज्योतिष के ग्रन्थों की विभिन्नता निश्चित रूप से ज्ञात हो। आजकल पंचांगकार इस विभिन्नता पर ध्यान नहीं देते, प्रत्युत् कभी-कभी धर्मशास्त्रीय निबन्धों की अपेक्षा उनके विरुद्ध ज्योतिष-ग्रन्थोक्त निबंधों को ही वे अधिक प्रामाण्य देते हैं,। यद्यपि अधिकांश पंचांगों में मुहूर्त इस प्रणाली से दिये जाते हैं तथापि सामान्य जनता उन मुहूर्तों को धर्मशास्त्रोक्त ही मान बैठती है। पंचांगकार एतद्विषयक प्रमाणों के उपन्यास में तत्परता नहीं दिखाते, यह भी इसका कारण है।

गुरु शुक्रास्तादिका प्रमाण—इसका एक स्पष्ट उदाहरण गुरु शुक्रास्त है। गुरु तथा शुक्र के अस्त में उपनयन, विवाह-मुहूर्त पंचांगों में नहीं दिये जाते। फलतः इन ग्रहों के अस्तकाल में विवाहोपनयनादि करना धर्मशास्त्रोक्त नहीं हैं, ऐसी धारणा जन-मानस में बन गयी है; परन्तु वास्तविक स्थिति यह है कि किसी धर्मशास्त्रीय ग्रन्थ में गुरु-शुक्रास्त में उपयन विवाह करना निषिद्ध नहीं पाया जाता। आपस्तम्ब, बौधायन, आश्वलायन, पारस्कर इत्यादि सूत्र ग्रंथ तथा मनु, याज्ञवल्क्य, पराशर, नारद, हारीत, अत्रि, विष्णु इत्यादि ऋषियों के स्मृतिग्रन्थों को धर्मशास्त्रीय ग्रन्थ कहते हैं। इनमें-से किसी धर्मशास्त्रीय ग्रन्थ में गुरु शुक्रास्त-समय में उपनयन या विवाह का निषेध नहीं पाया जाता। सिंहस्थ गुरु की भी यही दशा हैं। 'सिंह राशि में जब तक गुरु विद्यमान हो, तब तक उपनयन-विवाह नहीं करना चाहिए'—ऐसा निषेध किसी धर्मशास्त्रीय ग्रन्थ में नहीं है: फिर भी आजकल के पञ्चांगकार इस निषेध को प्रमाण मानकर उस-उसकाल में उपनयन-विवाह-मुहूर्त नहीं देते। आश्चर्य तथा दुःख की बात यह कि इस अशास्त्रीय अर्थात् धर्मशास्त्रविरुद्ध नीति का अवलम्बन कर सरकारी पंचांग में भी उपरोक्त काल में उपनयन-विवाह-मुहूर्त नहीं दिये जाते।

विवाह-मास-निर्णय—गुरु शुक्रास्त का निषेध जिस प्रकार धर्मशास्त्रोक्त नहीं, वैसी ही स्थिति एतद्विषयक मासों की है। पंचांगकार सामान्यतः चैत्र, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक तथा पौष इन मासों को विवाह के लिये निषिद्ध मानते है; परन्तु धर्मशास्त्रदृष्टया यह निषेध सिद्ध नहीं होता। कुछ सूत्रग्रन्थों जैसे आश्वलायन,पारस्कर इत्यादि से उत्तरायण के मासों को ही विवाह के लिये ग्राह्य मान लिया है; परन्तु उस दृष्टि से देखा जाय तो मार्गशीर्ष में विवाह-मुहूर्त देना सिद्ध नहीं होगा। आपस्तंब ने तो माघ, फाल्गुन तथा आषाढ़ इन तीन महीनों को छोड़कर नौ मास अर्थात् आजकल पंचांग में निषिद्ध माने जानेवाले चैत्र, श्रावण, भाद्रपदादि प्रशस्त हैं, ऐसा निश्चियपूर्वक कहा है। सर्वे ऋतवो विवाहस्य शैशिरौ मासौ परिहाप्योत्तमं च नैदाधम्। अत्र माघफाल्गुनाषाढवर्जं नव मासा मुख्यः कालः॥ —निर्णयसिन्धु

गर्ग तथा राजमार्तण्डकार ने जो ज्योतिष के ग्रन्थकर्त्ता हैं, चैत्र तथा पौष मासों को वर्ज्य कर शेष दस मासों को विवाह के लिए प्रशस्त माना है। माङ्गल्येषु विवाहेषु कन्यासंवरणेषु च। दश मासाः प्रशस्यन्ते चैत्रपौषविवर्जिताः॥
—निर्णयसिन्धु

पंचांगकारों की यह नीति कहाँ तक शास्त्रसम्मत है, यह जानने के लिये शास्त्रीय वचनों पर ध्यान देना आवश्यक है।

समन्वय के नाम पर—निबन्धकार ऐसे परस्पर विरोधी वचनों का समन्वय के नाम पर कुछ अनोखा अर्थ करते हैं। इस विषय में ऐसा ही समन्वय करते हुए निर्णयसिन्धुकार ने यह सिद्धान्त प्रस्थापित किया है कि ज्योतिष-ग्रन्थों में जहाँ माघादि मासों को विवाह के लिए योग्य कहा गया है, वहाँ वह विधान शूद्रों के लिए है, ऐसा समझना चाहिए।' ये तु ज्योतिषे माघादिविधयः ते गृह्यसूत्राणां द्विजपरत्वेन प्राबल्याच्छूद्रपराः। यदि हमारे पंचांगकार निर्णयसिन्धुकार का यह प्रमाण मानते तो माघादि मासों में दिये हुए विवाह-मुहूर्तों पर यह मुहूर्त शूद्रों के लिए है, द्विजों के लिए मुहूर्त नहीं है'—ऐसी टिप्पणी अवश्य देते; परन्तु वैसी टिप्पणी किसी पंचांग में उपलब्ध नहीं होती। तब किन ग्रन्थों को प्रमाण मानकर वर्तमान पंचांगकार इन मुहूर्तों का निर्धारण करते हैं, यह एक गंभीर प्रश्न विचारशील जनों के सामने खड़ा हो जाता है। नौ मासों के विवाह में ग्राह्य कहनेवाला जो आपस्तम्ब का वचन ऊपर दिया गया है उसका इस निर्णयसिन्धुकार के समन्वय (?) में समावेश नहीं है। वह बचन त्रैवर्णिकों केलिये होने के कारण उसको शूद्रपरक मानना अशक्य है। अतएव समन्वय के नाम पर किये जानेवाले निर्णयों से भी सत्यभक्तों को सचेत रहना चाहिए। वस्तुतः यह समन्वयपद्धति जिस प्रकार आज उपयोग में ली जाती हैं, वह विचारणीय विषय होना चाहिए; क्योंकि उससे शास्त्र-वचनों के प्रति अन्याय किया जाता हैं; जिस वचन का जो अर्थ नहीं है, वह इस पद्धति के अनुसार योग्य मानने की प्रवृत्ति हो जाती है। परस्परविरुद्ध वचनों में कुछ वचन शूद्रपरक हैं, दूसरे अन्य युग के लिए हैं; इत्यादि कहकर इस पद्धति के अनुसार उनका विरोध मिटाया जाता है; परन्तु मूल बचन जिस संदर्भ में है, वहाँ शूद्र इत्यादि के लिए प्रमाण नहीं मिलता। इसी कारण माधवाचार्य जैसे धर्म-शास्त्रीय ग्रन्थकार ने इस पद्धति का घोर विरोध किया है और इसके दोषों का प्रदर्शन कर स्पष्ट कहा है कि 'वचनव्यस्थितिपूर्वक समन्वय करने की पद्धति को हम मान्य नहीं करते'। सर्वथापि त्वया प्रोक्तां निर्मूलां बुद्धिकल्पिताम्। कामाकामादिभेदेन नाङ्गीकुर्मो व्यवस्थितिम्॥ स्मृतिव्याख्यातृभिः सर्ववचनानां व्यस्थितिम्। ब्रुवाणैमनमयो व्युत्पाद्यन्ते हि केवलं॥

जहाँ एकही ग्रन्थकार के वचनों में विरोध भासमान हो, वहाँ कुछ कल्पना का सहारा लेकर उनका समन्वय करना न्यायसंगत है; परन्तु विभिन्न ग्रन्थकारों के वचन में समन्वय होना ही चाहिए, ऐसा मानना युक्तिसंगत नहीं है।
—धर्मनिर्णय-मंडल, लोनावाला

वर-कन्या-गुणमेलापक-सारणी

पाठकों की सुगमता के लिए वर-कन्या के मुहूर्त-शास्त्रोक्त गुण दोष एकत्र की हुई सारणी दी जा रही है। देखनेवाले को केवल वर-कन्या की राशि, नक्षत्र अथवा नक्षत्र-चरण मात्र जानने की आवश्यकता है। सीधी (पड़ी) पंक्तियों में वर की राशि के नीचे नक्षत्र और उसके चरण की संख्या दी गयी हैं; इसी प्रकार खड़ी पंक्तियां कन्या की है। वर-कन्या दोनों पंक्तियाँ जहाँ मिलें, उस कोष्ठक में जो संख्या हो, बस समझिये, उतने ही गुण मिलते हैं। गुणों की संख्या के नीचे जो ऋण – धन + के चिन्ह व अंक हैं, उनका विवरण यह है : नाड़ी-दोष की जगह ३, गण-महादोष की जगह १, भकूट-महादोष, षडाष्टक में ६, नवपञ्चक में ५, द्विर्द्वादश में ४, योनि-वैर में २, और जहाँ कन्या का नक्षत्र वर के नक्षत्र से पहले है, वहाँ ० रखा है। जहाँ थोड़ा दोष समझा गया है, वहाँ ऋण– का और जहाँ अधिक समझा गया है, वहाँ +का चिन्ह है। जहाँ गुणों की संख्या के नीचे कोई चिन्ह या अंक नहीं है, वहाँ निर्दोष समझना चाहिए। यदि भकूट-दोष न हो तो २० गुण मिलने पर मध्यम और उससे अधिक मिले तो श्रेष्ठ है; परन्तु दुष्ट-भकूट में २५ गुण तक मध्यम और ऊपर श्रेष्ठ समझना चाहिए। शुभ भकूट में १६ गुण से कम हो और दुष्ट भकूट में २० गुण से कम हो तो विवाह के लिए विचार न करना चाहिए, क्योंकि अशुभ है। एक नक्षत्र में पाद-भेद हो तो नाड़ी-दोष नहीं माना जाता।

→ वरराशि	सं.	वरराशि नक्षत्र →	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
↓		वधू रा. न.	अ.	भ.	कृ. १	कृ. ३	रो.	मृ. २	मृग २	आर्द्रा	पुन ३	पुन १	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उफा १	उफा ३	हस्त	चि. १
	१	अश्विनी	२८ ३	३३ ०	२७॥	१८॥ ४	२१॥ -४	२२॥ -४	२५	१७ ३	१८ ३	२२॥ ३	३०॥	२७	२७ +५	३१ +५	२२॥ ३५	१२ ६	६ २३६	१९ ६
मेष	२	भरणी	३४	२८ ३	२८ १	१६ ४१	२२॥ ४	१४॥ ३४	१७ ३	२६	२६	३०॥	२२॥ ३	२४॥ १	२६ -१५	२४ ३५	३२ +५	२०॥ ६	२१ ६	४ १:६
	३	कृत्ति. १	२६॥	२८ १	२८ ३	१८ ३४	१० १३४०	१६॥ ४	१६	२० १	२०	२४॥	२६॥	२२॥ ३	२२॥ ३५	२६ १५	२७ १५	१६॥ १६	१६॥ ६	१८ ६
	४	कृत्ति. ३	१७॥ ४	१६ १४	१६ ३४	२८ ३	१६ ३	२५॥	२३॥ +४	२४॥ १४	२४॥ +४	२१	२३	१६ ३	१७॥ ३	२१ १	२२ १	२८ १५	२८ +५	३०॥ +५
वृष	५	रोहिणी	२२॥ -४	२२॥ -४	१० ३४१	१८ ३१	२८ ३	३६ ०	३४ ०४	२६॥ +४	२६॥ +४	२६	२६	१२ ३१	१०॥ ३१	२४॥	२६	३२ +५	३२ +५	२७ -१५
	६	मृगशी. २	२२॥ -४	१३॥ ३४	१७॥ -४	२५॥	३५	२८ ३	२४ ३४	३० ०४	२६॥ +४	२६	१८ ३	२१	१६॥	१५॥ ३	२३॥	२६॥ +५	३२ +५	२० ३५
	७	मृगशी. २	२५	१६ ३	२०	२४॥ +४	३४ +४	२५ ३४	२८ ३	३२ ०४	३१॥	२० -४	१२ ३४	१५ ४	२३॥	१६॥ ३	२७॥	३०॥	३३	२१ ३
मिथुन	८	आर्द्रा	१६ ३	२७	२१ १	२५॥ +१४	२६॥ +४	३१ +४	३२	२८ ३	२५ ३०	१३॥ ०३४	२१ -४	१४ १४	२२॥ १	२८॥	२१॥ ३	२४॥ २	२४॥ ३	२७ १
	९	पुनर्वसु ३	१६ ३	२६	२२	२६॥ +४	२८॥ +४	२६॥ +४	३०॥	२३ ३	२८ ३	१५॥ -३४	२२॥ ४०	२१ -४	२२॥ +२	२६॥ +२	२०॥ ३	२३॥ ३	२४॥ ३	२६॥
	१०	पुनर्वसु १	२१॥ ३	२८॥	२४॥	२१	२३	२४	१८ ४	१०॥ ३४	१४॥ ३४	२८ ३	३४ ०	२६॥	२३॥ +२४	२७॥ २४	२१॥ ३४	१७ २	१८ ३	२०
कर्क	११	पुष्य	२६॥	२०॥ ३	२६॥	२३	२३	१६ ३	१० ३४	१८ ४	२०॥ ४	३४	२८ ३	२६ ०	२५॥ +४	२१॥ ३४	३०॥ +४	२६	२७	१२ ३
	१२	आश्लेषा	२५	२३॥ १	२१॥ ३	१८ ३	१० ३१	१८	१२ ४	१२ १४	१६ ४	२८॥	२८	२८ ३	२२ ०३४२	२२॥ १४	२४॥ १४	२० १	२०	२५
	१३	मघा	२६ +५	२६ १५	२२॥ ३५	१६॥ ३	८॥ ३१	१६॥	२०॥	२०॥ १	१६॥ -२	२२॥ +२४	२५॥ +४	२२ ३४२	२८ ३	३० ०१	२६॥ १	२२॥ १४	२२॥ +४	२८॥ ४
सिंह	१४	पू. फा.	३२ +५	२४ ३५	२६ -१५	२० १	२२॥	१४॥ ३	१८॥ ३	२६॥	२५॥ -२	२८॥ +२४	२३॥ ३४	२२॥ -१२४	३० -१	२८ २	३४ ०	३० ०४	२८॥ +४	१४॥ १:४
	१५	उ. फा. १	२३॥ ३५	३२ +५	२७ -१५	२१ -१	२४	२२॥	२६॥	२७॥ ३	२०॥ ३	२३॥ ३४	३२॥ +४	२५॥ -१४	२६॥ -१	३४	२८ ३	२२ ३४	२३ ०३४	२०॥ १४२
	१६	उ. फा. ३	१४ ३६	२१॥ ६	१७॥ १६	२८ +१५	३१ +५	२६॥ +५	२६॥	२३॥ ३	२३॥ ३	१६ ३	२८	२१ १	२३॥ १४	३१ +४	२३ ३४	२८ ३	२७ ०	२४॥ +१२
कन्या	१७	हस्त	१० २३६	२१ ६	१८॥ ६	२६ +५	३० +५	३१ +५	३१	२२॥ ३	२३॥ ३	१६ ३	२८	२२	२४॥ +४	२८॥ +४	२३ ३४	२६ ३	२८ ३	२८ ०
	१८	चित्रा २	१३ ६	५ १३६	१६ ६	२६॥ +५	२७ १५	१६ ३५	१६ ३	२५ १	२३॥	१६	११ ३	२५	२६॥ +४	१५॥ १३४	२०॥ १२४	२१॥ १२	२६	१८ ३
	१९	चित्रा २	२१॥	१३॥ १३	२७॥	२६॥ +६	२७ १६	१६ ३६	२० ३५	२६ १५	२४॥ +५	१८॥	१०॥ ३	२४॥	२५॥	११॥ १२	१६॥ १२	२३॥ १२४	२६ +४	२६ ३४
तुला	२०	स्वाती	२७॥ +२	२६॥	१७॥ ३	१६॥ ३६	२०॥ ३६	३१ -६	३२ +५	३३ +५	३४ +५	२८	२७॥	१३॥ ३	१२॥ ३	२४॥	२५॥	३२॥ +४	३४॥ +४	२७ +४
	२१	विशा. ३	२२॥	२२॥ १	२०॥ ३	२२॥ ३६	१७॥ १३६	२५॥ -६	२६॥ +५	२६ १५	२६ +५	२०	२०	१६॥ ३	१७॥ ३	१६॥ १	१६॥ १२	२३॥ १४२	२४॥ +४	३४॥ +४
	२२	विशा. १	२३॥ +६	२३॥ १६	२०॥ ३६	१८॥ ३	१४॥ १३	२२॥	१२ ६	१२॥ १६	१२॥ ६	१८ -५	१८ -५	१४॥ -३५	२१॥ ३	२३॥ १	२०॥ १२	१६ १२	१७	२७
वृश्चिक	२३	अनुराधा	३१॥ +६	२१॥ ३६	२५॥ -६	२३॥	२७॥	२०॥ ३	१० ६	१५ २६	१६॥ ६	२५ -५	१७ ३५	२० -५	२४॥	२०॥	२८॥	२४	[illegible]	१० ३
	२४	ज्येष्ठा	१६ ३६	२४॥ १६	३०॥ -६	२८॥	२२॥ १	२२॥	१२ ६	२ ३१६२	६४ ३	६॥ ५३	१६ +५	२५ -५	३१	२३॥ १	१५॥ १३	११ १३	११ ३	२३
	२५	मूल	१६ ३५	२७ १५	३१॥ +५	२० ६	१३ १६	१३ ६	२०	१५ १३	११ २	१४ ३६	२४ ६	२६॥ ६	३० +५	२४ १५	१६॥ १५३	१३ १५	१३ ३	२५
धनु	२६	पू. षा. ॥	३३ +५	२५ ३५	२५ -१२५	१३॥ १६२	२० ६	१२ ३६	१६ ३	२७	२७	३० ६	१६ २३६	२४ १६	२६ -१५	२४ ३५	३२ +५	२८॥	२७	११ १३
	२७	पू. षा. ३॥	३४ +५	२६ ३५	२६ -१२५	१४॥ १६२	२१ ६	१३ ३६	१८ ३	२६	२६	३०॥ ६	१६॥ २३६	२४॥ १६	२६ -१५	२४ ३५	३२ +५	२७॥	२६	१० १३
	२८	उ. षा. १	३२॥ +५	३४ +५	२० १३५	८॥ १३६	१२॥ ३३६	१६ २६	२४ +२	२६	२६	३०॥ ६	३०॥ ६	१६॥ १६३	१४॥ १५३	३० +५	३२ +५	२७॥	२७॥	२० १
	२९	उ. षा. ३	२८	२६॥	१५॥ १३	२० १३५	२४ २३५	३०॥ +२५	२७॥ +२६	२६॥ -६	२६॥ ६	२७	२७	१३ १३	३॥ १३६	१६ ६	२० ६	२५ +५	२५ ५	१७॥ १५
मकर	३०	श्रवण १॥	२८	२७	१४॥ ३२	१६ ३५२	२५ ३५	३४ +५	३१ -६	२८॥ -६	२६॥ -६	२७	२५ +२	१४ ३	५॥ ३६	१७॥ ६	१६ ६	२४ +५	२५ +५	१६ ५
	३१	श्रवण २॥	२७	२६	१३॥ ३२	१८ ३५२	२४ ३५	३३ +५	३०॥ -६	२८ ६	२६ ६	२८	२६ +२	१६ ३	६॥ ३६	१८॥ ६	२० ६	२३॥ +५	२४॥ +५	१८॥ ५
	३२	धनिष्ठा २	२०	११ १३२	२६	३०॥ +५	२७ १५	१६ ३५	१६॥ ३६	२३॥ १६	२२ -६	२१	१३ ३	२७	१६॥ ६	५॥ १३६	१२॥ १६	१६ १५	१७॥ +५	१५॥ ५
	३३	धनिष्ठा २	२०	११ १३२	२६	३०॥	२७ १	१६ ३	१३ ३५	२० १५	१८॥ +५	१३॥ ६	५॥ ३६	१६॥ ६	२५॥	११॥ +१३	१७॥ १	२३॥ १६	२५ +६	२३ ३६
कुंभ	३४	शतभिषा	१५ ३	२१ १	२७	३१॥	२४॥ १	२६	२० +५	१३ १३५	१३ ३५	८ ३६	१४॥ ६	२०॥ ६	२५॥	१६॥ १	१२॥ १३	१८॥ १३६	१४॥ २३६	३१ ६
	३५	पू. भा. ३	१८ ३	२५ +२	२० -१	२४॥ -१	३१॥	३१॥	२५॥ +५	१८ ३५	१८ ३५	१३ ३६	२१ ६	१३॥ १६	१६॥ १	२५॥	१५॥ ३	२१॥ ३६	२१॥ +६	२३॥ १६
	३६	पू. भा. १	२१॥ ३४	८॥ +४२	२३॥ -१४	१६ १	२६	२६	२५॥	१८ ३	१८ ३	१८ ३५	२६ ५	१८॥ १५	२४॥ -१६	३०॥ +६	२०॥ ३६	१५॥ ३	१५॥ ३	१७॥ +१
मीन	३७	उ. भा.	३१॥ +४	२२॥ ३४	२५॥ -१४	२१ १	२५	१७ ३	१६॥ ३	२५॥	२७	२७ ५	२३ ३५	२१ १५	२४॥ -१६	२२॥ ३६	३२॥ +६	२७॥	२६॥	८॥ १३२
	३८	रेवती	३२ +४	३१॥ +४	१७॥ ३४	१३ ३	१६ ३	२५	२४॥	२४॥	२५॥	२५॥ ५	२७ ५	१४ ३५	१६ ३६	२६॥ +६	२६॥ +६	२४॥	२६॥	१८॥

क्र.	तुला			वृश्चिक			धनु				मकर				कुम्भ			मीन		
	वि.२	स्वा.	वि. ३	वि. १	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पूषा॥	पू. ३॥	उषा१	उषा३	श्र १॥	श्र२॥	ध. २	ध.२	शत	पूभा३	पूभा१	उ. भा	रेवती
१	२२॥	२५॥ -२	२१॥	२४॥ -६	२३॥ -६	२१ २६	२० २'५	३२ +५	३३ +'५	३१॥ +'५	२६	२७	२६	१९	१९	१५ ३	१५ ३	२०॥ ३६	३१॥ +४	३३ +४
२	१३॥ १	२९॥	२०॥ -१	२३॥ -१६	२३॥ ३६	२५॥ -१६	२७ १'५	२५ ३'५	२६ ३'५	३४ +'५	२८॥	२७	२६	९ १३२	९ १३२	२० -१	२३ -२	२८॥ +२४	२३॥ +४	३३॥ +४
३	२७॥	१५॥	१९॥	२२॥ ३६	२५॥ -६	३१॥ -६	३१॥ +'५	२४ १२'५	२५ १२'५	२० =१'५	१४॥ १३	१२॥ २३	११॥ २३	२४	२४	२६	१८ १	२३॥ १४	२६॥ १४	१७॥ ३४
४	२९॥ -६	१७॥ ३६	२१॥ -६	२०॥ ३	२३॥	२९॥	२० ६	१३॥ १२६	१४॥ १२६	८॥ १३६	२० १३'५	१८ ३'५२	१७ ३'५२	२९॥ +'५	२८॥	३०॥	२२॥ १	१९ १	२२ १	१३ ३
५	२६ -१६	२१॥ -६	१६॥ ३१६	१५॥ ३१	२९॥	२३॥ १	१३ १६	२० ६	२१ ६	१२॥ ३६२	२४ ३'५२	२६ ३'५	२५ ३'५	२७ -१'५	२६ १	२२॥ -१	३०॥	२७	२५	१७ ३
६	१९ -६	३१ -६	२५॥ -६	२४॥	२१॥ ३	२४॥	१४ ६	११ ३६	१२ ३६	१८ २६	२९॥ +२'५	३४ +'५	[illegible]३ +'५	३० ५३	१९ ३	२५	२९॥	२६	१६ ३	२५
७	२१ ३'५	३३ +'५	२७॥ +'५	१५ ६	१२ ६	१५ ६	२१	१९ ३	१८ ३	२३ +२	२६॥ -२६	३२ -६	२१॥ -६	१८॥ ३६	१३ ३'५	२० +'५	२३॥ +'५	२५॥	१५॥ ३	२४॥
८	२७ -१'५	३४ +'५	२७ -१'५	१४॥ १६	१८ २६	४ १३६२	१६ १३	२८	२७	२७	३०॥ -६	३०॥ -६	३० -६	२३॥ -१६	१९ +१'५	१२ -३'५	१७ ३५	१९ ३	२६॥	२६॥
९	२६॥ +५	३४ +५	२८ +'५	१५॥ ६	२१॥ ६	७ २६	१४ ३	२७	२६	२६	२९॥ -६	३०॥ -६	३० -६	२४ -६	१८॥ +'५	१३ ३'५	१६ ३'५	१८ ३	२७	२६॥
१०	१९॥	२७	२१	२० +'५	२६ +'५	११॥ ३'५	१५ ३६	२८ -६	२८॥ -६	२८॥ -६	२५	२६	२७	२०	१२॥ ६	७ ३६	१० ३६	१६ ३'५	२५ +५	२४॥ +'५
११	११॥ ३	२६॥	२१	२० -'५	१८ ३'५	२१ -'५	२४ ६	१८ २३६	१८॥ २३६	२८॥ ६	२५	२३ -२	२४ -२	१२ ३	४॥ ३६	१३॥ ६	१८ ६	२४ +'५	१८ ३५	२६ +'५
१२	२४॥	११॥ ३	१६॥ ३	१५॥ ३'५	२० -'५	२६ -'५	२९॥ ६	२३ १६	२३॥ १६	१५॥ ३१६	१२ १३	१२ ३	१३ ३	२६	१७॥ ६	१८॥ ६	११॥ १६	१७॥ १'५	२० १५	१२ ३'५
१३	२४॥	१०॥ ३	१६॥ ३	२२॥ ३	२४॥	३२	३१ +'५	२६ १'५	२६ १'५	१५॥ १३'५	३॥ २१६	४॥ ६३	५॥ ६२	१९॥ ६	२४॥	२४॥	१८॥ १	२५॥ -१६	२५॥ १६	१९ ३६
१४	१०॥ १३	२४॥	१८॥ १	२४॥ -१	२२॥ ३	२४॥ -१	२५ +१५	२४ ३'५	२४ ३'५	३१ +'५	१९ ६	१८॥ ६	१९॥ ६	५॥ १३६	१०॥ १३	१८॥	२४॥	३१॥ -६	२३॥ ३६	३१॥ -६
१५	१६॥ १२	२५॥	१६॥ १२	२३॥ -१२	३०॥	१६॥ १३	१६॥ १३'५	३२ +'५	३२ +'५	३२ +'५	२० ६	२० ६	२१ ६	१२॥ १६	१७॥ १	११॥ १३	१५॥ ३	२२॥ ३६	३३॥ -६	३१॥ -६
१६	२३॥ १२४	३२॥ +४	२३॥ -१२४	१८ १२	२६	१२ १३	१४ १३	२९॥	२८॥	२८॥	२६ +'५	२६ +'५	२५॥ +'५	१७ +१'५	२३॥ -१६	१७॥ १६	२१॥ ३६	१७॥ ३	२८॥	२६॥
१७	२७ ०४	३३॥ +४	२४॥ +४	२०	२६	१३ ३	१५ ३	२७	२६	२७॥	२५ +'५	२६ +'५	२५॥ +'५	१९॥ +'५	२६ -६	१५॥ ३६२	२०॥ ३६	१६॥ ३	२६॥	२७॥
१८	२५ ३४	२६ ०४	३३॥ +४	२८	११ ३	२५	२७	१३ १३	१२ १३	२१ १	१८॥ १'५	१९ +'५	१८॥ +'५	१६॥ '५	२३ ६	३१ -६	२३॥ १६	१९॥ १	१०॥ १३२	१९॥
१९	२८ ३	१७ ०	३४॥	२४॥ ४	६॥ ३४	२०॥ ४	२७	१३ १३	१२ १३	२१ १	२५॥ १	२६	२५॥	२३॥ ३	२५ ३'५	३३ +'५	२५॥ १'५	१३॥ १६	४॥ १३६२	१३॥ ६
२०	२७	२८ ३	२० ०३	१० ३४०	२२॥ ४	१७॥ ४	२३	२७	२६	१८ ३	२२॥ ३	२३॥ ३	२३ ३	२६॥	२८ +'५	२७ +'५२	३२ +'५	२० ६	२३॥ ६	१६॥ ३६
२१	३४॥	१८ ३	२८ ३	१७ ३४	१७ ०४	२१॥ ४	२७	२१ १	२० १	१३ १३	१७॥ १३	१६॥ ३	१६ ३	३०	३१॥ +'५	३३ +'५	२७ १'५	१५ १६	१४ +६२	५॥ ३६
२२	२३॥ ४	७ ३४	१६ ३४	२८ ३	२७ ०	३१॥	२८॥ ४	२२॥ ४१	२३॥ ४१	१६॥ १२४	१२ १३	११ ३	११ ३	२५	२४	२५॥	१९॥	२६ १'५	२५ १'५२	१२॥ ३५
२३	६॥ ३४	२०॥ ४	१६ ४	२७	२८ ३	२१ ०	२२॥ +२४	२०॥ ३४	२१॥ ३४	२९॥ +४	२५	२६	२६	१२ ३	११ ३	२१	२४॥	३१ +'५	२४ ३'५	३३ +'५
२४	१९॥ ४	१४॥ ४	१९॥ ४	३०॥	३०	२८ ३	२१ ०२.४	२३॥ १४	२४॥ १४	१४॥ १४	२० १	२०	२०	२५	२४	१८ ३	१० १३	१६॥ १'५	२७ १'५	२७ +'५
२५	२५	२१	२५	२८॥ +४	२१॥ +२४	२१ ३४२	२८ ३	२८ ०१	२७ ०१	२५॥ १	१६॥ १४	१६॥ ४	१६ ४	२१ ४	२८॥	२१॥ ३	१४॥ १३	१६ १३	२५ १	२६॥
२६	११ १३	२७	१९ -१	२२॥ -१४	२२॥ ३४	२४॥ -१४	२८ +१	२८ ३	२७ ३	३३ ०	२४ ०४	२७॥ ४	२७ ४	७ १३४	१४॥ १३	२३॥ १	२८॥	३०	२३ ३	३१
२७	१० १३	२६	१८ १	२३॥ -१४	२३॥ ३४	२५॥ -१४	२७ +१	२७ ३	२८ ३	३४ ०	२५ ०४	२८॥ ४	२७॥ ४	७॥ १३४	१३॥ १३	२२॥ १	२८॥	३०॥	२३॥ ३	३१॥
२८	२० १	१८ ३	१२ १३	१७॥ १३४	३१॥ +४	२५॥ -१४	२५॥ -१	३३	३४	२८ ३	१८ १४	१७ ३४०	१५ ३४०	१६॥ १४	२२॥ १	२२॥ १	२७॥	३१॥	३१॥	२३॥ ३
२९	२४॥ -१	२२॥ ३	१६॥ १३	१३ ३१	२७	२१ १	१६॥ १४	२४ ४	२५ ४	१९ ३४	२८ ३	२६ ३०	२५ ३०	२५॥ +१	१४॥ +१४	२४॥ +१४	३०॥ +४	२९॥	२९॥	२१॥ ३
३०	२५	२२॥ ३	१५॥ ३	१२ ३	२७	२२	१७॥ ४	२४॥ ४	२५॥ ४	१६ ३४	२५ ३	२८ २	२७ ३	२७ -०	२६ ०४	२५॥ +४	२८॥ +४	२७॥	२८॥	२१॥ ३
३१	२४॥	२२ ३	१५ ३	१२ ३	२७	२२	१७ ४	२४ ४	२४॥ ४	१५ २४	२४ ३	२७ ३	२८॥ ३	२८ -०	२५॥ ०४	२५ +४	२८ +४	२८॥	२९॥	२२॥ ३
३२	२१॥ ३	२३॥	२८	२५	११ ३	२५	२१ ४	७ ३४१	७॥ ३४१	१६॥ ४१	२५॥ १	२५	२६	२८ ३	२३॥ ३४	३०॥ ४०	२६ १४	२६॥ १	१५॥ १३	२२॥ +२
३३	२४ ३५	२६ -'५	३०॥ -'५	२४	१०	२४	२८॥	१४॥ १३	१३॥ १३	२३॥ १	२५॥ १४	२५ +४	२४॥ +४	२४॥ ३४	२८ ३	३३ ०	२८॥ १	२२ १४	८ १३४	१५ ४२
३४	३२ +५	२५ +२'५	३२ -'५	२५॥	२१	१९ ३	२२॥ ३	२४॥ १	२३॥ १	२३॥ १	२५॥ २४	२५॥ +४	२५ +४	३०॥ +४	३२	२८ २	१९ १३०	९॥ १२४०	२१ १४	१७ ४
३५	२४॥ -१'५	३२ +'५	२६ -१'५	१९॥ १	२५॥	१० १३	१४॥ १३	२८॥	२७॥	२९॥	३१॥ +४	२९॥ +४	२९ +४	२७ -१४	२८॥ -१	१८ १३	२८ २	१७॥ २४	२३॥ ०४	२१ ४२
३६	११॥ १६	१९ ६	१३ १६	२५ -१'५	३१ +'५	१५॥ १३'५	१४ १	२८	२८॥	३०॥	२८॥	२६॥	२७॥	२५॥ १	१८ १४	७॥ १४	१६॥ ३४	२८ ३	३३ ०	३०॥ +२
३७	२॥ १३६२	२०॥ ६	१२ १६२	२४ १५२	२५ ३५	२७ -१५	२४ -१	२२ ३	२२॥ ३	३०॥	२८॥	२८॥	२९॥	१३॥ १३	६ २३४	१७ १४	२१॥ ४	३२	२८ ३	३४ ०
३८	-१२॥ ६	१२॥ ३६	४॥ ३६	१६॥ ३५	३३ +५	२८ +५	२६॥	२९	२९॥	२१॥ ३	१९॥ ३	२०॥ ३	२१॥ ३	२१॥ -२	१४ ४२	१६ ४	१८ ४२	२८॥ +२	३३	२८ ३

वधूप्रवेश-द्विरागमन-मीमांसा

पूर्व पक्ष—नवीन पाणिगृहीत वधू का पितृगृह से पतिगृह में प्रथम प्रवेश को वधू-प्रवेश कहते हैं और जहाँ साथ ही यात्रा का भी विचार हो, उसे द्विरागमन कहते हैं तथा वर्षाभ्यन्तर या षोडश दिनाभ्यन्तर जो प्रवेश हो उसे नववधू-प्रवेश या शुद्ध वधू-प्रवेश कहते हैं। वहाँ पर पिता के गृह से यात्रा का विचार नहीं होता; क्योंकि विवाह-काल को ही यात्रा समय कहते हैं। वहाँ केवल वधूप्रवेश-मुहूर्त का ही विचार होता है। और जहाँ वर्षानन्तर वधूप्रवेश है, वहाँ पर—"स्त्रीविवाहः कुले निर्गमः कथ्यते पुंविवाहः प्रवेशो वसिष्ठादिभिः। निर्गमादादितो न प्रवेशो हितस्तत्र संवत्सरान्तोऽवधिः कीर्तितः" इससे प्रथम यात्रा-समय के समाप्त हो जाने से द्वितीय यात्रा-काल की शुद्धि की आवश्यकता रहती है। अतः यात्रा और वधूप्रवेश दोनों मुहूर्तों के विचारवाले यात्रा-मुहूर्त की द्विरागमन संज्ञा है। वहाँ पर यात्रा में शुक्रादि-विचार के आवश्यकतानुसार शुक्र-सम्मुखादिका विचार है। अतः प्रथम वर्ष में केवल वधू-प्रवेश-मुहूर्त का विचार करना चाहिये। तृतीय पञ्चम आदि में द्विरागमन और वधूप्रवेश दोनों का विचार करना चाहिये। अतः तृतीयादि विषम वर्ष में जो वधूप्रवेश होता है, वही द्विरागमन है—ऐसा शास्त्र का मत है। षोडश दिन के अन्दर विहित दिनों में ही प्रवेश करे। वहाँ यात्रा सम्बन्धी तिथि मास नक्षत्र आदि की शुद्धि की आवश्यकता नहीं हैं; केवल वधू-प्रवेश-मुहूर्त विचारना चाहिये, यह धर्मसिन्धु से स्पष्ट है। सोलह दिन के बाद, मास के भीतर विषम दिन में तथा १ महीने बाद वर्षाभ्यन्तर विषम मास में, वृश्चिक, कुम्भ, मेष के सूर्य में वधू-प्रवेश शुक्लपक्ष में श्रेष्ठ है। तृतीय आदि वर्षों में यात्रा-विचार भी करना चाहिए। अतः यात्रा के सम्बन्ध से शुक्र-शुद्धि का विचार करना आवश्यक है। वह भी मेष, वृश्चिक, कुम्भ के ही सूर्य में होता है तथा जो प्रत्यक्ष द्विरागमन अर्थात् द्वितीय बार पतिगृह में जाना है, वह द्वयङ्ग यात्रासंज्ञक है; वहाँ राहु का विचार होता है। वह भी कहीं मासिक और कहीं त्रैमासिक राहु का ग्रहण किया जाता है। इस तरह राहु की शुद्धि में भी कहीं वाम-पृष्ठ तथा कहीं-कहीं गंगा से दक्षिण में दक्षिण-पृष्ठ राहु लेते हैं। यहाँ पर देश-भेद, आचारभेद से व्यवस्था करनी चाहिए। मुहूर्त-चिंतामणि में वधूप्रवेश तथा द्विरागमन दो प्रकरण अज्ञान से शास्त्र का अभिप्राय न समझकर, किसी ने पृथक् कर दिया है—यह उसके दूसरे श्लोक की पीयूषधारा टीका देखने से स्पष्ट हो जायेगा।—काशी के विश्व पंचांग में स्व० श्री पं० रामयत्नजी ओझा का लेख।

उत्तर पक्ष—विवाह के बाद पहले-पहल पति के घर में वधू के प्रवेश को 'वधू-प्रवेश' और वधू-प्रवेश हो जाने के बाद पिता के घर में लौटकर पुनः (दूसरी बार) पति के घर जाने को 'द्विरागमन' तथा पितृ-गृह लौटकर पुनः तृतीय बार पति के घर जाने को 'द्वयङ्ग' यात्रा कहते हैं।

वधूप्रवेशः प्रथमः प्रवेशः पितुर्गृहाद्भर्तृगृहेऽङ्गनायाः पितुर्गृहागत्य पुनर्गमो वै द्विरागमोऽयं निखिले निबन्धे॥ उद्वाह समये बाला व्रजेद्भर्तृगृहं प्रति। पुनस्तात गृहाद्यात्रा तद्द्विरागमनं स्मृतम्॥ जाते द्विरागमे पत्न्याः पुनः पति गृहे गमः। पतिगेहे स्थितायाश्च स द्वयङ्गं इह कीर्तितः॥

वधूप्रवेश में, चाहे वह जब हो, शुक्र का विचार नहीं करना चाहिये। शुक्र का विचार केवल द्विरागमन (दूसरी बार पति के घर जाने) में ही करना चाहिये।

स्वग्राममेकपुरात्मसद्मसु, चतुर्वक्त्रे चतुःशालके तूद्वाहेषु वधूप्रवेशनृपभीदुर्भिक्ष पीडासु च॥ तीर्थस्वामिनिदेशयोर्भृगुवसिष्ठात्र्यंगिरः काश्यपे भारद्वाजवात्स्ययोर्हितकरं यानं सितज्ञोन्मुखम्॥ रात्रा विवाहभे शस्तः सन्मुहूर्ते स्थिरोदये। वधूप्रवेशो नैवात्र प्रतिशुक्राद्भयं विदुः॥ नवोढ़ायास्तु वैधव्यं यदुक्तं सम्मुखे भृगौ। तदेव विबुधैर्ज्ञेयं केवलं तु द्विरागमे॥ तथा च—विवाहे गुरुशुद्धिः स्याच्छुक्रशुद्धिर्द्विरागमे। त्रिगमे राहुशुद्धिश्च चन्द्रशुद्धिश्चतुर्गमे॥ तथैव लल्लः—स्वभवनपुरप्रवेशे देशानां विप्लवे तथोद्वाहे नववध्वां गृह गमने प्रतिशुक्रः विचारणा नास्ति॥

इस वचनों से स्पष्ट है कि वधूप्रवेश में, चाहे वह जब हो, शुक्र के सम्मुख-दक्षिण का विचार करना कदापि शास्त्र-सम्मत नहीं है। विशेषता केवल यह है कि विलम्बित वधूप्रवेश, मार्गशीर्ष, फाल्गुन और वैशाख, इन महीनों में विवाह के अव्यवहित (बाद का) वधू-प्रवेश वैवाविहक प्रत्येक महीनों में होता है जैसाकि मुहूर्त-मार्त्तण्ड के ४०वें श्लोक से स्पष्ट सिद्ध है।

लग्नादिष्ट१६दिनान्ततः सममुनि७ष्व५ङ्क९द्युपूर्वं-त्वयुग्मस्त्रे मास्यपि हायने शरमिताद्वर्षात्परं स्वेच्छया। वैफामार्गसिते जगुः श्रुतियुगोद्वाहर्क्षचित्राश्विनीज्यक्षेश्र-नवमन्दिरे निशि वधूसंवेशमङ्गे स्थिरे॥

किसी-किसी देश में जब विवाह के बाद ही वधू अपने पति के घर नहीं जाती तो उसके वधूप्रवेश का लोप करके उसी (वधू-प्रवेश ही) को द्विरागमन मान कर उसमें शुक्र-शुद्धि का विचार करते हैं; परन्तु यह वहाँ की लोक-

परम्परा है, इस विधि का शास्त्रों में कोई प्रमाण नहीं मिलता, तथा जो वधू प्रवेश के—

(१) विवाह-दिन से १६ दिन तक सम और ५ ७-९ दिनों में,

(२) विवाह के १७ वें दिन से एक मास तक,

(३) मास के बाद एक वर्ष तक,

(४) एक वर्ष के बाद से ५ वर्ष तक,

भेद माने जाते हैं, वे केवल सम-विषम दिन, मास, वर्ष के विचार के लिए ही कल्पित हैं जैसाकि मूल में लिखा है। उनका अन्य कोई प्रयोजन शास्त्रों में कहीं भी उपलब्ध नहीं होता। निर्णय-सिन्धु, धर्म-सिन्धु, निर्णयामृत, राजमार्त्तण्ड, ज्योतिर्निबन्ध, वृहद्दैवज्ञरञ्जन, ज्योतिर्विदाभरण, मुहूर्त-चिन्तामणि (पीयूषधारा), मुहूर्त-मार्त्तण्ड इत्यादि ग्रन्थों में इसी उपर्युक्त मूल ही के अनुरूप वचन उपलब्ध होते हैं।

यह उपर्युक्त रीति कब और कैसे प्रचलित हुई, किसने इसका प्रचार किया, इस बात की खोज शास्त्र के मर्मज्ञ पण्डितों को पक्षपातरहित बुद्धि एवं लोकोपकारक दृष्टि से अवश्य करनी चाहिए। मैंने तो ऊहापोह (छानबीन) करने से जहाँ तक शास्त्रों में प्रमाण मिले हैं उन्हीं के आधार पर लिखा है। इसमें मेरा किसी प्रकार का दुराग्रह नहीं है। यह ज्योतिषशास्त्र बालकों का खेल नहीं है। आगम शास्त्र है। इसमें जहाँ किसी विषय पर वचनों में द्वैविध्य आ पड़े, वहाँ पूर्वापर वचनों का समन्वय करना चाहिये। यदि किसी प्रकार से समन्वय न हो सके तो बहुमत को ग्रहण करना चाहिए। जहाँ पर सब ऋषियों और आचार्यों का मतैक्य हो, वहाँ तो कहना ही क्या है। पूर्वाचार्यों का मत है—

ज्योतिषमागम शास्त्रं विप्रतिपत्तौ न योग्ययस्माकम्।
स्वयमेव कल्पयितुं किन्तु बहूनां मतं वक्ष्ये ॥

आर्ष मतों को छोड़ अपने मनमाने मत का आश्रयण करने से कभी भी भलाई और कार्य-सिद्धि नहीं हो सकती; क्योंकि श्रीकृष्ण भगवान् ने गीता में (१६, २३-२४) खुले शब्दों में कहा है—

यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्त्तते कामकारतः।
न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परां गतिम् ॥
तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ।
ज्ञात्वा शास्त्रविधानोक्तं कर्म कर्त्तुमिहार्हसि ॥

किन्हीं आधुनिक (पं० रामयत्न ओझाजी) का कहना है कि वधूप्रवेशार्थ यात्रा को ही द्विरागमन कहते हैं और १६ दिन के भीतर समय-शुद्धि इत्यादि का विचार न करके केवल वधू-प्रवेश का ही मुहूर्त देखना चाहिये। १६ दिन के बाद एक वर्ष तक विषम महीनों में मार्गशीर्ष, फाल्गुन, वैशाख में द्विरागमन (वधूप्रवेशार्थ यात्रा) का मुहूर्त न देखकर केवल वधूप्रवेश का ही मुहूर्त देखना चाहिए। एक वर्ष के बाद तीन, पाँच वर्षों में वधूप्रवेश और द्विरागमन (वधूप्रवेशार्थ यात्रा) दोनों का मुहूर्त देखना आवश्यक है।

परन्तु वधूप्रवेश और द्विरागमन का अर्थ पंकज शब्द की तरह बालक से वृद्ध तक में सर्वत्र वही निर्विवाद सिद्ध है जो पहले लिखा जा चुका है। शास्त्रों में कहीं भी वधूप्रवेशार्थ यात्रा का नाम द्विरागमन नहीं लिखा है। यह निजी कोरी कल्पना है। यदि थोड़ी देर के लिए वधूप्रवेशार्थ यात्रा को ही द्विरागमन मान लिया जाय तो वह विवाहोत्तर जब कभी हो (चाहे १६ दिनाभ्यन्तर हो या १६ दिनोत्तर हो, मास पर्यन्त या तदुत्तर वर्ष पर्यन्त हो या वर्षोत्तर पाँच वर्ष तक या पाँच वर्ष बाद हो) तभी द्विरागमन में शुक्र का विचार होना चाहिए; फिर जो एक वर्षाभ्यन्तर शुक्र-शुद्धि न देखना, उसके बाद सम्मुखादि रूप शुक्र-शुद्धि देखना उन्होंने लिखा है, वह उनका नितान्त भ्रम है; क्योंकि उनके लेख की पुष्टि का शास्त्रों में कोई प्रमाण नहीं मिलता; किन्तु जैसे विवाहाङ्ग कृत्यों को वैवाहिक नक्षत्रों में करते हैं, यथा शार्ङ्गिय ने—

विवाहकृत्यं सकलं विवाहभे विलोकयेन्नत्र बलं हिमद्युतेः।

रामदैवज्ञ ने—दलनकण्डनं वारकं ····विवाहविहितोडुभिर्विरचयेत् नारायण दैवज्ञ ने—

यस्याङ्गं यददोऽङ्गिनोऽगदितभे कुर्यात्·········

इत्यादि लिखा है, उसी प्रकार वधूप्रवेशार्थ यात्रा को प्रवेशोदित नक्षत्र ही में करना चाहिये। और वधूप्रवेश तथा वधूप्रवेशार्थ यात्रा दोनों में शुक्र का सम्मुख-वामरूप शुद्धि नहीं देखनी चाहिए, जैसाकि उपर्युक्त "रात्रौ विवाहभे ·" इत्यादि वचनों में वधूप्रवेश, स्वभवन पुर-प्रवेश, नववध्वा गृहागम् इत्यादि पदों से निर्विवाद स्पष्ट है। आधुनिक महाशय ने जो कन्या के विवाह को ही कन्या की प्रथम यात्रा मानकर वधूप्रवेशार्थ यात्रा को द्वितीय यात्रा (द्विरागमन) मानते हुये शुक्र-शुद्धि का विचार करना लिखा है और उसकी पुष्टि के लिए वात्स्यायन के—

स्त्रीविवाहः कुले निर्गमः कथ्यते पुंविवाहः प्रवेशो वसिष्ठादिभिः। निर्गमादादितो न प्रवेशो हितस्तत्र संवत्सरान्तोऽवधिः कीर्तितः ॥

इस श्लोक को उपन्यस्त किया है, वह भी उनकी नितान्त भूल है। वे इस श्लोक के अर्थ को एकदम नहीं जानते अथवा जान-बूझकर अर्थ का अनर्थ कर डाले हैं; क्योंकि इसका वास्तविक अर्थ यह है कि—कुल में स्त्री के विवाह को निर्गम(यात्रा) और पुरुष के विवाह को प्रवेश वसिष्ठादि ने कहा है। निर्गम (कन्या-विवाह) के पूर्व प्रवेश (पुत्र का विवाह) करना श्रेष्ठ नहीं और इसकी अवधि संवत्सर पर्यन्त अथवा संवत बदलने तक की है

यानी पुत्र-विवाह के बाद कन्या का विवाह संवत् बदलने तक नहीं करना चाहिए। इसीलिए गोविन्द दैवज्ञ ने इस श्लोक को 'मृतपरिणया······ मु० चि० विवाह-प्रकरण के १६वें श्लोक की टीका में लिखा है; परन्तु और विषयों की तरह इसमें भी कुछ समय सम्बन्धी मतभेद हैं। किसी ने एक वर्ष की, किसी ने ६ माह की, किसी ने संवत् बदलने तक की अवधि लिखी है, जैसाकि नीचे उद्धृत वचनों से स्पष्ट है—

एकमातृजयोरेकवत्सरे पुरुषस्त्रियो: ।
एकक्रिया न कर्त्तव्या क्रियाभेदो विधीयते ।।

नारद:—पुत्रोद्वाहात्परं पुत्रीविवाहो न ऋतुत्रये। संहिता दीपिके—

ऊर्ध्वं विवाहात्तनयस्य नैव कार्यो विवाहो दुहित: समार्धम्
कात्यायन ने संज्ञापूर्वक स्पष्ट लिखा है—

पुत्रोद्वाह: प्रवेशाख्य: सुतोद्वाहस्तु निर्गम: ।
मुण्डनं चौलमित्याहुर्व्रतोद्वाहौ तु मंगलम् ।।
कुले ऋतुत्रया दर्वाङ्ग मण्डनान्नस्तु मुण्डनम् ।
प्रवेशान्निर्गमो नेष्टो न कुर्यान्मंगलत्रयम् ।।

और भी:—पुत्रोद्वाहान्नैव पुत्रीविवाहस्तु ऋतुत्रये। एवं मुहूर्त-चिन्तामणि तथा मुहूर्त-मार्त्तण्ड में भी पुत्रो-द्वाहानन्तर ६ मास तक पुत्री के विवाह का निषेध लिखा है। वेद, वेदाङ्ग, धर्मशास्त्र, पुराणादि में सर्वत्र लाघव के लिये नाना प्रकार की संज्ञायें कल्पना कर ली गयी हैं। अत: यहाँ भी लाघवर्थ पुत्री-विवाह का नाम निर्गम और पुत्र के विवाह का नाम प्रवेश रखकर आचार्यों ने पुत्रोद्वा-हानन्तर पुत्री विवाह ६ मास तक करने का निषेध किया है। यहाँ आधुनिक के मतवाला पुत्री के विवाह का नाम यात्रा और पुत्र के विवाह का नाम प्रवेश कदापि नहीं है।

यदि 'तुष्यन्तु दुर्जन' न्याय से निर्गम का योगार्थ कन्या के विवाह की प्रथम यात्रा और प्रवेश का अर्थ वधूप्रवेश मान लिया जाय तो निर्गम के पूर्व प्रवेश होना कालत्रयबाधित है; क्योंकि बिना गमन के प्रवेश हो नहीं सकता, बल्कि यों कहना चाहिये कि तद्विषयक बुद्धि ही नहीं होती, कार्य होना तो दूर है।

यदि प्रवेशार्थ यात्रा को ही कन्या की द्वितीय यात्रा माने तो इसका यात्रोदित नक्षत्र में ही होना अनिवार्य है; फिर यात्रोदित नक्षत्रों से भिन्न (३ उत्तरा, रोहिणी, स्वाती, शतभिषा, मूल, चित्रा) नक्षत्रों में कन्या की द्वितीय यात्रा करना आधुनिक महाशय ने किस प्रमाण से लिख डाला, यह बात समझ में नहीं आती और उपर्युक्त नक्षत्रों में द्विरागमन करने का प्राचीनों का विधान भी व्यर्थ हो जाता है। तथा वधूप्रवेशार्थ यात्रा को द्विरा-गमन मानने और उसमें वर्षानन्तर शुक्र-शुद्धि का विचार करने पर उपर्युक्त समस्त आर्ष-वचनों पर एकदम पानी फिर जाता है। अत: आधुनिकों ने एतद्विषयक जो कुछ लिखा है वह निर्मूल और दुराग्रहपूर्ण है, यह विज्ञजन पक्षपातरहित बुद्धि से विचार करें।

—स्व० श्री पं० विन्ध्येश्वरी प्रसाद द्विवेदी।

गर्भाधान एवं गर्भ-निरोध

समस्त संसार में और विशेषत: भारत के सामने जनसंख्या-वृद्धि का सवाल भयावह रूप में उपस्थित है जिसके समाधान के लिए परिवार-नियोजन का कार्य-क्रम तेजी से चलाया जा रहा है।

गर्भ-निरोध में हमारे भारतीय(नाक्षत्र) ज्योतिष से भी बड़ी सहायता मिल सकती है। प्रत्येक मास में केवल ३ दिन संयम (सम्भोग वर्जित् करने मात्र) से अनपेक्षित गर्भधारण से बचा-बचाया जा सकता है तथा आवश्यक्ता होने पर गर्भाधान भी किया जा सकता है। विधि इस प्रकार है :—

स्त्री की जन्म कुण्डली में लग्न, रवि और चन्द्रमा जिस-जिस नक्षत्र पर हों, उन नक्षत्रों को जानना होगा; क्योंकि लग्न जिस नक्षत्र पर है, उस नक्षत्र पर और उससे सातवें, चौदहवें, और इक्कीसवें नक्षत्र पर एवं चन्द्र जिस नक्षत्र पर हो, उस पर और उससे चौदहवें नक्षत्र पर एवं सूर्य जिस नक्षत्र पर हो, उस पर तथा उससे भी चौदहवें नक्षत्र पर जब चन्द्रमा गोचर में आयेगा तभी स्पष्ट गर्भाधान-मुहूर्त बनेगा। और उस दिन से एक दिन आगे तथा एक दिन पीछे भी गर्भधान हो सकता है। गर्भाधान इन्हीं नक्षत्रों के दिन होगा, अन्यथा गर्भाधान नहीं होगा।

उपर्युक्त नक्षत्रों के दिन स्त्री की शारीरिक अवस्था गर्भाधान योग्य रहनी चाहिये। वे महीने में तीसो दिन गर्भाधान योग्य नहीं रहती। इस विषय में विद्वानों ने यह निश्चय किया है कि स्त्री रजस्वला होने के दिन से सात दिन के बाद केवल १२ दिन अर्थात् उन्नीसवें दिन तक ही गर्भधारण योग्य रहती है। इन्हीं १२ दिनों में जब-कभी उपर्युक्त नक्षत्रों के दिन आ जायँ. केवल वे ही दिन या उसके १ दिन आगे और १ दिन पीछे, ये ३ दिन ही महीने भर में गर्भाधारण के दिन होते हैं।

गणना करके देखा गया है कि इन गर्भाधान के नक्षत्रों का प्राय: एक ही दिन उन १२ दिनों के अन्दर आता है। अत: मास भर में. केवल उस दिन तथा एक दिन उससे आगे-पीछे कुल ३ दिन संयम रखने (रति-विमुख रहने) से गर्भाधान नहीं होगा।

यदि स्त्री की जन्म-कुण्डली न हो जिससे उसके लग्न तथा चन्द्र, सूर्य के नक्षत्र ज्ञात हो सकें; किन्तु यदि उससे उत्पन्न किसी सन्तान की ही कुण्डली बनी हो तो उस सन्तान की कुण्डली से भी माता के उपर्युक्त गर्भाधान-नक्षत्रों का ज्ञान हो सकता है।

अनेक परीक्षणों द्वारा यह सिद्ध हो चुका है कि माताओं की जन्मकुण्डली के उपर्युक्त नक्षत्रों में-से ही उनके गर्भ-जात सन्तान की जन्मकुंडली के लग्न का नक्षत्र होता है। अत: माता की जन्मकुंडली के लग्न, सूर्य एवं चन्द्र के नक्षत्रों के साथ उनके गर्भजात शिशु की जन्मकुंडली के लग्न, चन्द्र एवं सूर्य के नक्षत्रों से एक नियमबद्ध, अटल और घनिष्ठ सम्बन्ध होता है।

इसलिए जिन माताओं की जन्मकुण्डली न मिले उनका गर्भधान-नियंत्रण उनके गर्भजात एक शिशु की भी कुण्डली मिल जाने पूर्णरूपेण उपर्युक्त नियम-पालन के द्वारा हो सकता है, होता भी है; इसमें सन्देह के लिए कोई स्थान नहीं है।

यदि माता या सन्तान दोनों में-से किसी की कुण्डली न हो तो ऐसी अवस्था में उपर्युक्त बारहो दिन संयम अनिवार्य हो जायेगा।

एक प्रत्यक्ष उदाहरण—एक स्त्री की जन्मकुण्डली में लग्न-नक्षत्र 'हुस्त' है और चन्द्र-नक्षत्र भी 'हस्त' ही है। सूर्य-नक्षत्र अश्विनी है। लग्न एवं चन्द्र-नक्षत्र एक ही होने से हस्त से सातवाँ नक्षत्र मूल, चौदहवाँ नक्षत्र उत्तरा भादप्रदा तथा इक्कीसवाँ नक्षत्र आर्द्रा पड़ता है। सूर्य-नक्षत्र अश्विनी है, अतः उससे चौदहवां नक्षत्र 'चित्रा' होता है।

उपर्युक्त नियमानुसार उक्त रमणी के इन्हीं नक्षत्र में जब चन्द्रमा आये तो उसे गर्धधारण होना चाहिए तथा उसके गर्भज शिशु की जन्मकुण्डली में लग्न या चन्द्र-नक्षत्र इन्हीं नक्षत्रों में-से एक होना चाहिये। उक्त रमणी ता. १३-१२-१९५१ को रजस्वला हुई। उसके पाश्चात् आठवें दिन ता. २० दिसम्बर से १२वें दिन यानी ता. ३१ दिसम्बर सन् ५१ को उसे गर्भधारण हुआ। उस दिन रमणी का लग्न एवं चन्द्र-नक्षत्र हस्त ही था। पश्चात् यथासमय उसे सन्तान ता. २२ अगस्त सन् १९५२ ई० को दोपहर के पूर्व ९ बजकर २५ मिनट पर हुई जबकि चित्रा नक्षत्र था, जो रमणी के सूर्य-नक्षत्र से ठीक १४वाँ नक्षत्र है तथा सन्तान के जन्न-लग्न का भी नक्षत्र चित्रा ही है। यह एक उदाहरण विशेषतः इसलिए दिया गया कि उक्त रमणी गत सात वर्षो तक सफलतापूर्वक उपर्युक्त गर्भ-निरोध-नियम का पालन करने के बाद स्वेच्छानुसार गर्भवती हुई थी तथा नियम-पालन-काल में स्वस्थ एवं स्फूर्तिमयी थी।

गण्डमूल नक्षत्र और उनके फल

अश्विनी, आश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा, मूल और रेवती, ये ६ नक्षत्र गण्डमूल कहलाते हैं। इन नक्षत्रों में जन्मा हुआ बालक माता-पिता, कुल और अपने शरीर को नष्ट करता है। स्वयं का शरीर नष्ट न हो तो धन, वैभव, ऐश्वर्य, घोड़ों का स्वामी होता है। गण्डमूल में जन्मे हुए बालक का मुख २७ दिन तक पिता न देखे। प्रसुति-स्नान के पश्चात् शुभ मुहूर्त में गौ सुवर्ण-दानादि से शांति कर, शुभ वेला में बालक का मुख देखना चाहिये।

उपरोक्त किसी गण्डमूल नक्षत्र के चारो चरणों में-से जिस चरण में बच्चा पैदा हो, उसका विशेष फल आगे चक्र से मालूम कर लें।

अभुक्त मूल—ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्तिम पाँच घटी, किसी मत से चार घटी, किसी के मत से एक घटी और किसी के मत से आधी घटी, एवं मूल नक्षत्र के आदि की आठ घटी, किसी के मत से चार घटी, दो घटी, आधी का समय अभुक्तमूल कहलाता है। इस समय में जो बच्चा जन्म ले उसका परित्याग कर दे या आठ वर्ष तक बच्चे का पिता उसका मुख न देखे। शान्ति करके मुख देखने में शास्त्रीय बाधा नहीं है।

मूल नक्षत्र में गर्भाधान करना उचित नहीं है तथा इन नक्षत्रों में रजस्वला स्त्री को स्नान करना भी वर्जित है।

अश्विनी चरण-फल		आश्लेषा चरण-फल		मघा चरण-फल	
चरण	फल	चरण	फल	चरण	फल
१	पिता को भय	१	शांति से शुभ	१	माताको नेष्ट
२	सुख ऐश्वर्य	२	धन-नाश	२	पितृ-भय
३	मन्त्री-पद	३	मातृ-नाश	६	सुख
३	राज-सम्मान	४	पितृ-नाश	४	धनविद्यासुख
ज्येष्ठा चरण-फल		**मूल चरण-फल**		**रेवती चरण-फल**	
चरण	फल	चरण	फल	चरण	फल
१	बड़ेभ्राताकोनेष्ठ	१	पितृ-नाश	१	राजम्मा. सुख
२	छोटेभ्राताको,,	२	मातृ-नाश	२	मंत्रित्व-प्राप्ति
३	मातृ-नाश	३	धन-नाश	३	धन सुख-प्राप्ति
४	स्वयं-नाश	४	शांति से सुख	४	अनेक कष्ट

मूलशांति—जन्म से १२ वें दिन अथवा पुनः मूल नक्षत्र आने पर मूल नक्षत्र में ही अथवा किसी भी समय में रिक्ता तिथि, शनि, मंगलवार को छोड़कर क्षिप्र, मृदु, चर, ध्रुव नक्षत्र में मूल नक्षत्र की शांति करनी चाहिए।

प्रसव-दोष का अरिष्ट—चैत्र में कुतिया, वैशाख में ऊँटनी, ज्येष्ठ में बिल्ली, श्रावण में गधी व घोड़ी भाद्रप्रद में गौ, कार्तिक में स्त्री, मार्गशीर्ष में हथिनी, पौष में बकरी, माघ में भैंस बच्चा जने तो पिता और घरधनी की छः मास में मृत्यु होती है श्रावण में दिन को घोड़ी और माघ में 'बुधवार को भैंस प्रसूत हो तो घरधनी का महाभयअरिष्ट होवे। इसकी शांति के लिए प्रसूत गौ, आदि का शीघ्र दान कर घर में हवन, शांतिपाठ, पुण्याहवाचन, श्वेत सर्षप-हवन व्याहृति मन्त्रों से आहुति देवें जिससे शान्ति हो।

त्रिखल जन्म-फल—तीन पुत्रों के बाद कन्या हो या तीन कन्याओं के बाद पुत्र हो तो त्रिखल नामक दोष होता है। शांति के लिए त्रिखलशान्ति करावें।

दाँत निकलने का फल—बालक के जन्मते ही दाँत निकले हुए हों तो माता-पिता को अरिष्ट; ऊपर की पंक्ति में दाँत से जन्मे तो अधिक अरिष्ट हो। प्रथम ऊपर की पंक्ति में दाँत निकले तो मातुलपक्ष को भय हो। पहले मास में दांत निकले तो शरीर नष्ट, दूसरे में छोटा भ्राता नष्ट. तीसरे में बहन नष्ट, चौथे में भाई नष्ट, पाँचवे ज्येष्ठ बन्धु नष्ट, छठे में बहुभोग, सातवें में पिता-सुख आठवे में पुष्ट, नौवें में धनी, दशवें में सुख, ग्यारहवें में सुख, बारहवें में धनी हो।

एक नक्षत्रजात-फल—पिता पुत्र, माता-पुत्र वा कन्या, दो भ्राता, इनका एक नक्षत्र में जन्म हो तो दोनों में से एक की मृत्यु या मृत्यु-तुल्य कष्ट होता है। सोना-दान शान्ति हवन आदि कराने से अरिष्ट-निवारण होता है।

ज्योतिष का वरदान—१

महत्त्वपूर्ण व्यापारिक लिखा-पढ़ी, राजकीय या व्यापारिक कण्ट्रैक्ट, भेंट-मुलाकात, आवेदन-पत्र या टेण्डर देना, नवीन परिचय, मैत्री द्वारा कार्यसिद्धि, किसी कलाकृति का आरम्भ आदि अनेक महत्त्वपूर्ण कार्य हमारे दैनिक जीवन में आते रहते हैं जिनके लिए हम अभिष्ट फलदाता शुभ मुहूर्त चाहते तो हैं; पर यथाशीघ्र ; क्योंकि इन कामों के लिए सर्वाङ्गशुद्ध मुहूर्त की प्रतीक्षा में अधिक दिनों तक रुका नहीं जा सकता। अतः हम अपने प्रिय पाठकों के लाभार्थ प्रायः नित्य के शुभाशुभ काल को सरलतापूर्वक जान लेने की नवीन प्रणाली निम्न चक्र द्वारा समझा देते हैं। नीचे चक्र में सोलह योग दिये गये हैं जिनमें क्रमांक १ से ५ तक के शुभ, शेष अशुभ हैं। ये योग प्रत्येक 'वार' के साथ चक्रोक्त नक्षत्र अथवा तिथि के संयोग से बनते हैं। 'वार' सूर्योदय से शुरू होकर अगले दिन के सूर्योदय पर समाप्त होता तथा उसी समय से अग्रिम वार का आरम्भ हो जाता है। अतः इस बीच अभीष्ट वार को कौन-सा नक्षत्र, तिथि कब तक रहती है—यह जंत्री-पञ्चाङ्ग से ज्ञात करें ; फिर उन्हें उसी वार के नीचे के खानों में देखिये। बस, आपको उस वार के दिनरात के शुभाशुभ मुहूर्त-काल का स्वयं पता चल जायेगा।

नोट १.—विषाख्य, कुलिक और संवर्त योग की अवशिष्ट तथा वार-दग्ध, हुताशन की सर्व तिथियों का समावेश चक्र में वार-क्रम से अन्याय अशुभ तिथियों में हो गया है। इसलिए इन कुयोगों के खाने अलग से नहीं दिये गये हैं।

क्रमाङ्क	योग	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
१	अमृ. सिद्धियो विषयोग तिथि	हस्त ५	मृगशीर्ष ६	अश्विनी ७	अनुराधा ८	पुष्य ९	रेवती १०	रोहिणी ११
२	सर्वा सिद्धियो. दुष्ट तिथि	अश्वि. पुष्य तीनों उ.ह.मू १,३.७(संव)	रो.मृ. पुष्य अनु. श्र. २, ११	अश्वि. कृ. आश्ले.उ.भा ३. ९, १२	कृ.रो.मृ. ह.अनु. ७,९,११	अश्वि. पुन. पुष्य अनु. रे.	अश्वि. पुन. अनु. श्र.रे.	रो.स्वा.श्र. ११,१३
३	सिद्धियोगनक्ष	मूल	श्रवण	उत्तराभाद्रपदा	कृत्तिका	पुनर्वसु	पूर्वाफाल्गुनी	स्वाती
४	सिद्धियो.तिथि	०	०	३*,८†,१३	७*,१२	५,१०*, १५†,३०	१,६,११†	४†,१४*
५	रत्नांकुर योग	८†, १३	१	४†,१४*	५,१०*,१५†	२, ७*,१२	५,१५†	३*,८†
६	मृत्युयोग	अनुराधा	उत्तराषाढ़ा	शततारका	अश्विनी	मृगशीर्ष	आश्लेषा	हस्त
७	मृत्युदा तिथि अधम योग	१-४(विषाख्य ६-११	२, ७ १२	१,६,११	३,८,१३	४, ९, १४	२,७,१२	५,१०,१५,३०
८	क्रकचयोग	१२	११	१०	९	८	७	६
९	दग्धयोग	१२	११	५	१ (संवर्त) २ (विषाख्य) ३-४(कुलिक)	६	८-९ (विषाख्य)	९-७ (विषाख्य)
१०	उत्पातयोग	विशाखा	पूर्वाषाढ़ा	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उत्तरा फा.
११	कालयोग	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजित्	पू. भाद्रपदा
१२	यमघण्ट	मघा	विशाखा	आर्द्रा	मूल	कृत्तिका	रोहिणी	हस्त
१३	यमदंष्ट्रा	मघा,धनिष्टा	मूल,विशाखा	भरणी,कृत्ति	पुनर्वसु,पू.षा.	अश्वि,उ.षा.	रोहिणी,अनु.	श्रवण, शत.
१४	मुसल वज्र वा दग्ध नक्षत्र	भरणी	चित्रा	उत्तराषाढ़ा	धनिष्ठा	उत्तरा फा.	ज्येष्ठा	रेवती
१५	राक्षस योग	शततारका	अश्विनी	मृगशीर्ष	आश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उत्तराषाढ़ा
१६	काणयोग	ज्येष्ठा	अभिजित	पू. भा.	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा

* कृष्णपक्ष के तिथ्यर्ध में भद्रा, † शुक्लपक्ष के तिथ्यर्ध में भद्रा रहेगी।

टिप्पणी १.—अमृतसिद्धियोग में विषयोगतिथि तथा सर्वार्थसिद्धियोग में दुष्टतिथियों का विचार—जैसे, रविवार को आश्वनी, पुष्य, तीनों उत्तरा. ह. मू., इन सातों नक्षत्र में-से कोई एक नक्षत्र आ जाय तो उसके योग-काल तक सर्वार्थसिद्धि का शुभ मुहूर्त होगा; लेकिन उसी बीच में शुक्ल या कृष्णपक्ष की प्रतिपदा, तृतीया या सप्तमी, इन तीन तिथियों में-से कोई तिथि भी आ जाय तो उस तिथि-काल तक सर्वार्थसिद्धियोग दूषित रहेगा। अतः इस बीच कार्य न करें। इसी प्रकार अन्य वारों के विषय में तथा अमृतसिद्धियोग के वार, नक्षत्र और विषयोग तिथि के सम्बन्ध में भी समझिये। पाठकगण इसका ध्यान हमारी जंत्री में दी गई अमृतसिद्धि और सर्वार्थसिद्धियोग की सूची में लिखे मुहूर्तों में भी रखें।

टिप्पणी २.—आयोगे सुयोगोऽपि चेत् स्यात्तदानीमयोगं निहत्यैव सिद्धिं तनोति।
परे लग्न शुद्ध्या कुयोगादिनाशं दिनार्द्धोत्तरं विष्टिपूर्वं च शस्तम्॥

अर्थ—यदि यमदंष्ट्रा राक्षसादि किसी अयोग में कोई सुयोग (सर्वार्थसिद्धि योग) भी पड़े तो वह सिद्धियोग अयोग (बुरे फलों) का नाश कर सिद्धि (शुभ फलों) को देता है। अतः उसमें कार्य-सम्पदान किया जाना चाहिये।

अन्य आचार्य के मत से तत्कालीन लग्न-शुद्धि कुयोग का नाश कर सुयोग को अपना शुभ-फल प्रदान करने में समर्थ करती है:—"यत्र लग्नं विना किञ्चित् क्रियते शुभसंज्ञकम्। तत्र तेषामयोगानां प्रभावाज्जायते फलम्॥"

अतः कार्य-भेद से लग्न-शुद्धि का विचार सुविज्ञ मुहूर्त-शास्त्र से जान लें। सामान्य रीति से सब शुभ कार्यों में लग्न-शुद्धि यह है:—

लग्न से ८,१२वें स्थान शुद्ध (ग्रह-रहित) हों, ऐसी अपनी जन्म-राशि या जन्म-लग्न से उपचय (३, ६, १०, या ११वें भाव की राशि लग्न में हो और वह शुभ ग्रह से युक्त, दृष्ट हो तथा लग्न से ३, ६, १०, या ११वें स्थान में चन्द्रमा हो तो सब कार्यों का प्रारम्भ करना शुभ होता है।

टिप्पणी ३.—अमृत सिद्धियोगं च यद्येकस्मिन्दिने भवेत्। तदा च तद्दिनं दुष्टं मधुसर्पिविषं यथा॥

एकदिन में अमृतयोग और सिद्धियोग तिथि दोनों साथ ही पड़ जाँय तो वह दिन दुष्ट हो जाता है; जैसे, मधु और घृत समभाग मिलने से विष हो जाता है—इसमें यात्रा न करें। कोई कहते हैं कि सिद्धियोग के साथ अमृतयोग का विषाक्त प्रभाव ६ घटी पर्य्यन्त ही रहता है, उसके उपरान्त सिद्धियोग शुद्ध रहता है; ऐसी अवस्था में अमृतयोग के प्रारम्भ से ६ घटी = २ घंटा २४ मिनट बाद यात्रादि कार्य कर सकते हैं।

ज्योतिष का वरदान—२

किस दिशा, नगर, व्यक्ति और वस्तु से आपको लाभ या हानि होगी?—यह जानने का सरल उपाय

प्राणिमात्र की प्रत्येक चेष्टा और कार्य-व्यवहार सम्भावित परेशानियों और हानि से बचकर अपने सुख और लाभ-सम्पादन के लिए हुआ करता है। इसमें उसको अपने कार्य-व्यापार से सम्बन्धित देश, काल, पात्र का सम्यक् विचार करना होता है। मानव की इसी स्वाभाविक चेष्टा को अधिकाधिक सफल बनाने के उद्देश्य से भारतीय महर्षियों ने 'काल' के शुभाशुभत्व का जो विवेचन किया है, वही ज्योतिष-शास्त्र में 'मुहूर्त' का विषय है तथा 'देश' और 'पात्र' के शुभाशुभत्व-निर्णय का विधान ज्योतिष के वास्तुप्रकरण से सम्बद्ध है।

शुभाशुभ मुहूर्त-काल के निर्णयार्थ 'ज्योतिष का वरदान' शीर्षक एक अत्यन्त उपयोगी लेख अपूर्व चक्र सहित बड़े सरल ढंग से हम गत पृष्ठों में प्रकाशित कर चुके हैं। यहाँ 'देश' और 'पात्र' के शुभाशुभत्व-निर्णय के लिए वास्तुप्रकरणोक्त विधि-विधान को पाठकों के लाभार्थ प्रस्तुत कर रहे हैं। इसको हमारे पूर्व-प्रकाशित लेख का अनुपूरक समझना चाहिए; अस्तु।

किसी नगर, ग्रामादि में स्थायी निवास बनाने, वहाँ कोई कारोबार या उसकी शाखा स्थापित करने, कोई भागीदार, प्रबन्धक या कर्मचारी नियुक्त करने, किसी से व्यापारिक या आर्थिक स्थायी सम्बन्ध स्थापित करने, 'वस्तु' विशेष के उत्पादन या व्यापार का इरादा करने आदि के समय यह स्वाभाविक प्रश्न उपस्थित होता है कि उस नगर या ग्राम, व्यक्ति और 'वस्तु' के कार्य-व्यापार से उसके कर्ता को लाभ होगा या नहीं? ज्योतिशास्त्र दृष्टया इसका निश्चय करने के लिये उसके वास्तु-प्रकरण में तीन विधियाँ बतलाई गयी हैं: पहली राशि-परत्वेन, दूसरी नक्षत्र-परत्वेन, तीसरी काकिणी-परत्वेन। यहाँ व्यवहार-कर्ता व्यक्ति की संज्ञा 'साधक' और जिससे व्यवहार करना है उस नगर, व्यक्ति या वस्तु आदि की 'साध्य' संज्ञा समझनी चाहिये तथा साधक, साध्य की राशि, नक्षत्र और वर्ग-ज्ञानार्थ उनके पुकारने के नाम का ही उपयोग करना चाहिए, जन्म के (राशि) नाम का नहीं; क्योंकि शास्त्र का स्पष्ट आदेश है—

'काकिण्यां वर्ग शुद्धौ च वादे द्यूते स्वरोदये।
मंत्रे पुनर्भूवरणे नाम राशेः प्रधानता॥'

१. राशि-परत्वेन विचार—साधक की राशि से साध्य (नगर, ग्राम, व्यक्तिविशेष या वस्तु आदि) की राशि २-५-११वीं हो तो विशेष शुभ, ९वीं १०वीं हो तो सामान्य शुभ तथा १-३-४-६-७-८-१२ वीं हो तो अशुभ समझना चाहिए। साधक से साध्य की राशि १-७वीं हो तो विशेषतः शत्रु-भय, ३-६ होने पर हानिप्रद; ४-८-१२वीं होने से रोग आदि विपत्तिकारक होती है।

२. नक्षत्र-परत्वेन विचार—में अभिजित् सहित २८ नक्षत्रों की गणना की जाती है। साध्य के नक्षत्र से शुरू कर क्रमशः अग्रिम ७ नक्षत्रों को वास्तु-पुरुष के मस्तक

पर; फिर अगले ७ नक्षत्रों को पीठ में, फिर ७ नक्षत्रों को हृदय में, उसके बाद के शेष ७ नक्षत्रों को पैर में स्थित समझना चाहिये। अब यदि साधक का नक्षत्र मस्तक का हो तो वह (साधक) धनी हो, मान पावे; पीठ में हो तो हानि और निर्धनता, हृदय में हो तो सुख, सम्पत्ति-लाभ और पैर में हो तो व्यर्थ भ्रमणादि अनिष्ट फल का संभव समझना चाहिये।

३. काकिणी-तत्त्वेन विचार—में सर्व प्रथम साधक साध्य के नाम के प्रथम अक्षर से उसका वर्गादि जानने के लिये आगे चक्र दिया जा रहा है।

वर्ग	अ–वर्ग	क–वर्ग	च–वर्ग	ट–वर्ग	त–वर्ग	प–वर्ग	य–वर्ग	श–वर्ग
अंक	१	२	३	४	५	६	७	८
वर्गा-	अ ई	क ख ग	च छ ज	ट ठ ड	त थ द	प फ ब	य र	श ष
क्षर	उ ए	घ ङ	झ ञ	ढ ण	ध न	भ म	ल व	स ह
स्वमी	गरुण	विडाल	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	गज	हरिण
शत्रु	सर्प	मूषक	गज	हरिण	गरुण	विडाल	सिंह	श्वान
दिशा	पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान्

इस चक्र में अ–वर्ग, क–वर्गादि सब वर्गों के अंक, अक्षर, स्वामी, शत्रु-वर्ग और स्वदिशा दी गयी है। प्रत्येक वर्ग से पाँचवाँ वर्ग उसका बैरी और उस पाचवें वर्ग की दिशा भी उसके लिये नेष्ट होती है। अतः उस (पाँचवें) वर्ग के अक्षरों से जिसका नाम शुरू होता है, उस नगर, ग्राम, व्यक्ति, वस्तु या दिशा से उसका सम्बन्ध सुखद नहीं रहता; उनकी ओर से उसको झगड़ा, झंझट और नुकसानी या कुछ-न-कुछ परेशानी मिलती है। अतएव उनसे सम्बन्ध होने पर साधक को बहुत सावधानी रखनी चाहिये। उस (पाँचवे) वर्ग की दिशा में यात्रा का अवसर उपस्थित होने पर बहुत उत्तम मुहूर्त में ही जाना चाहिए—सामान्य शुभ मुहूर्त में कदापि नहीं। यह हमारा स्वयं का भी अनुभूत है। हमारा च वर्ग है। उसमें पाँचवे य-वर्ग में 'र' से शुरू होनेवाले नामों के व्यक्तियों से हमारा व्यापारिक सम्बन्ध है जिसके कारण हमें उनसे झंझट और परेशानियाँ अधिक, सहयोग नाम-मात्र का मिलता है; फिर भी लाभ का अधिक भाग उन लोगों को दे देना पड़ता है; अस्तु। यह तो साधक के वर्ग से पाँचवे वर्ग की बात हुई; अन्य वर्गों का फल जानने के लिए सूक्ष्म विचार काकिणी से इस भाँति करना चाहिये:— साधक के नाम की वर्ग-संख्या को दूना कर उसमें साध्य के नाम की वर्ग-संख्या को जोड़े; योग-फल में ८ का भाग दे तो शेष साधक की काकिणी होती है। इसी प्रकार साध्य के नाम की वर्ग-संख्या को दूना कर उसमें साधक के नाम की वर्ग-संख्या को जोड़े तथा योग-फल में ८ का भाग दे तो शेष साधक की काकिणी होती है। दोनों की काकणियों में जिसकी काकिणी अधिक (धनावशेष) हो वह अर्थप्रद (उत्तमर्ण-महाजन-धन देनेवाला) होता है। अर्थात् सिद्ध हुआ कि जिसकी काकिणी अल्प है, वह अर्थ का गृहता (अधमर्ण-ऋणी) होता है। अतः साधक की काकिणी साध्य से अधिक होना शुभ होता है।

उपर्युक्त सर्व विषयों के पूर्णतः स्पष्टीकरण के लिए यहाँ एक उदाहरण भी दे दिया जाता है :—

उदाहरण १—मान लीजिए, 'कमलापति' नामक व्यक्ति(साधक) को 'परमानन्दपुर' ग्राम (साध्य) में बसने या कारोबार आदि करने के विषय में विचार करना है। होड़ा-चक्र से कमलापति की राशि मिथुन और परमानन्दपुर ग्राम की राशि कन्या ज्ञात हुई। साधक की राशि मिथुन से साध्य की राशि कन्या चौथी होने के कारण उनके लिये यह ग्राम शुभ नहीं सिद्ध हुआ।

२—इसी प्रकार होड़ाचक्र से कमलापति का नक्षत्र मृगशीर्ष और परमानन्दपुर का नक्षत्र उ. फा. ज्ञात हुआ। उ. फा. से आगे क्रमशः ७ नक्षत्र गिना तो ज्येष्ठा तक के ७ नक्षत्र मस्तक पर, उसके बाद के ७ नक्षत्र शततारका तक पीठ में, उसके बाद रोहिणी तक के ७ नक्षत्र हृदय में; फिर शेष में मृगशीर्ष से पू. फा. तक के सात नक्षत्र पैर के हुए। इस तरह साधक का नक्षत्र मृगशीर्ष पैर में आता है जो अनिष्ट फलकारी है। अतः इस दूसरे प्रकार से भी कमलापति के लिये परमानन्दपुर ग्राम अशुभ ज्ञात हुआ।

३—अब काकिणी का विचार देखिए। चक्र में कमलापति के नाम के पहले अक्षर क–वर्ग का स्वामी विडाल एवं उसकी संख्या २ मिली एवं परमानन्दपुर के वर्ग का स्वामी मूषक व उसकी संख्या ६ मिली। साधक के वर्ग को दूना किया तो ४ हुआ, उसमें साध्य का वर्ग ६ जोड़ने से १० हुआ जिसमें ८ का भाग देने से शेष २ साधक की काकिणी हुई। एवं साध्य के वर्ग ६ की दूनी संख्या १२ में साधक की वर्ग–संख्या २ जोड़कर १४ में ८ का भाग देने से शेष ६ साध्य की काकिणी हुई। यहाँ साधक की काकिणी से साध्य की काकिणी अधिक है। अतः साध्य ही धनी एवं साधक ऋणी बनेगा। इसलिए उस ग्राम परमानन्दपुर में कमलापति का स्थायी आवास शुभद नहीं होगा। इसी भाँति हरेक स्थिति में विचारना चाहिये। यहाँ हम देखते हैं कि तीनों विधियों से साधक कमलापति के लिए साध्य परमानन्दपुर ग्राम अशुभ फल-कारी सिद्ध होता है। अतः उस ग्राम में साधक के स्थायी निवास से कथमपि फलीभूत होने की आशा नहीं। इसी प्रकार स्थान के अलावा किसी व्यक्ति या वस्तु आदि के शुभाशुभत्व का भी स्पष्ट ज्ञान पाठक प्राप्त कर सकते हैं। उपर्युक्त तीनों विधियों में-से किन्हीं भी दो विधियों से शुभ फल ज्ञात हो तभी शुभ, अन्यथा अशुभ समझना चाहिये।

लत्ता बोधक यंत्र

ग्रह ↓ नक्षत्र	१ अश्वि	२ भरणी	३ कृत्ति	४ रोहि.	५ मृग.	६ आर्द्रा	७ पुन.	८ पुष्य	९ आश्ले.	१० मघा	११ पू.फा.	१२ उ.फा.	१३ हस्त	१४ चित्रा	नक्षत्र ग्रह
रवि	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाती	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनिष्ठा	शत.	पू.भा.	रवि
चन्द्र	पुन:	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा	हस्त	चित्रा	स्वाती	विशा.	अन.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	चन्द्र
मंगल	कृत्ति.	रोहि.	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा.	स्वाती	विशा.	मंगल
बुध	श्रवण	धनिष्ठा	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृति	रोहि.	मृग	आर्द्रा.	पुन.	पुष्य	बुध
गुरु	आर्द्रा	पुन:	पुष्य	आश्ले.	मघा.	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाती	विशा.	अनु	ज्येष्ठा	मूल.	गुरु
शुक्र	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहि.	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	शुक्र
शनि	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाती	विशा.	अनु	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	शनि
राहु	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाती	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	राहु
केतु	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	केतु

ग्रह ↓ नक्षत्र	१५ स्वाती	१६ विशा.	१७ अनु.	१८ ज्येष्ठा	१९ मूल	२० पू.षा.	२१ उ.षा.	२२ श्रवण	२३ धनिष्ठा	२४ शत.	१५ पू.भा.	२६ उ.भा.	२७ रेवती	नक्षत्र ग्रह
रवि	ब.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति	रोहिणी	नगशाष		पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा.	पू.फा.	रवि
चन्द्र	उ.षा.	श्रवण	धनिष्ठा	शत	पू.भा.	उ.भ.	रेवती	अश्नि	भरथ	कृत्ति.	रोहि.	मृग	आर्द्रा	चन्द्र
मंगल	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनिष्ठा	शत.	प.भा.	उ.भा.	रेवती	आश्व.	भरणी	मंगल
बुध	आश्ले.	मघा	पू.फ.	उ.फा	हस्त	चित्रा	स्वाती	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा	बुध
गुरु	पू.भा.	उ.षा.	श्रवण	धनिष्ठा	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति	रोहि.	मृग	गुरु
शुक्र	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाती	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल.	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनिष्ठा	शुक्र
शनि	श्रवण	धनिष्ठा	शत.	प.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृत्ति.	रोहि.	मृग	आर्द्रा.	पुन.	शनि
राहु	धनिष्ठा	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृत्ति.	रोहि.	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	राहु
केतु	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	केतु

विवरण—चिंताहरण जंत्री की यह मुख्य विशेषता है कि इसमें ग्रहों के राशि, नक्षत्र-चरण(नवांश)-प्रवेश के साथ-साथ सर्व ग्रहों से आक्रान्त एवं विद्ध नक्षत्र ग्रह का विवरण भी दिया जाता है जो अन्य किसी भी उत्तर भारतीय पञ्चाङ्ग में प्राप्त नहीं होता। प्रत्येक मास की जिस तारीख को ग्रह गत मास के नक्षत्र से अन्य नक्षत्र पर प्रवेश करता है, वह तारीख विवरण के पहले खाने में दी जाती है। कोई ग्रह गत मास के ही नक्षत्र पर चलता हुआ चालू मास में नक्षत्र-परिवर्तन नहीं करता तो उसके साथ 'चालू' शब्द लिखा जाता है। ग्रह के खाने में जो ग्रह शीघ्री, वक्री गति से चलते होते हैं उनके सामने उनकी वक्री गति के सूचनार्थ R चिह्न तथा शीघ्री गति के सूचनार्थ + चिह्न अंकित कर दिया जाता है। उसके बाद के खानों में ग्रह से आक्रान्त नक्षत्र, तत्पश्चात् सर्वतोभद्र के सम्मुख, वाम, दक्षिण-वेध से विद्ध नक्षत्र दिये जाते है। अग्रिम खाने में पञ्चशलाका में विद्ध नक्षत्र और अन्तिम खाने में ग्रह से लत्तित नक्षत्र दिये जाते हैं। इन सब विद्ध तथा लत्तित नक्षत्रों पर उस समय जो ग्रह वर्तमान होते हैं, उनके चिह्न भी उन नक्षत्रों के साथ युक्त कर दिये जाते हैं। लत्तित नक्षत्रों के ज्ञानार्थ ही यह यन्त्र तैयार किया गया है जिसकी उपयोग-विधि बड़ी सरल है। यंत्र के ऊपरी सिरे पर क्रमश: २७ नक्षत्रों के नाम तथा बगल के खानों में रवि आदि नौ ग्रहों के नाम दिये गये हैं। अब जिस ग्रह के लत्तित नक्षत्र को जानना चाहें, वह ग्रह जिस नक्षत्र पर चल रहा हो, उस नक्षत्र का खाना तथा ग्रह का खाना परस्पर जहाँ मिलें, उसी खाने का नक्षत्र उस ग्रह से लत्तित समझें। ग्रहों के लत्ता नक्षत्र-निर्णय में पश्चिमी भारत के कुछ पञ्चाङ्गकार अभिजित् सहित २८ नक्षत्रों की गणना करते हैं; किन्तु उत्तर भारतीय प्राचीन ज्योतिषाचार्यों एवं पूर्ववर्ती पञ्चाङ्गकारों की परम्परानुसार लत्ता-नक्षत्रों में अभिजित् का ग्रहण हमने नहीं किया है। अत: पश्चिमी प्रान्तों के पञ्चाङ्गों से जंत्री के लत्तित नक्षत्र का फर्क होने पर जन्त्री की गलती नहीं समझना चाहिए। हाँ, पञ्चाङ्ग-प्रकरण के किसी लत्तित नक्षत्र के विषय में लेखन-मुद्रण की भूल का संशय हो तो उसका निर्णय इस यंत्र के द्वारा पाठकगण सहज ही कर सकेंगे; इसीलिये यह यंत्र इस पुस्तक में प्रकाशित किया जा रहा है।

होरा-सार

ज्योतिःशास्त्र के होरा, गणित और संहिता, ये तीन भेद हैं। इनमें जन्मपत्रिका आदि के फलविधायक ग्रन्थों की गणना 'होराशास्त्र' में है। यह प्रकरण उसी होराशास्त्र का है। इसके श्लोक जैसे रोचक हैं, वैसे उपयोगी भी हैं; प्रत्युत इनमें सूर्यादि नव ग्रहों के ९ श्लोक तो फलित ज्योतिष के विद्यार्थियों के लिए मानो अमूल्य रत्न हैं; क्योंकि एक-एक श्लोक में एक-एक ग्रह का स्वस्थान, उच्च, नीच, मित्र, सम, शत्रु आदि का निर्णय तथा जन्माङ्ग के प्रत्येक स्थान में बैठने का उनका शुभाशुभ फल बतला दिया है जिनके जान लेने से फलित ज्योतिःशास्त्र के मूलभूत सिद्धान्त का बोध हो जाता है। इस छोटे से प्रकरण में बहुत अर्थ भर देने के लिए श्लोक-रचयिता श्रीपति शर्मा ने लग्नादि द्वादश स्थानों के नाम बहुत कठिन तथा सांकेतिक शब्दों में लिखे हैं। जैसे, चक्रवर्ती योग में लग्नादि चार केन्द्र-स्थानों का बोध कराने के लिए 'लचसद भवनें' ऐसा पाठ लिख दिया है अर्थात् 'ल' से लग्न, 'च' से चौथा, 'स' से सातवाँ और 'द' से दसवाँ स्थान बतलाया है; इत्यादि कठिनता के कारण इसका अर्थ गुरुगम्य होने से साधारण मनुष्यों के समझ में आना महा कठिन-सा प्रतीत होता देख कर हम अपने-जैसे विद्यार्थियों के उपयोगी होने योग्य इसकी 'बाल-सुख-बोधिनी' हिन्दी भाषा-टीका बनाकर प्रकाशित कर रहे हैं। इसे विशेष उपयोगी बनाने के लिए कई आवश्यकीय चक्र भी इस पुस्तक प्रथम भाग में सम्मिलित करदिया है। (देखिए ज्योतिष रहस्यप्रथम भाग के पृष्ठ २५ का 'ग्रहशील चक्र' आशा है कि पाठकगण इसको पसन्द कर लाभ उठायेंगे जिससे हम अपना परिश्रम सफल समझेंगे। कोई गलती रह गई हो तो पाठक क्षमा करें।

ज्योतिःशास्त्र में शुभाशभ फलों का ज्ञान सूर्यादि नौ ग्रहों, मेषादि १२ राशियों और लग्नादि १२ भावों द्वारा होता है, यह सर्वत्र ही प्रसिद्ध है। इसीलिए रचयिता ने उनका निर्णय यहाँ नहीं किया है; किन्तु हम अपने सहयोगी विद्यार्थियों के लिए उपयोगी समझ कर अन्य ग्रन्थों से पाँच श्लोक यहाँ लिख देते हैं :—

९ नौ गृहों का ज्ञान

सूर्यश्चन्द्रश्च, भौमश्च, बुध, इज्यश्च, भार्गवः।

शनी, राहुश्च, केतुश्च—प्रोक्ता एते नव ग्रहाः॥

सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु और केतु—ये ९ (नौ) ग्रह हैं।

क्रूर तथा सौम्य गृहों का ज्ञान

शन्यर्कराहुकेत्वाराः क्रूराः, शेषाः शुभा ग्रहाः।

क्रूरयुक्तो बुधः क्रूरः, क्षीणचन्द्रस्तथैव च॥

उपरोक्त ग्रहों में सूर्य, मंगल, शनि, राहु, तथा केतु—ये ५ (पाँच) ग्रह तो क्रूर(पाप) हैं; और चन्द्र, बुध, गुरु तथा शुक्र—ये ४ (चार) ग्रह सौम्य(शुभ) हैं; परन्तु इन सौम्यों में-से भी बुध तो क्रूर ग्रह के साथ एक नवांश में रहे तब तक, और चन्द्रमा क्षीण रहे तब तक क्रूर(पाप) भी हो जाते हैं। चन्द्रमा कृष्णपक्ष की तिथि १० से शुक्लपक्ष की तिथि ५ तक क्षीण रहता है।

१२ (बारह) राशियों का ज्ञान

मेषो वृषोऽथ मिथुनो कर्कटः सिंहकन्यके।

तुलाऽथ वृश्चिको धन्वी मकरः कुम्भमीनकौ॥

मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ और मीन—ये १२ (बारह) राशियाँ हैं। इनके साक्षेप सूर्यादि ग्रह सदैव अपनी-अपनी कक्षा में घूमते रहते हैं जिससे ग्रहों की राशि, नक्षत्रादि में परस्पर अन्तर पड़ जाने से जन्मपत्रिका आदि में असंख्य प्रकार के योग बन जाते हैं। इसी से प्रत्येक मनुष्य के भाग्यादि में बहुत-सा अन्तर हो जाता है।

१२ (द्वादश) भावों(स्थानों) का ज्ञान

मूर्तिर्धनाख्यः सहजः सुखश्च सुतारिपत्नीमृतिधर्मकर्माः।

सायव्ययाबे तनुतो विचिन्त्या भावा अमीद्वादशहोरिकाद्यैः॥

जन्म-पत्रिका आदि में कुण्डली के प्रथम भाव (स्थान) को लग्न, दूसरे को धन, तीसरे को सहज, चौथे को मातृ, पाँचवें को सुत, छठे को रिपु, सातवें को स्त्री, आठवें को मृत्यु, नवें को धर्म, दशवें को कर्म, ग्यारहवें को लाभ और बारहवें को व्यय कहते हैं।

(१) प्रथम भाव(लग्न) से शरीर, वर्ण, चिह्न, आयु आदि का (२) दूसरे से धन, द्रव्य, नौकर आदि का (३) तीसरे से भाई, पराक्रम, उद्यम आदि का (४) चौथे से माता, सुख, भूमि आदि का (५) पाँचवें से पुत्र, मित्र, विद्या आदि का (६) छठे से शत्रु, रोग आदि का (७) सातवें से स्त्री, जूआ (सट्टा, फाटका) बिना परिश्रम के धन आदि का (८) आठवें से मृत्यु आदि का (९) नवें से धर्म, पुण्य, गुरु, यात्रा आदि का, (१०) दशवें से कर्म, व्यापार, राज्य, पिता आदि का, (११) ग्यारहवें से लाभ आदि का, और (१२) बारहवें से खर्च आदि का विचार किया जाता है।

इनमें १।४।७।१०। को केन्द्र, १।५।९ को त्रिकोण; ३।६।१०।११ को उपचय, और ६।८। १२ को त्रिक स्थान कहते हैं।
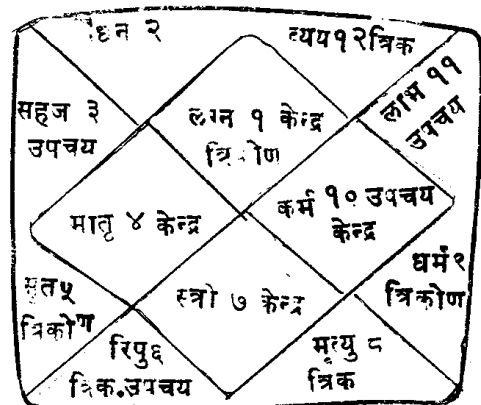
ग्रहों का मूलत्रिकोण राशि-ज्ञान

सिंहोवृषो मेषकन्ये चापतौलीघटः क्रमात्
एवं त्रिकोणभवनान्यर्कादिनां भवन्ति हि ॥

सूर्य सिंह के २० अंश तक, चन्द्रमा वृष के ३ अंश के उपरान्त सम्पूर्ण राशि तक, मंगल मेष के १२ अश तक बुध कन्या के १५ अंश के उपरान्त २० अंश तक, बृहस्पति धनु के २० अंश तक, शुक्र तुला के १५ अंश तक और शनि कुम्भ के २० अंश तक मूलत्रिकोण का कहलाते हैं।

ग्रहों का वर्ण तथा स्वामित्व-विचार

आरक्तो भानुभौमौ भृगुजहिमकरौ शुभ्र सौम्यः शुकाभः
स्वर्णाभो देवमन्त्री रविजविधुरिपू प्रौढनीलाञ्जनाभौ ।
विप्राधीशौ सितेज्यौ विधुरपि च विशां क्षत्रिणां भानुभौमौ
सौम्यः शूद्रान्त्यजानां शनिरपि तमसौ म्लेच्छजानामधीशौ ॥

ग्रहों में सूर्य और मंगल ये दो लाल रंगवाले हैं, शुक्र और चन्द्र ये दो श्वेत रंगवाले हैं, बुध तोते के रंग सरीखे हरे रंगवाला है, गुरु सोने के सरीखे पीले रंगवाला है और शनि, राहु तथा केतु ये तीन गहरे नीले (काले) रंगवाले हैं।

शुक्र तथा गुरु ये दो ब्राह्मण वर्ण के स्वामी हैं, चन्द्र वैश्य वर्ण का स्वामी है, सूर्य तथा मंगल ये दो क्षत्रिय वर्ण के स्वामी हैं, बुध शूद्र वर्ण का स्वामी है, शनि अन्त्यजों (चमार, चाण्डाल आदि) का स्वामी है और राहु तथा केतु ये दो म्लेच्छ आदि जाति के स्वामी हैं।

युगों के अनुसार ब्राह्मणादि वर्ण को फल देनेवाले ग्रह

सत्ये देवेज्यशुक्रौ सकलफलकरौ ब्राह्मणानां प्रसूतौ
त्रेतायां भानुभौमौ कथितफलकरौ क्षत्रिणां जन्मकाले ।
वैश्यानां प्रौढचन्द्रो विमलफलकरो द्वापरे पादजानां
ज्ञः शस्तो भानुजाद्याः कलियुगफलदाः शूद्रजा म्लेच्छजानाम् ॥

सत्ययुग में गुरु और शुक्र ये दो ग्रह ब्राह्मणों के जन्म-काल में सम्पूर्ण फल देते थे, त्रेतायुग में सूर्य और मंगल ये दो ग्रह क्षत्रियों के जन्म-काल में अपने-अपने सम्पूर्ण फल देते थे; द्वापरयुग में प्रौढ़(बढी हुई) कलाओं से युक्त बली चन्द्रमा वैश्यों को उत्कृष्ट फल देता था; और कलियुग में बुध ग्रह तो शूद्रों को फल देता है तथा शनि, राहु और केतु ये तीन ग्रह शूद्रों तथा म्लेच्छ आदि जातियों को फल देते हैं।

पुरुष, स्त्री, नपुंसकों को फल देनेवाले ग्रह

भौमार्केज्यास्त्रिखेटा नरवरकथिताः पूर्वशास्त्रेषु धीरै-
र्नयौ दैत्येज्यचन्द्रौ झटिति फलकरौ योषितां जन्मकाले ।
क्लीबौ द्वौ सौम्यसौरी परमफलकरौ चान्यथा योनिजानां
गर्गाद्यैः पूर्वधीरैः सकलगुणग्रहैः कीर्तितं पाण्डुपुत्रः ॥

ज्योतिष शास्त्र में मंगल, सूर्य और गुरु ये तीन ग्रह पुरुष संज्ञक हैं और पुरुषों के जन्म-काल में उत्तम फल देते हैं; शुक्र और चन्द्र ये दो ग्रह स्त्री संज्ञक हैं और स्त्रियों के जन्म-काल में उत्तम फल देते हैं; और बुध तथा शनैश्चर ये दो ग्रह नपुंसक संज्ञक है और नपुंसकों के जन्म-काल में उत्तम फल देते हैं। इस प्रकार का यह सिद्धांत गर्गादि महर्षियों से लेकर पाण्डु के पुत्र सहदेव पर्यन्त ने कहा है।

ग्रहों का दृष्टि-विचार

दृष्टिर्दिक्षु तृतीये नवमशरगते वेदनागे च द्यूने
जायन्ते पदवृद्धया कथितफलकरी सूर्य्यशुक्रेन्दुज्ञानाम् ।
मन्देज्यक्षोणिजानां चरणद्विचरणौ वह्निपाद तथैव
पूर्णं पश्यन्ति भावान्वदति मुनिवरः पूर्वशास्त्रेषु गर्गः ।

सूर्य, चन्द्र, बुध और शुक्र ये चार ग्रह जिस स्थान में बैठे हों, उससे ३। १० स्थान को एक पाद से, ५। ९ को दो पाद से, ४। ८ को तीन पाद से, और ७ वें को चार पाद (पूर्ण दृष्टि) से देखते हैं तथा शनि ३। १० को, गुरु ५। ९ को और मंगल ४। ८ को पूर्ण दृष्टि से देखता है।

सूर्य के स्व स्थान आदि का निर्णय

तुङ्गोजस्तौलिनीचौ गहनचरपतिः पद्मिनीप्राणपालः
शत्रू दैत्येज्यमन्दौ शशिधरतनयो मुख्य सामान्यभावः ।
शेषा मित्राणि खेटा उपचयसुखदो मध्यमः कोणकोणे
केन्द्रे दुष्टोऽतिदुष्टो व्ययगजभवने कीर्त्तितः कोविदाद्यैः ॥

सूर्य ग्रह सिंह राशि का स्वामी, मेष राशि का उच्च, और तुला राशि का नीच होता है। सूर्य के शुक्र और शनि ये दो शत्रु हैं, चन्द्र और मंगल ये दो सम हैं और बुध और गुरु ये दो मित्र हैं। सूर्य जन्म-लग्न से ३। ६। १० या ११वें बैठा हो तो सुख देनेवाला होता है, २। ५ या ९वें बैठा हो तो मध्यम फल देता है, १। ४ या ७वें बैठा हो तो दुष्ट फल देता है, और १२ या ८वें बैठा हो तो अत्यन्त दुष्ट फल देता है—ऐसा प्राचीन महर्षि लोगों ने कहा है।

चन्द्र के स्व स्थान आदि का निर्णय

कर्काधीशो वृषोच्चो जलनिधितनयो वृश्चिको यस्य नीचो
मित्रे चण्डांशुसौम्यौ तदनुपरखगाः सन्ति सामान्यभावे ।
पाताले कोणकोणे जनकभवगृहे सर्वसिद्धार्थकारी
सामान्यो दर्पकामे तदनु परगृहे चन्द्रमा न प्रशस्तः ॥

चन्द्र ग्रह कर्क राशि का स्वामी, वृष राशि का उच्च, और वृश्चिक राशि का नीच होता है। चन्द्र के सूर्य और बुध ये दो मित्र हैं और शेष सर्व ग्रह अर्थात् मंगल, बृहस्पति, शुक्र और शनि सम हैं और शत्रु कोई नहीं है। चन्द्र जन्म-लग्न से २। ४। ५। ९। १० या ११वें बैठा हो तो सम्पूर्ण उत्कृष्ट फल देता है; ३ या ७वें बैठा हो तो मध्यम फल देता है और इन से अन्य स्थानों में

अर्थात् १ । ६ । ८ या १२वें बैठा हो तो उत्तम फल नहीं देता।

मंगल के स्व स्थान आदि का निर्णय

मेषाधीशो मृगोच्चः सलिलचरनतश्चन्द्रजो यस्य शत्रु-
मित्राणीन्द्वर्कजीवास्तदनुपरखगौ द्वौ च सामान्यभावे।
राज्ये लाभे त्रिषष्ठे सकलसुखकरः कीर्तितो ब्रह्मपुत्रैरन्ध्रे
भावे न शस्तः झटिति फलकरो मंगलः खड्गहस्तः॥

मंगल ग्रह मेष, वृश्चिक इन दो राशियों का स्वामी मकर राशि का उच्च और कर्क राशि का नीच होता है। मंगल के चन्द्र, सूर्य और गुरु ये मित्र हैं, बुध शत्रु है और शुक्र और शनि ये दो सम हैं; मंगल जन्म-लग्न से से १०।११।३ या ६ठें बैठा हो तो सम्पूर्ण सुख देता है; और इन से अन्य स्थानों में उत्तम फल नहीं देता है और जो कुछ फल देता है, सो बहुत शीघ्रता से देता है। मंगल के हाथ में खड्ग आयुध है—ऐसा वसिष्ठादि महर्षि लोगों ने कहा है।

बुध के स्व स्थान आदि का निर्णय

कामेशः कन्यकोच्चः प्रणतजलचरो वैरिणौ सूर्यचन्द्रौ
मित्राणिवार्किशुक्राः कुजगुरु च समौ कोशगेहे प्रशस्तः।
लग्ने लाभे चतुर्थे सुतनवज नके कामगेहे प्रशस्तो
ह्यन्ये भावे न शस्तो हिमकरतनयः कीर्तितो गर्गमुख्यैः॥

बुध ग्रह मिथुन तथा कन्या इन दो राशियों का स्वामी तथा कन्या राशि का ही उच्च और मीन राशि का नीच होता है। बुध के सूर्य तथा चन्द्र ये दो शत्रु हैं, शनि और शुक्र ये दो मित्र हैं; और मंगल तथा गुरु ये दो सम हैं। बुध जन्म-लग्न से दूसरे स्थान में बैठा हो तो बहुत प्रशस्त अर्थात् उत्तम फल देनेवाला होता है; १।११। ४।५ ९।१० या ७वें बैठा हो तो भी अच्छा फल देता है और अन्य स्थानों में अर्थात् ३।६।८ या १२वें बैठा हो तो उत्तम फल नहीं देता—ऐसा गर्ग आदि ऋषि लोगों ने कहा है।

गुरु के स्व स्थान आदि का निर्णय

कर्कोच्चो नक्रनीचो विबुधपतिगुरुमीनको दण्डनाथो
मित्राणीन्द्वर्कभौमाः सम रवितनयो वैरिणौ सौम्यशुक्रौ।
कोणे केन्द्रायकोशे ह्यतिशुभफलदो मध्यमो भ्रातृगेहे
रन्ध्रे कैवल्यदाता तदनु परगृहे नैव जीवः प्रशस्तः॥

बृहस्पति ग्रह धनु तथा मीन राशि का स्वामी, कर्क राशि का उच्च और मकर राशि का नीच होता है। बृहस्पति के चन्द्र, सूर्य और मंगल ये तीन मित्र हैं; शनि सम है; और बुध तथा शुक्र ये दो शत्रु हैं। बृहस्पति जन्म-लग्न से ५।९।१।४।७।१०।११ या २रे बैठा हो तो अत्यन्त शुभ फल देता है, ३रे बैठा हो तो मध्यम फल देता है, ८वें बैठा हो तो मोक्ष देता है और शेष स्थानों में अर्थात् ६ या १२वें बैठा हो तो प्रशस्त नहीं अर्थात् उत्तम फल नहीं देता।

शुक्र के स्व स्थान आदि का निर्णय

मीनोच्चः स्त्री च नीचस्तुलवृषभपतिर्वैरिणौ भानुचन्द्रौ
सामान्यौ पूज्यभौमौ तदनु च सुहृदौ सौम्यमन्दौ ग्रहौद्वौ।
सम्प्राप्तो लाभगेहे तनुसुखजनके कोशकोणे प्रशस्तो
ह्यन्ये भावे न शस्तो वदति च विबुधः पूर्वशास्त्रेषु धीरः॥

शुक्र ग्रह वृष तथा तुला राशि का स्वामी, मीन राशि का उच्च और कन्या राशि का नीच होता है। शुक्र के सूर्य और चन्द्र ये दो शत्रु हैं, गुरु और मंगल ये दो सम हैं; और बुध तथा शनि ये दो मित्र हैं। शुक्र जन्म-लग्न से ११।१।४।१०।२ या ५।९वें बैठा हो तो अच्छा फल देता है, और इन से अन्य स्थानों में अर्थात् ३।६।७।८ या १२वें बैठा हो तो अच्छा फल नहीं देता—ऐसा विद्वानों ने प्राचीन ज्योतिषशास्त्र में कहा है।

शनि के स्व स्थान आदि का निर्णय

तौलोच्चो मेषनीचो हरिणघटपतिः पश्चिमभीपालपुत्रो
दुष्टा मान्वब्जभौमा बुधसिततमसो यस्य मित्राणि सर्वं।
सामान्यो देवमन्त्री रसशिवसहजे व्यर्कगश्चातिशस्तो
ह्यन्ये भावे न शस्तो मुनिगणसहितो गर्ग एवं बभाषे॥

शनि ग्रह मकर तथा कुम्भ राशि का स्वामी, तुला राशि का उच्च और मेष राशि का नीच होता है। शनि के सूर्य, चन्द्र और मंगल ये तीन शत्रु हैं, बुध, शुक्र और राहु ये तीन मित्र हैं; और गुरु सम है। शनि जन्म-लग्न से ६।११।३ या १२वें बैठा हो तो बहुत अच्छा फल देता है और इन से इतर अर्थात् १।२।४।५।७।८।९ या १०वें स्थान में बैठा हो तो अच्छा फल नहीं देता—ऐसा प्राचीन सर्व ऋषिगण के सहित ज्योतिषाचार्य गर्ग ने कहा है।

राहु के स्व स्थान आदि का निर्णय

कामोच्चः कामिनीशः प्रणतशरचरः सिंहिकागर्भभूतो
दुष्टाः सूर्येन्दुभौमा बुधसितशनयो यस्य मित्राणि खेटाः।
सामान्यो देवपूज्यः सहजरसशिवे सर्वदोषप्रहर्त्ता
शेषे भावे न शस्तः कलियुगफलदः कालरुद्रा वदन्ति॥

राहु ग्रह कन्या राशि का स्वामी, मिथुन राशि का उच्च, और धनु राशि का नीच होता है। राहु के सूर्य चन्द्र और मंगल, ये तीन शत्रु हैं; बुध शुक्र और शनि ये तीन मित्र हैं; गुरु सम हैं। राहु जन्म-लग्न से ३।६ या ११वें बैठा हो तो सर्व दोषों का नाश करता है और शेष स्थानों में बैठा हो तो अच्छा फल नहीं देता। यह राहु इस कलियुग में बहुत शीघ्र फल देता है।

केतु के स्व स्थान आदि का निर्णय

चापोच्चः कामनीचो वतरसचरपः कज्जलाभः करालः
सिंहो मूलत्रिकोणं हितसमरिपवो राहुवाद्बुवनीयाः।
कोपात्मा कोपकेलिर्हिमकरदमनः क्रूर कर्मा कठोरो
म्लेच्छानां कार्यकर्ता झटिति कलियुगे विक्रमांगारकेतुः॥

केतु ग्रह मीन राशि का स्वामी, धनु राशि का उच्च, मिथुन राशि का नीच, और सिंह राशि का मूल त्रिको-

णीय होता है। केतु के मित्र, सम और शत्रु-तथा भावों में बैठने का फल राहु ग्रह के समान हैं अर्थात् केतु के भी सूर्य. चंद्र और मंगल, ये तीन शत्रु हैं; बुध शुक्र और शनि ये तीन मित्र हैं; और गुरु सम है। ऐसे ही फल भी ३। ६ या ११वें में तो श्रेष्ठ करता है और अन्य स्थानों में नेष्ट करता है। केतु बड़ा क्रोधी, क्रोध से नाना प्रकार की क्रीड़ा करनेवाला, चन्द्र को दमन करनेवाला, क्रूर कर्म करनेवाला, कठोर स्वभाववाला, म्लेच्छ जातियों का कार्य करनेवाला, और इस कलियुग में बहुत शीघ्र फल देनेवाला है—ऐसा महर्षियों ने कहा है।

सूर्यादि ग्रहों के अत्यन्त उत्तम फलदायक स्थान

शत्रौ सूर्यः प्रशस्तः सुखभवनगतः पूर्ण चन्द्रोऽतिशस्तः
भौमो बन्ह्रौ प्रशस्तो धनभवनगतश्चन्द्रपुत्रः प्रशस्तः।
कोणेजीवोऽतिशस्तस्तनुगतभृगुजो विक्रमार्किः प्रशस्तः
लाभे सर्वे प्रशस्ताः कथितफलकरा पाण्डुपुत्रा वदन्ति ॥

सूर्य छठे स्थान में अच्छा फल देता है, पूर्ण चंद्र चौथे स्थान में बहुत अच्छा फल देता है। मंगल तीसरे स्थान में अच्छा फल देता है, बुध दूसरे स्थान में उत्तम फल देता है, गुरु पाँचवें और नवें स्थान में अत्यन्त उत्कृष्ट फल देता है, शुक्र लग्न-स्थान में अच्छा फल देता है; शनि बारहवें स्थान में बहुत अच्छा फल देता है; और ग्यारहवें स्थान में तो सभी ग्रह उत्तम फल देते हैं—ऐसा पाण्डु के पुत्र सहदेव आदि ने कहा है।

ब्राह्मणों के राजयोग

विप्राणां जन्मकाले विबुधपतिगुरुर्दानवेशोऽपि मंत्रौ
स्वस्थे मूलत्रिकोणे दिनकररहिते संयुते तुंगराशौ
पुत्रे पातालग्ने मनसिजनिलये धर्मकर्मायकोशे
दाता मोदप्रयुक्तः स भवति मनुजो भूपमान्यो धनाढ्यः ॥

ब्राह्मणों की जन्म-कुण्डली में गुरु, और शुक्र ये दो ग्रह सूर्य से रहित अपने स्थान में बैठे हों, अथवा अपने मूल त्रिकोण में बैठे हों, किंवा अपनी उच्च राशि में बैठे हों और जन्म-लग्न से ५।४।१।७।९।१०।११ वा २रे बैठें हों तो वह मनुष्य ज्ञानी, आनंदी, राजा लोगों से पूजित और धनवान् होता है।

ब्राह्मणों के राजपूज्य योग

कीटे कोदण्डकीटे कुलिशकरनुते कोशकञ्जासनस्थे
नन्दे नान्दे नदीशेऽनिलहरनिलये नन्दने नन्दिनाथे।
शुक्रे मीनौलितुङ्गे विगतदिनमणौ ब्रह्मणानां प्रसूतौ
ते भूपैर्वन्द्यमाना नरवरगुरवः प्रौढधीरा भवन्ति ॥

ब्राह्मणों की जन्म-कुण्डली में बृहस्पति ग्रह कर्क, धनु या मीन राशि पर, और शुक्र ग्रह वृष, तुला या मीन राशि पर लग्न से २।१।९।१०।७।४।५ या ११वें बैठे हों, किन्तु इन के साथ सूर्य न हो, तो वे पुरुष राजाओं के पूजनीय गुरु तथा बड़े धैर्यवान् होते हैं।

क्षत्रियों के राजयोग

भूपानां जन्मकाले वनजवनपतिर्मेदिनीगर्भभूतो
दुश्चिक्ये वा शिवे वा दनुज दलहरे दुष्टगेहे गतोऽपि।
स्वोच्चः स्वस्थः प्रियस्थः खलबलविगतो द्वारदेशेषु तस्य
भेरीभिर्मेघघोषैर्गजरथतुरगैः सेवकैः सेव्यमानः ॥

क्षत्रियों की जन्म-कुंडली में सूर्य और मंगल ये दोनों ग्रह लग्न से ३।११।१० या ६ठें स्थान में अपनी-अपनी उच्च राशि में, या स्व राशि में, या अपने मित्र की राशि में बैठे हों, परन्तु इन के साथ पाप ग्रह न हो तो उस पुरुष के द्वार पर मेघ के समान दुन्दुभि के बाजे(चौघड़िये) बजते हैं तथा वह हाथी, रथ, घोड़े और दास-दासियों से युक्त ऐश्वर्यवान होता है।

वैश्यों के राजयोग

वैश्यानां जन्मकाले दिनकररहितः प्रौढपाथोधिपुत्रः
पाताले पुत्रपुण्ये जनकभवधने भव्यभाग्यो नृमर्त्यः।
सामान्यो दर्पगेहे सहजगृहगते लग्नभावे गतोऽपि
रंध्रे रिष्फारिगेहे परमबलयुतो यामिनीशो न शस्तः

वैश्यों की जन्म-कुण्डली में चन्द्र ग्रह लग्न से ४।५।९।१०।११ या २रे बैठा हो, परन्तु इसके साथ सूर्य न हो तो वह मनुष्य बड़ा भाग्यशाली तथा अपने आश्रित लोगों का पालन-पोषण करनेवाला होता है; जो ७।३ या १ में बैठा हो तो वह मनुष्य साधारण सुखी होता है, और जो बलवान् होकर ८।१२।६ठें बैठा हो तो उस मनुष्य को सुख नहीं होता है।

शूद्रों के राजयोग

शूद्राणां जन्मकाले सकलबलयुतो यामिनीनाथपुत्रः
स्वस्थो मूलत्रिकोणे दिनकररहितो वर्जितो शत्रुराशौ।
लग्ने दैत्यारिलोके कुसुमशरगते कोणकर्मेशकोशे
ज्ञाता दाता च पाता स भवति मनुजो प्रौढभूपादिमंत्री ॥

शूद्रों की जन्म-कुण्डली में बुध ग्रह सम्पूर्ण बलों से युक्त स्वराशि पर, मूल त्रिकोण राशि पर—किन्तु सूर्य से रहित तथा शत्रु की राशि से रहित; लग्न से १।१०।७।५।९। १०। ११ या २रे बैठा हो तो वह मनुष्य ज्ञानी, दानी, रक्षण करनेवाला और बड़े प्रतापी राजाओं का प्रधान मंत्री होता है ॥२१॥

म्लेच्छों के राजयोग

म्लेच्छानां जन्मकाले ल-च-स-द-भवने विक्रमेशे खलस्थाः
पापा मन्दादिखेटा दिनकररहितः स्वात्मवर्गेषु युक्ताः ॥
कर्कस्था वा वृषस्थाः सुहृदगृहगतास्तुङ्गगेहेषु युक्ता
नीचे वंशेऽपि जाता विगतकुलनरास्तेऽपि भूपा भवन्ति ॥

म्लेच्छों की जन्म-कुण्डली में शनि, राहु और केतु, ये पापग्रह लग्न से १।४।७।१०।३।११. या ६ठे स्थान में, सूर्य से रहित, अपने वर्ग के (अर्थात् राशि, होरा, द्रेष्काण, नवांश, सप्तांश, द्वादशांश और त्रिशांश आदि में अपनी राशि पर) हों, कर्क या वृष राशि पर

हों, या अपने मित्र की राशि पर हों या उच्च राशि पर बैठे हों तो वे मनुष्य नीच लोगों में या अज्ञात कुल में जन्म लेलें तो भी राजा होता है।

चारो ही वर्णों के राजयोग

कर्के कोदण्डमीने यदि तुलवृषभे मन्मथे कन्यकायां जीवो दैत्येशमन्त्री हिमकरतनयः कोणकेन्द्रे धनाऽऽये ॥ पापा लाभे त्रिषष्ठे रविकुजशनयो यस्य संजातकाले राजा प्रौढ़प्रतापो भवति स मनुजः सर्वदेशेषु मान्यः ॥

किसी वर्ण के मनुष्य की जन्म कुंडली में बृहस्पति ग्रह कर्क, धनु या मीन राशि पर; शुक्र तुला, वृष या मीन राशि पर; और बुध मिथुन या कन्या राशि पर लग्न से ५।९।१।४।७।१०। २ या ११ वें बैठे हों; और सूर्य, मंगल तथा शनि ये तीन पाप ग्रह ११। ३ या छठे बैठे हों तो वह मनुष्य बहुत प्रतापवान, सर्व देशों में माननीय होता है।

राज्य वा धन-योग

मेषस्था भानुभौमौ वृषशशिभृगुजौ सौममन्दौ मृगस्थौ कन्यायां रौहिणेयो रविशशिदमन कर्कटे जीवचन्द्रौ। मीनस्थौ शुक्रजीवौ तुलशनिभृगुजौ मन्मथे राहुसम्यौ एते योगेषु जाताः स भवति मनुजो भूमिपालो धनी वा ॥

जन्म कुंडली में सूर्य और मंगल मेष राशि के, चन्द्र और शुक्र वृष राशि के, मंगल और शनि मकर राशि के बुध और राहु कन्या राशि के, गुरु और चन्द्र कर्क राशि के, शनि और शुक्र तुला राशि के, या राहु और बुध मिथुन राशि के हों अर्थात् एक ग्रह तो उच्च का और एक ग्रह स्व-क्षेत्र का ऐसे दो ग्रह एक राशि पर इकट्ठे बैठे हों; ऐसे—इन आठ योगों में से—कोई योग हो तो वह मनुष्य पृथ्वी का रक्षण करनेवाला राजा अथवा धनवान् होता है।

चन्द्रयोग की विशेषता

**अन्ययोगफलं हन्ति चन्द्रयोगो विशेषतः।
स्वफलं प्रददातीति बुधो यत्नाद् विचिन्तयेत् ॥**

शुभाशुभ चन्द्रयोग अन्य योग के फलों का नाश कर अपना ही फल देते हैं; इसलिए पहले इसी को देखना चाहिए।

दुर्धरा-योग

सोमादन्ते द्वितीये यदि गगनचराः भानुं विना केऽपि च योगोऽयं खलु दुर्धरोऽखिलजनैर्जन्माधिकाले यदि। ते पूर्णेन्दुाननानां कमलदलदृशां कामिनीनामधीशा नानावाहवसुन्धराश्वसुभियुक्ताः सदा मानवाः ॥

जन्म-कुण्डली में जिस स्थान में चन्द्र बैठा हो, उस स्थान से १२ वें और २-रे अर्थात् चन्द्रमा से एक घर पीछे और आगे, दोनों स्थानों में, सूर्य के अतिरिक्त कोई भी ग्रह बैठा हो तो यह दुर्धरा नामक योग होता है। ऐसा योग जिनके हो, वे मनुष्य पूर्ण चन्द्रमा के समान मुखवाली तथा कमल-पत्र के समान विशाल नेत्रवाली स्त्रियों के पति होते हैं और अनेक अश्व, रथ, गाड़ी आदि वाहन, भूमि तथा अनेक प्रकार के द्रव्य से युक्त सदा भाग्यवान् रहते हैं।

केमद्रुम, अनफा, सुनफा-योग

चन्द्रादन्ते द्वितीये भवति न खचरः कोऽपि यस्य प्रसूतौ योगः केमद्रुमोऽस्य धनदलसनो भाषितो ब्रह्मपुत्रैः। स्यादन्ते साऽनफाख्या तदनु च सुनफानाम योगो विनाकम् ज्ञाता दाता च पाता बहुधनसहितः सर्वदा मानवः स्यात् ॥

जन्म-कुंडली में जिस स्थान में चन्द्र बैठा हो, उससे १२ वें तथा २ रे अर्थात्—चन्द्रमा से एक घर पीछे और आगे—दोनों ही स्थानों में कोई भी ग्रह न बैठा हो तो वह केमद्रुम नामक योग होता है। यह दारिद्रय योग जिसके हो, उस मनुष्य के धन-सम्पति का नाश होता है; किन्तु सूर्य के अतिरिक्त कोई ग्रह चन्द्र से १२ वें बैठा हो तो अनफा नामक योग होता है, और २रे स्थान में बैठा हो तो सुनफा नामक योग होता है। इन दोनों में-से कोई भी योग जिस मनुष्य के हो, वह मनुष्य ज्ञानी दानी, रक्षण करनेवाला और बहुत द्रव्य-सम्पत्ति से युक्त होता है—ऐसा वशिष्ठादि महर्षियों ने कहा है।

चंद्राधि-योग एवं लग्नाधि योग

**चंद्राद्रन्ध्रारिकामस्थैः सौम्यैः स्यादधियोगकः।
तत्र राजा च मंत्री च सेनानीश्च बलक्रमात् ॥**

चंद्रमा से या लग्न से ६, ७, ८, तीनों स्थान में शुभ ग्रह हों तो क्रमशः चंद्राधियोग एवं लग्नाधियोग होता है, उसमें जन्म लेनेवाला ग्रहों के बलानुसार राजा या मंत्री या सेनापति अवश्य होता है।

प्रबल चन्द्राधियोग
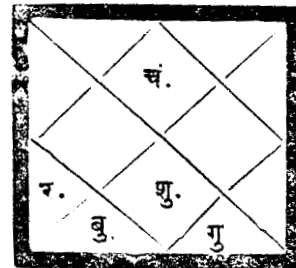
नोट—रवि से बुध २८ अंश तथा शुक्र ४७ अंश से अधिक दूर नहीं जा सकते।

उभयचरी, वोशि, वेशि, कर्तरी-योग

सूर्यस्यान्ते द्वितीये मृगधरविगताः सौम्य वा पापखेटा योगोऽयं भूपतुल्यो ह्युभयचरवरो भाषितो ज्ञानगेहैः। अन्ते वोशिः प्रसिद्धो धननिलयगतो वेशियोगः प्रशस्त— स्तस्य प्रान्ते द्वितीये भवति न खचरः कर्तरी सो न शस्तः ॥

जन्म-कुंडली में जिन स्थान में सूर्य बैठा हो, उससे १२वें और २ रे अर्थात् सूर्य से एक घर पीछे और एक घर आगे दोनों घरों में, चन्द्रमा को छोड़ कर कोई ग्रह बैठा हो तो यह उभयचरी नामक योग राज-योग के समान होता है। चंद्र के सिवा कोई ग्रह सूर्य से १२ वें बैठा

हो तो 'वोशि' योग होता है तथा २ रे बैठा हो तो 'वेशि' योग होता है। इन दोनों में-से कोई भी योग हो तो बहुत अच्छा फल देता है और जो सूर्य से १२ वें तथा २ रे कोई भी ग्रह न बैठा हो तो यह 'कर्तरी' नामक योग होता है। यह योग अच्छा फल नहीं देता, ऐसा ज्योतिः शास्त्र के ज्ञाता महर्षियों ने कहा है।

अधम, सम, वरिष्ठ-योग

१. सूर्य से चन्द्रमा केन्द्र (१, ४, ७, १० भाव) में हो तो 'अधम', थर्ड क्लास, योग होता है।

२. सूर्य से चन्द्रमा पणफर (२, ५, ८, ११ भाव) में हो तो सम-योग सेकेण्ड क्लास का होता है।

३. सूर्य से चन्द्रमा आपोक्लिम (३, ६, ९, १२ भाव) में हो तो 'वरिष्ठ' फर्स्ट क्लास का योग होता है।

कष्टमध्यमवराह्वय योगे द्रव्य वाहन यशः सुखसंपत् ।
ज्ञानधी विनय नैपुण विद्यात्याग भोजफलान्यपि तद्वत् ॥

अधम योगवाले को द्रव्य, सवारी, यश, सुख, संपत्ति, ज्ञान, बुद्धि, विनय, निपुणता, विद्या, उदारता और सुखयोग बहुत अल्प प्राप्त होता है। सम योगवाले को सम रूप में, मध्यम सुख प्राप्त होता है तथा वरिष्ठ योग-वाले को उत्तम रूपेण प्रचुर मात्रा में उपर्युक्त द्रव्यादि का सुख प्राप्त होता है।

नीच वंशजों के राजयोग

लग्नान्ते कामकोशे हरिचरणचराश्चार्थकेन्द्रेषु सौम्या
लग्नाद्वेदान्तखेटा अथ सुखभवनात् कामपर्यन्तखेटाः ।
कामादार्द सखेटा मधुहरभवनाल्लग्नपर्यन्तमेव
एतद्योगेषु जाताः पतितकुलनरास्तेऽपि भूपा भवन्ति ॥

जन्म-कुंडली में सौम्य ग्रह १। २। ७। १२ अथवा १। २। ४। ७। १० वें बैठे हों अथवा सभी ग्रह १। २। ३। ४थे, या ४। ५। ६। ७ वें, या ७। ८। ९। १० वें, या १। १०। ११। १२ वें बैठे हो तो बहुत प्रबल राजयोग होता है। इन में-से कोई भी योग जिस मनुष्य के हो, वह मनुष्य नीच कुल में जन्मा हो तो भी राजा होता है।

नौका योग

पाताले पुत्रगेहे प्रचुरपुरपतो प्रर्वते पन्नगाख्ये
पुण्ये पितृप्रकोष्ठे सकलखगमना यस्य जन्माद्यकाले ।
योगोऽयं नाम नौका परधनकरः कीर्तितो ब्रह्मपुत्रैः
नौका व्यापारकर्त्ता स भवति मनुजोऽनेकजीवस्य भर्त्ता ॥

जन्म-कुण्डली में सभी ग्रह लग्न से ४। ५। ६। ७। ८। ९। १० इन सातो ही स्थानों में बैठे हों (अर्थात् इन स्थानों में कोई भी स्थान ग्रह से खाली न हो) तो यह बहुत द्रव्य देनेवाला नौका नामक योग होता हैं। ऐसा योग जिस मनुष्य को हो, वह मनुष्य नौका (जहाज) आदि द्वारा समुद्र-मार्ग के व्यापार से बहुत धन प्राप्त करता है और अनेक जीवों का पालन-पोषण करनेवाला होता है—ऐसा ब्रह्मा के पुत्र वशिष्ठादि महर्षियों ने कहा है।

चाप योग

राज्ये रुद्राकलग्ने धनसहजसुखे खेचराः सन्ति येषाम्
योगोऽयं चापसंज्ञः सकलसुखकरः कीर्तितः पूर्वधीरैः ।
तेषां द्वारप्रदेशे मदजलमलिना मत्तमातङ्गवृन्दाः
सेव्यन्ते मानमुग्धैर्मधुरसरसिकैः षट् पदैर्मोदमत्तैः ॥

जन्म-कुण्डली में सभी ग्रह लग्न से १०। ११। १२। १। २। ३। ४ इन सातो ही स्थानों में बैठे हों (अर्थात् इन में-से कोई भी स्थान ग्रह से खाली न हो) तो यह सर्व सुखों का करनेवाला 'चाप' नामक योग होता है। ऐसा योग जिन मनुष्यों के हो, उन मनुष्यों के द्वार-प्रदेश में मद-जल से मलीन मन्दोन्मत हाथियों के समूह रहते है और उनके मदगन्ध से मन्दोन्मत्त होकर भ्रमर गुञ्जार करते हैं—ऐसा प्राचीन वृद्ध महर्षियों ने कहा है।

दास-वंशजो के राजयोग

मन्त्रे रामाङ्कलग्ने विविधबलयुताः खेचराः सन्ति येषां
योगोऽयं भाग्यकर्त्ता प्रचुरसुखकरो भाषितो गर्गमुख्यैः ।
तेषां द्वारे नदन्ति प्रबलबलधराः कज्जलाभाः करीन्द्रा
दासे वंशेऽपि जाता भटदलपतयस्तेऽपि भूपा भवन्ति ॥

जन्म-कुण्डली में सभी ग्रह बलवान् होकर लग्न से १। ५। ७। ९ इन चारो ही स्थानों में बैठे हों तो यह सर्व प्रकार के सुखो का करनेवाला 'भाग्यकर्त्ता' नामक योग होता है। ऐसा योग जिन मनुष्यों के हो, उन मनुष्यों के द्वार पर अत्यन्त बलवान् तथा काजल के समान कृष्ण वर्ण के हाथी गर्जना करें, और वे दास-वंश मे उत्पन्न हुए हों तथापि शूर वीर योद्धाओं की सेना के अधिपति होकर राजा होते हैं—ऐसा गर्गादि महर्षियों ने कहा है।

नीच वंशजों के महा राज्ययोग

मूलार्था नन्दनन्दाच्युतभवगृहपा यस्य लग्ने बलिष्ठा
नीचे वंशेपि जातो भवति नरपतिस्तस्य धन्यस्य द्वारम् ।
धीरैर्वीरैर्गम्भीरैर्नटभटगुणिभिर्मण्डलीकैर्नरेशै
रीशाने मेघघोषैः कनकविरचितैरानकैः सेव्यमानम् ॥

जन्म-लग्न से १। २। ४। ९। १०। ११ वें स्थानों के स्वामी ग्रह बलिष्ठ होकर लग्न में बैठे हों (जैसे कन्या-लग्न में बु. शु. गु. चं. योग) तो वह मनुष्य दास आदि नीच वंश में उत्पन्न हुआ हो तो भी महाराजा होता है और उस मनुष्य के द्वार को धीर वीर गम्भीर नट नर्तक योद्धा गुणि-जन तथा मण्डलीक राजा सेवन करते हैं और ईशान दिशा में मेघ सरीखें गम्भीर ध्वनि-वाले, सोने के पत्रों से मढ़े हुए दुन्दुभी (नक्कारे आदि बाजे) बजते हैं।

दास वंशजो के राज्यतुल्य धनयोग

रन्ध्रे रिष्फारिहीने यदि शुभवने चन्द्रपालो बलिष्ठो
लग्नेशो दिक्षु गेहे दशमगृहपतिर्लग्नभावे बलिष्ठः ।

लाभेशः कोशभावे धनसदनपतिर्यस्य लाभे बलिष्ठो ।
दासे वंशेऽपि जातो भवति स पुरुषो राज्यतुल्यो धनाढ्यः

जन्म-कुण्डली में चन्द्र जिस राशि में बैठा हो, उस राशि का स्वामी-ग्रह लग्न से ६ । ८ । १२वें स्थानों को छोड़कर अन्य किसी श्रेष्ठ स्थान में बलिष्ठ होकर बैठा हो तथा लग्न का स्वामी १०वें, और दसवें स्थान का स्वामी १ले(लग्न)में बलिष्ठ हो कर बैठे हों; इसी प्रकार ग्यारहवें स्थान का स्वामी तो २रे, और दूसरे स्थान का स्वामी ११वें बलिष्ठ होकर बैठे हो तो वह मनुष्य दास आदि नीच वंश में उत्पन्न हुआ हो तब भी राजाओं के जैसा धनवान् होता है ।

सुन्दर गज-प्राप्ति राजयोग

कर्मेशो लग्नकोशे भवति सुखगत धर्मकर्मापि गेहे
नो सन्धौ नैव नीचे विगतखलखगे पापवर्गे प्रहीणे ।
तेषां प्रोतुङ्गकुम्भा स्तरबलयुता मेदुराः श्यामगण्डा
मातङ्गा दीर्घदन्ताः प्रलयघननिभा द्वारदेशे नदन्ति ॥

जन्म-कुण्डली में लग्न से दशवें स्थान का स्वामी लग्न से १ । २ । ४ । ९ । १० या ११वें बैठा हो, परन्तु न तो भाव-सन्धि में हो, न नीच राशि में हो और न क्रूर ग्रहों के साथ हो और न क्रूर ग्रहों के षड्वर्ग में हो तो उन मनुष्यों के द्वार पर बड़े ऊँचे शिरवाले भ्रमरों के समूह से युक्त चिकने श्याम गण्डस्थलवाले तथा बहुत लम्बे दातों-वाले प्रलय-काल के मेघों के समान भयंकर रूपवाले हाथी गर्जना करते है ।

सुन्दर स्त्री-प्राप्ति सहित राजयोग

येषां लग्ने चतुर्थे मधुहर मदने भार्गवो भानुहीनो
रेवत्यां कृत्तिकायां खलबल बिगतः स्वातिपुष्यर्क्षसंस्थः ।
ते पूर्णेन्द्वाननानां कमलदलदृशां कामिनी नाम धीशा
भूपा धीरा भवन्ति प्रबलभटवरा भाषितो नीलकण्ठैः ॥

मनुष्यों के जन्म-काल में सूर्य से रहित ग्रह शुक्र रेवती, कृत्तिका, स्वाती या पुष्य नक्षत्र पर हो और जन्म-लग्न से १ । ४ । ७ । या १०वें बैठा हो, परन्तु नेष्ट बली न हो; बल्कि श्रेष्ठ बलों से युक्त हो तो वह मनुष्य पूर्ण चन्द्रमा के समान मुखवाली तथा कमल की पाँखडी के समान लबे नेत्रवाली स्त्रियों के पति होते हैं और बड़े-बड़े योद्धाओं के सेनापति, बड़े धीर राजा होते हैं, ऐसा नील-कण्ड (महादेवजी) ने कहा है ।

सुन्दर अश्व-प्राप्ति-राजयोग

कर्कस्थो वा वृषस्थो भवति हिमकरो देवराजारिगेहे
पूर्णः प्रौढ्यः प्रचण्डः प्रबलबलयुतः पापवर्गप्रहीणः ।
येषां तेषां नराणां ऋतुफललिनो द्वारबाह्यप्रदेशे
बाला वाह्लीकजाताः पवनपरजवाः घोटकाः सनदन्ति ॥

जन्म-कुण्डली में बहुत बलों से युक्त और पाप ग्रहों के षड्वर्ग रहित पूण चंद्र कर्क या वृष राशि पर, लग्न से ४थे स्थान में बैठा हो तो उन मनुष्यों के द्वार पर वायु से अधिक वेगवाले तथा छोटे-छोटे कर्णवाले काबुली अथवा अरबी घोड़े हिनहिनाते रहते हैं ।

दास-वंशजो के महा राज्ययोग

धर्मेशो धर्मभावे जनकभवतनौ कोशपुत्रे सुखस्थो
नो नीचस्थो न सन्धौ हितनिलयतस्तुङ्गराशि गतो वा ।
येषां पुण्यव्रतानां विहरति कमला रम्यपद्मासनस्था
दासे वंशेऽपि जाता वदति मुनिवरते नरेन्द्रा भवन्ति ॥

जन्म-कुण्डली में धर्म (९वें) भवन का स्वामी लग्न से ९ । १० । ११ । १ । २ । ५ या ४थे बैठा हो, परन्तु नीच राशि का या भाव-सन्धि में न हो; किन्तु उच्च या अपने मित्र की राशि में हो तो उन पुण्यवान् मनुष्यों के घर में सदा राज्य-लक्ष्मी निवास करती हैं, और वे पुरुष नीच या दास-वंश में भी जन्मे हों तो भी राजा होते हैं— ऐसा प्राचीन मुनीश्वरों ने कहा है ।

राज्यतुल्य धनयोग

लाभेशो यस्य लाभे धनसुतनये धर्मकर्माद्रिलग्ने
तुङ्गे मूलत्रिकोणे परमप्रियगृहे वैरिवर्गप्रहीणे ।
विप्रो वा क्षत्रियो वा वणिजकुलभवः शूद्रजोऽप्यन्त्यजो वा
प्रोक्ता गर्गाद्यमुख्यैः स भवति पुरुषो राजतुल्यो धनाढ्यः ॥

जन्म-कुण्डली में लाभ भवन का स्वामी लग्न से ११। २ । ४ । ५ । ९ । १० । ७ वा १ में बैठा हो; परन्तु वह ग्रह उच्च या मूल त्रिकोण या परम मित्र की राशि का हो और शत्रु की राशि या पाप ग्रह के षडवर्ग में न हो तो वह धन-योग होता है । ऐसा योग जिस मनुष्य के हो, वह मनुष्य चाहे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र या अन्त्यज, कोई भी हो तो भी राजा के तुल्य धनाढ्य होता है— ऐसा गर्गादि महर्षियों ने कहा है ।

क्षत्रियों के महा राज्ययोग

एकोऽपि क्षोणि पुत्रोः जनकभगवतो विक्रमारौ गतो वा
नक्रे मेषालिराशौ विगतदिनमणौ भूभुजां जन्मकाले
तेषां द्वारप्रदेशे मदबलजलदाः पीनप्रोतुङ्गकुम्भाः
पारिन्द्राः कज्जलाभा खलदलदमनाः सर्वदा संनदन्ति ॥

जिन क्षत्रियों की जन्म-कुण्डलि में एक मंगल ग्रह ही मकर, मेष या वृश्चिक राशि का, लग्न से १० । ११ । ३ या ६ठे स्थान में बैठा हो, परन्तु उस के साथ सूर्य न हो तो उन क्षत्रियों के द्वार पर मदोदक की वृष्टि करनेवाले, पुष्ट और ऊँचे गंड-स्थलवाले, काजल के समान कृष्णवर्ण-वाले, शत्रुओं की सेना को नाश करनेवाले, बहुत बड़े-बड़े हाथी निरन्तर गर्जना करते हैं ।

ब्राह्मणों के राज्यमान्य योग

एकोऽयं लग्ननाथो विबुधपतिगुरुर्ब्राह्मणानां प्रसूतो
गात्रे गोत्रे गिरीशो गरुडधरगिरौ नौनिधौ स्वोच्चकोणे ।
श्रीकर्त्ता विघ्नहर्त्ता वदति मुनिवरो भव्यभाग्यप्रभर्त्ता
केषां पादारविन्दे मणिमयमुकुटाः पार्थिवाः संलुठन्ति ॥

ब्राह्मणों की जन्म-कुण्डली में गुरु जन्म-लग्न का स्वामी होकर अथवा उच्च(कर्क) या मूल त्रिकोण (धनु राशि) का होकर लग्न से १। ३। ११। १०। ७। ४। ६ वा ९वें बैठा हो तो वह एक ही बृहस्पति लक्ष्मी को देनेवाला, विघ्नों को हरनेवाला और बहुत अच्छे भाग्य का उदय करनेवाला होता है। ऐसा बृहस्पति जिन ब्राह्मणों के हों, उनके चरण-कमलों में रत्न-जटित मुकुट धारण करनेवाले बड़े-बड़े राजा-महाराजा भी आकर शिर झुकाते हैं अर्थात् पूज्य भाव से उनका मान-सत्कार करते हैं।

म्लेच्छों के महा राज्ययोग

ये मन्दाद्यास्त्रि खेटाः कलियुगबलिनो भव्यभावानुजात।
स्तुङ्गाःस्वस्था हितस्था अरि शिवसहजे म्लेच्छजानांप्रसूतौ
नो युक्ता नीचसन्धौ विगतदिनमणौ भाषित नीलकण्ठे—
भूपा धीराः प्रवीरा धनिकुलकलशा मानवास्ते भवन्ति ॥

म्लेच्छो की जन्म-कुण्डली में शनि, राहु और केतु ये कलियुग में बल देनेवाले तीन ग्रह उच्च या स्व-राशि या मित्र की राशि में लग्न से ६। ११ या ३रे बैठे हों, परन्तु नीच राशि में या भाव-सन्धि मैं न हों तथा इनके साथ सूर्य भी न हो, तो वे म्लेच्छ बड़े धीर शूर वीर और धनवानों में श्रेष्ठ राजा होते हैं—ऐसा महादेवजी ने कहा है।

चक्रवर्ति वा सार्वभौम राज्ययोग

तौले कुम्भ कुरंगे यदि झषवृषभे कोर्मुके कन्यकाया
वृश्चिकस्थे वा खले वा पशुपतिनिलये पद्मिनीपालपुत्रः।
कुम्भे वा कन्यकायां ल-च-स-द-भवने विक्रमेशे खले वा
मेषे कर्के वृषे वा मिथुनगततमः सार्वभौमं करोति ॥

जन्म-कुण्डली में शनि तुला, कुम्भ, मकर, मीन, वृष धनु वा कन्या राशि का लग्न से ३। ६। या ११वें बैठा हो, राहु, कुम्भ वा कन्या राशि का लग्न से १। ४। ७ वा १०वें बैठा हो, तथा केतु मेष, कर्क, वृष, या मिथुन राशि का लग्न से ३। ११ या ६ठे बैठा हो तो वह मनुष्य सार्वभौम अर्थात् चक्रवर्ती राजा होता है।

ग्रहों के बलानुसार शुभाशुभ योग

तुङ्गस्था वा हितस्थाः सकलबलयुता भानुहीनातिपीना
नो तुङ्गा नोपि स्वस्थाः सुहृदगहगता मित्रसौम्यैर्न दृष्टाः।
सौम्या वा पापखेटा दिनकरसहिताः कीर्त्तिताः कृष्णकण्ठै
दीना हीनाः कुशीला विमलफलहरास्तेऽपि दीना भवन्ति ॥

जन्म-कुण्डली में सौम्य और पाप ग्रह उच्च या स्व-राशि के वा मित्र की राशि के, तथा सम्पूर्ण बलों से युक्त और सूर्य से रहित हों, वे ग्रह बहुत श्रेष्ठ होने से उत्तम फल देते हैं। और जो ग्रह न उच्च के हों, न स्वराशि के हों और न उन्हें मित्र या सौम्य ग्रह देखे, तथा उनके साथ सूर्य भी बैठा हो तो वे ग्रह दीन हीन कुशीलवान होने से सम्पूर्ण शुभ फलों का नाश करते हैं जिससे वह मनुष्य भी दीन मलीन तथा कुशीलवाले होते हैं—ऐसा महादेवजी ने कहा है।

ग्रहों के स्थानानुसार शुभाशुभ योग

लोके वेदे प्रसिद्धाः सकलफलकरा नीचगाः पापखेटाः
स्वोच्चा नैव प्रशस्ता विमलफलहरा रन्ध्ररिष्फारिसंस्था।
जीव स्वस्थानहन्ता वदति मुनिवरा दृष्टिरस्य प्रशस्ता
सौरि स्वस्थानपालः परमभयकरी दृष्टिरस्य प्रदिष्टा ॥

ज्योतिषशास्त्र में लिखा है कि पाप ग्रह जन्म-लग्न के ६। ८। १२वें स्थान में नीच राशि के हों तब तो सम्पूर्ण शुभ फल देते हैं और जो उच्च के शुभ ग्रह जन्म-लग्न से ६। ८। १२वें स्थान में बैठे हों तो विशेष अशुभ फल करते हैं। बृहस्पति जिन स्थान में बैठा हो, उस स्थान के तो फल का नाश करता है; किन्तु जिस स्थान को देखे, उस स्थान के फल की वृद्धि करता है। और शनि जिस स्थान में बैठा हो, उस स्थान के तो फल की वृद्धि करता है; किन्तु जिस स्थान को देखे, उस स्थान के फल का नाश करता है।

कर्महीन या दारिद्राय योग

रन्ध्रे रिष्फे च पापा धनसुतनवमे सर्वकेन्द्रेषु पापा
ध्वान्तध्वसि प्रध्वस्ता धनसुखनिधिपाश्चन्द्रकर्मायपालाः।
योगो दारिद्र्यसंज्ञो वदति मुनिवरो यस्य जन्माद्यकाले
राज्ये वंशेऽपि जातः सभवति मनुजः कर्महीनो दरिद्रः ॥

जन्म-लग्न से ८। १२ वें, या २। ५। ९वें या १। ४। ७। १०वें पाप ग्रह बैठे हों, और २। ५। ९। १०। १ वें घर के स्वामी तथा चन्द्रमा जिस राशि का बैठा हो उस राशि का स्वामी ग्रह ६। ८। १२ इन स्थानों में बैठे हों तो यह दारिद्रय नामक योग होता है। ऐसे योगवाला मनुष्य चाहे राजाओं के कुल में जन्मा हो तो भी कर्महीन या दरिद्री होता है—ऐसे मुनीश्वरों ने कहा है।

शुभ फल-नाशकर्ता अशुभ योग

रन्ध्रेरिष्फेरिपुस्थास्तनुधनसुखपा धर्मकर्माय नाथा
सन्धिस्था वा नतस्थास्तपनकरहता वैरि वर्गेषु युक्ताः।
कोणे केन्द्रेऽपि सौम्याः सहजभवगताः पापखेटा बलिष्ठा-
स्ते सर्वे दग्धदर्पा विमलफलहरा गर्गमुख्या वदन्ति ॥

जन्म-काल में पहिले दूसरे, चौथे, नवें, दशवें, और ग्यारहवें घरों के स्वामीग्रह जन्म-लग्न से ८। १२। ६ठे स्थानों में बैठे हों, अथवा शुभ ग्रह ५। ९। १। ४, ७। १०वें तथा पाप ग्रह ३। ११वें स्थान में बलिष्ठ हो कर बैठें हों; परन्तु भाव-सन्धि में बैठे हो अथवा नीच राशि के हों, या सूर्य के साथ या शत्रु ग्रह के षड्वर्ग में बैठे हों तो वे ग्रह तेज-हीन हो जाते हैं जिससे शुभ फल का नाश कर देते हैं—ऐसा गर्गादि महर्षियों ने कहा है।

मण्डलीक तुल्य राज्ययोग

एकश्चेच्चण्डरश्मिर्मृगपतिनिलये स्वोच्चराशौ गतो वा
दुष्टे दर्पप्रगेहे दनुजदलहरे देव देव बलिष्ठः
दुर्योगानां प्रहर्त्ता प्रचुर धनकरः सर्वकल्याणकर्त्ता
भूपानां भाग्यभर्त्ता वदति मुनिवरो मण्डलीकं करोति ॥

क्षत्रियों की जन्म-कुण्डली में एक सूर्य ही यदि सिंह या मेष राशि का जन्म-लग्न से ६ । ३ । ११ या १०वें बलवान् होकर बैठा हो तो वह सूर्य अशुभ योगों के फल का नाश करनेवाला, बहुत धन का दाता सर्व कल्याण का कर्त्ता और राजाओं के भाग्य का भर्त्ता होता है तथा उसे मण्डलीक राजा भी बना देता है।

शूद्रों के राज्ययोग

एकः सौम्योऽस्ति येषां धनसुखतनये धर्मकर्माय लग्ने
शूद्राणां जन्मकाले दिनकररहितो मन्मथे कन्यकायाम् ।
तेषां द्वार प्रदेशे मणिमयशिबिकाः प्रोढतुंगास्तुरंगाः
पारीन्द्रा दीर्घदन्ता वदति मुनिवरः सर्वदा सेवयन्ति ॥

शूद्रों की जन्म-कुण्डली में एक बुध ही मिथुन या कन्या राशि का जन्म-लग्न से २ । ४ । ५ । ९ । १० । ११ या १ में बैठा हो, किन्तु उस के साथ सूर्य न हो तो उन के द्वार पर मणियों से जटित पालकी आदि वाहन, बहुत ऊँचे-ऊँचे घोड़े तथा लम्बे-लम्बे दाँतोवाले हाथी सदा निवास करते हैं, ऐसा गर्गादि मुनियोंने कहा है।

स्त्री-जातक

अब स्त्रियों की जन्मपत्री देखने के योग कहते हैं—

नारीणां जन्मकाले कुजशनितमसः कोणकेन्द्रेषु शस्ता
श्चन्द्रोऽस्ते च प्रशस्तो बुधसितगुरवः सर्वभावेषु शस्ताः ।
लग्नेशः कामभावे मदनगृहपतिर्लाभभावे बलिष्ठो
लाभेशः पुत्रभावे वदति मुनिवरो बह्वपत्या भवंति ॥

स्त्री की जन्म-कुण्डली में मंगल, शनि तथा राहु, केतु जन्म-लग्न से ५ । ९ । १ । ४ । ७ या १० में बैठें हों तो शुभ; चन्द्रमा ७वां बैठा हो तो शुभ; और बुध, बृहस्पति तथा शुक्र—ये शुभ ग्रह किसी भी स्थान में बैठे हों तो भी शुभ फल देते हैं। और लग्न का स्वामी तो ७वें, सातवें का स्वामी ११वें, और ग्यारहवें का स्वामी ५वें बलिष्ठ हो कर बैठे हों तो यह बहु सन्तान-कर्त्ता योग होता है। ऐसा योग जिस स्त्री के हो, उस के सन्तान बहुत होती है—ऐसा मुनिवरों ने कहा है।

जीवो वा भार्गवो वा परमबल युतः काम भावे च यासां
कर्मेशो धर्मभावे तनुसुख तनये कर्मकोशे बलिष्टः ।
तासाचन्द्राननानां कमलदलदृशां नायक रूपयुक्ताः
राजन्ते राज्यलक्ष्मी मणीमय शिबिका दासवृन्दः सदैवः ॥

स्त्रियों की जन्म-कुण्डली में बृहस्पति या शुक्र परम बलिष्ठ हो कर लग्नसे ७वें बैठा हो और दशवें स्थान का स्वामी ग्रह ९ । १ । ४ । ५ । १० या २रे बलवान होकर बैठा हो तो वे स्त्रियाँ चन्द्रमा के समान मुखवाली और कमल-पत्रों के समान लम्बे नेत्रवाली अर्थात अत्यन्त सुन्दर स्वरूपवाली होती हैं और उनके पति भी रूप-लावण्य से युक्त होकर मणि-रत्नादि से रचित पालकी आदि वाहन, दास-दासी आदि सेवक तथा धनादि सम्पदा से युक्त सदा लक्ष्मी का आनन्द भोगनेवाले होते हैं।

राज्ययोग का फल या अर्थ

क्षेत्राधिपोलभेद्ग्रामं ग्रामेशो नगरं लभेत् ।
नगरेशो लभेद्देशं देशेशो राज्यमाप्नुयात् ॥

ज्योतिष्, शकुन, स्वरोदय आदि फलविधायक ग्रन्थों में जहाँ-कहीं राज्ययोग लिखा है उसका तात्पर्य यह है कि—भूमि का स्वामी ग्रामाधीश हो जाय, ग्रामका स्वामी नगराधीश हो जाय, नगर का स्वामी देशाधीश हो जाय और देश का स्वामी तो राजा तथा राज्य का स्वामी महाराजा हो जाय। इसी प्रकार थोड़े धनवाला अधिक धनाढ्य और अधिक धनवाला बहुत बड़ा श्रीमन्त हो जाय; इसे ही राज्ययोग का फल कहते हैं।

—व्यास तनसुख विद्यार्थी

जन्म-कुण्डली के अनुभूत योग

द्वादशभाव-संज्ञा—

लग्न-मूर्ति तनु उदय वपु प्रथम[१] भाव को नाम।
कोष अर्थ धन दूसरो[२] गेह जानु मति धाम ॥
भ्राता सहज सहोदरो यह तृतीय[३] गृह जान।
अम्बा तूर्य्य तुरीय सुख जानि चतुर्थ[४] बखान ॥
विद्या वाचा पुत्र सुत, जानो पञ्चम[५] भाव।
वैरि शत्रु रिपु द्वेष्य क्षत षष्ठ[६] भवन को नाँव ॥
द्यून मदन मद कामिनी जनिये सप्तम[७] गेह।
रंध्र छिद्र मृतु निधन लय अष्टम[८] गृह सुनि लेअ ॥
धर्म भाग्य शुभ नवम[९] गृह दशम[१०] राज्य नभ कर्म।
लाभ एकादश[११] जानिये, रिष्फ द्वादशो[१२] अंत्य ॥

कंटकादि भाव-संज्ञा—

चौपाई

लग्न[१] चतुर्थ[४] सप्त[७] दश[१०] धामा।
कंटक केन्द्र चतुष्टय नामा ॥
पञ्चम[५] नवम[९] त्रिकोण कहावै।
बुध रिपु[६] अष्टम[८] व्यय[१२] त्रिक गावै ॥
पञ्चम[५] अष्टम[८] लाभ[११] द्वितीया[२]।
पणफर संज्ञक गुणगणनीया ॥
द्वादश[१२] षष्ठ[६] नवम[९] अरु भ्राता[३]।
आपोक्लिम संज्ञक विख्याता ॥

भावों की संज्ञा

१,४,७,१० केन्द्र, कण्टक, चतुष्टय	६,८,१२ त्रिक या दुःसंज्ञा
२,५,८,११ पणफर	३,६,१०,११ उपचय, ऋद्धि
३,६,९,१२ आपोक्लिम	४, ८ चतुरस्र
५,९ कोण	७ द्यून
१० मेषूरण, ख, आज्ञा	४ हिबुक, अंबु, सुख, वेश्म, सद्म
१२ रिष्फ	८ बसु, रंध्र

भाव परत्वेन सामान्य फल

पापग्रह—ऋद्धि यानी उपचय में श्रेष्ठ फल, शेष में अशुभ फल।

शुभग्रह—३,६,८,१२ में अशुभ फल, शेष में शुभफल।
बुध—८ में अशुभ।

चन्द्र—१ में अशुभ।

जन्मकालीन-लक्षण—

सुता जन्मै सिंहराशि मँह, धनु मृग जन्मै बाल।
अर्धशब्द सिसु करत भयो, भाषत बुद्धि रसाल॥
जहाँ राहु सैय्या तहाँ, भंग जहाँ कुज होय।
रबि स्थान महँ दीप कहि, सनी लोह कहि सोय॥

लग्न-नाथ जो केन्द्र मँह, तीनि दिसा को द्वार।
वा लग्नप दिसि जानिये, कहत बुद्धि आगार॥

तनुस्थान ससि जाई, वा ससि षष्ठे भवन मँहि
सिसू-जन्म जब आई, तब कहि दीपक तैल नहि॥
मीन मिथुन सिंह तुल, मेष होय तत्काल।
अन्तरिक्ष भयो बालका, शेषे भूमि बिसाल॥

जन्म-कुण्डली के भावों से दिशा-ज्ञान—

प्रथम भाव—पूर्व, द्वितीय-तृतीय—ईशान, चतुर्थ—उत्तर, पञ्चम-षष्ठ वायव्य, सप्तम—पश्चिम, अष्टम-नवम—नैऋत, दशम—दक्षिण; एकादश-द्वादश को आग्नेय दिशा समझना।

ग्रहों की दिशा—

सूर्य की पूर्व, चन्द्र की वायव्य, भौम की दक्षिण, बुध की उत्तर, गुरु की ईशान, शुक्र की आग्नेय, शनैश्चर की पश्चिम, राहु केतु की नैऋत दिशा है।

चिह्न-ज्ञान—

षट् त्रिकोण वा लग्न रवि, बुध भाखै धरि ध्यान।
वामे कछु लहसन अहै गर्ग-वचन परमान॥

भानु तथा सौरी तनु, धन कुज कंटक चंद।
बालक को षट् अंगुली, भाषत कविकुल बृन्द॥

तनु स्थान मँह शुक्र होय, अष्टम जावे राहु।
वाम कर्ण वा मस्तकै, अवस चिह्न दरसाय॥

सुहृद भाव मंह कवि तमस, भौम सौरि वा लग्न।
वामपाद के चिह्न को, भाषत ज्योतिषमग्न॥

नौमे पाँचै भृगु बसै, तनु वा चौथे मंद।
मृत्यु मँह जावै बुध गुरु, उदरे चिह्न भणंद॥

बालारिष्ट—

द्यूताष्टम तनु पाप खग, बरहै ससि जो खीन।
कण्टक सुभ खग ना बसै, बेगि ताहि जम लीन॥

बसै चन्द्रमा द्वादसै, अष्टम भवनै पाप।
एक मास मँह सिसु मरै, मातु पिता संताप॥

लग्नाष्टम ससि राहुयुत, जनम समय जो पाव।
बालक दस बासर जियै, कहै बुद्धि गुन भाव॥

काणयोग—

तनु धन व्यय-पतियुक्त भृगु, आइ बसै त्रिक् धाम।
वा ससि धन कवि पापयुत, ताहि नेत्र बेकाम॥

सार्क सुक्र तनु-नाथयुत, भवन बसै त्रिक् जाय।
जन्म-अन्ध यहि जोग है, भाषत बुध समुदाय॥

तात मात भ्राता तनय, मातुल त्रिय घर-नाथ।
चन्द्र भौम जो द्वादसै, बाम नैन की हानि।

शनि राहु दहिनो नयन, बुध जन कहत बखानि॥

मूक योग—

पञ्चमेस गुरु युक्त त्रिक्, मूक बाल तब होय।
जौन भौमपति युक्त गुरु, त्रिकहि मूक कहि सोय॥

सुक्र त्रिके गुरु सिंह अज, दसम भानु कुज बास।
मूक होय संसय नहीं, बुध जन करत प्रकास॥

दुःखद योग—

रिपु मृत्यु द्वादस गेह मँह, पापयुक्त लग्नेस।
जन्म-समय जाके परै, ताको अंग कलेस॥

पापयुक्त तनु भवन मँह, रिपु मृत्युप के ईस।
जथाजोग जाके परै, तनुदुख बिस्वा बीस॥

पापहि ग्रहयुत लग्नपति, परै लग्न मँह आय।
वीर्यहीन नर होय तब, अधिक व्याधि रुज ताय॥

बन्धन-योग—

क्रूर रहे धन नवम व्यय, औ पञ्चम आगार।
सो नर सूर कसूर करि, निवसै कारागार॥

सुखद योग—

अंगधीस निज लग्न मँह, बुध गुरु कवि के संग।
या केतू गृह द्वय परै, तौ जानो सुख संग॥

जन्मलग्न मँह उच्च ग्रह, जो काहू के होय।
मित्र दृष्टि तापर परै, सर्व सुखी नर सोय॥

क्लीब (नपुंसक)-योग—

दसम भवन भृगु मंद दोउ, क्लीब जोग तब जानु।
सुक्र भवन ते रिष्फ षट्, बसु क्लिब सुत-भानु॥

कुष्ठ-योग—

लग्नप बुध कुज ससि युते, राहु युक्त या केतु।
स्वेत कुष्ठ को जोग यहि, बरनत गुनी सचेत॥
भौम भास्करहि मंदयुत, रक्तकृष्ण कहु कुष्ट।
लग्नाधिप रवि साथ त्रिक्, तापगंड अति रुष्ट॥

जलज गंडयुत चंद जो, ग्रन्थि गण्ड कुज साथ।
पित्तरोग तब जानियो, बुध त्रिक्युत तनु-नाथ ॥
आमरोग गुरुयुक्त त्रिक्, क्षयी रोग भगसून।
यमतम शिखि वा युक्त त्रिक्, दिन प्रति रुज कहि दून ॥

केमद्रुम-योग—

आगे पीछे चन्द्र कै, जो न परै ग्रह कोय।
केमद्रुम यहि जोग है, सब धन डारै खोय ॥
उच्च चन्द्र सुभयुक्त दृग, केन्द्रधाम मँह होय।
तब केन्द्रद्रुम सुभद है, दोष न मानो कोय ॥

जारज-योग—

भानु चंद तनु ना लखैं, लग्नप लखै न लग्न।
सो सिसु है पर पुरुष को, भाखद ज्योतिष मग्न ॥
रबि कुज गुरु तिथि अष्टमी चौथ चतुर्दसि सार।
तीनि उत्तरा जन्म मँह, तौ शिशु कहो परार ॥

आठे चौथ चतुर्दसि जानी। रबि गुरु मंगलवार बखानी ॥
तीनि उत्तरा परै जौ जहिया। तौ आन क जनमल ब्यासे कहिया ॥

ज्वालामुखी-योग—

परिवा मूल पंचमी भरनी। अष्टमि कृतिका नवें रोहिनी ॥
दसें असलेखा तू तो बाँच। ज्वालामुखी नखत यहि पाँच ॥

जनमै तो जीवै नहीं, बसै तो ऊजड़ होय।
नारी पहिनो भूषनो, पुरुष बिहूनो होय ॥
संग्राम चढ़ै जीतै नहीं, किरषी निहफल जाय।
कुँआ पोखर जो खनै, तुरतै बारि पराय ॥

भ्रातृ-नाश-योग—

भ्रात-गेह को ईस जो, भौम संग त्रिक् होय।
जाकै ऐसो जोग है, भ्रातृ-हीन नर सोय ॥

मोच-योग—

सहज सप्त धन-सदन मँह, क्रूर बसै खग जोइ।
भवन पाँचवें गुरु बसै, नीच जातमन सोइ ॥
सिंह लग्न जनमै सिसु, सप्तम सनि बिकराल।
म्लेच्छ होई कछु दिवस मँह, जदपि ब्रह्मा को बाल ॥
जाके बुध भृगु राहु संग, सप्तम भाव बिराज।
लहै सर्वदा राज-सुख, होवै बेस्या-बाज ॥

संतान-सुख-नाश-योग—

गुरु ते पंचम गेह-पति, जाय परै त्रिक् भाव।
ऐसो जोग जो लखि परै, ताको पुत्र अभाव ॥
पुत्र धर्म अरु लग्न-पति, जाय परै त्रिकस्थान।
जन्म-समय या जोग ते, सदा पुत्र की हानि ॥

प्रथमादि भाव फल—

तनुपति खलयुत त्रिक् भवन तन-सुख मिलै न तेहि।
त्रिक्पति जो तनुगृह रहे आधिव्याधि तेहि देहि ॥
क्रूर रहे जो लग्न मँह वीर्यहीन लग्नेश।
रोग बढ़ै तेहि देह नित चिन्ता जनित कलेश ॥

बुध गुरु कवियुत लग्नपति लग्न रहे वा केन्द्र।
प्रबल सर्व सुख-सम्पदा सुनयन होय नरेन्द्र ॥
लग्ननाथ खल खग-भवन लग्न सुथरि जो पाप।
मनुज होइ दृग अंध सो क्षीणकाय युत ताप ॥
चन्द्र सूर्य जेहिके रहै निर्बल पाप मझार।
व्यभिचारी तन क्षीण सो पर-घर लहै अहार ॥

चौपाई

पाप रहै जो लग्न अगारा। होइ लग्न जो पाप मँझारा ॥
रहै लग्न ते सप्तम पापा। तेहि तन देहि नितै परितापा ॥
रवि शशि ते सप्तम गृहवासी। होइ भौम पृष्ठोदय रासी ॥
पर-गृह-रत दृग हत लघु देही। मनुज होइ अधकर्म सनेही ॥
धनाधीश बागीश समेता। रहै स्वगृह वा केंद्र निकेता ॥
सम्पति राशि मनुज सो पावै। धनपतित्रिक्संगधनहिनसावै ॥
त्रिक् गृह महँ द्वादश धननाथा। रहै लग्न-पति भार्गव साथा ॥
ते जन होय नेत्र तेजहीना। सुख सम्पति सो क्षीण मलीना ॥
रहै बन्धु धन गृह युत पापा। शुक्रसहित कृत लोचन तापा ॥
होहि भानु कवि त्रिक्गृह माँही। रात्रिअंधताडव कहु ताही ॥
सूर्य शुक्र तनुपति त्रिक् भावै। तेहि जन्मान्ध ज्योतिषीगावैं ॥
पूर्ण योग पूरण फलदाता। खण्डितयोग खण्ड-फल ख्याता ॥
रवि शशि द्वादश धनगृहवासा। नयन-युग्मकरधरैविधाता ॥
तँह थिर दाहिन दृगहर मंदा। भौम बाम लोचन दुखकंदा ॥
जननि[४] जनक[१०] सुत[५] त्रिय[७] गृह-नाथा।
त्रिक् गृह बसै शुक्र शशि साथा ॥
नयन दुःख भाषै बुध ताके। नायक रहै भाव को जाके ॥

दोहा

सहज भावपति भवन युत त्रिक्गृह करै निवास।
बन्धुहीन तेहि जानिये ज्योतिषशास्त्र-विलास ॥
सहजभाव-पति निज भवन केन्द्र रहै शुभदृष्ट।
बन्धु-सौख्य तेहि देहि बहु मेटै सकल अरिष्ट ॥
सुख-स्वामी निज भवन मँह सौम्य भाग्यपति संग।
महाराज्य सुख तेहिकर मिलै बाहन तुरग मतंग ॥
सुरगुरु संयुत दृष्ट वा लग्ने रहै सुखेश।
उच्चराशि महँ मनुज सो निश्चय होइ नरेश ॥
सुखाधीश जो लाभगृह सौम्यदृष्ट बलवान।
गजबाजी राजी सहित सुखी रहै धनवान ॥
तनु-पति संयुत हिबुक[*] पति होइ आपनो धाम।
तेहि बसुधा भव भवन-सुख मिलै संपूरण काम ॥
सुखपति जो त्रिक्गृह बसै क्षिति-सुख मिलै न ताहि।
वाहन-सुख औ' मित्र-सुख बन्धु-सौख्य तेहि नाहि ॥
सौख्य भवन-पति दशम-पति जेतने खल के संग।
रहै त्रिकस्थित खल प्रमित करै अग्नि-गृह-भंग ॥

चौपाई

विद्यापति बुध गुरु के संगा। त्रिकगतकर विद्या गुण भंगा ॥
निजगृह रहै नवम वा केंद्रा। जनसो होहि धनाढ्य बुधेन्द्रा ॥
सुत-पति बाल वृद्ध बलहीना। रहै जाहिके सो मति क्षीना ॥
सुत-पति बुध गुरु युत बलवंता। जनसोहोयबिदितमतिमंता ॥

पञ्चम-पति त्रिक महँगुरु संगा। बाचबिहीन करै मतिभंगा।।
पित्रादिकगृह-पतित्रिक्‌गामी। बुधगुरुयुत कारक शठनामी।।
गुरुते सुत-पति त्रिकगृह बासी। पुत्रसौख्य नहिं सकै प्रकाशी।
शुभयुत धर्म,पुत्र,तनु नायक। कछु विलम्ब पर पुत्र-प्रदायक।।
कर्क राशि सुत-गृह में चंदा। कन्या संतति देहि अनन्दा।।

पंचम भवन रहै जो क्रूरा। देवराज गुरु संगति पूरा।।
संतति-सुख सो जन नहि पावै। श्रीशुकदेवव्याससुत गावै।।
सूर्य तनय सुत गृह निज गेहा। एक तनय सुख लहै सुदेहा।।
कुंभे शनि सुत पञ्चक दाता। मृगगत सुत कन्यात्रय धाता।।
कन्या तीनि देहि अंगारा। रहै जाहिके तनय-अगारा।।

दो०—गुरु केवल सुत पञ्चप्रद, कर्क राशि सुतभाव।
राहु केतु वृष कर्क अज, लघु वय सुत-सुख गाव।।
सुरगुरु जाके सुत-भवन खेचर पाप समेत।
तीस वर्ष पर ताहिको संतति सो सुख देत।।
पञ्चम वा अष्टम दशम, खलयुत जेहिके बन्द।
तीस बरस पर मनुज सो, पावै पुत्र-अनन्द।।
यावत पापग्रह सहित, सुत-गृह शुभग्रह-दृष्ट।
तावत वर्ष प्रमाण लै, कहिये वंश-अरिष्ट।।
जो अरिष्ट बुध कवि शशी, करै शम्भु-अभिषेक।
विश्वनाथ की कृपाते, पावै तनय अनेक।।

स्त्रियों के अशुभ योग

क्रूर लग्नयुक्त क्रूर जो स्वामि दृष्ट नहि होय।
सो कन्या कुल गरल है, भूलि न व्याहेउ कोय।।
जाके कुज दसमें बसै ऋणी होय पति तासु।
लग्न राहु सुनि सातवें पति जीवै नहि वासु।।
क्रूरयुत लग्नेश जो पापग्रहों कहँ बीच।
सो कन्या व्यभिचारिनी बुधवर कह कुज नीच।।

राहु सुक्र कुज लग्न मँह कन्या को पति और।
पाप-दृष्ट सनि सातवें कन्या बास कुठोर।।
लग्न बीच सनि कुज तमसि निर्धन स्वेच्छाचारि।
सप्तम कुज रंडा करै पति को तजै तमारि।।
छठे आठवें चन्द जो, क्रूर परै निज अंग।
भौम आठवें भवन मँह सो पति करिहै भंग।।
राहु सातवें लग्न कुज कंटक शुभ सो हीन।
ताको पति जीवित रहे वर्ष दोय वा तीन।।
द्वादसाष्ट कुज क्रूर युत राहु बसै तनु-धाम।
राँड होय कछु दिवस मँह कहत गणक गुनग्राम।।
पाप ग्रहन कै बीच मँह लग्न होइ वा चन्द।
सो तिय नासै कुल दुओ भाखत कवि-कुल-वृन्द।।
सप्तम भृगु जाके बसै सो कुलदोषी नारि।
रूपवती तनु भृगु बसै बुधजन कहत बिचारि।।

स्त्रियों के शुभ(राज)योग

केन्द्र-धाम नभगा सुभ होई। नर तनु पाई कलत्र समोई।
रानी होय बहुत धन ताके। मन प्रसन्न होइहै सुत वाके।।
चन्द्रज तुंग बसै तनु जाई। लाभ धन*गुरु आवै धाई।
सो तिय होय नृपति कै नारी। जन विख्यातहोयसुकुमारी।।
जो षड्वर्ग-सुद्ध गुरु होइ। ससिदृग केन्द्र भवन मँह होई।
ऐसे जोग जनम सुकुमारी। रानी होय सदन धन भारी।।

दोहा—कर्क चन्द्रमा सातवें जीव-दृष्टि परिपूर।
पुत्र पौत्र धन भूरि युत ताको पति नृप सूर।।
लाभ-भवन सित चन्द्र जो सोमज सप्तम भौम।
सुरगुरु परिपूरन लखै रानी होइहैं तौन।।

वैधव्य (विष)कन्या-योग

रबीबार द्वितीया जो होय। असलेखा ता दिन मँह जोय।।
कृतिका होय सनिश्चर बार। याते तिथि का करो विचार।।
होय सतभिखा मंगलवार। कहौ द्वादशी तिथि निर्धार।।
इन योगन मँह कन्या होय। निहचय बिधवा जानो सोय।।
जन्म-लग्न द्वै शुभ ग्रह होय। एकपापग्रहनभ(१०वें)मँहजोय
शत्रु-क्षेत्र मँह द्वै ग्रह मानो। तो कन्याको विधवा जानो।।
असलेखा द्वितीया की होय। मंदवार युत लीजो जोय।।
परे सतभिखा मंगलवार। सातै तिथि लीजो निर्धार।।
रबीबार-द्वादसी जो होय। नखत बिसाखा जानो सोय।।
ऐसो जोग लखि जो परे। तौ कन्या को विधवा करै।।
धरम-सदन मँह भूमि-सुत, जनम-सदन सनि जान।
सूर्य होय सुत-सदन मँह, कन्या विधवा मान।।

विषकन्या-योग

भद्रा सर्पानलवरुणभै भानुमंदारवारे।
यस्या जन्म प्रभवति तदा सा विषाख्या कुमारी।।

सनि मंगल रवि एकै रेखा। कृतिकासतभिखओ'असलेखा।।
सतमी द्वादसि दुइज जीया। तामहँ भइ विषकाँकर धीया।।
आपु मरै कि मातहिं खाय। धन छीजै जो पर घर जाय।।
जौन चमाइन नरकटिया करै। जेठे पूत बहू का मरै।।
जौन नाउन सउरी कमाय। बरिस दिना रोजी ते जाय।।
ब्रह्मा बिस्नु उतरिकै आवैं। भौंरी देत राँड़ होइ जावै।।

वैधव्य (विषकन्या)-भंग-योग

जन्म लग्न वा चन्द्र तें, सुभ ग्रह सप्तम होय।
अथवा सप्तम लग्नपति, सुभगा कन्या सोय।।

* पाठान्तर—धरम, नवम

दशाफल में विशेषता—पूर्व जन्मों के दृढ़ कर्मों का उदय ही दशा है। इसका फल बिलकुल सत्य और अमिट है। इसी के समान महत्त्व है गोचर में। जन्मकुण्डली यानी आकाश में जन्मकालीन ग्रहों की स्थिति। गोचर यानी संमुखग्रह। इस समय आकाश या पंचाङ्ग में ग्रहों की जैसी स्थिति प्रत्यक्ष है, वही गोचर है। इसके फलादेश का मार्ग भिन्न है। व्यक्तिगत रक्षा तात्कालिक परिस्थिति में करने को ही गोचर-शास्त्र की आवश्यकता है। इसलिए भ्रमण में ग्यारहवें(लाभ) स्थान में सभी ग्रह लाभ देते हैं। पापग्रह ३-६-१०वें स्थान में शुभफल, ४-८-१२वें में नेष्ट फल और १-२-५-७-९ वें में मिश्रफल देते हैं। शुभग्रह २-५-९वें में उत्तम, १-३-७-१०वें में मध्यम शुभ, ४-६-८-१२वें नेष्ट फल देते हैं।

विशेष विचार—(१) बलाबल से शुभाशुभ (फल) में भी परिवर्तन हो जाता है। (२) पराशरोक्त विशेष नियमों से शुभत्व प्राप्त ग्रह से दृष्ट या युक्त होने के कारण भी फल में परिवर्तन हो जाता है। (३) शत्रु मित्र सम्बन्ध से भी परिवर्तन हो जाता है।

सारतत्व—(१) जो ग्रह स्वोच्च, मित्र-राशि पर जन्म में हो या बलवान हो या पाराशरोक्त शुभाधिकार प्राप्त हो, वह गोचर में भी जब-जब उपरोक्त रूप में बलवान होगा, अवश्य शुभफल ही देगा। (२) जो ग्रह नीच, शत्रु, निर्बल राशि पर जन्म में हो तो वे गोचर से भी अशुभ फल देने में सहायक होते हैं। जन्म के ग्रहों का यह सब विचार कर गोचर में बुद्धि से अनुमान लगाइये।

चमत्कारी फलादेश की सरल युक्ति

आप वर्षफल, मासफल न बनवा सकें तो कोई हर्ज नहीं, केवल जन्माङ्ग से मिनटों में वर्ष, मास, होरा (ढाई दिन) एवं पाँच-पांच घंटे का फल प्राप्त कर फलित-ज्योतिष का प्रत्यक्ष चमत्कार देखें। वह इस प्रकार कि १—जन्मांग के प्रत्येक भाव से क्रमशः प्रत्येक आगामी वर्ष का भविष्य ज्ञात करें। जन्मांग में १२ भाव होते हैं; अतः प्रथम भाव से जीवन के प्रथम वर्ष का, द्वितीय भाव से द्वितीय वर्ष का, तृतीय भाव से तृतीय वर्ष का, इसी क्रम से १२ भावों से १२ वर्ष का एवं उसके आगे पुनः १३वें वर्ष का प्रथम भाव से, चौदहवें का द्वितीय भाव से, पन्द्रहवें का तृतीय भाव से इत्यादि। मतलब, जिस किसी वर्ष का भविष्य जानना हो, यदि उसकी संख्या १२ से अधिक है तो उसमें १२ का भाग दें, जो शेष बचे उसे जन्मांग के प्रथम भाव से गिनने पर जो भाव प्राप्त हो, उसी से वर्ष का भविष्य निश्चय करें। उस भाव और भावेश के साथ शुभाशुभ ग्रहों की जैसी स्थिति, दृष्टि एवं सम्बन्ध जन्मांग में है, तदनुसार अच्छा बुरा या मिश्र-फल उस वर्ष में प्राप्त होगा।

२—अब उस वर्ष में भी प्रत्येक मास के शुभाशुभ फल के ज्ञानार्थ उस भाव को ही लग्न मानकर उपरोक्त क्रमानुसार १२ भावों से १२ महीनों का भविष्य जानिये।

३—उपरोक्त मास-लग्न को प्रथम भाव मानकर कमशः १२ भावों से उस मास के प्रत्येक होरा (ढाई-ढाई दिन) का भविष्य जानिये।

४—इसी प्रकार होरा (ढाई दिन) के भाव को लग्न (प्रथम भाव) मानकर क्रमशः प्रत्येक भाव से पाँच-पांच घंटों का भविष्य निश्चित कर सकते हैं। एक उदाहरण से भलीभाँति समझ में आ जायगा।

जन्म तारीख १५।१०।१९०४ ई०, इष्ट २८।४, लग्न रा. ११।२६

अब मान लीजिए, तारीख २३।७।१९५३ के शुभाशुभ फलों को ज्ञात करना है तो वर्ष के लग्न (प्रथम भाव) के निश्चय के लिए १९०४ को १९५३ में घटाया, शेष ४९ को १२ से भाग दिया तो १ बचा। अतः इस जन्मांग का का प्रथम भाव इस वर्ष का भी प्रथम भाव हुआ। जन्म १९०४ ई० के अक्टूबर मास में हुआ था। अतः १९५२ के अक्टूबर में ४८ वर्ष पूरा हुआ। अक्टूबर ५२ से जुलाई ५३ तक गिनने से दसवाँ महीना चालू मिला। अतः वर्ष-लग्न मीन से दसवाँ (धनु) मास-लग्न (ता. १५ जुलाई से १५ अगस्त तक के मास का) हुआ। इस लग्न को प्रथम भाव मानकर क्रमशः प्रत्येक भाव से उपरोक्त मास के क्रमशः ढाई-ढाई दिनों का भविष्य निश्चित करें। हमें २३ जुलाई का भविष्य देखना है। सो मासारम्भ (१५ जुलाई) से ढाई-ढाई दिन प्रत्येक (धनु आदि) भाव में वितरित करने से २३ तारीख का लग्न मीन प्राप्त हुआ। इसी प्रकार इस ढाई दिन यानी ६० घंटों के लिये लग्न को प्रथम भाव मानकर १२ भावों से ५-५ घंटे का सूक्ष्म विचार कर सकते हैं; अस्तु। उपरोक्त कुण्डली का जन्म एवं वर्ष-लग्न मीन, मास-लग्न धनु और (ढाई दिन का) होरा-लग्न भी मीन प्राप्त हुआ। यहाँ वर्ष, मास, होरा तीनों लग्न का स्वामी गुरु जन्म में राज्येश है और अष्टमेश एवं स्वगृही शुक्र से दृष्ट है। शुक्र गुरु परस्पर शत्रु हैं और शुक्र बलवान है। यहाँ गुरु शत्रु-दुष्ट, अष्टम के अधिकारी से दृष्ट और स्वयं शुक्र से निर्बल है। अतः इस वक्त गोचर में दोनों का एक स्थान पर होना कष्टकारक है। जन्म और वर्ष-लग्न पर शनि की दृष्टि है और गोचर में भी शनि नेपच्यून से युक्त होकर जन्म-वर्ष-लग्न को देख रहा है, यह भी कष्टकारक है। अतः शरीर-कष्ट, अर्थ नाश का समय है; परन्तु ता. २९।७।५३ ई० को गोचर का शुक्र वृषभस्थ गुरु से अलग होकर मिथुन में चला जायेगा और आठवें होरालग्न (कर्क) का स्वामी चन्द्र, जन्म, वर्ष, मास के स्वामी गुरु से योग करेगा। अतः २९ ता. से लेकर ५।८।५३ ई० तक राज्य से, व्यापार से लाभ जरूर होगा। इसी प्रकार विचार करते हुए अनुभव बढ़ावें; विशेष आनन्द होगा। इसी प्रकार की अनेक युक्तियों की जानकारी के लिए हमारी "दशाफल विचार" नामक पुस्तक मँगाकर पढ़ें। मूल्य केवल १०) रु० है, डाक-खर्च अलग।
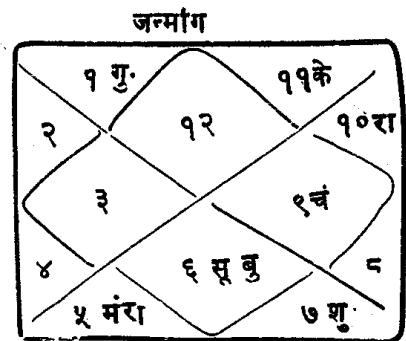
जन्मांग

अशुभ फलकारी ग्रहों का उपाय

जिस समय कोई अशुभ ग्रह आपको अशुभ फल दे रहा हो तो उसकी शांति के लिए प्राचीन काल के विद्वानों ने उसके मंत्र का जप-अनुष्ठान तथा दानादि का विधान किया है। यहाँ ग्रहों के मंत्र, उनकी जप-संख्या, दान-द्रव्यों की सूची आदि सर्व ज्ञातव्य विषय एकत्र दिये जा रहे हैं। पाठकों के विशेष आग्रह पर मंत्र-जप-काल में ग्रहों के स्वरूप-ध्यान के लिए उनके चित्र भी दिये गये हैं। मंत्र-जप स्वयं करें या किसी कर्मनिष्ठ ब्राह्मण से करायें। दान-सूची के पदार्थों को दान करने के अलावा उसमें लिखे रत्न या उपरत्न, अभाव में जड़ी को विधिवत् स्वयं धारण करना चाहिए; शान्ति होगी।

ग्रहों के दान का समय—प्रत्येक ग्रह के दान के लिये अलग-अलग समय नियत है, जिसका उल्लेख दान-द्रव्य की सूची में किया गया है। नियत समय पर दान करने से दान का फल विशेष और शीघ्र मिलता है। इससे अन्य समय में दान करना शुभावह नहीं हैं; क्योंकि शास्त्र-वचन है—'अकाले नैव कर्त्तव्यं दातुर्वै प्राण घातकः।'

मुन्था दान—मोती, तन्दुलान्न, सुवर्ण, कांस्य-पात्र, घृत, श्वेत पुष्प, श्वेत वस्त्र, कपूर, मिश्री, श्वेत चन्दन, हाथी-दांत, वर्ण और दक्षिणा-दान। लहसुनियाँ (वैदूर्यमणि) धारण करना। दान का समय, जप-मंत्र, संख्या और समिधा मुन्थेशवत्।

सब ग्रहों के दोष-शान्त्यर्थ सामान्य औषधि-स्नान—लाजवन्ती (छुईमुई), कूट, खिल्ला, काँगनी, जौ, सरसों, देवदारु, हल्दी, सर्वौषधि, लोध—इन ओषधियों के जल से सतीर्थोदक स्नान करने से सब ग्रहों की पीड़ा नाश होती है तथा जो दान लिखा गया है, उसके करने से शान्ति होती है। गुरु के वचन, देवता, ब्राह्मणों की वन्दना, वेद पुराणादि-श्रवण, साधु-सत्संग, मन की शुद्धता, जप, दान, होम तथा यज्ञ करने से दुष्ट स्थानों में स्थित ग्रह भी पीड़ा नहीं देते। (श्रीपति)।

सप्तधान्य—में जो, उड़द, मूंग, गेहूँ, धान्य(चावल), चना और काँगनी हैं।

सर्वौषधि—कूट, जटामाँसी, दोनों हल्दी, मुरा, शिलाजीत, चन्दन; वच, चम्पक और नागरमोथा— ये दस द्रव्य सर्वौषधि के हैं।

अष्टगन्ध के द्रव्य—अगर, तगर, केशर, गोरोचन, कस्तूरी, कुंकुम तथा दोनों चन्दन हैं।

सूर्य—मध्य भाग, वर्तुलमंडल, अंगुल १२, कलिंग देश, कश्यप गोत्र, रक्त वर्ण, सिंह राशि का स्वामी, वाहन सप्ताश्व, समिधा—मदार। दान-द्रव्य—माणिक, सोना, ताँबा, गेहूँ, गुड़, घी, लाल कपड़ा, लाल फूल, केशर, मूंगा, लाल गऊ, लाल चन्दन। दान का समय—अरुणोदय (सूर्योदय-काल ; जप-मंत्र

ॐ ह्रीं ह्रीं सूर्याय नमः। जप-संख्या—७ हजार; कलियुग में जप-संख्या २८ हजार। वैदिक जप-मंत्र—ॐ आकृष्णेन रजसाव्वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतम्मर्त्यञ्च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥

चन्द्र—अग्नि-कोण, चतुरस्र मण्डल, अंगुल ४, यमुना तटवर्ती देश, अत्रि गोत्र, श्वेत वर्ण, कर्क राशि का स्वामी, वाहन-हरिण, समिधा—पलाश। दान-द्रव्य—मोती, सोना, चाँदी चावल, मिश्री, दही, सफेद कपड़ा, सफेद फूल, शंख, कपूर, सफेद बैल, सफेद चन्दन। दान का समय-संध्याकाल। जप-मंत्र ॐ ऐं क्लीं सोमाय नमः।

जप-संख्या—११ हजार; कलियुग में जप-संख्या ४४ हजार वैदिक जप-मंत्र—ॐ इमन्देवाऽ असपत्कन ꣳ सुवद्ध्वम्महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय॥ इमममुष्यपुत्रममुष्यै पुत्रमस्यैविशऽएष वोमीराजा सोमोस्माकम् ब्राह्मणानाꣳराजा॥

मंगल—दक्षिण दिशा, त्रिकोण-मण्डल, अंगुल ३, अवन्ति देश, भारद्वाज गोत्र, मेष वृश्चिक का स्वामी, वाहन मेढा। समिधा—खदिर। दान-द्रव्य—मूंगा, सोना, ताँबा, मसूर, गुड़, घी, लाल कपड़ा, लाल कनेर का फूल, केशर, कस्तूरी, लाल बैल, लाल चन्दन, दान का समय—सबेरे २ घटी तक। जप-मंत्र—ॐ हुं श्रीं मंगलाय नमः।

जप-संख्या—१० हजार; कलियुग में जप-संख्या—४० हजार। वैदिक जप-मंत्र— ॐ अग्निर्म्मूर्द्धा दिव ककुत्पति पृथिव्याऽअयम। अपा रेतांसि जिन्वति।

बुध—ईशान-कोण, बाणाकार मण्डल, अंगुल ४, मगध देश, अत्रि गोत्र, पीत वर्ण, मिथुन कन्या का स्वामी, वाहन सिंह। समिधा-अपामार्ग। दान-द्रव्य—पन्ना, सोना काँसी, मूंग, खाँड़, घी, हरा कपड़ा, सब फूल, हाथी-दाँत, कपूर, शस्त्र, फल। दान का समय—सबेरे ५ घटी तक। जप-मंत्र—ॐ ऐं स्त्रीं श्रीं बुधाय नमः। जप-संख्या—९ हजार; कलियुग में जप-संख्या ३६ हजार। वैदिक जप-मंत्र—ॐ उद्बुद्ध्यस्वाग्नेप्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते स सृजेथामयञ्च। अस्मिन्त्सधस्त्थेऽद्ध्युत्तरस्मिन्विश्वेदेवाऽयजमानश्चसीदत॥

बृहस्पति—उत्तर दिशा, दीर्घ चतुरस्र मण्डल, अंगुल ६, सिन्धु देश, अंगिरा गोत्र, पीत वर्ण, धनु, मीन का स्वामी वाहन—हाथी। समिधा—पीपल। दान-द्रव्य—पुखराज, सोना, काँसी, चने की दाल, खांड़, घी, पीला कपड़ा, पीला फूल, हल्दी, पुस्तक, घोड़ा, पीला फल। दान का समय—संध्याकाल। जप-मंत्र—ॐ ऐं क्लीं बृहस्पतये नमः। जप-संख्या १९ हजार; कलियुग में जप-संख्या ७६ हजार। वैदिक जप-मंत्र—

ॐबृहस्पतेऽति यदर्य्योऽअर्हाद्द्युमद्विभातिक्रतुमज्जनेषु।यद्दीयच्छवसऽऋतप्रजात तदस्मासुऽद्द्रविणन्धेहिचित्रम्॥

शुक्र—पूर्व दिशा, षट्कोण मण्डल, मंगुल ९, भोजकट देश, भृगु गोत्र, श्वेत वर्ण, वृषभ, तुला का स्वामी, वाहन—अश्व। समिधा—उदम्बर। दान-द्रव्य—हीरा, सोना, चाँदी, चावल, मिश्री, दूध, सफेद कपड़ा, सफेद फूल, सुगंध, दही, सफेद घोड़ा, सफेद चन्दन।

दान का समय—अरुणोदय-काल (सूर्योदय-काल)। जप-मंत्रः—ॐ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः। जप-संख्या—१६ हजार, कलियुग में जप-संख्या ६४ हजार। वैदिक जप-मंत्र—ॐ अन्नात्परिस्स्रुतो रसंब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रम्पयः सोमम् प्रजापतिः ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान शुक्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदम्पयोऽमृतम्मधु॥

शनि—पश्चिम दिशा धनुषाकार मण्डल, अंगु २, सौराष्ट्र देश, कश्यप गोत्र, कृश वर्ण—मकर कुम्भ का स्वामी वाहन—गीध। समिधा—शमी। दान-द्रव्य—नीलम, सोना, लोहा, उड़द, कुलथी, तेल, काला कपड़ा, काला फूल, कस्तूरी, काली गौ, भैंस, खड़ाऊँ। दान का समय—मध्याह्न काल। जप-मंत्र—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः। जप-संख्या-२३ हजार; कलियुग में जप-संख्या ९२ हजार वैदिकमंत्र—ॐ शन्नो देवीरभीष्टयऽआपो भवन्तु पीतये शंय्योरभिस्स्रवन्तु नः॥

राहु—नैऋत्य कोण, सूर्याकार मण्डल, अंगुल १२, राठीनापुर (मलय) देश, पैठीनस गोत्र, कृष्ण वर्ण, वाहन व्याघ्र। समिधा—दूर्वा। दान-द्रव्य—गोमेद, सोना, सीसा, तिल, सरसों, तेल, नीला कपड़ा, काला फूल तलवार, कम्बल, घोड़ा, सूप। दान का समय—रात्रि। जप मंत्र—ॐ ऐं ह्रीं राहवे नमः। जप-संख्या—१८ हजार; कलियुग में जप-संख्या ७२ हजार। वैदिक जप-मंत्र—ॐ कया नश्चित्रऽआ भुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता॥

केतु—वायव्य-कोण, ध्वजाकार मण्डल, अंगुल ६ अन्तर्वेदी (कुश) देश, जैमिनी गोत्र, धूम्र वर्ण वाहन—कबूतर, समिधा—कुशा। दान-द्रव्य—लहसुनिया, सोना, लोहा, तिल, सप्त धान्य, तेल, धूमिल कपड़ा, धूमिल फूल, नारियल, कम्बल, बकरा, शस्त्र। दान का समय—रात्रि। जप-मंत्र—ॐ ह्रीं केतवे नमः। जप-संख्या—१८ हजार; कलियुग में जप-संख्या—७२ हजार। वैदिक जप-मंत्र—ॐ केतुङ्कृण्वन्नकेतवे पेशोमर्य्याऽअपेशसे समुषद्भिरजायथाः॥

नवग्रह-स्तोत्रम्

जपा-कुसुम-संकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्॥ १॥

दधि-शङ्खतुषाराभं क्षीरोदार्णव-सम्भवम्।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम्॥ २॥

धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मङ्गलं प्रणमाम्यहम्॥ ३॥

प्रियङ्गुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्॥ ४॥

देवानां च ऋषीणां च गुरुं काञ्चनसन्निभम्।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्॥ ५॥

हिमकुन्द-मृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्॥ ६॥

नीलाञ्जनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्॥ ४॥

अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्।
सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्॥ ८॥

पलाश-पुष्प-सङ्काशं तारकाग्रहमस्तकम्।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्॥ ९॥

इति व्यासमुखोद्गीतं यः पठेत् सुसमाहितः।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भविष्यति॥१०॥

नर-नारी-नृपाणां च भवेतदुःस्वप्ननाशनम्।
ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम्॥११॥

ग्रहनक्षत्रजाः पीडास्तस्कराऽग्नि समुद्भवाः।
ताः सर्वाः प्रशमं यान्ति व्यासो ब्रूते न संशयः॥१२॥

ग्रह-शांत्यर्थ रत्नादि धारण

जातक का प्रमुख भाग्योदयकारी ग्रह निर्बल हो तो उसकी बलवृद्धि के लिए अथवा अनिष्टकारी ग्रह प्रबल हो तो उसके शांत्यर्थ शास्त्र में जो उपाय बतलाये गये हैं, उनमें ग्रहरत्न, उपरत्न, संग(पत्थर), यंत्र तथा जड़ी धारण करना अत्यन्त फलप्रद होता है। अतः प्रत्येक ग्रह के रत्नादि का विवरण नीचे दिया जा रहा है। कुछ लोग जिस ग्रह की महादशा चल रही हो, उसी ग्रह के रत्नादि धारण करते हैं; पर यह विचार करना आवश्यक है कि नग में बाल, रेखा, बिंदु न हो, वह टूटा-फूटा न हो। जिस प्रकार मूर्ति की प्रतिष्ठा मन्त्रों द्वारा की जाती है, उसी प्रकार जिस ग्रह का नग हो, उसी वार को उस ग्रह का १००० मंत्र-जप एवं दशांश हवन करके नग धारण करे। दूसरी बात, नग धारण करने पर एक सप्ताह के अन्दर यदि वह लाभ करे तो ठीक, हानि करे तो तुरन्त ही उस नग को बदल देना चाहिए। नग लेने की सामर्थ्य न हो तो उसी ग्रह का उपरत्न, यन्त्रादि-धारण, ग्रह का जप दानादि करे। साढ़ेसाती शनिवाले नीलम न ले सकें तो विशुद्ध लोहे(फौलाद) की सिद्ध की हुई अंगूठी धारण करें, कल्याण होगा। राशि के हिसाब से नग-धारण ठीक नहीं; क्योंकि हर राशि का कोई व्यक्ति उच्च पदासीन होता है तो उसी राशिनाम का दूसरा भूखों मरता है।

सूर्य--माणिक्य (मानिक, चुन्नी, Ruby याकूत) ५ या कम-से-कम ३ रत्ती का, सोने की अँगूठी में, रवि-पुष्य योग में, धारण करे। साधारण जन १५ चावल का मानिक भी धारण कर सकते हैं। उपरत्न--विद्रुम, सूर्यमणि (लालड़ी, जिसे फारसी में लाल कहते हैं), कंटकिज (Spinal), तामड़ा या चुनड़ी (Garnet) जड़ी--विल्वमूल।

चन्द्र--मुक्ता (मोती Pearl मुखारीद) २, ४, ६ अथवा ११ रत्ती का धारण करे; ७ या ८ रत्ती का कभी न पहने। चाँदी या सोने की अँगूठी में शुक्ल पक्ष के सोमवार को रोहिणी नक्षत्र के योग-काल में धारण करना चाहिए। उपरत्न--चंद्रकांत Moonstone निमरू--मोती की सीप की पूँछ (जड़) में मोती की-सी आभा होती है; यह भी मोती की तरह खूब काम करती है। जड़ी--क्षीरणी(खिरनी)-मूल

मंगल--विद्रुममणि या प्रवाल (मूंगा Coral, मिरजान) ८ रत्ती का, सोने की अंगूठी में मंगलवार को अनुराधा नक्षत्र में धारण करे। ५ या १४ रत्ती का कभी न पहने। उपरत्न--विद्रुम-मूल या संगमूंगी, ज्योतिरस Bloodstone; जड़ी--नागजिह्वा (अनन्त)मूल।

बुध--मरकत मणि (पन्ना Emerald जमरुद) ६ अथवा ३ रत्ती का, सोने की अंगूठी में, बुधवार को उ. फा. नक्षत्र में धारण करे। उपरत्न--हरित नीलमणि (Aquamarine) शिलामणि Agate (सुलेमानी पत्थर) टोडा ओर बेरूज संग : जड़ी--बृद्धदारु-मल (बिधारा की जड़)

गुरु--पुष्पराग (पुखराज Topaz) ९ रत्ती का, गुरु-पुष्य-योग में धारण करे; ९ रत्ती के अभाव में १२ चावल अथवा १॥ रत्ती वजन का भी धारण किया जा सकता है, किंतु ६--११ या १५ रत्ती का न पहने। उपरत्न--Emerald संग सोनेला, संग सोनामाखी आदि। जड़ी--भारंगी या केले का मूल।

शुक्र--वज्रमणि (हीरा Diamond अल्मास) ७ रत्ती का शुक्रवार को मृगशीर्ष नक्षत्र में धारण करना चाहिए। ७ रत्ती की सामर्थ्य न हो तो २ रत्ती का पहने। उपरत्न--संग दतला, संग तुरमुली Amethyst या Zircon या चाँदी में जड़ी हुई मोती। जड़ी--सिंहपुच्छ का मूल।

शनि--नीलमणि (नीलम Saphire याकूत कबूद) १० रत्ती का अथवा ७ ६,३ रत्ती का शनिवार को श्रवण नक्षत्र में धारण करे; कम-से-कम १२ चावल के वजन का भी पहना जा सकता है। उपरत्न--पन्ना, Crysolite संग लीली, संगजमुनिया। जड़ी--बिच्छोल की जड़।

राहु--गोमेदक (गोमेद Zircon जरकूनिया या जारगुन) ६ रत्ती का बुधवार को उ. फा. नक्षत्र में धारण करे; ७,१० या १६ रत्ती का न होना चाहिए। उपरत्न--लाजवर्त, Sardonyx संग तुरसावा, संग साफी। जड़ी--श्वेत चंदन।

केतु--वैदूर्य (लहसुनिया Cat's-Eye फिरोजा) ६ रत्ती का गुरु-पुष्य-योग में धारण करे। गोमेद और लहसुनिया ३ रत्ती का भी ले सकते हैं; किंतु २,४,११ या १३ रत्ती का कभी न ले। उपरत्न--लाजवर्त, Turqaise संगमूसा, संग गोदन्ती आदि। जड़ी--अश्वगंध की जड।

ग्रह-यंत्र-विधान--इन ग्रह-यत्रों का निर्माण शुक्लपक्ष के ग्रह-वार एवं भद्रादि कुयोग रहित समय में करना चाहिये। ग्रह-वार से मतलब उस ग्रह के दिन (वार) से है जिसके यंत्र का निर्माण करना है। राहु केतु का दिन बुधवार है। अष्टगंध की स्याही और अनार की कलम से भोजपत्र पर ग्रह का यंत्र लिखकर यथाशक्ति सोने, चाँदी या ताँबे की ताबीज में भरे तथा उसे लाल डोरे में पिरोकर पुरुष दाहिनी भुजा तथा स्त्रियाँ गले में धारण करे। शनि, राहु, केतु के ताबीज को लाल डोरे के बजाय काले डोरे में बाँधकर धारण करना चाहिए।

सूर्ययंत्र			चंद्रयंत्र			मंगलयंत्र			बुधयंत्र			गुरुयंत्र			शुक्रयंत्र			शनियंत्र			राहुयंत्र			केतुयंत्र		
६	१	८	७	२	९	८	३	१०	९	४	११	१०	५	१२	११	६	१३	१२	७	१४	१३	८	१५	१४	९	१६
७	५	३	८	६	४	९	७	५	१०	८	६	११	९	७	१२	१०	८	१३	११	९	१४	१२	१०	१५	१३	११
२	९	४	३	१०	५	४	११	६	५	१२	७	६	१३	८	७	१४	९	८	१५	१०	९	१६	११	१०	१७	१२

ग्रह-जड़ी का प्रयोग-विधान—प्रत्येक ग्रह की जड़ी पुष्यार्क (रवि-पुष्य योग) में ग्रहण करनी चाहिए। उसके एक दिन पहले (शनिवार को) सायंकाल स्नानादि के बाद शुद्ध वस्त्र धारण कर जड़ी के पौधे या वृक्ष का जल पुष्प रोली अक्षतादि से पूजन करे तथा अभीष्ट कार्य के सिद्धयर्थ दूसरे दिन उसका मूल ले जाने के लिए हाथ जोड़कर निवेदन करे। दूसरे दिन रवि पुष्य-योग में जाकर वृक्ष को प्रणाम करने के बाद उसका मूल ले आये तथा उसे ग्रह के रंग में रंगे डोरे में बाँधकर पुरुष दाहिनी भुजा पर तथा स्त्री बच्चे गले में धारण कर लें। इस विधि से धारण की गयी जड़ी रत्न से कम प्रभाव नहीं करती—स्वयं परीक्षित है।

स्वप्न-विचार

सपने के गीत सदा अधूरे नहीं रहते, पूरे भी हुआ करते हैं। जो अपना होता है, वह कभी सपना हो जाता है; जो सपना होता है, वह कभी अपना भी हो जाता है। स्वप्न जिसे हम निरी भावना या कोरी कल्पना कहते हैं, हमारे अन्तर्मन के रहस्यमय संकेत हुआ करते हैं। आदिम-काल से ही मानव-मन के लिये स्वप्न बड़े आकर्षण और जिज्ञासा का विषय रहा है। रात की श्यामल छाया में हमारी मुँदी पलकों को न जाने कौन-सी शक्ति अपनी कोमल पाणि-पंखुड़ियों से सहलाकार हमें एक विचित्र लोक में ले जाती हैं जिसे स्वप्न-लोक कहते हैं। इसमें प्राय: हमारी धरती की तरह सुख, दु:ख, भय, क्रोध, हास-विलास के प्रसंग उपस्थित होते हैं; पर कभी-कभी इस जाग्रत संसार से भिन्न और विचित्र रूप में! स्वप्न-लोक ऐसा है, जहाँ हमें अपनी इच्छा के विरुद्ध भी जाना पड़ता है। स्वप्नों के विषय में हमारे प्राचीन ऋषियों से लेकर आधुनिक मनीषियों ने गहन विचार और छानबीन की है। इस विषय के पाश्चात्य विचारकों में फ्रायड का स्थान मुख्य माना जाता है। उनके मतानुसार स्वप्न हमारी दबी हुई इच्छाओं का प्रकाशन-मात्र है। हमें स्वप्न में वही दिखाई देगा, जिसका हम कभी-न-कभी विचार कर चुके हैं, विशेषतया हमारी वे इच्छायें जो समाज के भय से जाग्रत अवस्था में पूर्ण नहीं हो पातीं, स्वप्न में चरितार्थ होकर मानसिक तृप्ति देती हैं। कामवासना इनमें मुख्य है। हृदय में दबी हुई प्रत्येक वासना स्वप्न में मूर्तिमान होकर अपने अनेक करतब दिखलाती है। यानी फ्रायड प्रत्येक स्वप्न को प्रसुप्त इच्छाओं का विभिन्न रूपों में प्रकाशित होना मानते हैं; किन्तु उनके ये विचार एकांगी तथा कुछ ही अंश तक ठीक हैं। खासकर उन व्यक्तियों के लिये जिनका जीवन विशेषत: अधिभौतिक, वासनामूलक है; पर जिन व्यक्तियों का जीवन कुछ भी आध्यात्मिक अथवा जिनमें सतोगुण की प्रधानता है, उनको कभी-कभी ऐसे स्वप्न दिखलाई पड़ ही जाते हैं जिनका समाधान फ्रायड के उपर्युक्त सिद्धान्तों से कदापि नहीं हो सकता। ऐसे स्वप्नों में भावी घटनाओं का पूर्वाभास देनेवाले स्वप्न मुख्य हैं; और भारतीय ज्योतिष-विज्ञान में उनका विशद विचार किया गया है। उन स्वप्नों में बड़ी विचित्रता होती है जिनके द्वारा कितने ही व्यक्तियों को भावी घटनाओं का ज्ञान हो चुका है तथा आज भी होता रहता है। इसके एक नहीं सैकड़ों उदाहरण मिलते हैं। जैसे, अमेरिका के राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन ने अपनी हत्या से पूर्व स्वप्न में देखा कि उनकी हत्या कर दी गयी है और लोग उनके शव को लिये जा रहे हैं। उन्होंने स्वप्न की बात अपनी पत्नी एवं मित्रों से कही। सब ने इसे हँसी में टाल दिया; पर सचमुच अब्राहम लिंकन की हत्या उसी प्रकार की गयी जैसा उन्होंने स्वप्न में देखा था।

भारतीय रजतपट के प्रसिद्ध अभिनेता स्वर्गीय चन्द्र-मोहन को रेस का बहुत शौक था। एक बार उनका प्रिय घोड़ा रेस में दौड़नेवाला था। रात को ही चन्द्रमोहन को स्वप्न हुआ कि उनका घोड़ा दौड़ते-दौड़ते गढ़े में गिर कर मर गया है। रेस के समय उनका हृदय बड़ा शंकित होने लगा और सचमुच उनका घोड़ा ठीक उसी स्थान पर गिरकर मर गया, जिसे उन्होंने स्वप्न में देखा था।

जिला मथुरा में गोवर्धन एक तीर्थ है, जहाँ 'कुसुम सरोवर' नामक एक स्थान है। गोवर्धन जाने से पहले मैं 'कुसुम सरोवर' को स्वप्नों में दो बार देख चुका था। दोनों बार मुझे एक-सा स्वप्न दिखाई दिया—जैसे मैं सरोवर में नहा रहा हूँ। जब मैं गोवर्धन पहुँचा तो मुझे 'कुसुम सरोवर' देखकर अत्यन्त आश्चर्य हुआ। यह बिलकुल वही स्थान था जिसे मैं स्वप्नों में देख चुका था। आज पर्यन्त मैं यह निश्चित नहीं कर सका कि वह स्थान, जिसे मैंने जाग्रत अवस्था में कभी नहीं देखा, स्वप्न में कैसे दिखाई दे गया।

प्रोफेसर हिलप्रिक्ट ने एक प्राचीन शिलालेख का सम्पूर्ण एवं स्पष्ट उत्तर स्वप्न में ही पाया था। उन्होंने स्वप्न में देखा कि बेबीलोन का एक पण्डा उन्हें इस शिला लेख का अर्थ समझा रहा है। वह अर्थ वास्तव में बिलकुल सही था।

कितने ही कवियों एवं लेखकों को अपनी रचनाओं की प्रेरणा स्वप्न में प्राप्त हुई है। कवीन्द्र-रवीन्द्र की 'गीताञ्जलि' के कई गीतों के भाव स्वप्न में ही मिले थे। बाणभट्ट की प्रसिद्ध पुस्तक 'कादम्बरी' भी उनके स्वप्न की ही देन है।

उपर्युक्त उदाहरण इस बात की पुष्टि करते हैं कि स्वप्नों से भावी घटनाओं का पूर्वाभास तथा अपूर्व विषयों का ज्ञान भी होता है।

इसके अलावा कुछ लोगों के लिये तो स्वप्नलोक इस पार्थिव जगत से भी अधिक वास्तविकता रखता है। ऐसे व्यक्ति नींद से ही चलते-फिरते एवं बड़े विचित्र कार्य करते है; किन्तु जाग्रत अवस्था में सब कुछ भूल जाते हैं। उन्हें हम स्वप्नविचरण का रोगी कहते हैं; पर उन कवि-गण को क्या कहा जायेगा तो जाग्रत अवस्था में भी स्वप्नलोक में विचरण किया करते हैं और प्रायः अपनी श्रेष्ठतम कविताओं के अनूठे भाव वहीं से प्राप्त करते हैं। अस्तु, विराट् मानव-समुदाय के विलक्षण अनुभवों ने आज के मनोवैज्ञानिकों के सम्मुख फ्रायड के सिद्धान्तों को सर्वथा निरभ्रान्त नहीं रहने दिया है। इसी कारण आज के विचारकों तथा अध्येताओं ने मनोविश्लेषणात्मक निष्कर्षों को तिलाञ्जलि देने की अथवा उसे आवश्यक संशोधन और परिमार्जन के उपरान्त ही स्वीकार करने का परामर्श दिया हैं। एच. एच. हालिंगवर्थ ने अपनी 'एबनॉर्मल साइकॉलिजी' नामक पुस्तक में फ्रायड की मान्यताओं को 'फ्रायड के गल्प' कह कर मजाक उड़ाया है तथा एक अन्य मनोवैज्ञानिक मायार्सन ने उसे ऐसे जड़ सिद्धान्त की संज्ञा दी हैं जो वैज्ञानिक परीक्षण और ज्ञान की वृद्धि में बाधक है। अस्तु, स्वप्न इतना रहस्यमय विषय है कि हम भारतीय ज्योतिषोक्त विचारों को छोड़कर केवल मनोविज्ञान के आधार पर मानव-जीवन में उनकी वास्तविक महत्ता एवं उपयोगिता को जान नहीं सकते। हमारे यहाँ प्राचीन काल से यह विश्वास चला आ रहा हैं कि हमें अपने जीवन की आगामी बाधाओं, आपत्तियों, संकटों और अन्य विशिष्ट घटनाओं के संकेत स्वप्न में मिल जाते हैं। ऐसा ही मत दुनिया के सभी भागों में प्रचलित रहा है और यदि हम इस मान्यता को स्वीकार करें तो स्वप्नों का महत्त्व बहुत अधिक बढ़ जाता है। एतद्विषयक 'स्वप्न-विचार की कला' पुस्तक का तमाम विदेशी भाषाओं में अनुवाद हुआ। अनेक लेखकों ने उन मौलिक व्याख्याओं की नकल की। आमतौर पर इस विषय को लेकर लिखी जानेवाली पुस्तकों की बिक्री बहुत जोरदार होती रही है।

प्रायः इस सिद्धान्त के प्रतिपादकों का यह विश्वास हैं कि स्वप्न की अपनी एक सांकेतिक भाषा होती है। उसे समझने के लिए विशेष प्रकार की शब्दावली की आवश्य-कता होती है जिनका शब्दकोष भी प्रत्येक शब्द की निश्चित व्याख्या के साथ अनेक पुस्तकों मे प्रस्तुत किया गया है। जैसे कोई स्वप्न देखनेवाला व्यक्ति स्वप्न में आग जलते देखता है तो वह इस कोश में 'आग' शब्द को तलाश कर इसकी विभिन्न व्याख्याओं को देखेगा।

यद्यपि यह सब केवल फलित ज्योतिष, हस्तरेखा-विज्ञान आदि जैसा है; परन्तु इस विषय पर कुछ वैज्ञानिक चिन्तकों ने भी गवेषणात्मक काम किया है और उनके विश्वास के अनुसार भी स्वप्नों में-से बहुत बड़ा अंश पूर्व-कथन का ढूंढा जा सकता है। कुछ ने इस विषय पर समूची पुस्तक लिखी है तथा कुछ ने अपने ग्रंथों में दो-एक अध्याय इस विषय पर लगाये हैं। जे० डब्ल्यू० डने की 'एन एक्सपेरिमेण्ट विद टाइम' ऐसी ही पुस्तक है जिसको इस शताब्दी के चौथे दशक में बहुत अधिक लोकप्रियता प्राप्त हुई थी।

यहाँ स्वयं डने के एक व्यक्तिगत स्वप्नानुभव का उल्लेख कर देना बहुत सार्थक लगता है जिसे उन्होंने पूर्व-कथन करनेवाले स्वप्नों का अच्छा उदाहरण माना है।

डने को स्वप्न में लगा कि मै एक ऊँची जगह पर खड़ा हूँ। यह पहाड़ी या पहाड़ अपनी बनावट में कुछ अजीबोगरीब था। इसमें यहाँ-वहाँ दरारें पड़ी हुई थीं, जिनसे भाप बाहर को उफन-उफनकर निकल रही थी। उनको लगा यह एक द्वीप है जिसके बारे में मैं पहले भी स्वप्न देख चुका हूं। यह एक ऐसा द्वीप है जो स्पष्टतः ज्वालामुखी के खतरे में पड़नेवाला है। उन्हें याद आया कि क्रकेटोआ के बारे में उन्होंने कहीं पढ़ा है जिसमें समुद्र का पानी किसी ज्वालामुखी की दरार से भीतर चला गया था और पूरा पहाड़ चकनाचूर हो गया था। 'या खुदा !' उन्होंने आह भरी, 'यह तो समूचा-का-समूचा ही समाप्त हो जाना चाहता है।' उनके मन मे एक उन्मादिनी लालसा उन निवासियों को बचाने को जाग्रत हुई जिनकी संख्या उन्होंने ४,००० कूती थी। उन्होने इसकी यथा-सम्भव चेष्टा की और स्वप्न में ही सरकारी अधिकारियों से मिलकर जितनों को बचाया जा सकता था, बचाया। पूरे स्वप्न में इस ४,००० की संख्या का कुछ विशेष महत्त्व प्रतीत होता रहा।

यह तो रही स्वप्न की बात। कुछ ही दिन बाद डने को 'डेली टेलीग्राफ' की एक प्रति मिली। (इस बार वे तब के आरेंज फ्री स्टेट लिंडले के भग्नावशेषों पर खेमा लगाये पड़े थे, जिसका सम्बन्ध शेष जगत् से कटा हुआ था।) समाचार-पत्र में उन्होंने मांटपोले ज्वालामुखी के विस्फोट की चर्चा पढ़ी जिसने पश्चिमी द्वीप समूह में मार्टिनिके द्वीप के सेंट पियरे नगर को, जो कभी बहुत समृद्ध था, ध्वस्त कर दिया था। इसमें चालीस हजार व्यक्तियों के हताहत होने का समाचार आया था। बचने-वालों की प्राण रक्षा के लिये जाहजों द्वारा उन्हें स्थाना-न्तरित करने का हवाला था।

स्वप्न और यथार्थ का यह साम्य (यद्यपि संख्या में ४,००० और ४०,००० का एकमात्र भेद था) विशष दिलचस्प है। डने अपने कई पूर्व-कथन करनेवाले स्वप्नों से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने अपने सभी स्वप्नों को पूरे विस्तार में लिखना प्रारम्भ कर दिया और फिर अगले

दिनों की घटनाओं से उनका साम्य ढूंढने की चेष्टा करते रहे। उन्होंने अन्य लोगों से भी ऐसा करवाया और उनका दावा है कि इस प्रकार पूर्व-कथन करनेवाले स्वप्नों की एक अच्छी-खासी तादाद हम पाते हैं।

इस विषय पर एक दूसरा और सुव्यवस्थित अध्ययन मार्च १९३२ में किया गया था। लिंडबर्ग से एक लड़का लापता हो गया। इससे पहले कि उसका शव मिले, छानबीन करनेवालों ने समाचार-पत्र द्वारा समूचे देश में यह ऐलान करवाया कि इस विषय में जो भी व्यक्ति कोई स्वप्न देखे, वह इसकी सूचना दे। १३०० उत्तर प्राप्त हुए। इन तथ्यों को हफ्तों बाद पता चलनेवाले परिणाम से मिलाकर देखा गया। वह बच्चा सड़क के पास जंगल में एक उथली सी कब्र में नंगा और काटकर दफनाया गया था और उसकी मृत्यु तत्काल हो गयी थी। केवल ५ प्रतिशत स्वप्नों में बच्चे की मृत्यु का संकेत था। सात स्वप्नों में दफन की जानेवाली जगह का ठीक-ठीक निर्देश था; साथ ही नग्नता तथा गाड़ने के ढंग का खुला ब्योरा था। इन सात में-से चार स्वप्नों में तीनों बातों का उल्लेख था अर्थात् मृत्यु कब्र में दफनाया जाना तथा पेड़ों के बीच उस स्थान का होना।

खैर, हर स्वप्न की प्रामाणिकता को स्वीकार करके चलना तो किसी दशा में निरापद नहीं हो सकता, न हर घटना को किसी-न-किसी व्यक्ति के स्वप्न में अवतरित होने को ही आधार बनाया जा सकता है; परन्तु इतना स्वीकार करने की पर्याप्त गुंजाइश मिलती है कि स्वप्नों में एक अच्छी-खासी संख्या भविष्य-कथन करनेवाले स्वप्नों की होती है; पर प्रायः स्वप्नों का बाहरी अर्थ आन्तरिक अर्थ से भिन्न होता है। कभी तो स्वप्न में जो अप्रत्याशित घटना दृश्य होती है, वही कुछ समयोपरान्त यथार्थतः घटित हो जाती है तथा कभी स्वप्न में दुःख और अशुभ प्रतीत होनेवाले दृश्यों का फल ठीक उनके विपरीत सुखपूर्ण और शुभ-फलदायी अनुभव करने में आता है; जैसे अक्सर भय के स्वप्न परिणाम में भय-नाशक होते हैं। मृत्यु के स्वप्न आयु बढ़ाते हैं और परीक्षाओं में विफल होने के स्वप्न परीक्षाओं की सफलता में सहायक होते हैं। वस्तुतः स्वप्न की भाषा नये प्रकार की होती है। इसके रहस्यमय संकेतों के अर्थ समझने में हम जितनी योग्यता प्राप्त करते हैं, उतनी ही हम मानसिक शक्तियों के सदुपयोग से जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में सफलता प्राप्त करते हैं। प्रायः स्वप्न का बाह्य स्वरूप उसके सांकेतिक अर्थ से इतना भिन्न होता है कि हम बहुत से स्वप्नों को निरर्थक समझ लेते हैं; किन्तु स्वप्न-विज्ञान को बखूबी समझ लेने पर वे निरर्थक स्वप्न भी अपनी कुछ-न-कुछ सार्थकता प्रकट कर देते हैं। स्वप्न-विज्ञान के कुछ पाश्चात्य पंडितों ने सपनों के कुछ खास सांकेतिक पदार्थ, दृश्यादि का जो शुभाशुभ फल निरूपित किया है, उसका विवरण अब हम यहाँ पाठकों के हितार्थ प्रस्तुत कर रहे हैं—

अकेलापन—यदि आप देखें कि किसी स्थान पर आप अकेले रह गये हैं और सब सङ्गी-साथी आपको छोड़कर चले गये हैं तो इसका अर्थ है कि आप अपने भविष्य के लिये कोई योजना बना रहे हैं जिसके पूर्ण करने में आपको कठिनाई होगी।

अनाज—अपने को अनाज के खेत बीच में चलता देखें तो धनी होंगे।

आग—आग जलती देखें तो सामने नयी समस्या आने पर भी परिणाम शुभ होगा—धुवाँ भी हो तो अशुभ है। यदि घर में आग लगी देखें तो संकेत है कि जो बीत गया है उसको भूल जायें। आतिशबाजी देखें तो निराशा होगी। दीपक जलता देखें तो आशा पूरी होगी। आग बुझाना किसी रिश्ते का टूटना बताता है। आग के चारों ओर नाचना या नाच देखना मजेदार यात्रा का सूचक है। अपने ही घर में आग लगी देखें तो चमकदार आग अपनी स्थिति में तरक्की की सूचना देती है, धुएँ से ठीक उल्टा परिणाम होगा।

इम्तहान—में फेल हों तो शुभ!

इन्द्र-धनुष—स्वच्छ आकाश में स्पष्ट और चमकीला देखना सर्वोत्तम स्वप्न है। इसका अर्थ है: आपके जीवन में बहुत बड़ा परिवर्तन होगा। यदि अविवाहित हैं तो बहुत ही अच्छी जगह विवाह होगा।

उड़ना—उड़ना या दीवालों, पेड़ों के ऊपर से कूद जाना आनेवाले सङ्कटों की सूचना है; पर यदि आप आसानी से उड़ या कूद रहे है तो उनको पार कर लेंगे।

उड़ताहाथी—देखना शुभ है।

ऊँट—देखें तो धीरज और शक्ति से काम लेने की आवश्यकता है।

ऐनक—काला चश्मा निराशा की निशानी है, टेढ़ा अविवेक की। यदि देखें कि आप किसी दूसरे का चश्मा लगाये हैं तो दूसरों की राय से आप बहुत प्रभावित हैं।

ओखली—में अन्न कूटना देखना शुभ है।

अंग—शरीर के अलग-अलग अंगों के देखने का अलग-अलग प्रभाव होता है। यदि देखें कि आपका सिर ठीक जगह पर नहीं है या आप बिना सिर के हैं तो यह सूचित करता है कि आप कोई काम बिना विचारे कर बैठेंगे। आपका सिर जानवर का-सा हो तो शत्रु पर विजय प्राप्त करेंगे। चिड़िया का-सा हो तो यात्रा करेंगे घने बाल शक्ति, बिड़रे कमजोरी के सूचक हैं। देखें कि दांत उखड़ गया तो आपके प्रति दूसरों का प्रेम घटेगा। आप स्वयं अपना दांत उखाड़ें तो यह शुभ है। देखें कि

आपका हाथ छोटा है तो आपको घाटा होगा। मैला हाथ देखें तो जिस काम में पड़ेंगे, वही पूरा होगा।

कमरा—अपरिचित कमरे में अपने को देखें तो इच्छा पूरी होगी।

काढ़ना—स्वयं को या किसी को, वस्त्र पर कुछ काढ़ते देखें तो प्रेम या व्यापार में सफलता मिलेगी।

किताबें—सपने में कोई किताब देखें तो उसका नाम नोट कर लें; क्योंकि वही आपके लिए संकेत है।

कौआ—सपने में कौआ बोलता जान पड़े तो आप अच्छा या बुरा कोई नया समाचार सुनेंगे।

खोदना—सपने में मिट्टी खोदते हुए देखें तो बहुत ही शुभ है; पर मिट्टी गीली हो और मेहनत जान पड़े तो अशुभ है।

खोजना—सपने में देखें कि आपकी कोई चीज खो गयी है और ढूँढने से नहीं मिलती तो इसका अर्थ है कि कोई आपको प्यार करता; है पर बदला नहीं पाता। यदि कोई चीज मिल जाय तो आपका प्रेम भी जागेगा।

गरीब—स्वयं को या किसी को भी गरीब देखें तो शुभ है।

गलीचा—शुभ है।

गाय—देखना बहुत ही शुभ है।

गाली—यदि स्वप्न में देखें कि आप किसी को गाली दे रहे हैं तो यह आपके धन या प्रेम की हानि होने की सूचना है। दूसरा आपको गाली दे तो यह संकेत है कि आपका कोई शत्रु बन गया है।

गेंद—गेंद खेलते देखना धन मिलने का लक्षण है। गेंद आप से दूर जाता दिखाई पड़े तो धन-हानि होगी।

घर—आपके जीवन का प्रतीक है। अच्छा, बुरा कच्चा पक्का, सजा, उजड़ा जैसा घर देखें, वैसा ही अपने जीवन के बारे में अच्छी या बुरी सूचना समझें। नये घर की नींव खुदती देखें तो आप वर्तमान काम छोड़ कर दूसरा करेंगे।

घड़ी—स्वप्न में घड़ी का टिकटिकाना सूचित करता है कि बेकार के कामों में आप समय मत बर्बाद करो। घण्टा बजना बतलाता है कि कोई व्यक्ति किसी विषय में आपके फैसले की प्रतीक्षा में हैं।

घोड़ा—घोड़े पर चढ़े जा रहे हों तो सफल होंगे।

चिट्ठी—इसका स्वप्न सदैव प्रेम से सम्बन्धित रहता है। अविवाहितों के लिए यह अच्छा या बुरा जैसा प्रतीत हो, वैसा ही फलदायक होता है। चिट्ठीरसा देखें तो नया समाचार सुनेंगे।

चिड़ियाँ—आत्मा या विचार की स्वरूप है। घायल चिड़िया आन्तरिक दुःखकी सूचना है। कमरे में बन्द चिड़िया देखें तो उसका अर्थ है कि आपने जो वादा किया हैं उससे बच नहीं सकते। कौआ मुसीबत की सूचना है। उसे स्वप्न में उड़ायें तो मुसीबत से बचेंगे। मोर देखें तो धन व मान बढ़ेगा।

चींटी—स्वप्न में चींटी देखें तो समझें कि छोटी-छोटी बातों पर दुःखी होते हैं।

चेचक—देखें कि आपको चेचक निकली है तो निश्चय ही आपको धन मिलेगा। दूसरों को निकली देखें तो शुभ समाचार सुनेंगे।

चौराहा—देखने का अर्थ है: आप दुविधा में हैं। सोचकर काम करें।

चूहा—धन आने का द्योतक है।

चूल्हा—चूल्हा जलता हो और आप रोटी बना रहे हों तो सुख-समाचार पायेंगे।

छज्जा—छज्जे से झाँकना आपके या किसी निकट-सम्बन्धी के विवाहित प्रेम की सूचना है। कुमारी कन्यायें छज्जा देखें तो शुभ है।

जानवर—शेर कटघरे के बाहर देखें तो प्रबल शत्रु की सूचना है। कटघरे के भीतर देखें तो मानो शत्रु से आप बचेंगे। खरहा देखें तो शुभ है। साँड देखें तो आपका बल बढ़ेगा। घोड़ा देखें तो बल और बुद्धि दोनों का काम उठावेंगे। यदि देखें कि घोड़े पर चढ़े जा रहे हैं तो सफल होंगे। यदि देखें कि घोड़े से गिर गये तो असफल! कुत्ता देखें तो इरादों पर विजय प्राप्त करेंगे; पर कुत्ते से डरें तो इरादों के कच्चे होने की सूचना है।

झण्डा—किसी भी प्रकार का स्वच्छ आकाश में उड़ता देखें तो आप शत्रुओं पर विजय प्राप्त करेंगे। यदि झण्डा फटा या कीचड़ से सना देखें तो आपको छोटी-मोटी मुसीबतों का सामना करना पड़ेगा।

झोला—कागज का झोला देखना खतरा सूचित करता है। कपड़े का झोला देखना व्यापार में सफलता की भविष्यवाणी करता है। चमड़े का झोला देखना यात्रा सूचित करता है।

टोपी—देखें तो कहीं से धन या न्योता पायेंगे या देखें कि सर पर टोपी नहीं है तो यह आपके विवाह का संकेत है। आप विवाहित हैं तो परिवार में विवाह की सूचना है।

ठूंठ—किसी पेड़ का ठूंठ या पेड़ जड़ से उखड़ा देखें तो किसी-न-किसी की मृत्यु का समाचार सुनेंगे।

डरना या घबराना—शुभ समाचार पाने की सूचना है। यदि कोई पीछा करता जान पड़े तो यह संकेत है कि वैरी आपसे मेल करना चाहता है। बोझा लिये देखें तो जो कठिन काम कर रहे हैं, वह पूर्ण होगा। रोवें तो कोई सुखदायक घटना घटेगी।

ढोल—बजता देखें या सुने तो जीवन में सफल होंगे।

तम्बू—देखें तो नया काम करेंगे या नया देश देखेंगे।

ताला—का सपना देखें तो समझें कि रास्ते में रुकावटें हैं। टूटा ताला देखना शुभ है।

तीर—चलावें तो जिस काम में हाथ लगायेंगे, उसी में सफल होंगे।

तोता—देखें तो समझें कि कोई आपकी चुगली कर रहा है।

ताश—इच्छा पूरी होने की सूचना है।

थाल—भोजन से भरी थाल शुभ, खाली अशुभ है।

दफ्तर—में बैठे हैं तो सुख, हटाये जाँय तो दुःख।

दीपक—देखना शुभ है। यदि आप किसी संकट में हैं तो आशा करें कि उसका अन्त निकट है।

दुर्घटना—किसी स्व-चलित यन्त्र का विध्वंस देखें तो मोटरकार में २४ घण्टे तक मत चढ़िये। हवाई जहाज रेलगाड़ी, घोड़ा-गाड़ी आदि सवारियों से भी दूर रहिये। स्वप्न में अपने को काटना बतलाता है कि छुरी आदि धार या नोंकवाली चीजों से आप अलग रहें। अपने को गिरता देखें तो जाग्रत में भी अपने कदमों का ध्यान रखें।

दौड़ना—अपने को दौड़ते हुए देखें तो जिनके साथ व्यापार करते हैं, उनसे सावधान रहें। दौड़ हो रही हो और आप जीत रहे हों तो शुभ, पिछड़ रहे हों या दौड़ा न जाता हो तो अशुभ।

धन—पाना शुभ है। धन का खोना अशुभ। चाँदी के बजाय ताम्र का सिक्का पाना अधिक शुभ होता है।

नाच—शुभ है।

नीलाम—देखें कि बहुतेरी वस्तुएं नीलाम हो रही हैं तो आपका व्यापार बढ़ेगा। बोली बोलें तो और शुभ हैं; पर कोई वस्तु खरीद कर पछता रहे हों तो व्यापार में घाटा होगा।

नंगे पाँव—अपने को नंगे पाँव चलता देखें तो मुसीबत में पड़ेंगे। अन्य मत से स्वास्थ्य की वृद्धि हो। पानी में या ओस लगी घास पर चलना अच्छी सफलता-प्राप्ति का सूचक है। पत्थरों पर चलना और ठोकर खाना देखें तो किसी जोखिम में पड़ें। दूसरों को नंगे पाँव देखना इस बात का संकेत है कि उन्हें आपकी सहायता चाहिये।

पर्दा—किसी प्रकार का देखें तो अप्रिय लोगों के आने का योग है।

प्राकृतिक दृश्य—सुखद या दुखद जैसा देखें, वैसा ही फल मिलता है। दृश्य आकर्षक हो, धूप निकली हो तो धन और सुख मिलेगा। बादल छाये हों तो आप चिन्ताग्रस्त हैं।

पानी बरसना—शुभ है।

पैर-गाड़ी—पैर गाड़ी से ऊँचाई पर चढ़े या दूसरों को चढ़ता देखें तो आनेवाला समय अच्छा होगा। यदि नीचे आ रहे हो तो बदनामी होने का अन्देशा है।

पिंजड़ा—पिंजड़े में पक्षी देखें तो सुखी होंगे, शेर आदि देखें तो शत्रु को दबा लेंगे। खुद को पिंजड़े में देखें तो शत्रु का भय है।

फेल होना—स्वप्न में फेल हों, चाहें इम्तान में, चाहे प्रेम या व्यापार में, तो यह पास होने की सूचना है।

बस—में चढ़ना आनेवाली कठिनाइयों का सूचक है। बस की दुर्घटना आर्थिक विपन्नता का लम्बे समय तक बने रहना प्रकट करता है।

बाजा—बाजा बजता सुनें या गाना सुनें तो पारिवारिक सुख बढ़ेगा। सारङ्गी बजती सुनें तो आपको किसी से प्रेम होगा। स्वयं बजावें तो प्रेम टूटेगा।

बीमारी—का स्वप्न देखें तो समझें कि अच्छे दिन आनेवाले हैं। कड़वी दवा पियें तो जीवन के मार्ग में रुकावटें आनी वाली हैं। डाक्टर से बात करें तो कठिनाई से निकलने का उपाय सोच रहे हैं।

बोझा—अपने को भारी बोझा लेकर चलते हुए देखें तो इसका अर्थ है कि आप बहुत ही अधिक चिन्ता-ग्रस्त हैं।

बूढ़े लोग—बूढ़े लोग दिखाई पड़ें तो शुभ है।

भीख—देना या पाना दोनों देखना शुभ है।

भीड़—देखना परिवार या मित्र बढ़ने की सूचना है।

भोजन—स्वप्न में भोजन पकाना शुभ समाचार पाने का लक्षण है। अकेले भोजन करना स्वार्थी होने की निशानी है। दूसरों के साथ खाना मान बढ़ने की सूचना है। भोजन का न मिलना कठिनाई की सूचना है।

मछली—स्वप्न में मछली पकड़ें या किसी को पकड़ते देखें तो शुभ होगा। यह व्यापार में सफलता का सन्देश है।

मार्ग रुका—यदि आप देखें कि कोई आपका मार्ग रोक रहा है और आगे बढ़ने नहीं देता तो आपके लिए यह चेतावनी है कि अपने मित्रों की बात मानें। यदि चाँदनी रात में कोई मार्ग रोके तो आर्थिक हानि की सम्भावना है।

माला—अपने को माला जपते देखें तो भाग्योदय होगा। माला गुहते देखें तो धन पायेंगे।

मधुमक्खी—देखें तो व्यापार चमकेगा।

मक्खन या घी—खाने का सपना देखें तो स्वस्थ रहेंगे। यदि बीमार हैं तो अच्छे होंगे।

मन्दिर या मूर्ति—देखना आपकी धर्म में आस्था प्रकट करता है।

मृतक व्यक्ति—मरे हुए लोगों को देखना शुभ है। अचानक सहायता मिलेगी या चिरवाञ्छित इच्छा पूर्ण होगी।

मोटर चलाते हुए—देखें तो चाहे आप मोटर चलाना न भी जानते हों तो आपको बहुत बड़ा अवसर मिलनेवाला है। और आपकी इच्छा की पूर्ति होगी।

महान् पुरुष—देखने का अर्थ है आपको निकट भविष्य में सफलता मिलनेवाली है।

योग्यता—आप देखें कि आप में कोई असाधारण योग्यता आ गयी है यानी आप नाच, गा या भाषण दे रहे हैं और सैकड़ों आपकी प्रशंसा कर रहे हैं तो यह इस बात की चेतावनी है कि आपको मित्रों से धोखा होगा।

यात्रा—करें तो जीवन में नया परिवर्तन होगा। देखें कि स्टेशन पर पहुँचे हैं और गाड़ी छूट गयी तो यह अवसर खो देने की सूचना है।

रुपया—यदि आप देखें कि रुपया दूसरों को मिल रहा है और आपको नहीं तो इसका अर्थ है: आप असावधान हैं और हानि उठायेंगे। यदि देखें कि स्वयं रुपया पा रहे हैं तो यह बहुत अच्छा है। यदि स्वप्न में गड़ा रुपया पावें तो स्वास्थ्य बिगड़ेगा। मतान्तर से सिक्के देखना सूचित करता है कि व्यापारादि में आप पैसा लगाने में सावधानी बरतें। विदेशी सिक्के देखना किसी ऐसी दिशा से धनागम की सूचना देता है जिसकी उम्मीद ही न हो। पुराने या विदेशी सिक्कों का संग्रह किसी अप्रत्याशित घटना का संकेत देता है।

रत्न—रत्न स्वयं पावें तो अशुभ हैं; कोई दे तो शुभ है।

लोहा—लाल और घन से पीटा जाता देखें तो शुभ है, खासकर स्त्रियों के लिए।

लँगड़ा आदमी—व्यापारिक कठिनाइयों का प्रतीक हैं; पर यदि लँगड़ा प्रसन्न दिखायी दे तो कठिनाइयाँ काबू में रहेंगी।

वस्त्र—आपके वस्त्र नये हैं तो धन मिलेगा। फटे-पुराने हैं तो गरीबी बढ़ेगी।

विदेशी भाषा—यदि आप स्वप्न में कोई विदेशी भाषा बोलें या सुनें तो आपके लिए यात्रा का योग है। घर से दूर जाने पर आपको सफलता मिलेगी।

विवाह—यदि आप अविवाहित हैं और अपना या किसी का विवाह होते देखें तो यह केवल इच्छा का स्वप्न है, परन्तु यदि स्त्रियाँ देखें कि विवाह के बाद दुल्हा गायब हो गया या पुरुष देखें कि दुलहिन गायब हो गई तो यह विवाह-सम्बन्ध टूटने की सूचना है।

वियोग—यदि आप देखें कि किसी मित्र या स्वजन के वियोग के कारण आप दुखी हो रहे हैं तो इसका अर्थ है कि क्रोध में आकर आपने जो बातें की हैं, उनके लिए आपको पछताना पड़ेगा।

शिशु—अज्ञात शिशु देखें तो आपके जीवन में परिवर्तन की सूचना है। या तो पुरानी उलझनों पर विजय प्राप्त करेंगे या नया काम करेंगे; पर रोगी या रोता शिशु देखें तो अशुभ है। स्त्री यदि देखे कि उसको बच्चा होनेवाला है तो उसकी किसी बड़ी इच्छा की पूर्ति होगी।

शंख की आवाज—सुनें तो शीघ्र ही अच्छा समाचार सुनेंगे।

शहर—नया देखें तो यात्रा का योग है।

सौंदर्य—किसी भी प्रकार का सौंदर्य देखना शुभ है। अपने को सुन्दर देखें तो सबके प्यारे बनेंगे। सुन्दरी स्त्री देखें तो काम या व्यापार में सफल होंगे।

सड़क—सड़क जीवन-मार्ग का प्रतीक है। स्वप्न में सड़क पर चलते हुए अच्छा या बुरा जैसा देखें, वैसा ही जीवन के लिए फलदायक समझें। चौड़ी सीधी सड़क सफलता की सूचक है; टेढ़ी-मेढ़ी या दलदली असफलता की।

सन्दूक खोलें—और जो ढूंढ़ रहे हों, पा जायँ तो बहुत ही शुभ है। आपकी इच्छा पूरी होगी। सन्दूक खाली देखें तो निराशा होगी।

स्वर्ण या मुद्रा—देखना या पाना उत्तम है, आपके कार्य पूर्ण होंगे। स्वर्ण देना भी अच्छा है। यह इस बात का संकेत है कि आप अपनी वर्तमान मुसीबतों से बचेंगे। स्वर्ण खो जाना मित्रों से धोखा खाने की निशानी है। स्वर्ण के आभूषणों से अपने को या किसी को सजा हुआ देखना बहुत ही शुभ है।

साँप या घड़ियाल—देखना अशुभ है; शत्रु का सूचक है।

हल—शुभ है, प्रेम और धन प्राप्त होगा। आपकी तरफ आता जान पड़े तो और अच्छा है।

हवाई जहाज—जमीन पर या उड़ता देखें तो शुभ है; सफल होंगे।

हंस—सपने में स्वच्छ पानी में हंस तैरता देखें तो धन मिलने की सूचना है। स्त्रियाँ देखें तो पति की तरक्की होगी।

हंसना—स्वप्न से हँसना बहुत ही शुभ है। यह प्रत्येक कार्य में सफलता का सूचक है।

हार—अपने को या किसी को हार पहने देखें तो यह शुभ है। यदि यों ही कहीं रखा हुआ हार देखें तो समझें कि कोई आपसे ईर्ष्या कर रहा है।

स्वप्न का रहस्य अबतक रहस्य ही बना हुआ है। इसके रहस्योद्घाटन के प्रयास अभी तक पूर्णरूप से सफल नहीं हो सके हैं; फिर भी प्राचीन काल से लेकर आज तक के जिन मनीषियों ने इस दिशा में सतत प्रयास किया है, उनके अनुभवों की उपेक्षा नहीं की जा सकती; बल्कि प्राय: हर व्यक्ति उनसे आशातीत लाभ उठा सकता है। इसी कारण यहाँ कुछ खास-खास स्वप्नों के भावी-फलों का संक्षिप्त निरूपण किया जा रहा है। स्वप्न-फलों के सम्बन्ध में इन बातों को ध्यान में रखना आवश्यक है : रात्रि ३ बजे से सूर्योदय के पूर्व के स्वप्न सात दिन में, मध्यरात्रि के स्वप्न १ माह में, मध्यरात्रि से पहले के स्वप्न १ वर्ष में अपना फल प्रदान करते हैं। दिन के स्वप्न महत्त्वहीन होते हैं। एक रात में एक से अधिक स्वप्न दृश्य हों तो अन्तिम स्वप्न ही फलदायक होगा; अस्वस्थ और असंयमी के स्वप्न व्यर्थ होते हैं।

स्वप्न	स्वप्न का फल	स्वप्न	स्वप्न का फल
दांत टूटते देखना	दुखएव झझटका सामानाहा	धरती पर बिस्तरा लगाना	दीर्घायु हो; सुख-वृद्धि हो।
दरवाजा देखना	किसी बड़े से मित्रता हो।	ऊँची जगहपर चढ़ना	पदोन्नति एवं प्रसिद्धि हो।
दरवाजा बन्द देखना	परेशानियाँ हों।	बिल्ली देखना	चोर या शत्रुसे पाला पड़े।
दलदल देखना	व्यर्थ चिन्ता बढ़े।	बिल्ली या बन्दर काटे	रोग और अर्थ-संकट हो।
सुपाड़ी देखना	रोग से मुक्त हो।	नदी का पानी पीना	राज्यसे लाभहो, परिश्रमहो
धुआँ देखना	हानि एव विवाद हो।	लाल फूल देखना	पुत्रसे सुखएवं भाग्योदयहो।
रस्सी देखना	यात्राकरें[*तो परेशानी हो	सफेद फूल देखना	दुःख से छुटकारा मिले।
रोटी खाना	पदोन्नति एवं धन बढ़े।	पत्थर देखना	विपत्ति, मित्र शत्रु बने।
प्रकाश देखना	उच्चकोटि का साधु हो।	तलवार देखना	युद्ध में विजय हो।
रूई देखना	स्वस्थ हो जाय।	तालाब या पोखरेमें नहाना	सन्यास धारण करें।
खेती देखना	लापरवाहहो; सन्तान-प्राप्तिहो	सिहासन देखना	बहुत सुख मिले।
भूकम्प देखना	सन्तानकोकष्ट एवं दुःख हो।	जगल देखना	दुःख दूर हो, विजय हो।
सीढ़ी देखना	सुख सम्पत्ति बढ़े।	अरथी देखना	रोग-मुक्त, आयु-वृद्धि हो।
सुराही देखना	बुरा संग हो।	जहाज देखना	परेशानी दूर हो; व्यय हो।
चश्मा लगाना	विद्वता बढ़े।	चाँदी देखना	धन एवं अहकार-वृद्धि हो।
लाठी देखना	नाम पैदा करें।	झरना देखना	दुखः दूर हो।
खाई देखना	धन एवं प्रसिद्धि मिले।	चादर देखना	बदनामी हो।
कैंची देखना	घर में कलह हो।	दिया जलते देखना	आय-वृद्धि हो।
कुत्ता देखना	उत्तम मित्र प्राप्तहो।	पत्र पढ़ना	शुभसमाचारमिले,परिश्रमबढ़े
कलम देखना	महान्व्यक्ति से मुलाकातहो	सुगन्ध लगाना	विद्वान एवं पण्डित हो।
टोपी देखना	दुःख दूर हो; उन्नति हो।	अनार पाना	धन और सन्तान प्राप्त हो।
धनुष खींचना	लाभप्रद यात्रा हो।	आकाश देखना	ऐश्वर्य-वृद्धि, पुत्र-लाभ।
कोयला देखना	व्यर्थ किसी झगड़े में फँसे।	कुएँ का पानी देखना	विविध लाभ, विजय।
कीचड़ में फँसना	कष्ट हो, व्यय हो।	रत्न या नगीना देखना	दुःख-भय, व्यय हो।
बैल या गाय देखना	मोटीदेखेंतोलाभ,दुबलीदेखें*	धूप देखना	पदोन्नति एवं लाभ हो।
घर बनाना	प्रसिद्धि प्राप्त हो।	अग्नि उठाना	अवैधधन-प्राप्ति,अवैध व्यय।
घास का मैदान देखना	खूब धन एकत्र करे।	आग जलाकर पकड़ना	कष्टकासामनाहो,व्यर्थ व्ययहो
घोड़ा देखना	संकट दूर हो।	बादल आकाश में देखना	राज्य से लाभ हो।
घोड़े पर सवार होना	सरदारी या ओहदा मिले।	बादल पूर्ण आकाश देखना	विपत्ति,दुःख व परेशानीहो।
लोहा देखना	किसी धनवानसेलाम हो।	आँधी और बिजली गिरना	मुसीबत में फँसे।
लोमड़ी देखना	किसीसम्बन्धीसेधोखामिले।	सूखा अन्न खाना	विविधकष्ट,व्यर्थपरेशानीहो।
मोती देखना	लड़की पैदा हो।	अंगूठी पहनना	धन-लाभतथा प्रसन्नताबढ़े।
मुर्दे का पुकारना	विपत्ति एवं दुःख प्राप्तहो।	ऊँट देखना	अपार धन प्राप्त हो।
मुर्दे से बात करना	मुराद पूरी हो।	वर्षा अपने घर पर देखना	घरमें कलह एवं रोग बढ़े।
बाजार देखना	दरिद्रता दूर हो।	वर्षा पूरे नगर में देखना	सुख एवं प्रसन्नता प्राप्तहो।
बड़ी दीवार देखना	सम्मान मिले।	हरी फुलवारी देखना	धन-जन की वृद्धि हो।
दीवाल में कील ठोकना	वृद्ध से लाभ हो।	सूखा बाग देखना	विपत्ति में फँसे।
दतुवन करना	पापकाप्रायश्चितहो,सुखहो।	सर के बाल कटे देखना	ऋण-मुक्त हो,स्त्रीको पुत्रहो।
खूंटा देखना	धर्मकी ओर अभिरुचिबढ़े।	बालू देखना	धन-लाभ हो।

महान् शुभ और अशुभ फलदायी स्वप्न-सूची

शरीर नीरोग तथा मन चिंता शोक से रहित हो, स्वप्न-द्रष्टा हिन्दू हो तो उसकी शिखा बंधी हो, शयन-स्थान में बाजे आदि की ध्वनि न होती हो तो रात के पिछले पहर में निम्नाङ्कित शुभ स्वप्नों में-से कोई भी दिखाई पड़ने से निश्चय कष्ट-निवृत्ति होकर शीघ्र ही भाग्योदय होगा—ऐसा शास्त्रवचन है। सावधान! शुभ-फलदायी स्वप्न देखने के पश्चात् सोना नहीं चाहिए; शेष रात्रि भजन, ध्यान में बितानी चाहिए तथा किसी को अपना स्वप्न बताना भी नहीं चाहिए। इसके विपरीत अशुभ स्वप्न देखने के बाद फिर सो जाय तथा प्रातःकाल उस अशुभ स्वप्न की स्मृति ताजी रहे तो गुरुजनों को उसे बतला देवें। अशुभ-फलकारी स्वप्न आधी रात में दिखाई दे तो उसका फल और उत्कट होता है; उसकी विशेषतः शांति करानी चाहिये—आगे होनहार तो प्रबल होता ही है।

शुभ स्वप्न

१. ब्राह्मण बालक
२. आभूषणों से विभूषित, पति पुत्रों से युक्त या सफेद वस्त्रवाली सुन्दरी स्त्री देखना
३. ब्राह्मण, राजा, देवता, गुरु
४. सफेद कमल, सरोवर, राजहंस
५. सूर्य, चन्द्र, तारे, इन्द्र-धनुष,
६. फल-फूलयुक्त आम, नीम, नारियल, विशाल मदार या केला का वृक्ष
७. सफेद साँप का काटना
८. महल, पर्वत, वृक्ष, सिंह, हाथी, घोड़ा या नाव देखना या उन पर चढ़ना
९. वीणा बजाना
१०. प्रियान्न दही, दूध, खीरादि खाना
११. स्वयं के अंगों में कीड़े या विष्टा लगना
१२. रोते रहना
१३. हाथों में सफेद धान्य, सफेद फूल दिखाई देना
१४ अपने को चंदन-चर्चित देखना
१५. अपने को समुद्र में देखना
१६. रक्त से स्नान, शरीर में रक्त लगा देखना
१७. अपना अंग छिन्न-भिन्न या क्षत-विक्षत देखना
१८. अपने शरीर में मेद या पीव लिपटा देखना
१९. सोना, चाँदी, सफेद मणि रत्न, मोती, मानिक, भरे हुए कलश का जल देखना
२०. बछड़ा सहित गऊ, साँड़, मोर, तोता, सारस, हंस, चील, खञ्जरीट देखना
२१. देव-पूजा, वेद-ध्वनि का शुष्क श्रवण, प्रतिमा, श्रीकृष्ण की प्रतिमा, शिव-लिङ्ग देखना
२२. ब्राह्मण बालिका, सामान्य बालिका, फली और पकी खेती, देव-स्थान देखना
२३. रथ शैय्यादि का ज्वलन
२४. अपने सिर का छेदन
२५. अपना मरण देखना
२६. दर्पण-प्राप्ति
२७. मठा, कपास इन दो वस्तुओं को छोड़कर अन्य कोई सफेद वस्तु देखना

अशुभ स्वप्न

१. अत्यन्त वृद्धा और काल शरीरवाली या नंगी स्त्री का नाचना
२. खुले केशवाली शूद्रा या विधवा देखना
३. सिर और छाती पर ताड़ के या कोई भी काले रंग के फलों का गिरना
४. मैला कुचैला, विकृत आकार तथा रूखे केशवाले म्लेच्छ या गलित कुष्ट से युक्त नंगा शूद्र देखना
५. सधवा, पुत्रवती, सती स्त्री या शिखा खोले ब्राह्मण का रोष, कुपित गुरु, संन्यासी या वैष्णव को देखना
६: घड़े का फोड़ा जाना
७. अंगार, भस्म या रक्त की वर्षा
८. वानर, कौवा, कुत्ता, भालू, सूअर, गदहा, बैल, भैंस गीध, कंक, घड़ियाल, सियार देखना
९. नंगी स्त्री का नृत्य
१०. अपने शरीर में किसी का तेल लगाना
११. नृत्य गीत युक्त विवाहोत्सव देखना
१२. सूर्य चन्द्र निस्तेज या ग्रहण लगा हुआ देखना
१३. उल्कापात, धूमकेतु, भूकम्प, राष्ट्र-विप्लव, आँधी, तूफान आदि उत्पात देखना
१४. वृक्ष की डालियाँ, पर्वत-शृंग, सूर्य-चन्द्र-मण्डल या तारे टूटते दिखाई देना
१५ हाथ से दर्पण, दण्डादि का गिरकर टूटना
१६. गले का हार या माला आदि का टूटना
१७. काले वस्त्रयुक्त किसी व्यक्ति को अपना आलिङ्गन-चुम्बन करते देखना
१८. काली प्रतिमा देखना
१९. भस्म-पुञ्ज, हड्डियों का ढेर, ताड़ का फल, केश, नाखून, कौड़ियाँ, कवाइत, बुझे अंगार (कोयला) देखना
२०. मरघट, चिता पर रक्खा मुरदा, कुम्हार का चाक, तेली का कोल्हू, अधजले या सूखे काठ, कुश, तृण, चलता हुआ धड़, मुरदे का चिल्लाता हुआ मस्तक, आग से जला हुआ स्थान देखना
२१. भस्मयुक्त सूखा तालाब, जली मछली, लोहा, दावानल से जलकर बुझा हुआ वन देखना

नोट—यह स्वप्न-सूची ब्रह्मावैवर्त पुराणके आधार पर तैयार की गयी है, अतः पूर्ण प्रामाणिक है। ऐसे स्वप्न-फल जो शास्त्रोक्त तो नहीं हैं; किन्तु अनुभव में पूर्णतः सत्य सिद्ध हो चुके हैं, वे सब इसी पुस्तक में अन्यत्र प्रकाशित किये गये हैं।

भारतीय वृष्टि-विज्ञान

'अन्नं वै प्राणाः' कलियुग में मानव का प्राण अन्न में ही है और अन्न की उत्पत्ति या नाश वर्षा के अधीन है। इसलिए हम यहाँ बहुत विचारपूर्वक वर्षा-सम्बन्धी अपने चिरपरीक्षित योगों को निष्कपट भाव से पाठकों को अर्पित कर रहे हैं। इन पर पूर्णतया ध्यान रखने से वृष्टि-अनावृष्टि का पूर्व-ज्ञान सरलता एवं पूर्ण सफलतापूर्वक किया जा सकेगा। वर्षा की न्यूनाधिक मात्रा देश-भेदानुसार समझें, जिसके विषय में आवश्यक निर्देश इसी पुस्तक में अन्यत्र दिया गया है।

१. ग्रहों के उदय, अस्त, राश्यन्तर और क्रान्ति-परिवर्तन, युति तथा अमा, पूर्णिमा को प्रायः वर्षा होती है। ग्रहाणामुदये वाऽस्ते राश्यन्तर गतेऽयने। संयोगे वाऽपि पक्षान्ते प्रायो वृष्टिः प्रजायते।

२. मंगल के राशि-चार के समय चन्द्रमा जलचर राशि (कर्क, मकर, मीन) में हो तो वर्षा ऋतु में मेघ पृथ्वी पर बहुत शीघ्र जल देता है।

३. गुरु के राशि-सञ्चार से, बुध के सञ्चार में, शनि के त्रिधा सञ्चार यानी वक्री, मार्गी, राश्यन्तर अथवा उदय, अस्त, राश्यन्तर होने पर; शुक्र के उदय, अस्त होने पर मेघ शीघ्र ही चारो तरफ जल बरसाता है।

मतान्तर---उदयास्तगतः शुक्रो बुधश्च वृष्टिकारकः॥ चलत्यङ्गारके वृष्टिस्त्रिधा वृष्टिः शनैश्चरे॥ बुध शुक्र उदित अस्त होते हुए, मंगल राशि-संक्रमण करता हुआ और शनिश्चर उक्त तीनों से प्रकार से वृष्टिकारक होता है। 'चलत्यङ्गारके वृष्टिरुदये च बृहस्पतौ। शुक्रास्तसमये वृष्टिस्त्रिधावृष्टिः शनैश्चरे॥' मंगल राशि-संक्रमण करने पर, गुरु उदय होने पर, शुक्र अस्त होकर, शनिश्चर उक्त तीनों प्रकार से वर्षा करते हैं।

४. वारिपूर्णां महीं कृत्वा पश्चात्सञ्चरते गुरुः। शुक्रे वाऽस्तमिते मन्दे त्रिविधोऽपि प्रजायते॥ गुरु राशि-संचार के बाद तथा शुक्र, शनि अस्त से पूर्व, इस प्रकार तीनों पृथ्वी पर वर्षा करते हैं।

५. शुक्रस्यास्तमये वृष्टिरिज्ये चोदयमागते। सञ्चरत्यवनीसूनौ वृष्टिर्मन्दे त्रिधामता॥ शुक्र के अस्त में सामान्य वर्षा, गुरु के उदय में मध्यम, मंगल शनि के सञ्चार में उत्तम, ऐसे तीन भाँति से वर्षा होवे।

६. प्रायो ग्रहाणामुदयास्तकाले समागमे मण्डलसंक्रमे च। पक्षक्षये तीक्ष्णकरायनान्ते वृष्टिर्गतेऽर्के नियमेन चार्द्राम्

किसी ग्रह के उदय या अस्त होने, एक मण्डल से दूसरे मण्डल में जाने, दो ग्रहों का समागम (अंशात्मक युति) होने, पूर्णिमा एवं अमावस्या को, सूर्य की अयन-संक्रान्ति वा विशेष कर आर्द्रा पर जाने के समय प्रायः वर्षा हुआ करती है।

७. क्रूर ग्रह अतिचारी हो तो थोड़ी और शुभग्रह वक्री हो तो बहुत वर्षा होवे।

पाठभेदः—॥ उदये च गुरौ वृष्टिरस्ते वृष्टिर्भृगोः सुते।

८. यदि बुध वक्री होकर शुक्र को छोड़ पीछे (उलटा) चला जाय तो पाँच-सात दिन तक वर्षा हो।

९. अस्त या उदय होते हुए किसी भी ग्रह को बृहस्पति पूर्ण या त्रिपाद (पौन) दृष्टि से देखे तो अवश्य वर्षा हो।

नोट—उदयास्तोन्मुख ग्रह से बृहस्पति ५-७-९वें होने पर पूर्ण दृष्टि तथा १०, ६ठें होने पर त्रिपाद (पौन) दृष्टि से देखेगा।

१०. सूर्याग्रे च यदा शुक्रस्तदा वृष्टिः सुशोभना। अर्थात् सूर्य से आगे शुक्र और पीछे गुरु हो तो पृथ्वी जलमयी हो।

११. बुध शुक्र के उदय और अस्त होने पर, चंद्रमा के जल-राशि में स्थित होने पर एवं पक्षान्त (अमावस्या, पूर्णिमा) और संक्रान्ति-समय में प्रायः वृष्टि हुआ करती है।

१२. 'उदयास्तमये मार्गे वक्रयुक्ते च संक्रमे। जलराशिगताः खेटा महावृष्टिप्रदाः सदा।' ग्रहों के उदय, अस्त मार्गी, वक्री और राशि-संक्रमण, विशेषतः जलराशि में संक्रमण होने पर प्रायः विशेष वर्षा होती है।

नोट—कर्क, मकर और मीन राशियाँ पूर्ण जलप्रद हैं। वृष, धनु और कुम्भ अर्ध जलप्रद हैं। तुला और वृश्चिक सामान्य जलद हैं, शेष राशियाँ जलरहित हैं।

१३. शुक्र के नक्षत्र-प्रवेश के समय चंद्रमा उससे ४, ७, ८वीं राशि पर हो अथवा जलराशि का होकर शुक्र से त्रिकोण या सप्तम (५, ७ या ९वें) हो तो अच्छी वर्षा होती है।

१४. यदि शनि या मंगल से ५, ७ या ९वें स्थान में चंद्रमा जल-राशि अथवा शुक्रदृष्ट-राशि (यानी शुक्र से ४, ७, ८वीं राशि) पर आये तो अच्छी वर्षा करता है।

१५. शनि से त्रिकोण या केन्द्रानुवर्ती (१-४-५-७-९ या १०वें स्थान में) सौम्य ग्रह जल-राशि का अथवा शुक्र-दृष्ट हो तो अच्छी वर्षा करता है।

१६. सूर्य के आर्द्रा नक्षत्र में आने पर चन्द्रमा, मंगल और गुरु यदि सप्त-नाड़ी-चक्र की एक नाड़ी में पड़ जायें तो पृथ्वी जलप्लावित हो। वर्षा-काल में चंद्र, मंगल और गुरु के एक राशि में होने पर भी मेघ अच्छी वर्षा करते हैं। गुरु मंगल का राशि-नक्षत्र-योग (मतान्तर से प्रतियोग भी) चातुर्मास में वृष्टि को रोकता है; किन्तु वसन्तादि अन्य ऋतुओं में यही योग (प्रति योग) वृष्टि करता है। इसी प्रकार वर्षा ऋतु में बुध, बृहस्पति और शुक्र इन तीनों में-से किन्हीं दो की परस्पर युति हो और तीसरे की उनपर दृष्टि हो तो उत्तम वर्षा; दृष्टि के अभाव में केवल युति से सामान्य वृष्टि हो सकती है। उक्त योग करनेवाले ग्रहों की राशि में सूर्य न होना चाहिए। जिस समय सूर्य ग्रहों को लाँघकर आगे हो जाय और उसके आगे तीन राशि तक कोई ग्रह नहीं हो अथवा सूर्य को ही ग्रह लाँघकर आगे हो जाय तथा सूर्य से पीछे की तीन राशियों में कोई ग्रह न हो तो इन दोनों स्थितियों में वृष्टि होती है।

वर्षा-काल में आर्द्रा से स्वाती तक सूर्य के रहते, यदि चंद्रमा शुक्र से सप्तम स्थान में, अथवा शनि से ५-७-९वें गृह में हो और उसपर शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो उस समय अवश्य वर्षा होती है। वर्षा-काल में भी बुध और शुक्र के मध्य में सूर्य का होना, मगल का सूर्य से आगे होना और चंद्र शुक्र का पापाक्रान्त होना वृष्टि-अवरोधक योग हैं।

कुत्ता, गाय, मधुमक्खी, चींटी के शकुनों पर से सद्यः वृष्टि-विचार

१ वर्षा-काल में अर्थात् मृगशिरा नक्षत्र से स्वाती नक्षत्र तक के ११ नक्षत्रों में सूय रहे, तब यदि कुत्ता घास या भूसा के ढेर पर चढ़कर वहाँ से अथवा देवालय के ऊपर चढ़कर वहाँ से, अथवा मकान के मुख्य स्थान पर चढ़कर वहाँ से ऊपर मुँह करके रोवे तो जितने जोर से रोवे उतने जोर से वृष्टि होगी। अन्य नक्षत्रस्थित सूर्य में अन्यान्य अशभ फल, जैसे मृत्यु अधिक होना, आग लगना, रोगों का आक्रमण आदि होता है; किन्तु वर्षा-काल में अशुभ फल न होकर वृष्टि होती है।

२. उपरोक्त वर्षा-काल में ही वर्षा एक बार होकर यदि बन्द हो गयी हो, तब यदि कुत्ते पानी में गोल चक्कर लगावें, पानी को जोर से हिलावें या घूम-घूमकर पानी पीवें तो भी १२ दिन के भीतर वर्षा होती है।

३. चलती हुई गाय को निष्कारण कुत्ता रोक दे, किसी तरह आगे जाने ही न दे तो उसी दिन एक प्रहर के अन्दर भारी वृष्टि हो; इसी प्रकार मधुमक्खियाँ भी झुण्ड में चलती हुई यदि गाय को निष्कारण ही रोकने में सफल हुईं तो भी उस दिन एक प्रहर के भीतर, जैसा छोटा बड़ा उनका झुण्ड होगा, वैसी न्यूनाधिक वर्षा होगी।

४. वर्षा-काल में चींटियाँ यदि अण्डा लेकर ऊपर की तरफ जाती हों तो वर्षा होगी; परन्तु नीचे की तरफ या पानी में अण्डा ले जाती हों तो बरसता हुआ पानी रुक जायेगा।

पञ्च ताराग्रह-योगों से वृष्टि-विचार

१. वर्षा-काल में बुध तथा शुक्र ३० अश से कम अन्तर में आयेंगे तो वृष्टि का आरम्भ होगा; लेकिन उन दोनों के बीच में सूर्य आयेगा तो वर्षा बन्द हो जायेगी।

२. शनि से ५-७ या ९वें चन्द्रमा हो, उसको गुरु या शुक्र या दोनों देखें तो जब तक यह योग रहेगा, तब तक बराबर वृष्टि होती रहेगी। भौम, रवि यदि देखेंगे तो वर्षा रोक देंगे। एक शुभ और एक पाप मिश्रित दृष्टि का फल बलाबल देखकर जानना चाहिये। शुभग्रह के दृष्टचंश में रहेगा तब तक वर्षा होगी, पापग्रह के दृष्टचंश में रहेगा तब तक खुला रहेगा। भौम-दृष्टि में कड़ी धूप हो जायगी। बुध की दृष्टि चन्द्रमा पर होगी तब बादल, धूप, वृष्टि का निणय उसके साथ रहनेवाले ग्रहों के आधार पर होगा।

३. भौम जलानाड़ी के नक्षत्रों में रहता हुआ यदि उदय हो, अस्त हो, वक्री हो या मार्गी हो तो जब तक चंद्र-संक्रमण न होगा, तब तक वृष्टि होती रहेगी; ऐसे ही वक्री मार्गी या अस्त होने से या उदित होने से जलानाड़ी में रहनेवाले सब ग्रह वृष्टिकारक हैं; किन्तु शुभ ग्रहों का दृष्टि-सम्बन्ध औरों को अपेक्षित है, भौम को अपेक्षित नहीं।

इच्छित कार्य्य किस देवता की आराधना से सफल होगा ?

सभी जानते हैं कि शासन-व्यवस्था में अलग-अलग विभाग (डिपार्टमेंट) होते हैं जैसे पुलिस-विभाग, कोर्ट, चुंगी-विभाग आदि। अगर किसी को रिपोर्ट करना है और वह जज के यहाँ रिपोर्ट भूल से करे तो जज यही कहेगा कि पुलिस-थाने में रिपोर्ट करो। तात्पर्य्य यह है कि जैसे यहाँ पृथक्-पृथक् कार्य-विभाग हैं, उसी प्रकार देवताओं पर भी अलग-अलग विभाग का उत्तरदायित्व है। अपना जो अभीष्ट कार्य है, उसी के अधिकारी देवता की आराधना से कार्य्य सफल होगा। श्रीमद्भागवत द्वितीय स्कन्ध के तृतीय अध्याय में लिखा हैं कि जो प्राणी अपना सत्य बढ़ाना चाहे उसे ब्रह्माजी की पूजा करनी चाहिये। इन्द्रियों को पुष्ट रखने के लिये इन्द्र की, धन की इच्छावालों को लक्ष्मीजी की, तेज बढ़ाने के लिए अग्नि की; अन्न, हाथी, घोड़ा आदि सवारी के इच्छुक को आठों वसुओं की, कामदेव की वृद्धि हेतु रुद्र की, अधिक बल चाहनेवालों को इलादेवी की, सुन्दरता के लिए गन्धर्व की, सुन्दर स्त्री की कामना से उर्वशी अप्सरा की, यश कीर्ति के लिए नारायण की, विद्या-लाभार्थ शंकर की, विशेष विद्या के लिए सरस्वती की, परिवार-वृद्धि के लिए दिव्य पितरों की, परिवार की रक्षा हेतु पुण्यात्मा जीवों की, कलानुसार राज्य में पदोन्नति के लिए मनु की, शत्रु-नाश के लिए विकट राक्षस' की, वीर्य-वृद्धि के लिए चन्द्रमा की, दीर्घायु चाहे तो अश्विनी कुमारों की, स्त्री सुन्दर पति चाहे तो उसे पार्वती की, मुकद्दमा जीतने के लिए बगलामुखी की, कष्टनिवारण के हेतु कामात्मिका दुर्गादेवी की आराधना करनी चाहिये। सतीत्व-वृद्धि के लिए सती सावित्री, सती अनुसुइया की, मर्य्यादा-रक्षा के हेतु श्रीरामजी की, सुख आनन्द प्राप्ति के हेतु श्रीकृष्णजी की, फोड़ा-फुन्सी, रक्त-विकार से रक्षा के हेतु श्रीहनुमानजी की, लोटरी सट्टा में सफलतार्थ स्वप्नेश्वरी देवी की, रोग-निवारण के लिए श्रीगंग जी की आराधना करनी चाहिये। आराधना, मंत्र-विधि आदि अपने निकटस्थ अनुभवी विद्वान् से जान लेना चाहिये। पूजन स्वयं करना उत्तम होता है। यदि अन्य के द्वारा पूजन करायें तो यजमान यह देख ले कि मेरा गण क्या है तथा जप पूजन करनेवाले का गण क्या है ? यदि परस्पर देवता व राक्षस गण हैं तो लाभ होना असम्भव है।

—स्व० श्रीमती महारानी देवी

वर्षा-विज्ञान

भारतीय ज्योतिष शास्त्र की ऋतु-विज्ञान शाखा में भावी वृष्टि, अल्पवृष्टि, अतिवृष्टि, आँधी, तूफान, दुर्दिन आदि के परिज्ञान के लिए अनेकानेक विधियाँ वर्णित हैं। उनमें-से कुछ को हमारे पञ्चाङ्गकार तथा ज्योतिषीगण बड़े भरोसे के साथ उपयोग करते आ रहे हैं। उनकी संक्षिप्त प्रारम्भिक जानकारी हम पाठकों को यहाँ कराते हैं।

*** सप्तनाड़ी चक्र ***

नक्षत्र				नाड़ी	स्वामी
कृ.	वि.	अनु.	भ.	चण्डा	शनि नपु.
रो.	स्वा.	ज्ये.	अश्वि	वायु	सूर्य पुरुष
म.	चि.	मू.	रे.	दहना	भौम पुरुष
आर्द्रा	ह.	पू.षा.	उ.भा.	सौम्या	गुरु पुरुष
पुन.	उ. फा	उ षा.	पू.भा	नीरा	शुक्र स्त्री
पुष्य	पू. फा	अभि.	श.	जला	बुध नपुं.
आश्ले	मघा.	श्र.	ध.	अमृता	चंद्र स्त्री

सप्तनाड़ी चक्र—आकाशीय नक्षत्र-मण्डल के २८ नक्षत्र (अभिजित सहित) को प्राचीन आचार्यों ने ७ नाड़ियों में विभाजित किया है उन नाड़ियों के नाम, उनके स्वामी, ग्रह, दिशा, हर नाड़ी के अन्तर्गत नक्षत्रों के नाम आदि का विवरण बगल के चक्र से ज्ञात कीजिए।

दो या अधिक ग्रह जब किसी नाड़ी में एकत्र होते हैं तो उनसे उक्त नाड़ी का वेध होता है। एक नाड़ी के नक्षत्रों में-से चाहें जिनपर ग्रह आवें, उनका योग माना जाता है, अस्तु। यदि दो या अधिक पापग्रह अथवा दो या अधिक शुभग्रह चण्डा नाड़ीमें आवें तो बहुत वायु(आँधी), वायु-नाड़ी में विशेष वायु-वेग और अग्नि-नाड़ी में महादाह पृथ्वी पर चारों ओर करते हैं। इसके अतिरिक्त नाम के अनुरूप यानी सौम्या में शुभ, नीरा में जल, जला में जल इत्यादि फल ग्रह-योग प्रदान करते हैं। सौम्या नाड़ी में यदि दो आदि ग्रह हों तो मध्यम फल देते हैं। नीरा नाड़ी में हों तो मेघवाहक (मेघाडम्बर करनेवाले) होते हैं। चन्द्रमा यदि जला नाड़ी में हो तो वृष्टिकारक होता है। चन्द्रमा की नाड़ी (अमृता) में एक भी कोई ग्रह हो तो वर्षा-काल में वृष्टिकारक ही होता है। ग्रह अपनी-अपनी नाड़ी में आने से अपना-अपना फल देता है, अन्य नाड़ियों में नाड़ी के समान फल देता है, किन्तु मंगल प्रत्येक नाड़ी में उस नाड़ी के समान ही फल देता है।

विशेष यह जानना चाहिए कि कोई भी एक ग्रह सिर्फ अपनी नाड़ी में फलकारक होता है। जब दो से अधिक ग्रह किसी नाड़ी में हों तभी उसका फल देते हैं;परन्तु मंगल अकेला भी हर-एक नाड़ी में उस नाड़ी के अनुरूप फल देता है।

चन्द्रमा जिस नाड़ी में हो, उसी में यदि और ग्रह मिश्र ग्रहों (शुभ और पापों) से भिन्न (वेधित) हों तो उस दिन उत्तम वृष्टि कहनी चाहिए। एक-एक नाड़ी में चार-चार नक्षत्र होते हैं, इसलिए नाड़ी के किसी एक या अलग-अलग नक्षत्रों में भी ग्रहों के रहने से 'वेध' माना गया है।

किसी नाड़ी के चारो नक्षत्रों में-से किसी एक नक्षत्र पर चन्द्रमा उपस्थित हो तथा उसी नक्षत्र पर क्रूर और सौम्य ग्रह हों तो उसी दिन वर्षा होती है। एक नक्षत्र पर क्रूर और सौम्य ग्रह स्थित हों तो जितने समय तक उन ग्रहों के साथ चन्द्रमा का अंशात्मक योग रहेगा यानी चन्द्रमा तथा ग्रहों के अंश तुल्य रहेंगे, तब तक महावृष्टि होगी। जिस नाड़ी में केवल सौम्य या केवल पाप ग्रह हों, उस नाड़ी में चन्द्रमा के संचार से अत्यल्प वर्षा होती हैं या दुर्दिन होता एवं आकाश बादलों से आच्छादित रहता है। जिस नाड़ी में उसका स्वामी ग्रह स्थित हो, वह नाड़ी अक्षीण चंद्र से युक्त या दृष्ट होने पर वर्षा होती है। यदि अमृता नाड़ी में सौम्य और क्रूर ग्रहों के साथ चन्द्रमा का योग हो तो एक, तीन या सात दिन में, दो, चार या पाँच बार जल गिरता है। इसी प्रकार जलानाड़ी में सौम्य और क्रूर ग्रहों के साथ चन्द्रमा हो तो दो प्रहर या एक दिन या पांच दिन तक वर्षा होती है। नीरा नाड़ी में क्रूर और सौम्य ग्रहों के साथ चन्द्रयोग हो तब एक प्रहर या डेढ़ दिन अथवा तीन दिन तक वर्षा होती है। एक नक्षत्र में चन्द्रमा और ग्रहों का योग होने पर जिस दिन ग्रहों के अंश-तुल्य चन्द्रमा जब तक रहता है, उस दिन तब तक बहुत वर्षा होती है। विशेष—चंद्रमा तथा ग्रहों की अंशात्मक युति किसी एक काल में होगी। अतः 'वनमाला' के श्लोक में आये 'तद्भागगः' पदसे उस नक्षत्र के चरण (नवांश) में ग्रहों के साथ जब तक चंद्रमा का योग रहे, ऐसा अर्थ ग्रहण करना उपयुक्त है। दो पुरुष-ग्रहों के परस्पर वेध होने से चारों ओर केवल हवा चलती है। स्त्री-ग्रह और पुरुष ग्रह के परस्पर वेध होने से वर्षा होती है। दो नपुंसक ग्रहों के वेध में दुर्दिन (आकाश धूलधूसरित अथवा धूम्र सदृश बादलों से आच्छादित) रहता है। नक्षत्रों का स्त्री पुरुष नपुसकत्व आदि विवरण इसी पुस्तक में अन्यत्र दिया गया है। स्थानाभाव से सप्तनाड़ी चक्र का विस्तृत फल यहाँ नहीं दे सकते हैं; उसके लिए 'वनमाला' नामक तथा 'वर्षा-विज्ञान' नामक पुस्तकें पाठकों को पढ़नी चाहिए। स्थानीय रूप से निश्चित वर्षा ज्ञान के लिए पण्डितों को कठोर प्रयास करना पड़ता है; क्योंकि वर्षा एक ही समय किसी स्थान में कम, कहीं पर अधिक, कहीं बिल्कुल नहीं होती है। इसलिए ग्रंथोक्त व्यापक वर्षा-योगों से स्थान-विशेष में वर्षा का समय बताने में ज्योतिषियों को अपनी बुद्धि और अनुभव से काम लेना होता है। जैसे—शतपद-चक्र से इष्ट ग्राम का नक्षत्र जानकर सप्तनाडी चक्र में देखे कि वह ग्राम किस नाड़ी का है; फिर उपर्युक्त प्रकारेण शुभाशुभ ग्रहों से उस नाड़ी-वेध का विचार करें तो अभीष्ट ग्राम के लिए वर्षा का भविष्य अधिक यथार्थ रूप में जान सकते हैं।

घाघ-भड्डरी का वर्षा-वायु-विज्ञान

[घाघ-भड्डरी की लोकोक्तियों का शुद्ध और प्रामाणिक पाठ आज तक कहीं से नहीं छपा। वह एक-मात्र इसी पुस्तक द्वारा पाठकों को प्राप्त हो रहा है।]

चैत मास जौ बीजु बिजौवै। भरि बैसाखहिं टेसू धोवै ॥
एक बूँद जौ चैत मँह परै। सहस बूँद सावन महँ हरै ॥
चैत के पछिवाँ भादौं जला। भादौं पछिवाँ माघके पाला॥
जै दिन जेठ बहै पुरवाई। तै दिन सावन धूरि उड़ाई ॥
जेठ मास जौ तपै निरासा। तौ जानौ बरखा कै आसा ॥

उतरत जेठ जो बोलैं दादर। कहै भड्डरी बरसैं बादर ॥
दिन मँह गरमी रात मंह ओस। कहैं घाघ बरखा सौ कोस॥
माघै गरमी जेठै जाड़। कहै घाघ हम होब उजाड़[1]॥
माघ कै ऊमस जेठ कै जाड। पहिलै बरखा भरिगा ताल॥
कहै घाघ हम होब बियोगी। कुआँ खोदिकै धोइहैं धोबी ॥

बोलै मोर महानुरी खारी होय जु छाछ।
मेह मही पै परन को जानौ काछे काछ ॥

पहिलै पानी नदी उफनाय। तौ जानौ कि बरखा नाय ॥

कलसहिं पानी गरम ह्वै, चिड़ियाँ न्हावैं धूर।
अंडा लै चींटी चढ़ैं, तौ बरखा भरपूर ॥

पहिला पवन पुरब ते आवै। बरसै मेघ अन्न भरि लावै ॥
अम्बा झोर चलै पुरवाई। तब जानौ बरखा रितु आई ॥
वायु मँह जब वायु समाय। घाघ कहैं जल कहाँ समाय ॥
खन पुरवैया खन पछियाँव, खन-खन बहै बबूरा बाय ॥
जौ बादर बादर मँह खमसै, कहैं, भड्डरी पानी बरसै ॥

जो बादर बादर मँह जाय। घाघ कहै जल कहाँ समाय ॥
बादर उपरि बादर धावै। कह भड्डरि जल आतुर आवै ॥
ओआ बोआ बहै बतास। तब होवै बरखा कै आस ॥
बयार चलै ईसाना। ऊँची खेती करौ किसाना ॥
बाय चलैगी उत्तरा। माँड़ पियैंगे कुत्तरा।

बाय चलैगी पुरवा। पियो माड़ कै कुरवा ॥
पुरवा मँह पछिवाँ बहै। हँसि कै नारि पुरुष सह कहै ॥
ऊ बरसै ई करै भतार। घाघ कहै यहि सगुन विचार ॥

पुरवा बादर पश्चिम जाय। वासे वृष्टि अधिक बरसाय ॥
जो पच्छिम ते पूरब जाय। बरखा बहुत न्यून होइ जाय ॥

पूरब कै घन पच्छिम चलै। रौंड़ बतकही हँसिहँसि करै ॥
ऊ बरसै ई करै भतार। भड्डरि के मन यही विचार ॥

मोर पंख बादर उठै, रंडा काजर रेख।
ऊ बरसै ई घर करै यामे मीन न मेष ॥

तीतर बरनी बादरी, काजर रंडा रेख।
ऊ बरसै ई घर करै, कहै भड्डरी देख ॥

तीतर बरनी बादरी रहै गगन पर छाय।
कहैं डंक सुनु भड्डरी बिनु बरसै नहिं जाय ॥

उलटा बादर जो चढ़ै, विधवा खड़ी नहाय।
घाघ कहै सुनु भड्डरी, ऊ बरसै ई जाय ॥
सावन के पछिवाँ दिन दुइ चार।
चूल्ही कै पाछा उपजै सार ॥
सावन पुरवाई चलै भादों मँह पछियाँव।
कन्त डगरवा बेचि कै लरिका जाय जियाव ॥

सावन मास बहै पुरवाई। बरधा बेचि बिसाहो गाई ॥
सावन उखमै भादों जाड़। बरखा मारै ठाढ़ कछाड़ ॥

सावन पछिवाँ भादौं पुरवा, आसिन बहै इसान।
कातिक कन्ता सींकि न डोलै, कतेक धरबै धान ॥

जै दिन भादौं बहे पछार। तै दिन पूसहिं पड़ै तुसार ॥
भादों जै दिन पछिवाँ ब्यारी। तै दिन माघ पड़ै तुसारी ॥
करिया बादर जिउ डरवावै। भूरा बादर पानी लावै ॥
दूर गुड़ाँसा[2] दूर पानी। नियरे गुड़ाँसा नियरे पानी ॥

उत्तर चमकै बीजुरी, पूरब बहनो बाउ।
घाघ कहैं भड्डरी सँह, बरधा भीतर लाउ ॥

चमकै पच्छिम उत्तर ओर। तब जानौ पानी है जोर ॥
उलटे गिरगिट ऊँचे चढ़ै। बरखा होइ भुँइ जल बुड़ै ॥
ढेले ऊपर चील जो बोलै। गली-गली मँह पानी डोलै ॥
पूरब धनुही पच्छिम भान। घाघ कहै बरखा नियरान ॥

धनुष पड़ै बंगाली[3]। मेंह साँझ या सकाली ॥

साँझैं धनुष बिहानै पानी। कहै घाघ सुनु पंडित ग्यानी ॥
साँझै धनुष सकारे मोर। वे दोनों पानी कै बोर ॥
सबै दिन बरसै दखिना बाय। कबौं न बरसै बरखा पाय ॥
बाय चलैगी दक्खिना। माँड़ कहाँ ते चक्खना ॥
दक्खिनी कुलक्खनी। माघ पूस सुलक्खनी ॥
पूरबकै बादर पच्छिम जाय। पतरी पकावै मोटी पकाव[4]॥
पछिवाँ बादर पूरब कहँ जाय। मोटी पकावै पतरी पकाव[5]॥

दिन कै बादर। सूम कै आदर ॥
पछियाँव कै बादर। लबार कै आदर ॥

उगै अगस्त[6] फूले बनकास। अब छोड़ो बरखा कै आस ॥
बोली गोह फूलो बनकास। अब नाहीं बरखा कै आस ॥
बोलै ढोल[7] जाय अकास। अब नाहीं बरखा कै आस ॥
लाल पियर जब जब होय अकास। तब नाहींबरखाकैआस॥
रात दिना घमछाहीं। घाघ कहै अब बरखा नाहीं ॥

जब बहै हड़हवा[8] कोन। तब बनजारा लादै नोन ॥
दिन कहँ बादर रात मँह तारे। चलो कंत जहँजीबैं बारे॥
दिन कहँ बद्दर रातनिबद्दर। वह पुरवैया झब्बर-झब्बर[9]॥
घाघ कहै कछु होनी होई। कुआँ कै पानी धोबी धोई ॥

---

१. इस ऋतु वैपरीत्य के कारण चौमास में वर्षा-नाश होकर निश्चय अकाल पड़ता है। २. चन्द्रमा का कुंडल। ३. पूर्व दिशा मे। ४. सुवृष्टि से पैदावार अधिक होगी। ५. वर्षा-व्यतिक्रम से उपज कम होगी। ६. 'उदित अगस्त पंथ जल सोखा—गो० तुलसीदासजी। ७. ढेकी पक्षी। ८. नैऋत्य। ९. रुक-रुककर।

रात निबद्दर दिन कहूँ छया। घाघ कहै अब बरखा गया।
रात निर्मली दिन कै छाही। कहै भड्डरी पानी नाहीं॥

भोर समै डरडम्बरा[१०], राति ऊँजेरी होय।
दुपहरिया सूरज तपै, दुरभिछ तेऊ जोय॥
रात्यो बोलै कागला, दिन मँह बोलै स्याल।
तौ यों भाखैं भड्डरी, निहचै परै अकाल॥
सूर उगे पच्छिम दिसा, धनुष उगन्तो जान।
दिवस ते चौथे पाँचवें, रुड-मुंड महि मान॥

रात करै घापधूप दिन करै छया।
घाघ कहैं अब बरखा गया॥

धन वा राजा धन वा देस। जहँवा बरसै अगहन सेस॥
अगहन मँह सरवा[११] भर। फेरि करवा[१२] भर॥
अगहन बरसै हून, पूस दून। माघ सवाई,फागुन मूर गँवाई॥
पानी बरसै आधे पूस। आधा गेहूँ आधा भूस॥
पूस मँह दूना माघ सवाई। फागुन बरसै घरौ ते जाई॥
माघ पूस जब दखिना चलै। तब्र सावन कै लच्छन भलै॥
माघ मास जो परै न सीत। मँहगा नाज जानियो मीत॥
माघै पूस बहै पुरवाई। तब सरसों कै माहू खाई॥
माघ मँह बादर लाल धरै। तब सच जानौ पथरा परै॥
फागुन मास बहै पुरवाई। तब सरसों कै माहू[१३] खाई॥

सनि आदित अरु मंगलै पूस अमावस जोय।
दुगुनो तिगुनो चौगुनो अन्नजु मँहगो होय॥

काहे पंडित पढ़ि-पढ़ि मरो। पूस अमावस की सुधि करो॥
जेठा, बिसाखा, पुरबासाढ़। झूरा जानौ बहिरै ठाड़॥

पूस अमावस मूल को, सरसै चारों बाय।
निहचै बाँधो झोपड़ो, बरखा होय सवाय॥
पूस उँजेली सत्तमी, आठैं नवमी गाज।
मेघ होय तौ जानि ले, अब सरिहैं सब काज॥
माघ उँजेरी पचमी, बहसी उत्तर बाय।
तौ जानो कि भावदो, बिन जल कोरो जाय॥

माघै गरमी जेठै जाड़। कहैं घाघ हम होब उजाड़॥
होली झर को करो विचार। सुभ अरु असुभ कहा फल-सार॥
पच्छिम बाय बहै अति सुन्दर। समयो निपजै सकल बसुन्धर॥
पूरब दिसि को बहै जु बाय। कछु भीजै कछु कोरी जाय॥
दक्खिन बाय बहै धन नास। समयो उपजै सनई घास॥
उत्तर बाय बहै दड़बड़िया। पिरथी अचूक पानी पड़िया॥
जोर झकोरै चारो बाय। दुखिया परजा जूझै राय॥
सीध झलो अकासै जाय। तो पिरथी संग्राम करय॥

चैत मास दस रीछड़ा,[१४] बादर बिजुरी होय।
तौ जानो चितमाँहि यह, गर्भ गला सब जोय॥
चैत मास दस रीछड़ा, जौ कहुँ कोरो जाय।
चौमासे भर बादरा भली भाँति बरसाय॥
बैसाख सुदी प्रथमै दिना, बादर बिज्जु करेइ।
दाना बिना बिसाहिजै, पूरी साख भरेइ॥

कृतिका तो कोरी गई, आद्रा मेंह न बुंद।
तौ जानो यों भड्डरी काल मचावै दुंद॥
रोरिणि माँही रोहिणी एक घडी जो दीखै[१५]।
हाथ में खपरा मेदिनी घर-घर माँगै भीख॥

जेठ आगली परिवा देखू, कौन बासरा है यों पेखू।
रविवासर अति बाजै बाय, मंगलवारा व्याधि बताय॥
बुधा नाज मँहगा जो करई, सनिबासर परजा परिहरई।
चंद्र सुक्र सुरगुरु कै बार, होवै अन्न भरै संसार।

जेठ उँजारे पच्छ मँह आद्रादिक दस रिच्छ[१६]।
सजल होंय निर्जल कहौ, निर्जल सजल प्रत्यच्छ॥

मृगसिर[१७] बाय न बाजिया रोहिणि तपै न जेठ।
गोरी बीनै कांकरा खडी खेजड़ा हेठ॥
सनि आदित अरु मंगलै जो पौढ़ै सुरराय।
अन्य होय मँहगो सही चलै जोर की बाय॥

असाढ़ी पूनो दिना बादर भीनो चन्द।
तो भडुरि जोसी कहै, सगला नरा अनन्द॥
आसाढ़ी पूनो दिना निर्मल ऊगै चंद।
पीव जाव तुम मालवा अठै छे दुःख द्वंद्व॥

सावन बदि एकादसी जेती रोहिणि होय॥
तेतो समयो नीपजै चिंता करो न कोय॥
तीतर बरनी बादरी काजर रंडा रेख।
ऊ बरसै ई घर करै कहैं भड्डरी देख॥

सुक्करवारी बादरी रहै सनीचर छाय॥
तौ भाखो यों भड्डरी बिन बरसै नहि जाय॥
भादों की सुदि पंचमी स्वाति सँजोगी होय।
दोनों सुभ जोगै मिलै मंगल बरती लोय॥

आसोजा बदि मावसा जो आवै रविवार।
समयो होवै किरबिरो जोसी कहै विचार॥
मंगलवारी होय दिवारी हँसै किसान रोवै बैपारी।

मार्ग महीना माहि जो जेठा तपै न मूर।
तौ भाखो यो भड्डरी निपजै सातो तूर॥

१०. मेघाडम्बर। ११. कटोरा। १२. घड़ा। १३. एक कीड़ा १४. दशतारका यानी चैत्र मास के दैनिक आर्द्रा नक्षत्र से लेकर स्वाती नक्षत्र तक के १० नक्षत्र। १५. सूर्य के रोहिणी नक्षत्र पर रहते चन्द्रमा एक घडी के लिए भी रोहिणी में आ जाय। १६. आर्द्रा नक्षत्र से लेकर स्वाती तक के १० नक्षत्रों में-से जिस नक्षत्र में वृष्टि-अवृष्टि होगी, उसका उल्टा फल सूर्य के आर्द्रा नक्षत्र से लेकर स्वाती तक के १० नक्षत्रों में से (ता. २२ जून से ६ नवम्कर तक) उसी नक्षत्र में होगा। जैसे, मान लें, २ जून को ६ बजे शाम से ३ जून की शाम ४॥ बजे तक चन्द्र के आर्द्रा नक्षत्र में वृष्टि हुई तो सूर्य के आर्द्रा-नक्षत्र (ता. २२ जून से ६ जुलाई तक) में सूखा पड़ेगा और उपर्युक्त चन्द्र के आर्द्रा नक्षत्र-काल में बादल-वृष्टि न हुई तो सूर्य के आर्द्रा-नक्षत्र के दिनों में वर्षा अवश्य होगी, ऐसा ही बाकी ९ नक्षत्रों के विषय में भी समझें। १७. ता. ८ जून से २१ जून तक।

२. वृष्टि-विज्ञान सारणी

दिसम्बर	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
जून	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०														
जुलाई																		१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
जनवरी	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
जुलाई	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१														
अगस्त																		१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
फरवरी	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८			
अगस्त	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१														
सितम्बर																		१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११			
मार्च	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
सितम्बर	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०												
अक्टूबर																				१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
अप्रैल	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
अक्टूबर	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१												
नवम्बर																				१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	

वृष्टि-विज्ञान-सारणी-से वर्षा जानने की रीति—दिसम्बर, जनवरी फरवरी, मार्च, अप्रैल इन महीनों की तारीखो में जिस-जिस तारीख में जहां वर्षा होती है उसके हिसाब से ही वर्षा ऋतु के जुलाई, अगस्त सितम्बर, अक्टूबर तथा आधे नवम्बर तक के मासों में वहां वर्षा प्राय: हुआ करती है। प्राचीन ज्योतिष के वृष्टि-विज्ञान के सिद्धांत से आधुनिक समय के अनुसार भारत में १२ दिसम्बर के बाद ही शीतकाल में वर्षा साधारण रूप से होने का नियम है। जैसे, मानलो कि शीतकाल में लाहौर में १८ दिसम्बर को वर्षा हुई है तो वर्षा ऋतु में वहां १ जुलाई को वर्षा होगी। इसी प्रकार मान लिया कि शीतकाल में १५ जनवरी को देहली में वर्षा हुई है तो ऊपर की वृष्टि-विज्ञान-सारणी यह बता देगी कि वर्षा ऋतु में वहां २९ जुलाई को वर्षा होगी। इसी प्रकार २२ फरवरी जो शीतकाल में कहीं वर्षा हुई तो वहां ५ सितम्बर को वर्षा होगी। वर्षा ज्ञान के लिए शीतकाल में, होनेवाली वर्षा को तारीखवार टाइम सहित नोट करके देखने से वर्षा ऋतु की वर्षा ज्ञान ठीक हो सकता है।

उत्तर भारत के प्रमुख शहरो में प्रतिवर्ष जून-जुलाई मास की जिन तारीखों के आस,पास पावस की प्रथम वर्षा का समयोचित प्रारम्भ होता है. वे ता० मास हर शहर के नाम के साथ बगल वाले मानचित्र में अंकित है। प्रत्येक शहर की तथोक्त ता० के दो-एक दिन आगे-पीछे वर्षा का क्रम शुरु हो जाने से वहाँ दोनों फसलें अच्छी होने की सम्भावना सुदृढ़ हो जाती है। किसी नगर की तथोक्त तारीख से जितनी ही अधिक आगे या पीछे वर्षा प्रारम्भ होगी, वहाँ आगामी पैदावार का उतना ही ह्रास समझना चाहिए।

उ.षा., श्र., ध., | श., पू.भा., उ.भा., | रे., अ., भ.,

ज्ये., मू., पू.षा., | कृ., रो., मृ., | आ., पुन., पुष्य.,

स्वा., वि., अनु., | उ.फा., ह., चि., | आश्., म., पू.फा.,

पाकिस्तान, जम्मू और काश्मीर, हिमाचल प्रदेश, तिब्बत, नेपाल, पंजाब, राजस्थान, आसाम, बिहार, मध्य प्रदेश, उड़ीसा, आंध्र प्रदेश, मैसूर, मद्रास, अरब सागर, बंगाल की खाड़ी, लंका, बर्मा

भारतीय उप महाद्वीप के भू-भाग किन नक्षत्रों के प्रभावान्तर्गत हैं यह इस मान-चित्र में भारतीय ज्योतिषोक्त कूर्मचक्रानुसार दिखलाया गया है। जो नक्षत्र सर्वतोभद्र-चक्रादि के अनुसार क्रूर ग्रहों से विद्ध, क्रूरयुत-दृष्टादि होते हैं, उन नक्षत्रों के प्रभावान्तर्गत भू-भागो में अशुभ ग्रह के स्वभावानुकूल नाना प्रकार के अनिष्ट फल उद्‌भूत होते हैं। इसी प्रकार जो नक्षत्र अशुभ ग्रहों से अदृष्ट, अयुत एवं वेधरहित होकर शुभ ग्रहो से वेधादि योग करते हैं, उन नक्षत्रों के प्रभावान्तर्गत भू-भागों में शुभग्रहानुकूल सुवृष्टि, सुभिक्ष, क्षेम, आरोग्यादि, नाना प्रकार के आर्थिक, राजनीतिक शुभ फल प्राप्त होते हैं। सर्वतोभद्रादि चक्रों में ग्रहों के नक्षत्र योग-वेधादि का उल्लेख मत्संपादित चिन्ताहरण पञ्चांग में किया जाता है जो अन्य किसी पचाङ्ग में अलभ्य है। अतः इस विषय से हमारे पाठकगण जरूर लाभ उठावें।

*** प्रत्येक राशिवालों के लिये अशुभ चंद्र की राशियाँ ***

राशि-नामाक्षर	राशि	चतुर्थ	अष्टम	द्वादश	घात-चंद्र पुरुष	घात-चंद्र स्त्री
अ च ल	मेष	कर्क	बृश्चिक	मीन	मेष	मेष
इ उ ए ओ व	वृष	सिंह	धनु	मेष	कन्या	धनु
क घ ङ छ	मिथुन	कन्या	मकर	वृष	कुम्भ	धनु
ड ह	कर्क	तुला	कुम्भ	मिथुन	सिंह	मीन
ट म	सिह	बृश्चिक	मीन	कर्क	मकर	वृश्चिक
ठ ण प ष	कन्या	धनु	मेष	सिंह	मिथुन	वृश्चिक
त र	तुला	मकर	वृष	कन्या	धनु	मीन
न य	बृश्चिक	कुम्भ	मिथुन	तुला	वृष	धनु
ढ ध फ भ	धनु	मीन	कर्क	बृश्चिक	मीन	कन्या
ख ज	मकर	मेष	सिंह	धनु	सिंह	वृश्चिक
ग स	कुम्भ	वृष	कन्या	मकर	धनु	मिथुन
च झ ञ थ द	मीन	मिथुन	तुला	कुम्भ	कुम्भ	कुम्भ

नाम के प्रथम अक्षर से किसी की राशि जानने तथा उस राशि के लिए अशुभ चन्द्र की राशियाँ भी जान लेने के लिए यह चक्र दिया जा रहा है। जैसे, किसी का नाम हनुमान दास हैं; अतः उसके नाम का प्रथमाक्षर 'ह' चक्र में देखा तो उसके बगल के पहले खाने में लिखी 'कर्क' राशि उसकी ज्ञात हुई तथा इसी की सीध में अन्य खानों में लिखीं तुला कुम्भ और मिथुन उसकी राशि (कर्क) से क्रमशः चतुर्थ, अष्टम और द्वादश होने के कारण अशुभ चन्द्र की राशियाँ हुईं तथा वह कर्क राशि का व्यक्ति यदि पुरुष है तो उसके घात चन्द्र की राशि सिंह यदि स्त्री है तो घात-चन्द्र की राशि मीन हुई। अतः जब-जब चन्द्रमा गोचर से उन ४, ८, १२वीं व घात-राशियों में आया करेगा तो उस कर्क राशिवाले व्यक्ति के लिए अशुभ फलकारी होगा जिसका मासिक राशि-फल के साथ विशेष रूप से विचार कर लेना पाठकों के लिए अति हितकारी रहेगा।

ग्रह किस पाद में आया है, यह जानने की रीति—ग्रह जिस समय राशि बदले उस समय चन्द्रमा जिस राशि पर हो, वह राशि जन्म-राशि से १,६,११वें हो तो वह ग्रह स्वर्णपाद में, फल—चिन्ता, एवं चन्द्र २, ५, ९वें हो तो रौप्यपाद में, फल—धन-प्राप्ति; ३,७,१०वें हो तो ताम्रपाद में, फल—लक्ष्मी-प्राप्ति, ४,८,१२वें हो तो लोहपाद में फल—दुःख होता है।

शनि, राहु, केतु का लोहपाद, गुरु का स्वर्णपाद और मंगल का ताम्रपाद शुभद होता है।

त्रिनाडीचक्र

कृत्तिका	भरणी	अश्विनी
रो.	मृग.	आर्द्रा
आश्ले.	पुष्य	पुन.
मघा	पू. फा.	उ. फा.
स्वाती	चित्रा	हस्त
वि.	अनु.	ज्येष्ठा
उ. षा.	पू. षा.	मूल
श्रवण	धनि.	शत.
रेवती	उ. भा.	पू. भा.
पा.अन्त्य	मध्म-भूमि	स्वर्ग-आदि

वर्षा ज्ञानाय सर्पाकार त्रिनाडी चक्र—सर्पचक्रं तदा लेख्यमश्विन्यादि त्रिनाडिकम् नवनन्दनयक्षाणि स्वर्गपातालभूमिषु ॥ फलम्—एकनाडी स्थिताः सर्वे क्रूराः सौम्याश्च खेचराः। सद्यो वृष्टि विजानीयात् प्रभूतं जलमादिशेत्। संयोगतः पद्मजनेनजीवयोः सवीर्ययोर्वृष्टिरुदाहृत ततः भयं तु तज्ज नरयोगतो भवेद्योगेऽङ्गनषङ्गण्ढ नभः सदोहिमम्। सौम्या असौम्याः पर्पदिद्यु वासा वृष्टि तदानीं महतीं विदध्युः। असद्विहङ्गा यदि नाक-नाड़ीसंस्थाः शुभाभूतलनाडिकास्थाः ॥ चेदेकनाड्याम शुभाः शुभाश्च ग्रहास्तदा वृष्टि-करा भवन्ति। स्वर्गाख्यनाड्यां यदि पापखेटाः पातालनाड्यां च शुभा न वृष्टिः ॥ पातालस्था यदा क्रूरा स्वर्गस्थाश्चशुभग्रहाः। न मुञ्चन्ति जल मेघाः वर्षाकाले तदाभूवि॥

अर्थ—सर्पाकार (तीन फेरेवाली) त्रिनाड़ी-चक्र लिखें; उसमें प्रथम ऊपरवाली स्वर्ग द्वितीय बीचवाली भूमि और तृतीय नीचेवाली पाताल नाम की नाड़ी होती है। प्रत्येक नाड़ी में अश्विन्यादि नौ-नौ नक्षत्र क्रम से स्वर्ग, भूमि, पाताल पुनः पाताल, भूमि स्वर्ग इस तरह कुल २७ नक्षत्रों को स्थापित करें। सब (शुभ और पाप) ग्रह किसी भी एक नाड़ी में एकत्र हों तो अधिक मात्रा में शीघ्र वर्षा होती है तथा लगातार वृष्टि होती रहती है। यदि बलवान् सूर्य और बृहस्पति का एक नाड़ी में योग हो तब भी सुवृष्टि होती हैं और पुरुष ग्रहों के योग से जलाधिक्य का भय कहना चाहिये एवं यदि स्त्री नपुंसक ग्रहों का योग हो तो हिमपात (उपलवृष्टि) होने की सम्भावना माननी चाहिए। नाक (स्वर्ग) नाड़ी में पाप और शुभ दोनों ग्रह हों तब शीघ्र भारी वर्षा होती है। केवल पाप ग्रह स्वर्ग नाड़ी में हों और शुभ ग्रह भूमि नाड़ी में हों अथवा एक ही नाड़ी में शुभ और पाप दोनों आ जाँय तो व वर्षाकारक होते हैं। स्वर्ग नाड़ी में पाप ग्रह और पाताल नाड़ी में शुभ ग्रह हों तो वृष्टि का अभाव होता है और यदि पाताल में पापग्रह और स्वर्ग में शुभ ग्रह हों तब भी वर्षा-काल में मेघ पृथ्वी पर जल-वर्षण नहीं करते।

*** त्रिपुष्कार-द्विपुष्कर योग-ज्ञानार्थ चक्र ***

(क्रूर) वार	रविवार, मंगलवार, शनिवार
(भद्रा)तिथि	२-७-१२
विषम चरणवाले नक्षत्र	कृत्तिका, पुन. उ.फा. विशा., उ.षा. पू.भा;
द्विपाद नक्षत्र	मृग चित्रा, धनिष्ठा से द्विपुष्कार योग

त्रिपुष्कर, द्विपुष्कर योग—इस चक्र के वार, तिथि और विषम चरणवाले नक्षत्र के योग से 'त्रिपुष्कर' नामक योग होता है। यह त्रिपुष्कर योग मृत्यु, विनाश और वृद्धि में त्रिगुण फल देता है यानी इस योग में एक के मरने से उसके यहाँ तीन प्राणी की मृत्यु होवे; इस योग में कोई वस्तु नष्ट हो तो तीन वस्तुएं नष्ट हो जावें और किसी वस्तु का लाभ हो तो ३ वस्तुओं का लाभ होवे।

उन्हीं वार और तिथियों में द्विपाद नक्षत्र का योग होने से द्विपुष्कर योग होता है जो मृत्यु, विनाश और वृद्धि में दूना फल देता है।

विशेष—ये त्रिपुष्कर और द्विपुष्कर योग चक्रमें लिखे तिथि, नक्षत्र और वार तीनों के योग से होते हैं, केवल नक्षत्र से नहीं। इनमें अशुभ फल (मरने और नष्ट होने) की शांति के लिए त्रिपुष्कर में तीन और द्विपुष्कर में दो गौवें अथवा उनका मूल्य दान करना आवश्यक है, जैसा नारदजी का वचन है—"दद्यात्तद्दोषनाशाय गोत्रयं मूल्य मेव वा। द्विपुष्करे द्व दद्यान्न दोषस्त्वृक्षमात्रतः॥ प्रत्येक मास में जिस दिन जितने समय तक का त्रिपुष्कार द्विपुष्कर योग पड़ जाता है, उसका उल्लेख पाठकों के हितार्थ चिन्ताहरण जंत्री के पञ्चाङ्ग-प्रकरण में व्रत, पर्वादि के साथ कर दिया जाता है; वहाँ देखें।

*** नक्षत्र-मण्डल-चक्र ***

अग्नि मडल अशुभ	वरुण मण्डल शुभ	वायु मण्डल. अशुभ	माहेन्द्र (भूमि) मण्डल शुभ
कृ.	मूल	पुन.	अभि.
भ.	आश्ले.	उ.फा	उ षा.
पुष्य	शतता.	अश्वि.	अनु.
मघा	आर्द्रा	हस्त.	श्रवण
पू.भा.	रवता	चित्रा	धनि
विशा.	उ.भा	स्वाती	ज्ये
पू.फा.	पू.षा	मृगशी	रोहिणी

भूकम्पादि महोत्पातो जायते यत्र मण्डले। तत्तत्स्वभावजं द्रव्यं जन्तून्देशांश्च पीडयेत्॥ भूमिकम्प दिग्दाह, वज्रघोष, विद्युत-उत्पात, धूलि-वर्षण, रक्त (लारंगकी) वृष्टि दिन में अन्धकार छा जाना, ऋतु-विपर्यय आदि प्रकृति-विरुद्ध हर आकस्मिक घटना को उत्पात माना जाता है। ये भूकम्पादि महोत्पात जिस मण्डल में होते हैं यानी उस समय दिन-नक्षत्र जिस मण्डल का रहता है, उसके गुण-धर्मी द्रव्यों, जन्तुओं और देशों को पीड़ा व हानि होती है। कौन नक्षत्र किस मण्डल का है, यह उपर्युक्त चक्रसे ज्ञात कीजिए!

*** नक्षत्र-मुहूर्तबोधक-चक्र ***

क्रम नक्षत्र	मु०	क्रम नक्षत्र	मु०	क्रम नक्षत्र	मु०
१ अश्विनी	३०	१० मघा	३०	१९ मूल	३०
				२० पूर्वाषाढ़ा	३०
२ भरणी	१५	११ पूर्वाफाल्गुनी	३०	२१ उत्तराषढ़ा	४५
३ कृत्तिका	३०	१२ उत्तराफाल्गु.	४५	२२ अभमिजित्	
४ रोहिणी	४५	१३ हस्त	३०	२३ श्रवण	३०
५ मगशीर्ष	३०	१४ मित्रा	३०	२४ धनिष्ठा	३०
६ आर्द्रा	१५	१५ स्वाती	१५	२५ शततारका	१५
७ पुनर्वसु	४५	१६ विशाखा	४५	२६ पूर्वाभाद्रपदा	३०
८ पुष्य	३०	१७ अनुराधा	३०	२७ उत्तराभद्र.	४५
९ आश्लेषा	१५	१८ ज्येष्ठा	१५	२८ रेवती	३०

*** नक्षत्र-सज्ञाबोधक चक्र ***

चन्द्र, पुरुष	अश्वि., भ., कृत्ति., पू षा उ.षा., श्र., ध, उ.भा, रे.
सूर्य, स्त्री	पू. फा., उ. फा, हस्त, चित्रा, स्वाती
चन्द्र स्त्री	आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा
सूर्य, पुरुष	रोहिणी, मगशीर्ष, मूल, शततारका, पू. भा.
सूर्य, नपुंसक	विशाखा, अनुराधा ज्येष्ठा

इस चक्र में २७ नक्षत्रों के क्रमानुसार नाम के साथ उनके मूहुर्त दिए गये हैं जिनका अर्धकाण्ड (तेजी-मंदी) परिज्ञान में व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है, इसे व्यापारीगण भलीभाँति जानते ही हैं। सूर्य सक्रान्ति के समय एवं शुक्लपक्ष के प्रथम चन्द्र-दर्शन के समय जो दैनिक नक्षत्र वर्तमान रहता है उसका मुहूर्त ही उस संक्रान्ति और चन्द्र-दर्शन का मुहूर्त होता है जिससे आगामी सौर व चांद्रमास (अमान्त) भी भावी तेजी-मंदी के आम रुख का परिज्ञान हो जाता है। सामान्यतः १५ मुहूर्ती संक्रान्ति व चन्द्र-दर्शन महर्घ तेजी के, ४५ मुहूर्ती समर्घ मंदी के तथा ३० मुहूर्ती साम्यार्थ-सम-भाव के सूचक होते हैं, विशेष सूक्ष्म विचार इस विषय के ग्रन्थों में देखना चाहिए।

वृष्टि-विज्ञान—में उपर्युक्त २७ नक्षत्रों की तीन संज्ञा १ स्त्री, २ पुरुष और ३ नपुंसक दी गई है तथा उनमें-से कुछ नक्षत्र सूर्य के तथा कुछ चन्द्रमा के माने गये हैं—जिसका विवरण बगल के चक्र से स्पष्टतः ज्ञात हो जायेगा वर्षा-काल के आर्द्रादि १० नक्षत्र मुख्य हैं, जिनमें-से प्रत्येक पर सूर्य के प्रवेश-समय चंद्रमा किस नक्षत्र पर है यानी दिन-नक्षत्र उस समय कौन-सा वर्तमान है, यह देखना होता है; फिर उस चन्द्र-नक्षत्र तथा सूर्य के (प्रवेशवाले) नक्षत्र दोनों की संज्ञा चक्र से मालूम कर लेते हैं। तब दोनों नक्षत्रों की संज्ञाओं के योग का भावी वृष्टि सम्बन्धी फल निम्न प्रकारेण निश्चित हो जाता है—

सूर्य-सूर्य योग—वायु चले। चन्द्र-चन्द्र योग—वर्षा नहीं हो। सूर्य-चन्द्र योग—दिन में हो तो सामान्य, रात्रि में हो तो विशेष वर्षा हो। पुरुष पुरुष योग—गर्मी हो नपुं-नपुं योग—अत्यन्त गर्मी हो या वायु चले। स्त्री-स्त्री योग—बहुत वायु या बादल हो। स्त्री-पुरुष योग वर्षा हो।

द्वितीय प्रकार सूर्य के नक्षत्र से दिन-नक्षत्र तक की संख्या को ९ से भाग दें। शेष १ से अश्व, २ जम्बूक (स्याल), ३ मेढक (मेंढक), ४ मेष (बकरी), ५ मयूर या चातक, ६ मूषक (चूहा) या मृग, ७ महिष भैंसा), ८ खर (गदहा), ९ यानी ० से गज या नाग वाहन होता है। फलः—१ गज, भैंसा, या मोर या मेंढक से—बहुत वर्षा हो, २ अश्व, गधा चूहा या मृग से—मध्यम वर्षा हो; ३ मेष (बकरा) या स्याल (जम्बूक) से—अनावृष्टि हो।

३. अनावृष्टि–चक्र

२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	१	२	३	४	५	६
७२	५०	४५	४२	३९	३४	२१	३०	२८	२४	२१	१६	१२

प्रत्येक वर्ष की २५ मई से ६ जून तक की तारीखें इस चक्र की ऊपरी पंक्ति में दर्ज है और हर तारीख के नीचे अलग-अलग संख्या लिखी हैं। जैसे, पहले खाने में २५ ता. के नीचे ७२ की संख्या लिखी है तो इसका मतलब यह है कि यदि २५ ता. को कहीं पर थोड़ी वर्षा हुई तो वहाँ इस तारीख से आगे ७२ दिनों तक वर्षा की खैंच रहेगी, दुर्भिक्ष पड़ेगा; पर यदि उस तारीख (२५) को दैवात् अधिक वर्षा हो जाय और नदी-नालों में वर्षा का पानी भी चल पड़े तो ७२ दिनों के सूखे के बाद उत्तम वृष्टि होगी, जिससे फसल की बहुत-कुछ रक्षा हो जायेगी। यही बात चक्र की अन्य तारीखों और उनके नीचे दर्ज संख्याओं की बाबत आप समझें। ता. २५ मई से ६ जून तक के इन १३ दिनों में गर्मी ज्यादा पड़े तो आगे वर्षा श्रेष्ठ, वायु-वेग से राजाओं में विग्रह, बिजली से वर्षा में कमी; अधिक दिनों की बिजली से शुभ, बादल की दिशा में वर्षा की कमी, निर्मल दिशा में वर्षा अधिक हो। इन १३ दिनों में बूंदा-बांदी होने पर वर्षा की खैंच जरूर होती है, यह पक्का नियम है। आगे आषाढ़ी पूर्णिमा की वायु अच्छी होने पर भी इस खैंच को असर तो पहले होता ही है।

[illegible]जय, स्थायीजय एवं संधिकरयोग-बोधक चक्र

वार	तिथि नक्षत्र	फल
[illegible]	१।३।५।७ भ. रो. पुन. आश्ले ९।११।१३।१५ उ.फा., ह., स्वा. अनु. उ.षा. ध., उ.भा, रे.	यायि(मुद्दई) की जय
बुध	२।६।१० आर्द्रा. मू. शत. अभि.	दोनों की सन्धि
मं. गु.	४-८–१२-१४ अश्वि. कृ. मृग. पुष्य, मघा पू.फा., चित्रा, वि., ज्ये., पूषा., श्र. पू.भा.,	स्थायी (मुद्दालेह) की जय

इस चक्र में यायीजय के खाने में लिखित वार, तिथि, नक्षत्रों की अकुल संज्ञा, दोनों की संधिवाले खाने के वारादि की कुलाकुल संज्ञा तथा स्थायीजयवाले खानेके वार, तिथि, नक्षत्रों की कुल संज्ञा है। अकुल संज्ञक तिथि वार, नक्षत्र-योग में यदि समर हो तो यायी (मुद्दई) की विजय होती है। कुल संज्ञक तिथि, वार, नक्षत्र में समर होने पर स्थायी (मुद्दालेह) की विजय होती है और कुलाकुल वार, तिथि, नक्षत्र के योग-काल में समर होने पर लड़नेवाले दोनों की संधि(सुलह) हो जाती है। टिप्पणी—मूल श्लोक में तिथि, वार, नक्षत्र तीनों की अकुलादि संज्ञा कथित हैं। अतः वार, तिथि, नक्षत्र तीनों का योग हो तो प्रबल योग होता है और उसका फल भी उसी भाँति प्रबल कहना चाहिए, अन्यथा इनमें से किसी एक (तिथि, वार या नक्षत्र) से भी अकुलादि संज्ञा विचार कर तारतम्य से फल कहना चाहिए।

अर्घकाण्ड

अथार्घ्यं संप्रवक्ष्यामि यदुक्तं ब्रह्मयामले । एकाशीतिपदे चक्रे ग्रहवेधाच्छुभाशुभम् ॥
त्रीन्कालांस्त्रिषु लोकेषु यस्माद्बुद्धिः प्रकाशते । तत्त्रैलोक्यप्रदीपाख्यं चक्रमत्र प्रकाश्यते ॥

फलित ज्योतिष शास्त्र के अर्घकाण्ड (तेजी-मंदी-विज्ञान) में सर्वतोभद्र चक्र का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है जिसके द्वारा ग्रहों का पारस्परिक एवं नक्षत्र-वेध जाना जाता है; उसी वेध-ज्ञान के लिए सरल रूप में चक्र आगे दिया गया है जिसमें पञ्चशलाका-चक्र के वेध का भी साथ ही ज्ञान हो जाता है।

पञ्चशलाका-चक्र का वेध विशेषरूप से विवाहादि कार्यों में दखा जाता है; किन्तु कुछ विशेषज्ञ तेजी-मंदी-निर्णय करने में इसका भी सफल उपयोग करते हैं। सर्वतोभद्र चक्र में समचारी (मध्यमा गति के) ग्रहों का तो मुख्यत. सम्मुख वेध होता है; किन्तु वक्री ग्रह का दक्षिण और शीघ्री ग्रह का वाम-वेध मुख्य होता है, शेष दोनों वेध गौण होते हैं। सदा वक्री रहनेवाले राहु, केतु का दक्षिणवेध तथा सदा मार्गी रहनेवाले सूर्य चन्द्र का सम्मुखवेध ही मुख्य होता है। विवाहादि से भिन्न सर्व-कार्यों में सप्तशलाका चक्र के वेध का उपयोग होता है जिसका सर्वतोभद्र चक्र में ही अन्तर्भाव है; क्योंकि सप्तशला का चक्र में विद्ध नक्षत्र ही सर्वतोभद्र चक्र के सम्मुख वेध से विद्ध होते हैं। अतः उपर्युक्त सर्वतोभद्र चक्र के सम्मुखवेधवाले खाने को सप्तशलाका-वेध का भी खाना समझना चाहिए—जैसे, कोई ग्रह अनुराधा नक्षत्र पर चल रहा है तो अग्रिम चक्र में १७वें नक्षत्र अनुराधा के सामने देखने से ज्ञात होगा कि सर्वतोभद्रचक्र के अनुसार वह आश्लेषा को सम्मुख वेध करेगा—यही नक्षत्र सप्तशाला चक्र के अनुसार भी विद्ध होगा! उस ग्रह का वामवेध भरणी नक्षत्र पर तथा दक्षिणवेध विशाखा नक्षत्र पर होगा तथा पञ्चशलाका चक्र के अनुसार वह भरणी नक्षत्र को वेध करेगा। इसी प्रकार अन्य नक्षत्रों के विषय में भी समझें।

सर्वतोभद्र-चक्र एवं पञ्चशलाका-वेध

क्रम	नक्षत्र	सम्मुख	वाम +	दक्षिण R	पञ्चशलाका-वेध
३	कृत्तिका	श्रवण	विशा	भरणी	विशाखा
४	रोहिणी	अभि	स्वाती	अश्वि.	अभिजित्
५	मृगशीर्ष	उ.षा	चित्रा	रेवती	उ. षा.
६	आर्द्रा	पू.षा.	हस्त	उ भा	पू. षा.
७	पुनर्वसु	मूल	उ.फा.	पू.भा	मूल
८	पुष्य	ज्येष्ठा	पू.फा.	शत.	ज्येष्ठा
९	आश्लेषा	अनु.	मघा	धनि.	धनिष्ठा
१०	मघा	भरणी	श्रवण	आश्ले	श्रवण
११	पू. फा.	अश्वि.	अभि.	पुष्य	अश्विनी
१२	उ. फा.	रेवती	उ.षा.	पुन.	रेवती
१३	हस्त	उ.भा	पू.षा.	आर्द्रा	उ. भा.
१४	चित्रा	पू.भा.	मूल	मृग	पू. भा
१५	स्वाती	शतभि	ज्येष्ठा	रोहि	शतभिषा
१६	विशाखा	धनिष्ठा	अनु.	कृत्ति.	कृत्तिका
१७	अनुराधा	आश्ले.	भरणी	विशा.	भरणी
१८	ज्येष्ठा	पुष्य	अश्वि	स्वाती	पुष्य
१९	मूल	पुन.	रेवती	चित्रा	पुन.
२०	पू. षा.	आर्द्रा	उ.भा.	हस्त	आर्द्रा
२१	उ. षा.	मृग	पू.भा.	उ.फा	मृग.
२२	अभिजित्	रोहि.	शत.	पू.फा.	रोहिणी
२३	श्रवण	कृत्ति	धनि.	मघा	मघा
२४	धनिष्ठा	विशा.	आश्ले	श्रवण	आश्लेषा
२५	शतभिषा	स्वाती	पुष्य	अभि.	स्वाती
२६	पू. भा.	चित्रा	पुन.	उ.भा.	चित्रा
२७	उ. भा.	हस्त	आर्द्रा	पू.षा.	हस्त
२८	रेवती	उ.फा.	मृग	मूल	उ. फा.
१	अश्विनी	पू.फा.	रोहि.	ज्येष्ठा	पू. फा.
२	भरणी	मघा	कृत्ति.	अनु.	अनु.

नक्षत्राधीन वस्तुएँ—प्रत्येक नक्षत्र का जिन विभिन्न वस्तुओं पर स्वामित्व है, उनकी सूची भी तेजी-मन्दी के परिज्ञानार्थ यहां दी जा रही है। नक्षत्रों के शुभाशुभ ग्रह से वेधित होने के कारण उनके अधीन वस्तुओं की उपज, खपत एव कीमत की घट-बढ़ पर प्रभाव पड़ता है।

-कृत्तिका—चावल, यव, मणि, हीरा, धातु, तिल। [Aकोंदा धान्य चावता
-रोहिणी—सर्वाधान्य, सर्वरस, सर्वधातु और पुराने ऊनी वस्त्र।
-मृगशीर्ष-घोड़े, भैंस, गाय, लाख आदि, कोंदो धान्य, गर्दभ, रत्न, तुअर।
-आर्द्रा-तेल, लवण, सर्व क्षार, रसादि, चन्दन आदि सुगन्धित वस्तुएं।
-पुनर्वसु-सोना, रूपा, कपास, ज्वार, बाजरा, कुसुंभ, श्याम रेशमी वस्त्र।
-पुष्य-सोना, रूपा, घृत, चावल, सौंर नक, सरसो, सज्जी, तैल और हींग।
-आश्लेखा-मजीठ, सेलडी(गुड़ खांड), गेहूँ, सुंठी, मिर्च, A।
-मघा—तिल, तेल, घृत प्रवाल, चना, अलसी, गुड़, और कांगुनी।
-पूर्वाफाल्गुनी—ऊन, कंबलादि, युगन्धरी, तिल, रूपे की वस्तुए और G।
-उत्तराफाल्गुनी—उड़द, मूंग, चावल, कोंदो, सैंधव, लहसन, सज्जी।
-हस्त-चंदन. कपूर, देवदारु, अगर, लाल चंदन और कंद। C कल्याण
-चित्रा-सोना, रत्न, मूग, उड़द, प्रवाल और घोड़ा आदि वाहन।
-स्वाती-सुपारी मिर्च, सरसों, तेल, राई, हींग, और खर्जुरादि।
-विशाखा-जौ, चावल, गेहूँ, मूंग, राई, मसूर, धान्य और मोठ।
-अनुराधा-तुवर, बिना दल के सर्व अन्न, चावल, मोठ, चना।
-ज्येष्ठा-गुरुगुल गुड़, लाख, कपूर, पारा, हींग, हिंगुल और कांसी।
-मूल—सर्व श्वेत वस्तु, रस, धान्य, सेंधा नमक, कपास और लवण।
-पूर्वाषाढ़ा-सुरमा, तुषधान्य, घृत, कंदमूल, जूर्ण (तृण) और चावल।
-उत्तराषाढ़ा-घोड़ा, बैल, हाथी, लौह आदि धातु, B
-अभिजित्-दाख, खजूर, सुपारी, इलायची, मूंग, जायफल, घोड़ा।
-श्रवण-अखरोट, चिरौंजी, पिप्पली, सुपारी का बगीचा और तुष धान्य।
-धनिष्ठा-सोना, रूपा, धातु, सर्व नाणा (करेंसी), मणि, मोती रत्नादि।
-शतभिषा-तेल, कोदो, मद्य आवि अर्क, आँवला, पत्र, मूल, और छाल।
-पूर्वाभाद्रपदा-प्रियंगु, मूल, जावित्री, सर्वधान्य, सर्व धातु सर्वौषधि, देवदारु।
-उत्तराभाद्रपदा-गुड़, खाँड़, शक्कर, खली, चावल, घृत, मणि, मोती।
-रेवती-नारियल, सुपारी, मोती, मणि छेड़ा और सब किराना।
-अश्विनी-चावल, तृण, खच्चर, ऊंट, घी, सर्वधान्य, सब प्रकार के कपड़े।
-भरणी—तुष-धान्य, युगन्धरी, मिर्च, सर्वौषधि। [Bसर्वसार वस्तु और घृत

व्यापारिक अमूल्य चुटकुले—१-अपनी सामर्थ्य और पूंजी के अनुसार ही व्यापार करना चाहिए। जो मनुष्य यह सोचकर मोटा व्यापार कर बैठते हैं कि हमको तो एकही चांस में लक्षाधीश बनना है, उनमें-से कोई एक बिरला लखपति भले ही बन जाय, बाकी सब मोटे व्यापार की मोटी चपेट से अपनी प्रतिष्ठा खो बैठते हैं और आइन्दा के लिए किसी काम के नहीं रहते। २—व्यापार में ज्योतिष से लाभ उठानेवाले को अपने शुभाशुभ समय का भी ध्यान रखना चाहिए। वर्ष-कुण्डली तथा पञ्चाङ्गीय गोचर ग्रह-दशा से शुभाशुभ समय का परिज्ञान होता है। अशुभ समय (बुरे दिनों) का अनुमान अपने रात दिन के कार्यों की असफलता बिगाड़ आदि से भी हो जाता है। ऐसे वक्त किसी स्थाई कार्य का आरम्भ नहीं करना चाहिए। ३—यदि कोई वस्तु सामयिक भाव को देखते एकदम मन्दी हो जाय तो निश्चय १०० दिन के भीतर उसका भाव बहुत बढ़ जाता है। इसी भाँति यदि तेज हो तो १०० दिन के अन्दर काफी मन्दी आएगी। ४—जब किसी वस्तु का भाव काफी ऊँचा हो जाय तो विक्रय के नक्षत्र में बेचना तथा काफी नीचा हो जाय तो क्रय के नक्षत्र में खरीदना चाहिए। क्रय-विक्रय के नक्षत्र, वार आगे दिये गये हैं। ६—गुरुवार के दिन जो भाव होते हैं, कुछ फेर से वे ही भाव अगले गुरुवार को आ जाते हैं। लम्बी तेजी-मंदी चलने पर भी प्रायः वे ही भाव अगले गुरुवार को पाये गये हैं। ७—मङ्गल को तेजी होकर यदि शनिवार को भी तेजी हो तो अगले मंगलवार तक तेजी ही चलेगी। यदि कभी शनिवार को मन्दी आ जाय तो तेजी की लाइन रुकी समझें। ८—किसी भी ग्रह के वक्री, अस्त, युति-काल में जो भाव किसी वस्तु के बनें, उससे उलटा रुख मार्गी, उदय या युति छूटने के बाद प्रायः हो जाता है। ९—संक्रान्ति लगने से १ दिन पूर्व का भाव संक्रान्ति के दिन से मन्दा रहे तो आगे तेजी का और यदि तेज रहे तो मन्दी का भाव एक माह तक समझें।

१०—संक्रान्ति के पहले सप्ताह के ऊँचे-नीचे भाव नोट करें। उन भावों से आगे ऊंचे भाव होने पर तेजी का, नीचे भाव बनने पर मन्दी का, इस क्रम से साप्ताहिक व दैनिक व्यापार करना। ११—किसी वस्तु के ऊँचे भाव कटें तो बेचें, नीचे कटे तो खरीदें, श्रेष्ठ लाभ होगा। १२—प्रायः चैत्र और आश्विन कृष्णपक्ष से हर वस्तु में तेजी मन्दी चलती है। १३—सदैव व्यापार-चक्र के अनुसार सौदा करना चाहिए। बाजार में प्रतिदिन या तीसरे, पांचवें, सातवें दिन किसी वस्तु के नये-नये भाव आते रहने से अनुमान लगा लें कि बाजार तेजी का है या मंदी का, यानी तेजी के नये-नये भाव आते रहें तो तेजी का, मन्दी के नये-नगे भाव आने से बाजार मन्दी का जानना चाहिए। १४—तेजी के चक्र में मन्दीकारक ग्रहयोग का फल थोड़ा और अल्पकालीन होता है। ऐसा ही मन्दी के चक्र में तेजी के लिए समझें। १५—तेजी के चक्र में जब मन्दी का रुख बनने लगे, तभी तेजी से निकल जाना चाहिए। ऐसे ही मन्दी के चक्र में तेजी के लिए समझें। १६—मन्दी के चक्र में शनिवार से नीचे भाव सोमवार को तथा तेजी के चक्र में शनिवार से ऊंचे भाव को बनते जाते हैं। तेजी में ऊने भाव मन्दी में दूने भाव बनते हैं। १७—किसी जिस में मन्दी गुरुवार को खत्म होकर तेजी का भाव बन जाय तो फिर उसमें तेजी का चक्र चल पड़ता है। १८—निरन्तर व्यापार से यह भी अनुभव हुआ है कि सोमवार में एकदम मन्दी आये और मंगलवार को भी रहे तो बुध के दोपहर तक मन्दी चलकर गुरुवार को एकदम तेजी आ जाती है। १९—शनिवार के दिन सबसे ऊंचा या नीचा भाव जो हुआ हो, उसे ध्यान में रखना; सोमवार के दिन उससे भी ऊँचा या नीचा एक भाव जरूर मिलेगा। २०—किसी-किसी समय ऐसा भी बाजार चलता देखा गया है कि सोमवार से तेजी या मन्दी उठे तो वह बुधवार के दोपहर तक समाप्त होती है। २१—सोमवार व मंगलवार को बाजार तेज या मन्दा रहे तो बुध के दोपहर बाद से गुरुवार तक प्रायः विपरीत रुख रहता है। सोम व बुधवार की तेजी अस्थिर, मंगल व गुरुवार की तेजी स्थिर; किन्तु शुक्रवार की तेजी मंदी दोनों अस्थिर होती है। २२—बुधवार या गुरुवार को बन्द घण्टी पर खरीददार हों तो तेजी का, बिकवाल हों तो मन्दी का व्यापार प्रायः लाभ ही देगा। २३—गुरुवारी बन्द घण्टी की तेजी या मन्दी शनिवार को १ बजे तक रहे। २४—गुरुवार को खुलते भाव से २ पैसा भी तेज हो जावे, फिर चाहे मन्दा ही क्यों न आये, अन्त में अवश्य अच्छी तेजी आती है। २५—सदैव व्यापार-चक्रानुसार भाव पलटा खाने (Turning point) के समय ग्रह-योगों को देखते हुए तेजी मन्दी के नये सौदे करने चाहियें और अगले Turning point तक उसका लाभ लेकर सौदा बराबर कर देना चाहिए। २६—तेजी के चक्र काल में पोतेवाले (खरीदार) तथा मन्दी के चक्र में मत्थेवाले (बिकवाल) ही उत्तम लाभ उठाते हैं। २७—बाजार में भारी घटा-बढ़ी के समय नजराना लगानेवाले एवं सामान्य घट-बढ़ के समय नजराना खानेवाले कमाते हैं। २८—इसी तरह अनावृष्टि दुर्भिक्ष, युद्धादि के समय में तेजड़ियों को तथा शान्ति, सुभिक्ष के समय में मंदड़ियों को अच्छा लाभ रहता है। २९—किसी वस्तु का खुलता भाव पिछले दिन के बन्द भाव से नीचा होकर खुले तो उसके ऊंचा होते ही सौदा पोते करें; इसी भांति विगत दिन के खुलते भाव से बाजार ऊँचा खुलकर नीचा हो जाय तो सौदा मत्थे करनेवालों को लाभ की पूरी सम्भावना रहती है। ३०—जिस चीज के भाव नीचे होकर पड़े रहे तो खरीदने से तथा तेज होकर पड़े रहे तो अवसर देखकर बेच देने से प्रायः लाभ ही होता है; वहीं ज्योतिषोक्त टर्निङ्ग प्वाइन्ट भी मिल जाय तो पक्का लाभ होता है। ३१—नये स्थान में नई जिन्स का अथवा बन्द सट्टा के खुलते ही भारी तेजी मन्दी चलती है। अतः सतर्कता से अथवा नजराने पेटे व्यापार करें, वर्ना भावी रुख का गलत अन्दाज होने पर गहरी चोट खा जायेंगे।

वार परत्वेन तेजी-मन्दी-ज्ञान—बहुत बार के अनुभव से यह पता चला है कि वायदा-व्यापार के अन्दर जहाँ जिस चीज को जोरदार सट्टा चल रहा हो, वहाँ उस चीज की तेजी या मन्दी के ऊँचे-से-ऊँचे या नीचे-से-नीचे भाव प्रायः सोमवार, मङ्गलवार को अथवा शुक्रवार, शनिवार को ही बना करते हैं। २. सोमवार की तेजी या मन्दी से विपरीत भाव मंगलवार को रहता है। सोमवार को अचानक तेजी आ जावे तो वह तेजी मंगल के दोपहर तक रहती है, पश्चात् मन्दी हो सकती है। सोमवार को एकदम मन्दी आने पर मंगलवार को सोच-समझ कर सौदा करना चाहिए। ३. मंगल को बाजार तेजी में जाय तो बुधवार के दोपहर तक तेजी चलकर मन्दी आ जाया करती है। ऐसे ही मंगल को आई मन्दी प्रायः बुधवार के दोपहर तक रहती, पश्चात् तेजी आती है। बुधवार को जो वस्तु मन्दी होगी, उसमें गुरुवार को तेजी जरूर आयेगी। ४—गुरुवार तेजी में जाय तो शुक्रवार को दोपहर बाद मन्दी आ जायेगी, फिर शनिवार में तेजी जरूर आयेगी। गुरुवार की तेजी या मंदी कभी-कभी शनिवार तक बनी रहती है। ५—शुक्रवार की तेजी या मंदी प्रायः टिकाऊ नहीं होती और शनिवार को विपरीत हो जाया करती है। शुक्रवार की तेजी विशेषः अस्थिर होती है और शीघ्र ही मन्दी आ जाती है। ६—शनिवार को उठी तेजी या मन्दी मंगल के दोपहर तक समाप्त हुआ करती है। यदि और भी आगे चली तो शनिवार को ही जाकर समाप्त होती है। शनिवार को भाव दुतर्फा चलने से शीघ्र मन्दी आ जाती है। ७—रविवार की तेजी या मन्दी सोमवार को विपरीत हो जया करती है। रविवार को तेजी के बाद सोमवार को मन्दी न आवे तो मंगलवार को बाजार का रुख देखकर व्यापार करना चाहिए।

श्रीगोस्वामी तुलसीदासजी के मतानुसार

वित्त व्यापार सम्बन्धी शुभाशुभ नक्षत्र

शुभ नक्षत्र—अश्विनी, मृगशीर्ष, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा और रेवती। यथा—

श्रुति गुन कर गुन यु जुग मृग हय रेवती सखाउ।
देहि लेहि धन धरनि धरु गएहुँ न जाइहि काउ॥

अर्थात् उपर्युक्त बारह नक्षत्रों में धन, जमीन और धरोहर का लेन-देन करो; ऐसा करने से धन जाता हुआ प्रतीत होने पर भी नहीं जायेगा।

अशुभ नक्षत्र—भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, आर्द्रा, आश्लेषा, मघा, पू. फा., उ. फा, विशाखा, मूल, पू. षा., उ.षा., पू.भा. और उ.भा.; यथा—

ऊ गुन पू गुन वि अज कृ म आ भ अ मू गुनु साथ।
हरो धरो गाड़ो दियो धन फिरि चढ़इ न हाथ॥

अर्थात् 'उ' से आरम्भ होनेवाले तीन नक्षत्र, पू. से आरम्भ होनेवाले तीन नक्षत्र, वि (विशाखा), अज (रोहिणी), कृ (कृत्तिका), म (मघा), आ (आर्द्रा), भ (भरणी), अ (आश्लेषा) और मू (मूल) को भी इन्हीं के साथ समझ लो। इन चौदह नक्षत्रों में हरा हुआ (चोरी गया हुआ), धरोहर रखा हुआ, गाड़ा हुआ तथा उधार दिया हुआ धन फिर लौटकर हाथ नहीं आता।

टिप्पणी—इन नक्षत्रों के अलावा भद्रा तथा व्यतीपात में जो द्रव्य किसी को दिया जाय, पृथ्वी में गाड़ा जाय या किसी व्यवहार में लगाया जाय अथवा चोरी आदि से नष्ट हो जाय तो वह फिर प्राप्त नहीं होता; यथा—

तीक्ष्ण मिश्र ध्रुवोग्रैर्यद् द्रव्यं दत्तं निवेशितम्।
प्रयुक्तं च विनष्टं च विष्ट्यां पाते च नाप्यते॥
—मुहूर्त-चिन्तामणि

इस श्लोक में केवल एक नक्षत्र ज्येष्ठा के अलावा अन्य सब निषिद्ध नक्षत्र वहीं हैं जो श्रीगोस्वामीजी ने बतलाये है। मुहूर्त-चिन्तामणि ने मघा के बजाय ज्येष्ठा को निषिद्ध बतलाया है जो हमारे विचार से यथार्थ है। अतः मघा को द्रव्य-प्रयोग में न अशुभ, न शुभ; बल्कि मध्यम समझना चाहिये और आवश्यक में तत्परक तिथि, वार शुभ होने पर ही उसे उपयोग में लेना चाहिए।

लेन-देन के लिए वर्जित समय—रविवार, मंगलवार, संक्रान्ति के दिन, बृद्धि-योग और हस्त नक्षत्र में यदि ऋण ले तो कभी मुक्त न हो। बुधवार को द्रव्य देना नहीं चाहिए।

तेजी-मंदी-ज्ञान की सरल रीति

सट्टे वायदे व्यापार की तेजी-मंदी जानने के लिए मुख्य जिंसों तथा सूर्य-संक्रान्ति, तिथि, नक्षत्र, वारादि ध्रुवांकों की अनेक सारणियाँ अब तक जंत्री पंचांगों में प्रकाशित हो चुकी हैं; किन्तु यह सारणी काशी से प्रकाशित "गोवर्धन पद्धति' नामक पुस्तक से हमने लिया है जिसके लिए अनेकानेक ज्योतिष लालायित रहते हैं; किन्तु वह पुस्तक दुर्लभ हो चुकी है। आशा है, व्यापारीगण इससे सट्टे-वायदे में पर्याप्त लाभकारी निर्देश पा सकेंगे।

मास	चै.	वै.	ज्ये.	आषा	श्रा.	भा.	आश्व	कार्ति	मार्ग.	पौष	माघ	फाल्गुन
ध्रुवांक	१५	१६	१८	२०	२२	२५	१४	१७	१९	२३	२१	२४

तिथि	प्र	द्वि.	तृ.	च.	प.	ष.	स.	अष्ट.	न.	द.	ए.	द्वा	त्र.	चतु	पू.	अमा	[illegible]
ध्रुवांक	१५	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२६	२५	२३	२५	१९	१७	१५	१८	१३	[illegible]

वार-ध्रुवांक	र.	सो.	मं	बु.	गु.	शु.	श.
	१५६	१८५	८०१	७५६	८२६	६३६	४२५

नक्षत्र-ध्रुवांक									
	अ.	भ.	कृ.	रो.	मृ.	आ.	पुन.	पुष्य.	आश्ल.
	१८५	६७४	२५२	७८४	७८४	१३७	६५८	६२५	१८८
	मं.	पू.फा.	उ.फा	हस्त.	चित्रा	स्वा.	विशा.	अनु.	ज्ये.
	१५५	२२०	१५७	८५५	३५०	८८३	७५२	७५७	७२४
	मू.	पू.षा.	उ.षा	श्रवण	ध.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	मू.
	६७०	६७७	६७४	८४७	५५४	९५४	३६३	१७४	७७५

योग-ध्रुवांक									
	वि.	प्री.	आ.	सौ.	शो.	अ.	सु.	धृ.	शु.
	६३७	७७३	५५१	३७५	६३५	३४०	८५७	१४०	५७४
	गं.	वृ	ध्रु.	व्या.	ह.	बज्र	सि.	व्या.	व.
	३८७	२७८	२७८	२७७	२७६	५७५	७२०	६६१	३७४
	प.	शि.	सि.	सा.	शुभ	शुक्ल	ब्र.	ऐं	वै.
	४६५	१६१	८२७	३४४	४३३	५४४	४४५	६४४	३४३

सूर्यराशि या	मेष	वृष	मिथु.	कर्क	सिंह	कं.	तुला	वृश्चि	धनु	मकर	कुंभ	मीन
संक्रा ध्रुवांक,	५२१	७७१	५५५	२७२	८२१	१५१	५७५	८३२	५५१	५७२	२६१	५६४

॥ तिथ्यादि ध्रुवांक-सारणी॥

इस सारणी में क्रम से १ मास, २ तिथि, ३ वार, ४ नक्षत्र, ५ योग, ६ संक्रान्ति और ७ वस्तु के ध्रुवांक दिये गये हैं। वास्तव में इस सारणी से जिस दिन जिस समय, सूर्य की संक्रान्ति होती है वहाँ से एक मास में किस चीज में तेजी होगी और किस चीज की मंदी होगी यह जाना जा सकता है। ग्रन्थकर्ता ने आगे जो तीन प्रकार बतलाये हैं, वे सब संक्रांति-काल के ही हैं।

सम्भव है, इस सारणी के द्वारा दैनिक तेजी-मंदी भी अधिकांश में सही हो जाय।

सारणी का उपयोग।

पहिला प्रकार—

मासादि सात ध्रुवाङ्कों के जोड़ में ३ का भाग देने पर १ बचे तो मंदी, २ बचे तो समान, और ० शेष बचे तो तेजी होगी।

वस्तु-ध्रुवाङ्क

अफीम ८८४	अजमोद १७१	आँवला ७७४	अश्व ८७१	अगर १२	इलायची २१
ऊन १५०	ऊँट ४८४	कस्तूरी २८४	कसुंबी ४६२	कपास ३५	करडी १२५
काँगनी २३४	काष्ठ ८१	काँसा १०१	काँगड़ी ८१	कथीर १८२	कटु २२४
काँच २८७	कुंकुम ९५	कुलखी ३३	कुरी ७७	कलाय २७४	कूट १०५
उड़द १४३	केसर २२७	खजूर १२६	गरी १७६	गुंडाल ८२	गेहूँ २८५
कपूर ९२	केराव १०१	खली ६२	गधा २७४	गोंद २३५	ग्वार ९१
कपड़ा ४८	कोदव १०९	खाँड़ २४७	गाय २८३	गुड़ ६६	घृत ४४५
चना २४२	जीरा ७७३	पश्मीना ५२	मसूर २८३	लकड़ी २२४	सार ८७२
चावल ३७२	तमाखू २८३	पारा ६२७	मटर ४८	लाख ८८	सुहागा ६७
चाँदी १२८	ताँबा ८९	पीपल १२८	मिरिच ६३०	लोध ८३०	सुपारी १०८
चिरौंजी ७७८	तिल १८	पीतल १०२	मुरदाशंख ९४	लोहा २७८	सोना ६८
चिरायता २३०	तीसी १०८	वच ७३	मूंग ३५२	लौंग २७	सोना ९१
चीनी १२८	तुवर ५५७	बादाम ७६०	मूंज २१	शाली ३२	हल्दी ५४
चोला ७२	तृण ७३५	दुशाला २८	मूंगफली २१२	सौंचर १२	हरड़ ८४७
चंदन १२६	तेल ५४७	बहेड़ा ७८४	मेथी ३६	सरसों ८४०	हरताल ७२५
चंदनलाल ११५	दाख ३२०	बकरी ३२१	मोठ ६८२	सन ८८२	हाथी ४८२
जस्ता ७८६	दाना ६२	बाण १२५	मोती ८०	रूपा ८८	हिंगलू ८२७
यव ७७२	धनिया ४४२	बाजरी ७१८	राई ४४१	लशुन १०१	हींग २४
ज्वारी ७७७	नारियल ३०४	रेशम ५०	सज्जी ८८४	बैल १४४	भैंस ६८४
जायफल १३	नील ५३१	रुई १७३	शाक ८८४	×	×

दूसरा प्रकार—

सूर्य-संक्रान्ति के इष्ट घटी में यानी अपने स्थान के सूर्योदय से जितनी घटी बाद सूर्य-संक्रान्ति हुई हो, उतनी घटी में ९ जोड़कर ३ का भाग देने पर १ बचे तो मंदी, २ बचे तो समान, ० बचे तो तेज भाव रहेगा; परन्तु निर्णयकर्ता को चाहिए कि जिस स्थान के बाजार-भाव का विचार करना हो, वहीं के सूर्योदय से कितनी घटी पर संक्रान्ति लगी, यह सतर्कता से निश्चित करके ही फल-कथन करें; क्योंकि सब जगह जगह भिन्न-भिन्न समय पर सूर्योदय हुआ करता है।

जंत्री में सूर्य-संक्रान्ति का समय भा. स्टैं. टा. में दिया जाता है। उसमें-से अपने स्थान के इष्ट दिन के सूर्योदय के स्टैं. घं. मि. घटा दें—शेष को ढ़ाई गुना करें तो संक्रान्ति लगने का इष्ट घटी पल ज्ञात हो जायेगा।

तीसरा प्रकार—

पूर्वोक्त ७ ध्रुवाङ्कों के जोड़ को ७ से गुणा करके ३ का भाग देनेपर एक बचे तो मन्दी, २ बचे तो समान, ० बचे तो तेजी जानना।

इसके आगे जो एक श्लोक लिखा है, वह जिस समय कलकत्ता में अफीम का दड़ा होता था, जो अब नहीं होता, उससे सम्बन्धित है; व्यापारी वस्तुओं की तेजी-मंदी से कोई सम्बन्ध नहीं।

आगे यह देखना होगा कि जिस दिन, जिस समय सूर्य की संक्रान्ति होती है; उस समय चन्द्र-नक्षत्र का भयात कितना है और भभोग कितना? नक्षत्र १५, ३० या ४५ जितने मुहूर्त का हो उस संख्या से भयात की घटी में भाग देने पर जो लब्धि आवे, उसे घटी समझना चाहिये; फिर शेष को ६० से गुणा कर उसे भयात-पलों में जोड़कर मुहूर्तसंख्या से भाग देने पर जो लब्धि आवे, वे पल होंगे। फिर जो शेष बचा है, उसे ६ से गुणा कर गुणनफल में उसी मुहूर्त-संख्या का भाग देने पर जो लब्धि आवे वह प्राण, पुनः शेष को १० से गुणा करके पूर्वोक्त मुहूर्त-संख्या से भाग देने पर जो लब्धि आवे उसे 'गुरु' समझना चाहिये। इस प्रकार से भयात की लब्धि घटी को ६० से गुणा कर लब्ध पलों को जोड़ दे। बाद में इन पलों को ६ से गुणा कर लब्ध 'प्राण' जोड़ दे; फिर इन प्राणों को भी १० से गुणा करके लब्ध 'गुरु' जोड़ देने पर सबका यह भयात सम्बन्धी 'योग-पिण्ड' होगा। उसी प्रकार से भभोग का भी घटयादि गुरुपर्यन्त 'योगपिण्ड' बनालें; फिर भभोग के योगपिण्ड से भयात के योगपिण्ड

में भाग दे। लब्धि के अंकों में उस समय अश्विन्यादि गत नक्षत्रों के जितने चरण व्यतीत हुए हों, वे जोड़ दे; फिर वार-ध्रुवाक से गुणा कर उसमें वस्तु-ध्रुवांक को जोड़ें; योगफल में ३ का भाग देने पर १ शेष बचे तो मंदी, २ शेष बचे तो समान, और ० शेष बचे तो तेजी समझनी चाहिए। यहाँ रविवार का ७, सोमवार का २१, मंगल का १०, बुध का ९, गुरु का ५, शुक्र का १६ तथा शनिवार का ४ ध्रुवाङ्क ग्रहण करना चाहिए; चक्रोक्त वार-ध्रुवांक नहीं। यह मासिक तेजी-मंदी जानने का प्रकार है; किन्तु दैनिक तेजी-मंदी भी इसी क्रम से जानी जा सकती है। प्रतिदिन के नक्षत्र का भयात-योगपिण्ड और भभोग-योगपिण्ड बनाकर पूर्वोक्त रीति से दैनिक तेजी-मंदी भी प्रत्येक वस्तु की मालूम हो जाती है। प्रत्येक नक्षत्र का मुहूर्त इसी पुस्तक में अन्यत्र दिया गया है।

मासादि ध्रुवसर्वैक्ये ३ भक्ते १ वृद्धिः २ समः ० हानिः। द्वितीय प्रकारः संक्रान्ति घटीषु ९ युते ३ भक्ते पूर्वफलं ॥ तृतीय प्रकारः। संक्रान्ति तिथि वार नक्षत्र योग मास राशि एषां ध्रुवैक्ये ७ गणिते ३ भक्ते पूर्वफल ॥

मासार्कलग्नाद्भौमाद्दार्केंद्रांका अहिफेनजाः मूल त्रिकोणादिवलैर्भौम दृष्टश्चतुर्ष्वंकः ॥ १ ॥

यत्रर्क्षसंक्रमः तन्नक्षत्र भयातभोगः कार्य ऋक्षमुहूर्तेन १५।३०।४५ भभोगेभक्ते लब्धं घटोशेषं षष्टि गुणं पल-युतं पुनर्मुहूर्त्तभक्तं लब्धं पलं शेषं ६ गुणं मुहूर्त्तभक्तलब्धं प्राणः शेषं दशगुणं मुहूर्द्धलब्धं गुरुसंज्ञं सर्वण्यभोग पिण्डं ॥ एवं भयात घटी ६० गुण्यपलयुत ६ गुण्य पुन १० गुण्य भयात पिंडं ॥ सवर्णभेत पिन्डे भोग पिण्डेन भक्ते लब्धं अंक अश्विन्यादिक्रमान्संक्रांत्यर्क्षराशिगत चरणसख्याकेयुतं वारध्रुव गुणं वस्तुध्रुवयुतं त्रिभक्तं १ शेषे मंदी २ समं ३ तेजी ॥ र. ७ चं. २१ मं. १० बु. ९ गु. ५ शु. १६ श. ४ ॥

इति मासेक्रमः दिनार्घज्ञाने प्रतिदिनर्क्षभयातं सवर्ण्यमुहूर्त्त भक्तसवर्णित भभोगेनभक्तं लब्धमंकं नक्षत्र भुक्तं चरणे-युतं वारध्रुव गुणं वस्तुध्रुवरोप्यं १२८ युतं त्रिभक्तं १ शषे मंदी २ समं ३ तेजी ॥ [अप्राप्य ग्रन्थ 'गोवर्धन-पद्धति'से]।

श्रीकाशीनाथ के मतानुसार क्रय-विक्रय-मुहूर्त—पुष्य, पू. भा., अनु, श्र., ह., म., स्वा., तीनों उत्तरा, आश्ले., रे., ऐषु त्रेषु सत्तिथौ शुभ दिने उत्तम शकुनं विचार्य क्रय-विक्रयणं कार्यम्।

वस्तु "खरीदने" के नक्षत्र—रे. शत. अश्वि. स्वा. श्र. चि.; वारों में बुध, रवि श्रेष्ठ हैं।

"बेचने" के नक्षत्र—पू. फा., पू. षा., पू. भा., वि., कृ. आश्ले. भ. ये ७ नक्षत्र और गुरु, सोमवार श्रेष्ठ माने गये हैं। बेचने के नक्षत्रों में खरीदना और खरीदने के नक्षत्रों में बेचनेवालों को ९५ फीसदी नुकसान रहेगा, इसमें संशय नहीं है। इसी कारण खरीदने-बेचने के नक्षत्र दिये गये हैं; परन्तु संप्रति सट्टे जैसे भयावह व्यापार में तो धैर्य का काम ही नहीं, सिवा घबराहट के! दिन भर में १० बार बेचना, २० बार खरीदना—ऐसे व्यापारी इन नक्षत्रों का क्या करेंगे? प्रायः ऐसा प्रश्न किया जाता है। इसका उत्तर यह है कि पहले-पहल सट्टे का व्यापार आरम्भ करते समय तथा किसी वस्तु का नया सट्टा चालू होने पर तेजी या मंदी का प्रथम सौदा इन नक्षत्रों के आधार पर ही करना चाहिए। दूसरे, जिन्हें दिन में दस-पाँच बार ले-बेच करनी पड़ती है, वे भी इन नक्षत्रों का उपयोग क्षण-नक्षत्र के रूप में कर सकते हैं। क्षण नक्षत्रों के विषय में इसी पुस्तक के 'समय-शुद्धि' प्रकरण में पूर्ण प्रकाश डाला गया है; वहाँ देखिए।

अंशात्मक दृष्टियोग (Aspects) का विवरण

दो ग्रहों के भोगांश (Longituades) में जितने अंश का अन्तर होने पर उनमें परस्पर जो दृष्टियोग (Aspect) बनता है उसकी संज्ञा, चिन्ह, राश्यत्मक और अंशात्मक अन्तर एवं उस दृष्टियोग के शुभाशुभत्वादि का विवरण नीचे दिया जा रहा है—

राशि	अंश	चिह्न	दृष्टियोग	आंग्ल संज्ञा	शुभाशुभत्व
१–११	३०–३३०	⚺	द्विर्द्वादश	Semisextile	शुभ
१ १/२–१० १/२	४५–३१५	∠	अर्धकेन्द्र	Semisquare	अशुभ
२–१०	६०–३००	✳	त्रिरेकादश	Sextile	विशेष शुभ
२ २/५–९ ३/५	७२–२८८	Q	पञ्चमांश	Quintile	सामान्य शुभ
३–९	९०–२७०	□	केंद्र	Square	विशेष अशुभ
४–८	१२०–२४०	△	त्रिकोण	Trine	विशेष शुभ
४ १/२–७ १/२	१३५–२२५	⚼	सार्ध केन्द्र	Sesquiquadrate	सामान्य अशुभ
४ ४/५–७ १/५	१४४–२१६	±	द्विपंचमांश	Biquintile	सामान्य शुभ
५–७	१५०–२१०	⚻	षडाष्टक	Quincunx	अशुभ
६–६	१८०–१८०	☍	प्रतियुति	Opposition	अशुभ
०	०	☌	युति	Conjunction	शुभाशुभ *
क्रांत्यंतर	०	P	क्रांतिसाम्य	Parallel	अशुभ

* पाश्चात्य मत से गुरु, शुक्र, रवि की परस्पर युति सामान्यतः शुभ मानी जाती है, शेष ग्रहों की पारस्परिक युतियाँ प्रायः अशुभ मानी जाती हैं। दृष्टियोगों का पारस्परिक बल—Relative Power of Aspects) ±, Q. ⚺, <, ⚼, ⚻, ✳, □, △, ♂. P, ☍ ये दृष्टियोग उत्तरोत्तर बली हैं।

ग्रहाधीन व्यापारिक वस्तुएँ और और उनकी तेजी-मंदी जानने की सरल पद्धति

इस पद्धति में प्रत्येक ग्रह अपने स्थान-बल, चेष्टा-बल तथा दृष्टि-बल से सम्पन्न होने पर स्व- अधीन वस्तुओं के लिए उत्तरोत्तर शुभ यानी मन्दीकारक होता है और उक्त बलों से जितना हीन होगा, उतना ही स्वाधीन वस्तुओं के लिए अशुभ यानी तेजीकारक होगा।

स्थानबल—जो ग्रह उच्च, मूलत्रिकोण, स्वमित्र-राशि-नवांश-द्रेष्काणस्थ, उदित, मित्र-दृष्ट युक्त होता है, वह स्थानबली होता है। नीच, शत्रु-राशि-नवांश-द्रेष्काणस्थ, अस्त, शत्रुदृष्ट युक्त हो तो हीनबली होता है।

चेष्टाबल—मकर से मिथुन पर्यन्त किसी राशि में रहने से सूर्य चन्द्र, तथा चन्द्रमा के साथ रहने से मंगल बुध, गुरु, शुक्र और शनि चेष्टाबली होते हैं। इसमें भी पूर्ण चन्द्र के योग से अधिक बली, क्षीणचन्द्र के योग से न्यून बली होते हैं। शुक्लपक्ष की तिथि ६ से लेकर कृष्णपक्ष की ९ तक पूर्णचन्द्र तथा कृष्णपक्ष की तिथि १० से लेकर शुक्ल पक्ष की ५ तक क्षीणचन्द्र रहता है।

दृष्टिबल—इसमें दो प्रकार की दृष्टियाँ लेनी चाहिए। प्रथम पूर्ण दृष्टि यानी प्रत्येक ग्रह स्वराशि से सप्तम राशिस्थ ग्रह को पूर्ण दृष्टि से देखता है। इसके अतिरिक्त स्वराशि से मंगल ४ और ८, गुरु ५ और ९ तथा शनि ३ और १० वीं राशिस्थ ग्रह को भी 'पूर्ण-दृष्टि' से देखते हैं। यह 'पूर्ण-दृष्टि' स्वतः शुभ या अशुभ नहीं; बल्कि ग्रहानुसार शुभ या अशुभ होती है यानी मित्र-दृष्टि प्राप्त होने से ग्रह बली, शत्रु की दृष्टि से निर्बल होता है। दूसर पूर्वोक्त अंशात्मक दृष्टियोग भी विचारणीय हैं; उन दृष्टियोगों में अर्ध-केन्द्र ∠, केंद्र □ क्रान्तिसाम्य, P, सार्धकेन्द्र ⨼, ये मन्दीकारक हैं तथा द्विर्द्वादश ⚺, त्रिरेकादश ✳, त्रिकोण △, षडाष्टक ⚻, पञ्चमांश दृष्टि Q, द्विपञ्चमांश दृष्टि ⚼, ये दृष्टि-योग तेजीकारक हैं; इनमें शत्रु मित्र ग्रहों का विचार नहीं—स्वतः 'दृष्टियोगों' में ही फलोत्पादन शक्ति है।

विशेष—केन्द्रयोग □ में शनि की दशम दृष्टि और मंगल की चतुर्थ दृष्टि से, त्रिरेकादशयोग ✳ में शनि की तृतीय दृष्टि से, षडाष्टयोग ⚻ में मंगल की अष्टम दृष्टि से तथा त्रिकोणयोग △ में गुरु की नव-पञ्चम दृष्टियों से 'पूर्ण-दृष्टि' का ही फल होता है, उक्त अंशात्मक दृष्टि-योगों का नहीं।

वक्री, अतिचारी —तेजीकारक ग्रह वक्री हो तो विशेष तेजी, अतिचारी हो तो अत्यल्प तेजी, कभी मंदी भी कर सकता है। इसी प्रकार मन्दीकारक ग्रह वक्री हो तो तीव्र मन्दी, अतिचारी हो तो मामूली मन्दी अथवा अन्य ग्रहों के सहयोग में तेजी भी कर देता है। जो पदार्थ दो ग्रहों के अधीन हैं, उसका विचार दोनों के बलाबल से करना चाहिये।

प्रत्येक ग्रह के अधीन व्यापारिक वस्तुओं की सूची नीचे दी जा रही है। तेजी-मन्दी-परिज्ञान की इससे सरल और विश्वस्त पद्धति अन्य नहीं है; परीक्षा करने पर स्वतः अनुभव हो जायेगा।

सूर्य्य—माणिक्य, स्वर्ण, गुड़, खाँड़, चना, भूसा, हल्दी, सरसों, मुनक्का, औषधि, शर्बत, पीतल, लाल-पीला रंग, रंगीन और छींटदार वस्त्र, सरकारी ऋण-पत्र, पशु, वृक्षादि।

चन्द्र—मोती, चन्द्रकान्त (मून-स्टोन). कल्चर्ड मोती, चाँदी, पारा, दूध और दही, मक्खन, खोआ आदि दूध से बने पदार्थ, मछली, सर्वौषधि, फूल फल, रसदार पदार्थ, सोडावाटर, बर्फ, शीशा।

मंगल—मूँगा, अकीक सुर्ख, सोना, ताँबा, गन्ना, गुड़ ,मुनक्का, आसवारिष्ट, किशमिश, छुहारा, लौंग, किराना, कैडियम हिल लाल गेहूँ, चना, मसूर, मोंठ, लाल-सरसों, सुपारी, हल्दी, धनियाँ, लाल मिर्च,शराब, चाय, काफी, चपड़ा, लाख, लाल रंग, बारीक लाल ऊन, ऊनी वस्त्र, बारदाना लाल, समस्त धातु-पदार्थ, मशीनरी के सामान विभिन्न,शेयर्स।

बुध—पन्ना, जबरजद हरा पत्थर, अकीक विभिन्न रंग का, फीरोजा, ज्वार, बाजरा. गेहूँ, जौ, मूंग, मटर, ग्वार, अरहर, काली खेसारी, सौंफ, सर्वरस, सर्वधान्य, हरी उड़द, पीली सरसों, घी, कपास, अलसी (तीसी), एरण्डा (अण्डी), बिनौला (कांकड़ा), मूँगफली (सींगदाना), हैसियन, जूट पाट, सफेद बारदाना, रेशम, टैक्सटाइल, न्यूज-प्रिण्ट कागज, पेपर मिल्स के शेयर्स।

गुरु—पुखराज, सुनैला पत्थर, बुलियन, नमक, जमीन से पैदा होनेवाले कन्द, आलू, प्याज, अदरख आदि, नकली सिल्क, पाट (कुष्ठा), रबड़, तम्बाकू, बैंक-शेयर्स, खरड जवाहिरात, समुद्री पदार्थ, हाइड्रोखाद।

शुक्र—हीरा, वैक्रान्त, ओपल, सफेद गेहूँ, चावल, चीनी, अरहर (तुअर), रूई, रेशम, हैसियन, सिल्क, फैंसी गुड्स, स्त्रियों के सिंगार की चीजें, अत्तारों की दवायें, टैक्सटाइल्स शेयर्स।

शनि—नीलम, लाजवर्त, कसौटी, तेलहन, खनिज आदि सर्व तैल, काली तिल, तोरिया, काली उड़द, काली मिर्च, काला ऊन, काला रंग, बारनाना काली धारी, भैंस, लोहा, जस्ता, टीन, राँगा, सीसा, कांसी, संगमर्मर, चमड़ा और चमड़े की चीजें, कोलतार, आयल शेयर्स, कोयला, कोयले की खानों के शेयर्स।

राहु-केतु—वैदूर्यमणि (लहसुनिया), दुआं (तारामीरा) संगमूसा केतु के; गोमेद, फीरोजा राहु के तथा वायरलेस, टेलीफोन, तार, बिजली के सामान, एल्युमिनियम, आदि मिश्रित धातु दोनों के आधीन है।

❀ सस्य जातक ❀

कृषकगण एवं अन्य व्यापारियों के हितार्थ महर्षि बादरायणोक्त 'सस्य-जातक' के मूल श्लोक अर्थ सहित यहाँ प्रकाशित किये जाते हैं। जिस प्रकारे मानव (जातक) के भावी शुभाशुभ फल का विचार उसकी जन्म-कुण्डली से किया जाता है, उसी तरह खास-खास सूर्य संक्रातियों के समय की ग्रह-स्थिति से आगामी धान्योत्पत्ति तथा उनके मूल्य की भावी घटा-बढ़ी का भी विचार किया जाता है। यही भारतीय ज्योतिष के अर्घकाण्ड में 'सस्य-जातक' के नाम से अभिहित है।

वृश्चिकवृषप्रवेशे भानोर्ये बादरायणेनोक्ताः। ग्रीष्मशरत्सस्यानां सदसद्योगाः कृतास्त इमे ॥ १ ॥

सूर्य के वृश्चिक और वृष राशि में आनेवाली इन दो संक्रान्तियों के समय की ग्रह-स्थिति से क्रमशः ग्रीष्म और शारदीय सस्य (फसल) के उत्पत्ति के भविष्य-विचारार्थ महर्षि बादरायणोक्त शुभाशुभ योगों का उल्लेख यहाँ किया जाता है। ध्यान रहे, सस्य-जातक में किसी स्थान विशेष के लिए उक्त संक्रान्तियो के समय की लग्न-कुण्डली का उपयोग न करके सूर्य-राशि-कुण्डली से सार्वदेशिक विचार किया जाता है यानी सूर्य राशि को ही लग्न (प्रथम भाव) में तथा अन्य ग्रहों को उनकी राशियों के अनुसार विभिन्न भावों में स्थापित कर कुण्डली बनाते तथा उसके शुभाशुभ (निम्नाङ्कित) ग्रह-योगों के आधार पर भविष्य-विचार करते हैं।

भानोरलिप्रवेशे केन्द्रैस्तस्माच्छुभग्रहाक्रान्तैः। बलवद्भिः सौम्यैर्वा निरीक्षिते ग्रैष्मिकविवृद्धिः ॥ २ ॥

सूर्य के वृश्चिकस्थ होने पर उससे केन्द्रिय (१।४।७।१० वें) भावों में शुभ ग्रह हों अथवा बलवान शुभ ग्रहों से सूर्य दृष्ट हो तब ग्रैष्मिक धान्यों की अभिवृद्धि होती है। अक्षीण चन्द्र, बुध, गुरु, और शुक्र शुभ ग्रह हैं। जो ग्रह उच्च, मूलत्रिकोण, स्वगृही, मित्रराशिस्थ, उदित, मित्रयुत, दृष्ट होता है, वह बली होता है तथा नीच, शत्रुराशिस्थ, अस्त, शत्रुयुतदृष्ट होता है, वह निर्बल होता है। शुक्लपक्ष की तिथि ६ से लेकर कृष्णपक्ष की ९ तिथि चन्द्र तक बली(अक्षीण) शेष तिथियों में निर्बल(क्षीण) रहता।

अष्टमराशिगतेऽर्के गुरुशशिनोः कुम्भसिंहसंस्थितयोः। सिंहघटसंस्थयोर्वा निष्पत्तिर्ग्रीष्मसस्यस्य ॥ ३ ॥

वृश्चिक में सूर्य हो तब कुम्भ में गुरु और सिंह में चन्द्रमा हो अथवा सिंह से गुरु और कुम्भ में चन्द्रमा हो तो ग्रीष्म-धान्य की पैदावार अच्छी होती है।

अर्कात्सिते द्वितीये बुधेऽथवा युगपदेव वा स्थितयोः। व्ययगतयोरपि तद्वन्निष्पत्तिरतीव गुरुदृष्टया ॥ ४ ॥

लग्नस्थ वृश्चिक के सूर्य से दूसरे शुक्र या बुध या दोनों ही हों अथवा वृश्चिकस्थ सूर्य से बुध या शुक्र अथवा दोनों ही बारहवें हों तब ग्रीष्म-धान्यों की निष्पत्ति होती है। यदि उपर्युक्त योग के साथ वृश्चिक पर गुरु की पूर्ण दृष्टि भी हो तब तो अत्यधिक धान्योत्पत्ति होती है।

शुभमध्येऽलिनि सूर्याद्गुरुशशिनोः सप्तमे परा सम्पत्। अल्यादिस्थे सवितरि गुरौःद्वितीयेऽर्धनिष्पत्तिः ॥५॥

शुभ ग्रहों के मध्यगत वृश्चिक के सूर्य से गुरु, चन्द्र सप्तम स्थानीय हो तो धान्य-निष्पत्ति उत्तम होती है। (सप्तम स्थान में गुरु, चन्द्र के होने से शेष दो शुभ ग्रह बुध और शुक्र के बीच में रवि होने से ही वह शुभ मध्यगत होगा यानी बुध और शुक्र में-से एक सूर्य से आगे, दूसरा पीछे वृश्चिक राशि में ही हो अथवा आगे पाछे के गृहों में हो।)

वृश्चिक के आदि में सूर्य और उससे द्वितीय भाव में गुरु हो तो धान्यों की आधी निष्पत्ति होती है।

लाभहिबुकार्थयुक्तैः सूर्याद्ऽलिगात्सितेन्दुशशिपुत्रैः। सस्यस्य परा सम्पत् कर्मणि जीवे गवां चाणग्रयम ॥६॥

वृश्चिकस्थ सूर्य से ग्यारहवें शुक्र अथवा चन्द्र, दूसरे बुध हो तो धान्यों की उत्तम उपज हो। पूर्वोक्त योग के अतिरिक्त दसवें गुरु भी हो तब तो धान्यों की प्रचुर पैदावार के साथ गौवों से दुग्ध भी अधिक प्राप्त हो।

कुम्भे गुरुर्गवि शशी सूर्योऽलिमुखे कुजार्कजौ मकरे। निष्पत्तिरस्ति महती पश्चात परचक्ररोगभयम् ॥७॥

कुम्भ का गुरु, वृष का चन्द्र, वृश्चिक के प्रथमांश का सूर्य हो तथा भौम और शनि मकर राशि के हों तब धान्यों की उत्पत्ति अच्छी होती है; किन्तु देश में शत्रुओं के कुचक्र और रोगों का भय भी होता है।

मध्ये पापग्रहयोः सूर्यः सस्यं विनाशयत्यलिगः। पापः सप्तमराशौ जातं जातं विनाशयति ॥ ८ ॥

पाप-ग्रह के मध्य में वृश्चिकस्थ रवि हो तो धान्य का नाश ने होता है। पाप-ग्रह सप्तम राशि (वृष) में हो तो अन्न-धान्य उत्पन्न होने पर भी नष्ट हो जाते हैं।

अर्थस्थाने क्रूरः सौम्यैरनिरीक्षतः प्रथमजातम् । सस्यं निहन्ति पश्चादुप्तं निष्पादयेद्वचक्तम् ।। ९ ।।

वृश्चिक के सूर्य से द्वितीय स्थान में क्रूर हो और उसको शुभ ग्रह देखता हो तो पहली बुआई के बीजांकुर (पौधे) नष्ट हो जाते हैं, पुनः बोने पर धान्योत्पत्ति होती है।

जामित्रकेन्द्रसंस्थौ क्रूरौ सूर्यस्य वृश्चिकस्थस्य । सस्यविपत्ति कुरुतः सोम्यैर्दृष्टौ न सर्वत्र ।। १० ।।

सूर्य के वृश्चिक में आने पर पाप-ग्रहों में-से कोई एक सप्तम स्थान में एवं दूसरा १, ४, या १० वें स्थान में हो तो धान्य नाश होता है, परन्तु उन पाप-ग्रहों पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो सब प्रदेशों में धान्य-नाश नहीं होगा, अर्थात् कहीं फसल बिगड़ेगी, कहीं नहीं।

वृश्चिकसंस्थादर्कात् सप्तमषष्ठोपगौ यदा क्रूरौ । भवति तदा निष्पत्तिः सस्यानामर्घपरिहानिः ।। ११ ।।

वृश्चिक के सूर्य से पाप-ग्रहों में-से एक सातवें और दूसरा छठे स्थान में हो तो धन्योत्पत्ति होती है, एवं उनके मूल्य की हानि होती यानी भाव गिर जाता है, किन्तु संगृहीत होने पर आगे उनका भाव बढ़ जाता।

विधिनानेनैव रविर्वृषप्रवेशे शरत्समुत्थानाम् । विज्ञेयः सस्यानां नाशाय शिवाय वा तज्ज्ञैः ।। १२ ।।

इसी प्रकार से शारदीय धान्य के नाश अथवा वृद्धि का परिज्ञान सूर्य के वृष राशि-प्रवेश-काल में उपर्युक्त सब ग्रह-योगों के द्वारा करना चाहिए।

त्रिषु मेषादिषु सूर्यः सौम्ययुतो वीक्षितोऽपि वा विचरन् । ग्रैष्मिकधान्यं कुरुते समर्घमुभयोपयोग्यं च ।।१३।।

सूर्य के मेष, वृष और मिथुन राशि में प्रवेश करने पर वह शुभ चन्द्र, बुध, शुक्र या गुरु से युत अथवा दृष्ट हों तो ग्रैष्मिक-धान्य (रबी की फसल) सस्ती होती है जिससे इहलौकिक बन्धु-बान्धवों के लिए तथा पारलौकिक धर्म-कृत्यों से उनका यथेष्ट उपयोग होता है।

कार्मुकमृगघटसंस्थः शारदसस्यस्य तद्वदेव रविः । संग्रहकाले ज्ञेयो विपर्ययः क्रूरदृग्योगात् ।। १३ ।।

धनु, मकर, कुम्भ इन राशियों का सूर्य शुभ ग्रहों से युत या दुष्ट हो तो शारदीय-धान्य (खरीफ की पैदावार) का फल ग्रैष्मिक उपज के समान जाने। ये फल किसानों को कृषि-कर्म द्वारा धान्य-लाभ के विषय में समझना चाहिए व्यापारियों द्वारा अनाज संगृहीत हो जाने पर उसके विक्रय के समय अर्घ (मूल्य) की ह्रास वृद्धि (भावों की घटा-बढ़ी) के विषय में उस वक्त की संक्रान्ति-कुण्डली के उपर्युक्त ग्रह-योगों का ठीक विपरीत (उल्टा) फल समझें। यही बड़े मर्म (रहस्य) का विषय है। विशेष स्पष्टीकरण के लिए एक श्लोक 'ताजिक नीलकण्ठी' का का तथा दूसरा 'हायन-बोध' का यहाँ दे देते हैं—

"मेषे वृषे च मिथुने शुभयुक्तदृष्टे न ग्रैष्मिकं तु सुलभं भविता पृथिव्याम् । सौम्ये धनुर्मृगघटेषु च सारधान्यं कुर्यात्समर्घमशुभैः सहितो महर्घम् ।।"

इस श्लोक का बिल्कुल स्पष्ट अर्थ है कि मेष, वृष और मिथुन-संक्राति के समय ये राशियां शुभ ग्रहों से युत अथवा दृष्ट हों तो पृथ्वी पर ग्रीष्म-ऋतु (रबी) का अन्न सुलभ (सस्ता) न रहे यानी उनका बाजार-भाव बढ़ जाय, किन्तु चौखम्भा-संस्कृत-सीरीज से प्रकाशित टीका (सन् १९५० पृष्ठ ४३४) में ठीक इसके विपरीत अर्थ दिया गया है यानी उक्त योग से ग्रीष्म में होनेवाले अन्न दुनियां में सस्ता हो।' शास्त्र के मर्मस्थल तक न पहुँचने के कारण प्रसिद्ध टीकाकार भी कैसा अनर्थ कर जाते हैं, इसका यह एक प्रत्यक्ष उदाहरण है। इसी प्रकार दसरे श्लोकार्द्ध में ताजिककार कहते है कि धन, मकर और कुम्भ की सूर्य-संक्रान्ति के समय ये राशियां सौम्य (शुभ) ग्रह से युत या दृष्ट हों तो शरद ऋतु (खरीफ) के आन्नों के भाव समर्घ (मन्दा) हो, अशुभ ग्रह से युत दुष्ट होने से महर्घ (तेज) हो। इस अर्थ को यहाँ किसानों के लिए समझना चाहिए। व्यापारियों द्वारा अन्न खरीद और संग्रह कर लिए जाने के बाद बाजार में उनके विक्रय के समय उक्त योगों का विपरोत ही फल होगा, जैसा कि सस्य-जातक के उपर्युक्त १४ वें श्लोक की टीका में समझाया गया है।

सवितृसहितः संपूर्णो ता शुभैर्युतवीक्षितः । शिशिरकिरणः सद्योऽर्घस्य प्रवृद्धिकरः स्मृतः ।
अशुभसहितः संदृष्टो वा हिनस्त्यथवा रविः । प्रतिगृहगतान भावान वुद्ध्वा वदेत्सदसत्फलम् ।।

अमावस्या अथवा पूर्णिमा को चंद्रमा शुभ ग्रहों से युत, दृष्ट हो तो शीघ्र ही अर्घ की वृद्धि करता है अर्थात् व्यापारी वस्तुओं के भाव (विशेषतः पर्वान्तयोगकारी नक्षत्राधीन वस्तुओं के भाव) बढ़ जाते हैं। यदि उक्त समय चंद्रमा अशुभ ग्रहों से युत दुष्ट हो तो उन वस्तुओं के भाव घट जाते हैं, उनमें मन्दी आ जाती है। इसी प्रकार प्रत्येक राशि में सूर्य के प्रवेश(सक्रान्ति)-काल की कुण्डली में यदि सूर्य शुभ ग्रहों से युत, दुष्ट हो तो सूर्य-राशि के प्रभावान्तर्गत वस्तुओं का अर्घ (मूल्य-बाजार-भाव) बढ़ जाता है। यदि सूर्य पाप-ग्रहों से युत, दृष्ट हो तो सूर्य की राशि के प्रभावान्तार्गत वस्तुओं के अर्घ (मूल्य) की हानि होती यानी उनमें मन्दी आती है।

❀ कुण्डली–निर्माण की वैज्ञानिक पद्धति ❀

— प्रत्येक ज्योतिषी के लिये खगोल शास्त्र की जरूरी जानकारी —

खगोल-प्रवेश—बिंदु, रेखा, वृत्त आदि ज्यामिति के विषय हैं तथा उत्तर दक्षिण अक्षांश, पूर्व पश्चिम रेखांश विषुवत् रेखा (भूमध्य-रेखा) आदि विषय भूगोल में हैं। इस निबन्ध में कुण्डली-गणित की वैज्ञानिक पद्धति का निरूपण किया गया हैं। अतः इसके पाठकों से आशा की जाती है कि वे उपर्युक्त ज्यामितीय और भौगोलिक विषयों का सामान्य ज्ञान रखते हैं, जिससे इस लेख में वह सब विवरण देना अनावश्यक समझा गया है। अलबत्त, इसमें खगोल विषयक अनेक पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग हुआ है जिनके बिना कुण्डली-निर्माण के वैज्ञानिक पहलू को समझा समझाया नहीं जा सकता। अतः निबन्धान्तंगत पारिभाषिक शब्दों से सूचित कतिपय खगोलीय वृत्त आदि पदार्थों का संक्षिप्त परिचय मैं यहाँ दे रहा हूँ।

१. गोल (Sphere)—बिंदु से रेखा, रेखा से वृत्त तथा वृत्त से गोल की उत्पत्ति होती है। अर्धवृत्त को अपने स्थिर व्यास पर चारो ओर घुमाने से वह जितने घनात्मक स्थान को घेरता है, उसको गोल या गोला कहते हैं। गोले के प्रत्येक बिंदु की दूरी उसके एक निश्चित स्थिर केन्द्र-बिंदु से समान रहती है।

२. खगोल (Celsetial Sphere)—उस कल्पित रूप से खोखले गोले को कहते हैं जिसकी भीतरी सतह पर यावत् आकाशीय तारे एवं ग्रह पिंडादि निरूपित किये जाते हैं और जिसका केंद्र स्वयं द्रष्टा होता है। द्रष्टा के क्षितिज से ऊपरवाले खगोल का आधा भाग ही उसे हर-एक समय में दृश्य होता है, शेष आधा भाग क्षितिज से नीचे रहने के कारण अदृश्य रहता है।

३. धरातल (Plane)—जहाँ केवल दैर्घ्य एवं विस्तारमात्र हो, पिण्ड कुछ भी न हो, उसे धरातल कहते हैं। जिस धरातल को सरल (सीधी) रेखा सर्वांशतया स्पर्श करे, वह सम धरातल या 'समतल' या केवल 'तल' (Plane) कहा जाता है; उससे भिन्न विषम धरातल समझिये।

४. महद्वृत्त एवं लघुवृत्त (Great Circles & Small Circles)—खगोलवर्ती प्रत्येक धरातल वृत्ताकार होता हैं। और जिस वृत्त का धरातल खगोल के केंद्र से होकर जाय, वह 'महद् वृत्त' कहा जाता है तथा उसी को त्रिज्या वृत्त भी कहते हैं; उस महद् वृत से भिन्न गोलान्तंगत वृत्त को 'लघुवृत्त' कहते हैं।

५. खगोलीय वृत्त-केन्द्र (Centres of Spherical Circles)—खगोल-पृष्ठगत वृत्तों के तीन केंद्र होते हैं; एक खगोलान्तर्गत गर्भ-केंद्र तथा दो पृष्ठ-केंद्र होते हैं। जैसे, वृत्त के परिधिगत प्रत्येक बिंदु से तुल्य दूरी पर जो बिंदु रहता है, वह उस वृत्त का केंद्र कहलाता है; अतएव वह गोलगर्भ में एक केंद्र हुआ तथा इस केंद्र से वाम एवं दक्षिण तरफ जानेवाली सरल रेखा खगोल-पृष्ठ के जिन दो बिंदुओं को स्पर्श करती है, वे दो पृष्ठ-केन्द्र हुये। इस तरह हर खगोलीय वृत्त के तीन केन्द्र-बिन्दु होते हैं।

६. क्रांतिवृत्त, नाक्षत्र वर्ष और नाक्षत्र दिन (Ecliptic, Sidereal Year & Day)—आकाशीय अन्य ग्रहों की भाँति हमारी पृथ्वी भी एक ग्रह है। ग्रह उस खगोलवर्ती पिण्ड को कहते हैं जो किसी अन्य स्थिरप्राय खगोलवर्ती पिण्ड के चारों ओर घूमता हो। वह पिण्ड जो स्वयं किसी अन्य पिण्ड की परिक्रमा नहीं करता, तारा कहलाता है। इस दृष्टि से सूर्य भी एक तारा है, जिसके चारों ओर पृथ्वी तथा अन्य ग्रह घूमते रहते हैं। पृथ्वी आदि ग्रहों के सूर्य के चतुर्दिक् भ्रमण करने (Revolution) से आकाश में उनके जो भ्रमण-मार्ग बनते हैं, वे उनके कक्षा-पथ या केवल कक्षा (Orbit) कहे जाते हैं। खगोलस्थ पृथ्वी का कक्षा-पथ क्रांतिवृत्त कहलाता है जिसके पृष्ठ-केन्द्र को कदम्ब कहते हैं। क्रांतिवृत्त को राशि-वलय (Ecliptic) भी कहते हैं। क्रांतिवृत्त के किसी स्थिर बिन्बु या नक्षत्र से चलकर पुनः उस बिन्दु पर आने में पृथ्वी को जितना समय लगता है, वह नाक्षत्र सौरवर्ष (Sidereal Solar Year) कहा जाता है।

पृथ्वी में सूर्य की परिक्रमा के अलावा अन्य गतियाँ भी है। जैसे, पृथ्वी के उत्तर दक्षिण ध्रुवों के बीच में एक सरल रेखा खींची जाय तो वह भूगर्भ-केन्द्र से होती हुई दोनों को मिला देगी। इसी कल्पित रेखा को पृथ्वी का भ्रमणाक्ष या केवल अक्ष कहते हैं। भ्रमणाक्ष कहने का कारण यह है कि पथ्वी सदैव इस कल्पित रेखा के चारों ओर घूमती रहती है। पृथ्वी अपने अक्ष पर पश्चिम से पूर्व की ओर घूमती है, इसलिए सूर्य तारे आदि रोज पूर्व से पश्चिम की ओर जाते दिखाई पड़ते हैं, जैसाकि श्रीआर्यभट ने कहा है—'अनुलोम गतिनौंस्थः पश्चत्यचलं विलोमगं यद्वत्।' पृथ्वी को अपने अक्ष पर एक बार घूम जाने (Rctation) में ६० नाक्षत्र घटी या २४ घण्टे लगते हैं। इसको 'नाक्षत्र अहोरात्र' (Sidcreal Day) भी कहते हैं।

७. नाड़ीवृत्त. उत्तरगोल और दक्षिणगोल (Celestial Equator, North & South Hemisphere)—उपर्युक्त क्रांतिवृत्त पर हमारी पृथ्वी का अक्ष लम्ब नहीं है; बल्कि कुछ झुका हुआ है जिसके कारण उसके और क्रांतिवृत्त के समतल में करीब ६६।। अंश का अन्तर है। इस तरह क्रांतिवृत्त पर तिर्यक् झुकी हुई पृथ्वी के केन्द्र और दक्षिणोत्तर ध्रुवों से जानेवाली सरल रेखा खगोलपृष्ठ के जिन दो बिन्दुओं को स्पर्श करती है, वे क्रमशः खगोलीय दक्षिण एवं उत्तर ध्रुव या ध्रुवस्थान कहे जाते हैं। उत्तर ध्रुव-बिन्दु के समीपस्थ तारे को ध्रुवतारा Ψ कहते हैं। ध्रुव-बिन्दु से ९० अंश के व्यासार्ध से खींचे गये वृत्त को विषुवद् वृत्त कहते हैं एवं इस विषुवद् वृत्त के पृष्ठ-केन्द्र उत्तर, दक्षिण ध्रुव-बिन्दु हैं। पृथ्वी के दक्षिणोत्तर ध्रुव-स्थान एवं खगोलीय ध्रुव-स्थान एक सूत्रगत होने के कारण भूगोल का विषुवद्वृत्त और खगोलीय विषुवद्वृत्त दोनों एकही 'धरातल' (Plane) में हैं और जिस तरह भौगोलिक विषुवद्वृत्त भूगोल को उत्तरी भूगोलार्ध एवं दक्षिणी भूगोलार्ध, इन दो भागों में विभाजित करता है, उसी तरह खगोलीय विषुवद्वृत्त खगोल को 'उत्तर गोल' एवं 'दक्षिण गोल', इन दो भागों में विभाजित करता है। खगोलीय विषुवद्वृत्त को भारतीय सिद्धान्त-ज्योतिष में नाड़ीवृत्त अथवा नाडीवलय भी कहा गया है; क्योंकि इसी वृत्त में होरादि या घट्यादि काल-गणना की जाती है। घटी का ही दूसरा नाम नाड़ी है। खगोल में यह वृत्त क्रांतिवृत्त से करीब २३।। अंश का कोण बनाता है जिसको परमक्रांति-कोण कहते।

८. परमक्रांति (Obliquity of Ecliptic)—यह न समझना चाहिये कि उक्त परमक्रांति-कोण का मान स्थिर है। चूंकि पृथ्वी का अक्ष अति मंद गति से ध्रुवतारा की ओर हट रहा है; अतः जो कोण पहले विषुवद् वृत्त और क्रांतिवृत्त में बनता था, वह अब नहीं है और कालान्तर में वर्तमान कोण भी नहीं रहेगा। पहले उक्त कोण का मान २४ अंश था जिसका परम क्रांति के रूप में उल्लेख भारतीय सिद्धान्त-ज्योतिष में मिलता है। आज वह घटकर करीब २३ अंश २७ कला हो गया है।

९. अयन-चलन, अयनांश (Precession of Equinox & Ayanamsha)—आधुनिक ज्योतिर्वैज्ञानिकों ने गति-विज्ञान से यह निश्चित किया है कि पृथ्वी का अक्ष खगोल में कदम्ब के चारों ओर परम क्रांतितुल्य व्यासार्ध के वृत्त में घूमता है और वह करीब २६००० वर्षों के बाद अपने पूर्व स्थान पर आ जाता है।* इस तरह पृथ्वी में कुलाल चक्रवत् और रथचक्रवत इन दो गतियों के अलावा अक्षभ्रमणरूपी यह तीसरी गति भी होती है और इसी गति के कारण अयनचलन एवं तज्जन्य अयनांश की उत्पत्ति होती है। पृथ्वी में इस तीसरी गति के अतिरिक्त अन्य गतियाँ भी हैं; किन्तु इस लेख के पाठकों के लिए पृथ्वी की उपर्युक्त त्रिधा गति का परिचय ही पर्याप्त है।

ज्यामिति के प्रमेयानुसार दो वृत्त एक दूसरे को दो से अधिक बिंदुओं पर नहीं काटते। इस नियम से क्रांतिवृत्त विषुवद्वृत्त से २३।। अंश का कोण बनाता हुआ उसे दो बिंदुओं पर काटता है जो क्रांतिवृत्ति और विषुवद्वृत्त के पारस्परिक संपातजन्य होने के कारण संपात-बिंदु कहे जाते हैं। इनमें-से एक बिन्दु को बसन्तसंपात तथा दूसरे को शरत्संपात कहते हैं। इन दोनों में बसन्तसंपात मुख्य है; क्योंकि यह सायन राशि-चक्र और खगोलीय विषुवद् वृत्त दोनों का आरम्भस्थान है अर्थात् बसन्तसंपात ही सायन मेषादि बिन्दु है और वहीं से क्रांतिवृत्त में ग्रहादि के सायन भोगांश तथा विषुवद् वृत्त में उनके विषुवांश (१ से ३६० अंश तक) नापे जाते हैं। अतः खगोलीय गणित में इस बिन्दु (बसन्तसंपात) की सर्वाधिक महत्ता एवं उपयोगिता है। पृथ्वी की पूर्वोक्त तीसरी गति के कारण उक्त दोनों संपात-बिन्दु करीब ५०″ विकला की वार्षिक गति के पीछे (पश्चिम की ओर) खिसकते जा रहे हैं; इसी को अयन-चलन (Precession of Equinox) कहते हैं। 'अयन-चलन यदुक्तं मुञ्जालाद्यैः स एवायम्।' (भास्कराचार्य) भारतीय भचक्र का आदि बिन्दु उक्त सायन मेषादि-बिन्दु की भाँति सचल नहीं है; बल्कि वह क्रांतिवृत्त पर कल्पित एक स्थिर बिन्दु है जिसकी स्थिति चित्रा तारा के ठीक सामने करीब १८० अंश पर है। इस स्थिर मेषादि बिन्दु से बसंतसंपात-बिंदु की दूरी अयनांश

Ψ ठीक खगोलीय ध्रुवबिन्दु पर कोई तारा नहीं है। उत्तर ध्रुवबिन्दु के समीपतम लघुरिक्ष तारापुञ्ज का एक सबसे तेजस्वी तारा है, जो ध्रुवबिन्दु से ५७′ की कोणीय दूरी पर है। अतः वर्तमान समय में इसे ही ध्रुवतारा कहा जाता है। आगामी सन् २१०५ ई० तक ध्रुवबिन्दु ध्रुवतारा की ओर क्रमशः अग्रसर होता रहेगा; तब वह ध्रुवतारा से केवल ३०′ दूर रहेगा; तत्पश्चात् ध्रुवतारा की तरफ से हटना आरम्भ कर देगा; "ध्रुवतारा स्थिरां ग्रंथे मन्यते ते कुबुद्धयः साकं तैस्तु विवादोऽपि सतां मूढत्वमेवहि ॥ (कमलाकर भट्ट)।" सिद्धान्त-ज्योतिष में ध्रुवबिन्दु गणितोपयोगी तथा ध्रुवतारा वेधोपयोगी होता है जिनके द्वारा किसी स्थान का अक्षांश सरलतया ज्ञात कर लिया जाता है; 'यंत्रवेधविधिना ध्रुवोन्नतिर्या नतिश्च भवतो अक्षलम्बको।' (भास्कराचार्य)

* उत्तरतो याम्यदिशं याम्यान्तात् तदनु सौम्यदिग्भागम्। परिसरतां गगनसदां चलनं किञ्चिद्भवेदपमे॥ (मुंजाल)

कहते हैं। यही चित्रा तारा से शरदसंपात-बिंदु की दूरी भी होने के कारण उक्त अयनांश को चित्रापक्षीय कहा जाता है। इसका स्पष्ट मान पहली जनवरी सन् १९७४ ई० को अंशादि २३°-२९′-५५″ है और इसमें अयन-चलन के कारण प्रतिवर्ष ५०″·२७ विकला की वृद्धि हो रही है। भारतीय स्थिर मेषादि बिंदु से नापी गयी ग्रह नक्षत्र तारादि की दूरी अयनांश रहित होती है; अतः उस दूरी के अंशादि को निरयण भोगांश कहा जाता है। भारतीय ज्योतिष निरयण गणनामूलक है। अतएव भारतीय ज्योतिष-ग्रन्थों एवं पञ्चाङ्गों में जहाँ निरयण विशेषण के बिना केवल भोगांश का उल्लेख होता है, उसे निरयण भोगांश ही समझना चाहिए; सायन ग्रहादि के राश्यादि भोग के लिए उनके साथ विशेष रूप से सायम शब्द का प्रयोग किया जाता है। कुण्डली के यथार्थ गणित में भी पहले उसके ग्रह, लग्न और दशम के सूक्ष्म सायन भोगांश सिद्ध किये जाते हैं, फिर उनमें तात्कालिक अयनांश घटाकर उन्हें निरयण बना लिया जाता है; तत्पश्चात् कुण्डली के द्वादश-भावों में निरयण ग्रह यथास्थान स्थापित कर दिये जाते हैं। यही निरयण कुण्डली भारतीय होराशास्त्रानुसार फलितोपयुक्त होती है।

१०. अयन-मण्डल (Circle of Solstice)—ऊपर बतलाये गये बसंत संपात और शरत् संपात-बिन्दु क्रांति वृत्त और विषुवद्वृत्त के संपात से बनते हैं जो महद्वृत्त हैं। गोलान्तर्गत महद्वृत्तों के संपात जन्य दो बिन्दुओं में १८० अंश (६ राशि) का अन्तर रहता है। अतः बसंतसंपात अर्थात् सायन मेषादि बिन्दु से क्रांतिवृत्त पर शरत्संपात का अन्तर ६ राशि होने से वही सायन तुलादि बिन्दु भी है। सायन मेषादि एवं तुलादि बिन्दुओं को गोलसंधि भी कहते हैं। गोलसंधि से ९० अंश पर खगोलीय ध्रुव एवं कदम्ब दोनों हैं; इन दोनों पर से जानेवाले वृत्त को अयनवृत्त या अयन-मण्डल कहते हैं। यह क्रांत्तिवृत्त के जिन दो बिन्दुओं को स्पर्श करता है उन्हें अयनसंधि कहते हैं। सायन मेषादि से ९० अंश (३ राशि) पर प्रथम अयनसंधि होने से वही सायन कर्कादि बिन्दु भी है तथा सायन तुलादि से ९० अंश (३ राशि) पर द्वितीय अयन-संधि होने से वही सायन मकरादि बिंदु भी है। इस तरह क्रांतिवृत्त के जिस आधे भाग में सायन कर्कादि से सायन धनु राश्यंत तक की छः राशियाँ हैं, वह दक्षिण अयन-मण्डलार्ध है तथा क्रांतिवृत्त के जिस आधे भाग में सायन मकरादि से सायन मिथुनान्त तक की छः राशियाँ हैं, वह उत्तर अयनमण्डलार्ध है। सूर्य जब तक उत्तर अयन-मण्डलार्ध में रहता है तब तक का समय उत्तरायण और जब तक वह दक्षिण अयनमण्डलार्ध में रहता है तब तक का समय दक्षिणायन कहा जाता है। इसी भाँति क्रांतिवृत्त के जिस आधे भाग में सायन मेषादि से सायन कन्या राश्यंत तक की छः राशियाँ हैं, वह उत्तरगोल में तथा क्रांत्तिवृत्त के जिस आधे भाग में सायन तुलादि से सायन मीनान्त तक की छः राशियाँ हैं, वह दक्षिण गोल में है। इन उत्तर दक्षिण गोल की राशियों में सूर्य के भ्रमणवशात् ही जंत्री पञ्चाङ्गों में एतत्कालिक उत्तर, दक्षिण गोल उल्लिखित रहता है।

११. शर और क्रान्ति (Celestial Latitude & Declination)—क्रांतिवृत्त से नक्षत्र ग्रह-पिण्डादि की दक्षिणोत्तर दूरी को उन ग्रहादि का दक्षिण या उत्तर शर कहते हैं। यह दूरी निकटस्थ कदम्ब की सीध में नापी जाती है। इसी तरह खगोलीय विषुवद्वृत्त से नक्षत्र ग्रह पिण्डादि की दक्षिणोत्तर दूरी उनकी दक्षिण या उत्तर क्रांति कही जाती है जो निकटस्थ ध्रुवबिन्दु की सीध में नापी जाती है। अब इसके खगोलीय स्वरूप को समझने के पहले यह जान लेना होगा कि दक्षिणोत्तर कदम्बों में कीलित (अर्थात् जड़े हुए) ऐसे चल वृत्त को कदम्बप्रोत वृत्त कहते हैं जिसे खगोलीय किसी नक्षत्र ग्रहादि पिण्ड से संलग्न किया जा सकता है। इसी तरह दक्षिणोत्तर दोनों ध्रुवों में कीलित चल वृत्त को ध्रुवप्रोत वृत्त कहते हैं। अब अभीष्ट नक्षत्र या ग्रह-बिम्ब से कदम्बप्रोत वृत्त को संलग्न करने पर वह क्रांतिवृत्तको जहाँ स्पर्श करे, वहाँ से ग्रह-बिम्ब तक जो कदम्बप्रोतवृत्त का चापीय खण्ड होगा, वही उक्त ग्रह का शर होगा एवं उसका अंशादि मान शर के अंशादि होंगे तथा ग्रह-बिम्ब के निकटस्थ कदम्ब की दिशा ही शर की दिशा होगी; इसी तरह नक्षत्र या ग्रह-बिम्ब से ध्रुवप्रोतवृत्त को संलग्न करने पर वह विषुवद्वृत्त को जहाँ स्पर्श करे, वहाँ से ग्रह-बिम्ब तक जो ध्रुव-प्रोतवृत्त का चापीय खण्ड होगा, वह उक्त ग्रह की क्रान्ति होगी, एवं उक्त खण्ड का अंशादि मान क्रांति के अंशादि होंगे तथा ग्रहबिम्ब के निकटस्थ ध्रुवस्थान की दिशा ही क्रान्ति की दिशा होगी।

१२. भोगांश, विषुवांश और विषुवकाल (Longitude, R. A. in degrees & R. A. in time)—ग्रहादि के बिम्ब पर कदम्बप्रोत वृत्त संलग्न करने पर वह क्रांतिवृत्त को जिस स्थान पर स्पर्श करता है, उसे उक्त ग्रहादि का चिन्ह कहते हैं। बसन्त-संपात (सायन मेषादि-बिन्दु) से उक्त चिन्ह तक के क्रांतिवृत्तीय अंशादि ही उक्त ग्रह के सायन भोगांश होते हैं तथा स्थिर मेषादि बिन्दु से ग्रहचिन्ह तक के उक्त अंशादि उसके निरयण भोगांश होते हैं। इसी तरह ग्रह-बिम्ब पर ध्रुवप्रोत वृत्त को संलग्न करने पर वह विषुवद्वृत्त को जिस स्थान पर स्पर्श करेगा, वह ग्रह ग्रह का विषुवद्वृत्तीय चिह्न होगा एवं बसन्त-सम्पात से उक्त चिह्न तक के अंशादि ग्रह के विषुवांश यानी विषुवद्वृत्तीय
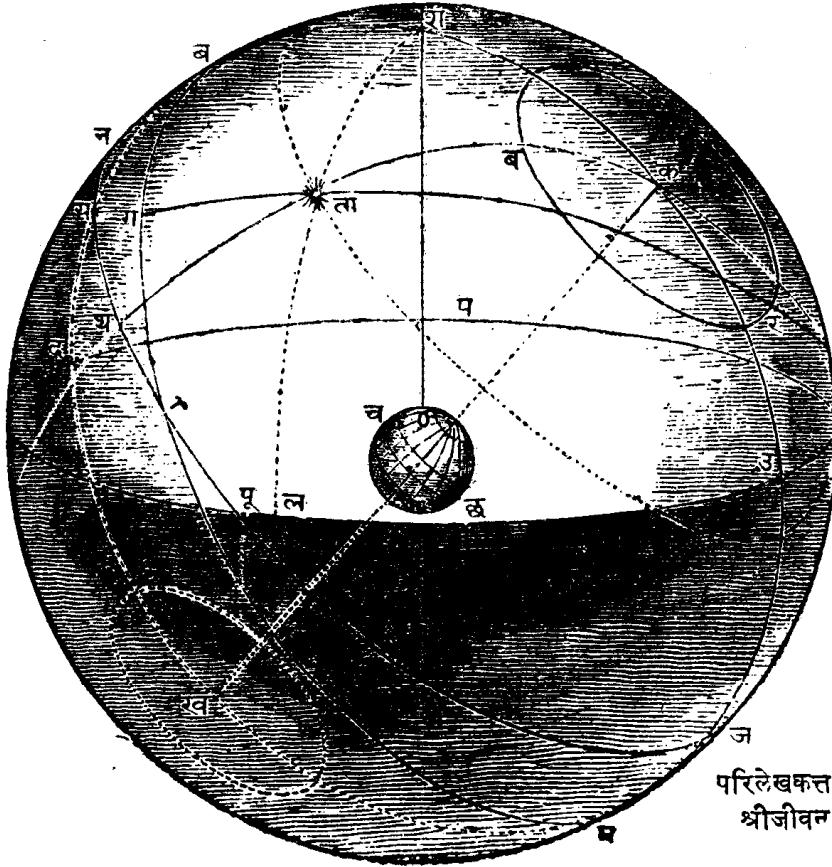
क ख खगोलीय उत्तर और दक्षिण ध्रुव-बिन्दु North and South poles of Celestial Equator

च छ भौगोलिक विषुवद् रेखा Earth's Equator

O भू-पृष्ठीय द्रष्टा का स्थान Observer's Place on the Earth's surface

ता तारा या ग्रह Star or planet (T)

♈ सायन मेषादि बिन्दु First point of Aries

श क उ ख द याम्योत्तर वृत्त Meridian-Circle

न ♈ ज खगोलीय विषुवद् वृत्त Celestial Equtor

क ब ता थ ध्रुवप्रोत वृत्त Circle of Declination

♈ थ ता का विषुवांश Right Ascension (R.A.) of T

त था ता की क्रांति Declination of T

ब ♈ म क्रांतिवृत्त Eclliptic

र कदंब pole of Ecliptic

र ता ग कदंबप्रोत वृत्त Circle of Latitude

♈ ग 'ता' का सायन भोग Tropical longitude of T

पू क स प द क्षितिज-वृत्त Horizon-Circle

पू उ प द क्षितिजस्थ पूर्व, उत्तर, पश्चिम और दक्षिण-बिन्दु East, North, West and South-points on the Horizon

श शीर्ष-बिंदु Zenith point

श ० सममण्डल Prime Vertical

अ ता ह अहोरात्र वृत्त Diurnal Circle

श ता ल दृक्वृत्त Vertical Circle

श ता ता का नतांश Zenith distance of T

ल ता ता का उन्नतांश Altitude of T

ल ज उत्तर-बिन्दु से ता का दिगंश Azimuth of T from the North-point

भोगांश होगा। यह भोगांश घटघादि या होरादि (घंटादि) काल में परिवर्तित करने से 'विषुवं काल' होता है। वृत्त के १ से ३६० अंश तक के प्रत्येक अंक १० पल अथवा ४ मिनट के तुल्य होते हैं; अत: इसी दर से विषुवांश को विषुकाल के रूप में भी व्यक्त एवं प्रयुक्त किया जाता है।

१३. वास्तविक और प्रतीयमान क्षितिज-वृत्त (Apparent Horizon & True Horizon)—भूपृष्ठस्थ द्रष्टा के चारो ओर ९० अंश के व्यासार्ध से खींचा गया वह कल्पित वृत्त, जिसकी परिधि पर पृथ्वी और आकाश परस्पर सटे मालूम पड़ते हैं, प्रतीयमान क्षितिज वृत्त होता है। यह वास्तविक क्षितिज नहीं है; क्योंकि तत‌द्देश का क्षितिज भिन्न होता है। वास्तविक क्षितिज प्रतीयमान क्षितिज के समानान्तर और भू-व्यासार्ध-तुल्य अंतर पर भू-पृष्ठस्थ द्रष्टा के नीचे रहता है। वह हमें दीख नहीं पड़ता; किन्तु वह खगोलको ऊर्ध्व और अधः दो गोलार्धो में सम विभक्त करता है। सूर्य, चंद्र और तारागण स्वक्षितिज के ऊपर आने से दिखाई देते अर्थात् उन का उदय होता है और क्षितिज के नीचे जाने से दिखाई नहीं देते अर्थात् उनका अस्त होता है।

१४. स्वस्थान, ऊर्ध्व स्वस्तिक और अधःस्वस्तिक (Topocentric place, Zenith & Nadir)—खगोल का द्रष्टा भूगर्भ के केंद्र में नहीं; बल्कि भू पृष्ठ पर निवास करता है। अत: भूपृष्ठ के जिस बिंदु पर द्रष्टा रहता है वह उसका स्वस्थान कहा जाता है। खगोल के ऊपरी गोलार्ध का वह सर्वोच्च आकाशीय बिन्दु जो भूपृष्ठस्थ द्रष्टा के ठीक मस्तक के उपर

रहता है, ऊर्ध्व स्वतिक (Zenith) कहा जाता है; इसी को खमध्य या खस्वस्तिक भी कहते हैं। इसी तरह अधःस्थ खगोलार्ध का वह कल्पित बिंदु जो भूपृष्ठस्थ द्रष्टा के पैरों के नीचे खस्वस्तिक से १८० अंश पर रहता है, अधः स्वस्तिक (Nadir) कहा जाता है। ये दोनों बिन्दु वस्तुतः स्वकीय क्षितिज के ध्रुव या पृष्ठकेन्द्र हैं।

१५ याम्योत्तर वृत्त (Meridian Circle)—खगोलीय ध्रुवों तथा स्वस्थान के खस्वस्तिक पर से जानेवाले वृत्त को स्वदेशीय याम्योत्तर वृत्त कहते हैं। स्वदेशीय स्पष्ट मध्याह्नकाल में सूर्य इसी वृत्त पर रहता है। याम्योत्तर-वृत्त दृश्य खगोलार्ध का पूर्वापर दो विभाग करता है, जिसमें पूर्वीय भाग को पूर्वकपाल (Eastern Hemisphere) तथा पश्चिमी भाग को पश्चिमकपाल (Western Hemisphere) कहते हैं।

१६. स्व निरक्ष देश, अक्षांश और लम्बांश—(One's Own Equatorial place, Latitude & Co-latitude)—खगोलीय स्वयाम्योत्तर वृत्त को खगोलीय विषुवद्वृत्त जिस स्थान पर स्पर्श करता है, उसको स्व निरक्ष-देश कहते हैं। इसे ही निरक्षदेशीय खस्वस्तिक भी कहते हैं। इससे ९० अंश की दूरी पर रहनेवाले ध्रुवप्रोत वृत्त को स्वनिरक्ष क्षितिज वा स्वकीय उन्मण्डल कहते हैं। स्वनिरक्ष देश और ख स्वस्तिक के मध्यगत याम्योत्तरवृत्त-खण्ड का अंशादिमान स्वदेश के भौगोलिक अक्षांश (Geographical Latitude) के तुल्य होता है। खस्वस्तिक और उत्तर ध्रुवबिन्दु के मध्यगत याम्योत्तरवृत्त के खण्ड के अंशादि मान को लम्बांश (Co-latitude) कहते हैं। उत्तर अक्षांश के देशों में क्षितिज से उत्तर ध्रुव अक्षांशतुल्य उन्नत रहता है तथा दक्षिण अक्षांश के देशों में दक्षिण ध्रुव क्षितिज से अक्षांश-तुल्य उन्नत रहता है।

१७. सम मण्डल, सम स्थान और पूर्वापर स्वस्तिक (Prime Vertical & East, West, North, Sonth-points on the Horizon)—ऊर्ध्व और अधःस्वस्तिक पर से जानेवाला वृत्त याम्योत्तर वृत्त से समकोण बनाता हुआ क्षितिजवृत्त के जिन दो बिन्दुओं को स्पर्श करता है, उनमें-से पूर्व दिशा के बिंदु को पूर्व-स्वस्तिक और पश्चिम दिशा के बिन्दु को पश्चिम-स्वस्तिक कहा जाता है एवं क्षितिजवृत्त को याम्योत्तरवृत्त जिन दो बिन्दुओं पर स्पर्श करता है, उनमें-से उत्तर दिशा के बिन्दु को उत्तर समस्थान तथा दक्षिण दिशा के बिन्दु को दक्षिण समस्थान कहते हैं। उपर्युक्त चारों स्वस्तिकों (ऊर्ध्व, अधः, पूर्व, पश्चिम-बिन्दुओं) में-से जानेवाले वृत्त को सम-मण्डल या पूर्वापर वृत्त (Prime Vertical) कहते हैं।

१८. उन्मण्डल (Six O'clock Gircle)—स्वस्थाय के पूर्व तथा पश्चिम-स्वस्तिकों एवं दक्षिणोत्तर ध्रुवों में-से जानेवाले वृत्त को स्वदेशीय उन्मण्डल कहते हैं। इस वृत्त को ६ घण्टे का वृत्त भी कहते हैं; क्योंकि इस वृत्त पर जब सूर्य-बिम्ब का केन्द्र-बिन्दु आता है तब स्वदेश की सूर्य-घड़ी में सदा छः बजता है। इस तरह प्रत्येक स्थान का तत्स्थानीय उन्मण्डल वृत्त होता है। स्वदेशीय उन्मण्डल में सूर्य के आने से पहले स्वदेश से पूर्वीय देश के उन्मण्डल में सूर्य आता है और पश्चिमी देश के उन्मण्डल में बाद में आता है। अतः स्वदेश से पूर्व के देशों का स्थानिक समय स्वदेश के स्थानिक समय से अधिक तथा स्वदेश से पश्चिम के देशों का स्थानिक समय स्वदेश के स्थानिक समय से कम होता है।

१९. दृङ्मण्डल या दृक्वृत्त (Vertical Circle)—खस्वस्तिक से तारा या ग्रह-बिम्ब पर जानेवाले वृत्त को दृङ्मण्डल अथवा दृक्वृत्त कहते हैं। कदम्बप्रोत या ध्रुवप्रोतवृत्त की भांति दृकवृत्त भी चलवृत्त होता है जो ऊर्ध्व और अधःस्वस्तिकों में कीलित रहता है। इसे किसी तारा या ग्रह बिम्ब-केन्द्र से संलग्न कर उसके उन्नतांश और दिगंश का मान ज्ञात किया जाता है। दृङ्मण्डल में खस्वस्तिक से ग्रह क्षितिज की ओर जितने अंश नीचे रहता है, उसे ग्रह का नतांश (Zenith distance) कहते हैं तथा उक्त वृत्त में ग्रह क्षितिज से जितने अंश ऊपर रहता है, वह ग्रह का उन्नतांश (Altitude) कहा जाता है। ग्रह का दृङ्मण्डल क्षितिजवृत्त को जहाँ स्पर्श करता है, वहाँ से पूर्व या पश्चिम स्वस्तिक तक के क्षितिज-वृत्त-खण्ड का अंशादिमान ग्रह का दिगंश (Azimuth) कहा जाता है। इष्टकाल में ग्रह पूर्व-कपाल में हो तो पूर्व-स्वस्तिक से, पश्चिम कपाल में हो तो पश्चिम-स्वस्तिक से ग्रह के दिगंश नापे जाते हैं। पूर्व या पश्चिम-स्वस्तिक से उत्तर या दक्षिण जिस ओर ग्रहोपरिगत दृङ्गमण्डल का क्षितिजस्थ बिंदु होता है, उसी के अनुसार ग्रह के उत्तर या दक्षिण दिगंश कहे जाते हैं अर्थात् पूर्वस्वस्तिक से ग्रह उत्तर में होगा तो उत्तर, दक्षिण में होगा तो दक्षिण दिगंश होते हैं। ऐसा ही पश्चिम स्वस्तिक के विषय में भी समझें। ग्रहादि के क्षितिजस्थ रहने पर उसके दिगंश को अग्रा (Amplitude) कहते हैं।

२०. इष्टकाल (The time elapsed from the Local apparent time of true sun-rise)—किसी स्थान के स्पष्ट सूर्योदय-समय से वहाँ घटना विशेष के घटित होने तक जो घट्यादि काल व्यतीत हुआ रहता है उसे उक्त घटना का इष्टकाल कहते हैं। मानवीय जन्म की घटना के इष्टकाल को जन्मेष्टकाल कहते हैं। स्पष्टार्कोदय-काल किरण वक्रीभवनसंस्कार रहित सूर्य-अर्धबिम्बोदय-काल होता है। पाश्चात्य रीति से किरण-वक्री-भवन संस्कार युक्त सूर्य के अर्धबिम्ब या ऊपरी कोर के उदय-काल से इष्ट-काल न बनाना चाहिए, अन्यथा वह अशुद्ध हो जायेगा। दूसरी बात, जन्म का समय और सूर्योदय का समय सजातीय होने चाहिए। यानी दोनो स्पष्टकाल (सूर्य-घड़ी के समय)

में हों अथवा दोनों ही स्टैं. टा. में हों; तब जन्म के घंटादि में सूर्योदय के घंटादि को घटाकर शेष को ढाई गुना करने से घट्यादि में शुद्ध जन्मेष्टकाल बन जायेगा।

नत उन्नत-काल—इष्ट समय पर ग्रहादि पिण्ड निकटस्थ ऊर्ध्व या अधः याम्योत्तर वृत्त से विषुवद्वृत्त में जितने अंश क्षितिज की ओर नत रहता है, वह उसका नत-कालांश कहा जाता है एवं क्षितिज से जितने अंश उन्नत रहता है, वह उन्नत कालांश कहा जाता है। पिण्ड यदि पूर्व-कपाल में हो तो पूर्व-नतोन्नत कालांश, यदि पश्चिम-कपाल में हो तो परनतोन्नत कालांश कहे जाते हैं। नतोन्नत कालांश में ६ का भाग देने से पूर्वापर नतोन्नत काल के घट्यादि मान ज्ञात होते हैं। इष्टकाल दिन में हो तो दिवा-नतोन्नत-काल, रात्रि में हो तो रात्रि-नतोन्नत-काल कहा जाता है।

पुरातन रीति से कुण्डली के दशम-साधनार्थ दिवा-रात्रि के पूर्वापर नत घटयादि सूर्य के षष्टि घटिकात्मक स्वअहोरात्र-वृत्त में भ्रमणवशात् उपलब्ध होते हैं। सूर्योदय से इष्टकाल का प्रारम्भ होता है तथा सूर्य के याम्योत्तर वृत्त पर पहुंचने तक का समय दिनार्धकाल होता है; अतः इष्टकाल दिनार्ध से अल्प हो तो सूर्योदयात् इष्टघट्यादि ही उन्नतकाल तथा इष्टकाल से दिनार्ध जितना अधिक हो, वह पूर्व-नतकाल होता है। इष्टकाल दिनार्ध से अधिक, किन्तु दिनमान से कम हो तो वह दिनार्ध से जितना अधिक होगा वह दिवा पर नत-काल तथा दिनमान से जितना कम हो, वह पर-उन्नतकाल होगा। इसी भाँति इष्टकाल दिनमान से अधिक, किन्तु रात्र्यर्ध से कम हो तो वह दिनमान से जितना अधिक होगा, वह रात्रि का पूर्वोन्नत काल तथा रात्र्यर्ध से जितना कम होगा वह रात्रि का पूर्वनतकाल होगा। यदि इष्टकाल रात्र्यर्ध से अधिक हो तो जितना अधिक होगा, वह रात्रि का परनत-काल तथा अहोरात्र की ६० घटी से इष्टकाल जितना कम होगा, वह रात्रि का पर-उन्नत-काल होगा। इस प्रकार इष्टकाल और राशियों के स्वोदय द्वारा जो लग्न तथा दिवा रात्रि के पूर्वापर नत-काल एवं राशियों के लंकोदय मान के द्वारा कुण्डली का जो दशम भाव स्पष्ट किया जाता है, वह स्थूल होता है। अब सांपातिक-काल के प्रचलित हो जाने से उसके द्वारा सूक्ष्म शुद्ध लग्न एवं दशम का स्पष्टीकरण सुगमतापूर्वक सुसंपन्न हो जाता है।

अहोरात्र वृत्त (Diurnal Circle)—पहले लिखा जा चुका है कि पृथ्वी के अपने अक्ष पर पूर्वाभिमुख भ्रमण करने के कारण नक्षत्र तारा ग्रहादि आकाशीय पिंड रोज पूर्व में उदय होकर पश्चिम में अस्त होते दिखाई देते हैं। इस तरह किसी आकाशीय पिण्ड का क्षितिज के जिन दो बिन्दुओं पर उदयास्त होता है, उन बिन्दुओं पर से जानेवाले वृत्त को उस दिन उस आकाशीय पिण्ड का अहोरात्र वृत्त कहते हैं जिसका पृष्ठकेन्द्र ध्रुव होता है। चूंकि खगोलीय विषुवद्वृत्त का पृष्ठ-केन्द्र भी ध्रुव-बिंदु होता है, अतः अहोरात्र वृत्त विषुवद् वृत्त का समानान्तर लघुवृत्त हुआ करता है एवं विषुवद्वृत्त की भाँति इस अहरात्रवृत्त में भी ६० घटी की कल्पना की जाती है। पिंड उदय से अस्त पर्य्यन्त जितने समय तक क्षितिज से ऊपर (दृश्य) रहता है, वह उसका दिनमान होता है जिसे ६० घटी में घटा देने पर शेष उसका रात्रिमान होता है। दिनमान का आधा दिनार्ध तथा रात्रिमान का आधा रात्र्यर्ध-काल होता है। इस प्रकार स्वक्षितिज में नित्य उदय अस्त होनेवाले हर-एक ग्रहादि पिंड का अपना-अपना दिन रात्रिमान हुआ करता है।

२३.याम्योत्तर लंघन (Meridian Passage)—कोई आकाशीय पिंड पूर्व में उदय होने के बाद अपने अहोरात्र वृत्त में क्रमशः ऊपर उठने लगता है और मध्याकाश में जब ऊर्ध्व याम्योत्तर वृत्त पर पहुँचता है, तब अपनी अधिकतम ऊँचाई पर होता है; पश्चात् याम्योत्तर वृत्त को पार कर वह क्रमशः नीचे की ओर ढलता हुआ पश्चिम-क्षितिज में अस्त हो जाता है। पिण्ड द्वारा ऊर्ध्व याम्योत्तर वृत्त को पार करना, उसका याम्योत्तर-लंघन कहा जाता है।

२४. होरा-कोण (Hour-angle)—ग्रहादि पिंड के याम्योत्तरलंघन के बाद पुनः ऊर्ध्व याम्योत्तर वृत्त पर आने तक स्व-अहोरात्र वृत्त में पश्चिमाभिमुख भ्रमण से उसके ध्रुवसूत्र और याम्योत्तर वृत्त के बीच क्रमशः १ से ३६० अंश तक जो कोण ध्रुव-बिन्दु पर बनता है, उसके होरात्मक मान को उक्त पिण्ड का होरा-कोण कहते हैं। १५ अंश=१ घंटा तथा १ अंश = ४ मि. की दर से अंशादि मान को घंटादि यानी होरात्मक मान बनाया जाता है।

२५. सांपातिक काल (Sidereal Time)—गणित-कार्यार्थ बसन्त-संपात बिन्दु को ♈ चिह्न से सूचित किया जाता है। आकाशीय पिण्डों की भाँति ♈ (बसन्त-संपात) भी खगोल पर रोज अपना अहोरात्र वृत्त बनाता है अर्थात् रोज पूर्व क्षितिज में उदय होता, ऊर्ध्व याम्योत्तरवृत्त पर पहुँचता तथा पश्चिम-क्षितिज में अस्त होता है; पश्चात् अधः याम्योत्तर वृत्त पर जाता, उसके बाद पुनः पूर्व-क्षितिज में उदय होता है। इस क्रम में ♈ जब किसी स्थान के ऊर्ध्व याम्योत्तर वृत्त पर आता है तो वहाँ सांपातिककाल सूचित करनेवाली घड़ी में २४ यानी ० बजते हैं। और जब वह अपने अहोरात्रवृत्त में १५ अंश पश्चिम की ओर नत होता है तो १ बजता एवं जब ३० अंश नत होता तो २ बजते हैं। इसी क्रम से ♈ के अधः याम्योत्तरवृत्त पर जाने से १२ बजते, फिर अग्रिम १५-१५ अंश का होरा-कोण बनाने पर क्रमशः १३, १४ से लेकर २३ बजते तथा पुनः ऊर्ध्व याम्योत्तरवृत्त पर आने से २४ यानी ० बजते हैं।

इस तरह ♈ का होराकोण सांपातिक काल का अभिव्यञ्जक है अर्थात् किसी क्षण का इष्ट सांपातिक काल हमें उस समय ♈ का होराकोण बतलाता है। इस प्रक्रिया में हम देखते हैं कि स्वस्थान में जब सांपातिक काल सूचित करने वाली घड़ी में ० बजेगा तो उस समय ऊर्ध्व याम्योत्तरवृत्त पर ♈ बसन्त संपात-बिंदु रहेगा। और जब १ बजेगा तो यवषुवद् वृत्त का १५ वाँ अंश याम्योत्तर वृत्त पर रहेगा; क्योंकि इतना ही ♈ पश्चिम की ओर चला गया रहेगा—चार मि. में १ अंश की दर से, अर्थात् सांपातिक जाल के ० बजे से २४ घंटे में विषुवद्वृत्त के ♈ से ३६० अंश तक के प्रत्येक अंश क्रमशः ऊर्ध्व याम्योत्तर वृत्त पर आते रहेंगे। अतः यदि किसी इष्ट सांपातिक काल को उक्त दर से अंशादि में बदल दिया जाय तो हमें उस समय का वह विषुवद्वृत्तीय भोगांश ज्ञात हो जायेगा जो एतत्स्थानीय ऊर्ध्व याम्योत्तर वृत्त पर लगा रहेगा; किन्तु कुण्डली का दशम या मध्यलग्न विषुवद्वृत्तीय भोगांश नहीं, क्रांतिवृत्तीय मोगांश होता है; यथा—"यत्र लग्नमपमण्डलं कुजे तद्गृहाद्यमिह लग्नमुच्यते। प्राचि पश्चिमकुजेऽस्तलग्नकं मध्यलग्नमिति दक्षिणोत्तरे॥" (भास्कराचार्य)। उक्त दोनों भुजांशों का आधार (base) याम्योत्तर वृत्त का चापीय खण्ड है और दोनों ♈ पर २३° २७′ का कोण बनाये हुए है जिसका परिचय परम क्रांति-कोण के रूप में हम पहले दे आये हैं। अत: यहाँ एक चापजात्य त्रिभुज बनता है जिसमें उक्त याम्योत्तर वृत्त का चापीय खण्ड भुज है, उस पर लम्ब विषुवद्वृत्तीय भुजांश कोटि है और ♈ से याम्योत्तर वृत्त तक का क्रांतिवृत्तीय भुजांश कर्णरूप है। इसलिए चापीय त्रिकोणमिति से सहज ही इस कर्णरूप दशम(मध्य)लग्न का सायन राश्यादि स्पष्ट सूक्ष्मतापूर्वक ज्ञात किया जा सकता है। (देखिए, आगे दशम-साधन-सूत्र की उपपत्ति) उसमें इष्ट दिन का स्पष्ट अयनांश घटा देने से फलोपयुक्त निरयण दशम भाव स्पष्ट हो जायेगा।

२६. **चर** (Ascensional difference)—किसी आकाशीय पिण्ड के अहोरात्र वृत्त का जो खंड पूर्व या पश्चिम-क्षितिज और उन्मण्डल के मध्य में होता है, उसकी चर संज्ञा है और उसके अंश चरांश कहे जाते हैं। चरांश को १० से गुणा करने पर चर-पल तथा ४ से गुणा करने पर चर का मिनिटात्मक काल उपलब्ध होता है। ग्रहादि का उदय-काल जानने के लिये पूर्वीय क्षितिज के तथा अस्त-काल जानने के लिये पश्चिम-क्षितिज के चर-काल का उपयोग किया जाता है। कुण्डली का लग्न-साधन सामान्यतः दो रीतियों से हो सकता है। प्रथम रीति—उपर्युक्त विषुवद्वृत्तीय दशम यानी इष्ट सांपातिककाल अंशादि में ९० अंश जोड़ने से उसी के तुल्य क्रांतिवृत्तीय लग्न निरक्ष देश में होता है। उसमें साक्ष देश के लिए चर-संस्कार करने से एतद्देशीय लग्न स्पष्ट हो जाता है। दूसरीरीति—इष्टकाल पर खमध्यगत कदम्बप्रोत वृत्त क्रांतिवृत्त के जिस बिंदु को स्पर्श करता है, वह त्रिभोन लग्न होता है एवं वही क्रांतिवृत्त का एतत्कालिक सर्वोच्च बिंदु होता है। अतः स्पष्ट है कि उस समय क्रांतिवृत्त के क्षितिजस्थ बिंदु से त्रिभोन लग्न का अंतर ९० अंश होगा। अब यदि गणित से इष्टकालिक त्रिभोन लग्न ज्ञात कर लिया जाय तो उसमें ९० अंश जोड़ देने पर क्रांतिवृत्त का पूर्वीय क्षितिजस्थ बिंदु अर्थात् अपना अभीष्ट उदयलग्न ज्ञात हो जायेगा। (देखिए, आगे लग्न-साधन-सूत्र की उपपत्ति), इसी दूसरे प्रकार से लग्न-साधन का गणित सूत्र आगे दिया गया है। दोनों रीतियों से फल एक ही आता है।

२७. **लग्न, दशम इत्यादि** (Ascendant & Teuth honse Etc.)—इष्ट दिन के इष्ट समय में क्रांतिवृत्त का जो बिंदु पूर्व-क्षितिज में लगा रहता है, वह उस दिन का इष्टकालिक लग्न कहा जाता है। वह सायन मेषादि बिंदु से जितने राशि, अंश, कला, विकला पर होता है, उसे ही सायन लग्न स्पष्ट कहते हैं जिसमें इष्ट दिन का अयनांश घटाने से अभीष्ट निरयण लग्न स्पष्ट हो जाता हैं। इस लग्न के अलावा मध्यलग्न और अस्तलग्न भी होता है। इष्ट दिन के इष्ट समय में क्रांतिवृत्त के जो बिंदु याम्योत्तर वृत्त और पश्चिम-क्षितिज में लगे होते हैं, वे क्रमशः मध्यलग्न और अस्तलग्न कहे जाते हैं। मध्यलग्न को दशम लग्न या केवल दशम भी कहा जाता है और उवका राश्यादि स्पष्ट मान कुण्डली का दशम भाव स्पष्ट होता है। कुण्डली के लग्न और दशम स्पष्ट में ६ राशि जोड़ने से क्रमशः सप्तम और चतुर्थ भाव स्पष्ट हो जाते हैं; शेष आठ भावों के स्पष्टीकरण की नीलकण्ठ एवं श्रीपति पद्धति से प्रायः सभी ज्योतिषज्ञ परिचित हैं 'जो ज्योतिष-रहस्य' प्रथम खण्ड के पृष्ठ संख्या ४ पर भी प्रकाशित है।

यहाँ तक जिन खगोलीय पदार्थों का विवरण दिया गया है, वे कुण्डली-निर्माण के विषय में पर्याप्त से अधिक हैं। खगोलीय पदार्थों में चर, लग्न, दशमादि के स्वरूप से अवगत हो जाने के बाद गणित द्वारा उनका स्पष्ट मान ज्ञात करने की आवश्यकता होती है जिसके लिए विश्व की विभिन्न भाषाओं में अनेक प्रकार की सारणियाँ प्रचलित हैं जिनमें सायन या निरयण सूर्य के आधार पर लंकोदय एवं स्वोदय मानवाली सारणियों के परिणाम बहुत स्थूल एवं अन्तरित आते हैं; उनकी अपेक्षा संपातिक-काल के आधार पर बनी सारणियों के फल सूक्ष्म होते हैं; किन्तु सर्वथा सूक्ष्म शुद्ध फल तो त्रिकोणमितीय समीकरण के द्वारा ही प्राप्त होता है; अतः इस लेख में वही निर्दिष्ट हैं। तत्सम्बन्धी सूत्र इतने सरल दिये जा रहे हैं कि जिन्हें त्रिकोणमिति का सामान्य ज्ञान है, वे भी इनके द्वारा सूक्ष्म चर एवं तत्सम्बन्धी

कुण्डब, दिनमान, इष्टकाल एवं लग्न दशमादि का साधन सरलतापूर्वक कर सकते हैं। मेरी इस पुस्तक 'ज्योतिष-सूत्र' के प्रथम खण्ड में सन् १९११ ई० से सन् २००५ ई० तक की सांपातिक-काल की सारणी दी गयी है जिससे उपर्युक्त ९५ वर्षों के अन्दर विश्वभर में किसी भी दिन, किसी इष्टकाल के लिए लग्न दशमादि का साधन किया जा सकता है : सबसे बड़ी बात तो यह है कि कुण्डली-विज्ञान के नाम पर जो अज्ञान एवं भ्रामक धारणाएँ संस्कृत हिन्दी-जगत में प्रसारित हो गयी हैं, उनका इस लेख द्वारा निराकरण होकर एतद्विषयक परमोपयोगी सद्ज्ञान का प्रचार होगा। अब अंत में हम पाठकों के हितार्थ चर, लग्न आदि साधन के सूत्र, उनकी प्रयोग-विधि और उदाहरण आदि देकर यह निबन्ध समाप्त करते हैं।

चर का सूत्र :– ज्या चर = $\frac{\text{स्प ब स्प क्रांति}}{\text{त्रि}}$

†दशम-साधन का सूत्र :— स्प द = $\frac{\text{स्प अ}}{\text{कोज्य इ}}$

द = दशम

लग्न-साधन का सूत्र :— स्प क = स्प अ कोज्या इ $\overset{*}{+}$ $\frac{\text{ज्या इ स्प ब}}{\text{कोज्या अ}}$

क + ९० अंश = लग्न

भौगोलिक अक्षांश से भू-केन्द्रीय अक्षांश ज्ञात करने का सूत्र—ला स्प ϕ + ९.९९७०८२८ = ला स्प ब (भू-केन्द्रीय अक्षांश)

उपर्युक्त सूत्रों में अ = इष्ट सांपातिक काल अंशादि में, इ = परमक्रांति-कोण

ब = अभीष्ट स्थान का भूकेन्द्रीय अक्षांश, क = त्रिभोनलग्न, ϕ = भौगोलिक अक्षांश

विधि—कोटिज्या और स्पर्शज्या का धन ऋण चिह्न इष्ट सांपातिक काल के भुजांश = अ के पदानुसार (Quadrant के अनुसार) लेना चाहिये तथा उस पद में स्पर्शज्या का जो धन या ऋण चिह्न त्रिकोणमिति के नियम से होता है, वही चिह्नयुक्त स्प क उत्तर में प्राप्त हो तो उसे भी उसी पद में मानकर उसके भुजांश का भोगांश (Longitude) बना लेना चाहिये, किन्तु कभी-कभी उत्तर में उक्त पद से विरुद्ध चिह्नयुक्त स्प क उपलब्ध होता है; जैसे चतुर्थ पद में क की स्पर्शज्या ऋण चिह्न के बजाय + धन चिह्नयुक्त प्राप्त हो अथवा तृतीय पद में + चिह्नयुक्त के बजाय – ऋण चिह्नयुक्त; ऐसी स्थिति में अ-भोग के निकटतर जो पदारम्भ या पदान्त के अंश हों, उनमें स्प क के चाप को उसके धन ऋण चिह्न के अनुसार जोड़ या घटाकर त्रिभोनलग्न के अंशादि सिद्ध करने चाहियें। उसमें ९० अंश जोड़ने से यथार्थ सायन लग्न स्पष्ट होगा। इस स्थिति का एक उदाहरण भी आगे श्रीमती सुशीलादेवी गुप्त के जन्म-लग्न-साधन द्वारा दिया गया है।

उदाहरण—श्रीजगजीवनदास गुप्त के जन्मलग्न एवं दशम-साधनार्थ उपकरण—जन्म-स्थान काशी का भौगोलिक अक्षांश उत्तर २५°-२०′, जन्म का इष्ट सांपातिक काल घंटादि १९-२-२७ = अंशादि २८५°-३६′-४५″ जन्म-दिन का अयनांश २२°-४३′-१४″ तथा परमा क्रांति २३°-२७′-१७″= इ है। अब ३६०°–२८५°-३६′-४५″=७४°-२३′-१५″ भुज=अ, चतुर्थपद में है; अतः अग्रिम लग्न-गणित में तत्सम्बन्धी कोटिज्या + तथा स्पर्शज्या – ऋण चिह्नयुक्त होगी।

१. भौगोलिक अक्षांश ϕ से भूकेन्द्रीय अक्षांश = ब का साधन— ला स्प ϕ २५°-२०′=९.६७५२३७२+ ९.९९७०८२८=९.६७२३२०० ला स्प ब, इसका चाप २५°-११′-५″= ब

२. दशम-साधन, लाघवांक से, सूत्र :– स्प द = $\frac{\text{स्प अ}}{\text{कोज्या इ}}$

ला स्प अ	७४°-२३-१५″ =	१०.५५३७१११
– ला कोज्या इ	२३-२७-१७ =	९.९६२५४६९
= ला स्प द	७५-३७-१८ =	१०.५९११६४२

† यह दशम का सूत्र उत्तर दक्षिण दोनों अक्षांश के स्थानों के लिए काम देता है; किन्तु लग्न-साधन के सूत्र में

* ताराङ्कित यह + धन चिह्न उत्तर अक्षांश के स्थानों के लिये ही प्रयुक्त होगा; दक्षिण अक्षांश के स्थानों के लिए लग्नसाधन में इस धन (+) की जगह ऋण (–) चिह्न का प्रयोग करना होगा।

३६०° − ०′ − ०″
− द = ७५ − ३७ − १८
२८४ − २२ − ४२ सायन दशम
ऋण − २२ − ४३ − १४ अयनांश
२६१ − ३९ − २८ निरयण दशम अंशादि
निरयण राश्यादि ८-२१°-३९′-२८″ दशम स्पष्ट हुआ।

३. लग्न-साधन, स्वाभाविक संख्याओं से—

उपकरण—	स्वाभाविक संख्या
स्प अ ७४°-२३′-१५	= ३·५७८५८ (−)
कोज्या अ ,,	= ·२६९१३ (+)
ज्या इ २३-२७-१७	= ·३९८०२
कोज्या-इ ,,	= ·९१७३७
स्प ब २५-११-५	= ·४७०२४

सूत्र—स्प क = स्प अ कोज्या इ + स्प ब ज्या इ / कोज्या अ

(−) ३·५७८५८ × ·९१७३७ = − ३·२८२८८१९
·४७०२४ × ·३९८०२ = ± ०·६९५४४४३
(+) ·२६९१३ योगफल = − २.५८७४३७६ स्प क इसका चाप (−) ६८′।५२′।९

३६०° − ०′ − ०″
− ६८ − ५२ − ९
२९१ − ७ − ५१ = त्रिभोन लग्न
+ ९० − ० − ००
= ३८१ − ७ − ५१
ऋण चक्र − ३६० − ० − ०
= २१ − ७ − ५१
ऋण − २२ − ४३ − १४ अयनांश
राश्यादि ११-२८°-२४′-३७″ निरयण लग्न स्पष्ट हुआ

लग्न-गणित-गरिमा

ज्योतिःशास्त्रफलं पुराणगणकैरादेश इत्युच्यते।
नूनं लग्नबलाश्रितः पुनरयं तत् स्पष्टखेटाश्रयम्॥
ते गोलाश्रयिणोऽन्तरेण गणितं गोलोऽपि न ज्ञायते।
तस्माद्यो गणितं न वेत्ति स कथं गोलादिकं ज्ञास्यति॥
(भास्कराचार्य)

श्रीजगजीवनदास गुप्त की धर्मपत्नी सुशीला देवी गुप्त का जन्मलग्न-साधन—लाघवांक और स्वाभाविक संख्याओ के द्वारा ; जन्म-दिनांक २६ सितम्बर सन् १९२२, भा. स्टै. टा. घं. २३ मि. २७ से. १८

स्थान—अजमेर (राजस्थान) का भौगोलिक अक्षांश उत्तर ϕ=२६°-२७′, रेखांश, पू. ७४°-४०′, इष्ट सांपातिकाल घंटादि २३-१४-५७ = अंशादि ३४८°-४४′-१५″, भुज ११°-१५′-४५″ = अ. चतुर्थ पद में।

ला स्प ϕ २६°-२७′ = ९.६९६७८६५+९.९९७०८२८=९.६९३८६९३ ला स्प ब, इसका चाप २६°-१७′-४९″= ब

उत्तर अक्षांश के लिए सूत्र :—स्प क = स्प अ कोज्या इ + स्प ब ज्या इ / कोज्या अ

उपकरण	लाघवांक
स्प अ ११°-१५′-४५″	९·२९९१५६६ (−)
कोज्या अ ,,	९·९९१५५५१ (+)
ज्या इ २३-२७-०	९·५९९८२७०
कोज्या इ ,,	९·९६२५६२५
स्प ब २६-१७-४९	९·६९३८६९३

ला स्प अ ११°-१५′-४५″	९·२९९१५६६ (−)
+ ला कोज्या इ २३-२७-०	९·९६२५६२५ (+)
ला प्रथम फल	९·२६१७१९१ (−)
ला स्प ब २६°-१७′-४९″	९·६९३८६९३ (+)
+ ला ज्या इ २३-२७-०	९·५९९८२७० (+)
	९·२९३६९६३ (+)
− ला कोज्या अ ११-१५-४५	९·९९१५५५१ (+)
ला द्वितीय फल	९·३०२१४१२ (−)

ला प्रथम फल ९·२६१७१९१ की स्वाभाविक संख्या ०·१८२६९१७ (−)
ला द्वितीय फल ९·३०२१४१२ ,, ,, ०·२००५०६० (+)
प्र. फल + द्वि. फल = स्प क ,, ,, ,, ०·०१७८१४३ (+) इसका चाप
अंशादि ,, ०°-५९′-१४″
* + ३६०°-०″-०″
त्रिलोभन लग्न = ०-५९-१४
+ ९०-००-०
सायन लग्न अंशादि − ९०°-५९-१४″
ऋण अयनाशं − २२-४६-४७
निरयण लग्न राश्यादि २-८°-१२′-२७″

---

* टिप्पणी—उपर्युक्त उदानरण में अ चतुर्थ पद में है, चतुर्थ पद में स्प क − ऋण चिन्हयुक्त होना चाहिये, किन्तु यहां उत्तर में स्प क + ०·०१७१८४३ (+) धन चिन्हयुक्त गणित से उपलब्ध होता है। अतः यहां पूर्वोक्त विशेष

दक्षिण अक्षांश के स्थान में दशम और लग्न-साधन का उदाहरण:—

बास्ट्रेलिया में ब्रिस्बॅन के समीपस्थ स्थान के लिए, जिसका पूर्व-रेखांश १५३; भौगोलिक अक्षांश ϕ २७°-३७′-२६″ दक्षिण है, वहाँ ता० १० जनवरी सन् १९२० ई० को इष्ट सांपातिक काल घं० १४ मिनट ३८ सेकेंड १३ पर दशम और लग्न-साधन करना है। उस दिन का अयनांश २२°-४४′-२४″ तथा परम क्रांति २३°-२७′ = इ है। इष्ट सांपातिक काल घंटादि १४-३८-१३ = अंशादि २१९°-३३′-१५″ में १८०° घटाया तो शेष भुज = ३९°-३३′-१५″ = अ तृतीय पद में है; अतः अग्रिम लग्न-गणित में तत्सम्बन्धी कोटिज्या — ऋण तथा स्पर्शरेखा + धन चिन्हयुक्त होगी।

१. भौगोलिक अक्षांश ϕ से भूकेन्द्रीय अक्षांश = ब का साधन—

ला स्प ϕ २७°-३७′-२६″ = ९·७१८७६६० + ९·९९७०८२८ = ९·७१५८४८८ ला स्प ब,
इसका चाप २७°-२७′-५८″ = ब

१ दशम-साधन, लाघवांक से- सूत्रः— $\text{स्प द} = \dfrac{\text{स्प अ}}{\text{कोज्या इ}}$

ला स्प अ ३९°।३३′।१५″ = ९·९१६९४०८
— ला कोज्या इ २३।२७।० = ९·९६२५६२४
= ला स्प द ४१।५९।४६ = ९·९५४३७८४

१८०°–०′–०″
\+ द ४१-५९-४६
= २२१°-५९-४६

राश्यादि ७-११-५९-४६ सायन दशम
ऋण —०-२२-४४-२५ अयनांश
राश्यादि ६-१९°-१५′-२१″ निरयण-दशम स्पष्ट हुआ।

२. लग्न साधन—लाघवांक और स्वाभाविक संख्या दोनों के द्वारा—

उपकरण		लाघवांक
स्प अ ३९°-३३′-१५″	=	९·९१६९४०८ (+)
कोज्या अ ,,	=	९·८८७०६७३ (—)
ज्या इ २३-२७-०	=	९·५९९८२७०
कोज्या इ ,,	=	९·९६२५६२४
स्प ब २७-२७-५८	=	९·७१५८४८८

दक्षिण अक्षांश के लिए सूत्र—$\text{स्प क} = \text{स्प अ कोज्या इ} \; {}^{*}- \; \dfrac{\text{स्प ब ज्या इ}}{\text{कोज्या अ}}$

ला स्प अ ३९°-३३′-१५″ = ९·९१६९४०८ (+)
\+ ला कोज्या इ २३-२७-० = ९·९६२५६२४ (+)
ला प्रथम फल ९·८७९५०३२ (+)

ला स्प ब २७।२७।५८ = ९·७१५८४८८ (+)
\+ ला ज्या इ २३।२७।० = ९·५९९८२७० (+)
९·३१५६७५८ (+)
— ला कोज्या अ ३९।३३।१५ = ९·८८७०६७३ (—)
ला द्वितीय फल = ९·४२८६०८५ (—)

नियम का उपयोग किया गया। (भुज) अ के भोगांश ३४८°-४८′-१५″ चतुर्थ पदान्त के निकटतर है। अतः उसके अंश ३६०=० में स्प क का चाप ०°५९′-१४″ को उसके उपलब्ध + धन चिन्ह के मुताबिक जोड़ा गया तो त्रिभोन लग्न का मान अंशादि ०°-५९′-१४″ हुआ।

* उत्तर अक्षांश के गणितोदाहरण में लग्न के सूत्र में यह धन + चिन्ह लिया गया था, उसके विपरीत यहाँ ऋण-चिन्ह दक्षिण अक्षांश के लग्न-साधनार्थ लिया गया।

ला प्रथम फल　९·८७९५०३२ की स्वा. संख्या ०·७५७७१०३ (+)
ला द्वितीय फल ९·४२८६०८५ की स्वा. संख्या ०·२६८२९२४ (−)
प्र. फल − द्वितीय फल (बैजिक अंतर-फल) १·०२६००२७ = स्प क, इसका चाप—
४५°-४४′-७″
+ १८० - ० - ०
२२५ - ४४-७ = त्रिभोन लग्न
+ ९०
योग ३१५-४४-७
सायन लग्न राश्यादि १०-१५°-४४′-७″
ऋण अयनांश −　२२-४४-२४
स्पष्ट निरयण लग्न राश्यादि ९-२२°-५९′-४३″

लग्न-साधन के सूत्र की उपपत्ति—

श = ऊर्ध्व स्वस्तिक, ♈=विषुवद्वृत्त और क्रांतिवृत्त का संपात
उ पू दं = क्षितिज वृत्त, दं थ श उ=याम्योत्तर वृत्त, त क=कदंबप्रोत [वृत्त
पू ध्रु = ध्रुवप्रोत वृत्त
♈ द = दशमलग्न
♈ थ = इष्ट सांपातिक काल यानी दशमलग्न-विषुवांश = अ
थ पू = ९० अंश
♈ पू = अ + ९०अंश = क्षितिजलग्न-विषुवांश (भीतरी भुजा)
∠ थ ♈ द = इ = परमक्रांति-कोण (भीतरी कोण)
∠ ♈ पू ल = ९० अंश + ∮ (अन्य कोण); क्योंकि
थ ध्रु = ९० अंश = ∠ ♈ पू ध्रु और थ श = ध्रु उ =
∠ ध्रु पू उ = ∮ इष्ट स्थान का अक्षांश, भूकेन्द्रीय बनाने पर = ब
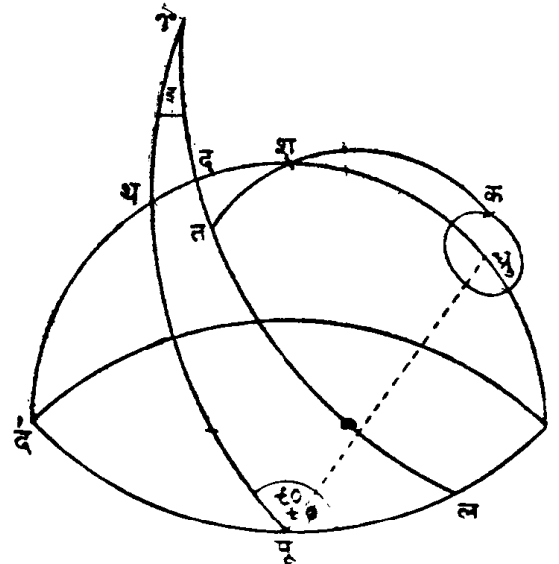
चूंकि उदय-लग्न ल से ९० अंश ऊपर क्रांतिवृत्त को कदम्बप्रोत वृत्त त पर स्पर्श करता है, अतः ♈ त = त्रिभोन लग्न = क

♈ ल = क + ९० अंश = पूर्व-क्षितिज में उदय लग्न (अन्य भुजा)

गोलीय △ पू ♈ ल में उपर्युक्त तीन पदार्थ संसक्त हैं एवं चौथा (अन्य भुजा) ज्ञातव्य है, अतएव—
कोज्या भीतरी भुजा × कोज्या भीतरी कोण = ज्या भीतरी भुजा × कोस्प अन्य भुजा − ज्या भीतरीकोण × कोस्प अन्यकोण

∴ कोज्या(९० + अ) कोज्या इ = ज्या(९० + अ) कोस्प(९० + क) − ज्या इ कोस्प(९० + ब)

किंवा ज्या अ कोज्या इ = कोज्या अ स्प क − ज्या इ स्प ब, दोनों पक्षों को कोज्या अ से भाग देने पर समीकरण हुआ—

$$\text{स्प अ कोज्या इ} = \text{स्प क} - \frac{\text{ज्या इ स्प ब}}{\text{कोज्या अ}}$$

$$\therefore \text{स्प क} = \text{स्प अ कोज्या इ} + \frac{\text{ज्या इ स्प ब}}{\text{कोज्या अ}}$$ यह सूत्र उपपन्न हुआ।

दशम-साधन के सूत्र की उपपत्ति—

क्षेत्र के चापीय त्रिभुज △ थ ♈ द में कोण ∠ ♈ थ द समकोण है और कोण ∠ थ ♈ द = इ तथा भुजा ♈ थ (इष्ट सांपातिक काल) = अ ज्ञात है एवं भुजा ♈ द = (दशम) ज्ञातव्य है। अतः नेपियर के नियम से कोण इ मध्यस्थ अंग और भुजायें अ तथा द संसक्त अंग हैं।

अतएव—ज्या मध्यस्थ अंग = संसक्त अंगों की स्पर्श ज्याओं का गुणनफल। ∴ ज्या(९० − इ) = स्प अ स्प(९० − द), क्योंकि ९०−इ, अ तथा ९० − द, ये नेपियरोक्त वर्तुल-अंग हैं, अतः

कोज्या इ = स्प अ कोस्प द

किंवा कोस्प द = $\frac{\text{कोज्या इ}}{\text{स्प अ}}$

किंवा कोस्प द = $\frac{१}{\text{स्प अ छेरे इ}}$

किंवा स्प द = स्प अ छेरे इ

किंवा स्प द = $\frac{\text{स्प अ}}{\text{कोज्या इ}}$ यह सूत्र उत्पन्न हुआ।

पद, भुज और ज्या, कोटिज्यादि के धन ऋणत्व का विवरण:—

१. पद—वृत्त में ४ पद तथा प्रत्येक पद में ९० अंश होते हैं। ० अंश से ९० अंश = ३ राशि तक का प्रथम पद, वहां से ९० अंश आगे, ३ राशि से ६ राशि तक का द्वितीय पद, वहां से ९० अंश आगे, ६ राशि में ९ राशि तक का तृतीय पद तथा वहां से ९० अंश आगे, ९ राशि से १२ राशि तक का चतुर्थ पद होता है। पद और पाद समानार्थक शब्द हैं।

पदं पादउक्तोऽजतस्त्रित्रिभैस्ते चतुःसंख्यकाश्चाथ दोरोजपादे।
पदाद्यंशयुक्तः पदे युग्मकाख्ये पदांतांशशुद्धस्ततुर्यं धनुः स्यात् ॥

२. भुज—सायन भोग के अंशादि प्रथम पद में हों तो वही भुज, द्वितीय पद में हों तो उन्हें ६ राशि = १८० अंश में घटाने पर शेष भुज, तृतीय पद मे हों तो उनमें १८० अंश घटाने पर शेष भुज तथा चतुर्थ पद में हों तो १२ राशि = ३६० अंश में घटाने से शेष भुज के अंशादि होते हैं। भुज को ९० अंश में घटाने से शेष उसकी कोटि होती है।

खगो९०ऽल्पांशदोस्ते लवा एक खांका९०धिकानां भुजस्तत् खनागेन्दु १८० भेदः।
खभो २७० र्ध्वं तु चक्रां ३६०तरं दोर्लवानां भुजांशोनखांकां९०शकाः कोटिरुक्ता ॥

३. त्रिकोणमिति के नियम से ज्या, कोटिज्या, स्पर्शज्या, आदि के धन-ऋणत्व का विवरण उनके पदक्रमानुसार निम्न तालिका में दिया जा रहा है :—

	प्रथमपद	द्वितीयपद	तृतीयपद	चतुर्थपद
ज्या	+	+	−	−
कोटिज्या	+	—	−	+
स्पर्शज्या	+	—	+	−
कोस्पर्शज्या	+	—	+	−
छेरे	+	—	−	+
को छेरे	+	+	−	−
उत्क्रमज्या	+	+	+	+
कोट्युत्क्रमज्या	+	+	+	+

उपर्युक्त तालिका में ज्या के सामने प्रथम, द्वितीय पद के नीचे धन + चिन्ह और तृतीय, चतुर्थपद के नीचे ऋण — चिन्ह दिया गया है। इसका अर्थ है कि भुजज्या प्रथम, द्वितीय पद में हो तो धनात्मिका (+धन चिन्हयुक्त) होगी; यदि तृतीय, चतुर्थ पद में हो तो ऋणात्मिका (—) ऋण चिन्हयुक्त होगी। इसी तरह कोटिज्या स्पर्शज्या और कोस्पर्शज्या आदि का धन ऋणत्व जानिये।

निष्कर्ष—उत्क्रमज्या (Versed sine) और कोटयुत्क्रमज्या (Coversed sine) के विषय में:- ये दोनों व्यंजक चारों पद में + धनात्मक होते हैं। इनसे अन्य सभी व्यञ्जक प्रथम पद में + धनात्मक होते हैं। द्वितीय पद में—ज्या (sine) कोछेरे (cosecant) + धन, अन्य सब − ऋण; तृतीय पद में—स्पर्शज्या (Tangent) और कोस्पर्शज्या (Cotangent) + धन, अन्य सब − ऋण; चतुर्थ पद में—कोटिज्या (Cosine) और छेरे (secant) +; अन्य सब, − ऋण होते हैं। छेरे को व्युत्क्रमकोटिज्या संक्षेप में व्युकोज्या भी कहते हैं एवं कोछेरे को व्युत्क्रमज्या संक्षेप में व्युज्या कहते है।

राहु केतु का स्पष्ट भोगांश-साधन

इस प्रसंग में पाठकों को यह जान लेना बहुत आवश्यक है कि सूर्यादि ७ ग्रहों की भाँति राहु केतु आकाशीर्य पि्रण्ड-पदार्थ नहीं हैं ; फिर भी भारतीय फलित-ज्योतिष में उनका महत्त्व ग्रह-पिण्डों से तनिक भी कम नहीं है ; किन्तु भारत के दृश्यादृश्य सभी पञ्चाङ्गों में सूर्यादि ग्रह-पिण्डों की भाँति उनका स्पष्ट भोगांश नहीं दिया जाता ; बल्कि मध्यम भोगांश ही दिया जाता है। यही क्यों, भारत तथा विदेशों से प्रकाशित होनेवाले नाविक पञ्चाङ्गो (Nautical Almanacs) में तथा अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त रॉफेल की ग्रह-पञ्जिका (Raphaels Ephemeris) में भी राहु का मध्यम भोगांश ही दिया जाता है, स्पष्ट भोगांश नहीं। फर्क इतना ही है कि उक्त प्रकाशनों में राहु का सायन भोग दिया जाता है और भारतीय पञ्चाङ्गों में निरयण भोग। भारत के अलावा विश्वभर में फलित के लिए भी सायन गणित अबाधित रूप से प्रचलित है, जबकि भारत में सर्वथैव निरयण गणना फलित का मूल आधार है; किन्तु सूर्यसिद्धान्त, मकरन्द या ग्रहलाघव के द्वारा बननेवाले पञ्चाङ्गों में निरयण राहु का मध्यम भोगांश भी स्थूल; अशुद्ध दिया जाता है जो न तो ग्रहण-गणित के काम का होता है, न फलित के। इसीलिए इस पुस्तक में राहु-सारणी प्रकाशित की गयी है जिससे २००वर्षों के किसी भी दिन का सूक्ष्म निरयण राहु एकदम सरलतापूर्वक ज्ञात हो जायेगा;किन्तु वह राहु का मध्यम भोगांश ही होगा, स्पष्ट नहीं। आज भारत के उत्कृष्ट फलितज्ञों का कथन है कि जब सूर्यादि ७ ग्रहों के स्पष्ट भोगांश का उपयोग फलित में किया जाता है तब राहु केतु के मध्यम भोगांश का उपयोग करना अयुक्त है; उनके भी स्पष्ट भोगांश का ही उपयोग करना चाहिये। राहु के स्पष्ट भोगांश-साधन के लिये उसके मध्यम भोग में कम-से-कम दो संस्कार करना जरूरी होता है जिसका गणिता सरलता से करने के लिये विश्वविख्यात् विद्वान् स्व० श्रीनिर्मलचन्द्र लाहिरीजी ने अपनी अंग्रेजी ग्रह-पञ्जिका में दो संक्षिप्त सारणियाँ प्रकाशित की हैं जिन्हें हम पाठकों के लाभार्थ यहाँ साभार उद्धृत कर रहे हैं। राहु का स्पष्ट भोगांश जिस दिन के लिए ज्ञात करना हो, उस दिन के सूर्य-भोगांश में मध्यम राहु के भोगांश घटा दीजिए—शेषांश प्रथम सारणी का उपकरण होगा। यह उपकरण १८० अंश से अधिक हो तो उसमें १८० अंश घटाकर शेष को उपकरण के रूप में प्रयोग करना चाहिए। उपकरण उसे कहते हैं जिसके सहारे सारणियों में संस्कार ज्ञात किया जाता है। प्रथम सारणी के पहले और तीसरे खाने में उपकरण है और उनके बीचे खाने में उपकरणों की सीध में तत्सम्बन्धी संस्कार हैं। संस्कार कला में हैं और उनकी बायीं ओर के + चिह्न पहले खाने के उपकरण के लिए तथा दायीं ओर के — चिन्ह तीसरे खाने के उपकरण के लिए हैं। जैसे, उपकरण १५° के सामने ४९' कला संस्कार छपा है; यही संस्कार १६५° अंश उपकरण के लिए भी है; किन्तु संस्कार ४९' की बायीं ओर जो + धन चिन्ह है, वह उपकरण १५ अंश के लिए है तथा उक्त संस्कार के दायी ओर का ऋण — चिन्ह उपकरण १६५° के लिए है। संस्कार के + धन, ऋण — चिन्ह के अनुसार ही उसे मध्यम राहु में जोड़ना या घटाना होगा। इस सारणी में उपकरण तीन-तीन अंश के अंतर से दिये गये हैं, बीच के अंशादि के लिये संस्कार अनुपात से जान लेना चाहिये। दूसरी सारणी का उपकरण अंग्रेजी मासों की तारीखें हैं जो बारह-बारह दिनों के अन्तर से द्वितीय सारणी में दी गयी हैं और उनके सामने ऋण — या धन + चिन्हयुक्त संस्कार कला में अंकित हैं। बीच की किसी (अभीष्ट) तारीख के लिए संस्कार अनुपात से जान लेना चाहिये और उनके ऋण या धन चिन्ह से मुताबिक उनको मध्यम राहु में घटाना या जोड़ना चाहिए। मध्यम राहु में ये दोनों संस्कार करने से राहु का व्यवहारोपयोगी स्पष्ट भोगांश उपलब्ध होगा। एक उदाहरण से सारी गणित-प्रक्रिया स्पष्टतः समझ में आ जायेगी।

उदाहरण—ता० २० अप्रैल सन १९७५ ई० को भा० प्र० समय से घंटा ५॥ बजे राहु का स्पष्ट भोगांश ज्ञात करना है; उस दिन सूर्य का भोगांश ५°–४७'–१३'' तथा राहु का मध्यम भोगांश २१९°-१८'–१०'' है (देखो विगत उदाहरण सं० २)। सूर्य के भोगांश में राहु का भोगांश घटाना है ; किन्तु यहाँ सूर्य का भोगांश राहु के भोगांश से कम है ; अतः उसमें पूरे चक्र के अंश ३६० जोड़ा तो ३६५°–४७'-१३'' हुए। इसमें राहु-भोगांश २१९°–१८'–१०'' घटाने से शेष अंशादि १४६°–२९'-३'' उपकरण हुआ जिसके द्वारा पहली सारणी से संस्कार ज्ञात करना है। इस सारणी में १४४ अंश का संस्कार ऋण ९३' कला तथा १४७ अंश का ९०' कला ऋण चिन्हयुक्त हैं अर्थात् ३ अंश यानी १८० कला में संस्कार ३ कला घटता है। हमें १४६° अंश २९' कला का संस्कार चाहिए जो १४४° से २°।२९' यानी १४९' अधिक है। अतः अनुपात किया कि १८० कला में ३ कला फल मिलता है तो १४९ कला में कला में क्या? तब $\frac{३ \times १४९}{१८०}$=२'।२९'' फल प्राप्त हुआ, जिसे उपकरण १४४° के संस्कार ९३' में घटा दिया तो ९०' कला ३१'' विकला यानी अंशादि १।३०।३१–ऋण चिन्हयुक्त प्राप्त हुआ। इसके बाद द्वितीय सारणी में ता० ११ अप्रैल का संस्कार ऋण–९' तथा २३ ता० का भी–९' ही है। अतः इसके अन्तर्गत अभीष्ट ता० २० अप्रैल का भी वही-९' द्वितीय संस्कार हुआ। उपर्युक्त दोनों संस्कार ऋणात्मक है। इस वास्ते उनको राहु के मध्यम भोगांश २१९°–१८'–१०''
में घटाया प्रथम संस्कार (—) १–३०–३१

	२१७–४७–३९
द्वितीय संस्कार (–)	०– ९ –०
शेष अंशादि	२१७–३८–३९

२१७ अंशमें ३० का भाग देनेपर राश्यादि ७–७°–३८'–४९'' अभीष्ट दिन और समय के लिए निरयण राहु का

स्पष्ट भोगांश (True Longitude) प्राप्त हुआ। इसमें ६ राशि जोड़ने से निरयण केतु का स्पष्ट भोगांश राश्यादि ११७°।३८'।४९" हुआ। इसी भाँति अन्यान्य दिनों के लिए राहु केतु का शुद्ध निरयण मध्यम और स्पष्ट भोग इस सारणी के द्वारा वे लोग भी सहज ही जान सकते हैं जो खगोल सम्बन्धी ज्याचापीय गणित से अनभिज्ञ हैं।

सारणी-संख्या–१

उपकरण : सूर्य ऋण (—) मध्यम राहु

जब उपकरण का मान १८०° से अधिक हो तब इसमें १८०° घटा दीजिए और शेष को उपकरणवत् उपयोग कीजिए।

उपकरण	संस्कार	उपकरण	उपकरण	संस्कार	उपकरण	उपकरण	संस्कार	उपकरण
°	'	°	°	'	°	°	'	°
०	+ ०–	१८०	३०	+८५–	१५०	६०	+८५–	१२०
३	१०	१७७	३३	९०	१४७	६३	७९	११७
६	२०	१७४	३६	९३	१४४	६६	७३	११४
९	३०	१७१	३९	९६	१४१	६९	६६	१११
१२	४०	१६८	४२	९८	१३८	७२	५८	१०८
१५	४९	१६५	४५	९८	१३५	७५	४९	१०५
१८	५८	१६२	४८	९८	१३२	७८	४०	१०२
२१	६६	१५९	५१	९६	१२९	८१	३०	९९
२४	७३	१५६	५४	९३	१२६	८४	२०	९६
२७	७९	१५३	५७	९०	१२३	८७	१०	९३
३०	+८५–	१५०	६०	+८५–	१२०	९०	+ ०–	९०

सारणी-संख्या–२

अंग्रेजी मासों की तारीख के अनुसार संस्कार

जनवरी	३	–०'	जुलाई	५	–०
	१५	२		१७	+२
	२७	४		२९	४
फरवरी	९	५	अगस्त	१०	५
	२१	७		२२	७
मार्च	५	८	सितम्बर	४	८
	१७	९		१६	९
	२९	९		२८	९
अप्रैल	११	९	अक्टूबर	१०	९
	२३	९		२२	९
मई	५	८	नवम्बर	३	८
	१७	७		१६	७
	२९	५		२८	५
जून	१०	४	दिसम्बर	१०	४
	२३	–२		२२	२
			जनवरी	३	+०

राहु-केतु की क्रांति का गणित

दो ग्रहों की समकल युति तब होती है जब उनके राश्यादि भोग परस्पर तुल्य होते हैं। इसी तरह ग्रहों का क्रांतिसाम्य योग तब बनता है जब उनकी क्रांति का अंशादि मान तुल्य होता है। रवि चंद्र के क्रांतिसाम्य को भारतीय ज्योतिष में 'महापात' की संज्ञा दी गयी है। उस समय दोनों की क्रांति एक ही दिशा उत्तर या दक्षिण की हो तो उसे व्यतीपात तथा दोनों की क्रांति भिन्न दिशा की हो तो उसे वैधृतिपात कहा गया है। भारतीय ज्योतिष में इसे इतना अधिक महत्त्व दिया गया है कि सूर्य-सिद्धान्तादि अनेक सिद्धान्त-ग्रन्थों में इस विषय पर पाताधिकार नामक एक स्वतंत्र अध्याय ही लिखा गया है। सूर्य-सिद्धान्त के उक्त अध्याय में इसके कालानयन की विधि बतलाने के बाद इसके आधिदैविक स्वरूप तथा फलश्रुति का भी वर्णन है—"स कृष्णो दारुणवपुर्लोहिताक्षो महोदरः। सर्वानिष्टकरो रौद्रो भूयो भूयः प्रजायते॥" अर्थात् क्रांतिसाम्य-कालोत्पन्न अग्नि-पुरुष का शरीर दारुण, रंग काला, नेत्र लाल और पेट बहुत बड़ा होता है। लोक के लिए सर्वानिष्टकारी तथा महाभयप्रद वह अग्नि-पुरुष अनेक बार (प्रत्येक क्रांतिसाम्य-काल में) पैदा होता रहता है।' सिद्धान्त-ग्रंथों में विशुद्ध गणित-ज्योतिष के विषय रहते हैं; किन्तु सूर्य-सिद्धान्तकार के लिए अपनी कृति में इस योग के गणित के साथ फलित का भी समावेश करना अनिवार्य हो गया, इसी से इस योग के महत्त्व का अनुमान किया जा सकता है। वस्तुतः सूर्य चन्द्र का क्रांतिसाम्य यहाँ उपलक्षण है। सूर्य चंद्र की ही भाँति अन्य ग्रहों के क्रांतिसाम्य भी फलितज्ञों के लिए अनिवार्यतः प्रयोजनीय होते हैं। पाश्चात्य फलित ज्योतिषोक्त ग्रह-दृष्टियोगों (aspects) में तो इस क्रांतिसाम्य को ग्रहों की समकल युति से भी अधिक प्रभावकारी माना गया है। इससे तीव्र प्रभावकारी केवल एक ही दृष्टियोग 'प्रतियोग' (opposition) होता है; किंतु जहाँ अन्य सभी दृष्टियोग ग्रहों के भोगांश के द्वारा जाने जाते हैं, वहाँ क्रांतिसाम्य-ज्ञान के लिए ग्रहों की क्रांति एवं उसकी गति जानना अनिवार्य है। सूर्य चंद्रादि ग्रहों के पारस्परिक क्रांतिसाम्य की अपेक्षा राहु केतु का अन्य ग्रहों से क्रांतिसाम्य कम प्रभावशाली नहीं होता। अतः राहु केतु का स्पष्ट भोग एवं क्रांति जानना ज्योतिषज्ञों के लिए अत्यन्त आवश्यक हो जाता है। राहु केतु के क्रांति-ज्ञान की विधि भी अत्यन्त सरल है। ज्योतिष-रहस्य प्रथम खण्ड पृष्ठ १६ से १९ तक सायन सूर्य से उसकी क्रांति जानने की सारणी छपी है। राहु-केतु की क्रांति जानने के लिए भी वही सारणी सर्वथा उपयुक्त है। निरयण राहु केतु में अभीष्ट दिन का अयनांश जोड़ कर उनका सायन भोगांश ज्ञात कीजिए, फिर उसके द्वारा उक्त सारणी से ठीक उसी तरह राहु केतु की क्रांति स्पष्ट कीजिए, जिस तरह सायन सूर्य के भोगांश से सूर्य-क्रांति का स्पष्टीकरण इस पुस्तक बतलाया गया है। आशा है, राहु केतु संबंधी यह नवीन खोजपूर्ण सामग्री पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक और अति उपयोगी प्रमाणित होगी। ●

राहु-केतु का मार्गत्व

प्रचलित धारणा के अनुसार राहु-केतु हमेशा वक्री चलनेवाले तमोग्रह हैं। वे एक वर्ष में लगभग १९·३° भ्रमण करते हैं और लगभग १८.६ वर्ष में सम्पूर्ण राशि-चक्र का भ्रमण करते हैं। इनकी दैनिक मध्यम गति ३′–११″ है।

सूर्य के चतुर्दिक भ्रमण करनेवाले आकाशीय पिण्डों को ग्रह कहते हैं और किसी ग्रह के चारो ओर भ्रमणशील पिण्ड को उस ग्रह का उपग्रह कहते हैं। इस दृष्टि से चन्द्रमा पृथ्वी का उपग्रह है। पृथ्वी के चारों ओर चन्द्रमा के भ्रमण से आकाश में जो उसका भ्रमण-मार्ग बनता है उसको सिद्धान्त-ग्रन्थों में विमण्डल कहा गया है। विमंडल और क्रान्तिवृत्त दोनों एक ही तल (Plane) में नहीं हैं; बल्कि क्रांतिवृत्त से विमण्डल करीब सवा पाँच अंश का कोण बनाता हुआ उसे दो बिन्दुओं पर काटता है जिन्हें चन्द्रपात कहते हैं। जिस पात-विन्दु को पार कर चन्द्रमा क्रांतिवृत्त के उत्तरी गोलार्ध में भ्रमण करता है, उसे 'राहु' तथा जिस पात-बिन्दु से चन्द्रमा क्रांतिवृत्त के दक्षिणी गोलार्ध में भ्रमणशील होता है, उसे भारतीय ज्योतिष में 'केतु' की संज्ञा दी गयी है।

आजकल प्रकाशित होनेवाले पंचागों में राहु-केतु की मध्यम दैनिक गति, स्थिति दी जाती है। तदनुसार राहु प्रतिदिन ३ कला ११ विकला के अनुसार वक्री यानी पश्चिमाभिमुख चला करता है, जबकि पंचांगों में अन्य ग्रहों की मध्यम गति स्थिति न देकर स्पष्ट गति स्थिति दी जाती है। इससे जहाँ हम ग्रहों को जन्म-कुण्डली निर्माण या अन्य कार्यों में स्पष्ट ग्रह के रूप में दिखलाते वहाँ राहु-केतु को मध्यम राहु-केतु के रूप में। अत: फलित ज्योतिषानुसार राहु-केतु के फल में बहुत अन्तर पड़ जाता है। मध्यम राहु-केतु और स्पष्ट रोहु-केतु में लगभग पौने दो अंश तक का अधिकतम अन्तर होता है। इससे कभी मध्यम राहु बारहवें भाव में होता तो स्पष्ट राहु ग्यारहवें भाव में चला गया होता है। अथवा जहाँ मध्यम राहु ग्यारहवें भाव में होता, वहाँ स्पष्ट राहु बारहवें भाव में आ जाता है। अब अगर किसी कुण्डली में स्पष्ट राहु की ऐसी स्थिति हो तो उसके फलादेश में कितना महान् अन्तर पड़ जायेगा, इसका सहज ही अनुमान किया जा सकता है।

उदाहरण के लिए ८ अक्टूबर १९७५ को सुबह घं. ५ मि. ३० बजे मध्यम राहु का भोगांश २१० अंश १५ कला है और सूर्य का भोगांश १७० अंश ३४ कला है। स्पष्ट राहु बनाने के लिए हमको सूर्य के भोगांश में राहु का भोगांश घटाना होगा। यहाँ सूर्य का भोगांश राहु के भोगांश से कम होने के कारण सूर्य के भोगांश में ३६०° जोड़कर उसमें राहु-भोग को घटाना होगा। अत:—
(३६०°+१७०°—३४′)–(२१०°–१५′)=३२०°—१९′ हुआ जो १८०° से अधिक है। इसलिए इसमें १८०° घटा देने पर शेष १४०°–१९′ प्रथम सारणी का उपकरण हुआ सारणी में १४१° उपकरण का संस्कार ऋण–९६′ दिया गया है, और १३८° उपकरण का ऋण ९८′ कला। हमारा उपकरण १४०°–१९′ है। इसलिए १३८° और १४१° के बीच के चालन को हम अनुपात से निश्चित करेंगे जो कि ९६′—४०″ के लगभग होगा। स्थूलरूप से अगर हम ४०″ को १′ मान लें तो हमको ९७′ मध्यम राहु में घटाना होगा।

सारणी सं. २ के अनुसार ८ अक्टूबर के लिए संस्कार ९′+प्राप्त होता। इस तरह मध्यल राहु २१०°।१५′—१°।३७′=२०८°।३८′+९′ द्वितीय संस्कार=२०८°।४७′= ६ राशि २८° अंश ४७′ कला स्पष्ट राहु हुआ।

यहाँ मध्यम राहु अभी वृश्चिक में ही है जबकि स्पष्ट राहु तुला में जा चुका है जिससे फलित में महान् अन्तर पड़ जाना निश्चित है। इसलिए अन्य ग्रहों के समान राहु-केतु भी स्पष्ट ही लेना चाहिए, मध्यम नहीं।

राहु की ३ कला ११ विकला गति उसकी मध्यम दैनिक गति है। वास्तव में अन्य ग्रहों के समान राहु-केतु की गति भी घटती-बढ़ती रहती है। राहु-केतु की अधिकतम दैनिक गति ७′ कला तक हो जाती है जो उसकी मध्यम गति के दुगने से भी अधिक है।

उपर्युक्त गति-भेद के फलस्वरूप अन्य ग्रहों के समान राहु-केतु भी स्तम्भी और मार्गी होते रहते हैं। राहु-केतु का भ्रमण अन्य ग्रहों से विपरीत दिशा में होने के कारण वे सदा वक्रचारी कहे गए हैं; किन्तु सूर्य के साथ उनकी युति अथवा प्रतियुति होने के समय इनका वक्रत्व थोड़े समय के लिए समाप्त हो जाता है और यह मार्गी हो जाते हैं। अन्य ग्रह जिस तरह से वक्री और मार्गी होने के समय स्तम्भी होते हैं उसी तरह राहु-केतु भी स्तम्भी होते हैं; प्रत्युत अन्य ग्रहों की अपेक्षा ये काफी अधिक समय तक स्तम्भी रहते हैं। ज्योतिष में किसी ग्रह का स्तम्भी होना बहुत ही प्रभावकारी माना गया है और अगर किसी के जन्माङ्ग में राहु-केतु स्तम्भी हों तो यह उक्त कुण्डली के फलादेश का अति महत्त्वपूर्ण योग (factor) होगा। व्यक्तिगत कुण्डली में अगर राहु-केतु अपनी सहज वक्रावस्था के विपरीत मार्गी या स्तम्भी हों तो उनका वही फल कदापि नहीं हो सकता जो तथोक्त स्थिति में वक्री राहु-केतु के लिए फलित-ग्रंथों में निर्दिष्ट है।

सारांश यह है कि अन्य ग्रहों के समान राहु-केतु भी स्तम्भी, वक्री, मार्गी, अतिचारी इत्यादि होते हैं। सूर्य के साथ युति अथवा प्रतियुति के समय पूर्वोक्त सारणी से पिछले कुछ वर्षों के स्पष्ट राहु केतु को ज्ञात कर उनके मार्गत्व को जाना जा सकता है। इतना ही नहीं, बल्कि जिस समय सूर्य के साथ राहु केतु की युति, प्रतियुति होती है, उसी समय राहु केतु का सूर्य से क्रांतिसाम्य भी होता है। इस भाँति सूर्य के साथ राहु केतु की युति, प्रतियुति दुगुनी प्रभावकारी हो जाती है। पाश्चात्य फलित ज्योतिष में ग्रहों के पारस्परिक दृष्टि-योगों (aspects) का सर्वोपरि महत्त्व है। उन दृष्टि-योगों में ही एक दृष्टियोग क्रांतिसाम्य भी है। जिन दो ग्रहों में यह योग बनता है उन दोनों की क्रांति उत्तर या दक्षिण हो, अथवा दोनों में से किसी एक की क्रांति उत्तर तथा अन्य की दक्षिण हो, तब उनकी क्रांति के अंशादिमान में यदि २ अंश या इससे कम अन्तर हो तो उन दोनों ग्रहों में क्रांतिसाम्य योग बन जाता है। आज के फलित-विशेषज्ञों का सुपरीक्षित मत है कि जन्म-कुण्डली में पराशरोक्त राजयोगकारी ग्रह का राहु या केतु से उक्त क्रान्तिसाम्य-योग बन जाय तो उस योगकारक ग्रह की दशान्तर्दशा प्राप्त होने पर भी जातक उसके यथोक्त शुभ फल से वञ्चित रहता है अर्थात् उक्त राजयोग भंग हो जाता है। इस तरह अन्य ग्रहों की भाँति राहु-केतु की क्रांति का ज्ञान भी फलितज्ञों के लिए नितान्त आवश्यक है। भारतीय ज्योतिषोक्त ग्रहों के अयनबल का साधन उनकी क्रान्ति के द्वारा ही किया जाता है। मेदिनी-ज्योतिष में ग्रहों की क्रांति के बिना उनसे प्रभावित स्थल का निर्देश किया ही नहीं जा सकता। अर्घकाण्ड में तो क्रांति के अलावा ग्रहों के शर का ज्ञान भी अपेक्षित है। ग्रहों के शर-परिवर्तनका बाजार-भावों पर तीव्र एवं निश्चित प्रभाव पड़ता है। जिस तरह ग्रह वक्री या मार्गी होने के पूर्व स्तम्भी होता है, उसी प्रकारशर-परिवर्तन के समय वह निःशर होता यानी उसके शर का अंशादिमान शून्य हो जाता है। चन्द्रमा का शर वास्तव में तभी शून्य होता है, जब उसकी युति स्पष्ट राहु या केतु के साथ होती है; न कि मध्यम राहु या केतु के साथ। यहाँ भी राहु-केतु के स्पष्ट भोगांश (True Longitude) की उपयोगिता स्वतः सिद्ध है; अधिक व्याख्या के लिए यहाँ स्थान का अभाव है, तदर्थ नवीन पाश्चात्य ज्योतिष-ग्रंथों को पढ़ना चाहिए। —श्रीकेशरनाथ कपूर, वाराणसी

खगोल-विज्ञान विषयक केप्लर के तीन नियम

१. दीर्घवृत्त का नियम—प्रत्येक ग्रह सूर्य की परिक्रमा करते समय वर्तुलाकार (गोल) वृत्त नहीं, बल्कि दीर्घवृत्त बनाता है जिसकी एक नाभि पर सूर्य होता है।

२. समान क्षेत्रफल का नियम—सूर्य के चतुर्दिक् भ्रमणशील ग्रह और सूर्य को मिलानेवाली रेखा (मंदकर्ण) समानकाल में समान क्षेत्रफल तै करती है जिससे उसके कोणीय भोगांश में फर्क पड़ता रहता है।

३. भगणमान का नियम—किन्हीं दो ग्रहों के भगणकालों के वर्ग का आनुपातिक सम्बन्ध वही है जो सूर्य से उनकी मध्यम दूरियों के घनों का है। उदाहरणार्थ, सूर्य की परिक्रमा पूरी करने में बुध को ८८ दिन और पृथ्वी को ३६५ दिन लगते हैं। इनके वर्गफल क्रमशः ७७४४ और १३३२२५ हुए। इनमें अनुपात स्थूलतः १ : १७·२ है। फिर सूर्य से बुध की औसत दूरी ३६००००००० मील और पृथ्वी को ९३००००००० मील है। इन दोनों संख्याओं के (शून्य को छोड़कर) घनफल क्रमशः ४६६५६ तथा ८०४३५७ है; आप देखेंगे कि इनका भी अनुपात १ : १७·२ है।

न्यूटन के नियम

१. यदि कोई बाह्य बल न लगाया जाय तो प्रत्येक वस्तु या तो अपनी अचल दशा में रहना चाहती या ऋजु (सीधी) रेखा में समगति से चलायमान रहना चाहती है।

२. गति का परिवर्तन लगाये जानेवाले बाह्य बल के मानानुसार होता है और यह परिवर्तन उस ऋजु रेखा की दिशा में होता है जिस दिशा में बल लगाया जा रहा हो।

३. प्रत्येक क्रिया की प्रतिक्रिया होती है जो परिणाम में सदैव समान, परन्तु दिशा में विरुद्ध होती है अर्थात् प्रत्येक क्रिया के तुल्य, किन्तु उसकी विरुद्ध दिशा में प्रतिक्रिया होती है। इस विश्व में प्रत्येक भौतिक पदार्थ प्रत्येक इतर भौतिक पदार्थ को एक ऐसे बल से अपनी ओर आकर्षित करता है जोउनके द्रव्यमानों के गुणनफल पर अनुलोमतः और उनकी दूरी के वर्गपर विलोमतः निष्पन्न है। उदाहरणार्थ, यदि दो पदार्थों के द्रव्यमानों का गुणनफल ४ है और दो अन्य पदार्थों के द्रव्यमानों का गुणनफल २० है तो इन दो द्रव्यो में आकर्षण-बल पहलेवाले द्रव्यों का $\frac{२०}{४}$ अर्थात् पाँचगुना होगा। यदि पहले दो पदार्थों के बीच में ३ फुट का अंतर है और दूसरे पदार्थों के बीच में १२ फुट का यानी पहलेवाले पदार्थों के अंतर से दूसरेवाले पदार्थों का अंतर चारगुना है तब दूसरेवाले पदार्थों का आकर्षण-बल पहलेवालों से $\frac{१}{४^२}$ अर्थात् $\frac{१}{१६}$ होगा।

['जीवन'—डायरी से

निरयण राहु-सारणी

सारणी-संख्या—१ (वर्ष)

वर्ष	१८०० ई० °	′	″	१९०० ई० °	′	″	वर्ष	१८०० ई० °	′	″	१९०० ई० °	′	″
०	३५२	१४	१०·२	२१६	४४	५७·५							
१	३३२	५३	३८·३	१९७	२४	२५·८	४१	२७८	४०	३९·५	१४३	११	३२ १
२	३१३	३५	६·५	१७८	३	५४·२	४२	२५९	२०	७·७	१२३	५१	०·५
३	२९४	१२	३४·७	१५८	४३	२२·५	४३	२३९	५९	३६·०	१०४	३०	२८·८
४	२७४	४८	५२·१	१३९	१९	४०·०	४४	२२०	३५	५३ ५	८५	६	४६·५
५	२५५	२८	२०·३	११९	५९	८·४	४५	२०१	१५	२१·७	६५	४६	१४·९
६	२३६	७	४८·५	१००	३८	३६ ७	४६	१८१	५४	५०·०	४६	२५	४३·२
७	२१६	४७	१६·६	८१	१८	५·०	४७	१६२	३४	१८·२	२७	५	११·६
८	१९७	२३	३४·२	६१	५४	२२·६	४८	१४३	१०	३५·७	७	४१	२९·२
९	१७८	३	२·४	४२	३३	५०·९	४९	१२३	५०	४·०	३४८	२०	५७·६
१०	१५८	४२	३०·६	२३	१३	१९·३	५०	१०४	२९	३२·२	३२९	०	२६·०
११	१३९	२१	५८·८	३	५२	४७·६	५१	८५	९	०·५	३०९	३९	५४·४
१२	११९	५८	१६·२	३४४	२९	५·२	५४	६५	४५	१७·९	२९०	१६	१२·०
१३	१००	३७	४४·५	३२५	८	३३·५	५३	४६	२४	४६·२	२७०	५५	४०·४
१४	८१	१७	१२·६	३१५	४८	१·८	५४	२७	४	१४·५	२५१	३५	८·८
१५	६१	५६	४०·९	२८६	२७	३०·२	५५	७	४३	४२·८	२३२	१४	३७·२
१६	४२	३२	५८·३	२६७	३	४७·८	५६	३४८	२०	२०·२	२१२	५०	५४·८
१७	२३	१२	२६·५	२४७	४३	१६·१	५७	३२८	५९	२८·५	१९३	३०	२३·२
१८	३	५१	५४·७	२२८	२२	४४·५	५८	३०९	३८	५६·८	१७४	९	५१·६
१९	३४४	३१	२३·०	२०९	२	१२·८	५९	२९०	१८	२५.१	१५४	४९	२०·०
२०	३२५	७	४०·४	१८९	३८	३०·४	६०	२७०	५४	४२·६	१३५	२५	३७·६
२१	३०५	४७	८·६	१७०	१७	५८·७	६१	२५१	२४	१०·८	११६	५	६·०
२२	२८६	२६	३६·८	१५०	५७	२७·१	६२	२३२	१३	३९·१	९७	४४	३४·४
२३	२६७	६	५·१	१३१	३६	५५·४	६३	२१२	५३	७·४	७७	२४	२·८
२४	२४७	४२	२२·५	११२	१३	१३·०	६४	१९३	२९	२४·९	५८	०	२०·५
२५	२२८	२१	५०·८	९२	५२	४१·४	६५	१७४	८	५३·२	३८	३९	४८·९
२६	२०९	१	१९·०	७३	३२	९·७	६६	१५४	४८	२१·५	१९	१९	१७·३
२७	१८९	४०	४७·२	५४	११	३८·१	६७	१३५	२७	४९·७	३५९	५८	४५·७
२८	१७०	१७	४·७	३४	४७	५५·७	६८	११६	४	७·२	३४०	३५	३·३
२९	१५०	५६	३२·९	१५	२७	२४·०	६९	९६	४३	३५ ५	३२१	१४	३१·७
३०	१३१	३६	१·१	३५६	६	५२·४	७०	७७	२३	३·८	३०१	५४	०·१
३१	११२	१५	२९·४	३३६	४६	२०·७	७१	५८	२	३२·१	२८२	३३	२८·५
३२	९२	५१	४६·८	३१७	२२	३८·३	७२	३८	३८	४९·५	२६३	९	४६·२
३३	७३	३१	१५·१	२९८	२	६·७	७३	१९	१८	१७·९	२४३	४९	१४·६
३४	५४	१०	४३·३	२७८	४१	३५·१	७४	३५९	५७	४६·२	२२४	२८	४३·०
३५	२४	५०	११·६	२५९	२१	३·४	७५	३४०	३७	१४·४	२०५	८	११·४
३६	१५	२६	२९·०	२३९	५७	२१ २	७६	३२१	१३	३२·०	१८५	४४	२९·१
३७	३५६	५	५७·३	२२०	३६	४९·४	७७	३०१	५३	०·३	१६६	२३	५७·१
३८	३३६	४५	२५·५	२०१	१६	१७·८	७८	२८२	३२	२८·६	१४७	३	२५·९
३९	३१७	२४	५३·७	१८१	५५	४६·१	७९	२६३	११	५६·९	१२७	४२	५४·४
४०	२९८	१	११·२	१६२	३२	३·७	८०	२४३	४८	१४ ४	१०८	१९	१२·०

वर्ष	१८०० ई० °	′	″	१९०० ई० °	′	″
८१	२२४	२७	४२·७	८८	५८	४०·४
८२	२०५	७	११·०	६९	३८	८·९
८३	१८५	४६	३९·३	५०	१७	३७·३
८४	१६६	२२	५६·९	३०	५३	५४ ३
८५	१४७	२	२५·१	११	३३	२३·४
८६	१२७	४१	५३·४	३५२	१२	५१·८
८७	१०८	२१	२१·७	३३२	५२	२०·३
८८	८८	५७	३९·३	३१३	२८	३७·९
८९	६९	३७	७ ६	२९४	८	६·३
९०	५०	१६	३५·९	२७४	४७	३४·८
९१	३०	५६	४·२	२५५	२७	३·२
९२	११	३२	२१·७	२३६	३	२०·९
९३	३५२	११	५०·१	२१६	४२	४१·३
९४	३३२	५१	१८·४	१९७	२२	१७·८
९५	३१३	३०	४६·७	१७८	१	४६·२
९६	२९४	७	४·२	१५८	३८	३·९
९७	२७४	४६	३२·६	१३९	१७	३२·३
९८	२५५	२६	०·९	११९	५७	०·८
९९	२३६	५	२९·२	१००	३६	२९·२
१००	२१६	४४	५७·५	८१	१२	४६ ९

ई० स॰ १८०० तथा सन् १९०० के किसी भी वर्ष, मास तथा दिन के लिए निरयण राहु स्पष्ट करने की सारणी 'ज्योतिष-रहस्य' नामक मेरी पुस्तक के प्रथम भाग के पृष्ठ १४ पर दी गयी है; किन्तु वह केवल कला पर्यन्त सूक्ष्म राहु-स्पष्ट ज्ञात करने के लिए है। हमारे पाठकों में सूक्ष्म गणित की चाह और शौक बढ़ता जा रहा है। अतः यहाँ विकला पर्यन्त सूक्ष्म निरयण राहु-स्पष्टीकरण के लए सारणियाँ प्रकाशित की जा रहा हैं। इनसे उक्त २०० वर्षों के किसी भी वर्ष, मास, दिन तथा अभीष्ट घंटा के लिए राहु का निरयण भोगांश सरलतापूर्वक ज्ञात किया जा सकता है। सारणी सं० १ में उक्त ई० सन् के ०, १, २, ३ इत्यादि प्रत्येक वर्ष के निरयण राहु के भोगांश, कला, विकला तथा विकला के दसवें भाग (दशमलव के रूप) में दिये गये हैं। प्रत्येक अंग्रेजी मास के लिए १०–१० दिन के अन्तर से अंशादि फल सारणी-सं० २ में तथा १ से लेकर क्रमशः ९ दिन तक के लिए अंशादि फल सारणी सं० ३ में दिये गये हैं। सारणी सं० ४ में १ से लेकर क्रमशः ६ घंटे, ६॥ घण्टे तथा ७ घंटे से लेकर १० घण्टे एवं २० घंटे के जो अंशादि फल दिये गये हैं, वे ऋणात्मक हैं अर्थात् उक्त तीनों सारणीयों के योगफल में घटाने के लिए हैं, जोड़ने के लिए नहीं। सारणी सं० ५ में जो विकलात्मक 'राहु-फल' दिया गया है, वह धनात्मक और ऋणात्मक

सारणी-सं० २ मास —

मा.	प्लु.	°	′	″
जनवरी ०	१	१९	३०	०·४
१०	११	१८	५८	१३·२
२०	२१	१८	२६	२५·८
३०	३१	१७	५४	३८·२
फरवरी ९	१०	१७	२२	५०·४
१९	२०	१६	५१	२·६
मार्च	१	१६	१९	१४·६
,,	११	१५	४७	२६·५
,,	२१	१५	१५	३८·४
,,	३१	१४	४३	५०·१
अप्रैल	१०	१४	१२	२·१
,,	२०	१३	४०	१४·१
,,	३०	१३	८	२६·३
मई	१०	१२	३६	३८·६
,,	२०	१२	४	५१·०
,,	३०	११	३३	३·५
जून	९	११	१	१६·१
,,	१९	१०	२९	२८·७
,,	२९	९	५७	४१·५
जुलाई	९	९	२५	५४·१
,,	१९	८	५४	५·८
,,	२९	८	२२	१९·१
[illegible]	८	७	५०	३१·४
,,	१८	७	१८	४३·६
,,	२८	६	४६	५५·६
[illegible]	[illegible]	६	१५	७·७
,,	[illegible]	५	४३	१९·६
,,	[illegible]	५	११	३१·३
[illegible]	[illegible]	४	३९	४३·२
,,	[illegible]	४	७	५५·२
,,	[illegible]	३	३६	७·२
[illegible]	[illegible]	३	४	१९·४
,,	[illegible]	२	३२	३१·८
,,	[illegible]	२	०	४४·२
[illegible]	[illegible]	१	२८	५६·९
,,	[illegible]	[illegible]	[illegible]	९·३
,,	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२३·०

सारणी सं० ३-दिन

दि.	°	′	″
०	०	३०	०·०
१	०	२६	४९·२
२	०	२३	३८·५
३	०	२०	२७.७
४	०	१७	१६.९
५	०	१४	६.१
६	०	१०	५५.४
७	०	७	४४.६
८	०	४	३३.८
९	५	१	२३.१

सारणी सं० ४-घं०

घं.	°	′	″
१	— ०	०	८·०
२	— ०	०	१५·९
३	— ०	०	२३·८
४	— ०	०	३१·८
५	— ०	०	३९·७
६	— ०	०	४७·७
६½	— ०	०	५१·७
७	— ०	०	५५·६
८	— ०	१	३·६
९	— ०	१	११·५
१०	— ०	१	१९·५
२०	— ०	२	३९·०

टि०—इस सारणी में दिये गये घं. १,२,३ आदि के फल ऋणात्मक (घटाने के लिये) हैं।

सारणी सं० ५—राहु-फल
उपकरण:निरयन राहु का भोगांश

भोगांश °	संस्कार ″	भोगांश °	संस्कार ″
०	+ ६·६	१८५	− ८·३
५	+ ७·९	१९०	− ९·६
१०	+ ९·२	१९५	−१०·८
१५	+१०·४	२००	−११·९
२०	+११·६	२०५	−१३·०
२५	+१२·६	२१०	−१४·०
३०	+१३·६	२१५	−१४·८
३५	+१४·४	२२०	−१५·५
४०	+१५·२	२२५	−१६·१
४५	+१५·८	२३०	−१६·६
५०	+१६·४	२३५	−१६·९
५५	+१६·८	२४०	−१७·१
६०	+१७·०	२४५	−१७·१
७०	+१७·२	२५०	−१७·२
७५	+१७·१	२५५	−१७·०
८०	+१६·९	२६०	−१६·८
८५	+१६·५	२६५	−१६·४
९०	+१६·०	२७०	−१५·७
९५	+१५·४	२७५	−१५·०
१००	+१४·६	२८०	−१४·३
१०५	+१३·८	२८५	−१३·४
११०	+१२·८	२९०	−१२·४
११५	+११·७	२९५	−११·३
१२०	+१०·६	३००	−१०·१
१२५	+ ९·३	३०५	− ९·०
१३०	+ ८·०	३१०	− ७·१
१३५	+ ६·६	३१५	− ६·३
१४०	+ ५·२	३२०	− ५·०
१४५	+ ३·७	३२५	− ३·५
१५०	+ २·२	३३०	− २·०
१५५	+ ०·६	३३५	− ०·६
१६०	− ०·९	३४०	+ ०·९
१६५	− २·५	३४५	+ २·३
१७०	− ३·६	३५०	+ ३·८
१७५	− ५·५	३५५	+ ५·२
१८०	− ६·९	३६०	+ ६·६

दोनों प्रकार का है अर्थात् सारणी के उपकरण निरयण राहु के भोगांशानुसार वह कहीं जोड़ा जाता है और कहीं घटाया जाता है। इस सारणी सं० ५ में निरयण राहु के भोगांश ५-५अंश के अंतर से दिये गये हैं और उनके सामने विकला एवं उसके दशमांश में राहु-फल दिया गया है। उक्त राहु-फल के पहले जो + धन या − ऋण चिह्न लगाया गया है, तदनुसार राहु-फल को उपर्युक्त सब सारणियों के योगफल में जोड़ना या घटाना चाहिए तब विकलांत सूक्ष्म निरयण राहुस्पष्ट उपलब्ध हो जायगा; किन्तु वह घंटादि समय ग्रीनिच मध्यम काल का होगा। पाठक यह तो जानते ही हैं कि ग्रीनिच मध्यम-काल (G. M. T.) भारतीय प्रमाणित समय (I. S. T.) से ५॥ घंटा पीछे रहता है ; अतः भारतीय प्रमाणित समय में ५॥ घंटा घटाने से ग्रीनिच मध्यम काल तथा ग्रीनिच मध्यम काल में ५॥ घंटा जोड़ने से भा० स्टै समय प्राप्त होता है ; तदनुसार ग्रीनिच मध्यम काल से घं० ६॥ बजे का राहुस्पष्ट भा० प्र० समय से दोपहर १२ बजे का होगा, अस्तु। राहु के अंश ३० से अधिक होने पर उसमें ३० का भाग देकर राश्यादि स्पष्ट कर लेना चाहिए। कहने की आवश्यकता नहीं कि राहु में ६ राशि जोड़ने से केतु स्पष्ट हो जाता है। उक्त राहु-फल का [illegible] अयनांश को स्पष्ट अयनांश में बदलने के लिए भी किया जा सकता है;किन्तु तब मध्यम अयनांश में राहु-[illegible] चिह्न के अनुसार करना चाहिए ; अर्थात् अभीष्ट दिन के राहु-भोगांश के अनुसार यदि राहु-[illegible] उपलब्ध होता है तो उस दिन के मध्यम अयनांश में "राहु-फल" को धन करने के बजाय ऋण [illegible] दिन का स्पष्ट अयनांश ज्ञात होगा। इसी भाँति ऋण − चिह्नयुक्त राहु-फल उपलब्ध [illegible] अयनांश में जोड़ने से स्पष्ट अयनांश बन जायेगा।

[illegible] है कि सारणी-सं० २ में जनवरी और फरवरी मास के लिए २ प्रकार के दिनांक दिये गये हैं: [illegible] जनवरी, फरवरी मास के लिए, दूसरा प्लुतवर्ष की जनवरी फरवरी मास के लिए। फरवरी से [illegible] दिसम्बर तक के दिनांक साधारण और प्लुत दोनों प्रकार के सालों के लिए हैं एवं सारणी-सं० २ में जो

भी दिनांक दिए गये हैं; यदि खास उन्हीं दिनांकों के लिए राहु-स्पष्ट करना हो तो सारणी-सं० ३ में ० दिन के लिए जो ३०′ फल दिया है उसका उपयोग करना न भूलें। सारणी- सं० २ में उल्लिखित दिनाकों के अतिरिक्त किसी दिनांक का राहुपष्ट करने के लिए उपर्युक्त ० दिन के फल का उपयोग करने की आवश्यक्ता नहीं। नीचे दिये गये कई उदाहरणों से सारी स्थिति स्वतः स्पष्ट हो जायेगी—

१. उदाहरण—ता० १० सितम्बर सन् १९३० ई० को भा.स्टैं.टा. से दोपहर १२ बजे का राहुस्पष्ट करना है; अतः– सारणी सं. १ से सन् १९३० ई० का फल लिया अंशादि ३५६°–६′–५२″·४

,, २ से ७ सितम्बर ,, ,,	+	६–१५–७·७
,, ३ से ३ दिन ,, ,,	+	०–२०–२७·७
	योग	२–४२–२७·८
,, ४ से ६॥ घंटा का फल अंशादि	—	०– ०–५१·७
स्थूल राहु		२–४१–३६·१
,, ५ से स्थूल राहु के २॥।° का राहु-फल विकला	+	७·३
सूक्ष्म निरयण राहु-स्पष्ट अंशादि		२–४१–४३·४

इस भांति ता० १० सितम्बर सन् १९३० ई० को ग्रीनिच मध्यमकाल (G. M. T.) से घं. ६॥ बजे अर्थात् भा० प्र० समय (I. S T.) से दोपहर १२ बजे का सूक्ष्म निरयण राहुस्पष्ट राश्यादि ०।२°।४१′।४३″·४ ज्ञात हो गया।

२. उदाहरण—ता० अप्रैल सन् १९७५ ई० को ग्रीनिच मध्यमकाल से घं. ० बजे अर्थात् भा० प्र० समय से प्रातः घं. ५॥ बजे का निरयण राहुस्पष्ट करना है; अतएव...

सारणी सं. १ से सन् १९७५ ई० का फल लिया अंशादि २०५° – ८′ – ११″·४

,, २ से २० अप्रैल ,, ,, ,,	+	१३ – ४० – १४.१
,, ३ से ० दिन ,, ,, ,,	+	० – ३० – ०
स्थूल राहु		२१९ – १८ – २५·५
,, ५ से स्थूल राहु के २२० अंश का राहु-फल विकला	—	१५·५
सूक्ष्म निरयण राहुस्पष्ट अंशादि		२१९ – १८ – १०·०

२१९ अंश में ३० का भाग देने से राहुस्पष्ट राश्यादि ७ – ९ – १८′ – १०″ ज्ञात हुआ।

३. उदाहरण—ता० ११ जनवरी सन् १९७६ ई० को ग्रीनिच मध्यम काल से घं. ० बजे अर्थात् भा. स्टै. टा. से प्रातः घं. ५॥ बजे का निरयण राहुस्पष्ट करना है; अतः

सारणी सं. १ से सन् १९७६ ई० का फल लिया अंशादि १८५°–४४′–२९″·१

सन् ७६ प्लुत वर्ष है, अतः सारणी सं. २ से प्लुत ११ जनवरी का फल अंशादि	+	१८–५८ –१३·२
सारणी सं. ३ से ० ,, ,, ,,	+	०–३० – ०
स्थूल राहु ,,		२०५–१२ –४२·३
,, ५ से स्थूल राहु के २०५ अंश का राहुफल विकला	–	१३·०
सूक्ष्म निरयण राहुस्पष्ट ,,		२०५–१२ –२९·३

२०५ अंश का राश्यादि बनाने के लिए उसमें ३० का भाग दिया तो ११ जनवरी सन् १९७६ ई० को स्टै. टा. से प्रात ५॥ बजे का सूक्ष्म निरयण राहु राश्यादि ६–२५°–१२′–२९″ स्पष्ट हो गया।

मध्यम अयनांश से स्पष्ट अयनांश-साधन का उदाहरण—

ता० १० सितम्बर सन् १९३० ई० का अयनांश-साधन करना है। इसी पुस्तक के पृष्ठ ९ की सारणी-सं.१ में सन् १९३० ई० का अयनांश २२°–५२′–३०″ दिया है तथा सारणी सं. २ में १० सितम्बर तक की अयनगति ३४″·८ दी गयी है। दोनों को जोड़ने से २२°–५३′–१९″·८ अभीष्ट दिन का मध्यम अयनांश हुआ। इस दिनांक के लिए राहु-स्पष्ट के उपर्युक्त उदाहरण सं०–१ में राहुफल ७″·३ + धन दिया गया है; अत यहाँ स्पष्ट अयनांश-साधन के लिए मध्यम अयनांश २२°–५३′–१९″·८ में उक्त राहुफल ७″·३ को ऋण किया तो शेष २२°–५३′–१२″·५ स्पष्ट अयनांश (True Ayanamsha) उपलब्ध हुआ; इसीको सूक्ष्म निरयण राहु में जोडने से नाविक पञ्चांग (Nautical Almanac) के तुल्य सायन राहु उपलब्ध होता है।

राहु-सारणी की प्रयोग-विधि तथा उदाहरण

ई० सन्० १८०० से २००० तक के २०० वर्षों की इस सायन राहु-सारणी का उपयोग सामान्य गणित जानने वाले ज्योतिष-प्रेमी भी बड़ी सरलतापूर्वक कर सकते हैं। इसमें तीन उपसारणियाँ क्रमश: वर्ष-सारणी A, मास-सारणी B, और दिन-सारणी C दी गयी हैं। वर्ष-सारणी में ई० सन् १९०० से २००० तक के सायन राहु-भोग-साधनार्थ अंश, कला, विकला के अंक दिये गये हैं। उसके बगल के दूसरे स्तम्भ (कालम) में सन् १९०० से १९९९ तक के प्रत्येक वर्ष के लिए संस्कार विकला और उसके शतांश में दिये गये हैं। उसके बगल के तीसरे खाने में सन् १८०० से १८९९ के वर्षों के लिए भी संस्कार विकला और उसके शतांश में दिये गये हैं। सामान्य और प्लुत वर्ष (लीप ईयर) की मास-सारणी B में वर्षान्तर्गत क्रमशः जनवरी फरवरी आदि १२ मासों के लिए अंश, कला, विकला के अंक दिये गये हैं। इसी तरह दिन-सारणी C में ० घंटा से लेकर ३१ घण्टा तक के लिए अंश, कला, विकला के अंक दिये गये हैं। इन सबका प्रयोग निम्न निर्देशानुसार करना चाहिए:—

ई० सन् १९०० से २००० तक के लिए निर्देश (Instructions) :—

(१) वर्ष-सारणी A से अभीष्ट वर्ष के अंक (अंश, कला, विकला लीजिए।

(२) उसके बगल के दूसरे स्तम्भ में जो संस्कार दिया है, उसे अभीष्ट वर्ष के अंशादि में जोड़ने से 'योग-फल' होगा।

(३) अभीष्ट वर्ष के अभीष्ट मास के अंशादि मास सारणी B से लीजिए तथा—

(४) अभीष्ट मास के अभीष्ट दिनांक के अंशादि दिन-सारणी से लीजिये और दोनों को उपर्युक्त 'योग-फल' में जोड़ दीजिए तो अभीष्ट वर्ष, मास, दिनांक (तारीख) के विश्वकाल (G.M.T.) से ० बजे अर्थात् भा. प्र. समय (I.S.T.) से घं.५ मि.३० बजे का सायन राहु स्पष्ट होगा।

ध्यान रहे (Caution) :—

(१) प्लुत वर्ष की १ जनवरी तथा १ फरवरी के लिए 'दिन-सारणी C' से ० दिन के अंशादि लीजिए और

(२) इन दो मासों के अन्य दिनांक (तारीख) के लिए उसकी संख्या में १ कम कर शेष दिन के अंशादि लेना चाहिए।

ई० सन् १८०० से १८९९ के वर्षों के लिए निर्देश:—

(१) अभीष्ट ईसवी सन् में १०० जोड़कर वर्ष-सारणी A से अभीष्ट वर्ष के अंक (अंश, कला, विकला) लीजिए;

(२) उसके बगल के तीसरे स्तम्भ (खाने) में जो संस्कार दिया है उसको तथा गत शताब्दि के लिए अंशादि १३४°—५′—२०″·६ को उपर्युक्त अंशादि में जोड़कर योग फल ज्ञात कीजिए ; उसमें अभीष्ट मास और दिनांक के लिए अंशादि मान क्रमश: सारणी B और C से लेकर जोड़ने से ईसवी सन् १८०० से १८९९ के अन्तर्गत आपके अभीष्ट वर्ष, मास, दिनांक का शुद्ध सायन राहु स्पष्ट हो जायेगा। निम्नांकित उदाहरणों से सभी गणित-प्रक्रिया सर्वथा स्पष्ट हो जायेगी—

उदाहरण—ता. १० सितम्बर सन् १९३० ई० का सायन राहु स्पष्ट करना है। अत: —

वर्ष-सारणी A से सन् १९३० के लिए १८°—५९′—३७″.०४
उसके बगल के खाने से 'संस्कार' जोड़ा +०.६७

योग-फल १८—५९—३७.७१
मास-सारणी B से सितम्बर के लिए +५—७—५१.९२
तथा दिन-सारणी C से ता. १० „ +१—२८—१३.६६
सबका जोड़ =२५—३५—४७.२९

अत: सन् ता. १० सितम्बर सन् १९३० ई. को भा. प्र. समय से घं. ५ मि. ३० बजे का सायन राहु राश्यादि ०—२५°—३५′—४७″ स्पष्ट हुआ।

२. उदाहरण—ता. २० अप्रैल सन् १९७५ ई० को भा. स्टै. टा. से घं. ५ मि. ३० बजे का सायन राहु स्पष्ट करना है ; अत :—

वर्ष-सारणी A से १९७५ के लिए २२८°—३८′—३५″·६१
संस्कार + ४२०
मास-सारणी B से अप्रैल के लिए +१३—१४— २·९३
दिन-सारणी C से ता. २० के लिए + ०—५६—२७·३२

सबका जोड़ = २४२—४९—१०·१०

अंश २४२ में ३० का भाग देकर राश्यादि बनाया तो रा. ८—२°—४९′—१०″ ता. २०-४-१९७५ ई० का सायन राहु स्टै. टा. घं. ५ मि. ३० बजे के लिए स्पष्ट हुआ।

३. उदाहरण—ता. २१ अप्रैल सन् १८६५ ई० को भा. स्टै. टा. से घं. ५ मि. ३० बजे का सायन राहु स्पष्ट करना है; तदर्थ सन् १८६५ में १०० जोड़ा तो १९६५ हुआ।
वर्ष-सारणी A से १९६५ के लिए ६०°—९′—२१″·६१
उसके सामने तीसरे खाने से संस्कार + ०·९१

गत शताब्दि के लिए —१३४—५—२०·६०
मास-सारणी B से अप्रैल के लिए —१३ —१४—२·९३
दिन-सारणी C से ता. २१ के लिए — ०—५३—१६·६८
सबका जोड़ = २१०—१४—३२·५७

अंशादि २१० में ३० का भाग देकर राश्यादि बनाया तब रा.७—०°—१४′—३३″ ता.२१-४-१८६५ ई० को भा.प्र. समय से घं. ५ मि. ३० बजे का सायन राहु स्पष्ट हुआ।

४. प्लुत वर्ष (लीप ईयर) का उदाहरण:—

ता. ११ जनवरी सन् १९७६ ई० को सायन राहु स्टै. टा. घं. ५ मि. ३० बजे का स्पष्ट करना है; अत:—

वर्ष-सारणी A से १९७६ के लिए २०९°—१५′—४३″·५६
बगल के खाने से संस्कार + ४·३३
जनवरी प्लुत १ के लिए + १८ — ० — ०·००
ता.११में१कमकर दिन १०के लिए + १— २८ —१३.६६

सबका जोड़ = २२८—४४ —०१.५५

अंश २२८ में ३० का भाग देकर राश्यादि बनाया तो रा.७—१८°—४४′—२″ ता. ११-१-१९७६ को भा.स्टै. टा.से घं. ५ मि. ३०बजे का सायन राहु स्पष्ट हो गया।

टिप्पणी—सायन राहु की दैनिक गति ३′—१०″·६३ ऋणात्मिका है जिसके द्वारा अपेक्षित दिनांक के इष्टकाल का सायन राहु स्पष्ट करना चाहिए। सायन राहु में इष्ट दिन का अयनांश घटाने से निरयण राहु होगा।

काशी (भूकेन्द्रीय अक्षांश २५°।१०'।१३") में सायन लग्न-राश्युदयमान, परमक्रांति-२३°२६'२०"

सायन लग्न	काशी का उदयमान सांपातिक घंटादि में			काशी का उदयमान सावन घंटादि में			काशी का उदयमान सांपातिक घट्यादि में			काशी का उदयमान सावन घट्यादि में		
राशि	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घ.	प.	वि.	घ.	प.	वि.
मेष	१	२९	४५	१	२९	३०	३	४४	२३	३	४३	४६
वृष	१	४१	४८	१	४१	३२	४	१४	३०	४	१३	५०
मिथुन	२	१	२५	२	१	५	५	३	३२	५	२	४२
कर्क	२	१६	२	२	१५	४०	५	४०	५	५	३९	१०
सिंह	२	१७	२८	२	१७	५	५	४३	४०	५	४२	४२
कन्या	२	१३	३२	२	१३	१०	५	३३	५०	५	३२	५५
तुला	२	१३	३२	२	१३	१०	५	३३	५०	५	३२	५५
वृश्चिक	२	१७	२८	२	१७	५	५	४३	४०	५	४२	४२
धनु	२	१६	२	२	१५	४०	५	४०	५	५	३९	१०
मकर	२	१	२५	२	१	५	५	३	३२	५	२	४२
कुम्भ	१	४१	४८	१	४१	३२	४	१४	३०	४	१३	५०
मीन	१	२९	४५	१	२९	३०	३	४४	२३	३	४३	४६
योग	२४	०	०	२३	५६	४	६०	०	०	५९	५०	१०

काशी भूकेंद्रीय अक्षांश २५°।१०'।१३" में निरयण लग्न-राश्युदयमान (अयनांश २३°-३३')

निरयण लग्न	काशी का उदयमान सांपातिक घटादि में			काशी का उदयमान सांपातिक घंटादि में			क्रमिक जोड़			काशी का उदयमान सांपातिक घट्यादि में			काशी का उदयमान सावन घट्यादि में		
राशि	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	स.	घं.	मि.	से.	घ.	प.	वि.	घ.	प.	वि.
मेष	१	३८	१६	१	३८	०	०	०	०	४	५	४०	४	५	०
वृष	१	५७	६	१	५६	४७	१	३८	०	४	५२	४०	४	५१	५८
मिथुन	२	१३	५८	२	१३	३७	३	३४	४७	५	३४	५५	५	३४	३
कर्क	२	१८	२	२	१७	३९	५	४८	२४	५	४५	५	५	४४	७
सिंह	२	१४	१५	२	१३	५३	८	६	३	५	३५	३८	५	३४	४२
कन्या	२	१३	३	२	१२	४१	१०	१९	२६	५	३२	३८	५	३१	४२
तुला	२	१६	३९	२	१६	१७	१२	३२	२७	५	४१	३७	५	४०	४२
वृश्चिक	२	१७	२३	२	१७	०	१४	४८	५६	५	४३	२७	५	४२	३०
धनु	२	५	३०	२	५	९	१७	५	५४	५	१३	४५	५	१२	५२
मकर	१	४५	४२	१	४५	२५	१९	११	३	४	२४	१५	४	२३	३३
कुम्भ	१	३१	२२	१	३१	७	२०	५६	२८	३	४८	२५	३	४७	४८
मीत	१	२८	४४	१	२८	२९	२२	२७	३५	३	४१	५०	३	४१	१३
योग	२४	०	०	२३	५६	४	२३	५६	४	६०	०	०	५९	५०	१०

सर्वत्रोपयोगी सायन दशम-राश्युदयमान (परम क्रांति २३-२६'-२०")

सायन दशम	निरक्षोदय मान सांपातिक घंटादि में			निरक्षोदय मान सावन घंटादि में			निरक्षोदय मान सांपातिक घट्यादि में			निरक्षोदय मान सावन घट्यादि में		
राशि	घ.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घ.	प.	वि.	घ.	प.	वि.
मेष	१	५१	३८	१	५१	२०	४	३९	५	४	३८	२१
वृष	१	५९	३८	१	५९	१८	४	५९	५	४	५८	१५
मिथुन	२	८	४४	२	८	२३	५	२१	५०	५	२०	५७
कर्क	२	८	४४	२	८	२३	५	२१	५०	५	२०	५७
सिंह	१	५९	३८	१	५९	१८	४	५९	५	४	५८	१५
कन्या	१	५१	३८	१	५१	२०	४	३९	५	४	३८	२०
तुला	१	५१	३८	१	५१	२०	४	३९	५	४	३८	२०
वृश्चिक	१	५९	३८	१	५९	१८	४	५९	५	४	५८	१५
धनु	२	८	४४	२	८	२३	५	२१	५०	५	२०	५७
मकर	२	८	४४	२	८	२३	५	२१	५०	५	२०	५७
कुम्भ	१	५९	३८	१	५९	१८	४	५९	५	४	५८	१५
मीन	१	५१	३८	१	५१	२०	४	३९	५	४	३८	२१
योग	२४	०	०	२३	५६	४	६०	०	०	५९	५०	१०

सर्वत्रोपयोगी निरयण दशम-राश्युदयमान (अयनांश २३°।३३')

निरयण दशम	निरक्षोदय मान सांपातिक घटादि में			निरक्षोदय मान सावन घंटादि में			क्रमिक जोड़			निरक्षोदय मान सांपातिक घट्यादि में			निरक्षोदय मान सावन घट्यादि में		
राशि	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घ.	प.	वि.	घ.	प.	वि.
मेष	१	५७	२८	१	५७	९	०	०	०	४	५३	४०	४	५२	५३
वृष	२	७	१५	२	६	५४	१	५७	९	५	१८	७	५	१७	१५
मिथुन	२	९	४४	२	९	२३	४	४	३	५	२४	२०	५	२३	२७
कर्क	२	१	५२	२	१	३२	६	१३	२६	५	४	४०	५	३	५०
सिंह	१	५२	४९	१	५२	३०	८	१४	५८	४	४२	३	४	४१	१५
कन्या	१	५०	५२	१	५०	३४	१०	७	२८	४	३७	१०	४	३६	२५
तुला	१	५७	२८	१	५७	९	११	५८	२	४	५३	४०	४	५२	५३
वृश्चिक	२	७	१५	२	६	५४	१३	५५	११	५	१८	७	५	१७	१५
धनु	२	९	४४	२	९	२३	१६	२	५	५	२४	२०	५	२३	२७
मकर	२	१	५२	२	१	३२	१८	११	२८	५	४	४०	५	३	५०
कुम्भ	१	५२	४९	१	५२	३०	२०	१३	०	४	४२	३	४	४१	१५
मीन	१	५०	५२	१	५०	३४	२२	५	३०	४	३७	१०	४	३६	२५
योग	२४	०	०	२३	५६	४	२३	५६	४	६०	०	०	५९	५०	१०

विभिन्न देशों में अंग्रेजी-पठित ज्योतिषज्ञों में कुण्डली-निर्माणार्थ जिस पुस्तिका का सर्वाधिक प्रचार है उसकी रचना अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त ज्योतिषी स्व० श्रीरॅफेल ने की है। इस पुस्तिका का नाम है Raphaels Tables of Houses for Northern Latitudes अर्थात रेफैल कृत उत्तरी अक्षांशों के लिए लग्नादि द्वादश भाव-सारणी। इसमें विषुवत रेखा के ० अक्षांश से लेकर ५० अक्षांश तक के लिए उक्त सारणियाँ दी गयी हैं। उनके अलावा पेट्रोग्रेड उ अक्षांश ५९°।५६' के लिए भी यथोक्त-सारणी का समावेश किया गया है। इस अत्यन्त उपयोगी एवं महत्वपूर्ण पुस्तिका का भारत

भी व्यापक प्रचार-प्रसार है। हमारे पास इसका सन् १९३८ का संस्करण है जब इसका मूल्य ५ शिलिंग (करीब ५ रु०) था। आजकल सम्भवतः १४-१५ रु० में बड़े शहरों के प्रमुख पुस्तक-विक्रेताओं से यह मिल सकती। अंग्रेजी के अंकमात्र से परिचित ज्योतिषज्ञ भी इन सारणियों से इष्ट अक्षांश के लिए सरलतापूर्वक सायन लग्न दशमादि स्पष्ट कर सकते हैं और उसमें इष्ट दिन का अयनांश घटाकर निरयण लग्न दशम बना सकते हैं। हर्ष की बात है कि इसमें रैफेल महोदय ने भारत के प्रमुख नगरों जैसे मद्रास, बम्बई, कलकत्ता, दिल्ली इत्यादि के अक्षांशों के लिए विशेषतः निर्मित सारणियां भी दी है जिनमें एक वाराणसी के अक्षांश उ. २५°।१९′ के लिए भी है। सन् १९७८ई० के भारतीय नाविकपंचांग (Indian Nautical Almanac) में भी वाराणसी का यही अक्षांश उल्लिखित है तथा हमने भी जंत्री-गणित के लिए भौगोलिक उ० अक्षांश २५°।१९′ ही स्वीकृत किया है, तदनुसार इष्ट सांपातिक काल द्वारा निरयण लग्न एवं दशम स्पष्ट करने की सारणियाँ पहले विश्वाहरण जंत्री में, पीछे 'ज्योतिष रहस्य' पुस्तक के प्रथम खण्ड में प्रकाशित की गयीं। जंत्री के अनेक पाठक लग्न-गणित के तुलनात्मक अध्ययन के लिए 'ज्योतिष-रहस्य' और रैफेल की सारणियों से लग्न दशम स्पष्ट करते और उनमें विकला तो क्या कई कलाओं का अवांछित अन्तर पाकर दुविधा में पड़ जाते हैं। किसी एक स्थान और इष्ट काल में एक ही पद्धति से साधित लग्न और दशम स्पष्ट में इतने अधिक

वाराणसी-अक्षांश उ. २५ अंश १९ कला की सायन लग्न एवं दशम सारणी : उपकरण इष्ट सांपातिक काल (R.A.M.C.)

सांपातिक काल घं.	मि.	से.	लग्न रा.	अं.	क.	दशम रा.	अं.
०	०	०	३	१०	४०	०	०
०	३	४०	३	११	२८	०	१
०	७	२०	३	१२	१७	०	२
०	११	०	३	१३	५	०	३
०	१४	४१	३	१३	५४	०	४
०	१८	२१	३	१४	४२	०	५
०	२२	२	३	१५	३१	०	६
०	२५	४२	३	१६	१९	०	७
०	२९	२३	३	१७	७	०	८
०	३३	४	३	१७	५६	०	९
०	३६	४५	३	१८	४४	०	१०
०	४०	२६	३	१९	३२	०	११
०	४४	८	३	२०	२०	०	१२
०	४७	५०	३	२१	८	०	१३
०	५१	३२	३	२१	५७	०	१४
०	५५	१४	३	२२	४५	०	१५
०	५८	५७	३	२३	३३	०	१६
१	२	४०	३	२४	२२	०	१७
१	६	२३	३	२५	१०	०	१८
१	१०	७	३	२५	५८	०	१९
१	२३	५१	३	२६	४७	०	२०
१	१७	३५	३	२७	३५	०	२१
१	२१	२०	३	२८	२४	०	२२
१	२५	६	३	२९	१३	०	२३
१	२८	५२	४	०	२	०	२४
१	३२	३८	४	०	५१	०	२५
१	३६	२५	४	१	४०	०	२६
१	४०	१२	४	२	२९	०	२७
१	४४	०	४	३	१८	०	२८
१	४७	४८	४	४	७	०	२९
१	५१	३७	४	४	५७	०	३०

सांपातिक काल घ.	मि.	से.	लग्न रा.	अं.	क.	दशम रा.	अं.
१	५१	३७	४	४	५७	१	०
१	५५	२७	४	५	४७	१	१
१	५९	१७	४	६	३६	१	२
२	३	८	४	७	२६	१	३
२	६	५९	४	८	१६	१	४
२	१०	५१	४	९	७	१	५
२	१४	४४	४	९	५७	१	६
२	१८	३७	४	१०	४८	१	७
२	२२	३१	४	११	३८	१	८
२	२६	२५	४	१२	२९	१	९
२	३०	२०	४	१३	२०	१	१०
२	३४	१६	४	१४	१२	१	११
२	३८	१३	४	१५	३	१	१२
२	४२	१०	४	१५	५५	१	१३
२	४६	८	४	१६	४७	१	१४
२	५०	७	४	१७	३९	१	१५
२	५४	७	४	१८	३१	१	१६
२	५८	७	४	१९	२४	१	१७
३	२	८	४	२०	१६	१	१८
३	६	९	४	२१	९	१	१९
३	१०	१२	४	२२	२	१	२०
३	१४	१५	४	२२	५६	१	२१
३	१८	१९	४	२३	४९	१	२२
३	२२	२३	४	२४	४३	१	२३
३	२६	२९	४	२५	३७	१	२४
३	३०	३५	४	२६	३१	१	२५
३	३४	४१	४	२७	२६	१	२६
३	३८	४९	४	२८	२०	१	२७
३	४२	५७	४	२९	१५	१	२८
३	४७	६	५	०	१०	१	२९
३	५१	१५	५	१	६	१	३०

सांपातिक काल घं.	मि.	से.	लग्न रा.	अं.	क.	दशम रा.	अं.
३	५१	१५	५	१	६	२	०
३	५५	२५	५	२	१	२	१
३	५९	३६	५	२	५७	२	२
४	३	४८	५	३	५३	२	३
४	८	०	५	४	४९	२	४
४	१२	१३	५	५	४५	२	५
४	१६	२६	५	६	४२	२	६
४	२०	४०	५	७	३८	२	७
४	२४	५५	५	८	३५	२	८
४	२९	१०	५	९	३२	२	९
४	३३	२६	५	१०	३०	२	१०
४	३७	४२	५	११	२७	२	११
४	४१	५९	५	१२	२४	२	१२
४	४६	१६	५	१३	२२	२	१३
४	५०	३४	५	१४	२०	२	१४
४	५४	५२	५	१५	१८	२	१५
४	५९	१०	५	१६	१६	२	१६
५	३	२९	५	१७	१५	२	१७
५	७	४९	५	१८	१३	२	१८
५	१२	९	५	१९	११	२	१९
५	१६	२९	५	२०	१०	२	२०
५	२०	४९	५	२१	९	२	२१
५	२५	९	५	२२	८	२	२२
५	२९	३०	५	२३	६	२	२३
५	३३	५१	५	२४	५	२	२४
५	३८	१२	५	२५	४	२	२५
५	४२	३४	५	२६	३	२	२६
५	४६	५५	५	२७	३	२	२७
५	५१	१७	५	२८	२	२	२८
५	५५	३८	५	२९	१	२	२९
६	०	०	५	३०	०	२	३०

सांपातिक काल घ	मि	से.	लग्न रा.	अं.	क.	दशम रा.	अं.
६	०	०	६	०	०	३	०
६	४	२२	६	०	५९	३	१
६	८	४३	६	१	५८	३	२
६	१३	५	६	२	५७	३	३
६	१७	२६	६	३	५७	३	४
६	२१	४८	६	४	५६	३	५
६	२६	९	६	५	५५	३	६
६	३०	३०	६	६	५४	३	७
६	३४	५१	६	७	५२	३	८
६	३९	११	६	८	५१	३	९
६	४३	३१	६	९	५०	३	१०
६	१७	५१	६	१०	४९	३	११
६	५२	११	६	११	४७	३	१२
६	५६	३१	६	१२	४५	३	१३
७	०	५०	६	१३	४४	३	१४
७	५	८	६	१४	४२	३	१५
७	९	२६	६	१५	४०	३	१६
७	१३	४४	६	१६	३८	३	१७
७	१८	१	६	१७	३६	३	१८
७	२२	१८	६	१८	३३	३	१९
७	२६	३४	७	१९	३०	३	२०
७	३०	५०	६	२०	२८	३	२१
७	३५	५	६	२१	२५	३	२२
७	३९	२०	६	२२	२२	३	२३
७	४३	२४	६	२३	१८	३	२४
७	४७	४७	६	२४	१५	३	२५
७	५२	०	६	२५	११	३	२६
७	५६	१२	६	२६	७	३	२७
८	०	२४	६	२७	३	३	२८
८	४	३५	६	२८	५९	३	२९
८	८	४५	६	२८	५४	३	३०

सांपातिक काई घं.	मि	से.	लग्न रा.	अ.	म.	दशम रा.	अ.
८	८	४५	६	२८	५४	४	०
८	१२	५४	६	२९	५०	४	१
८	१७	३	७	०	४५	४	२
८	२१	११	७	१	४०	४	३
८	२५	१९	७	२	३४	४	४
८	२९	२६	७	३	२९	४	५
८	३३	३१	७	४	२३	४	६
८	३७	३७	७	५	१७	४	७
८	४१	४१	७	६	११	४	८
८	४५	४५	७	७	४	४	९
८	४९	४८	७	७	५८	४	१०
८	५३	५१	७	८	५१	४	११
८	५७	५२	७	९	४४	४	१२
९	१	५३	७	१०	३६	४	१३
९	५	५३	७	११	२९	४	१४
९	९	५३	७	१२	२१	४	१५
९	१३	५२	७	१३	१३	४	१६
९	१७	५०	७	१४	५	४	१७
९	२१	४७	७	१४	५७	४	१८
९	२५	४४	७	१५	४८	४	१९
९	२९	४०	७	१६	४०	४	२०
९	३३	३५	७	१७	३१	४	२१
९	३७	२९	७	१८	२२	४	२२
९	४१	२३	७	१९	१२	४	२३
९	४५	१६	७	२०	३	४	२४
९	४९	९	७	२०	५३	४	२५
९	५३	१	७	२१	४४	४	२६
९	५६	५२	७	२२	३४	४	२७
१०	०	५२	७	२३	२४	४	२८
१०	४	३३	७	२४	१३	४	२९
१०	८	२३	७	२५	३	४	३०

सांपातिक काल घं.	मि	से.	लग्न रा.	अ.	क.	दशम रा.	अ.
१०	८	२३	७	२५	३	५	०
१०	१२	१२	७	२५	५३	५	१
१०	१६	०	७	२६	४२	५	२
१०	१९	४८	७	२७	३१	५	३
१०	२३	३५	७	२८	२०	५	४
१०	२७	२२	७	२९	९	५	५
१०	३१	८	७	२९	५८	५	६
१०	३४	५४	८	०	४७	५	७
१०	३८	४०	८	१	३६	५	८
१०	४२	२५	८	२	२५	५	९
१०	४६	९	८	३	१३	५	१०
१०	४९	५३	८	४	२	५	११
१०	५३	३७	८	४	५०	५	१२
१०	५७	२०	८	५	३८	५	१३
११	१	३	८	६	२७	५	१४
११	४	४६	८	७	१५	५	१५
११	८	२८	८	८	३	५	१६
११	१२	१०	८	८	५२	५	१७
११	१५	५२	८	९	४०	५	१८
११	१९	३४	८	१०	२८	५	१९
११	२३	१५	८	११	१६	५	२०
११	२६	५६	८	१२	४	५	२१
११	३०	३७	८	१२	५३	५	२२
११	३४	१८	८	१३	४१	५	२३
११	३७	५८	८	१४	२९	५	२४
११	४१	३९	८	१५	१८	५	२५
११	४५	१९	८	१६	६	५	२६
११	४९	९	८	१६	५५	५	२७
११	५२	४०	८	१७	४३	५	२८
११	५६	२०	८	१८	३२	५	२९
१२	०	०	८	१९	२०	५	३०

अन्तर का क्या कारण है और प्राप्त परिणामों में किसे शुद्ध माना जाय और क्यों ? कुछ पाठक तो बड़ी सहानुभूति पूर्वक मुझे चुपचाप अपने गणित की त्रुटियों को सुधार लेने की राय देते हैं जिसमें मेरी पुस्तक के अग्रिम संस्करण की सारणियों द्वारा रैफेल की सारणियों के तुल्य परिणाम प्राप्त हो और मुझ भारतीय लेखक की प्रतिष्ठा सुरक्षित रह सके। ऐसे भोले पाठकों के हृदय में यह भावना बद्धमूल रहती है कि भारतीय वैज्ञानिक प्रतिभा कभी पाश्चात्यों के समकक्ष नहीं आ सकती, उनसे आगे जाना तो असम्भवप्राय है। श्वेताङ्ग महाप्रभु की सदियों की राजनीतिक दासता से मुक्ति पा लेने के बाद भी तज्जनित हीन-भावना भारत के कई विद्वानों तक के मन से नहीं जा सकी है, फिर सामान्य अध्येताओं को क्या दोष दिया जाय ? रूसी विद्वान् को 'आर्यभट' पर शोध-प्रबंध प्रकाशित करते देख कर भारतीय विद्वान् अपने पूर्वाचार्यों की ज्ञानराशि का सही मूल्यांकन कर पाता है और तब वह श्वेतांग महाप्रभु के पदानुसरण में प्रयत्नशील होता है। अस्तु, लग्न दशम-गणित न केवल सिद्धान्त ज्योतिष बल्कि होरा एवं संहिताशास्त्र दृष्टया भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण है जिसका यथार्थ ज्ञान प्राप्त करना प्रत्येक ज्योतिष-प्रेमी के लिए अनिवार्य है। इसीलिए इस पुस्तक में रैफेल-कृत काशी की सायन लग्न-दशम-सारणी सहित लग्नोदय-गणित का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया जा रहा है जिससे सर्वसामान्य जिज्ञासु पाठक भी इस विषय की वास्तविकता स्वतः जान जायेंगे।

वाराणसी-अक्षांश उ. २५ अंश १९ कला की सायन लग्न एवं दशम-सारणी [उपकरण: इष्ट सांपातिक काल(R.A.M.C.)]

सांपातिक काल			लग्न			दशम		सांपातिक काल			लग्न			दशम	
घं.	मि	से.	रा.	अ.	क.	रा.	अ.	घं.	मि	से.	रा.	अ.	क.	रा.	अ.
१२	०	०	८	१९	२०	६	०	१३	५१	३७	९	१५	१६	७	०
१२	३	४०	८	२०	९	६	१	१३	५५	२७	९	१६	१३	७	१
१२	७	२०	८	२०	५८	६	२	१३	५९	१७	९	१७	१०	७	२
१२	११	०	८	२१	४७	६	३	१४	३	८	९	१८	८	७	३
१२	१४	४१	८	२२	३६	६	४	१४	६	५९	९	१९	६	७	४
१२	१८	२१	८	२३	२६	६	५	१४	१०	५१	९	२०	५	७	५
१२	२२	२	८	२४	१५	६	६	१४	१४	४४	९	२१	४	७	६
१२	२५	४२	८	२५	५	६	७	१४	१८	३७	९	२२	४	७	७
१२	२९	२३	८	२५	५५	६	८	१४	२२	३१	९	२३	४	७	८
१२	३३	४	८	२६	४५	६	९	१४	२६	२५	९	२४	५	७	९
१२	३६	४५	८	२७	३५	६	१०	१४	३०	२०	९	२५	७	७	१०
१२	४०	२६	८	२८	२५	६	११	१४	३४	१६	९	२६	९	७	११
१२	४४	८	८	२९	१६	६	१२	१४	३८	१३	९	२७	११	७	११
१२	४७	५०	९	०	७	६	१३	१४	४२	१०	९	२८	१५	७	१३
१२	५१	३२	९	०	५८	६	१४	१४	४६	८	९	२९	१८	७	१४
१२	५५	१४	९	१	४९	६	१५	१४	५०	७	१०	०	२३	७	१५
१२	५८	५७	९	२	४१	६	१६	१४	५४	७	१०	१	२८	७	१६
१३	२	४०	९	३	३२	६	१७	१४	५८	७	१०	२	३४	७	१७
१३	६	२३	९	४	२४	६	१८	१५	२	८	१०	३	४०	७	१८
१३	१०	७	९	५	१७	६	१९	१५	६	९	१०	४	४७	७	१९
१३	१३	५१	९	६	१०	६	२०	१५	१०	१२	१०	५	५५	७	२०
१३	१७	३५	९	७	३	६	२१	१५	१४	१५	१०	७	३	७	२१
१३	२१	२०	९	७	५६	६	२२	१५	१८	१९	१०	८	१२	७	२२
१३	२५	६	९	८	५०	६	२३	१५	२२	२३	१०	९	२२	७	२३
१३	२८	५२	९	९	४४	६	२४	१५	२६	२९	१०	१०	३२	७	२४
१३	३२	३८	९	१०	३८	६	२५	१५	३०	३५	१०	११	४४	७	२५
१३	३६	२५	९	११	३३	६	२६	१५	३४	४१	१०	१२	५५	७	२६
१३	४०	१२	९	१२	२८	६	२७	१५	३८	४९	१०	१४	८	७	२७
१३	४४	०	९	१३	२४	६	२८	१५	४२	५७	१०	१५	२१	७	२८
१३	४७	४८	९	१४	२०	६	२९	१५	४७	६	१०	१६	३६	७	२९
१३	५१	३७	९	१५	१६	६	३०	१५	५१	१५	१०	१७	५०	७	३०

सांपातिक काल			लग्न			दशम		सांपातिक काल			लग्न			दशम	
घं.	मि.	से.	रा.	अ.	क.	रा.	अ.	घं.	मि.	से.	रा.	अ.	क.	रा.	अ.
१५	५१	१५	१०	१७	५०	८	०	१८	०	०	०	०	०	९	०
१५	५५	२५	१०	१९	६	८	१	१८	४	२२	०	१	३०	९	१
१५	५९	३६	१०	२०	२२	८	२	१८	८	४३	०	२	५९	९	२
१६	३	४८	१०	२१	३९	८	३	१८	१३	५	०	४	२९	९	३
१६	८	०	१०	२२	५७	८	४	१८	१७	२६	०	५	५८	९	४
१६	१२	१३	१०	२४	१५	८	५	१८	२१	४८	०	७	२८	९	५
१६	१६	२६	१०	२५	३५	८	६	१८	२६	९	०	८	५७	९	६
१६	२०	४०	१०	२६	५५	८	७	१८	३०	३०	०	१०	२५	९	७
१६	२४	५५	१०	२८	१५	८	८	१८	३४	५१	०	११	५४	९	८
१६	२९	१०	१०	२९	३६	८	९	१८	३९	११	०	१३	२२	९	९
१६	३३	२६	११	०	५८	८	१०	१८	४३	१३	०	१४	५०	९	१०
१६	३७	४२	११	२	२०	८	११	१८	४७	५१	०	१६	१७	९	११
१६	४१	५९	११	३	४४	८	१२	१८	५२	११	०	१७	४४	९	१२
१६	४६	१६	११	५	८	८	१३	१८	५६	३१	०	१९	११	९	१३
१६	५०	३४	११	६	३२	८	१४	१९	०	५०	०	२०	३७	९	१४
१६	५४	५२	११	७	५७	८	१५	१९	५	८	०	२२	३	९	१५
१६	५९	१०	११	९	२३	८	१६	१९	९	२६	०	२३	२८	९	१६
१७	३	२९	११	१०	४९	८	१७	१९	१३	४४	०	२४	५२	९	१७
१७	७	४९	११	१२	१६	८	१८	१९	१८	१	०	२६	१६	९	१८
१७	१२	९	११	१३	४३	८	१९	१९	२२	१८	०	२७	३९	९	१९
१७	१६	२९	११	१५	१०	८	२०	१९	२६	३४	०	२९	२	९	२०
१७	२०	४९	११	१६	३८	८	२१	१९	३०	५०	१	०	२४	९	२१
१७	२५	९	११	१८	६	८	२२	१९	३५	५	१	१	४५	९	२२
१७	२९	३०	११	१९	३५	८	२३	१९	३९	२०	१	३	५	९	२३
१७	३३	५१	११	२१	३	८	२४	१९	४३	३४	१	४	२५	९	२४
१७	३८	१२	११	२२	३२	८	२५	१९	४७	४७	१	५	४५	९	२५
१७	४२	३४	११	२४	२	८	२६	१९	५२	०	१	७	३	९	२६
१७	४६	५५	११	२५	२१	८	२७	१९	५६	१२	१	८	२१	९	२७
१७	५१	१७	११	२७	१	८	२८	२०	०	२४	१	९	३८	९	२८
१७	५५	३८	११	२८	३०	८	२९	२०	४	३५	१	१०	५४	९	२९
१८	०	०	११	३०	०	८	३०	२०	८	४५	१	१२	१०	९	३०

सांपातिक काल			लग्न			दशम		सांपातिक काल			लग्न			दशम	
घं	मि.	से	रा.	अ.	क.	रा.	अ.	घं.	मि.	से.	रा.	अ.	क.	रा.	अ.
२०	८	४५	१	१२	१०	१०	०	२२	८	२३	२	१४	४४	११	०
२०	१२	५४	१	१३	२४	१०	१	२२	१२	१२	२	१५	४०	११	१
२०	१७	३	१	१४	२९	१०	२	२२	१६	०	२	१६	३६	११	२
२०	२१	११	१	१५	[illegible]	१०	३	२२	१९	४८	२	१७	३२	११	३
२०	२५	१९	१	१७	५	१०	४	२२	२३	३५	२	१८	२७	११	४
२०	२९	२६	१	१८	१६	१०	५	२१	२७	२२	२	१९	२२	११	५
२०	३३	३२	१	१९	२८	१०	६	२२	३१	८	२	२०	१६	११	६
२०	३७	३७	१	२०	३८	१०	७	२२	३४	५४	२	२१	१०	११	७
२०	४१	४१	१	२१	४८	१०	८	२२	३८	४०	२	२२	४	११	८
२०	४५	४५	१	२२	५७	१०	९	२२	४२	२५	२	२२	५७	११	९
२०	४९	४८	१	२४	५	१०	१०	२२	४६	९	२	२३	५०	११	१०
२०	५३	५१	१	२५	१३	१०	११	२२	४९	५३	२	२४	४३	११	११
२०	५७	५२	१	२६	२०	१०	१२	२२	५३	३७	२	२५	३६	११	१२
२१	१	५३	१	२७	२६	१०	१३	२२	५७	२०	२	२६	२८	११	१३
२१	५	५३	१	२८	३२	१०	१४	२३	१	३	२	२७	१९	११	१४
२१	९	५३	१	२९	३७	१०	१५	२३	४	४०	२	२८	११	११	१५
२१	१३	५२	२	०	४२	१०	१६	२३	८	२८	२	२९	२	११	१६
२१	१७	५०	२	१	४५	१०	१७	२३	१२	१०	२	२९	५३	११	१७
२१	२१	४७	२	२	४९	१०	१८	२३	१५	[illegible]	३	०	४४	११	१८
२१	२५	४४	२	३	५१	१०	१९	२३	१९	३४	३	१	३५	११	१९
२१	२९	४०	२	४	५३	१०	२०	२३	२३	१५	३	२	२५	११	२०
२१	३३	३५	२	५	५५	१०	२१	२३	२६	५६	३	३	१५	११	२१
२१	३७	२९	२	६	५६	१०	२२	२३	३०	३७	३	४	५	११	२२
२१	४१	२३	२	७	५६	१०	२३	२३	३४	१८	३	४	५५	११	२३
२१	४५	१६	२	८	५६	१०	२४	२३	३७	५८	३	५	४५	११	२४
२१	४९	९	२	९	५५	१०	२५	२३	४१	३९	३	६	३४	११	२५
२१	५३	१	२	१०	५४	१०	२६	२३	४५	१९	३	७	२४	११	२६
२१	५६	५२	२	११	५२	१०	२७	२३	४९	०	३	८	१३	११	२७
२२	०	४३	२	१२	५०	१०	२८	२३	५२	४०	३	९	२	११	२८
२२	४	३३	२	१३	४७	१०	२९	२३	५६	२०	३	९	५१	११	२९
२२	८	२३	२	१४	४४	१०	३०	२४	०	०	३	१०	४०	११	३०

लग्नोदय-गणित का तुलनात्मक अध्ययन—उदाहरणार्थ ता. १३ जनवरी सन् १९७८ ई. को भा. प्र. समय (I.S.T.) से घं. ५ मि. २९ से. १० बजे—चिंताहरण जंत्री से—निरयणसूर्य राश्यादि ८।२८°।५३'।३६" दै. गति ६१'।८" स्पष्ट अयनांश २३°।३३'।४", सूर्य-क्रांति द. २१°।३४', दै. गति १०' (–), मिनिट पर्यन्त सूक्ष्म सूर्योदय का स्टै. टा. घं.६ मि. ४९, इस समय की स्पष्ट सूर्य-क्रांति द. अंशादि २१°।३३'।२७", काशी का भौगोलिक अक्षांश २५°।१९' तत्तुल्य भूकेन्द्रीय अक्षांश २५°।१०'।३"। सेकेंड-पर्यन्त सूर्योदय-साधनार्थ—

ला स्प. सूर्य क्रां. २१°।३३'।२७" = ९·५९६६७४३	चरांश १०°।४१'।५३" × ४=मि. ४२ से ४८ चर-काल(+)
+ ला स्प.भूकें.अक्षां २५।१०।३ = ९·६७१९७९२	घं. ६ मि. ४९ बजे का बेलान्तर मि. ८ से. ३० (+)
= ला ज्या चरांश १०।४१।५३ = ९·२६८६५३५	काशी से स्टै. अन्तर मि. २ से. ० (—)

घं. ६ में उक्त तीनों संस्कार करने से काशी में उस दिन स्टैं. टा. से घं. ६ मि. ४९ से. १८ बजे सेकेंड पर्यन्त सूक्ष्म सर्योदय-समय सिद्ध हुआ; इस समय का सायन सूर्य स्पष्ट करने के लिये घं. ६।४९।१८ में पंक्ति-काल घं. ५।२९।१० घटाया तो शेष घं. १ मि.२०से.८=८०·१३मि.+धन चालन हुआ। सूर्य की दै. गति ६१'.८"=३६६८" ÷ १४४०मि.= २"·५४७ गति १ मि. की हुई, इससे चालन मि ८०·१३ को गुणा करने पर २०४"=३'।२४" चालन-फल हुआ, इसे तथ अयनांश २३°।३३'।४" को निरयण सूर्य रा. ८।२८°।५३'।३६" में जोड़ने से औदयिक सायन सूर्य रा. ९।२२°।३०"।४" स्पष्ट हुआ।

सूर्योदय-कालीन इष्ट सांपातिक काल-साधन—के लिए सूर्योदय के उपर्युक्त स्टैं. टा. घं. ६।४९।१८ में २ मि. +धन करने से घ. ६।५१।१८ स्था. मध्यमकाल (L.M.T.) हुआ; इसमें सांपातिक काल-संस्कार मिनिटादि १।८ जोडने से घं. ६।५२।२६ सांपातिक काल हुआ जिसमें उक्त ता. को काशी के मध्यम निशीथ का सांपातिक काल घं. ७।२७।३४ जोड़ने से इष्ट सां. काल (R.A.M.C.) घं. १४।२०।० हुआ। इसके द्वारा पहले रैंफेल की लग्नसारणी से औदयिक सायन लग्न स्पष्ट किया जाता हैं।

इष्ट सांपातिक काल के आसन्न सां. कालों को सारणी में देखने से ज्ञात हुआ कि मकर के २३°।४' का सांपातिक काल घं. १४।२२।३१ तथा मकर के २२°।४' का सांपातिक काल घं.१४।१८।३७ है अर्थात् मकर के २२°।४' से १ अंश=६०' लग्न के बढ़ने में ३ मि.५४ से.=२३४ से. का समय लगता है। अपना इष्ट सां. काल घं. १४।२०।० सारणी के उक्त घं. १४।१८।३७ से १ मि. २३ से. = ८३ से. अधिक है। अतएव त्रैराशिक से ज्ञात किया कि २३४ से. में ६०' की वृद्धि होती है तो ८३ से. में $\frac{८३ \times ६०}{२३४}$ = २१'।१७" की वृद्धि होगी ; अतः इसे उक्त मकर के २२°।४' में जोड़ दिया तो इष्ट सां. काल पर सायन लग्न राश्यादि ९।२२°। ५'।१७" स्पष्ट हो गया; उस समय नॉटिकल का सायन सूर्य रा. ९।२२°।३०'।४" है; अन्तर ४'।४७" रहा।

'ज्योतिष-रहस्य' की लग्न-सारणी से उक्त लग्न-साधन—अब आइए, यही गणित 'ज्योतिष-रहस्य' प्रथम खण्ड में छपी काशी की लग्न-सारणी से किया जाय; यह भी भौगोलिक अक्षांय उ. २५°।१९' के लिये अयनांश २३°।१५' पर बनी है अर्थात् उक्त सारणी से साधित लग्न राश्यादि में २३°।१५' युक्त कर देने से सायन लग्न के राश्यादि स्पष्ट हो जायेंगे। उक्त सारणी में अपने इष्ट सां. काल घं. १४।२०।० के निकटतर सां. काल घं १४।१९।२ धनु राशि के २९° का है एवं उसकी १ अंश = ६० कला की उदय-गति २३२ से. है; अतः इष्ट सां. काल घं. १४।२०।० में सारणी के उक्त घं. १४।१९।२ को घटाने पर शेष ५८ से.+धन चालन हुआ। अब पूर्वोक्त त्रैराशिक रीत्या ५८ × ६० = ३४८० में गति २३२ से भाग दिया तो १५ कला +चालन-फल हुआ; इसको धनु राशि के २९ अंश में जोड़ने से राश्यादि ८।२९°।१५' निरयण लग्न हुआ, उसमें सारणी का अयनांश २३°।१५' युक्त किया तो औदयिक सायन लग्न रा. ९।२२°।३०' स्पष्ट हो गया। इससे औदयिक सायन सूर्य का अंतर ४" विकला-मात्र है जबकि रैंफेल की सारणी से २८७" विकला अंतर आया है जिसका कारण यही है कि रैंफेल महोदय ने सारणी-निर्माणार्थ काशी के भौगोलिक अक्षांश को भूकेंद्रीय अक्षांश में परिणत नहीं किया है। स्पष्टार्कोदयात् इष्ट घट्यादि ० शून्य होने पर अर्थात् ठीक सूर्योदय के समय का (औदयिक) सूर्य-स्पष्ट ही तत्कालीन लग्न-स्पष्ट भी होता है, यह सिद्धान्त है जिसे सामान्य ज्योतिषीगण भी जानते हैं; वे अब उपर्युक्त उदाहरणों से यह भी भलीभाँति जान जायेंगे कि सूक्ष्म शुद्ध लग्न-साधनार्थ भूकेंद्रीय अक्षांश का ही उपयोग करना चाहिए अन्यथा काशी के ही लग्न-स्पष्ट में अनिवार्यतः ४–५ कला की अशुद्धि रहेगी। ऐसी स्थिति में कुण्डली के लग्न-स्पष्ट में राशि अंश के साथ कला विकला का उल्लेख ग्राहक के साथ धोखा-मात्र है।

अब लग्न-प्रवेश(आरम्भ)काल जानने का एक उदाहरण भी सन '७८ का ही लीजिए। ता.१ जनवरी को काशी के मध्यम निशीथ का सांपातिक काल घं. ६।४०।१५, स्पष्ट अयनांश २३°।३३'।२" तथा निरयण मेष लग्नारम्भ का स्टै. समय घं. १२।२५।३२ जंत्री में छपा है; इसी समय पर रैंफेल तथा ज्योतिष-रहस्य की सारणियों से लग्न-स्पष्ट किया जाता है। स्ट. घं. १२।२५।३२ में २ मि. जोड़ने से घं. १२।२७।३२ काशी का मध्यम काल हुआ, इसे सांपातिक

काल बनाने के लिए तत्सम्बन्धी संस्कार २मि.३से. इसमें जोड़ा तो सां.घं १२।२९।३५ हुआ; इसमें निशीथ का सां.काल घं. ६।४०।१५ जोड़ने से घं.१९।९।५० इष्ट सां.काल (R.A.M.C.) हुआ। इष्ट सां.काल के आसन्न सांपातिक कालों को सारणी में देखने से ज्ञात हुआ कि मेष के २४°।५२′ का सां. काल घं.१९।१३।४४ तथा मेष के २३°।२८′ का सां काल घं.१९।९।२६ है अर्थात् मेष के १ अंश २४ कला=८४ कला के उदय होने में ४ मि.१८ से.=२५८ से. लगता है। अपना इष्ट सां. काल घं.१९।९।५० सारणी के उक्त घटादि १९।९।२६ से २४ सेकेंड अधिक है। अतएव त्रैराशिक से ज्ञात किया कि २५८ से. में लग्न का ८४′ उदय होता है तो २४ से. में $\frac{८४ \times २४}{२५८}$ = ७′।४९″ उदय होगा; अतः इसे मेष के उक्त २३°।२८′ में जोड़ दिया तो इष्ट सां. काल पर सायन लग्न रा.०।२३°।३५′।४९″ स्पष्ट हुआ जिसमें उपर्युक्त स्पष्ट अयनांश घटाने पर निरयण लग्न रा.०।०।२′।४७″ हुआ। अब ज्योतिष-रहस्य की लग्न-सारणी से उक्त लग्न-साधनार्थ सारणी में अपने इष्ट सां. काल घं. १९।९।५० के निकटतर सां. काल घं.१९।८।५५ निरयण मेष के ० शून्य अंश का है एवं उसके १ अंश = ६० कला की उदय-गति २३२ से. है; अतः इष्ट सां. काल घं.१९।९।५० में सारणी के उक्त घं. १९।८।५५ को घटाने से शेष ५५ से.+धन चालन हुआ और पूर्वोक्त त्रैराशिक रीत्या ५५×६०=३३०० में गति १८३ से भाग दिया तो चालनफल +१८′।२″ हुआ जिसे मेष राशि के ० अंश में जोड़ने से रा.०।०।१८।२ हुआ, उसमें सारणी का अयनांश २३°।१५′ युक्त किया तो सायन लग्न रा. ०।२३।३३।२ स्पष्ट हुआ जिसमें उक्त दिन का स्पष्ट अयनांश २३°।३३′।२″ घटाने पर निरयण लग्न रा.०।०।०।०होने से सिद्ध हुआ कि उक्त दिनांक को काशी में निरयण मेष-लग्नोदय का जंत्री में छपा समय शुद्ध है।

इस उदाहरण में रैंफेल की सारणी से साधित लग्न में २′।४७″ का अन्तर आया है जिसका उदयकाल व्यस्त त्रैराशिक से $\frac{२५८ \times २\cdot८}{८४}$ = ८·६ सेकेंड आया। यह सांपातिक सेकेंड है, इसे सावन सेकेंड में परिणत करने के लिये इसमें तज्जनित संस्कार ०·०२४ घटा दिया तो शेष ८·५७६ से. रहा अर्थात् करीब ९ सेकेंड,जिसे जंत्री के मेषारम्भ काल घं.१२।२५।३२ मे घटा देने से घं. १२।२५।२३ मेष लग्नारम्भ का समय रैंफेल की सारणी के अनुसार हुआ। आपाततः तो दोनों में यह अंतर बहुत अल्प है, किन्तु यदि इन दोनों समयों को केवल मिनिट पर्यन्त लिखना हो तो 'अर्धाधिके रूपं ग्राह्यं, अर्धाल्पे त्याज्यम्' के नियमानुसार जंत्री के उक्त मेष-लग्नारम्भ का समय घ. १२।२६ तथा रैंफेल का समय घं १२।२५ लिखना होगा; क्योंकि जंत्री के समय में सेकेंड ३२, मिनिटार्ध से अधिक है और रैंफेल के समय का सेकेंड २३ आधे मिनिट से अल्प है। ऐसी स्थिति में दोनों में ९ से. का यह अंतर बढ़कर १ मि.=६० सेकेंड का हो जायगा और इस बीच उत्पन्न जातक का जन्म-लग्न जंत्री के अनुसार मीन तो रैंफेल के अनुसार जन्म-लग्न मेष होगा; ऐसी कठिन स्थिति में यथार्थ लग्न-निर्णयार्थ जंत्री में दैनिक मेष लग्नारम्भ-काल सेकेंड पर्यन्त सूक्ष्म दिया जाता है जिसके द्वारा शेष ११ लग्नों का आरम्भ-काल भी सेकेंड पर्यन्त जाना जा सकता है। इसकी रीति 'ज्योतिष-रहस्य' प्रथम खण्ड में दी गयी है। 'ज्योतिष-रहस्य' की सारणियाँ आज से चौथाई शताब्दि पहले बनाई गयीं थीं। इतने समय में निरयण राशियों के उदयमान के सेकेंड में अयन-चलन के कारण कुछ अन्तर पड़ जाना स्वाभाविक है; अतः इस वर्ष उनका अद्यतन संशोधित उदयमान साथ के कोष्ठक में पाठकों के हितार्थ दिया जा रहा है। काशी के लिए वृष मिथुनादि राशियों का जो उदयमान सावनकाल में दिया गया है उन्हें अभीष्ट दिन के मेषारम्भ-काल के घं. मि. से. में क्रमशः जोड़ते जाने से उस दिन के यावत् लग्नों के आरम्भ का सेकेंड पर्यन्त समय ज्ञात हो जायेगा; यहाँ ध्यान रखना चाहिए कि योग'फल २४ घंटे से अधिक होने पर वह लग्नारम्भ-समय अगली तारीख का होगा; उसमें ३ मि. ५६·५ सेकेंड जोड़ देना चाहिए, तब वह अभीष्ट तारीख के लग्नारम्भ का समय होगा। बहुत से पाठक काशी के अन्यान्य पंचांगों की दैनिक लग्न-सारणी से जंत्री की दैनिक सारणी के लग्न का मिलान करते और सेकेंड तो क्या मिनिटों का अंतर मिलने पर उसका कारण जानने के लिये हमसे पत्र-व्यवहार में अपना और हमारा समय नष्ट करते हैं; स्यात् उन्हें अब तक पुरातन स्थूल गणित के पञ्चाङ्गों की वर्तमान दुर्दशा का बोध नहीं हो पाया है। उदाहरणार्थ, इसी दिन के मेष लग्नारम्भ को लीजिए; संवत् २०३४ की पौष कृष्ण सप्तमी रविवार ता. १ जनवरी '७८ को गणेश आपाजी के पचाँग में मेष-लग्नारम्भ का समय प्रचलित घड़ियों के अनुसार घं. १२।२४, श्रीकाशीविश्वनाथ (हृषीकेश) पंचांग में घं. १२।२९+१ मि. रेलवे-अंतर=घं. १२।३०, हिन्दू विश्वविद्यालय के विश्वपंचांग में घं. १२।३२ छपा हैं। पहले से दूसरे का अंतर ६ मि और तीसरे का अंतर एकदम ८ मि. है अर्थात् पूरे दो दिनों का अंतर; क्योंकि प्रत्येक लग्न की दैनिक उदय-गति ३ मि.५६।।से. होती है। यही कारण है कि मेष लग्नारम्भ का जो समय घं.१२।३२ विश्वपंचांग में पौष कृ. ७ रविवार के लिए छपा है, वही समय घं.१२।३२ गणेश आपाजी के पंचाङ्ग में दो दिन पूर्व पौष कृ. ५ शुक्रवार के लिए छपा है। इन दो दिनों के अंतर का कारण इन पञ्चाङ्गों के ग्राहकों को अपने पंचाङ्गकर्ताओं से ही पूछना चाहिये; अन्यथा जिन्हें केवल श्री;चिन्ह; मालवीयजी के फोटो, माटो को देख कर ही पञ्चाङ्ग खरीदना हो,वे सहर्ष खरीदते रहें; उसमें हमारा क्या नुकसान है? लग्न-विषयक सूक्ष्म, शुद्ध, सही गणित जनता को बता देना हमारा कर्त्तव्य था, सो हमने इस लेख द्वारा पूरा किया।

उन्नतांश-साधन

के भास्करीय और केतकरीय सूत्रों की सोपपत्तिक एकवाक्यता

सिद्धान्तशिरोमणि गणिताध्याय के त्रिप्रश्नाधिकार के श्लोक ५८-५४-५७ द्रष्टव्य हैं।

उन्नतांश का सबसे मुख्य उपयोग सूर्य-सानिध्य से ग्रहों का उदयास्त (लोप-दर्शन) जानने के लिए होता है जिसका कुण्डली-निर्माण में भी अत्यधिक महत्त्व है। जन्म के समय जो ग्रह वक्री रहते हैं, उनका उल्लेख तो कुछ ज्योतिषीगण जन्म कालिक ग्रह स्पष्ट के साथ कर देते हैं; किन्तु सूर्य-सानिध्य से अस्त ग्रह का उल्लेख प्रायः नहीं करते, जबकि फलादेश की दृष्टि से ग्रह के वक्र अतिचारत्व के समान उसके सूर्य-सानिध्यवश अस्तोदित रहने का भी अत्यन्त महत्त्व है; प्रत्युत् मेरे विचार से तो जन्म के समय यदि गुरु या शुक्र अथवा दोनों सूर्य-सानिध्य में हों तो यह जानना भी अत्यन्त आवश्यक है कि वे बाल, वृद्धत्व या अस्त, किस दोष से दूषित हैं। इसी आधार पर उनके शुभाशुभ फलदायी बल का निर्धारण करना चाहिए। जो लोग सूर्य के साथ एक भाव में रहनेवाले ग्रहो के अस्तोदय का निर्णय उनके भोगांशों के स्वकल्पित अन्तर के आधार पर करते हैं उनके अधिकांश निर्णय अशुद्ध, अशास्त्रीय और अवास्तविक होते हैं। इसी तरह कितने ही लोग सूर्य से आगे, पीछे के भाव में रहनेवाले ग्रहों को सदा उदित मानकर फलादेश में प्रवृत्त हो जाते हैं। वे यह नहीं सोचते कि सूर्य से आगे, पीछे के भाव में रहकर भी ग्रह सूर्य से अस्त रह सकता है तथा सूर्य के साथ एक भाव में रहने पर भी वह उदित (पूर्ण बली) रह सकता है। सूर्य-सिद्धान्त, ग्रहलाघव, मकरन्दादि में ग्रहों के लोप-दर्शन जानने की जो रीतियाँ बतलायी गयी हैं, वे पर्याप्त सूक्ष्म शुद्ध नहीं हैं। आकाश में ग्रहों के प्रत्यक्ष लोप-दर्शन की तिथियों से उनकी गणितागत तिथियों में कभी-कभी १४-१५ दिनों तक का अन्तर पड़ जाता है जो सूर्य-सिद्धान्त, मकरन्द और ग्रहलाघवीय पञ्चाङ्गों के स्थूल, अशुद्ध गणित का प्रत्यक्ष प्रमाण है। ग्रहों के लोप-दर्शन में १४-१५ दिनों की अशुद्धि आज के जागृत ज्योतिष-जगत में कदापि नहीं चल सकती, इस तथ्य को उक्त पञ्चाङ्गों के निर्माताओं ने अब अनुभव कर लिया है। अतएव अपनी उक्त अशुद्धि को छिपाने के लिए वे अपने पञ्चाङ्गों में ग्रहों का लोप-दर्शन दृग्गणित के आधार पर देने लगे हैं। जिस दृग्गणित की शरण में उसके विरोधियों को भी अन्ततः आना पड़ा तथा जो पञ्चाङ्ग के अतिरिक्त कुण्डली-निर्माण के लिए भी अनिवार्य है, उसके एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण विषय उन्नतांश-गणित की जानकारी गणित-प्रेमी ज्योतिषज्ञों के लिए नितांत आवश्यकीय और क्रियात्मक रूप से उपयोगी होने के कारण यहाँ दी जा रही है। इस गणित की पुरातन, नवीन भारतीय रीतियों के साथ पाश्चात्य रीति देकर तीनों की सोपपत्तिक एकवाक्यता भी सिद्ध की गयी है। एतद्विषयक विस्तृत विवरण, चित्रों और गणितोदाहरण से युक्त इतना सुबोध लेख किसी प्रान्तीय भाषा, संस्कृत या अंग्रेजी में भी अप्राप्य है। आशा है, ज्योतिष-जगत इससे पूर्णतः लाभान्वित होगा।

क्षेत्र संख्या १ में उ द = क्षितिज, ध्रु ध्रु=उन्मण्डल, स पू म = पूर्वापर वृत्त, अ ह= अहोरात्र वृत्त, क पू य = विषुवद्(नाड़ी)वृत्त, ग = ग्रह, ध्रु ग र = इष्टकालिक ग्रह पर ध्रुवप्रोत वृत्त, ∠ क ध्रु र = ग्रह ग का होराकोण, ध्रु ह ध्रु = ह गत ध्रुवप्रोत वृत्त। क्षेत्र के अहोरात्र वृत्त और क्षितिज के संपात-बिन्दु ह पर उदय होनेवाला सूर्य जब इष्टकाल मे ग पर पहुँचेगा तो ह ग तुल्य उन्नत घटी होगी एवं तत्सम्बन्धी र य विषुवद्वृत्त में उन्नत कलांश होगा। यहाँ उत्तरगोल में क्षितिज से ऊपर उन्मण्डल है एवं क्षितिज और उन्मण्डल के मध्य में अहोरात्रवृत्त-खण्ड ह त तुल्य कालांश र य में घटाने पर शेष र पू निरक्ष देशीय उन्नत कालांश होगा। दक्षिण गोल में क्षितिज से नीचे उन्मण्डल रहने के कारण इष्ट उन्नतकालांश में चरांश जोड़ने से निरक्षदेशीय उन्नतकालांश होगा।

इष्टसूत्र—ग्रह पर से जानेवाला ध्रुवप्रोतवृत्त नाडीवृत्त में जहाँ लगता है, वहाँ से निकटस्थ पूर्व या पश्चिम-स्वस्तिक पर्यन्त नाड़ीवृत्तीय चाप को सूत्रचाप तथा उसकी ज्या को इष्ट सूत्र हैं। तदनुसार क्षेत्र में ग्रह ग पर से जानेवाला ध्रुवप्रोत ध्रु ग र नाड़ीवृत्त क पू य में र पर लगता है। वहाँ से पूर्व स्वस्तिक पू तक विषुवद्वृत्तीय चाप की ज्या-रूप र पू इष्टसूत्र है, यही ग्रह ग का पूर्व-कथित निरक्षदेशीय उन्नत कालांश है; अतः ग्रह के निरक्षदेशीय उन्नतकालांश की ज्या को भी इष्ट सूत्र कहा जाता है।*

* स्व० पं० श्रीमीठालालजी ओझा अपनी पुस्तक 'गोलीयरेखा गणितम्'के पृष्ठ ३७ में लिखते हैं 'नतकालांश कोटिज्या सूत्राभिधा' यह परिभाषा भी ठीक है;इस भाँति—

सूत्र = उन्नतकालज्या + चरज्या { — उत्तर गोल में; + दक्षिण गोल में }

उन्नतकाल = दिनार्ध – नतकाल

उत्तर गोल में दिनार्ध = १५घटी + चर

अतः ,, सूत्र के लिए—

१५घ. + चर – नतकाल – चर,

यहाँ चर का परस्पर बाध हो जाने से

१५घ. – नतकाल या ९० अंश – नतकालांश की ज्या= नतकालांश कोटिज्या सूत्राभिधा, यह उक्ति सिद्ध हुई।

कुज्या है। वह त्रिज्यावृत्त में परिणत होने पर विषुवद्वृत्त क य में पू य तुल्य चरज्या होगी, उसका चाप उन्नत

दिया है ग्रह-क्रांति, उन्नतकालांश और अक्षांश, ज्ञात करना है उन्नतांश।

निरक्ष क्षितिज-तल ध्रु पू त ध्रु पर पू क और त अ दोनों लंब है, जिनमें पू क विषुवद्वृत्तीय लंब है। विषुवद्वृत्त त्रिज्यावृत्त है। त्रिज्यावृत्त में लंब पू क की सूत्र संज्ञा है; किन्तु लम्ब त अ अहोरात्रवृत्तीय (लघुवृत्तीय) है; अतः उसकी कला संज्ञा है। वही अहोरात्रवृत्त में इष्टकला संज्ञक त ग होगी। अब इष्टसूत्र र पू को इष्ट कला त ग में परिणत करने के लिये अनुपात किया—

त्रिज्याकर्ण र ध्रु:इष्टसूत्र र पू :: द्यु ज्या ग ध्रु : इष्टकला ग त

$\therefore \dfrac{\text{इष्टसूत्र} \times \text{द्यु ज्या}}{\text{त्रि}} = \text{इष्टकला} \cdots\cdots (1)$

अब इष्ट कला से इष्ट यष्टि के साधनार्थ इष्ट कला-मूल त से एक सूत्र क्षितिजतल के समानान्तर महाशंकु अ न से संलग्न लिया जो महाशंकु को ज बिंदु पर स्पर्श करता है तथा इष्टशंकु ग ब को थ बिंदु पर स्पर्श करता है इस तरह महाशंकु और इष्टशंकु दो खण्डों में विभक्त हो गये, जिन में महाशंकु के ऊर्ध्व खण्ड अ ज को यष्टि तथा इष्ट शंकु के ग थ को इष्ट यष्टि कहते हैं। इष्टशंकु का अधःखण्ड थ ब = उन्मण्डल शंकु ल त के हैं; क्योंकि ल त और ब थ दोनों क्षितिजतल पर लंब हैं और दोनों के शीर्ष त थ को जोड़नेवाला सूत्र-खण्ड त ज क्षितिजतल के समानान्तर है। इस तरह उन्मण्डलशंकु ल त = ब थ, + इष्टयष्टि थ ग = इष्टशंकु ब ग; यही सूर्यादि-ग्रह-पिण्ड की उन्नतांशज्या है जिसका चाप उन्नतांश हमें ज्ञातव्य है।

उपर्युक्त विवरण के अनुसार इष्टयष्टि के साधन में—

△ग थ त का सजातीय अक्षक्षेत्र △ क ख पू है जिसमें पू ख अक्षज्या भुज, ख क लम्बज्या कोटि तथा क पू त्रिज्या कर्ण है। अतः कर्ण पू क : कोटि क ख :: कर्ण त ग : कोटि इष्टयष्टि ग थ

∴ त्रिज्या : लंबज्या : : इष्टकला : इष्टयष्टि

$\therefore \dfrac{\text{अक्ष कोज्या} \times \text{इष्टकला}}{\text{त्रि}}$ = इष्टयष्टि, इसको उपर्युक्त समीकरण (१) में रखने से—

$\dfrac{\text{इष्ट सूत्र} \times \text{द्यु ज्या(क्रांतिकोज्या)} \times \text{अक्ष कोज्या}}{\text{त्रि}^2}$

= इष्टयष्टि, यह सूत्र लब्ध हुआ। अब उन्मण्डल-शंकु के ज्ञानार्थ—

△ पू त ल में उन्मण्डल-शंकु भुज, अग्रादि खण्ड कोटि, क्रांतिज्या कर्ण है, उसके सजातीय

△ पू क ख में अक्षज्या पू ख भुज, लंबज्या क ख कोटि, त्रिज्या क पू कर्ण हैं;

∴ त्रिज्या कर्ण : अक्षज्या भुज : : क्रांतिज्या कर्ण : उन्मण्डलशंकु भुज

$\therefore \dfrac{\text{अक्षज्या} \times \text{क्रांतिज्या}}{\text{त्रिज्या}} = \text{उन्मण्डल शंकु}$

इष्टयष्टि + *उन्मण्डल शंकु = इष्टशंकु = उन्नतांशज्या, उसका चाप उन्नतांश होगा। उसकी कोटि = (९० − उन्नतांश) नतांश होगा।

त्रिज्या १ मानने से उपर्युक्त सभी समीकरणों का सङ्कलन इस रूप में होगा—उन्नतांशज्या (इष्टशंकु) = (अक्षज्या × क्रांतिज्या) + (इष्टसूत्र × क्रांतिकोज्या × अक्षकोज्या)

पहले बता आये हैं कि इष्टसूत्र = निरक्षदेशीय उन्नतकालांश की ज्या है तथैव नतकालांश की कोटिज्या है जिसका ∠ क ध्रु र ग्रह ग का इष्टकालीन होराकोण है, यह होराकोण की परिभाषानुसार क्षेत्र में सर्वथा स्पष्ट है। अतः इष्ट सूत्र = नतकाल(होरा)कोण कोटिज्या होने से उपर्युक्त समीकरण में इष्ट-सूत्र की जगह नतकाल(होरा)-

* टिप्पणी—इष्टकाल में अहोरात्र वृत्त एवं दृक्वृत्त के संपात पर स्थित ग्रह से क्षितिजतल पर लंब सूत्र को इष्टशंकु कहते हैं तथा अहोरात्र वृत्त एवं उन्मण्डल के संपात से क्षितिजतल पर लंब सूत्र की संज्ञा उन्मण्डल-शंकु है। उक्त संपात से क्षितिजतल के समानान्तर जानेवाला सूत्र इष्टशंकु को जहाँ स्पर्श करता है, उससे ऊपरवाले इष्टशंकु का भाग इष्ट यष्टि होता है एवं उससे नीचे का भाग उन्मण्डलशंकु के तुल्य होता है। उत्तरगोल में उन्मडण्ल से नीचे क्षितिज रहता है। अतएव क्षितिज से ऊपर उन्मण्डल-शंकु तथा उसके ऊपर ग्रहबिम्ब तक इष्टयष्टि होती है जिससे उन्मण्डल शंकु में इष्ट-यष्टि जोड़ने पर इष्टशंकु उपलब्ध होता है। दक्षिण गोल में उन्मण्डल एवं अहोरात्र-वृत्त का संपात बिंदु क्षितिज से नीचे रहता है तथा उक्त बिंदु से क्षितिज के समानान्तर जानेवाले सूत्र पर ग्रह-बिम्ब से लंब सूत्र इष्ट यष्टि होता है; उसमें क्षितिज से अधःस्थ उन्मण्डल शंकु को घटा देने पर शेष क्षितिजोपरि इष्ट शंकु होता है।

कोण कोज्या को रखा, तब उन्नतांशज्या=(अक्षज्या × क्रांतिज्या) + (नतकाल(होरा)कोण कोज्या × क्रांति-कोज्या × अक्षकोज्या) यही श्रीकेतकर का सूत्र है जो नतांश-साधन के पाश्चात्य सूत्र का रूपान्तरण है। वह भी आगे दिया जा रहा है।

क्षेत्र-संख्या २ में—द उ = क्षितिज, द न श ध्रु उ = याम्योत्तर वृत्त, ध्रु ध्रु = उन्मण्डल, श भ=सममण्डल, ध्रु ग ध्रु = ग्रहगत ध्रुवप्रोत, न ड = विषुवद्वृत्त, उ ध्रु = ध्रुवोन्नति = श म = अक्षांश ϕ, ग = ग्रह, ग र = ग्रह-क्रांति δ उत्तर, र ग = ग्रहक्रांति दक्षिण, श ग ज = दृक्वृत्त, ज ग = उन्नतांश, ज श = ९०, - ज ग = ख ग = नतांश अ।

ध्रु न = ९०, श न = ϕ, ९० - ϕ = श ध्रु = स; थ र=δ, र ध्रु = ९०, ९०- δ=ग ध्रु=ब, ∠आ=होराकोण (देखिए, पृष्ठ ९५ पर होरा-कोण की परिभाषा)

किसी गोलीय△में दो भुजायें तथा उनके बीच का कोण ज्ञात रहने पर तीसरी भुजा निम्न सूत्र से ज्ञात कर सकते हैं–

कोज्या अ=कोज्या स कोज्या ब+ज्या स ज्या ब कोज्या आ, जहाँ त्रिभुज आ बा सा की दो भुजायें स ब तथा उनके बीच के कोण आ का मान ज्ञात है तथा तीसरी भुजा अ का मान ज्ञात करना है।

क्षेत्र-संख्या २ के गोलीय △ श ग ध्रु में भुजायें स और ब तथा उनके बीच का ∠ आ ज्ञात है तथा भुजा अ = नतांश ज्ञात करना है; अतः कोज्या अ(ग श)=कोज्या स (ग ध्रु) कोज्या ब (ग ध्रु)+ज्या स (श ध्रु) ज्या ब (ग ध्रु) कोज्या आ।

किंवा कोज्या अ = कोज्या(९०-ϕ) कोज्या (९०-δ) + ज्या (९०-ϕ) ज्या (९०-δ) कोज्या आ।

किंवा कोज्या अ (नतांश)=ज्या ϕ ज्याδ + कोज्या ϕ कोज्या δ कोज्या आ।

९० – नतांश=उन्नतांश। उपर्युक्त पाश्चात्य मूल सूत्र का ही रूपान्तरण श्रीकेतकरजी का निम्न सूत्र है; वह इस प्रकार से—

कोज्या अ = कोज्या ग श = कोज्या(९०–ज ग)= ज्या ज ग = ज्या उन्नतांश।

कोज्या स = कोज्या श ध्रु = कोज्या (९०–न श) = ज्या अक्षांश।

ग की प्रथम स्थिति में जब वह उत्तर गोल में होगा–

कोज्या ब = कोज्या ध्रु ग = कोज्या(९० – ग र) = ज्या ग र = + ज्या क्रांति।

ग की द्वितीय स्थिति में जब वह दक्षिण गोल में होगा तब △ श ग′ ध्रु में कोज्या ब = कोज्या ग ध्रु = कोज्या (१८०-ध्रु′ ग′)=-कोज्या ध्रु′ ग′ = – कोज्या (९०–गर) = – ज्या ग′ र = – ज्या क्रांति।

इस भाँति उत्तरगोल में ग की क्रांतिज्या + चिह्नयुक्त एवं दक्षिणगोल में – ऋण चिह्नयुक्त होगी। अब—

ज्या स=ज्या ध्रु श = ज्या (९०–न श) = कोज्या न श = कोज्या अक्षांश।

ज्या ब=ज्या ध्रु ग = ज्या (९०–र ग) = कोज्या र ग=कोज्या क्रांति।

मूल सूत्र—कोज्या अ=कोज्या स कोज्या ब+ज्या अ ज्या ब कोज्या आ इस (सूत्र) में उपर्युक्त रूपान्तरित मानों को रखने से यह सूत्र बना—

ज्या उन्नतांश=ज्या अक्षांश × ज्या क्रांति + कोज्या अक्षांश × कोज्या क्रांति × कोज्या नतकाल(होरा)कोण, यही श्रीकेतकरजी का सूत्र है।

ग्रह-लोप-दर्शन के उन्नतांश—इष्ट ग्रह पूर्व कपाल में हो तो स्वदेशीय पूर्व-क्षितिज में, पश्चिम कपाल में हो तो पश्चिम-क्षितिज में क्रमशः सूर्योदय एवं सूर्यास्त-समय इष्ट ग्रह के उन्नतांश उसके निर्धारित उन्नतांश से न्यूनाधिक होने पर ग्रह का सम्बन्धित दिशा में अस्तोदय (लोप-दर्शन) होता है। ग्रहों के लोप-दर्शन-ज्ञानार्थ निर्धारित उन्नतांश नीचे दिये जा रहे हैं—

ग्रह	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
उन्नतांश	११	१५	११	९	६½	१३

टिप्पणी—प्रतिमास की शुक्ल प्रतिपदा को स्वस्थान में सूर्यास्त के समय नूतन चंद्र का उन्नतांश (ऊपर लिखे अनुसार) ११ अंश या अधिक हो तो उसी दिन चंद्र-दर्शन होता है; अन्यथा अगले दिन(द्वितीया) को होता है. यह सामान्य नियम है; किन्तु वस्तुतः उसके उपर्युक्त ११° उन्नतांश से कम पर भी आकाश मे चंद्र का प्रत्यक्ष दर्शन होता है जो उसके और क्षितिजस्थ सूर्य के दिगंशान्तर पर निर्भर करता है। अतः चंद्र-दर्शन के यथार्थ निर्णय के लिए

उसके उन्नतांश के साथ ही सूर्य चंद्र का दिगंशान्तर जानना भी अनिवार्य है। शुक्ल प्रतिपद् को सूर्यास्त-समय चंद्र सूर्य के कितने दिगंशान्तर पर चंद्र का उन्नतांश कितना रहने से नव्य चंद्र-दर्शन हो सकता है, यह नीचे दिया जा रहा है—

दिगंशान्तर	०	५	१०	१५	२०
उन्नतांश	११	१०	९½	८	६¼

उन्नतांश-साधन का उदाहरण—ता० २४ अप्रैल सन् १९७३ ई० मंगलवार को काशी में सूर्योदयात् इष्ट घटी ९ पर अर्थात् स्टैं. टा. घं. ९ मि. ८ बजे सूर्य का उन्नतांश ज्ञात करना है। उस दिन काशी का दिनमान स्वल्पान्तरेण ३२ घटी है। अतः दिनार्ध १६ घटी हुआ। दिन के पूर्वार्ध में इष्टकाल है। अतएव 'ज्योतिष-रहस्य' के इस खण्ड की पृष्ठ सं. ६ के नियमानुसार दिनगत घटी यानी इष्टकाल ९ घटी ही यहाँ पूर्वोन्नतकाल है तथा दिनार्ध – १५ घटी = १ घटी चरकाल है। पूर्वोक्त भास्करीय नियम से उन्नत घटी ९ में चर १ घटी घटाने से शेष ८ घटी निरक्षदेशीय उन्नतकाल हुआ। उसमें ६ का गुणा करने से ४८ अंश उन्न काल हुआ। उसमें ६ का गुणा करने से ४८° अंश उन्नतकालांश हुआ उसके ज्या की 'इष्ट सूत्र' संज्ञा है जो आगे उन्नतांश-साधन के गणित में प्रयुक्त होगा।

उस दिन स्टैं. टा. से घं. ५ मि. ३० बजे सूर्य की उत्तर क्रांति १२°४५′ है जिसे अग्रिम दिन की सूर्य-क्रांति १३°५′ में घटाने से २०′ क्रांति की दिन-गति हुई। हमें अपने अभीष्ट समय स्टैं. टा. घं. ९ मि. ८ बजे की क्रांति चाहिए। अतः घं. ९ मि. ८ में घं. ५ मि. ३० घटाने से घं. ३ मि. ३८ = २१८ मि. चालन हुआ। त्रैराशिक से ज्ञात किया कि २४ घं.=१४४० मि. में क्रांति की गति २०′ कला है तो २१८ मि. में ३ कला होगी। क्रांति बढ़ रही है। अतः उसे घं. ५ मि. ३० बजे की क्रांति १२°–४५′ में जोड़ दिया तो इष्टकालीन उतर क्रांति १२°-४८′ हुई। पहले हमने उन्नतांश-गणित का यह सूत्र सिद्ध किया है—

उन्नतांशज्या (इष्टशंकु) = (अक्षज्या × क्रांतिज्या) + (इष्ट सूत्र × क्रांति कोज्या × अक्ष कोज्या) तदनुसार उपर्युक्त उपकरणों से उन्नतांश-गणित निम्नांकित है—

(१)	लाज्या काशी-अक्षांश	उ. २५°-२०′	९·६३१३३(+)
	+ लाज्या सूर्य-क्रांति	उ. १२–४८	९·३४५४७(+)
	=ला प्रथम फल		८.९७६८०(+)
(२)	लाज्या नि.उन्न.कालां.(इष्टसूत्र)	४८°-०′	९.८७१०७(+)
	+ला कोज्या सूर्य-क्रांति	उ.१२–४८	९·९८९०७(+)
	+ला कोज्या अक्षांश	उ.२५–२०	९·९५६०९(+)
	= ला द्वितीय फल		९·८१६२३(+)
	ला प्रथम फल की स्वाभाविक संख्या		·०९४८०(+)
	ला द्वितीय फल की स्वाभाविक संख्या		·६५४९८(+)

प्रथम फल + द्वितीयफल (बैजिक योग)=·७४९७८(+) =इष्ट शंकु=ज्या उन्नतांश, इसका चाप ४८°-३४′·३ सूर्य का पूर्व दिशा में इष्टकालान उन्नतांश हुआ। यदि उपर्युक्त इष्टकाल में जलवत् समतल भूमि में १२ अंगुल का शंकु लंब भावेन स्थापित किया जाय तो सूर्य-प्रकाश में उसकी छाया कितने अंगुल होगी, यह भी सूर्य के नतांश द्वारा ज्ञात किया जा सकता है। सूर्य के उन्नतांश को ९० अंश में घटाने पर शेष उसका नतांश होता है। किसी स्थान के अक्षांश से वहाँ की पलभा जानने की विधि उदाहरण सहित हम पाठकों को बता चुके हैं। उस विधि में अक्षांश की जगह इष्टकालीन सूर्य के नतांश का प्रयोग करने से जबाब में पलभा की जगह सूर्य की तत्कालीन शंकु-छाया का अंगुलात्मक मान ज्ञात होता है। जिस भाँति किसी जगह इष्टकाल में सूर्य का नतांश जानकर हम शंकु-छाया का मान जान सकते हैं,वैसे ही किसी रोज अभीष्ट स्थान में शंकु-छाया का मान ज्ञात होने पर उसका इष्ट काल भी गणित से ज्ञात कर सकते हैं जिसकी विधि अगले लेख में प्रकाशित की गयी है। सिद्धान्तज्योतिष के अलावा फलित की दृष्टि से भी छाया-गणित की महान् उपयोगिता और महत्ता है।

उन्नतांश-साधन के लिए स्मरणीय श्लोक—

घातोऽपमाक्ष गुणजोऽयुत हृद् घनर्ण
क्रांतिर्यथाऽथ नतकाल पलापमानाम्।
कोज्यावधोऽयुतक वर्गहृतः स्वमेष
तद्योग इष्टगुणको धनुरुन्नतांशा॥ (सर्वानन्द लाघव)

अर्थ—ग्रह की क्रांतिज्या को अक्षांशज्या से गुणाकर त्रिज्या से भाग दो तो वह प्रथम फल होगा। क्रांतिकोज्या; अक्षांशकोज्या और नतकाल(होराकोण)कोज्या तीनों को परस्पर गुणा करो तो वह द्वितीय फल होगा। प्रथम फल को ग्रह की दक्षिणोत्तर क्रांति के समान ऋण या धन चिन्ह से युक्त करना, द्वितीय फल को सदा धन चिन्ह से युक्त करना चाहिए। तब दोनो फलों का बैजिक योगफल उन्नतांश ज्या होगी, जिसका धनु ग्रह का इष्टकालिक उन्नतांश होगा।

कुण्डली-विज्ञान और मुहूर्तकाल-साधन

यथा शिखा मयूराणां नागानां मणयो यथा । तद्वद्वेदाङ्गशास्त्राणां गणितं मूर्द्धनि स्थितम् ॥

नतांश-साधन

के भारतीय (आर्ष) और पाश्चात्य सूत्रों की सोपपत्तिक एकवाक्यता ।

इष्टकाल में ग्रहों का नतांश, उन्नतांश, छाया इत्यादि जानने की विधि आर्षग्रंथ सूर्य-सिद्धान्त के त्रिप्रश्नाधिकार के निम्न श्लोक में बतायी गयी है—

त्रिज्योदक्चरजायुक्ता याम्यायां तद्विवर्जिता ॥३४॥ अन्त्या नतोत्क्रमज्योना स्वाहोरात्रार्धसंगुणा ।

त्रिज्याभक्ता भवेच्छेदो लम्बज्याघ्नोऽथ भाजितः ॥३५॥ त्रिभज्यया भवेच्छंकुस्तद्वर्गं परिशोधयेत् ।

अर्थ—यदि सूर्य उत्तरगोल में हो तो चरज्या को त्रिज्या में जोड़ने और यदि दक्षिणगोल में हो तो घटाने से अन्त्या होती है । इसमें नतकाल की उत्क्रमज्या को घटाकर शेष को स्व-अहोरात्र व्यासार्ध* से गुणा करो ॥३४॥ गुणनफल में त्रिज्या का भाग देने से छेद यानी इष्टहृति प्राप्त होती है । उसे लम्बज्या से गुणा कर त्रिज्या से भाग देने से इष्टशंकु यानी इष्टकालीन उन्नतांश की ज्या ज्ञात हो जाती है । इष्टशंकु के वर्ग को त्रिज्या में घटाकर शेष का वर्गमूल लेने से दृग्ज्या यानी इष्टकालीन नतांशज्या प्राप्त होती है जिससे छाया और छायाकर्ण यथोक्त रीत्या ज्ञात कर लिया जाता है ।

क्षेत्र सं. १ में उ द = क्षितिज, ध्रु' ध्रु = उन्मण्डल, स पू म = पूर्वापरवृत्त, अ ह = अहोरात्र वृत्त, क पू य = विषुवद्(नाड़ी)वृत्त, ग = ग्रह, ध्रु ग र = इष्टकालिक ग्रह पर ध्रुवप्रोत वृत्त, ∠ क ध्रु र = ग्रह ग का होराकोण, ध्रु' ह ध्रु = ह गत ध्रुवप्रोतवृत्त ।

कुज्या, चरज्या—अहोरावृत्त और क्षितिज के संपातबिंदु पर से जानेवाला ध्रुवप्रोतवृत्त विषुवद्वृत्त को जिस बिंदु पर स्पर्श करता है, वह चराग्र होता है । उपर्युक्त संपातबिंदु और उन्मण्डल के मध्यगत अहोरात्रवृत्त के चापीय खण्ड की ज्या को कुज्या कहते हैं तथैव चराग्र एवं क्षितिज के मध्यगत विषुवद् वृत्त के चापीय खण्ड की ज्या को चरज्या कहते हैं अर्थात् अहोरात्र(लघु)वृत्त की द्युज्यावृत्तीय कुज्या ही विषुवद्(त्रिज्या) वृत्तीय चरज्या होती है । अतः अनुपात से एक का दूसरे में परिणमन होता है । तदनुसार उपर्युक्त क्षेत्र में अहोरात्रवृत्त अ ह तथा क्षितिज उ द के संपातबिंदु ह पर से जानेवाला ध्रुवप्रोत ध्रु' ध्रु नाड़ीवृत्त को चराग्र य पर स्पर्श करता है । अतः उक्त संपात-बिंदु ह तथा उन्मण्डल ध्रु ध्रु' के अन्तर्गत अहोरात्रवृत्त के चापीय खण्ड की ज्या ह त = कुज्या है । तथैव चराग्र य एवं क्षितिज उ द के अन्तर्गत विषुवद् वृत्त के चापीय खण्ड की ज्या पू य = चरज्या है ।

---
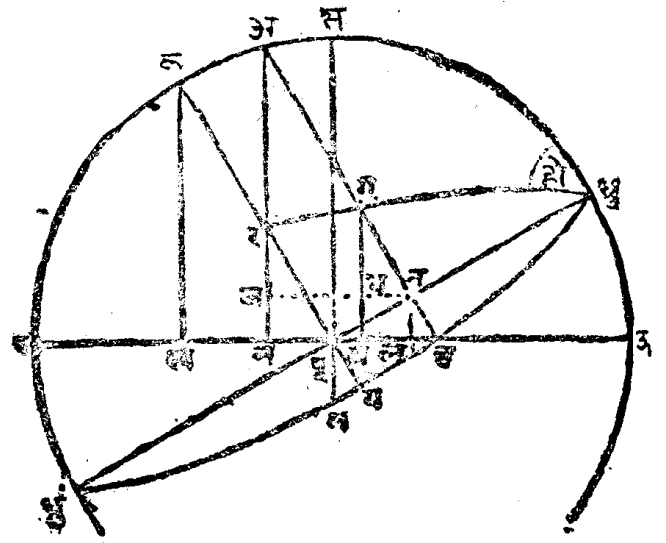
* **टिप्पणी**—विषुवद् वृत्त से ग्रह की दक्षिणोत्तर ध्रुवसूत्रीय दूरी उसकी दक्षिणोत्तर क्रांति होती है । जब ग्रह विषुवद्वृत्त पर होता है तो इस दूरी के अभाव से उसकी क्रान्ति शून्य होती है अन्यथा वह विषुवद्वृत्त से उत्तर या दक्षिण स्वक्रान्ति तुल्य अंतर पर रहता है । विषुवद्वृत्त से उत्तर या दक्षिण ग्रह की इष्ट क्रान्तितुल्य अन्तर पर विषुवद्-वृत्त का समानान्तर लघुवृत्त ग्रह का अहोरात्रवृत्त होता है । एवं विषुवद्वृत्त के गर्भकेन्द्र तथा ग्रह के निकटस्थ ध्रुवबिन्दु में बद्ध सूत्र ग्रह के अहोरात्रवृत्त के गर्भकेंद्र से भी होकर जाता है । इस सूत्र का जो भाग विषुवद्वृत्त और अहोरात्रवृत्त के गर्भकेन्द्रों के अन्तर्गत होता है वह ग्रह की क्रान्तिज्या-तुल्य होता है । चूंकि विषुवद्वृत्त से दक्षिणोत्तर ध्रुव ९०° अंश पर हैं, अतः ग्रह के अहोरात्रवृत्त के गर्भकेंद्र एवं निकटस्थ ध्रुव के अन्तर्गत उक्त सूत्र का शेष भाग ९०° − क्रान्तिज्या = क्रान्ति कोटिज्या के तुल्य होता है । क्रान्तिकोटिज्या की द्युज्या संज्ञा है । ग्रह के निकटस्थ ध्रुवबिंदु से ग्रह की इष्ट क्रान्तिकोटिज्या यानी द्युज्याचापांश के द्वारा खगोल पर निर्मित वृत्त ही ग्रह का उपर्युक्त अहोरात्रवृत्त होता है । वृत्त की परिधि के किसी भी बिंदु से उसके गर्भकेंद्र में बद्ध सूत्र उसके व्यासार्ध के तुल्य होता है और अहोरात्रवृत्त का व्यासार्ध द्युज्या होती है अर्थात ग्रह अहोरात्रवृत्त की परिधि के किसी बिंदु पर हो, उससे अहोरात्रवृत्त के गर्भकेंद्र में बद्ध व्यासार्धतुल्य सूत्र द्युज्या के बराबर होगा । इस प्रकार से उपर्युक्त श्लोक में ग्रह के अहोरात्रवृत्त-व्यासार्ध का तात्पर्य स्पष्टतः द्युज्या से है ।

अंत्या, इष्ट अंत्या—विषुवद्वृत्त और याम्योत्तर वृत्त के संपातस्थ ग्रह से चराग्रबिंदु तक विषुवद्वृत्त के चापीय खण्ड की ज्या को अन्त्या कहते हैं एवं इष्टकाल में उक्त संपात से अन्यत्र अहोरात्र वृत्तस्थ ग्रह से संलग्न ध्रुवप्रोतवृत्त विषुवद्वृत्त को जहाँ स्पर्श करता है, वहाँ से चराग्रबिंदु तक विषुवद्वृत्त के चापीयखण्ड की ज्या इष्ट अन्त्या होती है।

उन्नतांश-साधनविषयक लेख में हम बता चुके हैं कि इष्टकालीन ग्रह पर से जानेवाला ध्रुवप्रोतवृत्त नाड़ी-वृत्त में जहाँ लगता है, वहाँ से निकटस्थ पूर्व या पश्चिम-स्वस्तिक पर्यन्त नाड़ीवृत्तीय चाप को सूत्रचाप तथा उसकी ज्या को इष्टसूत्र कहते हैं। उत्तरगोल में उपर्युक्त पूर्व या पश्चिम-स्वस्तिक से नीचे चराग्र-बिंदु तक चरज्या रहती है। अतः उत्तरगोल में सूत्र + चरज्या = अन्त्या तथा इष्टसूत्र + चरज्या = इष्ट अन्त्या होती है। दक्षिणगोल में क्षितिज के पूर्व या पश्चिम-स्वस्तिक से ऊपर चराग्रबिंदु तक चरज्या होने से सूत्र – चरज्या = अन्त्या तथा इष्टसूत्र – चरज्या = इष्ट अन्त्या होती है। क्षेत्र में विषुवद्वृत्त और याम्योत्तर वृत्त के संपात क से चराग्रबिंदु य तक विषुवद्वृत्त के चापीय खण्ड की ज्या क य = अन्त्या है। इष्ठकालीन ग्रह ग पर से जानेवाला ध्रुवप्रोतवृत्त नाडीवृत्त में र पर लगता है। अतः र से चराग्र-बिंदु य तक विषुवद्वृत्त के चापीय खण्ड की ज्या र य = इष्टअन्त्या है जिसमें उपर्युक्त परिभाषानुसार र पू इष्टसूत्र है। यहाँ उत्तरगोल में पू (पूर्व-स्वस्तिक) से नीचे चराग्रबिन्दु य तक पू य = चरज्या है। अतः उत्तरगोल में इष्टसूत्र र पू + चरज्या पू य = इष्ट अन्त्या क य, यह क्षेत्र में सर्वथा स्पष्ट है।

हृति, इष्टहृति और इष्टकला—याम्योत्तरवृत्त और स्वक्षितिज के जिन दो बिन्दुओं पर अहोरात्रवृत्त का संपात होता है, उनके अन्तर्गत अहोरात्रवृत्त के चापीयखण्ड की ज्या को हृति कहते हैं। अहोरात्रवृत्त एवं याम्योत्तर वृत्त के संपात से अन्यत्र इष्टकालीन ग्रह अहोरात्रवृत्त में जहाँ हो, वहा से अहोरात्रवृत्त और निकटस्थ क्षितिज के संपात तक अहोरात्रवृत्त के चापीयखण्ड की ज्या को इष्ट हृति कहते हैं; अर्थात् विषुवद्(त्रिज्या)वृत्तीय अन्त्या और इष्टअन्त्या ही अहोरात्र (द्युज्या)वृत्तीय क्रमशः हृति और इष्टहृति होती है। अतएव अनुपात से एक का दूसरे में परिणमन होता है। इष्टकालीन ग्रह अहोरात्रवृत्त में जहाँ हो, वहाँ से उन्मण्डल एवं अहोरात्रवृत्त के संपात तक अहोरात्रवृत्त के चापीयखण्ड की ज्या को इष्टकला कहते हैं।

उत्तर गोल में क्षितिज से ऊपर उन्मण्डल होने के कारण उन्मण्डलस्थ इष्टकला-मूल से नीचे क्षितिज तक कुज्या होती है। अतः उत्तरगोल में कला + कुज्या = हृति तथा इष्टकला + कुज्या = इष्ट हृति होती है। दक्षिण गोल में क्षितिज से नीचे उन्मण्डल होने के कारण उन्मण्डलस्थ इष्ट कला-मूल से ऊपर क्षितिज तक कुज्या होती है। अतः दक्षिणगोल में कला – कुज्या = हृति एवं इष्टकला – कुज्या = इष्ट हृति होती है। क्षेत्र में याम्योत्तर वृत्त के अ तथा क्षितिज के ह बिन्दु पर अहोरात्रवृत्त का संपात होता है। अतः उनके अन्तर्गत अहोरात्रवृत्त के चापीयखण्ड की ज्या अ ह = हृति है। अहोरात्रवृत्त और याम्योत्तरवृत्त के संपात अ से अन्यत्र इष्टकालीन ग्रह अहोरात्रवृत्त में ग पर है। अतः ग से अहोरात्रवृत्त एवं क्षितिज के संपात ह तक अहोरात्रवृत्त के चापीय खण्ड की ज्या ग ह = इष्ट हृति है जिसमें उपर्युक्त परिभाषानुसार इष्टकला ग त है। यहाँ उत्तरगोल में उन्मण्डल-खण्ड पू ध्रु से नीचे क्षितिज-खण्ड पू उ है एवं उन्मण्डलस्थ इष्टकला मूल त से नीचे क्षितिज के ह तक त ह = कुज्या है। अतः उत्तरगोल में इष्टकला ग त + कुज्या त ह = इष्ट हृति ग ह क्षेत्र में प्रत्यक्ष दृष्ट है।

सूर्यसिद्धान्त के उपर्युक्त श्लोक में कथित नतकाल और इष्टशंकु की परिभाषा गत लेख से पाठक जान चुके हैं। इनके अलावा उपर्युक्त श्लोक से जिसे छेद कहा है, उसे ही ब्रह्मसिद्धान्त, सिद्धान्त-शिरोमणि आदि में हृति कहा गया है। हृति, इष्टहृति, अन्त्या, इष्टअन्त्या, चरज्या, कुज्या का परिचय ऊपर हमने दे दिया है। नतांश की ज्या को ही दृग्ज्या कहते हैं। त्रिकोणमिति के नियम से उत्क्रमज्या (Versine) = कोटिज्योन त्रिज्या होती है। इतना जान लेने पर नतांश-साधन की निम्न प्रक्रिया को उपपत्ति सहित सरलतया समझा जा सकता है।

त्रिज्या – कोटिज्या = उत्क्रमज्या। त्रिज्या + चरज्या = अन्त्या, उत्तरगोल में
(त्रिज्या + चरज्या) – इष्टनतकालांश-उत्क्रमज्या = इष्ट अन्त्या, उत्तरगोल में
(त्रिज्या + चरज्या) – (त्रिज्या – इष्ट नतकालांश कोटिज्या) = इष्टअन्त्या, उत्तरगोल में

∴ चरज्या + इष्ट नतकालांश कोटिज्या = इष्ट अन्त्या, उत्तरगोल में
इष्ट नतकालांश कोटिज्या = इष्ट सूत्र ∴ इष्ट सूत्र सूत्र + चरज्या = इष्टअन्त्या, उत्तरगोल में
तदनुसार क्षेत्र में इष्ट सूत्र र पू + चरज्या = इष्ट अन्त्या र य
अब इष्ट अन्त्या र य को इष्ट हृति ग ह में परिणत करने के लिए अनुपात किया—
त्रिज्या र ध्रु : इष्ट अन्त्या र य : : द्युज्या ग्र ध्रु : छेद ग ह

$$\therefore \frac{\text{इष्ट अन्त्या} \times \text{द्युज्या (यानी क्रांतिकोटिज्या)}}{\text{त्रि}} = \text{छेद(इष्टहृति)} \cdots\cdots (1)$$

अब इष्टहृति ग ह से इष्टशंकु ग ब के साधनार्थ—

△ ग ब ह का सजातीय अक्षक्षेत्रीय △ क ख पू है जिसमें भुज पू ख अक्षज्या, कोटि ख क लम्बज्या (अक्षकोटिज्या) एवं कर्ण क पू त्रिज्या है। अतः अनुपात किया—

त्रिज्या कर्ण पू क : लम्बज्या कोटि क ख : : इष्टहृति कर्ण ह ग : इष्टशंकु कोटि ग ब

$\therefore \frac{\text{अक्षकोज्या} \times \text{इष्टहृति}}{\text{त्रि}}$ = इष्ट शंकु, इसको उपर्युक्त समीकरण (१) में रखने से—

$\frac{\text{इष्ट अंत्या} \times \text{क्रांतिकोटिज्या} \times \text{अक्षोज्या}}{\text{त्रि}^2}$ = इष्टशंकु (नतांशकोटिज्या) ··· ·· · (२)

अब यहाँ भारतीय रीति से चर-साधन के सूत्र की उपपत्ति समझ लेना आवश्यक है।

क्षेत्र में अक्ष क्षेत्रीय △ पू क ख का सजातीय △ ह पू त है। क्षितिज और अहोरात्रवृत्त-संपात से पूर्व-स्वस्तिक पू तक क्षितिज में अग्रा ह पू कर्ण, उन्मण्डल अहोरात्रवृत्त-संपात त से पूर्व-स्वस्तिक पू तक उन्मण्डल में त पू क्रांतिज्या कोटि एवं क्षितिज उन्मण्डल के मध्यगत अहोरात्र वृत्त में त ह कुज्या भुज है। अतः अनुपात किया—

लंबज्या कोटि क ख : अक्षज्या भुज ख पू : : क्रांतिज्या कोटि पू त : कुज्या भुज त ह

$\therefore \frac{\text{अक्षज्या} \times \text{क्रांतिज्या}}{\text{लम्बज्या}}$ = कुज्या

कुज्या को त्रिज्यावृत्त में परिणत कर चरज्या-ज्ञानार्थ अनुपात किया:—

द्युज्या : कुज्या : : त्रि : चरज्या

$\therefore \frac{\text{कुज्या} \times \text{त्रि}}{\text{द्युज्या}}$ = चरज्या

किंवा $\frac{\text{अक्षज्या}}{\text{अक्ष कोटिज्या}} \times \frac{\text{क्रांतिज्या} \times \text{त्रि}}{\text{क्रांतिकोटिज्या}}$ = चरज्या, त्रिज्या १ मानने से—

स्पज्या अक्षांश × स्पज्या क्रांति = चरज्या····· यही चर-साधन का पाश्चात्य सूत्र है, अस्तु।

गत पृष्ठ में हम बता आये है कि इष्ट अंत्या = चरज्या + इष्ट नतकालकोटिज्या

$\therefore$ इष्ट अंत्या = $\frac{\text{अक्षज्या}}{\text{अक्ष कोटिज्या}} \times \frac{\text{क्रांतिज्या} \times \text{त्रि}}{\text{क्रांति क्रोटिज्या}}$ + इष्ट नतकाल कोटिज्या

इसको उपर्युक्त समीकरण (२) में इष्ट अंत्या की जगह रखा, तब—

$$\text{इष्ट शंकु(नताशकोटिज्या)} = \left\{ \left(\frac{\text{अक्षज्या}}{\text{अक्षकोज्या}} \times \frac{\text{क्रांतिज्या} \times \text{त्रि}}{\text{क्रांतिकोज्या}} \right) + \text{नतकाकोज्या} \right\} \times \frac{\text{क्रांकोज्या} \times \text{अक्षकोज्या}}{\text{त्रि}^2}$$

त्रिज्या १ एवं नतकालकोण = होराकोण होने से उपर्युक्त समीकरण का सरल रूप यह होगा—

इष्ट शंकु(नतांशकोटिज्या) = अक्षज्या × क्रांतिज्या + होराकोणकोटिज्या × क्रांतिको-टिज्या × अक्षकोटिज्या

यही नतांश-साधन का पाश्चात्य सूत्र है।

नतांश-साधन का उदाहरण—इसी पुस्तक के पृष्ठ ११९ पर इष्ट शंकु (उन्नतांशज्या) साधन काउदाहरण छपा है जिसमें इष्ट शंकु=उन्नतांशज्या ०·७४९७८ एवं इसका चाप उन्नतांश ४८°–३४'·३ छपा है। चूंकि उन्नतांश और नतांश का योग सदा ९० अंश होता है, अतः ये एक दूसरे की कोटि हैं अर्थात् उन्नतांश की ज्या ही नतांश की कोटिज्या तथा नतांश की ज्या उन्नतांश की कोटिज्या होती है। तदनुसार उस उदाहरण में सूर्य के उन्नतांश की ज्या ०·७४९७८ ही उसके नतांश की कोटिज्या है जिसका चाप ४१°–२५'·७ सूर्य का नतांश (= ९० – उन्नतांश ४८°।३४'·३) होगा। इस तरह उन्नतांश के उक्त उदाहरण को नतांश का उदाहरण भी समझिये। अतः यहाँ नतांश का अन्य उदाहरण न देकर चर, अलभा, अक्षांश आदि की साधन-विधि एवं उदाहरण दिये जा रहे हैं।

चर-साधन का उदाहरण—१. ता० ४ अगस्त ११७४ ई० रविवार को घं० ५ मि० २१ बजे सूर्यक्रांति उत्तर १७°।२४', वाराणसी का भूकेन्द्रीय अक्षांश उत्तर २५°–११' है। उक्त समय में वाराणसी के लिए सूर्य का चर-साधन करना है। पहले हम चर-साधन का यह सूत्र सिद्ध कर चुके हैं—

ज्या चर = स्प अक्षांश × स्प क्रांति, तदनुसार—

लास्प अक्षांश	२५°–११'	=९·६७२२९
+ लास्प सूर्य-क्रांति	१७–२४	=९·४९६०७
= लाज्या चरांश	८°–२८'–२५"	=९·१६८३६

चरांश को मिनिटादि में बदलने के लिए ४ से गुणा किया—

८°।१८'।२५"×४ = मिनिटादि ३३।५३।४० हुआ। अब उत्तर अक्षांश में उत्तर-सूर्यक्रांति से सूर्योदय-साधनार्थ 'ज्योतिष-रहस्य' प्रथम खण्ड की पृष्ठ-संख्या ४३ के नियमानुसार:—घं. ६ मि. ० से. ० उन्मण्डलीय सूर्योदय का समय

ऋण	०–३३ – ५४	चर-संस्कार
	५–२६ – ६	स्थानीय सूर्योदय-समय सूर्य-घड़ी से
ज्योतिष-रहस्य प्रथम खंड-पृष्ठ ४९ से	+ ०–६ – ६	बेलांतर ता० ४ अगस्त का
	५–३२ – १२	सूर्योदय का स्थानिक समय यंत्र-घड़ी से
ऋण	– २ – ०	स्टैंडर्ड-अन्तर
घंटादि	५ –३० – १२	सूर्योदय का स्टैं. टा.

प्रसङ्गवशात् यहाँ स्थूल चर-साधन के सरल सूत्र भी लिख देते हैं—

स्थूल चर-साधन का सूत्र—

$$\text{कालांशात्मक चर} = \frac{\text{अक्षांश} \times \text{क्रांत्यंश}}{५७\cdot३}$$

कालांशात्मक चर को १० से गुणा करने पर पलात्मक चर तथा ४ से गुणा करने पर मिनिटात्मक चर उपलब्ध होगा।

$$\text{अन्य सूत्र—पलात्मक चर} = \frac{\text{अक्षांश} \times \text{क्रांत्यंश}}{५}$$

उदाहरण १. लखनऊ का अक्षांश २६°–५१' सूर्य-क्रांति १४°–१२' के लिए चर-साधन— लखनऊ-अक्षांश २६.८५×क्रा १४·२ = ३८१·२७÷५७·३ = ६·७ अंशात्मक चर×१० = ६७ पल यानी चर घटी १ पल ७ तथैव अंशात्मक चर ६·७×४ = २६·८ मि० चर हुआ। ज्योतिष-रहस्य प्रथम खण्ड के पृष्ठ ४५ में उपर्युक्त उदाहरण का सूक्ष्म चर २९। मि० आया है।

अन्य सूत्र का उदाहरण—उपर्युक्त अक्षांश २७×क्रां० १४ = ३७८÷५ = ७५ पल यानी चर सवा घटी तदनुसार ३० मिनिट। ३० अक्षांश तक के स्थानों के लिए इस अति सरल सूत्र से चर का आसन्नमान मालूम किया जा सकता है। ३० से अधिक अक्षांश के स्थानों के लिए यह विशेष स्थूल फलप्रद है।

दिनार्ध, दिनमान, रात्रिमानादि-साधन—उत्तर अक्षांश के स्थानों के लिए सूर्य-क्रांति उत्तर हो तो १५ घटी में चर पल युक्त करने से और यदि सूर्य-क्रांति दक्षिण हो १५ घटी में चर पल घटाने से घट्यादि दिनार्ध होता है। इसके विपरीत दक्षिण अक्षांश के स्थानों के लिए समझें। दिनार्ध का दूना दिनमान होता है। दिनमान को ६० घटी में घटाने से रात्रिमान होता है। अतः उपर्युक्त चरांश का चर पल बनाने के लिये उसे १० से गुणा किया; ८°।२८'।२५"×१० =घटयादि १।२४।४४ चर-काल हुआ; सूर्य-क्रांति उत्तर होने से इसे १५ घटी में जोड़ दिया तब घटयादि १६।२४.४४ दिनार्ध हुआ। इसका दूना घट्यादि ३२।४९।२८ दिनमान हुआ जिसे ६० घटी में घटाने से घट्यादि २७।१०।३२ रात्रिमान हुआ। घट्यादि दिनार्ध को घंटादि बनाकर सूर्योदय के स्टैं. टा. में जोड़ने से स्पष्ट मध्याह्न का स्टैं. टा. होता है। उसमें दिनार्ध घंटादि को जोड़ने से सूर्यास्त का स्टैं. टा. ज्ञात हो जाता है। दिनार्ध घट्यादि १६।२४।४४ में २॥ का भाग दिया तो

	घंटादि ६।३३।५४	दिनार्ध हुआ।
इसमें +	५।३०।१२	सूर्योदय का स्टैं. टा.
=	१२।४।६	स्पष्ट मध्याह्न का स्टैं. टा.
+	०।२।०	स्टैं. टा. से स्थानिक समय का अन्तर
	१२।६।६	मध्याह्न का स्थानिक मध्यम समय

प्रत्येक स्थान में वहाँ की सूर्य-घड़ी(स्पष्ट काल) से हमेशा १२ बजे स्पष्ट-मध्याह्न हुआ करता है; उससे स्थानिक मध्यम मध्यान्ह-काल का अन्तर ही बेलान्तर होता है जिसे काल-समीकरण Equation of time भी कहते हैं। यहाँ घण्टा १२ से घण्टादि १२।६।६ का अन्तर मि. ६ से. ६ बेलान्तर है और इसी का उपयोग सूर्योदय-साधन में 'ज्योषित-रहस्य' के द्वारा हम पहले कर आये हैं। स्पष्ट मध्यान्ह के स्टैं. टा. घण्टादि १२।४।६ में दिनार्ध घण्टादि ६।३३।५४ जोड़ने से घंटादि १८।३८ सूर्यास्त का स्टैं. टा. ज्ञात हुआ। 'सन् १९७४ की 'चिताहरण जन्त्री' में इस तारीख का सूर्यास्त काल घंटा १८ मि. २७ छपा है। यह १ मि. का अन्तर क्यों?, ऐसी शंका पाठकों के मन में उठ सकती है।

इसका समाधान यह है कि इस ग्रंथके पृष्ठ ९६ पर चर की परिभाषा में हम लिख आये हैं कि ग्रहादि का उदय-काल जानने के लिए पूर्वीय क्षितिज के तथा अस्त-काल के लिए पश्चिम-क्षितिज के चर-काल का उपयोग करना चाहिए; तदनुसार यहाँ सूर्योदय-काल का चर तो सूक्ष्म है; क्योंकि उसका साधन एतत्कालिक सूर्य-क्रांति के द्वारा किया गया है; किंतु सूर्यास्तकाल-साधनार्थ इस चर में आधे मि. से किञ्चित् अधिक स्थूलता आ जाती है, क्योंकि सूर्योदय और सूर्यास्त-काल में १३ घंटे का अन्तर हैं। इतनी देर में औदयिक सूर्य-क्रांति अपनी दैनिक गति के आधे से कुछ अधिक ही घट जायेगी। अतएव सूक्ष्म सूर्यास्तकाल-साधनार्थ आसन्नकालिक सूर्य-क्रान्ति से साधित सूक्ष्म चर और एतत्कालिक बेलान्तर का उपयोग करना चाहिये। ऐसा करने से ही जंत्री में उस दिन का सूर्यास्त-काल घंटा १८ मि. ३७ छापा गया है; अस्तु। इस प्रसंग में पलभा तथा अक्षांश-साधन की सही विधियों को जान लेना भी पाठकों के लिए अत्यन्त आवश्यक एवं उपयोगी है।

पलभा-साधन—अक्षक्षेत्रीय △ क ख पू में ∠ क ख पू समकोण है और ∠ ख क पू अक्षांश-तुल्य है; अतः तीसरा ∠ क पू ख =९०°–अक्षांश = लम्बांश तुल्य हुआ। इस प्रकार पू ख भुज = अक्षज्या, ख क कोटि = लम्बज्या (अक्षकोटिज्या) एवं क पू कर्ण = त्रिज्या है। इसका सजातीय △ र पू न है जिसमें पू न भुज = पलभा, न र कोटि = १२ अंगुल, र पू कर्ण = पलकर्ण है। अतएव अक्षांश पर से पलभानयन के लिए अनुपात किया—

लम्बज्या कोटि क ख : अक्षज्या भुज पू ख : : १२ अंगुल कोटि न र : पलभा भुज पू न

$$\therefore \frac{\text{अक्षज्या} \times \text{१२ अं.}}{\text{लम्बज्या}} = \text{पलभांगुल किंवा स्प अक्षांश} \times \text{१२ अंगुल} = \text{पलभा}$$

इस तरह सूर्यसिद्धान्त के त्रिप्रश्नाधिकार का १६ वाँ श्लोक उपपन्न हुआ।

अक्षांश से पलभा मालूम करने का उदाहरण—वाराणसी का अक्षांश २५°–२०′ की स्पर्शज्या ०·४७३४ × १२ = अंगुल ५·६८०८ ; दशमलव ·६८ को ६० से गुणा किया तो ४०·८ व्यंगुल हुआ। ∴ अंगुल ५ व्यंगुल ४०·८ वाराणसी की सूक्ष्म शुद्ध पलभा हुई। इस त्रिकोणमिति के सूत्र से सामान्य गणित के उस सूत्र की तुलना पाठक करें जो इस ग्रन्थ के पृष्ठ ४ पर उदाहरण सहित दिया गया है। सामान्य गणित का परिणाम थोड़ा स्थूल होने पर भी आमतौर पर लोग त्रिकोणमिति के गणित-श्रम से बचने के लिये सामान्य गणित-सूत्र का ही उपयोग करते हैं; किंतु यहाँ उल्टी बात है। सामान्य गणित-सूत्र की अपेक्षा त्रिकोणमितीय सूत्र से पलभानयन कहीं सरल हैं। Chamber's Seven Figure Mathematical Tables या अन्य किसी त्रिकोणमितीय सारणी से अक्षांश की तैय्यारशुदा स्पर्शज्या (tangent) लेकर १२ से गुणा कर दीजिए। बस, आपको एक मिनिट में सूक्ष्म शुद्ध पलभा ज्ञात हो जायेगी। अथवा—दूसरी रीति—त्रिगुणित अक्षांश-स्पर्शज्या में २५०० का भाग दे दीजिए, तब भी अंगुलादि पलभा ज्ञात हो जायेगी। यहाँ स्पर्शज्या को दशमलव भिन्न के बजाय पूर्णांक मानकर गणित करना चाहिये।

उदाहरण २.—वाराणसी-अक्षांश २५°।२०′ की स्पर्शज्या ४७३४ × ३ = १४२०२ ÷ २५०० = लब्धि ५ अंगु; शेष १७०२ × ६० = १०२१२० ÷ २५०० = ४०.८ व्यं., इस तरह ५ अं. ४०.८ व्यं. वाराणसी की सूक्ष्म शुद्ध पलभा ज्ञात हो गयी।

स्थूल पलभा-साधन का सूत्र—पलभा = (८५ × अक्षांश) ÷ (४३२ – २ × अक्षांश)

उदाहरण १. वाराणसी-अक्षांश २५°·३ × ८५ = २१५६·५। २५·३ × २ = ५०·६। ४३२–५०·६ = ३८१·४। २१५६·५ ÷ ३८१·४=५ अं., शेष २४९५ × ६०=१४९७०० ÷ ३८१४=३९ व्यं. ∴ वाराणकी की पलभा ५अं. ३९ व्यं.।

उदाहरण २. अक्षांश २३, तब पलभा = (८५ × २३) ÷ (४३२–४६) = अंगु. ५ व्यं ४।

स्थूल पलभा-साधन का अन्य सूत्रः— $\text{पलभा} = \frac{\text{अक्षांश} \times \text{११}}{\text{५०}}$

उदाहरण—वाराणसी-अक्षांश २५°–२०′। २५° × ६०=१५००′ + २०′= १५२०′ × ११=१६७२०′ ÷ ५० = १३४ व्यं. ÷ ६०= ५अं. ३४ व्यं.। सारांश यह है कि खगोल-गणित का सूत्र जितना सरल होगा, उसका फल (परिणाम) उतना ही स्थूल होगा।

पलभा से अक्षांश-साधन—पलभा से अक्षांश का सम्बन्ध क्षेत्र में △ पू ख क एवं पू न र से सुस्पष्ट है। △ पू ख क में पू ख अक्षज्या भुज, और ख क लंबज्या कोटि है तथैव △ तू न र में तू न पलभा भुज, न र द्वादशांगुल शंकुकोटि है अर्थात्—

अक्षज्या : लम्बज्या : : पलभा : १२, किंवा $\frac{\text{अक्षज्या}}{\text{अक्षकोटिज्या}} = \frac{\text{पलभा}}{\text{१२}}$; किंवा स्पज्या अक्षांश = $\frac{\text{पलभा}}{\text{१२}}$

इस तरह पलभा में १२ का भाग देने से हमें अक्षांश की स्पर्शज्या उपलब्ध होगी जिसका धनु (चाप) अक्षांश होगा। सरलता के लिए १ अंगुल पलभा की अक्षस्पर्शज्या = १ ÷ १२ = ·०८३३३ ∴ पलभांगुल × ·०८३३३= तत्सम्बन्धी अक्षांश की स्पर्शज्या स्वल्पान्तरेण सिद्ध हुई।

उदाहरण—वाराणसी की पलभांगुल ५·६८१ ÷ १२ = ·४७३४१ स्प अक्षांश, जिसका चाप २५°–२०' वाराणसी का अक्षांश हुआ। अथवा पूर्वोक्त पलभा अगु. ५·६८१ × ·०८३३३ = ·४७३३९ अक्षस्पर्शज्या(स्वल्पान्तरेण) और उसका चाप २५°–२०' वाराणसी का अक्षांश हुआ।

ग्रहलाघव के त्रिप्रश्नाधिकार के श्लोक ६ में पलभा से अक्षांश-साधन का यह सूत्र :— $५प - \frac{प^2}{१०}$ = अक्षांश बतलाया गया है अर्थात् पलभा को ५ से गुणाकर उसमें पलभा के वर्ग का दशमांश घटाने से अक्षांश ज्ञात होता है। इस विधि का उदाहरण भी उसके पुराने प्रसिद्ध टीकाकार श्रीविश्वनाथ दैवज्ञ ने दिया है जिसमें वाराणसी की पलभा अगु. ५।४५ तथा वक्ष्यमाण प्रकारेण अक्षांश २५°।२६'।४२''सिद्ध किया है। प्रथम तो वाराणसी की उक्त पलभा ही अशुद्ध है। दूसरे, पलभा पर से अक्षांश-साधन की रीति भी स्थूल है। अतएव अशुद्ध पलभा से स्थूलरीत्या अक्षांश-साधन के कारण वाराणसी का ग्रहलाघवोक्त अक्षांश विशेष अशुद्ध हो गया है। उपर्युक्त गणितोदाहरण में पाठकों ने देखा कि वाराणसी की शुद्ध पलभा ५ अंगु, ४० व्यं. है। इससे ग्रहलाघव रीत्या अक्षांश-साधन करते हैं—(५ अं. ४० व्यं) × (५ अं. ४० व्यं.) = अंगुलादि ३२।६।४० पलभा-वर्ग हुआ, इसका दशमांश अंगुलादि ३।१२·४० हुआ। पलभा अंगुलादि (५।४०) — ५ = अंगुलादि २८।२०।० में उक्त ३।१२।४० को घटाने से शेष २५°।७'।२०'' वाराणसी का अक्षांश उपलब्ध हुआ। इस प्रकार विश्वनाथ दैवज्ञ द्वारा गणितसिद्ध वाराणसी का अक्षांश २५°।२६'।४२'' तथा वाराणसी की शुद्ध पलभा से ग्रहलाघवरीत्या साधित अक्षांश २५°।७'।२०'' दोनों की अशुद्धता पाठकों के समक्ष सर्वथा स्पष्ट है। अतः ग्रहलाघवीय गणित की स्थूलता के कारण कुण्डली-निर्माण में उसकी अनुपयोगिता के विषय में अधिक कुछ कहना व्यर्थ है।

स्थूल अक्षांश-साधन का सूत्र — अक्षांश = (४३२ × पलभा) ÷ (८४ + २ × पलभा)

१. उदाहरणः—वाराणसी-पलभा अं. ५ व्यं. ४०। ५ × ६०=३०० + ४०=३४० व्यं. × ४३२=१४६८८० भाज्य। ५ अं. ४० व्यं. × २= ११ अं. २० व्यं. + ८५ अं. = ९६ अं. २० व्यं.। ९६ × ६० = ५७६० + २० = ५७८० व्यं. भाजक। १४६८८० ÷ ५७८० = २५° शेष २३८० × ६० = १४२८०० ÷ ५७८० = २५°।२४ वाराणसी का अक्षांश स्थूलतः हुआ।

२. उदाहरण :—पलभा अं. ४, तब अक्षांश = ४ × ४३२ ÷ (८५ + ४ × २) = १८°।३५'।

अक्षांश-साधन का अन्य सूत्र :—भुजवर्ग और कोटिवर्ग के योग का मूल कर्ण होता है। क्षेत्र के △ पू न र में पू न पलभा भुज, न र द्वादशांगुल शंकु कोटि और र पू पलकर्ण है। अतः पलकर्ण = $\sqrt{पलभा^2 + १२^2}$ अब पलकर्ण से अक्षांश-ज्ञानार्थ अनुपात किया—

र पू पलकर्ण : न पू पलभा भुज : : पू क त्रिज्याकर्ण : पू ख अक्षज्या भुज

∴ $\frac{पलभा \times त्रि.}{पलकर्ण}$ = अक्षज्या, उसका धनु(चाप) अक्षांश होगा। इस तरह सूर्यसिद्धान्त के त्रिप्रश्नाधिकार का १३वां श्लोक उपपन्न हुआ।

उदाहरण—वाराणसी की पलभा अं. ५।४० है। इसके वर्ग ३२।६।४० में १२ का वर्ग १४४ जोड़ने से योगफल १७६।६।४० हुआ। इसका वर्गमूल अं. १३ व्यं. १६ = ७९ व्यं. पलकर्ण हुआ। पलभा अं. ५।४० = ३४० व्यं × त्रि१ =३४०। इसमें पलकर्ण ७९६ व्यं. का दशमलव की रीति से भाग दिया तब लब्धि ·४२७ अक्षांश की ज्या हुई जिसका चाप २५°।१७' वाराणसी का अक्षांश हुआ।

अक्षांश-साधन की अन्य रीति—पलभा में ४१० जोड़ कर योगफल में ६० का भाग देने से जो लब्धि प्राप्त हो, उसे अक्षकर्ण में मिलाने से हार आता है। फिर पलभा को ९० से गुणाकर गुणनफल में उक्त हार का भाग देने से लब्धि तुल्य अक्षांश आता है। जैसे, पलभा ५।४० में ४१० जोड़ने से योगफल ४१५।४० हुआ; इसमें ६० का भाग दिया तो लब्धि ६।५५ हुई। इसे अक्षकर्ण १३।१६ में जोड़ने से हार २०।११ हुआ; फिर पलभा १।४० को ९० से गुणा किया तो गुणनफल ५१० हुआ; इसमें उक्त हार का भाग दिया तो लब्धि-तुल्य अक्षांश २५°।१६' हुआ।

मध्याह्नकालिक सूर्य-नतांश-साधन—मध्याह्नकालिक सूर्य का नतांश तथा नतांश से द्वादश अंगुल शंकु की तात्कालिक छाया का मान ज्ञात करने की विधि सूर्य-सिद्धान्त के निम्न श्लोक में बतलायी गयी है—

स्वाक्षार्कापक्रमयुतिर्दिक्साम्येऽन्तरमन्यथा ।। शेषं नतांशाः सूर्यस्य तद्बाहुज्या च कोटिजा ।।२०।।

शंकुमानांगुलाभ्यस्ते भुजत्रिज्ये यथाक्रमम् ।। कोटिज्यया विभज्याप्ते छायाकर्णावहर्दले ।।२१।।(त्रिप्रश्नाधिकार)

अर्थ—अपने स्थान का अक्षांश और मध्याह्नकाल को सूर्य-क्रान्ति एक ही दिशा की हो तो उनके योग-तुल्य और यदि भिन्न दिशा की हो तो अन्तर-तुल्य सूर्य का मध्याह्नकालिक नतांश होगा। उसकी भुजज्या से शंकु के अंगुलात्मक मान अर्थात् १२ को गुणाकर नतांश कोटिज्या से भाग दें तो लब्धि मध्याह्न की छाया होगी एवं शंकु को त्रिज्या से गुणाकर नतांश कोटिज्या से भाग देने पर मध्याह्न का छायाकर्ण ज्ञात होगा।

ठीक मध्याह्नकाल में सूर्य का नतांश तथा उससे शंकुछाया का तात्कालिक मान ज्ञात करना कितना सरल है, यह ऊपर के श्लोक से स्पष्ट है अर्थात् केवल तात्कालिक सूर्य-क्रांति एवं वेधस्थानीय सूक्ष्म शुद्ध अक्षांश के योग या अंतर से सूर्य का मध्याह्नकालिक नतांश मालूम हो जायेगा। मध्याह्नकाल के अलावा अन्य किसी इष्टकाल में सूर्य चंद्रादि का छाया-साधन करने के लिए उसका सही नतांश उस सूत्रानुसार गणित से ही ज्ञात किया जा सकता है जो हम इस लेख में पहले लिख आये हैं। यहाँ स्मरण रखना चाहिए कि उक्त श्लोक में क्रांति और अक्षांश का जो योगान्तर करने का नियम बतलाया है, वह स्व-अक्षांश की भौगोलिक दिशा से विपरीत दिशा के आधार पर है। 'ज्योतिष-रहस्य' के प्रथम खण्ड पृष्ठ ४५ में बताया जा चुका है कि गणित-ज्योतिष में क्रांति एवं अक्षांशादि की उत्तर दिशा के लिए + चिह्न और दक्षिण दिशा के लिए ऋण — चिन्ह का प्रयोग किया जाता है; किन्तु गणित-सौकर्य या लाघव के लिए किसी प्रसंग में विपरीत चिह्न का उपयोग भी किया जाता है। तब क्रान्ति या अक्षांश आदि जिसके साथ विपरीत चिह्न लेने का निर्देश हो, उसकी उत्तर दिशा के लिए ऋण—चिन्ह और दक्षित दिशा के लिए धन + चिन्ह लेकर गणित करना चाहिए, जैसाकि नतांश-साधन के प्रस्तुत प्रसंग में अक्षांश का विपरीत चिन्ह तथा क्रांति का यथावत् चिन्ह लेकर उनका बैजिक (बीजगणित की रीति से) योग करने पर योगफल सूर्य का मध्याह्नकालिक नतांश होगा तथा उसका योगज धन या ऋण-चिन्ह नतांश की उत्तर या दक्षिण दिशा होगी।

उदाहरण १. इसी पुस्तक के पृष्ठ ७२ पर छपे उदाहरण में ता० २४–४–१९७३ को काशी के दिनार्ध १६ घटी = ६ घं० २४ मि० को उक्त दिन के सूर्योदय स्टे० टा० घं० ५ मि० ३२ में जोड़ दिया तो स्पष्ट मध्याह्न काल स्टे० टा० घं० ११ मि० ५६ हुआ। उक्त उदाहरण में घं० ५ मि० ३० बजे सूर्य की उत्तर-क्रांति १२°।४५′ और क्रांति की दैनिक गति २०′ है जिसे उक्त मध्याह्नकाल घं० ११ मि०-५६ बजे के लिए स्पष्ट करना है। अत: घं० ११ मि० ५६ में घं० ५ मि० ३० घटा दिया तो शेष घं० ६ मि० २६ = ३८६ मिनिट चालन हुआ। त्रैराशिक से ज्ञात किया कि २४ घं०= १४४० मि० में क्रान्ति-गति २०′ है तो ३८६ मि० में ५′।२२″ होगी; क्रान्ति बढ़ रही है; अतः घं० ६ मि० ३० बजे की क्रांन्ति १२°।४५′।०″ में ५′।२२″ जोड़ दिया तो इष्ट(मध्याह्न)कालिक क्रान्ति १२°–५०′–२२″(+) स्पष्ट हुई। काशी का अक्षांश २५°।२०′ उत्तर + धन चिन्हयुक्त है; किन्तु यहाँ नतांश-साधन के प्रसंग में उसके विपरीत चिन्ह यानी धन की जगह ऋण-चिन्ह का उपयोग करना होगा। अत: अक्षांश २५°– २०′–०″ (—) में उक्त स्पष्ट क्रान्ति १२°–५०′–२२″ (+) का बैजिक योग किया तो योगफल १२°– २९′– ३८″ (—) ऋण चिन्ह युक्त उपलब्ध हुआ। अत: यही १२°–२९′–३८″ (–) उक्त दिन सूर्य का मध्याह्नकालिक नतांश है तथा उसके ऋण चिन्ह के अनुसार नतांश की दिशा दक्षिण है।

उदाहरण २—मध्यान्हकाल से अन्य इष्टकाल के लिए यदि सूर्यनतांश-साधन करना है तो उसका गणित उक्त उदाहरण में दिया ही गया है जिसमें उक्त तारीख को काशी के स्पष्टर्कोदयात् इष्ट घटी ९ पर सूर्य का उन्नतांश ४८°–३४′·३ है जिसे ९० अंश में घटाने पर शेष ४१°–२५′·७ सूर्य का नतांश हुआ।

छाया-साधन—इसके लिए सूर्य-सिद्धान्त के उपर्युक्त श्लोक में यह सूत्र बतलाया गया है।

$$\text{इष्ट छायाङ्गुल} = \frac{\text{नतांशज्या(यानी दृग्ज्या)} \times \text{द्वादशाङ्गुल (शंकु)}}{\text{नतांश कोटिज्या}}$$

$$\text{किंवा इष्ट छायाङ्गुल} = \text{स्पज्या नतांश} \times १२$$

अर्थात् इष्टकालिक ग्रह-नतांश की स्पर्शज्या को १२ में गुणा कर दीजिए; बस, तात्कालिक ग्रह-छाया का अंगुलात्कक मान ज्ञात हो जायेगा। यहाँ स्थान की कमी से इस सूत्र की तथा अग्रिमोक्त सूत्रों की उपपत्ति न देकर उनका गणितोदाहरण ही दिया जा रहा है।

उदाहरण—उपर्युक्त दिनांक २४ अप्रैल सन् १९७३ को काशी के स्पष्टार्कोदयात् इष्टकाल ९ घटी पर सूर्य का नतांश ४१°–२५′·७ ज्ञात किया गया है जिसकी स्पर्शज्या ०·८८२५ है। इसे १२ से गुणा करने पर इष्टकालिक छायाङ्गुल १०·५९ यानी करीब ११ अंगुल ज्ञात हुआ।

अब इस लेख के सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण विषय पर आइए ! जातक के दिनगत इष्टकाल में सूर्य की अथवा रात्रिगत इष्टकाल में चंद्र की छाया का मान शायद ही किसी कुण्डली में लिखा रहता हो। उक्त छाया-साधन की सबसे मुख्य उपयोगिता जन्म-काल एवं स्थान में वेध द्वारा उन ग्रहों की यथार्थ आकाशीय स्थितियाँ निश्चित करना है; किन्तु वह परम्परा लुप्त हो चुकी है ; क्योंकि आधुनिक वैज्ञानिक युग में विश्व के विभिन्न भागों की वेधशालाओं से ग्रह-नक्षत्रादि की सही आकाशीय स्थितियों का विवरण प्राप्त हुआ करता है और उन्हीं के आधार पर उन देशों से प्रतिवर्ष नाविक पञ्चाङ्ग (Nautical Almanac) प्रकाशित हुआ करते हैं। नाविक पञ्चाङ्ग के आधार पर भारतीय (निरयण) पद्धति से बने पञ्चाङ्ग सूक्ष्म शुद्ध दृक्सिद्ध पञ्चाङ्ग होते हैं। काशी से ऐसा एक दृश्य पञ्चाङ्ग संपूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय से तथा दूसरा चिन्ताहरण पंचाङ्ग एवं जंत्री दृश्य गणनानुसार प्रकाशित होती है;वहाँ के अन्य सभी पंचाङ्गों का निर्माण स्थूल अशुद्ध गणित से होने के कारण उन सब में एक दूसरे से भिन्न ग्रह-स्थिति रहा करती है और मजा यह है कि उनमें से प्रत्येक पञ्चाङ्गकर्ता अपने पचाङ्ग को शास्त्रसम्मत तथा अन्य पञ्चाङ्गों को अशास्त्रीय कहते हैं। ज्योतिषशास्त्र की यह दुर्दशा काशी में ही हो रही है; काशी से अन्यत्र, भारत के सभी प्रान्तों के पुराने प्रतिष्ठित पञ्चाङ्गों ने ग्रहलाघवादिक स्थूल गणित का त्याग कर संपूर्णतया दृश्य गणित को अपना लिया है। इसके अतिरिक्त विभिन्न प्रान्तीय भाषाओं से दृश्य गणित के कई नये उत्तमोत्तम पञ्चाङ्ग भी प्रकाशित हो रहे हैं; केवल काशी में ही ग्रहलाघव, मकरन्दादि के गणित से स्थूल अशुद्ध पञ्चाङ्गों का प्रकाशन अब भी जारी है; किन्तु जैसे-जैसे उनके उपयोगकर्ताओं में यथार्थ ज्योतिष-ज्ञान की अभिवृद्धि होती जा रही है, वैसे-वैसे उनका प्रसार कम होता जा रहा है; और निकट भविष्य में ही ये पञ्चाङ्ग या तो दृश्य गणित के आधार पर निर्मित होने लगेंगे, अन्यथा उन पञ्चाङ्गों के निर्माता और प्रकाशकगण अपनी अनुचित आमदनी से हाथ धो देंगे; अस्तु। फलित की दृष्टि से छाया-गणित की कितनी महान् उपयोगिता है, यह इस लेख के 'अभिजिन्मुहूर्त' के प्रकरण से स्पष्ट है। वहाँ वार-क्रम से द्वादशाङ्गुल शंकु की छाया का मान निर्दिष्ट रहता एवं उसके इष्टकाल (मुहूर्त के समय) को गणित से अथवा सूर्य की वेध-प्रक्रिया से परिज्ञात करना होता है। छाया-मान ज्ञात होने से उसके अभीष्ट काल-ज्ञान के गणित-सूत्र सिद्धान्त-शिरोमणि एवं पाश्चात्यत्य खगोल शास्त्र से उदाहरण सहित आगे दिये जा रहे हैं—

शंकुछायात् इष्टकाल-ज्ञान—

अभीष्ट छायाङ्गुल का इष्टकाल जानने के लिए 'सिद्धान्त-शिरोमणि' में भास्कराचार्य ने निम्न सूत्र दिया है—

भास्करीय सूत्र :— $\dfrac{\text{त्रि}^2 \times \text{पलकर्ण}}{\text{द्युज्या} \times \text{इष्ट छायाकर्ण}} = \text{इष्ट अन्त्या}$

नियम १.—त्रिज्या ± चरज्या = अन्त्या। अन्त्या − इष्ट अन्त्या = शर (उत्क्रमज्या) होती है, उसका धनु नतकालांश होता है। उसमें ६ का भाग देने से घटघात्मक नतकाल होता है। नतकाल को दिनार्ध में घटाने से शेष उन्नतकाल ही(पूर्वकपाल के सूर्य में) इष्टकाल होता है। पश्चिम कपाल के सूर्य में दिनार्ध और नतकाल के योग से इष्ट काल होता है; अन्त्या में इष्टान्त्या घटाने पर शेष त्रिज्या से अधिक बचे तो उसमें त्रिज्या घटा देना, शेष क्रमज्या होगी। उसके धनु को ९० अंश में जोड़ने से उत्क्रम चाप अर्थात् नतकालांश होगा।

नियम २.—अन्त्या-साधनार्थ उत्तर गोल में चरज्या को त्रिज्या में + धन तथा दक्षिण गोल में चरज्या को त्रिज्या में ऋण — करना चाहिए।

गणितोपकरण—अक्षांश उत्तर २५°/३४′, क्रांति उत्तर १८°।३६′।४४″. क्रांतिज्या ३१९, कोटिज्या (द्युज्या) ९४७, पलभांगुल ५।४५ (५·७५), पलकर्ण १३।१९ (१३·३), इष्ट छायांगुल ८, इष्ट छायाकर्ण १४।२५ (१४·४) चरपल ९३, चरांश ९·३, चरज्या १६१, त्रिज्या १०००।

उदाहरण—त्रिज्या १००० × १००० = १०००००० त्रिज्या वर्ग × १३·३पलकर्ण = १३३००००० भाज्य। द्युज्या ९४७ × १४४ इष्ट छायाकर्ण = १३६३६८ भाजक। भाज्य १३३०००००÷१३६ भाजक = ९७८ इष्ट अन्त्या। त्रिज्या १००० + १६१ चरज्या = ११६१ − ९७८ इष्ट अन्त्या = १८३ उत्क्रमज्या, उसका धनु ३५°।१३′ ÷ ६ = घटी ५ पल ५२ नतकाल।

भास्कराचार्य की अन्य रीति—क्रमज्या से उन्नतकाल-साधनार्थ उत्तरगोल में चरज्या को इष्टान्त्या में घटाना और दक्षिणगोल में जोड़ना ; फिर उसकी क्रमज्या के धनु में चरांश को उत्तरगोल में जोड़ने और दक्षिणगोल में घटाने से उन्नतकालांश होते हैं। ('सिद्धान्त-शिरोमणि' त्रिप्रश्नाधिकार श्लोक ६९)

विशेष—उत्तरगोल में इष्टान्त्या में चरज्या नहीं घटे तो विपरीत शोधन करना यानी चरज्या में इष्टान्त्या घटा कर शेष के धनु को चरांश में घटाना तो अवशेष उन्नतकालांश होगा।

• उदाहरण—इष्टान्त्या ९७८ – १६१चरज्या = ८१७ सूत्रज्या, उसका धनु ५४°।५०'+९°।१८' चरांश = उन्नत-कालांश ६४°।८'÷६ = १०।४१ उन्नतकाल। घटी १५।० + १।३३ चर = १६।३३ दिनार्ध – १०।४१ उन्नतकाल = ५/५२ घट्यादि नतकाल ; यही नतकाल प्रथम रीति से भी आया है।

दिनार्धकाल-साधन—उत्तरगोल में चर घटी पल को १५ घटी में युक्त करने तथा दक्षिण गोल में घटाने से घट्यादि दिनार्ध होता है।

दक्षिण गोल का उदाहरण—इष्ट छाया ११·३, इष्ट छायाकर्ण १६·५, पलभा अं. ४·६५, पलकर्ण १२·८, क्रान्ति दक्षिण १९°।३८', कोटिज्या + ९४२, चरपल – ७९ (१ घटी १९ पल), चरांश ७·९ की भुजज्या – १३८, त्रिज्या १००० द्युज्या ९४२ × १६५ इष्ट छायाकर्ण = १५५ भाजक।

पलकर्ण ११८ ÷ त्रि² = भाज्य१२८०००००÷१५५ भाजक = ८२५ इष्टान्त्या + १३८चरज्या = ९६३सूत्रज्या उसका धनु ७४°।२२' – ७°।५४'चरांश = ६६°।२८'÷६ = ११ घ. ५ पल उन्नतकाल। घटी १५।० – १।१९ चर घ. प. = १३।४१ दिनार्ध – ११ ५ उन्नतकाल = २।३६ घट्यादि नतकाल।

अब उत्क्रमज्या से नतकाल-साधन—त्रिज्या १००० – १३८ चरज्या = ८६२ अन्त्या – ८२५ इष्टान्त्या = ३७ उत्क्रमज्या, इसका धनु १५।३९ ÷ ६ = २।३६ घट्यादि नतकाल हुआ।

सीधे अक्षांश से नतकाल-साधन का सूत्र—

$$\text{नतकालांश कोटिज्या} = \frac{१२ \times \text{त्रि}}{\text{अक्षांश कोज्या} \times \text{द्युज्या} \times \text{इष्टछायाकर्ण}} — \text{चरज्या}$$

गणितोपकरण—इष्ट छायाकर्ण १४।२५ (१४·४), चरज्या १६१, द्युज्या ९४७ अक्षांश कोटिज्या ९०१, त्रिज्या १००००० । अक्षांश और सूर्यक्रान्ति दोनों उत्तर होने से चरज्या, द्युज्या और अक्षांश कोटिज्या तीनों धन संज्ञक हैं। द्युज्या ९४७ + ९०१अक्षांश कोज्या = ८५३ + १४४ इष्ट छायाकर्ण = १२२८ भाजक

१२ × त्रि१००००० = भाज्य १२०००००÷१२२८ भाजक = ९७७ — १६१चरज्या = ८१६, इसका धनु ३५।१८ ÷ ६ = ५ घटी ५३ पल नतकाल।

सुखार्थ इष्ट छायाकर्ण-साधनकी ग्रहलाघवीय रीति—अक्षच्छायावर्गतत्त्वांशयुक्ता मर्त्तण्डाः स्यादङ्‌गुलाद्योऽक्ष-कर्णः। अर्थात् पलभा(इष्टछाया) वर्ग का २५वाँ भाग १२ में जोड़ने से अङ्‌गुलादि पलकर्ण(इष्टछायाकर्ण) होता है।

सूक्ष्म इष्ट छायाकर्ण-साधन का सूत्र—इष्टछायाकर्ण = १२ × नतांश-छेदनरेखा (Secant)

नतकाल ज्ञानार्थ पाश्चात्य सूत्र—

$$\text{नतकालांश कोटिज्या} = \frac{\text{उन्नतांशज्या}}{\text{अक्षांशकोज्या} \times \text{क्रांतिकोज्या}} \pm \text{चरया}$$

क्रान्ति उत्तर हों तो चरज्या + धन, क्रान्ति दक्षिण हो तो चरज्या – ऋण चिन्ह युक्त होगी, क्रान्ति कोटिज्या सर्वदा + धन चिन्हयुक्त होगी।

इष्ट छायांगुल को ०·०८३३ से गुणा करने से सूर्य के नतांश की स्पर्शज्या अर्थात् उन्नतांश की कोटि स्पर्शज्या प्राप्त होती है। उन्नतांश ज्ञात होने पर उपर्युक्त सूत्र द्वारा नतकालांश मालूम होगा। नतकालांश में ६ का भाग देने से घट्यादि नतकाल अथवा नतकालांश में १५ का भाग देने से घंटादि नतकाल ज्ञात हो जायगा।

उदाहरण—इष्टछायाङ्‌गुल ८ × ०·०८३३ = ०·६६६४ स्पर्शज्या का धनु ३३·७=नतांश। ९०–३३·७ नतांश = ५६·३ उन्नतांश की ज्या०·८३२ भाज्य। क्रान्तिकोज्या०.९४७ × ०.९०१ अक्षांश कोज्या=०·८५३ भाजक। भाज्य०·८३२ ÷ ०·८५३ भाजक=०·९७५–·१६१ चरज्या=०·८१४नतकालांश कोतिज्या, इसका धनु ३५°।३०' ÷ ६=५ घटी ५५ पल नतकाल हुआ।

मुहूर्त-माहात्म्य

निम्न लेख किसी सामान्य फलित ज्योतिषी का नहीं, बल्कि महामहोपाध्याय स्व० पं० श्रीसुधाकरजी द्विवेदी का है जो भारत में ही नहीं, विश्व में गणितशास्त्र और भारतीय सिद्धान्त-ज्योतिष के मूर्धन्य विद्वान थे। उन्होंने अपनी पुस्तक 'गणक-तरङ्गिणी' (सन् १९३३ ई०-संस्करण) के पृष्ठ ११३-११४ पर काशी के स्वनामधन्य श्रीबबुआ ज्योतिषी का संक्षिप्त परिचय संस्कृत में लिखा है। वे अब से करीब २०० वर्ष पूर्व हुए थे। उक्त संस्कृत लेख का हिन्दी भावानुवाद निम्नाङ्कित है।

'काशी-निवासी महाराष्ट्रीय ब्राह्मण, सिद्धान्त-स्वविवेक के रचयिता, पं० कमलाकरजी के वंश में बबुआजी का जन्म हुआ था। ये यद्यपि त्रिस्कन्ध ज्योतिष के अद्वितीय विद्वान् थे; किन्तु काशी में फलित ज्योतिष में इनकी महती ख्याति थी। ता. १४ जनवरी सन् १७९१ में अवध के नबाब आसफुद्दौला के पुत्र मिर्जा अली (वजीर अली), जिसने चेरी साहब को मार डाला था, बबुआ ज्योतिषी के बताये मुहूर्त के बल पर अपने राज्य-प्राप्ति के लिये ब्रिटिश-गवर्नमेंट से युद्ध करने को उद्यत हुआ; परन्तु शत्रु के पूर्वाक्रमण के भय से मुहूर्त के निर्दिष्ट समय से कुछ पहले ही युद्धारम्भ कर दिया था। इस कारण काशी में सवा प्रहर तक ही उसका राज्य स्थापित रह सका था। लोगों का विश्वास था कि यदि वह ठीक मुहूर्त में ही युद्धारम्भ करता तो उसका राज्य पूरे भारत में अवश्य ही स्थायी होता। उक्त पण्डितजी द्वारा वजीर अली को मुहूर्त दिये जाने की घटना के बाद से ही ब्रिटिश गवर्नमेंट द्वारा आदेश जारी कर दिया गया कि भविष्य में राजप्रतिबन्धित राजाओं को यात्रा-मुहूर्त न दिया जाय; इस आदेश के बावजूद उस समय ब्रिटिश-प्रतिबन्ध में काशी-निवास करनेवाले महाराज नेपाल को बबुआ ज्योतिषी ने यात्रा-मुहूर्त दे दिया था जिसके बल पर महाराज सुखपूर्वक अपने राज्य में पहुँचकर ब्रिटिश-प्रतिबन्ध से मुक्त हो गये थे। नेपाल-नरेश ने ज्योतिषीजी को कई बार अपने यहाँ बुलाया; किन्तु वे काशी छोड़कर वहाँ नहीं गये। उनका देहान्त हो जाने पर जयराम शर्मा नामक उनके पुत्र नेपाल गये; वहाँ नेपाल-दरबार द्वारा बहुत द्रव्यादि से उनका आदर-सत्कार किया गया था।

बबुआ ज्योतिषीजी अपने मकान के कोठे पर ही सदा रहते थे; नीचे आकर किसी से न मिलते थे। कोई व्यक्ति ज्योतिष सम्बन्धी कार्यवश उनके यहाँ आता था तो रस्सी में बंधा एक पात्र खिड़की से नीचे उस व्यक्ति के पास लटका देते थे जिसमें वह अपना अभीष्ट कार्य कागज पर लिखकर दक्षिणा सहित रख देता था; उसे ज्योतिषीजी ऊपर खींचकर उसके प्रश्न का समाधान एवं मुहूर्तादि उपाय कागज पर लिखकर पुनः उसी प्रकार रस्सी में बँधे पात्र द्वारा उक्त व्यक्ति को दे देते थे। जो जितनी स्वल्पाधिक दक्षिणा देता था, वे उसी अनुसार सामान्योत्तमोत्तम मुहूर्त उसे देते थे। यात्रा-मुहूर्त के विषय में इनकी महती प्रशंसा थी। एक बार काशी के एक गरीब मुसलमान ने बबुआ ज्योतिषीजी को २) देकर धनप्राप्त्यर्थ परदेश जाने का मुहूर्त उनसे लिया। उनके मुहूर्त पर पूर्ण विश्वास रखकर उसने ठीक समय पर प्रस्थान किया और दस कोस पर जाकर ठहरा; वहाँ वह ज्वराक्रान्त हो गया। लगातार ७ दिन के उपवास के कारण मर जाने के डर से ४) में एक क्षीणकाय घोड़ी खरीदी जिसकी पीठ पर एक जीर्ण-शीर्ण गद्दी बँधी थी, उसी पर बैठकर वह बड़े क्लेशपूर्वक किसी प्रकार अपने घर वापस आया। २ माह बाद ज्वरमुक्त होकर वह दुर्बल व्यक्ति लाठी के सहारे ज्योतिषीजी के घर पहुँचा और उनके मुहूर्त की निंदा आरम्भ कर दी। बबुआजी आश्चर्य में पड़ गये। उन्होंने उस मुसलमान से पूछा कि तुमने यात्रा में क्या खरीदा था? उसने दुःखी मन से कहा कि एक फटी-पुरानी गद्दी सहित एक मरियल घोड़ी खरीदी थी, वह भी अब मर गयी है; क्रोधविस्फारित नेत्रों से ज्योतिषीजो को देखता हुआ वह बोला। ज्योतिषीजी ने कहा, वह फटी-पुरानी गद्दी यहाँ ले आओ। वह तुरन्त घर जाकर उक्त जीर्णशीर्ण गद्दी ले आया और ज्योतिषीजी के आदेशानुसार उसे छिन्न-भिन्न किया तो उसमें से उसको २०० स्वर्ण मुद्राएँ (मोहरें) मिलीं। यह देखकर वह विस्मयविमुग्ध हो गया और उसने बड़े विनयपूर्वक १० स्वर्ण मुद्राएँ ज्योतिषीजी को भेंट की तथा बारम्बार उनकी स्तुति-प्रशंसा कर आनन्दपूर्वक अपने घर गया। बबुआ ज्योतिषीजी का निधन शके १७३८ के लगभग हुआ। उस समय उनकी आयु करीब ६० वर्ष की थी। तदनुसार इनका जन्म-काल शके १६७८ है। काशीराज श्रीनारायण सिंह वीरपुंगव के समय से इनके वंशजों को वृत्ति मिलती रही।'

इसी लेख की पादटिप्पणी में स्व० श्रीसुधाकरजी द्विवेदी ने लगभग उसी समय के काशी-निवासी एक और प्रसिद्ध वामोपासक फलितप्रवीण पं० श्रीचिन्तामणि उपाध्याय का उल्लेख किया है जो सरयूपारीण ब्राह्मण थे। लक्ष्मण (लखनो) पुराधिपति यवनराज उक्त पंडितजी का बहुत आदर-सत्कार करते थे। यवनराज ने पंडितजी के फलादेश से प्रभावित होकर उनको जो गाँव आदि भेंट किया था, उसका आनन्दपूर्वक उपभोग आज भी उनके वंशज कर रहे हैं। श्रीचिन्तामणिजी उपाध्याय की वंश-परम्परा में आज काशी के नवयुवक ज्योतिषी पं० श्रीकैलाशनाथजी उपाध्याय 'चिन्ताहरण जंत्री' के सम्पादकीय विभाग के सदस्य हैं। फलित ज्योतिष एवं तंत्र-विषय के इनके गुरुदेव 'चिन्ताहरण जंत्री' के प्रवर्तक और आद्य सम्पादक स्व० श्रीरमलाचार्यजी महाराज थे एवं अब वे निष्ठापूर्वक जंत्री-सम्पादन में मुझे सहयोग दे रहे हैं। आपके पास अपने पूर्वजों की 'मुहूर्त-चक्रावली' नामक मुहूर्तविषयक एक अति पुरातन हस्तलिखित पुस्तक थी। उपाध्यायजी का जब हमसे और रमलाचार्यजी का परिचय नहीं था, तब उनकी किशोरावस्थाजन्य अनुभव-हीनता का लाभ उठाकर यहीं के एक तथाकथित भृगुसंहिताधारी ज्योतिषी ने उनसे उक्त पुस्तक हड़प लिया। इससे भृगु-संहिताधारी की मृतप्राय दूकानदारी तो चमक उठी और उन्होंने थोड़े ही समय में अट्टालिका खड़ी कर लीं; किन्तु

उक्त पुस्तक का प्रकाशन असम्भवप्राय हो जाने के कारण फलितज्योतिष-साहित्य की बहुत बड़ी हानि हुई। उक्त पुस्तक के अलावा उपाध्यायजी को अपने हिस्से में प्राप्त पुरातन संग्रह में मुहूर्त-विषयक केवल दो-तीन जीर्ण पत्र और मिले थे। उन्हीं में-से 'अभिजिन्मुहूर्त' शीर्षक यह प्रकरण ज्योतिष-जगत के उपकारार्थ यहाँ प्रकाशित किया जा रहा है। प्राचीन संस्कृत ज्योतिष-साहित्य में एतद्विषयक मूल संस्कृत श्लोकों के अलावा बिना किसी पाठान्तर के जैन-मुहूर्तशास्त्र में भी यह प्रकरण हमें मिला—केवल उसकी भाषा प्राकृत है। इतना ही नहीं, महाकवि घाघ की लोकोक्तियों में भी यह विषय यथावत् रूप में मुझे मिलने से सर्वाधिक प्रसन्नता हुई। घाघ के समान फलित-ज्योतिष की ऋतु-विज्ञान-शाखा का विशेषज्ञ अभी तक तो भारत में कोई नहीं हुआ। ऋतु और कृषिकर्म सम्बन्धी इनकी लोकोक्तियों पर उत्तरप्रदेश-सरकार विशेषज्ञों द्वारा शोधकार्य करा रही है जिसके पूरा हो जाने पर इनकी प्रामाणिक लोकोक्तियों का सङ्कलन कृषि-शिक्षा के कोर्स में रखा जायेगा। सम्भवतः यह भी थोड़े लोग जानते होंगे कि स्वयं 'घाघ' का जीवन-निर्माण भी मुहूर्तशास्त्र का ही एक चमत्कार था। वह घटना इस प्रकार है—

'गाँवों में यह कहानी आमतौर पर प्रचलित है कि काशी में एक ज्योतिषी रहते थे। उन्होंने गणना करके देखा तो एक ऐसी अच्छी साइत आनेवाली थी जिसमें यदि गर्भाधान हो तो उससे अत्यन्त बुद्धिमान, विद्वान् और यशस्वी पुत्र उत्पन्न होगा। ज्योतिषीजी एक गुणी पुत्र-प्राप्ति की लालसा से काशी छोड़कर घर की ओर चले। घर काशी से दूर था। ठीक समय पर वे घर नहीं पहुँच सके। रास्ते में शाम हो गयी। एक अहीर के दरवाजे पर उन्होंने डेरा डाला। अहीर की युवती कन्या या स्त्री उनके लिए भोजन बनाने बैठी। ज्योतिषीजी बहुत उदास थे। अहीरनी ने उदासी का कारण पूछा तो कुछ इधर-उधर करने के बाद ज्योतिषीजी ने असली कारण बता दिया। अहीरनी ने स्वयं इस साइत से लाभ उठाना चाहा। और उसी की इच्छा का परिणाम यह हुआ कि समय पाकर घाघ का जन्म हुआ। बड़े होने पर घाघ बड़े भारी ज्योतिषी हुए।' (श्रीरामनरेश त्रिपाठी–संपादित 'घाघ-भड्डरी' से) घाघ ऐसे व्यक्ति ने अपनी ऋतु और कृषिकर्मपरक लोकोक्तियों में इस 'अभिजिन्मुहूर्त' का भी समावेश किया है, इसी से पाठक इसके महत्त्व का अनुमान कर सकते हैं। यहाँ हम तद्विषयक घाघ के पद्य तथा जैनशास्त्रोक्त प्राकृत पद्य भी दे रहे हैं—

घाघ भड्डरी प्रोक्त अभिजिन्मुहूर्त—

नहिं नच्छत्तर नहिं तिथि वार। बारह अंगुल लक्कड़ गाड़॥
रवि को बीस, सोम को सोलह। मंगल पंद्रह करै विचार॥
बुध को चौदह, बीफै तेरह। सुक्र सनीचर बारह बार॥
इतना साध चलै जो कोई। ताँबा लादै सोना होई॥
कह घाघ मन-उछाह परिपूर। का करि भद्रा का दिक्सूल॥

जैन ज्योतिषशास्त्रोक्त अभिजिन्मुहूर्त—

तिण मिण हु बार अंगुल, छाया रवि बीस, चन्द सोलाणं।
भू पनर, बुध चवदह, गुरु तेरह, बार भृगु मंदे॥
बे बार अभीय दिण महि, मासा अभीयाइं उसा चउत्थ पयं।
सवणाइं घड़ी चार ही, लहियं करि कज्ज फल बहु यं।
घडियं ओणीसायं, अभीय भागाय करिय चउभारं॥
पउणो पण घडियायं, जन्मोत्तरक्खरे नामं॥

भावार्थ—बारह अंगुल शंकु की छाया रविवार को जब २० अंगुल, सोमवार को १६ अंगुल, मंगलवार को १५, बुधवार को १४, गुरुवार को १३, शुक्र और शनिवार को १२ अंगुल की हो, तब शुभ कार्यारम्भ करना। इस शंकुच्छाया-काल को अभिजित् छाया मुहूर्त कहते हैं। यह दिन में दो बार (एक मध्याह्न से पहले, दूसरा मध्याह्न के बाद) आते हैं। मास में एक बार (उत्तराषाढ़ा के अन्त्य, चौथे पाद की १५ घटी और श्रवण के आदि की ४ घटी कुल १९ घटी का) अभिजिन्मुहूर्त होता है। इसमें शुभ कार्य करना बहुत फलदायक होता है। अभिजित् की उक्त १९ घटी के चार भाग ४।।-४।। घटी के होते हैं, उसके जन्म-नामाक्षर जु जे जो खा हैं। देखें, इसी पुस्तक के पृष्ठ २९ पर प्रकाशित 'साभिजित् अभिनव होड़ाचक्र'। उसमें अभिजित् का राश्यादि भोग ९।६°।४०'।०" से

९।१०°।५३'।२०" दिया है। अर्थात् जिस दिन, जिस समय चन्द्रमा का भोग अपनी दैनिक या अर्धदैनिक स्पष्ट गति से राश्यादि ९।६°।४०'।०" होता है, उस रोज उसी समय से मासिक अभिजित् मुहूर्त का आरम्भ होता है तथा जब उसका राश्यादि स्पष्ट भोग ९।१०°।५३'।२०" होता है तब उक्त अभिजित् मुहूर्त समाप्त हो जाता है। उक्त समय के भीतर यदि उस रोज के वार के छायांगुल का इष्टकाल भी प्राप्त हो जाय तो वह मुहूर्तकाल दुगुना शक्तिशाली हो जाता है। इस तरह जैन-मुहूर्तशास्त्र में दैनिक और मासिक दो प्रकार के अभिजिन्मुहूर्त कथित हैं। यह उसकी 'घाघ' से विशेषता है; किन्तु इन दोनों के अलावा किसी-किसी साल तिगुना शक्तिशाली अभिजिन्मुहूर्त भी प्राप्त होता है। जब सूर्य-चन्द्रमा दोनों के संयुक्त अभिजित्—भोग-काल में उस रोज के वारानुसार दैनिक अभिजिन्मुहूर्त के इष्टकाल का भी समावेश हो जाय। जैसे, सन् १९७४ ई० में ता. २३ जनवरी बुधवार को दुगुना शक्तिशाली अभिजिन्मुहूर्त था। बुधवार को १४ अंगुल छाया का इष्टकाल अपेक्षित होता है। अतः उस दिन किसी को पूर्वोक्त गणित से १४ अंगुल छाया का जो इष्टकाल मिला होगा, वह तिगुना शक्तिशाली अभिजिन्मुहूर्त था। अंगुलात्मक छाया का इष्टकाल जानने का गणित उदाहरण सहित हम पहले इस लेख में समझा ही चुके हैं जिसमें ८ अंगुल छाया का समय ज्ञात किया गया है; उसी प्रकार से रवि, सोम आदि वारों के लिए क्रमशः २० अंगुल, १६ अं० आदि का इष्टकाल ज्ञात कर विज्ञ पाठक इस अत्यन्त प्रभावशाली मुहूर्त से आशातीत लाभ उठायेंगे—इस विश्वास के साथ मैं यह लेख समाप्त करता हू।

ग्रहों की अष्टधा गति (Eightfold motions of Planets)

देश भेदं ग्रहगणितं जातकमवलोक्य निरवशेषन्। यः कथयति शुभमशुभं तस्य न मिथ्या भवेद्राणितो ॥

आर्ष ग्रंथ सूर्य-सिद्धांत में ग्रहों की प्रकार की गति बताई गयी है। जिनका सम्यक् ज्ञान अधिकांश जातियों को न होने के कारण वे फलादेश में इनका अव्यर्थ उपयोग नहीं कर पाते। अतः इन अष्टधा ग्रह-गतियों का यहाँ विशद विवरण दिया जा रहा है—

बक्राऽतिवक्रा विकला मंदा संदतरा समा। तथा शीघ्रतरा शीघ्रा ग्रहाणांमष्टधा गतिः॥(सूर्य सि.स्पटा.॥१२॥)

ग्रहों की ये आठ प्रकार की गतियाँ होती हैं—(१) वक्र, (२) अनुवक्र, (३) विकल, (४) मंद, (५) मंदतर, (६) सम, (७) शीघ्र, (८) शीघ्रतर।

(१) वक्र—पश्चिमाभिमुख क्षयिष्णु गति (पूर्व से पश्चिम की ओर चलनेवाले ग्रह की घटती हुई गति)।

(२) अनुवक्र (अतिवक्र) —पश्चिमाभिमुख वर्धिष्णु गति (पश्चिम की ओर चलनेवाले ग्रह की बढ़ती हुई गति)।

(३) विकल—ग्रह के वक्रत्व, मार्गत्व-त्याग के समय गत्याभाव यानी स्तम्भी होने के पहले-पीछे की म्रियमाण और पुनर्जायमान गति जिसमें ग्रह पृथ्वी से ताराओं के बीच स्थिरप्राय (Stationery) दिखाई देता है।

(४) मंद—पूर्वाभिमुख वर्धिष्णु गति जिसका मान ग्रह की समगति से न्यून, किंतु दैनन्दिन बढ़ता हुआ समगति के तुल्य होनेवाला हो।

(५) मंदतर—पूर्वाभिमुख क्षयिष्णु गति जिसका मान समगति से अल्प होने के अतिरिक्त घट भी रहा हो।

(६) सम—पूर्वाभिमुख गति जो ग्रह की मध्यम गति के मानासन्न हो।

(७) शीघ्रतर (अतिशीघ्र)—पूर्वाभिमुख वर्धिष्णु गति (क्रमशः वर्धमान गति जिसका मान समगति से अधिक होने के अलावा बढ़ भी रहा हो।

(८) शीघ्र—पूर्वाभिमुख क्षयिष्णु गति—जिसका मान मध्यम गति से अधिक हो, किन्तु घट रहा हो।

ग्रहों की मध्यम गति, शीघ्रगति, परमशीघ्र गति अतिचारादि की सारणी 'ज्योषित-रहस्य' प्रथम खण्ड—पृष्ठ १९ पर देखिए।

पञ्चधा युति [Fivefold Conjuntions]

(१) ग्रहों के भोगांश (Longitude) तुल्य होने पर उनकी भोग-युति, (२) उनके विषुवांश (R A.) तुल्य होने पर विषुवांश-युति, (३) शर (Latitude) तुल्य होने पर 'शरैक्य-युति', (४) क्रांति (Declination) तुल्य होने से 'क्रांत्यैक्य युति' या 'क्रांतिसाम्य' और (५) ग्रह निःशर [शून्य० शर] होने पर 'पातयुति' होती है। ग्रहों के अन्य किसी भी 'दृष्टियोग' (Aspect) के प्रभाव-काल में यदि उक्त पाँच प्रकार की युतियों में-से कोई युति हो रही है तो वह अपने सधर्मी दृष्टि-योग के प्रभाव को बहुत तीव्र कर देती है तथैव विरुद्ध-धर्मी दृष्टि-योग के प्रभाव को क्षीण कर देती है। ग्रह-विशेष की किसी नक्षत्र-तारा के साथ अथवा अन्य ग्रह के साथ होनेवाली जो अनेक विशिष्ट युतियाँ हमारे पंचांग में दी जाती हैं; वे विषुवांश-युति होती हैं एवं उनके युति-कालीन क्रांत्यन्तरवशात् एक दूसरे से दक्षिणोत्तर अंतर के अंशादि मान दिये जाते हैं जिनका फलित की दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण उपयोग संहिता-ग्रंथों में निर्दिष्ट है। भोगांश-युति-सूर्यसिद्धांत में पठित है और विषुवांश-युति भास्कराचार्य-कृत 'सिद्धांत-शिरोमणि' में। विषुवांश-युति आकाश में यथार्थतः दृक् प्रत्यपद और वेधोपयुक्त होती है; इसीलिए भास्कराचार्य ने 'सिद्धांत-शिरोमणि' में लिखा है—'एवं कृते दिविकरौ ध्रुवसूत्र संस्थौ स्यातां तदा वियति सैव युतिर्निरुक्ता।'

दिक्, काल एवं सूर्य-ग्रहण-गणित

दिगंश-साधन के भास्करीय, केतकरीय तथा पाश्चात्य सूत्रों की सोपपत्तिक एकवाक्यता !

चक्रांशकाङ्के क्षितिजाख्यवृत्ते प्राक् स्वस्तिकाभीष्टदिशोऽस्तु मध्ये।
येंऽशाः स्थितास्तेऽत्र दिगंशकाख्यास्तज्ज्यात्र दिग्ज्येत्यपरेविभागे ।।
(सिद्धांत-शिरोमणि त्रिप्रश्नाधिकार ।।४५।।)

परिभाषा—क्षितिजवृत्त को याम्योत्तरवृत्त जिन दो बिन्दुओं पर स्पर्श करता है, उनमें-से उत्तर दिशा के बिन्दु को उत्तर-समस्थान तथा दक्षिण दिशा के बिन्दु को दक्षिण समस्थान कहते हैं एवं ऊर्ध्व और अधःस्वस्तिक पर से जानेवाला वृत्त याम्योत्तरवृत्त से समकोण बनाता हुआ क्षितिजवृत्त के जिन दो बिन्दुओं को स्पर्श करता हैं उनमें-से पूर्व-दिशा के बिन्दु को पूर्व-स्वस्तिक और पश्चिम दिशा के बिन्दु को पश्चिम-स्वस्तिक कहा जाता है। उपर्युक्त चारों स्वस्तिकों(ऊर्ध्व, अधः, पूर्व, पश्चिम-बिन्दुओं)में-से जानेवाले वृत्त को सममण्डल या पूर्वापर वृत्त (Prime Vertical) कहते हैं।

दृङ्गमण्डल या दृकवृत्त—ख-स्वस्तिक से ग्रहगत वृत्त को दृङ्गमण्डल अथवा दृक्वृत्त (Vertical circle) कहते हैं। कदम्बप्रोत एवं ध्रुवप्रोत वृत्तों की भाँति दक्वृत्त भी चलवृत्त होता है जो ऊर्ध्व और अधःस्वस्तिकों में कीलित रहता है। इसे इष्टकाल में किसी तारा या ग्रह-बिम्ब के केंद्र से संलग्न कर उसके उन्नतांश और दिगंश का मान ज्ञात किया जाता है। दृङ्गमण्डल में ग्रह ख-स्वस्तिक से क्षितिज की ओर जितने अंश नीचे रहता है, उसे ग्रह का नतांश (Zenith distance) कहते हैं तथा उक्त वृत्त में ग्रह क्षितिज से जितने अंश ऊपर (उन्नत) रहता है वह ग्रह का उन्नतांश (Altitude) कहा जाता है। ग्रह का दृङ्गमण्डल क्षितिज वृत्त को जहाँ स्पर्श करता है, वहाँ से पूर्व या पश्चिम-स्वस्तिक तक के क्षितिज वृत्त-खंड का अंशादि मान ग्रह का दिगंश (Azimuth) कहा जाता है। इष्टकाल में ग्रह पूर्व-कपाल में हो तो पूर्व-स्वस्तिक से, पश्चिम-कपाल में हो तो पश्चिम-स्वस्तिक से ग्रह के दिगंश नापे जाते हैं। पूर्व या पश्चिम-स्वस्तिक से उत्तर या दक्षिण जिस ओर ग्रहगत दृङ्गमण्डल का क्षितिजस्थ बिन्दु होता है, उसी के अनुसार उक्त ग्रह के उत्तर या दक्षिण दिगंश कहे जाते हैं अर्थात् पूर्व-स्वस्तिक से ग्रह उत्तर में होगा तो उत्तर, दक्षिण में होगा तो दक्षिण दिगंश होते हैं। ऐसा ही पश्चिम-स्वस्तिक के विषय में भी समझें। ग्रहादि के क्षितिजस्थ रहने पर उसके दिगंश को अग्रा (Amplitude) कहते हैं।

याम्योत्तरवृत्त, क्षितिजवृत्त, उन्मण्डल, अहोरात्रवृत्त, विषुवद्(नाड़ी)वृत्त, अक्षज्या, लंबज्या, अक्षकर्ण, द्वादशाङ्गुल शंकु, शंकुच्छाया(पलभा), छाया(पल)कर्ण, इष्टशंकु, इष्ट हृति, कुज्या, क्रांतिज्या का परिचय बिगत लेखों से पाठक प्राप्त कर चुके हैं। अतः यहाँ उनका पुनः उल्लेख नहीं किया जाता। दिगंश-साधन के प्रसंग में कुछ अन्य खगोलीय पदार्थों को भी सम्यक् रूपेण जान लेना आवश्यक है जिनका विवरण क्रमशः नीचे दिया जा रहा है:-

पूर्वापर सूत्र—पूर्व कथित पूर्व-समस्थान एवं पश्चिम समस्थान में बद्ध सूत्र को पूर्वापर सूत्र कहते हैं।

स्वोदयास्त सूत्र—ग्रह का अहोरात्रवृत्त क्षितिज के जिन दो पूर्वापर बिन्दुओं को स्पर्श करता है उनमें बद्ध सूत्र को स्वोदयास्त सूत्र कहते हैं।

भुज, शंकुतल, अग्रज्या—दृक्वृत्त और अहोरात्रवृत्त के संपात पर स्थित ग्रह-बिम्ब से क्षितिज-तल पर लंब सूत्र को शंकु कहते है तथा उक्त सूत्र क्षितिज-तल के जिस बिंदु को स्पर्श करता है उसे शंकुमूल कहते हैं। शंकुमूल से पूर्वापर सूत्र में लंबभावेन संलग्न सूत्र को भुज तथैव स्वोदयास्त सूत्र में संलग्न सूत्र को शंकुतल कहा जाता है और पूर्वापर सूत्र से स्वोदयास्त सूत्र तक उक्त शंकुमूल-गामी सूत्र को अग्रज्या कहते हैं जिसका धनु क्षितिजवृत्त-खण्डरूप अग्रा अर्थात् क्षितिजस्थ ग्रह का दिगंश होता है। क्षेत्र-दर्शन से यह सब सर्वथा हृदयंगम हो जायेगा। इसी कारण सिद्धांत-शिरोमणि के गोलाध्याय में श्रीभास्कराचार्य लिखते हैं—

द्युज्याकुज्यापम सम नराग्राक्ष लंबादिकानां,
विद्वन् गोले वियति हि यथा दर्शय क्षेत्रसंस्याम्।

अर्थात् हे विद्वन्! खगोल में द्युज्या कुज्या क्रान्ति समशंकु अग्रा अक्षांश लंबांश इत्यादि की जैसी स्थिति है, वैसी क्षेत्र-संस्था (परिलेखाकृति Diagram) में दिखलाइए। तदनुसार—क्षेत्र सं० १ में उ द = क्षितिज, ध्र पू = उन्मण्डल, स पू = पूर्वापर वृत्त या सममण्डल, अ ह =अहोरात्र वृत्त, क पू = विषुवद्(नाड़ी)वृत्त, ग = ग्रह, र ग ध्रु = इष्टकालिक ग्रह ग पर ध्रुवप्रोत वृत्त, ख पू = अक्ष-भुज-

ज्या, क ख लंबज्या, क पू = अक्षकर्ण,न र = द्वादशांगुल शंकु, न पू = शंकुच्छाया(पलभा), र पू = छाया(पल)-कर्ण, ग ह् = इष्टहृति, त ह् = कुज्या, पू त = क्रान्तिज्या हैं और इष्टशंकु, भुज, शंकुतल एवं अग्रज्या की उपर्युक्त
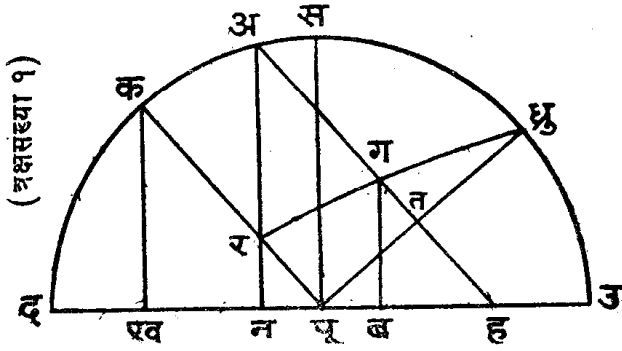
परिभाषानुसार ग ब = इष्ट शंकु, पू ब = भुज, ब ह = शंकुतल तथा पू ह = अग्रज्या है। △ ख क पू और △ न र पू दोनों सिद्धान्तशिरोमणि में पठित अक्षक्षेत्र (सजातीय) हैं, अतः अनुपात से एक का दूसरे में परिणमन होता है यथा—अक्षक्षेत्र △ ख क पू से △ न र पू में पलभा न पू के ज्ञानार्थ अनुपात किया—

अक्षकोज्या क ख:अक्षज्या ख न : : १२ नर : :पलभा न पू

$$\therefore \text{पलभा} = \frac{\text{अक्षज्या} \times १२}{\text{अक्षकोज्या}} \dots\dots\dots (१)$$

तथैव△न र पू में पलकर्ण र पू के ज्ञानार्थ अनुपात किया—

अक्षकोज्या क ख : त्रि क र : : १२ न र : पलकर्ण र पू

$$\therefore \text{पलकर्ण} = \frac{\text{त्रि.} \times १२}{\text{अक्षकोज्या}} \dots\dots\dots\dots (२)$$

किंवा पलकर्ण = छे रे अक्षांश × १२

△ब ग ह भी प्रसिद्ध अष्ट क्षेत्रों में-से एक है जिसमें इष्ट शंकुतल ब ह भुज, इष्ट शंकु ग ब कोटि तथा इष्ट-हृति ग ह कर्ण है। अतः पलभा द्वारा इस शंकुतल ब ह के परिज्ञानार्थ अनुपात किया—

१२ अं. कोटि न र : पलभा ख न भुज : : इष्ट शंकु ग ब कोटि : इष्ट शंकुतल ब ह भुज,

$$\therefore \text{इष्ट शंकुतल} = \frac{\text{पलभा} \times \text{इ. शं.}}{१२} \dots\dots\dots (३)$$

△ पू त ह भास्करोक्त अष्ट अक्ष-क्षेत्रों में एक अति उपयोगी अक्ष-क्षेत्र है जिसके द्वारा क्षितिजस्थ ग्रह के दिगंश यानी अग्रा-साधन का सूत्र सहज ही सिद्ध हो जाता है। इस △ पू त ह में त ह = कुज्या भुज, पू त = क्रांतिज्या कोटि तथा पू ह = अग्रज्या कर्ण है; अतः अग्रज्या के ज्ञानार्थ अनुपात किया—

१२ अं. कोटि न र : पलकर्ण र पू : : क्रान्तिज्या कोटि पू त : अग्रज्या कर्ण पू ह,

$$\therefore \text{अग्रज्या} = \frac{\text{पलकर्ण} \times \text{क्रान्तिज्या}}{१२}$$, इसमेंसमीकरण(२)

से पलकर्ण का मान रखने पर—

$$\text{अग्रज्या} = \frac{\text{त्रि} \times १२ \times \text{क्रान्तिज्या}}{१२ \times \text{अक्षकोज्या}}$$ किंवा

$$\text{अग्रज्या} = \frac{\text{क्रान्तिज्या} \times \text{त्रि}}{\text{अक्षकोज्या(लंबज्या)}}$$, यही अग्रा-साधन का

पाश्चात्य सूत्र है जिसे स्व० श्रीकेतकरजी तथा स्व० पं० गणपतिदेवजी शास्त्रीने भी अपने ग्रंथों में प्रयुक्त किया है; देखिए, शास्त्रीजी कृत 'दृक्सिद्ध पञ्चाङ्ग-निर्माण-पद्धति' नामक ग्रंथ के चंद्रशृंगोन्नति-साधन-प्रकार में रवि-अग्रा साधन। इस तरह ग्रह जब उदय-काल में स्व-अहोरात्रवृत्त और क्षितिज के संपात-बिंदु पर होगा तो उसकी तात्कालिक क्रान्ति की ज्या में स्व-अक्षांश की कोटिज्या का भाग देने-मात्र से ग्रह की अग्रज्या ज्ञात हो जायेगी जिसका धनु (चापांश) ग्रह का औदयिक दिगंश = अग्रा होगी; किन्तु ग्रह क्षितिज के अतिरिक्त स्व-अहोरात्रवृत्त के किसी अन्य स्थान में होगा तो दिगंश का साधन इतनी सरलता से यानी अक्ष-क्षेत्रों के द्वारा नहीं हो सकेगा; तब इसके लिए खगोलनिष्ठ कल्पनाशक्ति से विशेष युक्ति का अवलंबन करना होगा। क्षेत्र में इष्टकालिक ग्रह स्व-अहोरात्रवृत्त में क्षितिजोपरि ग बिन्दु पर है; उससे कल्पना द्वारा दृक्वृत्त को संलग्न कीजिए तो ख-मध्य स से ग्रह ग तक दृक्वृत्त का चापीय खण्ड ग्रह का नतांश होगा तथैव क्षितिज को दृक्वृत्त ब के सन्निकट जहाँ स्पर्श करेगा, वहाँ से पूर्व-बिन्दु पू पर्यन्त क्षितिजवृत्त का चापीय खण्ड ग्रह का दिगंश होगा। (देखिए क्षेत्र सं० ३) पू से ह तक जानेवाले सूत्र को ग्रह की अग्रज्या के रूप में हम अभी जान चुके हैं और तदन्तर्गत ग्रह-शंकुमूल ब से ह तक के सूत्र 'इष्ट शंकुतल' को जानने के लिए समीकरण (३) भी सिद्ध कर चुके हैं; तब अग्रज्या पू ह में शंकुतल ब ह घटा देने से शेष भुज पूव हमें प्राप्त हो जायेगा। अतएव—

पू ह अग्रज्या − शंकुतल ब ह = भुज पू ब,

$$\text{किंवा} \quad \frac{\text{पलकर्ण} \times \text{क्रांज्या}}{१२} - \frac{\text{पलभा} \times \text{इ शंकु}}{१२} = \text{भुज}$$

जो पलक्षेत्रज, लघुवृत्तीय है; किन्तु दिगंश क्षितिजवृत्त में दृक्वृत्त के संयोग से नापा जाता है जो महद्वृत्त हैं। अतः उक्त लघुवृत्तीय भुज को महदवृत्त में परिणत करना होगा जिसके लिए भास्कराचार्य यह आदेश करते हैं—

कर्णाग्र्या बाहुरिह प्रसाध्यस्त्रिज्याहतोऽसौ प्रभया विभक्तः।
भवेत् प्रतीत्यर्थमियञ्च दिग्ज्यातुल्यैव सा स्याच्छ्रवणद्वयेऽपि॥

(सिद्धान्त-शिरोमणि, त्रिप्रश्नाधिकार ॥५२॥)

तदर्थं छाया-गणितोपपत्ति को यहाँ जान लेना आवश्यक होने से क्षेत्र-संख्या २ पर ध्यान दीजिए। इसमें स=सूर्य,
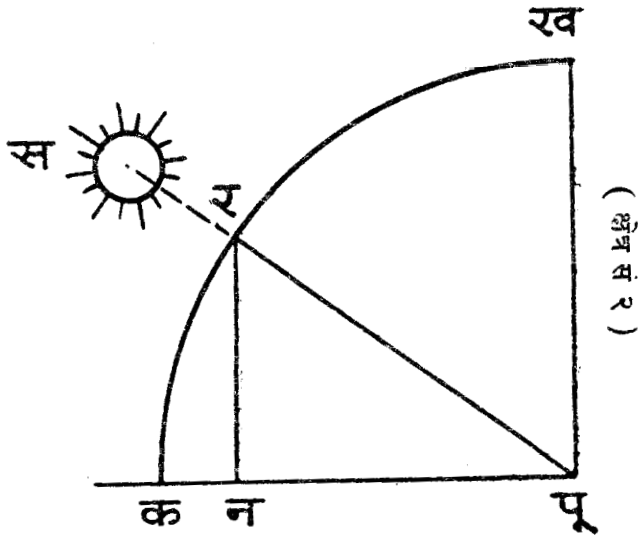
ख=खमध्य, क र=उन्नतांश, ख र=उन्नतांश-कोटि(नतांश) न र=इष्टकालिक शंकु, स पू=सूर्य-किरण-रेखा अर्थात् न प शंकुच्छाया है। यहाँ ∠क पू र = उन्नतांश कोण, ∠र न पू सकमोण है, अतएव ∠न र पू = ∠र पू ख=नतांश, तब इष्ट शंकु न र का नतांशजनित छाया न पू हुआ, अर्थात्—

इ. शंकु : उन्नतांशज्या : : छाया : उन्नतांशकोज्या

$$\therefore \text{छाया} = \frac{\text{इ. शंकु} \times \text{उन्नतांश कोज्या}}{\text{उन्नतांशज्या}} \ldots\ldots(४)$$

अब पूर्वोक्त लघुवृत्तीय पलक्षेत्रज छाया-भुज को महद्वृत्तीय छाया-भुज यानी दिग्ज्या में परिणत करने के लिए अनुपात किया—

छाया : लघुवृत्तीय भुज : : त्रि.: महद्वृत्तीय भुज (दिग्ज्या)

$$\therefore \text{दिग्ज्या} = \frac{\text{लघुवृत्तीय भुज} \times \text{त्रि}}{\text{छाया}} \text{ किंवा दिग्ज्या} =$$

$$\left\{ \left(\frac{\text{पलकर्ण} \times \text{क्रां.ज्या}}{१२} - \frac{\text{पलभा} \times \text{इ.शंकु}}{१२} \times \text{त्रि.} \right) \div \text{छाया} \right.$$

उपर्युक्त समीकरण में पलभा, पलकर्ण तथा छाया का मान (क्रमशः समीकरण १, २ एवं ४ से) रखने पर—

$$\text{दिग्ज्या} = \frac{\text{त्रि} \times १२ \times \text{क्रां.ज्या}}{\text{अक्षकोज्या} \times १२} - \frac{\text{अक्षज्या} \times १२ \times \text{इ. शंकु}}{\text{अक्षकोज्या} \times १२} \times \text{त्रि.} \times \frac{\text{उन्नतांशज्या}}{\text{इ.शंकु} \times \text{उन्नतांश कोज्या}}$$

$$\text{त्रि.=१, तब दिग्ज्या} = \frac{\text{क्रान्तिज्या} - \text{अक्षज्या} \times \text{उन्नतांश ज्या}}{\text{अक्षज्या} \times \text{उन्नतांशक ज्या}}$$

यही दिगंश-साधन का केतकरीय सूत्र है जो तद्विषयक पाश्चात्य सूत्र का रूपान्तरण है; वह भी आगे दिया जा रहा है।
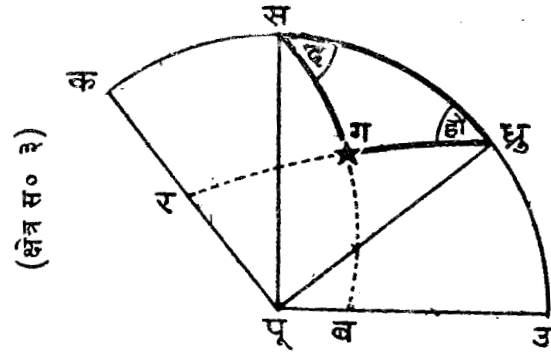
क्षेत्र सं० ३ में स = ख-मध्य, पू=पूर्व-स्वस्तिक, उ= उत्तर-समस्थान, ध्रु = उत्तर ध्रुव, ग = ग्रह, क पू = विषुवद्वृत्त, स पू=सममण्डल, इष्टकालीन ग्रह ग पर ध्रुव प्रोत वृत्त र ध्रु लगाया तो र ग ग्रह की क्रान्ति तथा ग ध्रु=९० – क्रान्ति (क्रान्तिकोटि) हुई एवं ग पर दृग्वृत्त स ब लगाने से ब ग ग्रह का उन्नतांश और स ग ९०– उन्नतांश (नतांश), पू ब = दिगंश हुआ; उ ध्रु = इष्ट स्थान का अक्षांश = स क है; अतः स ध्रु =९० – अक्षांश (लंबांश) हुआ। इस प्रकार गोलीय △ग स ध्रु की भुजा स ध्रु=लंबांश, भुजा स ग=नतांश तथा भुजा ग ध्रु= ध्रुवान्तर (निकटस्थ ध्रुव से ग्रह का ध्रुवसूत्रीय अन्तर) तथा होराकोण की परिभाषा के अनुसार उक्त त्रिभुज का ∠ग्र ध्रु स = होराकोण(नतकाल) है। ऊर्ध्व याम्योत्तर-वृत्त से अधःयाम्योत्तर वृत्त तक पश्चिमी खगोलार्ध में आकाशीय पिण्ड के रहने पर उसका होराकोण क्रमशः ० से १८० अंश यानी ० घं. से १२ घं. तक होता है एवं अधः याम्योत्तर वृत्त से ऊर्ध्व याम्योत्तर वृत्त तक के पूर्वीय खगोलार्ध में आकाशीय-पिंड के रहने पर क्रमशः १८० अंश से ३६० अंश याना १२ घं. से २४ घं. तक उसका होराकोण होता है। इसी भाँति पाश्चात्य खगोल-शास्त्र में निर्दिष्ट खगोलीय-पिण्डों के दिगंश-मापन की एक प्रमुख पद्धति के अनुसार किसी खगोलीयपिण्ड के पूर्वकपाल में होनेपर उसके दिगंश क्रमशः उत्तर समस्थान से पूर्व-स्वस्तिक होते हुए दक्षिण-समस्थान के १८० अंश तक नापे जाते हैं तथैव खगोलीय-पिण्ड यदि पश्चिम-कपाल में हो तो उसके दिगंश क्रमशः उत्तर-समस्थान से पश्चिम-स्वस्तिक होते हुए दक्षिण-समस्थान के १८० अंश तक नापे जाते हे। ऐसी स्थिति में उक्त ग्रह ग का दिगंश भारतीय पद्धति के अनुसार उ ब है जिसका सम्मुखस्थ कोण उक्त गोलीय त्रिभुज का ∠ग स ध्रु = द है और पाश्चात्य

रीत्यानुसार उत्तर से पूर्व की ओर ग के दिगंशसिद्धयर्थ इसी ∠द का मान ज्ञातव्य है।

अतः △ग स ध्रु. में भुजा ग स और स ध्रु. के मध्यस्थ कोण द के लिये, कोज्या ध्रु. ग = कोज्या ध्रु. स. कोज्या स ग + ज्या ध्रु स. ज्या स ग कोज्या ∠ ध्रु. स ग,

किंवा कोज्या ९० − क्रान्ति = कोज्या ९० − अक्षांश कोज्या ९०−उन्नतांश + ज्या ९० − अक्षा. ज्या ९०−उन्न. कोज्या द,

किंवा ज्या क्रान्ति = ज्या अक्षांश. ज्या उन्नतांश + कोज्या अक्षां. कोज्या उन्न. कोज्या द,

पक्षान्तरण से कोज्या अक्षां. कोज्या उन्न. कोज्या द= ज्या क्रान्ति — ज्या अक्षां. ज्या उन्न.

दोनों पक्षों में कोज्या अक्षां. कोज्या उन्नतांश का भाग देने से—

$$\text{कोज्या दिगंश} = \frac{\text{क्रान्तिज्या} - \text{अक्ष ज्या} \times \text{उन्न ज्या}}{\text{अक्ष कोज्या} \times \text{उन्न कोज्या}}$$

$$\text{किंवा} \pm \text{दिगंश ज्या} = \frac{\text{क्रान्तिज्या} - \text{अक्षज्या} \times \text{उन्नज्या}}{\text{अक्ष कोज्या} \times \text{उन्न कोज्या}} \quad (५)$$

यही दिगंश साधन का केतकरीय सूत्र है।

टिप्पणी—ऊपर बता आये हैं कि क्षितिज-वृत्त के उत्तर-बिन्दु से पूर्व और पश्चिम दोनों तरफ दक्षिण-बिन्दु तक १८० अंश दिगंश होते हैं; इनके बीच में यानी उत्तर-बिन्दु से ९० अंश पर पूर्व और पश्चिम-बिन्दु होते हैं। भारतीय सिद्धान्त ज्योतिषरीत्या इन्हीं बिन्दुओं से दक्षिणोत्तर दिगंश नापे जाते हैं यानी ग्रह पूर्व-कपाल में हो तो पूर्व-बिन्दु से उसके दक्षिण या उत्तर-दिगंश सिद्ध किये जाते हैं; यदि ग्रह पश्चिम-कपाल में हो तो पश्चिम-बिन्दु से उसके उत्तर या दक्षिण-दिगंश ज्ञात किये जाते हैं। इस स्थिति में उपर्युक्त सूत्र का कोज्या दिगंश= ± ज्या दिगंश होगा यानी द कोण (९० + द) या (९०−द) होगा। जब ९० + द होगा तो कोज्या द= − ज्या द ; जब ९० − द होगा तो कोज्या द = + ज्या द होगा। यह केतकरीय सूत्र के दिगंशज्या-जन्य कोण की धनर्ण व्यवस्था है जिसके अनुसार द कोण का मान धन + चिह्नयुक्त होने से उत्तर-दिगंश और ऋण−चिह्नयुक्त होने से दक्षिण दिगंश होते हैं।

खगोलीय त्रिभुज का वह कोण जो किसी आकाशीय पिण्ड पर दृक्वृत्त और ध्रुवप्रोतवृत्त के मिलने से बनता है, दिग्भेद कोण (Parallactic Angle) कहा जाता है, जैसे, क्षेत्र-संख्या३ के △ ध्रु स ग में कोण स ग ध्रु, इसका मान निम्न सूत्र से जान सकते हैं—

$$\text{कोज्या ग} = \frac{\text{ज्या अक्षां} - \text{ज्या क्रांति} \times \text{ज्या उन्न}}{\text{कोज्या क्रांति} \times \text{कोज्या उन्न}} \cdots (६)$$

इष्टशंकु से इष्टकाल-साधन—जिस गणित-प्रक्रिया से हम इष्टकालीन होराकोण (नतकाल) द्वारा इष्टशंकु (उन्नतांश ज्या अथवा नतांश कोज्या) ज्ञात करते हैं उसकी विलोम क्रिया से इष्टशंकु द्वारा नतकाल (होराकोण) एवं उससे इष्टकाल जान सकते हैं। क्षेत्र के △ स ध्रु ग में होराकोण ह, भुजा स ध्रु. एवं ध्रु ग के बीच का (मध्यस्थ) कोण है जिनका मान हमें ज्ञात है। इस कोण के सामने की भुजा स ग का मान भी मालूम है, अतएव—

कोज्या स ग = कोज्या स ध्रु. कोज्या ग ध्रु + ज्या सध्रु. ज्या ग ध्रु. कोज्या ∠ स ध्रु ग ;

किंवा कोज्या ९० − उन्न = कोज्या ९०−अक्षां. कोज्या ९० — क्रान्ति + ज्या ९० − अक्षां. ज्या ९०—क्रांति कोज्या हो,

किंवा ज्या उन्नतांश=ज्या अक्षां. ज्या क्रान्ति + कोज्या अक्षां. कोज्या क्रान्ति. कोज्या हो,

पक्षान्तरण से, कोज्या अक्षां. कोज्या क्रान्ति. कोज्या हो = ज्या उन्न − ज्या अक्षां. ज्या क्रान्ति,

दोनों पक्षों में कोज्या अक्षां, कोज्या क्रान्ति का भाग देने से

$$\text{कोज्या होरा-कोण} = \frac{\text{ज्या उन्न} - \text{ज्या अक्षां} \times \text{ज्या क्रान्ति}}{\text{कोज्या अक्षां} \times \text{कोज्या क्रांति}}$$

इस भाँति पृष्ठ १२८ प्रकाशित नतकाल-ज्ञानार्थ पाश्चात्य सूत्र उत्पन्न हुआ इस प्रकार के सूत्रावतारण के लिए कै० गोविन्द सदाशिवजी आपटे ने अपने 'सर्वानन्द करणम्' के गोलीय क्षेत्राधिकार में एक बड़ा उपयोगी श्लोक दिया है—

न्यूनिता द्रष्टृकोटिज्याऽन्यदोः कोज्यावधेन वै।
अन्यदोर्मौविका हृत्या भक्तास्यात्कोण कोज्यका॥६॥

पाश्चात्य रीत्या दिगंश और होराकोण-साधन के सूत्र इस लेख में तथैव उन्नतांश-साधन का सूत्र गत लेख में सिद्ध किये जा चुके हैं। हम देखते हैं कि उन्नतांश, दिगंश एवं होराकोण तीनों उक्त क्षेत्र के △स ध्रु ग के ही अंग हैं और तब गोलीय त्रिकोणमिति से उनका यह पारस्परिक संबन्ध भी सुनिश्चित हो जाता है—

ज्या ∠ ध्रु. : ज्या स ग : : ज्या ∠ द : ज्या ग ध्रु.
किंवा ज्या हो : ज्या ९०−उन्न : : ज्या द : ज्या ९०−क्रां.
किंवा ज्या हो : ज्या नतांश : : ज्या द : कोज्या क्रांति

तब दिगंश ज्ञानार्थ—

$$\frac{\text{ज्या हो} \times \text{कोज्या क्रांति}}{\text{ज्या नतांश}} = \text{ज्या दिगंश, उत्तरध्रुव बिंदु से} \quad (८)$$

इसी भाँति—होराकोण-ज्ञानार्थ—

$$\frac{\text{ज्या नतांश} \times \text{ज्या दिगंश}}{\text{कोज्या क्रांति}} = \text{ज्यो होरा-कोण(नतकाल)} \cdots (९)$$

$$\frac{\text{कोज्या उन्न} \times \text{ज्या दिगंश}}{\text{ज्यो हो}} = \text{कोज्या क्रान्ति} \cdots\cdots (१०)$$

तथैव नतांश-ज्ञानार्थ—

$$\frac{\text{ज्या हो} \times \text{कोज्या क्रांति}}{\text{ज्या दिगंश}} = \text{ज्या नतांश} \cdots\cdots (११)$$

इस सूत्र द्वारा दिगंश की सहायता से नतांश जाना जाता है ; किंतु दिगंश-साधन के अब तक जितने सूत्र सिद्ध किये गये हैं उनमें नतांश या उन्नतांश का उपयोग करना पड़ता है। इस अन्योन्याश्रय दोष के निराकरणार्थ एक ऐसा सूत्र बनाना आवश्यक हो जाता है जिसके द्वारा नतांश या उन्नतांश की सहायता के बिना ही दिगंश ज्ञात हो जाय

तब हम जिस तरह पहले नतांश या उन्नतांश जानकर उसकी सहायता से उपर्युक्त सूत्रों द्वारा दिगंश जान सकते हैं, उसी तरह अभीष्ट सूत्र से प्रथमतः दिगंश जानकर उसके द्वारा नतांशोन्नतांश ज्ञात कर सकेंगे। यतः क्षेत्र सं० ३ के △ स ध्रु ग में भुजा ग ध्रु और ध्रु स के अन्तर्गत ∠हो है, अतः यह भीतरी कोण हुआ एवं ∠ हो तथा ∠द की ससक्त भुजा ध्रु स होने से यह भीतरी भुजा हुई; भुजा ग ध्रु तथा ∠द उक्त △ के क्रमशः अन्य भुजा एवं कोण हुए; तब गोलीय त्रिकोणमिति से, कोज्या भीतरी भुजा × कोज्या भीतरी कोण = ज्या भीतरी भुजा × कोस्प अन्य भुजा − ज्या भीतरी कोण × कोस्प अन्य कोण,
∴ कोज्या स ध्रु × कोज्या हो = ज्या स ध्रु × कोस्प ग ध्रु − ज्या हो × कोस्प द,

किंवा कोज्या ९०− अक्षां × कोज्या हो = ज्या ९०−अक्षां × कोस्प ९० − क्रांति − ज्या हो × कोस्प द

किंवा ज्या अक्षां × कोज्या हो = कोज्या अक्षां × स्प क्रांति − ज्या हो × कोस्प द, पक्षांतरण से—

ज्या हो × कोस्प द=कोज्या अक्षां × स्प क्रांति−ज्या अक्षां × कोज्या हो, दोनों पक्षों में ज्या हो का भाग देने से—

$$\text{कोस्पदिगं} = \frac{\text{कोज्या अक्षां} \times \text{स्प क्रांति} - \text{ज्या अक्षां} \times \text{कोज्याहो}}{\text{ज्या हो}}$$

..... (१२) यह पाश्चात्य सूत्र उत्पन्न हुआ जिसके द्वारा उत्तर-बिंदु से पूर्व या पश्चिम की ओर होते हुए दक्षिण-बिंदु तक के १८०अंश का दिगंश बहुत सूक्ष्मतापूर्वक हम जान सकते हैं। किसी खगोलीय गणित में नतोन्नतांश जानने का प्रयोजन न हो, केवल दिगंश ज्ञात करना हो, तब इस सूत्र का उपयोग अनिवार्य है; किंतु सिद्धांतोक्त ज्योतिष एवं पञ्चाङ्गीय गणित में अधिकांशतः दिगंश और उन्नतांश दोनों की आवश्यकता पड़ती है; तब उपर्युक्त सूत्रों में-से किन्ही दो सूत्रों द्वारा स्वाभाविक संख्याओं और लाघवांक दोनों से दिगंश और उन्नतांश के लिए अलग-अलग गणित करना होगा या फिर प्रत्येक का पूरा गणित केवल स्वाभाविक संख्याओं के द्वारा करना पड़ेगा। एकमेव लाघवांकपरक गणित-प्रक्रिया से उन्नतांश दिगंश दोनों के मान बिना एक दूसरे की सहायता के स्वतंत्ररूपेण सहज ही जान लेने की अपूर्व रीतियाँ भी दृग्गणित के आधुनिक विद्वानों ने बनाकर अपने को गणित-गगन-दिवाकर श्रीमद्भास्कराचार्य की इस प्रशस्ति का अधिकारी सिद्ध कर दिया है—याम्योदक्समकोणभाः किल कृताः पूर्वैः पृथक्साधनैयास्तद्दिग्विवरान्तरान्तरगता याः प्रच्छकेच्छावशात। ता एकानयनेन चानयति यो मन्ये तमन्यं भुवि ज्योतिर्विद्वदनारविन्दमुकुल प्रोल्लासने भास्करम्॥ (सिद्धान्त-शिरोमणि,त्रिप्रश्नाधिकार॥४४॥)

उपर्युक्त रीतियों में-से एक रीति कै० श्री पं० गणपति देवजी शास्त्रीकृत 'दृक्सिद्ध पञ्चाङ्ग-निर्माण-पद्धति' के चंद्रशृङ्गोन्नति-साधन-प्रकरण में उपपत्ति और उदाहरण सहित प्रकाशित है, जिज्ञासु पाठक वहाँ देखें। उक्त पुस्तक संपूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी से प्रकाशित है। दूसरी जिस रीति-विशेष का उपयोग 'चिन्ताहरण जंत्री' के संपादकीय विभाग में किया जाता है, वह सोदाहरण नीचे दी जा रही है—

रीति— $$\frac{\text{स्पज्या क्रांति}}{\text{कोज्या होराकोण}} = \text{स्पज्या म}$$

$$\frac{\text{कोज्या}(\phi'-\text{म}) \times \text{ज्या क्रांति}}{\text{ज्या }(\phi-\text{म})} = \text{कोज्या नतांश}$$

$$\frac{\text{कोज्या म} \times \text{स्पज्या होराकोण}}{\text{ज्या }(\phi'-\text{म})} = \text{स्पज्या दिगंश},$$

उत्तर-बिंदु से। इसी भाँति अग्रा को भी उत्तर-बिंदु से नापना हो तो $\text{कोज्या अग्रा} = \frac{\text{ज्या क्रांति}}{\text{कोज्या }\phi'}$ यहाँ ϕ'=अभीष्ट स्थान का भूकेंद्रीय अक्षांश।

१. अग्रा-साधन का उदाहरण—ता, १३ जनवरी १९७८ ई० को काशी में औदयिक सूर्य-क्रांति दक्षिण (−) २१°।३३'।२७" है (देखें सन् १९८० की चिन्ताहरण-जंत्री का पृष्ठ ६५; काशी का भूकेंद्रिय अक्षांक्ष ϕ' = २५°।१०'।१३", तब—

लाज्या ३	−२१।३३।२७	९·५६५१८०३(—)
−लाकोज्या ϕ' +	२५।१०।३	९·९५६६८१४(+)
=लाकोज्या अग्रा −	६६।२।५८	९·६०८ ९८९(—)

अग्रा की कोज्या − ऋणात्मिका (द्वितीय पदस्थ) होने से उसके धनु ६६°।२'।५८" को १८० अंश में घटाया तो शेष ११३°।५७'।८" अग्रा हुई; सूर्य-क्रांति दक्षिण है, तदनुसार सूर्य की इस अग्रा की दिशा भी दक्षिण है, उत्तर-बिंदु से पूर्व-बिंदु होते हुए; क्योंकि सूर्य पूर्व-कपाल में है। चूँकि उत्तरबिंदु से पूर्व-बिंदु ९० अंश पर है; अतः ११३°। ५७'।८" में ९०° घटा देने से शेष २३°।५७'।८" भारतीय मतानुसार पूर्व-बिंदु से सूर्य की दक्षिण अग्रा हुई।

२. नतकालांश-साधन का उदाहरण—उपर्युक्त तारीख को भारतीय प्रमाणित समय (I.S.T.) से घंटादि ९।१८·६ बजे सूर्य का उन्नतांश तथा दिगंश जानना है। उस दिन काशी में सूर्योदय का स्टै.टा. घं. ६·४९·३ है जिसे उक्त घं. ९।१८·६ में घटा देने से शेष घं. २।२९·३ रहा। इसको ढाई से गुणा करने पर घटचादि १३।१३·२ को १५ घटी में घटाने से शेष १।४६·८ चरकाल हुला। दिन के पूर्वार्ध में इष्टकाल है, अतएव इस 'ज्योतित-रहस्य' द्वितीय खण्ड की पृष्ठ सं० ६ के नियमानुसार दिनगत घटो

यानी इष्टकाल घट्यादि ६।१३·२ ही यहाँ पूर्वोन्नत काल है। सूर्य-क्रांति दक्षिण होने से चरकाल घट्यादि १।४६·८ को पूर्व-उन्नतकाल में जोड़ दिया तो ८ घटी निरक्षदेशीय उन्नतकाल हुआ; इसको ६ से गुणा करने पर ४८° उन्नतकालांश हुआ जिसे ९०° में घटाने से शेष ४२° नतकालांश = होराकोण हुआ जो आगे नतांश एवं दिगंश-साधन में प्रयुक्त होगा। नतकालांश-साधन की यह पुरातन रीति है। नवीन होरात्मक रीति से इसका साधन बहुत सुगम है; यथा, सन् '८० की चिन्ताहरण जंत्री–पृष्ठ ६५ पर इस दिन का दिनार्ध घंटादि ५।१७।१७·३ छपा है: अत: स्वल्पान्तरेण इस दिनार्ध घं. ५।१७·३ में उपर्युक्त सूर्योदयात् इष्ट घंटादि २।२९·३ घटाया एवं शेष घं.२।४८ को अंशादि बनाने के लिए १५ से गुणा किया तो ४२° नतकालांश प्राप्त हो गया। इससे भी सरल रीति यह है: उस रोज मध्याह्न का स्टै. टा. घं. १२।६·६ है और हमें अभीष्ट समय घं. ९।१८·६ बजे का सूर्य-नतांश, दिगंश जानना है। यह अभीष्ट समय मध्याह्न से पहले का है; अत: इसे मध्याह्न के समय में घटाकर शेष घण्टा २।४८ को १५ से गुणा कर दिया तो ४२° पूर्व-नतकालांश ज्ञात हो गया। यदि अभीष्ट समय मध्याह्न और सूर्यास्त के अन्तर्गत होता तो अभीष्ट समय में मध्याह्न को घटाकर शेष घंटादि को १५ से गुणा करने पर सूर्य का पश्चिम-नतकालांश ज्ञात होता; अस्तु। अब अभीष्ट समय की सूर्य-क्रांति स्पष्ट करनी है। उस दिन भा. प्र. समय से पंक्तिकाल घं. ५।२९।१० बजे सूर्य-क्रांति द. २१°।३४', दैनिक गति १०' (—) है। अभीष्ट समय घं. ९।१८·६ में पंक्तिकाल घं. ५।२९·२ घटाया तो शेष घं. ३।४९·४ चालन हुआ। २४ घं. में क्रांति १०' कला घटती है तो चालन में त्रैराशिक से १.६ कला घटेगी। अत: इसे पंक्तिकालीन क्रांति २१।३४ में घटा दिया तो इष्टकालिक दक्षिण क्रांति अंशादि २१।३२·४(–) स्पष्ट हुई।

३. नतांश-साधन का उदाहरण—

ला स्पज्या क्रांति	२१।३२·४	९·५९६२९(—)
– ला कोज्या हो	४२।०	९·८७१०७(+)
= ला स्पज्या म	२७।५८·५	९·७२५२२(—)

आगे इस 'म' के द्वारा नतांश दिगंश दोनों ही सिद्ध होंगे। भूकेंद्रीय अक्षांश ϕ' + २५°।१०·१' में ऋणात्मक म – २७°। ५८'·५ घटाने से ϕ'—म = ५३°।८'·६(+)हुआ। तब,

ला कोज्या ϕ'–म	५३।८·६	९·७७८०२
+ ला ज्या δ	२१।३२·४	९·५६४८४
– ला ज्या म	२७।५८·५	९·६७१२५
= ला कोज्या नतांश	६२।०	९·६७१६१

९० में ६२° घटाने से शेष २८° सूर्य का इष्टकालिक उन्तांश हुआ।

४. दिगंश-साधन का उदाहरण—

ला कोज्या म	२७।५८·५	९·९४६०४(—)
+ ला स्पज्या हो	४२।०	९·९५४४४(+)
—लाज्या ϕ' – म	५३।८·६	९·९०३१६(+)
= ला स्पज्या दिगंश	४४।४९·४	·९·९९७३२(—)

दिगंश की स्पर्शज्या ऋणात्मिका (द्वितीय पदस्थ) होने से १८० में उसका धनु ४४°।४९' घटाया तो शेष अंशादि १३५°।११' दक्षिण-दिगंश उत्तर-बिंदु से पूर्वतः हुआ; क्योंकि सूर्य पूर्व-कपाल में है। १३५°।११' में ९०° घटाने से शेष ४५°।११' सूर्य का भारतीय मतेन पूर्व-बिंदु से दक्षिण दिगंश हुआ। इष्टशंकु (नतांश कोज्या) से होराकोण (नतकाल) और होराकोण से इष्टकाल जानने की सोदाहरण रीति हम पृष्ठ से१२७,१२८ पर बता चुके हैं और नतांश एवं दिगंश दोनों के द्वारा होराकोण (नतकाल) जानने का सूत्र ··(७) इसी लेख में पहले सिद्ध कर आये हैं; उसके द्वारा उपर्युक्त नतांश-दिगंश से इष्टकाल-साधन का गणितोदाहरण भी यहाँ दिया जा रहा है; क्योंकि समस्त गणित का मूल 'इष्टकाल' है और "छिन्न मूले नैव शाखा न पत्रम्।"

५. होरा-कोण साधन का उदाहरण—

ला ज्या नतांश	६२।०	९·९४५९३
+ लाज्या दिगंश	४४।४९·४	९·८४८१४
– ला कोज्या क्रांति	२१।३२·४	९·९६८५६
= लाज्या होराकोण	४२।०	९·८२५५१

इस भाँति उपर्युक्त होराकोण ४२°=नतकाल ७ घटी एवं तत्सम्बन्धित काशी का स्पष्टार्कोदयात् इष्टकाल घट्यादि ६।१३·२, एतत्कालीन सूर्य-नतांश एवं दिगंश के उपर्युक्त गणितागत मान सर्वथैव शुद्ध प्रमाणित हुए। यहाँ गणित ज्योतिष-प्रेमियों को यह जान लेना आवश्यक है कि गणितागत (वास्तव True) नतांश से वेधागत प्रत्यक्षदृष्ट (Apparent) नतांश का मान भिन्न होता है; क्योंकि वेध-क्रिया भू-पृष्ठ पर की जाने से प्रत्यक्ष नतांश में किरण-वक्रीभवन (Atmospheric Refraction) और लम्बन (Parallax in Zenith Distance) के मान समाविष्ट रहते हैं; दिगंश में नति (Parallax in Azimuth) का मान अत्यल्प होने के कारण वह उपेक्षणीय होता है। खगोलशास्त्र में लंबन और किरण-वक्री-भवन का विषय अत्यन्त उपयोगी एवं महत्त्वपूर्ण है। इनके विषय में भी दिगंश-साधन-जैसा ही लेख पाठकों के उपयोगार्थ प्रस्तुत करने की हमारी इच्छा है; किंतु जबतक वह लेख पाठकों को प्राप्त नहीं होता, तबतक वे नतांश में किरण-वक्री-

भवन-संस्कार के लिए भारतीय नॉटिकल एल्मनेक (नाविक पञ्चांग) में प्रकाशित सारणी का तथा नतांश में लम्बन-संस्कार के लिए निम्न सरल सूत्र का उपयोग करें। नतांश में लंबन-संस्कार सदैव धन तथा किरण-वक्री-भवन-संस्कार ऋण करना होता है।

लंबन-साधन—नतांशजीवा परलंबनघ्न्यभीष्टो विलंबो नतभागयुक्तः। कार्या पुरोक्ता किरणार्थ. हानी रवेर्विलिप्ता नव लंबनं स्यात्॥ अर्थ-ग्रह के गणितागत नतांश की ज्या को उसके परम(क्षैतिज) लंबन से गुणा करो तो गुणनफल अभीष्ट लम्बन होगा जिसे उक्त नतांश में जोड़ने तथा तत्सम्बन्धी किरण-वक्री-भवन-संस्कार को उसमें घटाने से (दृश्य) वेधतुल्य नतांश उपलब्ध होगा। सूर्य के परम(क्षैतिज) लंबन का मध्यम मान स्वल्पान्तर से ९″ विकला, सूक्ष्मत: ८″·७९ है।

६. लम्बन का गणितोदाहरण—सूर्य के उपर्युक्त गणितागत नतांश ६२° की ज्या ०·८८३ से उसके परम लंबन ८″·७९ को गुणा किया तो अभीष्ट लम्बन ७″·७ प्राप्त हुआ। भारतीय नॉटिकल के अनुसार ६२° नतांश का किरण-वक्रीभवन-संस्कार १′।४१·३″ है; इन दोनों का उक्त नतांश में संस्कार करने से (६२° + ७″·७–१′४१″ ३=) ६१°।५८′।२६″·४ सूर्य का दृश्य (वेधतुल्य) नतांश हुआ।

सूर्य-ग्रहण-गणित—में सूर्य चंद्र के इसी दृश्य नतांशों का उपयोग किया जाता है। उन दोनों के दृश्य नतांशों के अन्तर से उनका पूर्वापर अन्तर तथा उनके दिगंशान्तर से उनका दक्षिणोत्तर अन्तर जाना जाता है एवं ग्रहण के स्थूल स्पर्श-काल के कुछ पहले से थोड़े-थोड़े समय बाद उनके सवृद्धि बिंबैक्यार्ध, बिंबों के केन्द्रान्तर ज्ञात किए जाते हैं। जिस क्षण सवृद्धि बिंबैक्यार्ध के तुल्य केंद्रान्तर होता है, वही सूर्य ग्रहण का स्पर्श-काल होता है, तब ग्रासमान ० रहता है; पश्चात् केंद्रान्तर क्रमशः घटता और उसी अनुपात में ग्रासमान बढ़ता जाता है। खण्ड-ग्रास-ग्रहण में न्यूनतम केंद्रान्तर और पूर्ण(ख)ग्रास-ग्रहण में केंद्रान्तर शून्य होने के समय महत्तम ग्रासमान एवं ग्रहण-मध्य-काल होता है, तदुपरान्त केंद्रान्तर पुनः बढ़ने एवं ग्रासमान घटने लगता है तथा जिस क्षण पुनः सवृद्धि-बिंबैक्यार्ध तुल्य केंद्रान्तर होता है, वही ग्रहण का मोक्ष-काल होता है। इस गणित-प्रक्रिया में पाठकों को केवल चंद्र बिम्बार्ध-वृद्धि और केंद्रान्तर के गणित-सूत्र जानना शेष है; अतः उनके उल्लेख के साथ हम यह लेख समाप्त करते हैं; इति शम्॥

चंद्र-बिम्बार्ध-वृद्धि-साधन-सूत्र—कोज्या चंद्र का दृश्य नतांश × १६″।

सवृद्धि चंद्र-बिम्बार्ध + सूर्य-बिम्बार्ध = सवृद्धि बिम्बैक्यार्ध।

केंद्रान्तर-साधन—में सूर्य चंद्र के दृश्य नतांश लेना, इसके लिए नीचे दो सूत्र दिये जाते हैं।

१. सूत्र—(i) प = (द–द′) × ज्या लघु नतांश

$$\text{केंद्रान्तर} = \sqrt{\text{प}^2 + (\text{न}-\text{न}')^2}$$

२. सूत्र—(i) ज्या प = ज्या(द–द′) × ज्या लघु नतांश

$$\text{(ii) स्पज्या म} = \frac{\text{स्पज्या प}}{\text{ज्या}\ (\text{न}-\text{न}')}$$

$$\text{ज्या केंद्रान्तर} = \frac{\text{ज्या प}}{\text{ज्या म}}$$

यहाँ द–द′ = सूर्य-चंद्र का दिगंशान्तर, न–न′ = सूर्य-चंद्र का नतांशान्तर एवं सूर्य चंद्र के दृश्य नतांशों में जिसका नतांश अल्प हो, उसकी संज्ञा लघु-नतांश समझना।

टिप्पणी—केंद्रान्तर-साधन के दूसरे सूत्र के द्वितीय पद (ii) से प्राप्त स्पज्या म का चापांश सूर्य-बिंब पर ग्रहणस्पर्शादि का शीर्षपरत्वेन स्थानांश भी सूचित करता है, यह इस सूत्र की विशेषता है।

ग्रहण-निर्णायक नियम

सूर्य-ग्रहण—अमावस्या की समाप्ति के समय राहु या केतु से सूर्य चन्द्र का अन्तर १५°–२१′ से कम हो तो भूमण्डल में दृश्य सूर्य ग्रहण होता है और १८°–२७′ से अधिक अन्तर हो तो ग्रहण नहीं होता। १५°–२१′ से १८°–२७′ के बीच अन्तर हो तो कदाचित् ग्रहण लग जाता है जिसका निर्णय गणित से किया जा सकता है।

चन्द्र-ग्रहण—जिस पूर्णिमा की समाप्ति के समय चन्द्रमा, राहु या केतु जिसके सन्निकट हो, उससे चन्द्र का अन्तर ९°–३८′ से कम हो तो निश्चित रूप से चन्द्र ग्रहण होता है। यह अन्तर ९°–३८′ से १२°–१८′ तक हो तो ग्रहण कभी होता है और कभी नहीं जिसका निश्चय गणित से किया जा सकता है।

ग्रहण-चक्र—एक ग्रहण होने के बाद सौर वर्ष १८, मास ०, दिन ११, घं. ७, मि. ४३ के पाश्चात् वही ग्रहण फिर होता है। इस १८ वर्ष के भीतर ४२ सूर्य-ग्रहण और २८ चन्द्र-ग्रहण होते हैं। पृथ्वी के किसी एक स्थल में उक्त ४२ सूर्य-ग्रहणों में-से ७ तथा २८ चन्द्र ग्रहणों में-से १८, दोनों मिलाकर २५ ग्रहण दिखायी दे सकते हैं। एक वर्ष में कम-से-कम दो और अधिक-से-अधिक सात ग्रहण पड़ सकते हैं जिनमें बहुधा सूर्यग्रहण पाँच तथा चन्द्रग्रहण दो होते हैं; क्वचित सूर्यग्रहणों की संख्या चार तथा चन्द्रग्रहणों की संख्या तीन भी हो जाती है। इसी भाँति जब एक वर्ष में कम-से-कम दो ग्रहण पड़ते हैं, तब दोनों ही सूर्यग्रहण होते हैं—द्वौ ग्रहावुष्णगोः सप्तचंद्रार्कयी स्युः क्वचित् हायने पञ्चतेषां रवेः [सर्वानन्द करण]

चंद्र–ग्रहण–गणित

ज्योतिषे ग्रहणं सारं गारुडे विष-भक्षणम् । शैवे घटवती दीक्षा कौलके ग्रहनिग्रहौ ॥

श्रीसंवत् २०३५ शके १९०० फाल्फुन शुक्ल पूर्णिमा; मंगलवार, ता. १३।१४ मार्च सन् १९७९ ई. को उ. फा. नक्षत्र, कन्या राशि में होनेवाले खण्डग्रास चन्द्रग्रहण का गणित ।

ता. १३ मार्च '७९ को भा. प्र. समय से घं. ५ मि. २९ से. १० बजे—

सूर्य का सायन भोग अंशादि ३५१°।४८।५३'', दिनगति कलादि ५९'।५०'
चंद्र का सायन भोग अंशादि १६२।०३।११, दिनगति अंशादि १२°।१'।४५''

चंद्र-शर दक्षिण (—)अंशादि ०।३०·३ शर-दिनगति उत्तर-गामिनी अंशादि + १°।६'·८
चंद्र-क्रांति उत्तर (+)अंशादि ६।३४·४ क्रांति-दिनगति दक्षिण-गामिनी अंशादि — ३।३९·९

मध्यम राहु का सायन भोग अंशादि १६७।२७।५७·२; स्पष्ट अयनांश २३।३३।५५·२

विराहु चंद्र का सायन भोग अंशादि ३५४।३५।१४, ता. १४ मार्च सन् ७९, को भा. प्र. समय से घं. २ मि. २९·२ बजे स्पष्ट सायन चंद्र १७२°।३४'।४२''·८६; स्पष्ट सायन सूर्य ३५२°।४१'।१४''·२४; चंद्र-सूर्यान्तर १७९°।५३'।२८''·६२; तिथि पौर्णिमा-भोग्यांशादि ०।६।३१·३८(+)चालन; चंद्र होरा-गति ३०'।४''·३७, सूर्य होरा-गति २'।२९''·५८, चंद्र सूर्य होरा-गत्यन्तर कलादि २७।३४·७९ । (चालन ६'।३१'' × ६०) / (चं.सू.-गत्यंतर २७।३५) = १४·२ मि.चालन-फल + घंटादि २।२९·२ =घं. २ मि. ४३·४ पूर्णिमांत-काल (भा. प्र. स.) । **चंद्र-बिम्बमान-साधन**— १·१०८ × √चं.दि.-गति कला ७२१·७५ =२९'।४५''·६५ चंद्रबिम्ब: **चंद्र-परमलम्बन-साधन**—२·०२८ × √चं.दि.-गति कला ७२१'·७५=५४' २८''·३२ चंद्र-लंबन । **सूर्य-बिब-साधन**—सूर्य-दिनगति विकला ३५९० ÷ ४ = ८९७·५ + १०३५ स्थिरांक = १९३२''·५ ÷ ६०= ३२'।१२''·५ सूर्य-बिब । **भूभा-साधन**—चंद्र-लम्बन ५४'।२८''·३२ × २=१०८'।५६''·६४+१८''स्थिरांक=१०९'।१४''·६४ – ऋण ३२'।१२''·५ सूर्य बिम्ब=७७'।२''·१४ × ५१/५० स्थिरांक=७८'।३४''·५८ भूभा । **मानैक्यखण्ड-साधन**—भूभा ७°८'।३४''·५८+चंद्रबिम्ब २९'।४५''·६५=१०८।२०·२३ ÷ २=५४'।१०''·११ मानैक्यखंड । **परम ग्रासमान-साधन**— मानैक्यखंड ५४'।१०''·११ – ऋण २८'।४८'' चंद्र-शर (पूर्णिमान्तकालीन) = २५'।२२''·११ परमग्रास = १५२२''·११ ÷ १७८५''·६५ चंद्रबिम्ब = ०·८५२ परम ग्रास (रूपमित चंद्र-बिम्बपरत्वेन) । **पर्व-संस्कार-साधन**— पर्व-संस्कार= (पूर्णिमान्तकालीन चं. शर कला × १३०) / (च. सू. गत्यन्तर कला) पूर्णिमांतकालीन चंद्र-शर कला २८'·८ × १३०=३७४४·० ÷ ६६१·९चं.सू.-गत्यन्तर कला=५·६ मि. पर्व-संस्कार ; यह राहु-पर्व है और चंद्र-शर उत्तर + (धन) चिन्ह युक्त है; अतः इसके विपरीत–(ऋण) चिन्हयुक्त पर्व-संस्कार होगा; तदनुसार इसे पूर्णिमान्त-काल में घटाने से ग्रहण-मध्यकाल होगा । पूर्णिमान्त घं. २।४३·४–ऋण ०।५·६ मि. पर्व-संस्कार = घं. २ मि. ३७·८ ग्रहण-मध्यकाल (भा. प्र. स.) **स्थित्यर्ध साधन**—चंद्र-शर विकला १७२८'' × २ = ३४५६ + १५२२'' परम ग्रास = ४९७८ × १५२२ परम ग्रास = ७५७६५१६, इसका वर्गमूल २७५३, (२७५३ × १४४० मिनिट) / (३९७१५ च.सू.गत्यन्तर वि.) =९९·८ मिनिट स्थित्यर्ध । ग्रहण-मध्य-काल ∓ स्थित्यर्ध = घं. ० मि. ५८·० ग्रहण-स्पर्शकाल एवं घं. ४ मि. १७·६ ग्रहण-मोक्षकाल (भा. प्र. समय) । **स्थित्यर्ध-साधन की अन्य रीति**—मानैक्य खण्ड ५४'·२–ऋण २८'·८ चं. शर=२५'·४; मानैक्य खण्ड + धन चं. शर =८३'·० × २५·४ (शरोन मानैक्य खण्ड)=२१०८,इसका वर्गमूल ४५'·९ ; (४५'·९ × १४४० मि.) / (६३२ चं. सू.गत्यंतर क.) ९९·८ मि. स्थित्यर्ध ।

सूक्ष्म पर्व-संस्कार-साधन—बाणघ्न बाण गति बाण वधः पलानि नाडी जवांतर जवांतर घात हृदि । कन्याऽन्त्यगे क्रियतुलाभगते व्यगूने स्वर्ण विधौ तिथिविराम इति ग्रहार्धम् ॥ अर्थ—चंद्र-शर-दिनगति कला को शर-कला से गुणकर गुणनफल को ६० से गुणा करना तो यह भाज्यांक होगा । चंद्र सूर्य के दिन-गत्यन्तर-कला को उसके षष्ट्यंश से गुणा करना तो यह भाजकांक होगा । भाज्य में भाजक का भाग देने से लब्धि पलादि पर्व-संस्कार आता है जिसे पूर्णिमांतकाल में धन वा ऋण करने से ग्रहण-मध्यकाल उपलब्ध होता है । विराहु चंद्र कन्या मीन राशि में हो तो पर्व-संस्कार पूर्णिमांत काल में + धन करना, यदि विराहु चंद्र मेष तुला में हो तो – ऋण करना चाहिए । प्रस्तुत ग्रहण-प्रसग में इसका गणितोदाहरण—चंद्र-शर की दिन-गति कला ६६·८ × २८·८चंद्रशर कला=१९२३·८४ × ६०=११५४३०

भाज्यांक हुआ। चंद्र सूर्य की दिनगत्यंतर कला ६६१·९ × $\frac{६६१·९}{६०}$ =७३०१ भाजकांक हुआ। ११५४३० ÷ ७३०१= १५·८१ पल=६·३ मिनिट सूक्ष्म पर्व-संस्कार हुआ। पूर्णिमान्तकालीन विराहु चंद्र मेष में है, अतः यह पर्व-संस्कार ऋणात्मक हुआ; अस्तु। उपर्युक्त सरल पद्धति से चंद्र-ग्रहण के स्पर्शादि-काल में आधे से एक मिनिट तक की अशुद्धि हो सकती है; नॉटिकल के तुल्य सूक्ष्म स्पर्शादिकाल-साधनार्थ अन्तर्न्यास-पद्धति से सूक्ष्म पूर्णिमान्तकाल तथैव एतत्कालिक चंद्र-शर से सूक्ष्म स्थित्यर्ध लाना चाहिए; उस पूर्णिमान्तकाल में उपर्युक्त सूक्ष्म पर्व-संस्कार करने से ग्रहण-मध्यकाल एवं उसमें स्थित्यर्ध ऋण, धन करने से ग्रहण का स्पर्श, मोक्षकाल होगा। प्रस्तुत ग्रहण-प्रसंग में अन्तर्न्यास-पद्धति से सूक्ष्म पूर्णिमान्त-काल घं. २ मि. ४४·२ तथा सूक्ष्म स्थित्यर्ध-काल घं. १ मि. ३९·२ आता है; अतएव पूर्णिमान्त-काल घं. २ मि. ४४·२ − मि. ६·३ पर्व-संस्कार = घं. २ मि. ३८·९ ग्रहण-मध्यकाल हुआ, इसमें ∓ घं. १ मि. ३९·२ स्थित्यर्ध = घं. ० मि. ५८·७ ग्रहण-स्पर्शकाल तथा घं. ४ मि. १७·१ ग्रहण-मोक्षकाल मिनिट पर्य्यन्त शुद्ध ज्ञात हुआ।

उपर्युक्त गणित-विवृति से स्पष्ट है कि चंद्र-ग्रहण का मध्य-काल प्रायः तिथ्यन्त (पूर्णिमांत) में नहीं होता; प्रत्युत उससे पर्व-संस्कार के तुल्य पूर्वापर काल में होता है; एतद्विषयक भास्कराचार्य के निम्न वचन को काशी के पुरातनपंथी स्थूल गणित के पक्षपाती सिद्धांत-ज्योतिषज्ञों ने शास्त्रार्थ का विषय बना रखा है; उनके भ्रम-निवारणार्थ इस विषय का यहाँ स्पष्टीकरण कर देना उपयोगी एवं आवश्यक है।

'सिद्धान्त शिरोमणि (गोलाध्याय) के गोलस्वरूप प्रश्नाध्याय में श्रीमद्भास्कराचार्य का वचन है—'तिथ्यन्ते चेद्ग्रह उडुपतेः किं न भानोस्तदानीमिन्दोः प्रांच्या भवति तरणेः प्रग्रहः किं प्रतीच्याम् ॥८॥' अर्थात् 'जिस तरह तिथ्यंत पूर्णिमांत) में चंद्र-ग्रहण-मध्य होता है उसी भाँति सूर्य-ग्रहण-मध्य (अमान्त में) क्यों नहीं होता ?' यहाँ ज्ञातव्य है कि चंद्र-ग्रहण में भू-भा ग्रहणकर्त्ता(छादक) होता है। पूर्णिमांत में चंद्र भू-भा तुल्यमान होने से उनमें युति होना उचित है। इसी प्रकार सूर्य-ग्रहण में चंद्र छादक होता है। दर्शान्त में दोनों की तुल्यता होने से योग अवश्य होता है; इसीलिए कहा है कि—'तिथ्यन्ते चेद्ग्रह ···इत्यादि। यहाँ पर संशोधकजी (कै० श्रीबापूदेवजी शास्त्री) का कहना है—चंद्र-ग्रहण-मध्य सर्वदा तिथ्यन्त में नहीं होता; क्योंकि ग्रहण का अर्थ है—छाद्य-छादकों का योग; वह योग तभी होता है जब भू-भा और चंद्र-बिंब-केन्द्रों का अत्यल्प अंतर होता है। यह योग पूर्णिमांत में कदंबसूत्रगत भू-भा चंद्र का होता है एवं उनमें परमाल्प याम्योत्तरान्तर कदंब-सूत्र में ही प्रायः होता है जिससे यह योग प्रायिक है। पूर्णिमांत के समय ही भू-भा एवं चंद्र का परमाल्प याम्योत्तरान्तर कदाचित् होता है, इसी बात को दिखलाते हुए आचार्य ने स्वयं कहा है कि प्रायः तिथ्यन्तातिरिक्त ही उक्त परमाल्प अन्तर होता है। वस्तुतः कदंब-सूत्रगत भू-भा एवं चंद्र का योग होने पर भी उक्त परमाल्प अन्तर वहीं नहीं होता; किंतु अन्यत्र होता है अर्थात् पूर्णिमांत में चंद्र और भू-भा का कदंबसूत्रीय पूर्वापरान्तराभाव होने पर भी उसी समय में दोनों का परमाल्प याम्योत्तरान्तर नहीं होता; उसके पहले या बाद में होता है। (जितने समय पहले या बाद में होता है, उसी को पर्व-संस्कार कहते हैं) सूर्य-ग्रहण में सूर्य-चंद्र-युति-काल(अमान्त) में दोनों का पूर्वापरान्तराभाव होता है; किंतु उसी समय सूर्य-ग्रहण का मध्यकाल नहीं होता—इसमें प्रथमोक्त चंद्र-ग्रहणवाले कारण के अलावा सूर्य चंद्र का लंबन और नतिजन्य द्वितीय कारण भी होता है।

टिप्पणी १—पर्व-संस्कार का अन्य सूत्र सं० १—चं. शर कला × चं दिनगति कला=भाज्य, तिथि-दिनगति^{२} + शर गति^{२}=भाजक, भाज्य ÷ भाजक =दिनादि पर्व-संस्कार × १४४० = मिनिटादि पर्व-काल।

उदाहरण—२८.८ × ६६.८ = १९२३·८४ भाज्य, ६६१·९२^२ = ४३८१३८·०८; ६६·८२^२ = ४४६४·९१ + ४३८१३८·०८=४४२६०२·७७ भाजक, भजनफल=०·००४३४६६ × १४४०=मि. ६·२५ पर्व-संस्कार।

सूत्र २—चं. शर दिनगति कला ÷ तिथि-दिनगति कला = विक्षेपस्पज्या, तिथिदिनगति ÷ विक्षेपकोज्या = क्ष, चन्द्र शर × शरदिनगति ÷ क्ष^२ = दिनादि पर्व संस्कार × १०४० = मिनिट पर्वकाल।

उदाहरण च. श. दिनगति कला ६६·८ ÷ ६६१·९तिथिदिनगति कला=०·१००९२१५ विक्षेपस्पज्या, तिथि-दिनगतिकला ६६१.९ ÷ ०.९९४९४६ विक्षेप कोज्या = ६६५·२६२=क्ष, चंशरकला २८·८ × ६६·८ शरगतिकला= १९२५ ÷ ४४२५७४ क्ष^२ = ०·००४३४६९ × १४४० = ६·२५ मिनिट पर्वकाल

मांद्य चंद्रग्रहण--इसे छायाकल्प ग्रहण भी कहते हैं। सूर्य के प्रकाश में पृथ्वी की जो छाया अंतरिक्ष में पड़ती है, उसे घनछाया या भू-भा कहते हैं; उसमें चंद्रमा के प्रवेश करने से चंद्रग्रहण लगता है। उक्त घनछाया के चारो तरफ उसकी प्रतिच्छाया यानी विरल छाया फैली रहती है जिसे भूभाभा कहते हैं। चंद्र-ग्रहण के अवसर पर चंद्रमा पहले इसी विरल छाया में प्रवेश करता है तब चंद्र का कांतिमालिन्यारम्भ होता है और जब वह भूमा यानी घनछाया में आता है तब ग्रहण का स्पर्श होता है और जिस क्षण घन छाया से संपूर्ण चंद्रबिम्ब बाहर निकल जाता है तब ग्रहण का मोक्ष होता है तथैव जब बिम्ब बिरल छाया से बहिर्गत होता है तब चंद्रमा की निर्मलाकांति होती है। इस प्रकार चंद्रग्रहण से पहले और बाद में चंद्रबिम्ब का कांतिमालिन्य सर्वदा होता है; किन्तु कभी-कभी ऐसा भी होता है कि चंद्रमा विरल छाया में तो प्रवेश करता है; किन्तु मूल काली छाया में आये बिना ही विरल छाया से बहिर्गत हो जाता है अर्थात् कुछ समय के लिए चद्रमा का कान्तिमालिन्य होकर रह जाता हैं, ग्रहण नहीं लगता। इसे ही मांद्य चंद्र-ग्रहण कहते हैं। धार्मिक दृष्टि से मांद्य चंद्रग्रहण की मान्यता नहीं है।

जब सूर्य से पृथ्वी महत्तम दूरी पर होती है अर्थात् जब सूर्य का मन्दकर्ण महत्तम होता है तब पृथ्वी से सूर्य-बिम्ब का लघुतम मान दृश्य होता है। जब सूर्य की स्व-मंदोच्च से युति होती है तभी सूर्य का महत्तम मन्दकर्ण होता है। प्रतिवर्ष एक ही बार यह चमत्कृति होती है। और वह दिन है, तारीख ४ या ५ जुलाई का ! यदि इस तारीख के सन्निकट चन्द्रमा अपनी कक्षा में पृथ्वी से अति निकट होता हुआ राहु अथवा केतु के समीप हो और उसी दिन अमावस्या भी हो तो जो खग्रास सूर्य-ग्रहण दिखाई देगा, उसमें सूर्य-बिम्ब लघुतम एवं चन्द्र-बिम्ब महत्तम होने से ग्रहण की खग्रास-स्थिति भू-पृष्ठवासियों के लिए अधिकतम समय तक दृश्य रहेगी। इसके विपरीत जब सूर्य-बिम्ब महत्तम और चन्द्र-बिम्ब लघुतम हो तो कंकणाकृति सूर्य-ग्रहण होगा और कंकणाकृति अधिकतम समय तक दिखाई देगी। सूर्य-मन्दकर्ण जब लघुतम होता है तब सूर्य-बिम्ब महत्तम दिखाई देता है। ऐसी स्थिति साधारणतः ता. ३ जनवरी को प्राप्त होती है। फलतः इस ता. के आसन्न जिस अमावस्या को सूर्य-ग्रहण होगा, उसमें यदि चन्द्रबिंब महत्तम होगा तो थोड़े ससय तक खग्रास-स्थिति रहेगी और चन्द्र-बिम्ब लघुत्तम होगा तो कंकण-स्थिति लम्बे समय तक दिखाई देगी।

सूर्य-ग्रहण

गणित-मूलांक—ता. ३१।७।१९८१ ई० को सूर्य चन्द्र की भोगांश-युति (भू-केंद्रीय स्पष्ट दर्शान्त)काल भा. स्टैं. टा. से घ. ९ मि. २२ से. ० बजे—

एतत्कालिक निरयण सूर्य राश्यादि	३।१४°।१५'।२८"
एतत्कालिक निरयण चन्द्र राश्यादि	३।१४°।१५'।२८"
निरयण सूर्य की दिन गति-कलादि	५७'।२५"
निरयण चन्द्र की दिन-गति कलादि	८२५'।३७"
चन्द्र-शर उत्तर	०°।३३'।४१'
शर दिन-गति उत्तरगामिनी	१°।१४'।४३"
निरयण मध्यम राहु राश्यादि	३।७°।४४'।४५"
विराहु सूर्य राश्यादि	०।६°।३०'।४३"
स्पष्ट अयनांश अशादि	२३°।३४' ४५"
स्फुट परमाक्रांति	२३°।२६'।२५"
सूर्य-मध्यम बिम्ब	३२'।२"
सूर्य-स्फुट बिम्ब	३१'।३०"·८
चन्द्र-मध्यम बिम्ब	३१'।४"
चन्द्र-स्फुट बिम्ब	३१'।५८" ४
स्फुट सवृद्धि बिम्बैक्यार्ध	३१' ५ "

सूर्य चन्द्र की विषुवांश-युतिकाल भा. स्टैं. टा. से घं. ९ मि. ५ से. ३३.९ बजे।

एतत्कालिक वाराणसेय खमध्य-विषुवांश	८५°।३४'।१५"
एतत्कालिक चन्द्र-सूर्य-विषुवांश	१३०°।१५'।२३·७"
सूर्य-विषुवांश की होरागति	२'।२६·१"
चन्द्र-विषुवांश की होरागति	३६'।१५·४"
सूर्य-क्रांति उत्तर	१८°।१८'।३१"
सूर्य-क्रान्ति की होरागति दक्षिणगामिनी	०'।३६·९"
चन्द्र-क्रान्ति उत्तर	१८°।५२'।४८"
चन्द्र-क्रांति की होरागति दक्षिणगामिनी	५'।४९·९"
सूर्य का निरक्ष देशीय परम लम्बन	८"·६६
चन्द्र का निरक्ष देशीय परम लम्बन	५८'।३२"·८३
सूर्य-मध्यम बिम्बांगुल	१२
सूर्य-स्फुट बिम्बांगुल	११·८
काशी में स्फुट ग्रामांगुल	अं. २० व्यं. २९

सूर्य-ग्रहण-गणितोदाहरण

गत पृष्ठ के ग्रहण-मूलांक के द्वारा काशी में ग्रहण-मध्यकाल घं. ७।३६।३० बजें (I.S.T.) का इष्ट सांपातिक काल घंटादि ४।१२।५८'४७, सूर्य का विषुवकाल (R.A.) घंटादि ८।४०।४७'४५ है। सूर्य के विषुवकाल में इष्ट सांपातिक काल (R.A.M.C.) घटाने पर शेष घं. ४।२७।४८'९८ सूर्य का पूर्व-नलकाल हुआ। यहाँ उक्त नतकाल का साधन जंत्री-गणित की प्रामाणिकता के परीक्षण के लिए भारतीय सिद्धान्तोक्त रीत्या भी किया जा रहा है। उक्त ३१ जुलाई सन् '८१ को काशी का मध्याह्न-काल भा. प्र. समय से घंटादि १२।४।१९ जंत्री में छपा है, उसमें अभीष्ट काल (ग्रहण-मध्य का भा. प्र. समय) घंटादि ७।३६।३० घटाया तो शेष घं. ४।२७।४९ पूर्व-पाधित नतकाल के तुल्य उपलब्ध होने से जंत्री-गणित की सूक्ष्मता, शुद्धता और नतकाल-साधन की भारतीय एवं पाश्चात्य रीतियों की एकवाक्यता सिद्ध हुई। नतकाल को १५ से गुणा करने पर अंशादि ६६।५७।१५ सूर्य का नत-कालांश=होराकोण हुआ। ग्रहण-मध्यकालीन सूर्य-क्रांति उत्तर अंशादि १८।१९।२५ है। काशी का भू-केंद्रीय अक्षांश उ. २५°।१०'।१३" है। इन उपकरणों से सूर्य के नतांश और दिगंश-साधन का उदाहरण—

सूत्र—कोज्या नतांश = ज्या अक्षां × ज्या क्रां + कोज्या अक्षां. × कोज्या क्रां × कोज्या होराकोण (देखें पृष्ठ १२२)

लाज्या अक्षां २५।१०।३	९'६२८६६०६(+)
+ लाज्या क्रां १८।१९।२५	९'४९७४६००(+)
= ला प्रथम फल	९'१२६१२०६(+)
ला कोज्या अक्षां २५।१०।३	९'९५६६८१४(+)
+ ला कोज्या क्रां १८।१९।२५	९'९७७४०१७(+)
+ ला कोज्या हो.को.६६।५७।१५	९'५९२६९५६(+)
= ला द्वितीय फल	९'५२६७७८७(+)
प्रथम फल की स्वा. संख्या	०'१३३६९७२(+)
+ द्वितीय फल की स्वा संख्या	०'३३६३४१५(+)
= नतांश कोज्या की स्वा. संख्या	०'४७००३८७(+)

जिसका चाप अंशादि ६१।५७।४१'५ सूर्य का नतांश हुआ और इसे ९० अंश में घटाने से शेष अंशादि २८।२।१२.५ उन्नतांश हुआ उन्नतांश की सहायता से दिगंश-साधनका यह सूत्र है—

$$\text{कोज्या दिगंश} = \frac{\text{ज्या क्रां} - \text{ज्या अक्षां} \times \text{ज्या उन्न}}{\text{क ज्या अक्षां} \times \text{कोज्या उन्न}}$$

ला ज्या अक्षां २५।१०।३	९'६२८६६०६
ला ज्या उन्न २८।२।१३	९' ७२१३१६
= ला प्रथम फल	९'३००७९२२
ला कोज्या अक्षांश २५।१०।३	९.९५६६८१४
+ ला कोज्या उन्न २८।२।१३	९'९४५७८७०
= ला द्वितीय फल	९'९०२४६८४
क्रांति १८।२९।२५की ज्या की स्वा.सं.	०'३१४३८४००(+)
—ला प्रथमफल की स्वा. सं.	०'१९९८९१०९(+)
=शेष ,,	०'११४४९२९१(+)
इसका लाघवांक	९'०५८७७९(+)
—ला द्वितीय फल	९'९०२४६८(+)
=ला कोज्या दिगंश	९'१५६३११(+)

जिसका चाप ८१°।४५'।३५" सूर्य का दिगंश उत्तर-बिंदु से पूर्व की तरफ हुआ।

उक्त ग्रहण-मध्य के समय चंद्र की उत्तर-क्रांति अंशादि १९।१।१५ एवं चद्रका विषुव-काल घं. ८।३७।३१'१३ है; इसमें इष्ट सांपातिक काल घं. ४।१२।५८'४७ घटाने से शेष घ. ४।२४।३२'६६ पूर्व-नतकाल हुआ। इसे १५ से गुणा करने पर चंद्र का नत कालांश=होरा कोण (हो) अंशादि ६६।८।१० हुआ। इन उपकरणों से चंद्रका दिगंश-साधन—सूत्र:—कोस्प दिगंश =

$$\frac{\text{कोज्या अक्षां} \times \text{स्प क्रां.} - \text{ज्या क्रां.} \times \text{कोज्या हो,}}{\text{ज्या हो}}$$

(देखिए पृष्ठ सं. १३६)

ला कोज्या अक्षां २५।१०।३	९'९५६६८१४(+)
+ला स्प क्रांति १९।१।१५	९'५३७४८४६(+)
=ला प्रथम फल	९'४९४१६६०(+)
ला ज्या अक्षां २५।१०।३	९'६२८६६०६(+)
+ला कोज्या हो ६६।८।१०	९'६०६९८८६(+)
=ला द्वितीय फल	९'२३५६४९२(+)
ला प्रथम फल की स्वा. संख्या	०'३१२००८२(+)
—ला द्वितीय फल की स्वा.संख्या	०'१७२०४८८(+)
=शेष स्वा. संख्या	०'१३९९५९४(+) इसका
लाघवांक	९'१४६००४(+)
—ला ज्या हो	९'९६११८८(+)
=ला कोस्प दिगंश	९'१८४८१६(+) इसका

चाप ८१°।१७'।५५" चंद्र का दिगंश उत्तर-ध्रुव-बिन्दु से पूर्व की तरफ हुआ।

दिगंश की सहायता से नतांश-साधन का यह सूत्र है—

$$\text{ज्या नतांश} = \frac{\text{ज्या हो} \times \text{कोज्या क्रां}}{\text{ज्या दिगं}}$$

(देखिए पृष्ठ सं. १३५)

लाज्या हो ६६।८।१०	९'९६११८८०(+)
+ ला कोज्या क्रा १९।१।१५	९'९७५६१५७(+)
—लाज्या दिगं ८१।१७।५५	९'९९४९७२४(+)
=ला ज्या नतां ६१।०।१०	९'९४१८३१३(+)

नॉटिकल में तारीख ३१ जुलाई को सूर्य का क्षैतिज लम्बन ८''·६६ तथा चद्र का क्षैतिज लम्बन ५८'·५४७६है। सूर्य चंद्र-नतांश से उनके इष्टकालीन लंबन-साधन का सूत्र पृष्ठ १३८ पर दिया गया हैं; तदनुसार—

ला ज्या सूर्य नतांश	६१।५७।४८	९·९४५७८७०
+ला सूर्य क्षै. लम्बन	०।०।८·६६	०·९३७५१७९
= ला सूर्य का इष्ट लम्बन	०।०।७·६४	०·८८३३०४९

ला ज्या चन्द्र नतां	६१।०।१०	९·९४१८३०९
+ला चन्द्र का क्षै. लं.	०।५८·५४७६	१·७६७५०९१
= ला चन्द्र का इष्ट लं	०।५१·२०८३	१·७०९३४००

नॉटिकल की किरण-वक्रीभवन-सारणी के अनुसार सूर्य चन्द्र-नतांश के लिए किरणवक्रीभवन-संस्कार क्रमशः कलादि १'।४१''·१ तथा १'।३७''·२ हैं। सूर्य चन्द्र के उपर्युक्त नतांश में उनके लम्बन-संस्कार को जोड़ने और किरण-वक्रीभवन-संस्कार को घटाने से उनके दृश्य नतांश क्रमशः ६१° ५६'।१४''·५ एवं ६१°।४९'।४५''·३ ज्ञात हुए। यहाँ सूर्य के दृश्य नतांश से चन्द्र का दृश्य नतांश कम हैं; अतः वही लघु नतांश हुआ। सूर्य चद्र के दृश्य नतांश का अन्तर (न—न') ६'।२९''·२ एवं उनके दिगंश का अन्तर (द—द') २७'।४०''·३ है। इनके द्वारा चंद्र-बिम्बार्ध-वृद्धि और ग्रहण-मध्यकालीन शीर्षप्रोत स्थानांश तथा सूर्य-बिम्ब एवं चन्द्र-बिम्ब के केन्द्रान्तर-साधन का उदाहरण इसी पुस्तक की पृष्ठ—सं. ७१ पर छपे सूत्र-सख्या २ के अनुसार यहाँ दिया जा रहा है—

ला कोज्या चन्द्र नतां	६१।४०।१०	९·६८५५३३२
+ला स्थिरांक	०।०।१६	१·२०४१२००
=ला चन्द्रबिम्बार्धवृद्धि	०।०।७·७५	०·८८९६५३२

नॉटिकल के चन्द्र-बिम्बार्ध १५'।५७''·२ में बिम्बार्धवृद्धि ०।०।७·''७५ तथा सूर्य-बिम्बार्ध १५'।४५''·४ जोड़ने से कलादि ३१'।५०''·३५ सवृद्धि विम्बैक्यार्ध हुआ।

लाज्या (द—द')	०।२७।४०	७·९०५६७८३
+लाज्या लघु नतां	६१।४९।४५	९·९४५२४३९
= ला ज्या प	०।२४।३	७·८५०९२२२

ला स्प प	०।२४।३	७·८५०८२६५
— ला ज्या (न—न')	०।६।२९	७·२७५५२४२
= ला स्प म(स्थानां)	७५।६।३७	०·५७५३०२३

ला ज्या प	०।२४।३	७·८५०८२२२
— ला ज्या म	७५।६।३७	९·९८५१६६९
= लाज्या केन्द्रा	०।२५।१३	७·८६५६५५३

सवृद्धि बिम्बैक्यार्ध ३१'।५०'' में केन्द्रान्तर २५'।१३'' घटाने से शेष कलादि ६'।३७'' ग्रासमान हुआ जिसमें सूर्य-बिंबमान ३१'।३०''·८ का भाग दिया तो रूपमित सूर्य-बिम्ब का ग्रासमान ०·२१० हुआ। नॉटिकल में वाराणसी का ग्रासमान ०.२१२ उल्लिखित है; अन्तर ०·००२ हमारी इस अपूर्व पद्धति की सरलता को देखते हुए उपेक्ष्य है।

काल—परिमाण और परिणमन

काल-ज्ञान ज्योतिषशास्त्र द्वारा ही प्राप्य है ओर जितने इस शास्त्र के सम्यक् अध्ययन से यथार्थ काल-ज्ञान-संपादन नहीं किया, वह वेद-वेदांग को क्या जानेगा? इसी कारण भारतीय सिद्धान्त-ज्योतिष (Hindu-Astronomy) के प्राचीनतम ग्रन्थ 'वेदाङ्ग ज्योतिष' में लगध मुनि का वचन है—'वेदाहि यज्ञार्थमभिप्रवृत्ता कालानुपूर्व्या विहिताश्च यज्ञाः। तस्मादिदं कालविधानशास्त्रं यो ज्योतिषं वेद स वेद यज्ञान् ॥३॥ प्रणम्य शिरसा कालमभिवाद्य सरस्वतीम्। कालज्ञान प्रवक्ष्यामि लगधस्य महात्मनः ॥ऋ ३॥ इस समय अधिकांश ज्योतिषियों में काल-ज्ञान विषयक अपरिपक्वता अत्यन्त शोचनीय है। कुण्डली-विज्ञान, ज्योतिष-विज्ञान आदि विषयों पर ग्रन्थ-प्रणयन, सिद्धान्त-ज्योतिष का अध्यापन तथा लाखों जनता के लिए पञ्चाङ्ग-सम्पादन करनेवालों में ही एतद्विषयक यथार्थ ज्ञान की न्यूनता है तो उनके पाठकों, विद्यार्थियों एवं सामान्य ज्योतिषज्ञों से निर्भ्रांत ज्ञान की आशा ही कैसे की जा सकती है? संस्कृत-हिंदी-जगत की इस दुःस्थिति के निवारणार्थ इस ग्रन्थ में 'काल-परिमाण और परिणमन' विषयक प्राथमिक ज्ञान यथासम्भव सहज-सुबोधरूप में प्रस्तुत किया जा रहा है।

सूक्ष्मकाल-परिमाण—'सूच्याभिन्ने पद्मपत्रे त्रुटिरित्यभिधीयते। तत्षष्ट्या रेणुरित्युक्तो रेणु षष्ठ्या लवः स्मृतः तत्षष्ठ्या लीक्षकं प्रोक्तं तत्षष्ठ्या प्राण उच्यते' इत्युक्ते—

१ त्रुटि = तीक्ष्ण सूई से कमलपत्र-भेदन का समय $\frac{१}{३२४००००}$ सेकंड, ६० त्रुटि=१ रेणु= $\frac{१}{५४०००}$ सेकेंड। ६० रेणु = १ लव = $\frac{१}{९००}$ सेकेंड। ६० लव = १ लीक्षक = $\frac{१}{१५}$ सेकेंड।

व्यावहारिक काल-परिमाण—६ लीक्षक=१दीर्घाक्षर उच्चारणकाल= $\frac{१}{१०}$ प्राण=१ विपल = २४ प्र. सेकेंड ६० लीक्षक=१० दीर्घाक्षर—उच्चारणकाल=१ प्राण(असु) = १० विपल = ४ सेकेंड। १ पल (विघटी) = ६ प्राण = ६० विपल = २४ सेकेंड। २½ विपल = १ सेकेंड; २½ पल = १ मिनट। १ विपल = १ दीर्घाक्षर-उच्चारण-काल = $\frac{१}{१०}$ प्राण = $\frac{२}{५}$ सेकेंड। १ नाड़ी(घटी, दण्ड) = ६० पल = १ दण्ड=२४ मिनट। २½ घटी(दण्ड) = १ होरा (घंटा)। ६० घटी = २४ घंटा = १ सावन दिवस (अहोरात्र) ७ दिवस (अहोरात्र) = १ सप्ताह। १५ दिवस = १ पक्ष। २ पक्ष (३० सावन दिवस) = १ सावन-मास, १२ सावन मास = १ सावन वर्ष युग महायुग, कल्प, ब्राह्मवर्षादि का विवरण अगले अध्याय में दिया गया है।

सावन-काल—सूर्य के उदय होने (सूर्य-बिम्बार्ध के पूर्व-क्षितिज में आने) के समय से पुनः सूर्योदय तक जितना समय व्यतीत होता है उतने समय का एक सावन दिवस (अहोरात्र, Civil day) होता है। उपर्युक्त सभी काल-खण्ड या काल के घटक इसी सावनमान के अनुसार हैं।

नाक्षत्र-काल—क्रांतिवृत्त के निकटस्थ किसी नक्षत्र (तारे) के उदय (पूर्व-क्षितिज में आने) के समय से पुनः उसके पूर्व में उदय होने तक जितना समय व्यतीत होता है उतने समय का १ नाक्षत्र-दिवस (अहोरात्र) होता है। उसके भी उपर्युक्त घटी, पलादि यावत् काल-खंड होते हैं; किन्तु वे सभी नाक्षत्रकालीन होते हैं; जैसे १ नाक्षत्र-दिवस का ६०वाँ भाग=१ नाक्षत्र घटी एवं १ नाक्षत्र घटी का ६०वाँ भाग=१ नाक्षत्र पल इत्यादि।

सांपातिक-काल—इसका विशद विवरण मेरी इसी पुस्तक के पृष्ठ सं. ९५-९६ पढ़िये। मध्यम सांपातिक-काल के घ. २४·०६६७०९८ = २४ घं. ३ मि. ५६·५५५से. = १ मध्यम सावन दिवस (अहोरात्र), मध्यम सावन-काल के २३ घं ५६ मि. ४·०९१ से. = १ सांपातिक-दिवस (अहोरात्र)। मध्यम सावन-काल के २३ घं. ५६ मि ४·१०० से. = १ नाक्षत्रदिवस (अहोरात्र) 'भचक्र' भ्रमणं नित्यं नाक्षत्रं दिन मुच्यते।' सूर्य-सिद्धान्त)। उक्त सांपातिक और नाक्षत्र दिवसों का अन्तर सावन काल में ०·००९ सेकेंड है; अर्थात् दैनिक अयनचलन = ०''·१३७५९७ × ४ = ·५५०३८८ प्र. से ÷ ६० = ०·००९ सेकेंड इस अत्यल्प अन्तर के कारण ही कतिपय ज्योतिषीगण प्राचीन सिद्धान्तोक्त 'नाक्षत्र-काल' की संज्ञा का प्रयोग आधुनिक 'सांपातिक-काल' के लिये करते हैं; किन्तु वस्तुतः दोनों भिन्न कालमान हैं एवं उक्त दैनिक अयन-चलन अर्थात् संपात की पश्चिमाभिमुख गति के कारण १ नाक्षत्र दिवस की अपेक्षा १ सांपातिक दिवस ०·००९ सावन सेकेंड अल्प होता है।

उपर्युक्त मध्यम सावन-दिवस के सांपातिक काल का अत्यधिक सूक्ष्म मान घ. २४·०६५७०९८२३२ है। इसका मतलब यह है कि एक मध्यम सावन दिवस(अहोरात्र) में मध्यम सावन-काल के तो २४ घंटे पूरे हो जाते हैं; किन्तु उतने समय में सांपातिक-काल का घं. २४·०६५७०९८२३२ व्यतीत हो जाता है। अतः अनुपात किया कि सावन-काल के २४ घंटेमें सांपातिक-काल का घं. २४·०६५७०९८२३२ लब्ध होता है तो १ सावन घंटे में क्या? तब उत्तर

$$\left(\frac{१ \times २४·०६५७०९८२३२}{२४} = \right)$$

१·००२७३७९०९३ सांपातिक घंटा प्राप्त हुआ अर्थात् १ सांपातिक-घंटे में उसका ·००२७३७९०९३वाँ भाग और जोड़ने से हम १ सावन-घंटे को सांपातिक घंटे में परिणत कर सकते हैं। इस तरह एक सावन-दिवसीय होरादि से एक सांपातिक-दिवसीय होरादि का अनुपात (ratio) १.००२७३७९०९३ निश्चित होता है; किन्तु इस अनुपात का इतना अधिक सूक्ष्म मान व्यावहारिक दृष्टि से अनुपयोगी है; इस कारण हमने 'ज्योतिष-रहस्य' प्रथम खंड के पृष्ठ १९ पर यह मान दशमलव के पाँच अंक तक अर्थात् १·००२७४ दिया है; किन्तु सावनकाल को सांपातिक-काल में परिवर्तित करने की सारणी बनाने के लिए इसका मान दशमलव के सात अंक तक अर्थात् १·००२७३७९ को उपयोग में लेना चाहिए। उदाहरणार्थ, सावन काल के १ घंटे को सांपातिक-काल में परिवर्तित करना है तो १ घंटे में कितना समय और जोड़ें कि वह सांपातिककाल बन जाय, यह जानने के लिए ·००२७३७९ को ६० से गुणा किया तो ०·१६४२७४ मि. मिला; फिर ·१६४२७४ को ६० से गुणा किया तो ९·८५६४४ सेकेंड मिला; पश्चात् ·८५६४४ को ६० सेकेंड से गुणा किया तो ५१.३८६४ प्र. सेकेंड प्राप्त हुआ। यही मिनिटादि ०।९।५१ + संस्कार हुआ जिसे सावन-काल के १ घंटे में युक्त करने से घंटादि १।०।९।५१ सांपातिक-काल प्राप्त होता है। देखिए, 'ज्योतिष-रहस्य' प्रथम खंड की पृष्ठ संख्या १९ का कोष्ठक 'अ' एवं उसका दृष्टान्त। यहाँ इतना और जान लेना उपयोगी होगा कि घंटे का जो सम्बन्ध मि., से., प्र.से. से है, वही घटी का पल, विपल, प्रतिविपल से है। अतः इष्ट(सावन)काल १ घंटे के बजाय १ घटी हो तो उक्त ० मिनट के बजाय पल, ९ सेकेंड के बजाय विपल तथा ५१ प्रति-सेकेंड के बजाय प्रति विपल होगा। इस भाँति १ सावन-घटी का सांपातिक-काल घट्यादि १।०।९।५१ होगा। अतएव स्पष्ट है कि हम 'ज्योतिष-रहस्य' के उक्त कोष्ठक 'अ' का उपयोग घं., मि., से., प्र.से. के अलावा घटी, पल, विपल, प्रतिविपल के लिए भी कर सकते हैं।

अब यदि हमें सांपातिक घंटादि को मध्यम सावन-काल के घंटादि में परिणत करना है तो वह हम उपर्युक्त अनुपात की व्यस्त क्रिया से सहज ही कर सकते हैं अर्थात् जब हमें सांपातिक घं. २४.०६५७१ में मध्यम सावन-काल के २४ घंटे मिलते हैं तो सांपातिक-काल के

१ घंटे में $\left(\frac{२४}{२४·०६५७१} = \right)$ घं.०·९९७२६९५६=मि.५९ से. ५० प्र.से. १० मध्यम सावन-काल मिलेंगे; तदनुसार ही कोष्ठक 'ब' तैयार किया गया है जिसके द्वारा सांपातिक घंटादि या घट्यादि को मध्यम सावन घंटादि या घट्यादि में सरलता से परिणत किया जा सकता है। कोष्टक 'अ' में मध्यम सावन-काल को सांपातिक-काल में परिणत करने के लिये जिस तरह सावन-काल के होरादि में धन (जोड़ने का) सेकेंडादि संस्कार दिया गया है, उसी तरह से सांपातिक-काल को सावन-काल में परिणत करने के लिए सांपातिक काल में ऋण-संस्कार की सारणी बनानी हो, तब सांपातिक-काल के प्रति-होरादि के लिए १—०·९९७२६९५६ = ०·००२७३०४४ × ३६००=९·८२९५८३ से. के द्वारा हम यथोक्त प्रकार की सारणी बना सकते हैं। भारतीय नाविक पंचांग में ऐसी ही सारणी छापी गई है।

'ज्योतिष-रहस्य' प्रथम खण्ड के पृष्ठ १९ पर सन् १९११ ई० से आगामी सन् २००५ ई० तक के किसी दिन का काशी में निशीथकालीन सांपातिक-काल जानने की सारणी दी गयी है; उसमें हमें उक्त ९५ वर्षों के दर्म्यान किसी भी अभीष्ट तारीख का सांपातिक-काल ज्ञात होगा; किंतु वह काशी की मध्यम मध्य रात्रि का यानी काशी में स्थानिक मध्यमकाल (L.M.T.) से ० बजे (रात के १२ बजे) का होगा। 'ज्योतिष-रहस्य' के पाठक जानते हैं कि किसी स्थान के निशीथकाल से अन्य स्थान के निशीथकाल में अन्तर उनके देशान्तर के कारण पड़ता है। 'ज्योतिष-रहस्य' प्रथम भाग पृष्ठ ४२) यदि किन्हीं स्थानों का देशान्तर ० हो अर्थात् वे एक ही रेखांश पर स्थित हों तो उनमें दक्षिणोत्तर अन्तर (दूरी) रहने पर भी, उनके निशीथकाल में कोई अन्तर न होगा अर्थात् उन सबका निशीथकाल एक ही समय पर होगा। उदाहरणार्थ काशी ८३° पूर्व-रेखांश पर स्थित है; अतएव उक्त रेखांश के समस्त स्थानों में निशीथ उसी समय होगा जब काशी में स्थानिक मध्यम काल से० (रात के १२) बजेंगे। काशी से पूर्व दिशा के कलकत्ता में या पश्चिम दिशा के बम्बई में भी निशीथकाल स्थानिक समय से ० बजे ही होगा; किन्तु दोनों जगह के स्थानीय मध्यम कालानुसार उसी समय ० नहीं बजेगा जिस समय काशी में। वस्तुतः काशी से पूर्व में होने के कारण कलकत्ते में निशीथ काशी के निशीथ से पहले होता है। एवं काशी से बंबई पश्चिम में होने से वहाँ पर निशीथ काशी के निशीथ के उपरान्त होता है। दोनों जगह काशी के निशीथ से कितने समय पहले और बाद में निशीथ होता है, यह उनके और काशी के देशान्तर से जाना जाता है। किन्हीं दो स्थानों के भौगोलिक रेखांशों (Longitudes) का अन्तर उनका अंशात्मक देशान्तर होता है। १ अंश = ४ मि., १५ अंश=१ घं. की दर से (देखें 'ज्योतिष रहस्य' द्वितीय खंड पृष्ठ१०२) हम अंशात्मक देशान्तर को कालात्मक देशान्तर बना सकते हैं। दो स्थानोंका उक्त कालात्मक अंतर (देशांतर) मध्यम सावन काल होता है, क्योंकि यह उनके स्थानिक मध्यम समयों (L.M.T.) का अंतर होता है। देशांतर के सावन-काल को हम सांपातिक-काल में परिणत करें तो वह सांपातिक कालीन देशांतर होगा। इस तरह सावन एवं सांपातिक देशान्तर-कालों का अंतरही उन स्थानों के निशीथकालीन सांपातिक-कालका अंतर होगा।

सावन काल और सांपातिक काल का अंतर कोष्ठक 'अ' में दिया गया है; अतएव किन्हीं दो स्थानों के सावनकालीन देशांतर के द्वारा हम इस कोष्ठक 'अ' से उनके निशीथकालीन सांपातिककाल का अन्तर जान सकते हैं अथवा सीधे अंशात्मक देशान्तर के द्वारा उक्त अंतर जानना चाहें तो वह भी सुगम है। सावन-काल को सांपातिक-काल में परिवर्तन के पूर्वोक्त गणित से हम ज्ञात कर चुके हैं कि सावन-काल के १ घंटे और सांपातिक-काल के १ घंटे में ९·८५६४४ सांपातिक से. का अन्तर होता है और रेखांश १५°=१ घंटा होता है; अतः १५ रेखांश में ९·८५६४४ से. का अन्तर होता है तो १ रेखांश में ९·८५६४३ ÷ १५ = ०·६५७१ से. का अन्तर होगा। अतः भौगोलिक प्रति १ रेखांश के लिए सांपातिक-काल की गति ०·६५७१ से. हुई। अब पूर्व या पश्चिम कितने रेखांश के लिए सांपातिक-काल की गति १ से. होगी, यह जानने के लिए १ ÷ ०·६५७१ = १·५२१८३८३ = रेखांश१°।३१′।१८″·६ लब्ध हुआ। इन्हीं मूलांकों के आधार पर कोष्टक 'स' का निर्माण किया गया है जिसमें पूर्व-रेखाश २६°।४२′ से ९९°।४४′ तक के किसी भी स्थान का निशीथकालीन सांपातिक-काल बनाने के लिए +,− संस्कार सेकेंड के पूर्णांक में दिया गया है। सारणी में जो रेखांश अभीष्ट स्थान के रेखांश के निकटतर हो, उसके सामने सेकेंड का संस्कार +;− चिह्न के साथ ज्ञात कीजिए। अब जिस दिन के काशी के निशीथकालीन सांपातिक-काल में यह संस्कार उसके चिह्न के अनुसार जोड़ या घटा देंगे, वही उस दिन का अभीष्ट देश में निशीथकालीन सांपातिक-काल होगा। प्रस्तुत उदाहरण में बंबई का रेखांश ७२°।५०′ तथा कलकत्ता का रेखांश ८८°।२१′ है। काशी-रेखांश ८३° से इनका अन्तर क्रमशः १०°।१०′ (१०°·१७) तथा ५°।२१′ (५·°३५) है। रेखांश की सांपातिक-कालीन गति ०·६५७१ से इनको गुणा किया तो १०·१७ × ०·६५७१= ६·६८ से. तथा ५·३५ × ०·६५७१ = ३·५१ से. संस्कार क्रमशः बंबई और कलकत्ता के लिए मिला। काशी से पहले कलकत्ते में निशीथ होने के कारण काशी के निशीथ-कालीन सांपातिक काल में उक्त संस्कार ३·५१ से. (पूणाक में ४ से.) घटाना होगा तथा काशी में निशीथ होने के बाद बंबई में निशीथ होने के कारण संस्कार ६·६८ से. (पूर्णांक में ७ से.) काशी के निशीथ-कालीन सांपातिक-काल में जोड़ना होगा, तब क्रमशः कलकत्ता, बम्बई के निशीथकालीन सांपातिक-काल सिद्ध होंगे। कोष्ठक 'स' में बम्बई के रेखांश ७२°।५०′ के निकटतर ७२°।२१′ के लिए संस्कार+७से. एवं कलकत्ता के रेखांश ८८°।२१′ के निकटतर ८९°।५′ के लिए संस्कार − ४ से. दिया गया है जो सेकेंड-पर्यन्त गणित के लिए पर्याप्त है।

अभीष्ट स्थान और दिनांक का निशीथकालीन सांपातिक-काल बन जाने के बाद प्रायः उस दिनांक के किसी इष्ट समय का सांपातिक-काल बनाना होता है जिसे 'इष्ट सांपातिक काल' (R.A.M.C.) कहते हैं। इष्ट समय स्टै. टा. में ज्ञात होने पर उसमें स्टै-अन्तर का संस्कार कर उसे स्थानीय मध्यमकाल (L.M.T.) बनाते और उसको सांपातिक काल के परिणत करते हैं; फिर उसका योग अभीष्ट स्थान के निशीथकालीन सांपातिक-काल में करते हैं; तब 'इष्ट सांपातिक-काल' बन जाता है। यहाँ भलीभाँति जान लेना चाहिए कि स्थानीय मध्यम-काल को सांपातिक-काल में परिणत करने से वह मध्यम सांपातिक-काल होता है, स्पष्ट सांपातिक-काल नहीं। जिस तरह सावन-काल दो प्रकार का, मध्यम सावन

काल और स्पष्ट सावन-काल होता है, उसी तरह सांपातिक काल भी दो प्रकार का, मध्यम सांपातिक-काल और स्पष्ट सांपातिक-काल, होता है। अतएव मध्यम सांपातिक-काल में स्वजातीय मध्यम सावन-काल का ही योग हो सकता है विजातीय स्पष्ट सांपातिक काल का नहीं। यह सर्वथा स्मरण रखना चाहिए कि इष्ट-काल किसी प्रकार का दिया गया हो, पहले उसको स्थानीय मध्यम-काल (L.M,T.) बनाना, फिर सांपातिक-काल में परिणत करना होगा, तभी उसका योग स्थानीय मध्यम निशीथ के सांपातिक काल में सजातीयत्व के कारण किया जा सकता है, अन्यथा नहीं। इसी कारण 'ज्योतिष-रहस्य' में सर्वत्र मध्यम सांपातिक-काल का ही उपयोग किया गया है तथा इस जंत्री में भी काशी की मध्यरात्रि (निशीथ) का दैनिक मध्यम सांपातिक-काल दिया जाता है। भारतीय नाविक पञ्चाङ्ग (Nautical Almanac) में दैनिक मध्यम सांपातिक काल के साथ ही उसे स्पष्ट सांपातिक-काल बनाने के लिए दैनिक-संस्कार भी दिया जाता है; किन्तु लग्न दशमादि फलोपयुक्त गणित में स्पष्ट सांपातिक-काल अप्रयोज्य है। भारतीय नाविक पञ्चाङ्ग खरीदनेवाले हमारे कितने ही पाठक यह सोचकर कि कुण्डली आदि गणित में स्पष्ट सांपातिक-काल के उपयोग से अधिक सूक्ष्म परिणाम प्राप्त होंगे; एतदर्थ हमारी अनुमति चाहते हैं; जो नहीं दी जा सकती; क्योंकि वैसा करने पर गणितागत परिणाम सूक्ष्म होने के बजाय अशुद्ध हो जायेगा। हमारे यहाँ भास्कराचार्य जैसे विशुद्ध गणित एवं सिद्धान्त-ज्योतिष के अनन्योपासक विद्वान् गणित-ज्योतिष का एक उपयोग फलादेश भी मानते हैं; आचार्य कहते हैं—'ज्योतिः शास्त्र-फलं पुराणगणकैरादेश इत्युच्यते नूनं लग्नबलाश्रितः पुनरयं तत् स्पष्टखेटाश्रयम् ॥' अतः लग्नादि गणित में मध्यम सांपातिक-काल का ही निःसन्दिग्धरूपेण उपयोग करना चाहिए। स्पष्ट सांपातिक-काल का उपयोग वेधालयों में केवल वेधोपयुक्त गणित एवं प्राविधिक कार्यों में ही किया जाता है, सर्वत्र नहीं।

सांपातिक-काल के अतिरिक्त नाविक पञ्चाङ्ग में जिन कालमानों का सर्वाधिक उपयोग होता है उनमें हैं— १. विश्व-काल (Universal Time), २. पञ्चाङ्गीय-काल (Ephemeris Time), ३. विषुव-काल (Right Ascension), ४. याम्योत्तर लंघन-काल (Transit Time), ५. नतकाल या होराकोण (Hour Angle) हैं। यहाँ स्थान की कमी से इनका विस्तृत विवरण नहीं दिया जा सकता। संक्षेप में ही सही, इनकी प्रारंभिक जानकारी प्राप्त कर लेना पाठकों के लिए अत्यन्त आवश्यक है।

विश्व-काल—(Universal Time) जिस प्रकार पूरे एक देश या उसके किसी विस्तृत भू-भाग के लिए प्रमाणित समय (स्टैं. टा.) की आवश्यकता होती है, उसी तरह समूचे विश्व के लिए 'विश्व-काल' (Universal Time) अति आवश्यक होता है। स्टैं. टा. की तरह यह भी एक निश्चित भौगोलिक स्थल का स्थानिक मध्यम काल (L.M.T.) होता है। ग्रीनिच वेधशाला को भौगोलिक शून्य रेखांश पर स्थित मानकर उसके पूर्व की तरफ १ से क्रमशः १८० अंश तक पूर्व-रेखांश तथा पश्चिम की तरफ १ से क्रमशः १८० अंश तक पश्चिम-रेखांश (Longitudes) निश्चित किये गये हैं एवं शून्य रेखांश पर स्थित ग्रीनिच वेधशाला के स्थानीय मध्यम-काल (Greenwich Mean Time) को 'विश्व-काल' (U.T.) मान्य किया गया है; वहाँ से (० रेखांश से) पूर्वीय देशों के देशान्तर-काल को ऋण − चिह्न के साथ तथा पश्चिमी देशों के देशान्तर-काल को धन + चिह्न के साथ व्यक्त किया गया है। इसका उपयोग जब किसी जगह के स्थानीय मध्यम-काल से ग्रीनिच मध्यम-काल अर्थात् 'विश्व-काल' जानने को, साथ ही उस जगह से ग्रीनिच वेधशाला की दिशा-ज्ञानार्थ किया जाता है तो ग्रीनिच से पूर्वीय गोलार्ध की जगहों के स्थानीय मध्यम-काल को + धन संज्ञक तथा पश्चिमी गोलार्ध की जगहों के स्थानिक मध्यम-काल को − ऋण संज्ञक समझा जाता है तदनुसार स्थानिक मध्यम-काल से उक्त ग्रीनिच-देशान्तर काल का बैजिक योगान्तर करने पर शेष 'विश्व-काल' होगा एवं उसके ± चिह्नवत् उस स्थान से ग्रीनिच-वेधशाला की पूर्वापर दिशा होगी। जैसे, नाविक पञ्चाङ्ग में वाशिंगटन (अमेरिका) का देशान्तर-काल घंटादि ५।८।१६ (+) दिया गया है तथा भा. स्टैं. देशान्तर-काल घंटादि ५।३० (−) दिया है। अब वाशिंगटन में स्व-स्थानिक मध्यम-काल से घंटादि ९।२१।४४ बजे ग्रीनिच-मध्यम (विश्व) काल क्या होगा, यह जानना है तो वाशिंगटन के पश्चिमी गोलार्ध में होने से उसका उक्त स्थानीय मध्यम काल घं. ९।२१।४४ (−) ऋण संज्ञक है; इससे उक्त देशान्तर घं. ५।८।१६ (+) का बैजिक अन्तर किया तो घं. १४।३० (−) ऋणावशेष रहा। अतः ज्ञात हुआ कि उस समय ग्रीनिच-मध्यम-काल (G.M.T.) अर्थात् 'विश्व-काल' (U.T.) से दिन के २॥ बजेंगे तथा उक्त ऋणावशेष के कारण वाशिंगटन से ग्रीनिच-वेधशाला देशान्तर-काल (घं. ५।८।१६) तुल्य पूर्व दिशा में है। इसी तरह भा. स्टैं. टा. से घं. २० बजे ग्रीनिच-मध्यम-काल (विश्व-काल) जानना हो तो भारत के पूर्वीय गोलार्ध में होने से घं. २० + धन-संज्ञक होगा और उसमें उक्त ऋणात्मक देशान्तर घं. ५।३० (−) को जोड़ना होगा; तदनुसार घं. २० + में घं. ५।३० − का बैजिक योगफल घं. १४।३० + धन संज्ञक होने से ज्ञात हुआ कि भारत-स्टैंडर्ड-स्थल से ग्रीनिचवेधशाला उक्त देशांतरकाल घं. ५।३० के तुल्य पश्चिम है और भारत में स्टैं. टा. से रात ८ बजे ग्रीनिच मध्यमकाल से वहाँ दिन के २॥ बजेंगे। अब यदि भा. स्टैं. स्थल से वाशिंगटन का देशान्तर जानना है तो वाशिंगटन के देशान्तर घं. ५।८।१६ (+) से

भा. स्टैं. देशान्तर घं. ५।३०।० (–) का बैजिक अन्तर = घ. १० मि. ३८ से. १६ (+) = घं. १०·६३७७+ है ; इस कालात्मक देशान्तर को १५° से गुणा करने पर १५९°·५६५५=१५९°।३३'।५६'' (+) अंशादि में देशांतर ज्ञात हुआ । देशांतर के साथ + चिह्न पश्चिम दिशा का सूचक होता है; अतः ज्ञात हुआ कि भा. स्टैं. स्थल से वाशिंगटन १५९°।३३'।५६'' पश्चिम में है एवं तत्तुल्य घं. १०।३८।१६ को वाशिंगटन के स्थानीय मध्यम-काल में जोड़ने से भा. स्टैं. समय मिलेगा । वाशिंगटन के क्षेत्रीय स्टैं. टा.(Zonal Standard Time) से स्थानीय मध्यम-काल (L.M.T.) का अन्तर ८ मि. १६ से. (–) है । अतः घं. १०।३८।१६ –घं० ०।८।१६ = घं. १०।३० (–) भारतीय स्टैं. टा. से वाशिंगटन के स्टैं टा. का अन्तर हुआ । (देखें 'ज्योतिष-रहस्य' प्रथम खण्ड का पृष्ठ ८) ग्रीनिच मध्यम-काल ही बृटेन का स्टैं. टा. है । अतः उपर्युक्त विवरण से सिद्ध है कि जब हम भारत में रात के ८ बजे रेडियो बी. बी. सी. से हिन्दी-प्रसारण सुनेंगे, उस समय वाशिंगटन में प्रातः ९॥ तथा ब्रिटेन में दिन के २॥ बजे वह प्रसारण सुना जायेगा । देश-विदेश के शहरों के काल-ज्ञान की इससे सरल संक्षिप्त गणित-विधि अन्य नहीं हो सकती ।

पञ्चांगीय-काल—(Ephemeris Time) विभिन्न राष्ट्रों द्वारा उनकी आपसी संधि और सहयोग से अन्तर-राष्ट्रीय स्तर पर प्रकाशित होनेवाले नाविक पञ्चाङ्गों (Nautical Almanacs) में ही विशेषतः इस पंचाङ्गीय काल (Ephemeris Time) का उपयोग खगोलीय गणित, ग्रह नक्षत्रों की गति, स्थिति एवं उनके योगायोगों की कालाभिव्यक्ति के निमित्त होता है । इसका सविशेष विवरण यहाँ स्थान-संकोच के कारण नहीं दिया जा सकता। संप्रति इस पंचाङ्गीय-काल(E.T.) से विश्व-काल (U.T.) का अंतर –०·९ मि. है अर्थात् इस पंचाङ्गीय-काल में ०·९ मिनिट घटाने से विश्व-काल उपलब्ध होता है । उदाहरणार्थ, जब किसी रोज पञ्चाङ्गीय कालानुसार रात के ० (२४) बजेंगे तो उस समय विश्व-कालानुसार घं. २४।० – ०·९ मि. = घं. २३ मिनट ५९·१ बजेंगे । चूंकि विश्व-काल से भा. स्टैं. टा. ५ घं. ३० मि. आगे रहता है, अतः उक्त समय में भा. स्टैं. से घं. ५ मि. २९·१ बजेगा । इस तरह पञ्चाङ्गीय-काल से भा. स्टैं. टा. का अंतर + ५ घं. २९·१ मि. है । नाविक पञ्चाङ्गों में इसी समय के सूर्य एवं मंगल से शनि पर्यन्त ग्रहों के दैनिक सायन भोगांश दिये जाते हैं ; केवल चंद्रमा के भोगांश उक्त समय के अतिरिक्त पञ्चाङ्गीय काल से १२ बजे अर्थात् भा. स्टैं.टा. से घं. १७ मि. २९·१ बजे के लिए भी दिये जाते हैं; उनमें एतद्दिन का स्पष्ट अयनांश घटाकर ग्रहों के राश्यादि निरयण भोग जंत्री में दिये जाते हैं । उक्त नाविक पंचाङ्ग केवल अंग्रेजी भाषा में भारत-सरकार द्वारा प्रकाशित किया जाता है । अनेक पाठक इसकी प्राप्ति के लिए हमें पत्र लिखते रहते हैं ; अतः इसके प्राप्ति-स्थान का पता नीचे दिया जा रहा है । इसका मूल्य रजि. डाक-बर्च सहित १००) है जिसे निम्न पते पर अग्रिम मनिआर्डर द्वारा भेजकर पंचाङ्ग रजि. से मँगाया जा सकता है । पता—कंट्रोलर ऑफ पब्लिकेशंस, सिविल लाइन्स, दिल्ली—११००५४ ।

विषुव-काल (R.A.),याम्योत्तर-लंघन-काल, नत-काल या होरा-कोण आदि की जानकारी मेरी इसी पुस्तक 'ज्योतिष-रहस्य' के द्वितीय खण्ड में प्रकाशित 'कुण्डली-निर्माण की वैज्ञानिक पद्धति' शीर्षक लेख से प्राप्त कीजिए।

भारतीय ज्योतिष-शास्त्रोक्त काल-मापन-प्रणाली के ज्ञानार्थ उसके तिथ्यादि अङ्गों में कालमान नीचे दिये जाते हैं ।

चन्द्रमा की मध्यम दिन-गति अंशादि १३°–१०'–३४''·८९
सूर्य की मध्यम दिन-गति ,, ०–५९–०८·१९
बृहस्पति की मध्यम दिन-गति,, ०–४–५९·१३
म.तिथि-भोगकालघंटादि२३-३७-२८·०९=दिन०·९८४३५३
म. नक्षत्र-भोगकाल ,, २४-१६-३९·४६=दिन१·०११५६७८
म.योग-भोगकाल ,, २२–३५–४४·६३= दिन ०·९४१४८८
म.करण-भोगकाल,, ११–४८–४४·०४= दिन ०·४९२१७६

चान्द्रमास (सूर्य-संयुतिकाल) = २९·५३०५९ सावन दिवस=२९ दि. १२ घं. ४४ मि. २·९ से. । 'रविन्द्वोयु तैः संयुतिर्यावदत्या विधोर्मासः । (भास्कराचार्य)

नाक्षत्र चान्द्रमास = २७·३२१६६१५ सावन दिवस (चंद्र-भगण) = २७ दिन ७ घं. ४३ मि. ११·५ से.

सांपातिक चांद्रमास = २७·३२१५८२१ सावन-दिवस = २७ दिन ७ घं, ४३ मि. ४·७ से.

उपर्युक्त नाक्षत्र एवं सांपातिक चांद्रमासों का अंतर = ६·८ से. = ३'''७ (मध्यम चंद्र-दिनगत्या) ।

१२ चान्द्रमास (दिन २९·५३०५९ × १२) = ३५४·३६७०८ दिन = ३५४ दि. ८ घं. ४८ मि. ३५·७ से. = १ चान्द्र वर्ष, यह मुसलमानों का मानक(Standard) वर्ष है।

बृहस्पति के स्वमध्यमगत्या १ राशि का भोगकाल ३६१·०४९०८ सावन दिन = ३६१ दिन १ घं. १० मि. ४०·५ से.= बार्हस्पत्य(गौरव) वर्ष(संवत्सर), यह भारतीय ज्योतिष के संवत्सर का वर्ष है । यह नाक्षत्र सौर वर्ष से ४ दिन ५ घं १ मि. २६·३५ से. छोटा है ।

नाक्षत्र सौर वर्ष = ३६५·२५६३६२८ सावन-दिवस (सूर्य-भगण)=३६५ दिन ६ घं. ९ मि. ९·७ से. = घट्यादि १५।२२।५४।१५ निरयण सौरवर्षमान, यह हिंदू (भारतीय) मानक (Standard) वर्ष है ।

सांपातिक सौर वर्ष = ३६५·२४२१९४१ सावन दिन = ३६५ दिन ५ घं. ४८ मि. ४५·६ से. सायन सौर-वर्षमान, यह ईसाई आदि पाश्चात्यों का मानक (Standard) वर्ष है ।

उपर्युक्त नाक्षत्र एवं सांपातिक सौरवर्ष का अंतर = ०·०१४१६८७ सावन-दिन = २० मि. २४·१ से. =

५०''.२७ (मध्यम सूर्य-दिनगत्या), यही वर्तमानकालिक मध्यम वार्षिक अयन-चलन (संपात-गति) है।

भारतीय ज्योतिषशास्त्र में ९ प्रकार के कालमान बताये गये हैं —

ब्राह्मं दिव्यं तथा पित्र्यं प्राजापत्यं च गौरवं।
सौरञ्च सावनं चांद्रमार्क्षं मानानि वै नव ॥
॥सूर्यसिद्धान्त मानाध्याय १॥

१. **ब्राह्म**—ब्रह्मा के दिन-रात, आयु सम्बन्धी (कल्पो ब्राह्ममहः प्रोक्तं शर्वरी तस्त तावती ॥सू. सि.मध्य.२०॥)

२. **दिव्य**—देव सम्बन्धी (मासैर्द्वादशभिर्वर्षं दिव्यं तदह उच्यते। तत्षष्टिः षड्गुणा दिव्यं वर्षमासुर मेव च ॥सू. सि. मध्य. १३,१४॥) द्वादश नाक्षत्र सौर वर्षों का १ दिव्य दिवस (अहोरात्र) होता है एवं ३६० दिव्य दिवस (अहोरात्र) का १ दिव्य वर्ष होता है।

३. **पित्र्य**—पितर सम्बन्धी (त्रिंशता तिथिभिर्मासश्चयाः पित्र्यमहः स्मृतम् ।) ३० तिथियों का १ चान्द्र मास होता है। १ चान्द्र मास ही पितरों का १ दिवस (अहोरात्र) होता है।

४. **प्राजापत्य**—मनु सम्बन्धी (युगानां सप्ततिः सैका मन्वन्तरमिहोच्यते। कृताब्दसंख्यस्त स्यान्ते सन्धिः प्रोक्तो जलप्लवः (सूर्य से मध्य. १७)। ७१ महायुगों (चतुर्युगों) का १ मन्वन्तर होता है। उस मन्वन्तर के अन्त में ससन्धि सतयुग के वर्ष-मान तुल्य मन्वन्तर का सन्धि-काल होता है; इस सन्धि-काल में संपूर्ण पृथ्वी जलमग्न रहती है।

५. **गौरव**—गुरु सम्बन्धी—(गुरु के मध्यमगत्या राशि-भोगरूप)।

६. **सौर**—रवि सम्बन्धी (सूर्य-राशि-भोगरूप)।
७. **सावन**—भू सम्बन्धी (सूर्योदय-द्वयान्तररूप)।
८. **चांद्र**—चंद्र सम्बन्धी (तिथि-भोगरूप)।
९. **आर्क्ष**—नक्षत्र सम्बन्धी (नक्षत्रोदय-द्वयान्तररूप)।

चतुर्भिर्व्यवहारोऽत्र सौरचांद्रार्क्षसावनैः।
बार्हस्पत्येन षष्ट्यब्दं ज्ञेयं नान्यैस्तु नित्यशः ॥
॥ सूर्यसिद्धान्त मानाध्याय २ ॥

सौर चान्द्र नाक्षत्र और सावन, इन ४ मानों से ही मनुष्यों का अधिकतर कार्य-व्यवहार चलता है। गौरव (बार्हस्पत्य) मान का उपयोग भारतीय ६० संवत्सरों के ज्ञानार्थ और शुद्ध, अधिक, क्षय-वर्ष एवं तज्जन्य 'समय-शुद्धि'-विचारार्थ किया जाता है। बार्हस्पत्य कालमान में मास और दिन नहीं होते। देखिए, 'ज्योतिष-रहस्य' द्वितीय खण्ड में प्रकाशित 'समय-शुद्धि-विवेक' शीर्षक लेख। शेष ब्राह्म, दिव्य, पित्र्य और प्राजापत्य, इन चार कालमानों का प्रयोजन यदाकदा, सुदीर्घ काल-गणनार्थ, पड़ता है; जैसे सिद्धान्त-ज्योतिष में सृष्टयादि या युगादि से इष्टावधितक की दिन-संख्या (अहर्गण) या कल्प-कुदिन का साधन। उक्त ब्राह्म कालमान का विशेष विवरण इसी पुस्तक की पृष्ठ संख्या १४८ पर पढ़िये। सौर, चांद्र, नाक्षत्र एवं सावन इन कालमानों के जो दिन, मास, वर्षादि अवयव होते हैं, उनमें सावन एव नाक्षत्रमान के कालावयव स्वयं पृथ्वी के स्वाक्ष भ्रमण-जन्य होते हैं तथा सौरमान के कालावयव सूर्य के प्रतिभासिकरूपेण राश्यादिचार से उद्भूत होते हैं; अतएव वे अपेक्षाकृत समरूप एवं शुद्ध रहते हैं; किंतु चान्द्रमान के कालावयव, जैसे चान्द्र-दिन (प्रतिपदादि तिथि), चैत्रादि चान्द्रमास, प्रभवादि चान्द्रसंवत्सर वस्तुतः चंद्रमा के स्वतंत्र संचरण से उद्भूत नहीं होते, अपितु चंद्र, सूर्य(पृथ्वी) के परस्पर गत्यात्मक सम्बन्धजन्य होते हैं; अतएव उक्त कालावयवों में वैलक्षण्य उत्पन्न हो जाता है एवं वे सर्वदा समरूप एवं शुद्ध नहीं रहते; प्रत्युत समय-समय पर उनमें क्षय वृद्धि एवं तज्जन्य अशुद्धि भी होती रहती है और यहीं से भारतीय ज्योतिषशास्त्र से धर्मशास्त्र के अविच्छेद्य सम्बन्ध का आरम्भ होता है।

काल-परिमाण और परिणमन—२

तस्मात्कृत्स्नमधीत्याग्र्य वेदांग काल बोधनम्।
ज्योतिषामयनाङ्गानि चतुःषष्ठिस्ततः पठेत ॥
(वृद्ध गर्ग-संहिता)

किसी रोज के सूर्योदय से सूर्यास्त तक के समय को उस रोज का दिनमान कहते हैं। धर्मशास्त्र में दिनमान का उपयोग प्रायः घटी पल में किया जाता है। चूंकि प्रत्येक अहोरात्र (दिन-रात) सदैव साठ (६०) घटी का होता है, अतएव किसी रोज के दिनमान के घटी-पल को ६० घटी में घटा देने से शेष उस रोज का रात्रिमान होता है। निरक्ष देशों (शून्य अक्षांशवाले स्थानों) में सदैव ३० घटी का दिन एवं ३० घटी की रात होती है; किंतु साक्ष देशों (दक्षिणोत्तर ६६ अक्षांश तक के देशों) में प्रतिवर्ष केवल दो रोज यह स्थिति रहती है: (१) ता. २१ मार्च को, जब सूर्य सायन मेष राशि में प्रवेश करता है, (२) ता. २३ सितम्बर को, जब सूर्य सायन तुला राशि में प्रवेश करता है; वर्ष के शेष दिनों में दिन-रात्रि-मान घटता-बढ़ता रहता है। धर्मशास्त्र में अहोरात्र के कई प्रकार के विभाग एवं उनकी भिन्न-भिन्न संज्ञाएँ निर्दिष्ट की गयी हैं जो भारतीय पञ्चाङ्गोक्त कालगणना तथा जातकशास्त्र में अनिवार्यतः प्रयुक्त होती हैं; उन सबका मूल आधार दिनमान है। अतः सर्व प्रथम इसके गणित की सूक्ष्म शुद्ध रीति को जानना प्रत्येक भारतीय ज्योतिषानुरागी के लिए नितांत आवश्यक है। दिनमान अशुद्ध होने से धर्मशास्त्रोक्त समस्त काल-निर्धारण एवं जन्म-कुण्डली-निर्माण अशुद्ध, निष्फल और कभी हानिकारक भी हो जायेगा। जंत्री-प्रमियों में पञ्चाङ्गीय कालमानों की परिशुद्धता के अतिरिक्त सेकेंड और विपल तक के सूक्ष्म गणित की माँग भी बढ़ती जा रही है जिसकी पूर्ति का साधन अबतक किसी पञ्चाङ्ग-जंत्री में उपलब्ध न होने से सर्वप्रथम यहाँ दिया जा रहा है। श्रुतिवाक्य है 'सूर्यो योनिः कालस्य' (मैत्र्युपनिषद प्र. पा. ६) इसकी सत्यता इस लेख द्वारा पाठकों के समक्ष सहज ही प्रत्यक्ष हो जायेगी और तब उनकी अभिरुचि

भारतीय ज्योतिष एवं धर्मशास्त्र के अध्ययन में अधिकाधिक जागृत होगी।

प्रकारान्तरेण दिनमान-साधन—क्रान्त्यक्षज स्पर्शगुणाहतिर्या सा व्यस्तचिन्हेप्सित कोटिजीवा। तस्या धनू रामहृतं दिनस्य घट्यादि मानं सुलभप्रकारम्॥

विवरण—सूर्य क्रान्ति की स्पर्शज्या से इष्टदेशीय अक्षांशस्पर्शज्या को गुणा करो। गुणनफल व्यस्तचिह्न युक्त अभीष्ट कोटिज्या होगी। उसके धनु में ३ का भाग देने से इष्ट देशीय घट्यादि दिनमान लब्ध होगा।

उदाहरण-संख्या—१-ता. १३ जनवरी सन् १९७८ ई. को औदयिक सूर्यक्रान्ति द. (—) अंशादि २१°।३३'।२७'' काशी का भू-केंद्रीय अक्षांश उत्तर(+)२५°।१०'।३'' है।

तब ला स्पज्या ϕ' २५।१०।३ ९·६७१९८(+)
+ला स्पज्या δ २१।३३।२७ ९·५९६६७(—)
=ला कोज्या व्यस्तचिह्न+७९·३ ९·२६८६५(—)

७९°·३÷३ = घट्यादि २६।२६ दिनमान हुआ; दिनमान २६।२६÷५ = होरादि ५।१७।१२ दिनार्ध हुआ। उस दिन काशी में स्पष्ट मध्याह्न का स्टै. टा. होरादि १२।६।३५ है; इसमें उक्त दिनार्ध ऋण, धन करने से क्रमशः सूर्योदय घंटादि ६।४९।२३ तथा सूर्यास्त घंटादि १७।२३।४७ स्टै. टा. में ज्ञात हुए; ये मिनिट्‌ पर्यन्त शुद्ध हैं। सेकेंड पर्यन्त सूक्ष्म सूर्योदयास्त जानने के लिए मध्याह्नकालिक सूर्य-क्रान्ति का उपयोग करना चाहिए। यथा—उस दिन भा. प्र. समय से पंक्तिकाल घ. ५।२९।१० बजे सूर्य की क्रान्ति द. २१°।३४', दै. गति १०' (—) है। उपर्युक्त मध्याह्नकाल घ. १२।६।३५ से पंक्तिकाल घं. ५।२९।१० घटाया तो शेष घं. ६।३७।२५ चालन हुआ। २४ घं. में क्रान्ति १०' कला घटती है तो चालन में त्रैराशिक से कलादि २'।४५''·६ घटेगी; अतः इसे पंक्तिकाल की क्रान्ति २१°।३४' में घटा दिया तो मध्याह्नकालिक द. क्रान्ति अंशादि २१°।३१'।१४''(—) स्पष्ट हुई। अब इस क्रान्ति से दिनमान-साधनार्थ—

ला स्पज्या अक्षांश २५°।१०'।३'' ९·६७१९७९२(+)
+ला स्पज्या क्रान्ति २१।३१।१४ ९·५९५८५४३(—)
= ला कोटिज्या ७९।१९।२०·७'' ९·२६७८३३५(—)

विपरीत चिह्न+अंशादि ७९°।१९'।२०·७'' में ३ का भाग देने से दिनमान घट्यादि २६।२६।२६·९ उपलब्ध हुआ। इसमें ५ का भाग देने से दिनार्ध होरादि ५।१७।१७·३ हुआ। इसे मध्याह्न घं. १२।६।३५ में ऋण, धन करने से क्रमशः सूर्योदय घ. ६।४९।१७·७ तथा सूर्यास्त घं. १७।२३।५२·३ स्टै. टा. में ज्ञात हुए। बाल-बोधार्थ उत्तरगोल का भी एक उदाहरण लिख देते हैं—

उदाहरण-संख्या २— ता. ४ अगस्त १९७४ ई० को सूर्य-क्रान्ति उत्तर+१७।२४ है (देखें सन् १९७५ ई. की चिन्ताहरण-जंत्री-पृष्ठ ६७।६८) उत्तर-अक्षांश २५°।११' में उस रोज दिनमान-साधनार्थ—

ला स्पज्या अक्षांश +२५।११ ९·६७२२९(+)
+स्पज्या क्रान्ति +१७।१४ ९·४९६०७(+)
=ला कोज्या व्यस्तचिन्ह—८१।३१।३५·३ ९·१६८३६(+)

यहाँ व्यस्तचिन्ह से कोज्या ऋणात्मिका होने अर्थात् द्वितीय पदस्थ होने के कारण १८० अंश में कोज्या के धनु (चापांश) ८१।३१।३५·३ को घटाया तो इष्ट चापांश ९८।२८।२३·८ हुआ। इसमें ३ का भाग देने से उस रोज का दिनमान घटचादि ३२।४९।२८·२ लब्ध हुआ। यहाँ पाठकों को ध्यान रखना चाहिए कि प्रस्तुत गणित में मध्याह्नकाल के जितने ही निकट की सूर्यक्रान्ति उपयोग में ली जायेगी, दिनमानादि का उतना ही सूक्ष्म शुद्ध मान प्राप्त होगा। अब सीधे सूर्यस्पष्ट पर से दिनमान, सूर्योदयादि-साधन-विधि लिखते हैं। इसकी सरल विधि ज्योतिष के पाठ्यग्रंथ 'ग्रहलाघव' के त्रिप्रश्नाधिकारोक्त छठें श्लोक में बतायी गयी है; किन्तु वह स्थूल है। यहाँ नव्य सूक्ष्म गणित-प्रकार बताया जा रहा है। सूक्ष्म फलदायिनी गणित-रीति थोड़ी कठिन होती ही है; किन्तु आज त्रिकोणमितीय गणित विषयक छोटी-बड़ी ऐसी अनेक उपयोगी सारणियाँ सस्ते मूल्यों में सुलभ हो गयी हैं जिनसे स्कूल-कॉलेज के विद्यार्थीगण कठिनतर गणित भी अल्प प्रयास में सिद्ध कर लेते हैं। जो ज्योतिर्विद एवं ज्योतिष-जिज्ञासुजन चैम्बर की सप्तांकी गणित-सारणी (Chambers Seven Figure Mathmatical Tables) न खरीद सकें, वे F. Castle की Five या Four Figure Logarithmic and Other Tables) नामक सस्ते दाम की पुस्तक खरीद कर अपना काम चला सकते हैं। उसकी उपयोग-विधि त्रिकोणमिति के किसी अध्यापक महोदय अथवा सुविज्ञ विद्यार्थी से सीख लेनी चाहिए। यह पुस्तक भारत में ही मैकमिलन ऐंड कम्पनी ने प्रकाशित की है और कॉलेज की पाठ्य पुस्तकें बेचनेवाले प्रायः सभी पुस्तक-विक्रेताओं के यहाँ मिलती है; अस्तु।

सूर्य स्पष्ट से दिनमानादि-साधन का सूत्र—

$$\text{कोज्या } ह = \frac{\text{स्पज्या}\phi' \text{ ज्या}\odot \text{ ज्या}\omega}{\sqrt{1-\text{ज्या}^2 \odot \text{ ज्या}^2\omega}}$$

यहाँ ϕ' = अभीष्ट स्थान का भू-केंद्रीय अक्षांश
$\odot$ = सायन सूर्यस्पष्ट (भोग)
ω = परमाक्रान्ति

ह = होराकोण, ÷३ = घटचादि दिनमान। गत १३ जनवरी सन् १९७८ ई. के उदाहरण में औदयिक सूर्य स्पष्ट राश्यादि ८।२८°।५७'।०'' है। इसमें अयनांश २३°।३३'।४''जोड़ने से सायन ⊙ राश्यादि९।२२°।३०'।४'' हुआ (देखें सन् १९७९ ई. की जंत्री—पृष्ठ ७,२) १२ राशि में उक्त सायन ⊙ को घटाने के शेष अंशादि ६७°।२९'।५६'' चतुर्थ पदीय भुज ऋणात्मक हुआ। गणितोपकरण—

स्पज्या ϕ' २५°।१०′ = ०·४६९८५, ज्या ⊙ ६७°।३०′ = ०·९२३८८, ज्या ω − २३।२६·५ = ०·३९७८२ हुए।

गणितोदाहरण-संख्या ३—

$$\text{कोज्या ह} = \frac{०·४६९८५ \times -०·९२३८८ \times ०·३९७८२}{\sqrt{१-(०·९२३८८+०·३९७८२)^{२}}}$$

$$= \frac{०·४६९८५ \times -०·३६७५४}{\sqrt{१·३६७५४ \times ०·६३२४६}}$$

$$= \frac{-०·१७२६९}{०·९३००१} = ०·१८५६८ = -\text{ कोज्या ह},$$

जिसका चाप व्यस्तचिन्ह धन + ७९°·३ हुआ ; आगे की क्रिया उदाहरण-संख्या १ की भाँति करने से पूर्ववत् दिनमानादि सिद्ध होंगे। जन्मेष्टकाल-साधन के लिए जन्म-स्थान का सूक्ष्म शुद्ध सूर्योदय-समय ज्ञात करना नितान्त आवश्यक होता है। आजकल शहर-देहात सर्वत्र यंत्र-घड़ियों के द्वारा स्टैं. टा. का उपयोग हो रहा है और घर या अस्पताल में शिशु-जन्म का स्टैं. टा. ही तत्काल हमें ज्ञात होता है ; अतः उसमें जन्म-स्थल के सूर्योदय का स्टैं. टा. ही घटाना चाहिए ; शेष को ढाईगुना करने से घट्यादि में जन्म का शुद्ध इष्टकाल बन जायेगा। स्पष्ट-काल अर्थात् सूर्यघड़ी के समय से इष्टकाल बनाने पर भी वही घट्यादि फल प्राप्त होगा जो स्टैं. टा. से ; क्योंकि तब जन्म के समय को तथा जन्म-स्थल के सूर्योदय-समय दोनों को स्पष्टकाल में परिणत करना होगा। इस तथ्य का उदाहरण स्थान की कमी से हम यहाँ नहीं दे सकते ; सुविज्ञ पाठक स्वयं उदाहरण बनाकर निश्चय कर सकते हैं ; अथवा भ्रमग्रस्त ज्योतिषीगण कै० पं० श्रीगणपतिदेव शास्त्रीजी की 'सार्वदेशिक कुण्डली-निर्माण' नामक पुस्तक में दोनों प्रकार से बने जन्मेष्ट-साधन का उदाहरण देखकर अपना भ्रम-निवारण कर सकते हैं। नव्य दृग्गणित से बनी कुण्डलियों में सूर्यघड़ी के समय (स्पष्टकाल) के बजाय स्टैं. टा. से 'इष्टकाल' बना देखकर उसको जो नामधारी ज्योतिषी अशुद्ध कह देते हैं, वे सिद्धान्त एवं गणित-ज्योतिष सम्बन्धी अपनी अज्ञानता का ही परिचय देते हैं। अब तो शुद्ध सूक्ष्म लग्न दशम-साधनार्थ लंकोदय-स्वोदय की पुरातन स्थूल रीतियों के बजाय इष्ट सांपातिककाल की सूक्ष्म शुद्ध रीति का व्यापक रूप में उपयोग हो रहा है ; और थोड़े ही समय में स्थूल अशुद्ध गणित के पञ्चाङ्गों की भाँति कुण्डली-निर्माण की पुरातन स्थूल रीतियाँ भी निरुपयोगी हो जायेंगी, भले ही पाठ्य पुस्तकों में उनका अस्तित्व बना रहे। हमारी तो कामना है कि अब दृग्गणित के पञ्चाङ्गों की भाँति जन्म-कुण्डलियाँ भी वैज्ञानिक रीत्या ज्याचापीय (त्रिकोणमितीय) गणित के द्वारा निर्मित की जाँय; उनमें पञ्चाङ्गों या पुस्तकों की तैय्यारशुदा (Readymade) सारणियों का न्यूनतम उपयोग किया जाय। इसी उद्देश्य से हम यहाँ दैनिक सूर्य स्पष्ट एवं सांपातिककाल के द्वारा अभीष्ट स्थान के सूर्योदयादि-साधन का सूत्र भी प्रकाशित कर रहे हैं। यह सूत्र सर्वांशतः लाघवांकपरक होने से इसके द्वारा गणित करना गत उदाहरण सं. ३ की तरह कष्टसाध्य नहीं है। इस सूत्र द्वारा अल्पायास से कितना सूक्ष्म परिणाम प्राप्त होता है, यह एक निम्नोक्त उदाहरण से ही स्पष्ट हो जाता है।

सूत्र—निरयण ⊙ + अयनांश = सायन सूर्य, ω = परमाक्रान्ति, ϕ' = अभीष्ट स्थान का भू-केंद्रीय अक्षांश

ला स्प λ + ला कोज्या ω = ला स्पज्या α विषुवांश

ला स्पज्या ω + ला स्पज्या ϕ' = ला स्थिरांक।

लाज्या α + ला स्थिरांक = संस्कार, संस्कार $\mp$ a = संस्कृत α; संस्कृत α − ९० = इष्ट सांपातिक काल। इष्ट सांपातिक काल में स्थानिक निशीथ का सांपातिक काल घटाइए–शेष सांपातिक काल को स्थानिक मध्यम सावन काल में बदलिए तो अभीष्ट स्थान में सूर्योदय का मध्यम काल (L.M.T.) होगा ; उसमें स्टैं.-अन्तर का संस्कार करने से अभीष्ट सूर्योदय का भा. प्र. समय (I.S.T.) ज्ञात होगा।

संस्कार का नियम—सायन सूर्य मेषादि छः राशि में हो तो सूर्योदय के लिए संस्कार +, तुलादि छः राशि में हो तो संस्कार − ऋण करना, सूर्यास्त के लिए विपरीत चिन्ह का उपयोग करना चाहिए।

काशी के लिए उदाहरण—देखिए सन् १९७९ की चिताहरण जंत्री-पृष्ठ ७२ पर ता. १३ जनवरी सन् १९७८ ई० को निरयण सूर्य राश्यादि ८।२८।५७।० + अयनांश ०।२३।३३।४ = रा. ९।२२°।३०′।४″ सायन सूर्य, इसका चतुर्थ पदीय भुज अंशादि ६७।२९।५६।

ला स्पज्या ω	२३।२६·५	९·६३७०९
+ स्पज्या ϕ'	२५।१०	९·६७१९७
= ला स्थिरांक		९·३०९०६
ला स्पज्या λ	६७।३०	०·३८२७८
+ ला कोज्या ω	२३।२६·५	९·९६२५८
= ला स्पज्या α	६५।४२	०·३४५३६
लाज्या α	६५।४२	९·९५९७१
+ ला स्थिरांक		९·३०९०६
= लाज्या संस्कार	१०।४२(−)	९·२६८७७

विषुवांश ६५°।४२′ में १०°।४२′ संस्कार घटाया, (क्योंकि सायन सूर्य तुलादि षटक् में है) तो ५५°।०′ संस्कृत विषुवांश हुआ ; चतुर्थ पदीय भुजांश होने से ३६०° में उक्त संस्कृत विषुवांश ५५° घटाया तो ३०५° शेष रहा ; इसमें नियमतः ९० अंश घटाकर शेष २१५ को १५ से भाग दिया तो घंटादि १४।२०।० इष्ट सांपातिक काल हुआ। इसमें उस रोज काशी के निशीथ का सांपातिक काल घं. ७।२७।३४ घटाने से घ. ६।५२।२६ शेष सांपातिक काल रहा; उसको स्थानिक मध्यमकाल में बदलने के

लिए कोष्टक 'अ' के अनुसार संस्कार १ मि. ८ से. घटाने से शेष घं. ६।५१।१८ काशी में सूर्योदय का स्थानिक मध्यमकाल (L.M.T.) हुआ ; इसमें काशी से स्टैं.टा.का अन्तर २ मिनट कम करने से ता.१३।१।१९७९ को काशी में सूर्योदय का स्टैं. टा. घं. ६।४९।१८ सेकेंड पर्यन्त शुद्ध ज्ञात हो गया।

लग्न-गणित के तुलनात्मक अध्ययन के विषय में 'चिंताहरण जंत्री' के सुविज्ञ पाठक श्रीजयकृष्ण पनिका अपने ता. १९-२-७९ के पत्र में लिखते हैं—'चिंताहरण जंत्री' मैंने लपरी (गाँव) में श्रीशिव-मेले में खरीदी। पो० सीधी, जिला सरगुजा में ग्राम लपरी मेरे गाँव घटई से ५ मील दूर पश्चिम में है। यहाँ प्रतिवर्ष मकर-संक्रांति के दिन मेला लगता है। दूर-दूर से श्रद्धालुजन भगवान् शिव को जल चढ़ाने यहाँ आते हैं।... 'चिंताहरण जंत्री' में 'काल-परिणाम और परिणमन' शीर्षक आपका लेख, निरयण सायन लग्न दशम राश्युदयमान-सारणी तथा श्रीरॅफेल महोदय द्वारा निर्मित वाराणसी की लग्न-सारणी देखी। आगे 'लग्न-गणित का तुलनात्मक अध्ययन' भी पढ़ा ; बहुत पसंद आया। रॅफेल की सारणी और 'ज्योतिष-रहस्य' की सारणी का अन्तर एवं तद्विषयक भ्रम का निराकरण लेख में किया गया है। आपने बताया है कि रॅफल की और ज्योतिष-रहस्य की सारणी के परिणामों का अंतर भौगोलिक अक्षांश और भू-केंद्रीय अक्षांश के कारण है। श्रीरॅफेल ने वाराणसी के भौगोलिक अक्षांश को भू-केंद्रीय अक्षांश में परिणत नहीं किया है। वाराणसी-अक्षांश ϕ २५°।१९′= २५°।१०′।३″ भू-केंद्रीय अक्षांश ϕ' है। भारतीत नाविक पञ्चाङ्ग १९७८ ई० के पृष्ठ ३८३ के द्वारा वाराणसी का भू-केंद्रीय अक्षांश २५°।१०′।५″·६ आता है। वाराणसी के उदाहरण में ता. १३।१।१९७८ ई० के लग्न-साधन विषयक विविध विषय इस पुस्तक के पृष्ठ ७२–७३ पर प्रकाशित हैं। स्पष्ट सूर्य तथा सांपातिक काल द्वारा लग्न सिद्ध कर उनमें एकवाक्यता स्थापित की गयी है। इसके परीक्षण के लिए मैं भिन्न रीतियों से सूक्ष्म गणित प्रस्तुत कर रहा हूँ। सूर्योदय के भारतीय प्रमाणित समय (I.S.T.) घं. ६।४९।१८ बजे सायन सूर्य स्पष्ट २९२°।३०।४″ आया है जिसका भुज अंशादि ६७।२९।५६ चतुर्थपद में (–)ऋणात्मक होगा। इससे सूर्य का विषुवांश, क्रान्ति और चर का साधन करते हैं—

सूर्य-विषुवांश-साधन का सूत्र—रवि-विषुवांश स्पज्या = रविभोग स्पज्या × परम क्रान्ति कोज्या

उदाहरण—

ला स्पज्या रविभुज ६७°।२९′।५६″ १०·३८८२७५१९(–)
\+ ला कोज्या प.क्रांति२३।२६।२२ ९·९६२५९७१(+)
= स्पज्या रवि विषु.६५।४२।४ १०·३४५३४९०(—)रवि-भुज चतुर्थपद में है, अतः रवि-विषुवांश के चाप ६५।४२।४ को ३६० में घटाने से अंशादि २९४°।१७′।५६″ औदयिक सूर्य का विषुवांश हुआ। इसमें ४ का गुणा करने से उक्त सूर्य का विषुवकाल घं. १९।३७।११·७ हुआ।

सूर्य-क्रांति-साधन का सूत्र—

रविक्रांति ज्या = रवि-भोग ज्या × परमक्रांति ज्या
ला ज्या रविभुज ६७°।२९′।५६″ ९·९६५६११९(—)
\+ ला ज्या परमक्रां. ω २२।२६।२२ ९·५९९६४२५(+)
= ला ज्या इष्ट क्रां.द δ २१।३३।४१ ९·५६५२५४४(—)
अन्तर्न्यास द्वारा औदयिक सूर्यक्रांति (–) २१°।३३′।४०″ आती है।

चर-साधन का सूत्र—

चरज्या = अक्षांश स्पज्या × क्रांति स्पज्या

ला स्पज्या ϕ'	२५।१०। ५	९·६७१९९०२(+)
\+ ला स्पज्या δ –	२१।३३।४१	९·५९६७५४४(—)
= ला ज्या चरांश	१०।४२। १	९·२६८७४४६(—)

चरांश १०।४२।१ × ४ = चरकाल मि. ४२ से. ४८·०६ (–) हुआ। सूर्यक्रांति दक्षिण होने से चरकाल मि. ४२ से. ४८·०६ को ऋण चिन्हवत् घं. ६ में घटाया तो दिनार्ध घं. ५।१७।११·९४ हुआ। औदयिक सूर्य के विषुवकाल घं. १९।३७।११·७ में उक्त दिनार्ध घटाने से शेष रव्युदय विषुव-काल घं. १४।१९।५९·८ हुआ ; इसमें उस रोज काशी के निशीथ का सांपातिक काल घं. ७।२७।३३·९ घटाने से घं. ६।५२।२५·९ सूर्योदय का सांपातिक काल हुआ। इसे कोष्ठक 'क' के द्वारा मध्यमकाल में परिवर्तित करने से घं. ६।५१।१८·३ सूर्योदय का स्थानिक मध्यमकाल (L.M.T.) हुआ जिसमें स्टैं. टां. का अन्तर २ मि. कम करने से उस दिन काशी में सूर्योदय का स्टैं. टा. ६।४९।१८·३ सिद्ध हुआ। सन् '७९ ई. की जंत्री-पृष्ठ ७२ पर आपने बेलान्तर-पद्धति के गणित से उस दिन काशी में सूर्योदय का यही समय सिद्ध किया है। अब इस समय का इष्ट सांपातिक काल, रव्युदय काल के तुल्य तथा स्पष्ट सूर्य, पूर्वीय क्षितिज-लग्न के तुल्य आना चाहिए। दोनों की एकवाक्यता होने पर यह मत सिद्धान्तरूपेण मान्य हो जायेगा कि सांपातिक काल द्वारा ही लग्न, दशम का वास्तव मान उपलब्ध होता है। यहाँ इष्टकाल काशी में सूर्योदय का स्टैं. समय, घं. ६।४९।१८ है जिसमें २ मि. धन करने से घं. ६।५१।१८ स्थानिक मध्यमकाल (L.M.T.) हुआ, इसमें सांपातिक कालार्थ संस्कार मिनिटादि १।८ जोड़ने से घं.६।५२।२६ सांपातिक काल हुआ। उसमें उक्त ता. को काशी के मध्यम निशीथ का सांपातिक काल घं ७।२७।३४ जोड़ने से इष्ट सां. काल (RAMC) घं. १४।२०।० हुआ देखें सन् १९७९ ई. की चिंताहरण जंत्री पृष्ठ ७२। उसमें दिनार्ध घं. ५।१७।११.९ जोड़ने से घं. १९।३७।११·९ औदयिक सूर्य का विषुव काल होता है। अब मैं इन दोनों के द्वारा अलग-अलग लग्न-साधन करता हूँ, पहले—

औदयिक रवि-विषुवकाल से लग्न-साधन – तदर्थ उक्त रवि-विषुवकाल घं. १९।३७।११.६ को १५ से गुणा किया तो औदयिक रवि-विषुवांश २९४।१७।५५.५ हुआ। इसे ३६० में घटाने से चतुर्थपदीय भुज अंशादि ६५।४२।४.५ हुआ। चाप जात्य त्रिभुज △ आ बा सा में भुजा आ सा=काशी का क्षितिज वृत्त-खण्ड है; उस पर लम्ब भुजा
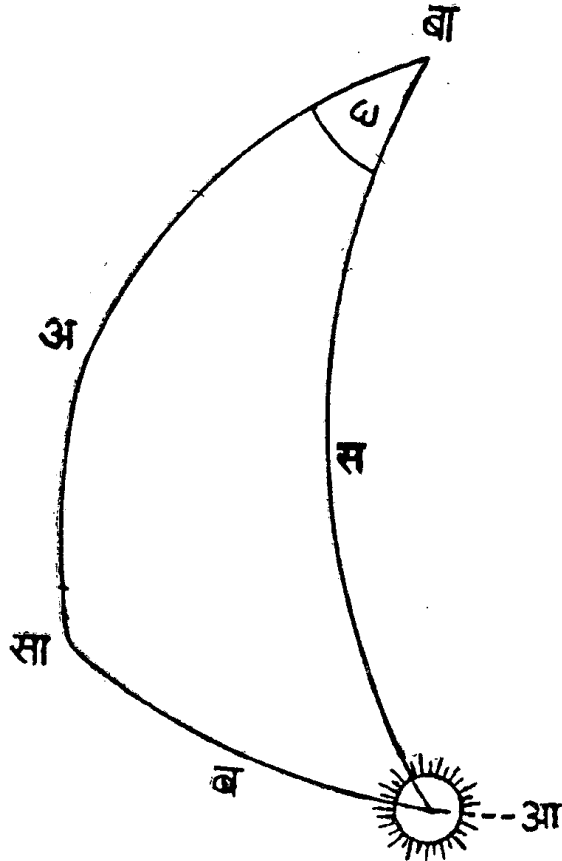
सा बा = औदयिक रवि-विषुवांश है, ∠सा बा आ = ω परमक्रान्ति-कोण तथा कर्ण बा आ = औदयिक रवि-भोग = उदित लग्न हैं जिनमें परम क्रान्ति-कोण बा ω तथा भुजा अ (भूमि) का मान ज्ञात है तथा कर्ण(श्रुति)रूप भुजा स = औदयिक रवि-भोग = लग्न ज्ञातव्य है। अतः चापीय त्रिकोणमिति के 'श्रुतिस्पर्शज्याप्त भूमिस्पर्शज्या कोणकोज्यका' के अनुसार—

$$\text{कोज्या } \angle \text{बा} = \frac{\text{स्पज्या अ}}{\text{स्पज्या स}}$$

$$\therefore \text{स्पज्या स} = \frac{\text{स्पज्या अ}}{\text{कोज्या बा}} \quad ; \qquad \text{तब —}$$

ला स्पज्या अ	६५।४२। ५	१०·३४५३५३७
– ला कोज्या बा	२३।२६।२२	९·९६२५९७१
= ला स्पज्या स	६७।२९।५६	१०·३८२७५६६

३६०° – ६७°।२९'।५६" = अंशादि २९२°।३०'।४" सायन लग्न स्पष्ट हुआ।

अब पूर्वोक्त इष्ट सांपातिक काल (R,A,M,C,) द्वारा त्रिभोन लग्न की रीति से भी यही लग्न-साधन करता हूँ। इसका सूत्र है—

$$\text{स्प क} = \text{स्प अ कोज्या इ} + \frac{\text{ज्या इ स्प ब}}{\text{कोज्या अ}}$$

(देख पृष्ठ-संख्या ९७) अ = इष्ट सांपातिककाल अंशादि, इ = परमक्रान्ति-कोण, ब = भू-केंद्रीय अक्षांश, क = त्रिभोन लग्न, त्रिभोन लग्न + ९०° = उदित लग्न। उक्त इष्ट सांपातिक काल घं. १४।१९।५९.८ को १५ से गुणा कर अंशादि में परिणत किया तो २१४°।५९'।५७" हुआ। इसमें १८०° घटाने से तृतीय पदस्थ भुज अंशादि ३४°।५९'।५७" = अ हुआ, इ = २३°।२६'।२२" एवं ब = २५°।१०'।५" है। अतः—

ला स्प अ	३४।५९।५७	९·८४५२१३३(+)
+ला कोज्या इ	२३।२६।२२	९·९६२५९७१(+)
= ला प्रथम फल		९·८०७८१०४(+)
ला ज्या इ	२३।२६।२२	९·५९९६४२२(+)
+ला स्प ब	२५।१०।०५	९·६७१९७९२(+)
– ला कोज्या अ	३४।५९।५७	९·९१३३६८९(—)
= ला द्वितीय फल		९·३५८२५२५(—)
ला प्रथम फल की स्वा सं.		०·६४२४०७(+)
ला द्वितीय फल की स्वा सं.		+०·२२८१६७(—)
स्पर्शज्या क		+०·४१४२४०(+)
इसका चाप	२२°।३०'।४"	
	+१८०। ०।०	
त्रिभोन लग्न	= २०२।३०।४	
	+९०। ०।०	

सायन लग्न अंशादि = २९२।३०।४ हुआ; दोनों रीतियों द्वारा साधित लग्न औदयिक सूर्य स्पष्ट से विकला पर्यन्त मिल गया। अतएव सन् १९७९ की चिंताहरण जंत्री में छपे इस उदाहरण के दिनमान, सूर्योदय, सूर्य-स्पष्ट, सूर्य-क्रान्ति इष्ट सांपातिक काल (R.A.M.C.), लग्न-स्पष्ट आदि यावत् पदार्थ सर्वथैव शुद्ध प्रमाणित हुए; अस्तु।

भवदीय, जयकृष्ण पनिका'

लग्नात् इष्टकाल-ज्ञान—अभीष्ट लग्न-स्पष्ट का इष्टकाल जानने की विधि ज्योतिष-परीक्षा के पाठ्यग्रंथ 'ग्रहलाघव' के त्रिप्रश्नाधिकारोक्त श्लोक ४ में बतायी गयी है; किंतु वह बहुत स्थूल होने के कारण आज के वैज्ञानिक युग में निर्मित होनेवाले पञ्चाङ्गों एवं कुण्डली-निर्माणादि के लिए सर्वथा निरुपयोगी हो गयी है। इस कारण कै० गोविन्द सदाशिवजी आपटे ने यह सूक्ष्म शुद्ध विधि अपने नूतन करण ग्रंथ में पठित की है और सुधी ज्योतिषज्ञों को इसी के द्वारा अभीष्ट लग्न का इष्टकाल-साधन करना चाहिए अन्यथा 'इष्टकाल' का विपल तो क्या पल भी शुद्धतया ज्ञात होना अशक्य है।

लग्नादर्कादिव त्रिगणयेदार्क्षकालं चरं चाथार्क्षा-
त्कालाद् व्यपगत चरात्प्रातरर्कार्क्षकालम् ।
प्रातर्भास्वच्चर विरहितं संत्यजेदत्र शिष्टं ।
घट्याद्यं यद् विखरस गुणांशं स कालस्त्वभीष्टः ॥

अभीष्ट निरयण लग्न में उस दिन का अयनांश जोड़कर उसे सायन बनाओ ; उसको सायन सूर्य मानकर उसका पूर्वोक्त सूत्रों से विषुवांश एवं क्रान्ति साधन करो। उस क्रान्ति और इष्टदेशीय अक्षांश से चरांश लाकर विषुवांश में विपरीत संस्कार करो। इस संस्कृत विषुवांश में ६ का भाग देने से उसका घट्यादि मान उपलब्ध होगा। इसी प्रकार से उस स्थान में उस रोज के सूर्योदय-कालीन सायन सूर्य स्पष्ट का विपरीत चर-संस्कृत घट्यादि काल ज्ञात करो—इसे पूर्वागत (अभीष्ट लग्न के) घट्यादि में घटाने से शेष सांपातिक घट्यादि प्राप्त होगा जिसमें प्रति घटी ९·८३ विपल कम कर देने से सूक्ष्म, शुद्ध (सावन घट्यादि में) 'इष्टकाल' ज्ञात हो जायेगा। औदयिक सायन सूर्य के उक्त चर-संस्कृत काल की घटी से लग्न के चर-संस्कृत काल की घटी अल्प हो तो लग्न को घटी में ६० जोड़कर उसमें सायन सूर्य की घट्यादि घटानी चाहिए।

उदाहरण—ता. १३ जनवरी १९७८ ई० को सायन लग्न रा. ०।२३°।३३′।४″ का इष्टकाल ज्ञात कीजिए। उक्त लग्नभोग ३ राशि से अल्प होने के कारण २३°।३३′। ४″ ही उसका प्रथमपदीय भुज हुआ ; अब इसका विषुवांश-साधन करने के लिए—

	ला स्प लग्नभोग	२३-३३-४	९·६३९३६०५(+)
+	ला कोज्या प. क्रां.	२३-२६-२२	९·९६२५९७१(+)
=	ला स्प. विषुवांश	२१-४७-४८	९·६०१९५७६(+)
	ला ज्या लग्नभोग	२३-३३- ४	९·६०१५८९६(+)
+	ला ज्या. प. क्रांति	२३-२६-२२	९·५९९६४२५(+)
=	ला ज्या इष्ट क्रांति	९- ८-४३	९·२०१२३२१(+)
	ला स्प इष्ट क्रांति	९- ८-४३	९·२०६७८४५(+)
+	ला स्प अक्षांश	२५-१०- ५	९·६७१९९०२(+)
=	ला ज्या चरांश	४-२०-१८	८·८७८७७४७(+)

उक्त लग्न-विषुवांश २१°।४७′।४८″ में चरांश४।२०′।१८″ को + के विपरीत − ऋण कर शेष १७°।२७′।३०″ में ६ का भाग दिया तो चर-संस्कृत घट्यादि काल २।५४।३५ हुआ। इस दिन के सूर्योदय-समय के सायन सूर्य का विषुवांश २९४°।१७′।५६″ तथा चरांश १०।४२।१ (−) हम पहले सिद्ध कर आये हैं। विषुवांश २९४°।१७′।५६″ में चर के विपरीत संस्कार के लिए चरांश १०°।४२′।१″ को जोड़ा और योगफल ३०४°।५९′।५७″ में ६ का भाग दिया तो औदयिक सायन सूर्य का चर-संस्कृत घट्यादि काल ५०।४९।५९ वियोजक हुआ जिसे पूर्वागत अभीष्ट लग्न के घट्यादि २।५४।३५ मे घटाना है ; किंतु इसका मान वियोजक से अल्प है, अतः वियोज्य घट्यादि २।५४।३५ में ६० घटी जोड़कर योगफल घ. ६२।५४।३५ में उक्त वियोजक घट्यादि५०।४९।५९को घटाया तो शेष घट्यादि १२।४।३६ इष्ट सांपातिक घट्यादि हुआ। इसमें सावन-कालार्थ संस्थार १ पल ५८·७ विपल घटाने पर श्रीमन्मार्तण्डमण्डलार्द्धोदयात्(सावन)इष्टकाल घट्यादि१२।२।३७·३ विपल पर्यन्त सूक्ष्म शुद्ध प्राप्त हुआ। इस सावनेष्ट का भा. प्र. समय (स्टैं.टा.) जानने के लिए घं. १२।२।३७·३ में २॥ का भाग दिया तो घंटादि ४।४९।२·९ हुआ ; इसमें उस रोज काशी में सूर्योदय का स्टैं. टा. घं. ६।४९।१८·३ जोड़ने से लग्नारम्भ का स्टैं.टा. घ. ११।३८।२१·२ ज्ञात हुआ, अर्थात् १३ जनवरी सन् १९७८ ई० को भा. प्र. समय (स्टैं.टा.) से घं. ११।३८।२१ बजे काशी में सायन लग्न राश्यादि ०।२३°।३३′।४″ का उदय हुआ ; इसमें उस रोज का अयनांश २३°।३३′।४″ घटाने पर निरयण लग्न राश्यादि ०।०। ।० का, अर्थात् निरयण मेष लग्न का उदय सिद्ध हुआ। ता. १३ जनवरी को मेष लग्न के उदय का यही समय सन् '७८ की जंत्री-पृष्ठ १८ पर दैनिक लग्न-सारणी में छपा है। किसी स्थान में मेष-लग्नारम्भ का समय सेकेंड पर्यन्त शुद्ध ज्ञात हो जाने पर उसमें शेष ग्यारह लग्नों के स्वोदयमान जोड़ते जाने से क्रमशः उन सब के वहाँ आरम्भ होने का सही समय ज्ञात हो जाता है। इसीलिए यहाँ मेष लग्नारम्भ-काल जानने की गणित-विधि दी गयी है ; किंतु जो ज्योतिर्षी उच्चगणित से अनभिज्ञ हैं तथा यहाँ जिन जंत्री-पञ्चाङ्गकारों को प्रतिवर्ष सूक्ष्म शुद्ध दैनिक लग्नसारणी बनानी होती है, उन्हें त्रिकोणमिति से प्रतिदिन के लिए गणित करना अशक्य होने से तत्संबंधी एक अपूर्व सारणी काशी के अक्षांश की दी जा रही है।

सारणी में २३°।२०′ से २३°।५०′ तक के अयनांश की प्रत्येक कला का औदयिक सांपातिक काल घं. मि. एवं सेकेंड के शतांश में दिया गया है। इष्ट दिन के विकलान्त स्पष्ट (True) अयनांश के अंश कला का सांपातिक काल सारणी से लेकर उसको उक्त अयनांश की विकला के लिए सामान्य अनुपात से सेकेंड के शतांश तक स्पष्ट कीजिए। उसकी बगल के खाने में स्फुट परमक्रांति के लिए संस्कार लाने का गुणक ०· सेकेण्ड के दशमलव में मिलेगा। २३°।२७′ से अभीष्ट दिन की स्फुट परमाक्रांति का जो अंतर हो, उसे उक्त गुणक से गुणाकर गुणनफल में ३० का भाग दीजिए तो यह संस्कार लब्ध होगा। इष्ट दिन की परमाक्रांति २३°।२७′ से अल्प हो तो यह संस्कार + धनात्मक, अधिक हो तो −ऋणात्मक होगा। तदनुसार यह संस्कार इष्ट विकलान्त अयनांश के लिए स्पष्ट किए गये सांपातिक-काल में जोड़ने या घटाने से इष्ट दिन के निरयण मेष-लग्नोदय का सांपातिक काल प्राप्त होगा जिसमें उस रोज काशी के निशीथ का सांपातिक काल घटाकर शेष को मध्यम सावन काल (L.M.T.) में परिणत कीजिए। उसमें स्टैं-अंतर २ मि. कम करने से उस रोज काशी में

निरयण मेष लग्नारम्भ का भा.स्टे.टा. (I.S.T.) सेकेंड पर्यन्त शुद्ध ज्ञात होगा। इस तरह प्रतिदिन, सप्ताह, मास या वर्ष में अयनांश और परमाक्रांति में अंतर आने से काशी के मेष-लग्नारम्भ-काल में जो अंतर पड़ता है, वह इस सारणी से सहज ही ज्ञात हो जाता है।

काशी(भू-केंद्रीय अक्षांश २५°।१०′।३″) में निरयण मेष लग्नारम्भ-काल-साधन की अपूर्व सारणी

अयनांश	सांपातिक काल घं.	मि.	से.	परम क्रां-संस्कार-सेकेण्ड
२३°–२०′	१९	९	९·३८	+ ०·६५
२१			१२·४३	०·६५
२२			१५·४८	०·६५
२३			१८·५३	०·६५
२४			२१·५८	०·६५
२५			२४·६३	०·६५
२६	१९	९	२७·६७	०·६५
२७			३०·७२	०·६६
२८			३३·७७	०·६६
२९			३६·८२	०·६६
३०			३९·८७	०·६६
३१	१९	९	४२·९२	०·६६
३२			४५·९७	०·६६
३३			४९·०२	०·६६
३४			५२·०७	०·६६
३५			५५·१२	०·६६
३६	१९	९	५८·१७	०·६६
३७	१९	१०	१·२२	०·६६
३८			४·२८	०·६६
३९			७·३३	०·६६
४०			१०·३८	०·६६
४१	१९	१०	१३·४३	०·६६
४२			१६·४८	०·६७
४३			१९·५३	०·६७
४४			२२·५९	०·६७
४५			२५·६४	०·६७
४६	१९	१०	२८·६९	०·६७
४७			३१·७४	०·६७
४८			३४·७९	०·६७
४९			३७·८४	०·६७
५०	१९	१०	४०·९०	०·६७

काल-परिमाण और परिणमन-३

वेदास्तावद्यज्ञकर्मप्रवृत्ताः यज्ञाः प्रोक्तास्ते तु कालाश्रयेण।
शास्त्रादस्मात् कालबोधो यतः स्याद्वेदाङ्गत्वंज्योतिषस्योक्तमस्मात्॥ (भास्कराचार्य)

वृहत्काल-परिमाण—

सावयव ३५४ दिवस (अहोरात्र) = १ चांद्र वर्ष
३६० ,, = १ सावन वर्ष
,, ३६१ ,, = १ बार्हस्पत्य वर्ष
,, ३६५ ,, = १ सौर वर्ष

४३२०००(मानव) सौर वर्ष = कलियुग
८६४००० ,, = द्वापर
१२९६००० ,, = त्रेता
१७२८००० ,, = कृत(सत्य)युग
४३२०००० ,, = चतुर्युग(महायुग)*

७१ महायुग = ३०६७२०००० मानववर्ष = १ मन्वन्तर = १४ इन्द्र।

१९६ इन्द्र = १४ मन्वन्तर = ४२९४०८०००० मानव वर्ष = ९९४ महायुग + ६ महायुग (२५९२०००० मानव वर्ष)

ब्राह्म-दिन का संधि(संध्या)काल = ४३२०००००००० मानव वर्ष = १००० महायुग = १ कल्प। सूर्याचंद्रमसौ-धाता यथापूर्वमकल्पयत्। दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः॥

दिव्यकालमान—

६ मानव(सौर) मास = १ देवताओं का (दिव्य) दिन एवं दैत्यों की रात्रि।

६ मानव(सौर) मास = १ देवताओं की (दिव्य) रात्रि एवं दैत्यों का दिन।

१२ मानव मास = १ दिव्य दिवस (अहोरात्र);
३६० मानव मास = १ दिव्य मास।
३६० मानव वर्ष = १ दिव्य वर्ष। ४३२००० मानव वर्ष = १२०० दैव वर्ष = १ (कलि)मानव युग।
४३२०००० मानव वर्ष = १२००० दिव्य वर्ष = १ मानव महायुग (चतुर्युग) = १ दिव्य युग।

ब्रह्मायु-परिमाण—

१ कल्प = ४३२००००००० मानववर्ष = १ ब्राह्म दिन
१ कल्प = ,, ,, = १ ब्राह्म रात्रि
२ कल्प = ८६४००००००० ,, = १ ब्राह्म-दिवस (अहोरात्र)
६० कल्प = ५१८४००००००००,, = १ ब्राह्म मास
३६० ब्राह्म दिवस (अहोरात्र) = ७२० कल्प = ३११०४०००००००० मानव वर्ष = १ ब्राह्म वर्ष
१०० ब्राह्म वर्ष=७२००० कल्प=३११०४०००००००००००

* टिप्पणी—अथर्ववेद संहिता (१।२।११) में जो महायुग का मान १०००० दिव्यवर्ष लिखा है, वह केवल मूल युग का मान है, उसमें आदि अन्त्य संध्याओं का मान समाविष्ट नहीं हैं।

मानव वर्ष = ब्रह्मा की आयु (पर), इसका आधा परार्ध कहलाता है। ब्रह्माजी की आयु का ५० वर्ष (प्रथम परार्ध) बीत चुका है एवं दूसरे परार्ध के (५१वें वर्ष) के प्रथम दिवस (श्वेत वाराह कल्प)का आरम्भ है ; इसके १४ मन्वन्तरों में क्रमश: स्वायंभुव, स्वारोचिव, उत्तम, तामस, रैवत और चाक्षुष ये छ: मन्वन्तर गत होकर ७वाँ वैवस्वत मन्वन्तर चल रहा है जिसके २८वें महायुग के कलियुग का प्रथम चरण संधि में है। आगे आनेवाले सात मनुओं (मन्वन्तरों) के नाम क्रमश: ये हैं—सावर्णि, दक्ष सावर्णि, ब्रह्म सावर्णि, धर्म सावर्णि, रुद्र सावर्णि, रौच्य सावर्णि और भौतिक सावर्णि ।

युगानां सप्ततिः सैका मन्वन्तर मिहोच्यते
कृताब्द सङ्ख्या तस्यान्ते संधिः प्रोक्तो जलप्लवः ।।
ससन्धयस्ते मनवः कल्पे ज्ञेयाश्चतुर्दश ।
कृतप्रमाणः कल्पादौ संधिः पञ्चदशस्मृतः ।

सूर्यसिद्धांत मध्यमाधिकार ।।१८-१९।।

अर्थात्—एक मन्वन्तर ३०६७२०००० सौर वर्ष का होता है और प्रत्येक मन्वन्तर के अन्त में सत्ययुग के वर्ष (१७२८०००)तुल्य उसका संधिकाल होता है जिसमें जल-प्रलय हुआ करता है। कल्पान्तर्गत १४ मन्वन्तरों में उनके १४ संधिकाल होते हैं तथा कल्प के आदि में उसका एक संधिकाल सत्ययुग के हो वर्ष-तुल्य होता है। इस भाँति एक कल्प में १४ मन्वन्तर एवं १५ संधिकाल होते हैं।

वर्तमान कल्पादि से कलियुगादि तक को वर्ष-संख्या का आनयन—

मन्वन्तर का मूल वर्षमान ३०६७२०००० × ६ =
१८४०३२०००० षण्मनु परिमाण
मूल सत्ययुग का वर्षमान १७२८००० × ७ =
+ १२०९६००० सात कृतयुग-परिमाण-संधिकाल
महायुग का वर्षमान ४३२०००० × २७ =
+ ११६६४०००० गत २७ महायुग का परिमाण
२८वें महायुग के + ३८८८००० कृत, त्रेता, द्वापर युग का-
—————— [परिमाण

कुल योग = १९७२९४४००० कल्पादि से कलियुगारम्भ तक की वर्ष-संख्या ; इसमें अभीष्ट कलियुगाब्द की संख्या जोड़ने से उस कलि-संवत् की वर्ष-संख्या कल्पादितः प्राप्त होगी। आर्यभटीय के अतिरिक्त अन्य सब सिद्धान्तों द्वारा कल्पारम्भ से कलियुगारम्भ पर्यन्त उपर्युक्त वर्ष ही आते हैं।

ग्रहर्क्ष-देव दैत्यादि सृजतोऽस्य चराचरम्। कृताद्रिवेदा दिव्याब्दाः शतघ्ना वेधसो गताः। ग्रह नक्षत्र देव-दैत्यादि चराचर जगत की सृष्टि(रचना) में कल्पारम्भ से ४७४०० दिव्य बर्ष यानी १७०६४००० सौर वर्ष व्यतीत हुआ अर्थात् कल्पारम्भ से उक्त सौर वर्ष के पश्चात् ग्रह नक्षत्रादि आकाशीय पिण्डों का स्वकक्षाओं में परिभ्रमण प्रारम्भ हुआ ; अतः कल्पादि से १७०६४००० वर्ष बाद सृष्ट्यारम्भकाल माना जाता है एवं उसी के आधार से ग्रह नक्षत्रादि के गति भावादि का गणित सिद्धान्त ग्रंथों में निर्दिष्ट है।

कल्प एवं महायुगीन कुदिन—

'विकलानां कलाषष्ट्या तत्षष्ट्या भाग उच्यते । तत्त्रिंशता भवेद्राशिर्भगणो द्वादशैव ते ।। ६० विकला की १ कला, ६० कला का १ भाग (अंश), ३० अंश की १ राशि होती है और १२ राशि = ३६० अंशों का १ चक्र होता है। ग्रह का एक चक्र-भोगकाल ही उसका भगण कहा जाता है। संपूर्ण राशि-चक्र (के ३६० अंशों) को सूर्य जितने समय में भोगता है वह सूर्य का १ भगण-काल (revolution period) है जो सौर वर्ष (Solar year) के रूप में उपर्युक्त दिव्य, प्राजापत्य और ब्राह्मकालमान का एक घटक (unit) है। सौर वर्ष सावन दिन से बना है **'उदयादुदयं भानोर्भूमि सावन वासरः।'** भूमि के स्वाक्ष-भ्रमण के कारण एक सूर्योदय से अग्रिम सूर्योदय तक के काल को भूमि सावन दिन, संक्षेप में सावन दिन कहते हैं ; इसी को भूदिन और कुदिन भी कहते हैं। १ कल्प के सावन दिनों की संख्या १५७७९०७४८७०३७ है जिसको कल्प-कुदिन कहते हैं और १ कल्प में ४३२०००००० सौरवर्ष अर्थात् सूर्य-भगण होते हैं। **कल्पस्यात्र सहस्रांशो युगं तावत्प्रकीर्त्यते ।।५९।।** कल्प अर्थात् ब्रह्मा के दिन में एक हजार का भाग देने से महायुग का मान होता है,तथैव उक्त कल्पकुदिन और सूर्य-भगण में एक हजार का भाग देने से एक महायुगीय कुदिन १५७७९०७४८७ तथा ४३२०००० सूर्य-भगण हुए। दोनों का योग १५८२२२७४८७ महायुगीय भभ्रम(नाक्षत्र दिन)हुए। सूर्य-सिद्धान्त में एक महायुगीय कुदिन-संख्या १५७७९१७८२८ पठित है; अन्तर १०३४१ ही वह 'कालभेद' (कालात्मक अंतर) है जिसके विषय में स्वयं सूर्यांश पुरुष कहता है—**श्रृणुष्वैकमनाः पूर्वं यदुक्तं ज्ञानमुत्तमम् । युगे युगे महर्षीणां स्वयमेवविवस्वता ।।८।।** एकाग्रचित्त रोकर उस उत्तम ज्ञान को सुनो ! जिसका उपदेश युग-युग में स्वयं भगवान् सूर्य ने महर्षियों को किया है। **शास्त्रमाद्यं तदेवेदं यत्पूर्वं प्राह भास्करः । युगानां परिवर्तन कालभेदोऽत्र केवलः ।।९।।** यह शास्त्रसिद्धान्त वही है जिसे पूर्वकाल में भगवान् सूर्य ने कहा है ; केवल युगों के परिवर्तन से इसमें 'कालभेद' होता है (जो सहज निसर्गसिद्ध है)। इस 'कालभेद' की विशेष व्याख्या सूर्य-सिद्धान्त की रंगनाथाचार्यकृत 'गूढार्थ-प्रकाशिका' नामक प्राचीन प्रामाणिक टीका में देखनी चाहिए।

वर्षमान एवं सूर्य की मध्यम दिनगति-साधन—महायुगीय कुदिन और सूर्यभगण जान लेने पर सूक्ष्म सौर वर्षमान तथा सूर्य की मध्यम दिनगति सहज ही जानी जा सकती है। महायुगीन सूर्यभगण में महायुग-कुदिन भुक्त होता है तो एक सूर्यभगण-काल (सौर वर्षमान) = $\frac{\text{म.युग कुदिन}}{\text{म.युग भगण}}$ होगा ; अतः महायुग कुदिन १५७७९०७४८७ ÷ ४३२०००० महायुग भगण = ३६५.२५६३६२८ सावन दिवस का नाक्षत्र सौर वर्षमान सिद्ध हुआ। इसी प्रकार महायुगीन कुदिन में सूर्य का महायुगीय भगणकाल मिलता है तो १ कुदिन (सावन-दिवस) में

$$\frac{\text{सू.म.युगीय भगण ४३२००००}}{\text{सू.म.युगीय कुदिन १५७७९०७४८७}} = \text{०·००२७३७८०३१}$$

सूर्य की दैनिक गति का भगणकालात्मक मान हुआ। ग्रहों की दिन-गति का भगण-कालमान बहुत उपयोगी होता है। उससे कल्पकुदिन को गुणने पर उस ग्रह का कल्प-भगण अथवा महायुगीन कुदिन को गुणने पर उसका महायुगीय भगण हम जान सकते हैं तथैव ग्रहों की दिन-गति भगण को चक्रांश ३६० से गुणने पर हमें उनकी मध्यम दिनगति का अंशादिमान प्राप्त होगा। जैसे, सूर्य के उपर्युक्त मध्यम दिनगति-भगण ०·००२७३७८०३१ को ३६०से गुणा किया तो अंशादि ०।५९'।८''·१९२८०९८ सूर्य की दैनिक मध्यम गति सिद्ध हुई। सूर्यातिरिक्त ग्रहों की मध्यम दिनगति के भगण का गणित मैंने स्वतंत्र रूपेण नहीं किया है ; क्योंकि इनके पर्याप्त सूक्ष्म शुद्ध मान कै० गोविंद सदाशिवजी आपटे पहले ही परिगणित कर चुके हैं जिन्हें पाठकों के उपयोगार्थ हम नीचे लिख रहे हैं—

कल्प-भगण-संख्या-विचार—

चंद्रस्य	दिनगति	भगणः	०·०३६६०११०१३९
चंद्रकेंद्रस्य	,,	,,	०·०३६२९१६४२५
राहोः	,,	,,	०·०००१४७२०१८८८
भौमस्य	,,	,,	०·००१४५५६४७२
बुधस्य	,,	,,	०·०११३६७६०७४
गुरोः	,,	,,	०·०००२३०८०९०९७
शुक्रस्य	,,	,,	०·००४४५०३६२६८५
शनेः	,,	,,	०·००००९२९४३५४२
अतिशनेः (हर्शल)	,,		०·००००३२५८५५५१
वरुणस्य (नेप्च्युन)	,,		०·००००१६६१४९८१५
सूर्य-उच्चस्य वर्षगति	भगणः		०·०००००८९७५९३३६
अयनस्यवर्ष गति	भगणः		०·००००३८७७९५९१

अर्थात् २५७८६·७५९ सौर वर्ष का १ अयन-भगण, तब १ कल्प = ४३२०००००००० सौर वर्ष में १६७५२८ अयन-भगण मन्मतेन सिद्ध होते हैं। श्रीआपटेजी ने कल्प-अयनभगण १६७४८८ तथा प्रत्येक अयनभगण के २५७९३ वर्षोपरान्त अयन-चलन की वार्षिक गति में १''·४८८ विकला की वृद्धि (कालान्तर-संस्कार) करने के लिए लिखा है—

वस्वष्ट सिंधु सप्तांगाब्जाः संपातपर्ययाः कल्पे।
अष्टाष्टमनुविलिप्ता गतिबीजं स्वं सहस्रभगणेशु॥

सृष्टयादि से कलियुगादि तक का अहर्गण-साधन—अहर्गण का अर्थ है 'दिन-समूह' (Heap of days) किसी निर्दिष्ट (गणनारम्भ) समय से अभीष्ट समय तक की दिन संख्या (दिन-समूह) को अहर्गण, द्युगण, द्युपिण्ड या दिनौघ कहते हैं। कल्पादि से कलियुगादि तक की वर्ष-संख्या १९७२९४४००० तथा एक सौर वर्षमान की दिन-संख्या ३६५·२५६३६२८ को हम गणित से ज्ञात कर चुके हैं तथा हमें यह भी मालूम है कि कल्पारम्भ से १७०६४००० वर्ष बाद सृष्ट्यारम्भ हुआ, अतः १९७२९-४४०००—१७०६४००० = १९५५८८०००० वर्ष, सृष्या-रम्भ से कलियुगारम्भ तक व्यतीत हुए ; इसको उक्त सौर वर्ष के सूक्ष्म मान ३६५·२५६३६२७९९८६५ से गुणा किया तो सावयव ७१४३९७६१४८७२·९९९९५६२ अहर्गण हुआ अर्थात् इस अहर्गण तुल्य दिनोपरान्त कलि-युगारम्भ हुआ ; उस दिन का वार और समय जानने के लिए अहर्गण के पूर्णांक में ७ का भाग दिया तो शेष ४ बचा। अतः सोमवारादि क्रम से गुरुवार हुआ। तथा दिन-दशमलव के अंक ·९९९९५६२ को घंटादि में परिणत करने पर २३ घं. ५९ मि. ५६·२ से. हुए अर्थात् गुरुवार को घं. २३ मि. ५९ से. ५६ बजे के बाद अर्धरात्रि में कलियुग का आरम्भ हुआ ; उस कलियुग का जिसके विषय में गो० तुलसीदासजी ने कहा है—कलिजुग सम जुग आन नहिं, जौ नर कर बिस्वास। गाइ राम गुनगन बिमल, भव तर बिनहि प्रयास॥ शास्त्र-वचन है—

आकृति सं. १

स्वल्पेनैव प्रयत्नेन धर्मः सिद्धयति वै कलौ। और 'यतो धर्मस्ततो जयः।'

नाक्षत्र एवं सांपातिक वर्षमान तथा वार्षिक अयन-चलन—

यहाँ तक हिंदूशास्त्रीय रीति से सावन दिवस (कुदिन) से लेकर ब्रह्मायु पर्यन्त बृहत्काल-परिमाण का सैद्धान्तिक (Theoritical) निर्वचन किया गया, अब उनका क्रियात्मक* (Practical) गणित-विधान भी जान लेना नितांत आवश्यक है। उसके बिना विश्व-खगोलशास्त्र में हिंदू-ज्योतिष-सिद्धान्त (Hindu Astronony) की मौलिकता, सर्वांगपूर्णता, विलक्षणता और विशिष्टता का यथार्थ ज्ञान नहीं हो सकता।

आकृति सं. १ में ध्रु = उत्तर ध्रुव, क = कदम्ब, उ. प. द. पू. क्रमशः उत्तर, पश्चिम, दक्षिण एवं पूर्व दिशा के सूचक हैं। अ ब = क्रांतिवृत्त-खंड, स म = विषुववृत्त-खण्ड, ♈ = बसन्त-संपात यानी सायन मेषादि बिंदु, जिसपर सूर्य के आने से उसका विषुवांश, क्रांत्यश और सायन भोगांश शून्य हो जाते हैं। क्रांतिवृत्त में सूर्य सदा ♈ ब दिशा में अपनी पूर्वाभिमुख गति से चलता रहता है और उसकी विरुद्ध दिशा में मध्यम वसन्त संपात ♈ अपनी आतिमंद मध्यमा गति से चलता है। अब यदि बसंत संपात ♈ क्रांतिवृत्त के किसी निश्चल बिन्दु या नक्षत्र तारे पर स्थिर रहे तो सूर्य ♈ से चलकर क्रांतिवृत्त में भ्रमण करता हुआ जब पुनः ♈ पर आयेगा तो उसके १ चक्र (३६० अंश) का भोग = भगण पूरा होगा। सूर्य को अपने चक्रभोग (भगणपूर्ति) में जितना समय लगता है वही नाक्षत्र सौर वर्षमान होता है एवं सूर्य बसन्त-संपात ♈ से चलकर जितने समय में पुनः ♈ पर आता है, वह सांपातिक सौर वर्षमान होता है। चूंकि ♈ क्रांतिवृत्त का कोई निश्चल बिन्दु नहीं, प्रत्युत वह विलोम गत्या सूर्य की विपरीत दिशा में ♈ अ की तरफ चलता है; अतः सूर्य बसन्त-संपात ♈ से चलकर क्रांतिवृत्त में भ्रमण करता हुआ जब पुनः बसन्त-संपात पर आयेगा तो वह अपनी पूर्व-स्थिति ♈ से ५०''·२ तुल्य पीछे हटकर ♈ १ पर रहेगा; इससे स्पष्ट है कि सांपातिक वर्षमान में सूर्य पूरे ३६० अंश का चक्रभोग (भगण-पूर्ति) नहीं करता, ♈₁ से ♈ तक के क्रांतिवृत्त-खंड = ५०''·२ का भोग बाकी रह जाता है जिसकी पूर्ति नाक्षत्र वर्षमान में होती है। अतएव नाक्षत्रिक वर्षमान से सांपातिक वर्षमान का यह सम्बन्ध सुनिश्चित होता है—

नाक्षत्रिक सौर वर्ष . सांपातिक सौर वर्ष =
$$३६०^\circ : (३६०^\circ\ ५०''·२) \cdots\cdots\cdots (१)$$

वेधशालाओं में विगत अनेकशः वर्षों के लगातार वेध के फलस्वरूप सांपातिक वर्षमान = ३६५·२४२२ मध्यम सावन दिवस परिज्ञात कर उससे उपर्युक्त सम्बन्धेन नाक्षत्र वर्षमान = ३६५·२५६४ सिद्ध किया गया है।* हम पहले परिभाषित कर आये हैं कि सूर्य के सायन मेष-संक्रमण से अग्रिम सायन मेष-संक्रमण तक का का काल सांपातिक वर्ष-मान होता है, तदनुसार खगोल-गणित के अध्येता यह सहज ही समझ सकते हैं कि धूनन (Nutation) संस्कार रहित स्पष्ट सूर्य को सायन (सचल) ♈ से चलकर पुनः वहाँ तक पहुँचने में जो सांपातिक वर्षमान तुल्य समय लगता है ठीक उतना ही समय मध्यम सूर्य को मध्यम बसन्त-संपात ♈ से चलकर पुनः वहाँ तक पहुँचने में लगता है। अतः मध्यम सायन सूर्य के विषुवांश में प्रति मध्यम सावन दिवस $(३६०^\circ \div ३६५·२४२२) = ५९'।८''·३३$ की वृद्धि होती है और मध्यम सायन सूर्य के इष्ट स्थानीय होराकोण में मध्यम सायन सूर्य का तात्कालिक विषुवांश जोड़ने से एतत् स्थानीय इष्ट सांपातिक कालांश होता है। अतः किसी दिन इष्ट स्थानीय सांपातिक काल = $त_१$, तात्कालिक मध्यम सायन सूर्य का होराकोण (नतकाल) = $ह_१$ तथैव उसका विषुवकाल = $र_१$ हो, तब

$$त_१ = ह_१ + र_१ \text{ होगा } \cdots\cdots\cdots\cdots (२)$$

उक्त स्थानिक इष्ट सांपातिक काल के १ दिन बाद उसका मान $त_२$ होगा; तब मध्यम सायन सूर्य का होरा कोण ३६० अंश (=२४ घं.) तथा उक्त सूर्य का विषुवांश ५९'।८''·३३ (= ३ मि. ५६.५५५ से.) अधिक रहेगा,

अतः $त_२=(ह_१+२४घं.)+(र_१+३ मि.५६·५५५से.)$. (३)

तब समीकरण (२) से $त_२ - त_१ = २४$ घं. ३ मि. ५६·५५५ से., किन्तु $त_२-त_१$ वह मध्यम सांपातिक काल है जो २४ घं. मध्यम सावनकाल के तुल्य है; इसलिये २४ घं. मध्यम सावकाल = २४ घं. ३ मि. ५६·५५५ से. मध्यम सांपातिक काल उपपन्न हुआ। ‥ ‥ (४)

सावन काल से सांपातिक काल के उपर्युक्त सम्बन्ध को हम निम्नोक्त अन्य प्रकार से भी ज्ञात कर सकते हैं—

जिस क्षण-विशेष में मध्यम बसन्त-संपात ♈ से मध्यम सायन सूर्य संयुक्त होता है उससे १ सांपातिक वर्ष बाद वह पुनः ♈ से संयुक्त होता है। इस अवधि में पृथ्वी अपनी धुरी पर मध्यम सायन सूर्य के सापेक्ष ३६५·२४२२ बार घूम जाती है जिनकी संज्ञा मध्यम सावन दिवस है और उनसे १ दिवस अधिक पृथ्वी को मध्यम बसन्त-संपात के सापेक्ष घूमने में लगता है। इस वास्ते ३६५·२४२२ मध्यम सावन दिवस = ३६६·२४२२ सांपातिक दिवस (५) तदनुसार २४ घं. मध्यम सावन दिवस =

$$\left(१+\frac{१}{३६५·२४२२}\right) २४ \text{ घं. सांपातिक काल} \ldots\ldots (६)$$

*$(३६०^\circ-५०''·२=)३५९·९८६०५ : ३६५·२४२२ :: ३६० : ३६५·२५६४$ (नाक्षत्र वर्षमान)

किंवा २४ घं. म. सावन दिवस = १·००२७३७९ × २४= २४·०६५७०९६ = घंटादि २४।३।५६·५५५ मध्यम सांपातिक काल, यही समीकरण (४) से हमें मिला है। उपर्युक्त समीकरण (६) में प्रयुक्त ३६५·२४२२ = सांपातिक वर्षमान है जिससे हमें १ मध्यम सावन दिवस के तुल्य सांपातिक काल मिलता है ; तथैव उक्त समीकरण में नाक्षत्र वर्षमान = ३६५·२५६४ का उपयोग करने पर हमें १ मध्यम सावन दिवस के तुल्य नाक्षत्र काल मिलेगा ; अतएव—

$$\text{२४ घं. का १ म. सावन दि.} = \left(१ + \frac{१}{३६५·२५६४}\right) \text{२४घं.}$$

नाक्षत्र काल, किंवा २४ घं. मध्यम सावन दिवस = १·००२७३७८ × २४ = २४·०६५७०७२ = घंटादि २४।३।५६·५४६ नाक्षत्र काल सिद्ध हुआ। इस प्रकार १ मध्यम सावन दिवस में घंटादि २४।३।५६·५५५ सांपातिक काल से ०·००९ सेकेंड अल्प घंटादि २४।३।५६·५४६ नाक्षत्र काल सिद्ध होता है। नाक्षत्र काल और सांपातिक काल का यह अन्तर अत्यल्प होने पर भी दोनों कालमानों के भिन्नत्व का प्रतिपादक है ; किंतु पाश्चात्य खगोलशास्त्र (Western Astronomy) में दोनों कालमान के लिये एक ही शब्द 'सिडीरियल टाइम' (Sidereal Time) का प्रयोग किया जाता है। वहाँ एक ओर सांपातिक दिवस के लिये 'सिडीरियल डे' (Sidereal day) शब्द प्रयुक्त होता है तो दूसरी ओर नाक्षत्र वर्ष के लिए भी सिडीरियल ईअर (Sidereal year) शब्द का प्रयोग किया जाता है और तब सांपातिक वर्ष को 'ट्रापिकल ईअर' (Tropical year) कहा जाता है। यह उनके शास्त्र की बुनियादी त्रुटि है जिसके कारण अंग्रेजी के माध्यम से भारतीय खगोलशास्त्र का अध्ययन करनेवालों को भारी भ्रमावर्त में चक्कर खाना पड़ता है। यहाँ उच्चगणित के अध्येताओं को यह बता देना आवश्यक है कि उक्त ०·००९ सेकेंड का अन्तर होने की बात सामान्य गणितानुसार कही गयी है। त्रिकोणमितीय गणित के द्वारा उक्त अन्तर ०·००८ सेकेंड आयेगा, जैसाकि कै० श्री पं० गणपतिदेवजी शास्त्री की पुस्तक में लिखा है। एतदर्थ प्रस्तुत लेख के क्षेत्र–सं. १ में चापजात्य त्रिभुज △ ♈︎, ल. ♈︎ को देखिए। एक सांपातिक वर्ष में बसन्त संपात ♈︎ से क्रांतिवृत्त में ५०″·२ चलकर ♈︎₁ तक आता है। अतः उक्त त्रिभुज की भुजा ♈︎♈︎₁ का मान ५०″·२ हुआ। दूसरी भुजा ♈︎₁ ल विषुवद्वृत्त स म पर लम्ब है ; ∠ल♈︎♈︎₁ परम क्रांतिकोण = २३°।२७′ है, विषुवद्वृत्त-खंड रूप भुजा ल ♈︎ का मान ज्ञातव्य है जो स्पष्टतः वार्षिक अयनचलन् ५०″·२*का कालात्मक मान है ; उससे दैनिक अयनचलन का जो काल ज्ञात होगा, वही नाक्षत्र एवं सांपतिक दिवस का वास्तविक अन्तर होगा और वह सेकेंड के दशमलव तीन स्थान तक ०·००८ ही होगा।

---

*पृथ्व्याः स्वभ्रमणवशान्निरक्षभागाः क्षिप्ताः स्युर्बहिरुडुपार्कजाच्च तत्र।
आकर्षाच्छरदि शनैरितः प्रतीच्यां संपातौ द्व्यणुखशरोन्मिता विलिप्ताः॥

विवरण—पृथ्व्या दैनंदिनगत्या स्वभ्रमणवशान्निरक्षभागा गतिबाहुल्यादलाबुमध्यभागवद् बहिः क्षिप्ताः स्युः। तस्मान्निरक्षभागस्थपृथ्व्या व्यासोदक्षिणोत्तरध्रुवयायिव्यासात्किंचिदधिको वर्तते। सूर्यचंद्रमसोरस्य भागस्योपर्याकर्षणं तस्मात्कारणादधिकमेव। पृथ्व्या इतरभागोपरि तदाकर्षणं किंचिदल्पीयः। एवमाकर्षणस्य न्यूनाधिकत्वात्संपातस्थाने न स्थिरे ते प्रत्यब्दं द्व्यणुखशर ५०·२ विकलाः प्रतीच्यां चलतः। बसन्त-संपातः शरसंपातश्च द्वौ प्रसिद्धावेव। संपातगतिरेवायनगतिर्ज्ञेया। (सर्वानन्द करणम्)

वेधेन नाक्षत्रवर्षमानानयनम्—यदा कस्माच्चिद् नक्षत्रात्कोऽपि ग्रहः स्वगत्या भचक्रं प्रवस्य पुनस्तत्रैवायाति तदा तत्प्रवाकालस्तद्ग्रहस्य भगणकालो भवति। सूर्यस्य भगणकालोऽस्माकं नाक्षत्रवर्षमानमेव; किन्तु यन्नक्षत्रं सूर्यो याति तन्नदृश्यते। तस्मात्सूर्यान्नियतान्तरे स्थितं नक्षत्रं वेध्यं भवेत् तस्माच्च वर्षमानं निश्चेयम्। तद्यथा नाक्षत्रदिनं सावनाह्नालघुतरं, तस्माद्यदि वेधस्य प्रथमे दिने ग्रहस्य याम्योत्तरलंघनकालो मध्यमकाल घटी ४० इति कल्प्यते, तर्ह्यन्यस्मिन्दिने स कालः घट्यादि ३९।५०।१५ तदासन्नो वा भवेत्। एवं प्रत्यहं दशपलेभ्यः किञ्चिन्न्यूनाधिकगत्या लंघनकालो ह्रियते। साधारणतोऽष्टमासावधौ स कालः शून्य घटिकापर्यतं न्यूनो भूत्वाऽनंतरं पुनः षष्टिरेकोनषष्टिरिति क्रमेण न्यूनो भवेत् एवं पञ्चषष्ट्युत्तरत्रिशतीदिने घट्यादि ४०।२।३३।५० वा तत्सन्निधौ वा लंघनकालो भवेत्। अन्यस्मिन्नहनि स एव कालो घट्यादि ३९।५२।३३।४९ लभ्यते। पूर्वदिने पलादि २।३३।४९ धनमन्यदिने पलादि ७।२६।११ ऋणं वेधस्य प्रथम दिन कालतुलनया लभ्यते। अत्र धनर्णयोगस्तु दशपलान्येव। अतोऽनुपातो यदि लंघनसमये दशपलमितकालेन षष्टिघटिका ह्रासस्तर्हि पलादि २।३३।४९ समये किमिति? लब्धमुत्तरं घटिकाद्यं १५।२२।५४ अनेन युक्तानि पञ्चषष्ट्युत्तर त्रिशतीदिनान्येव सूर्यभगणकालो वा नाक्षत्रवर्षमानं भवेत्। (सर्वानन्द लाघवम्)

शाश्वत जीवन-कैलेण्डर

शताब्दि (Centuaries)

ईस्वी-पूर्व B.C.	१	२	३	४	५	६	७ या ० ←ध्रुवांक
	३००१	३०११	३२०१	२६०१	२७०१	२८०१	२९०१
	२३०१	२४०१	२५०१	१९०१	२००१	२१०१	२२०१
	१६०१	१७०१	१८०१	१२०१	१३०१	१४०१	१५०१
	९०१	१००१	११०१	५०१	६०१	७०१	८०१
	२०१	३०१	४०१			१	१०१
ईस्वी सन् A. D.	५००	४००	३००	२००	१००	०	
पुरातन प्रणाली (जूलीय Old Style	१२००	११००	१०००	९००	८००	७००	६००
			१७००	१६००	१५००	१४००	१३००
		१५००					
ईस्वी सन् A.D.नूतन प्र-णालीग्रेगरीय NewStile	१६००	१९००		१८००		१७००	
	२०००	२३००		२२००		२१००	

वर्ष (ODD YEARS)

१	२	३	४	५	६	७ या ० ←ध्रुवांक
१	२	३	...	४	५	६
७	...	८	९	१०	११	...
१२	१३	१४	१५	...	१६	१७
१८	१९	...	२०	२१	२२	२३
...	२४	२५	२६	२७	...	२८
२९	३०	३१	...	३२	३३	३४
३५	...	३६	३७	३८	३९	..
४०	४१	४२	४३	...	४४	४५
४६	४७	...	४८	४९	५०	५१
...	५२	५३	५४	५५	...	५६
५७	५८	५९	...	६०	६१	६२
६३	...	६४	६५	६६	६७	...
६८	६९	७०	७१	...	७२	७३
७४	७५	...	७६	७७	७८	७९
...	८०	८१	८२	८३	...	८४
८५	८६	८७	...	८८	८९	९०
९१	...	९२	९३	९४	९५	...
९६	९७	९८	९९	...	...	...

मास (Months)

ध्रुवांक→	१	२	३	४	५	६	७ या ० ←ध्रुवांक
सामान्य वर्ष Ordinary Years	अगस्त	फरवरी	जून	सितम्बर	अप्रैल	जनवरी	मई
		मार्च	...	दिसम्बर	जुलाई	अक्टूबर	...
		नवम्बर					
प्लुत-वर्ष Leap Years	फरवरी	...	...	...	जनवरी	...	...

यों तो कहने के लिए राष्ट्रभाषा हिंदी में चार हजार वर्षों का कैलेण्डर छप चुका है, लेकिन वस्तुतः वह पूर्णतया शुद्ध नहीं है। इतनी विस्तृत अवधि में उससे सभी तारीखों के ठीक 'वार' ज्ञात नहीं हो पाते। अतः हम पाठकों को ऐसा कैलेण्डर भेंट कर रहे हैं जिससे ईस्वी पूर्व के ३२०० वर्ष से ईस्वी सन् २३०० कुल साढ़े पाँच हजार वर्षों तक के

किसी भी वर्ष की बिलकुल सही तारीख का 'वार' तत्काल बड़ी सरलता से ज्ञात हो जाता है। इतना ही नहीं, विज्ञ पाठक इस कैलेण्डर को रचना-विधि पर जरा ध्यान देंगे तो उन्हें उस क्रम का भी सहज ही बोध हो जायेगा जिसके अनुसार इसके हर ध्रुवांक की तालिकायें बनाई गई हैं और उसी क्रम से पाठकगण चाहे जितने अधिक आगे-पीछे के वर्षों का कैलेण्डर आसानी से बना सकते हैं। इस तरह यह शाश्वत जीवन-कैलेण्डर अपने नाम के अनुरूप वस्तुतः 'शाश्वत' है जो ज्योतिषियों विशेषतः पञ्चाङ्गकर्ताओं के लिए भी महान् उपयोगी है; क्योंकि इसके द्वारा किसी भी तारीख के अहर्गण का 'वार' निश्चितरूप से जानकर वे अहर्गण की शुद्धता जाँच सकते हैं।

कैलेण्डर की प्रयोग-विधि—इसमें सबसे पहले(ऊपर)१ से ७ तक के ध्रुवांकों के नीचे ईसवी-पूर्व के शताब्दि वर्ष १ से लेकर ३२०१ तक दिये गये हैं, तत्पश्चात् उन्हीं ध्रुवांकों के नीचे ईसवी सन् की पुरातन प्रणाली तथा नूतन प्रणाली के शताब्दि-वर्ष (० से लेकर आगामी २३०० तक) दिये गये हैं। उसके नीचे शताब्दि के स्फुट वर्षों के लिये भी पूर्ववत् १ से ७ तक ध्रुवांक हैं। अन्त में १ से ७ तक के ही ध्रुवांक सामान्य वर्ष तथा प्लुत-वर्ष के प्रत्येक मास के लिये दिये गये हैं। अब जिस तारीख का वार जानना हो, उसकी शताब्दि, वर्ष, मास के ध्रुवांकों में तारीख की संख्या जोड़ें; जोड़ ७ से अधिक होने पर उसमें ७ का भाग दे दें; शेष को रविवार से गिनने पर अभीष्ट तारीख का वार ठीक-ठीक ज्ञात हो जायेगा।

उदहारण—मान लो, १ जनवरी सन् १९६९ ई० का वार ज्ञात करना है; अतः ईसवी सन् नूतन प्रणाली के शताब्दि १९०० का ध्रुवांक देखा तो उसके सिरे पर २ संख्या(ध्रुवांक की) मिली; इसी तरह ६१वें वर्ष का भी ध्रुवांक २। मिला सन् १९६९ सामान्य वर्ष है। अतः सामान्य वर्ष की जनवरी मास का ध्रुवांक ६ लिया। इन तीनों ध्रुवांकों के साथ अभीष्ट तारीख को जोड़ दिया (२+२+६+१=) तो योग ११ हुआ; उसमें ७ का भाग देने पर शेष ४ बचा। अतः रविवार से चौथा वार बुधवार १ जवनरी सन् '६९ का वार ज्ञात हो गया।

नोट—ईसवी कैलेण्डर की पुरातन प्रणाली रूस के अलावा अन्य सब यूरोपीय देशों में ता० ४ अक्टूबर १५८२ ई० गुरुवार के दिन खत्म हो गयी थी और दूसरे दिन शुक्रवार से ५ अक्टूबर के बजाय, १५ अक्टूबर सन् १५८२ का आरम्भ किया गया एवं बीच के १० दिनों का लोप कर दिया गया था। अतः ता. १५-१०-१५८२ से १६०० शताब्दि के पूर्व तक किसी तारीख के लिए ६५०० शताब्दि का ध्रुवांक ५ के बजाय २ ग्रहण करना चाहिये। यह भी स्मरणीय है कि इंग्लैण्ड में पुरातन प्रणाली की तारीख ३ सितम्बर १७५२ ई० को पालियामेंट की आज्ञानुसार १४ सितम्बर मानकर इस नूतन प्रशाली (ग्रेगरीय) ईसवी सन् का प्रचलन हुआ था। अतः वहाँ की इससे पूर्ववर्ती तारीखों का वार-ज्ञान पुरातन (जुलीय) प्रणाली के ध्रुवांक के द्वारा करना चाहिये।

सन्, शक, संवत्सर संबन्धी जरूरी जानकारी

शक संवत् + ७८ = ई. सन् (मार्च से दिसम्बर) आग
" + ७९ = अग्रिम ई. सन् की जनवरी से मार्च तक
शकवर्ष + ३१७९ = कलि-संवत्
" + १३५ = विक्रम-संवत्

चैत्र शुक्ल प्रतिपदारम्भ ता.१५/१६ मार्च से १३/१३ अप्रैल के मध्य होता है।

चैत्रादि विक्रमसंवत्–५६ = ई० सन्(मार्च से दिस.), आगे–
" " –५६ = " " (जनवरी से मार्च)

ता. १७/१८ फरवरी गुरु/शुक्रवार ३१०२ ई० पूर्व या – ३१०१ जूलियन ई. में ता. १७ फरवरी गुरुवार को उज्जयिनी की मध्यम मध्यरात्रि में, अथवा ता. १७ फरवरी – ३१०१ ई. को विश्वकाल G.M.T. से घं.१८ मि. ५७ बजे, अथवा ता. १८ फरवरी शुक्रवार – ३१०१ ई० को भा.स्टैं.टा. से घं. २४ (०) मि. २७ बजे कलियुगारम्भ हुआ था।

कलिसंवत् – ३१०१ = ई. सन् (अप्रैल से दिस.) आगे–
" – ३१०० = " " (जनवरी से अप्रैल)

नोट—आजकल प्रायः १५/१६ अप्रैल को मध्यम सूर्य का मेष-संक्रमण अर्थात् कलि-संवत्सरारम्भ होता है। अतः कलि-सवत् = ईसवी वर्ष + ३१०० = जनवरी से मध्य अप्रैल (चैत्र-अमावस्या) तक, उसके बाद ईसवी वर्ष + ३१०१ = कलि-संवत् अप्रैल-मध्य चैत्र शुक्ल १ से आगामी दिसम्बर तक।

बंगला संवत् = ई. वर्ष – ५०३ मध्य-अप्रैल से दिसंबर, उसके पहले ई. वर्ष – ५९४ जनवरी से मध्य-अप्रैल तक।

कोल्लम संवत् = ईसवी-वर्ष – ८२४ मध्य-अगस्त से दिसम्बर तक, उसके पूर्व ईसवी वर्ष – ८२५ जनवरी से मध्य-अगस्त तक।

चान्द्र-सौर-संवत्-शालिवाहन शक-संवत् = ई.वर्ष–७८ मार्च/अप्रैल (चैत्र शुक्ल १) से दिसम्बर तक, उसके पूर्व शालिवाहन शक-संवत् = ईसवी वर्ष – ७९ जनवरी से मार्च/अप्रैल तक।

विक्रम संवत् = ई. वर्ष + ५६ जनवरी से मार्च/अप्रैल तक, उसके बाद विक्रम संवत = ईसवी वर्ष+५७ मार्च/अप्रैल चैत्र शुक्ल १ से दिसम्बर तक।

कलियुगारम्भ १७ फरवरी ३१०२ ईसा-पूर्व को ५८८४६५ जूलियन अहर्गण।

१९०६ शकारम्भ ता. २ अप्रैल सन् १९८४ ई. को जूलियन अहर्गण २४४५७९३।

जूलियन डे नंबर (अहर्गण) में +७१४४०१७०८८१६२ जोड़ने सृष्ट्यादि अहर्गण होता है। जूलियन डे (अहर्गण) में—५८८४६५ घटाने से कलियुगादि अहर्गण होता है।

घंटादि से घट्यादि परिवर्त-सारणी

घं.	=दि *१	घटी *२	पल *३
मि.	=घं *१	पल *२	वि. *३
से.	=प. *१	वि. *२	प्रति *३
↓	*१	*२	*३
१	—	०२	३०
२	—	०५	००
३	—	०७	३०
४	—	१०	००
५	—	१२	३०
६	—	१५	००
७	—	१७	३०
८	—	२०	००
९	—	२२	३०
१०	—	२५	००
११	—	२७	३०
१२	—	३०	००
१३	—	३२	३०
१४	—	३५	००
१५	—	३७	३०
१६	—	४०	००
१७	—	४२	३०
१८	—	४५	००
१९	—	४७	३०
२०	—	५०	००
२१	—	५२	३०
२२	—	५५	००
२३	—	५७	३०
२४	—	६०	००
२५	०१	०२	३०
२६	०१	०५	००
२७	०१	०७	३०
२८	०१	१०	००
२९	०१	१२	३०
३०	०१	१५	००
३१	०१	१७	३०
३२	०१	२०	००
३३	०१	२२	३०
३४	०१	२५	००
३५	०१	२७	३०
३६	०१	३०	००
३७	०१	३२	३०
३८	०१	३५	००
३९	०१	३७	३०
४०	०१	४०	००
४१	०१	४२	३०
४२	०१	४५	००
४३	०१	४७	३०
४४	०१	५०	००
४५	०१	५२	३०
४६	०१	५५	००
४७	०१	५७	३०
४८	०२	००	००
४९	०२	०२	३०
५०	०२	०५	००
५१	०२	०७	३०
५२	०२	१०	००
५३	०२	१२	३०
५४	०२	१५	००
५५	०२	१७	३०
५६	०२	२०	००
५७	०२	२२	३०
५८	०२	२५	००
५९	०२	२७	३०
६०	०२	३०	००

घट्यादि से घंटादि

घटी=	घं. *१	मि. *२
पल=	मि. *१	से. *२
वि.प.	से. *१	प्र.से *२
↓	*१	*२
०१	००	२४
०२	००	४८
०३	०१	१२
०४	०१	३६
०५	०२	००
०६	०२	२४
०७	०२	४८
०८	०३	१२
०९	०३	३६
१०	०४	००
११	०४	२४
१२	०४	४८
१३	०५	१२
१४	०५	३६
१५	०६	००
१६	०६	२४
१७	०६	४८
१८	०७	१२
१९	०७	३६
२०	०८	००
२१	०८	२४
२२	०८	४८
२३	०९	१२
२४	०९	३६
२५	१०	००
२६	१०	२४
२७	१०	४८
२८	११	१२
२९	११	३६
३०	१२	००
३१	१२	२४
३२	१२	४८
३३	१३	१२
३४	१३	३६
३५	१४	००
३६	१४	२४
३७	१४	४८
३८	१५	१२
३९	१५	३६
४०	१६	००
४१	१६	२४
४२	१६	४८
४३	१७	१२
४४	१७	३६
४५	१८	००
४६	१८	२४
४७	१८	४८
४८	१९	१२
४९	१९	३६
५०	२०	००
५१	२०	२४
५२	२०	४८
५३	२१	१२
५४	२१	३६
५५	२२	००
५६	२२	२४
५७	२२	४८
५८	२३	१२
५९	२३	३६
६०	२४	००

घं.मि.से से घटी, पल; विपल बनाने तथा घटी, पल, विपल से घं. मि.से. बनाने की सारणियाँ अभी तक हिन्दी में प्रकाशित नहीं हुई थीं, सो यहाँ दी जा रही हैं; साथ ही घंटादि एवं घटचादि को राश्यंशादि में बदलने तथा अंशादि को घंटादि में बदलने की सारणियाँ भी प्रकाशित की जा रही हैं जिनकी गणित-ज्योतिष में प्रायः आवश्यकता पड़ती रहती हैं।

घंटा व घटी से राश्यंश परिवर्तन-सारणी

घंटी	घटा	अंश	राशि अं.
१	२॥	१५	०-१५
२	५	३०	१- ०
३	७॥	४५	१-१५
४	१०	६०	२- ०
५	१२॥	७५	२-१५
६	१५	९०	३- ०
७	१७॥	१०५	३-१५
८	२०	१२०	४- ०
९	२२॥	१३५	४-१५
१०	२५	१५०	५- ०
११	२७॥	१६५	५-१५
१२	३०	१८०	६- ०
१३	३२॥	१९५	६-१५
१४	३५	२१०	७- ०
१५	३७॥	२२५	७-१५
१६	४०	२४०	८- ०
१७	४२॥	२५५	८-१५
१८	४५	२७०	९- ०
१९	४७॥	२८५	९-१५
२०	५०	३००	१०- ०
२१	५२॥	३१५	१०-१५
२२	५५	३३०	११- ०
२३	५७॥	३४५	११-१५
२४	६०	३६०	१२- ०

१ घटी=६अंश, २ घटी=१२ अंश। पल विपल का फल निम्न सारणी से लें। पल का फल अंश-कला तथा विपल का फल कला-विकला समझें।

पल विप.	अं.क. क.वि	पल विपल	अं. क. क.वि
१	०- ६	२२	२-१२
२	०-१२	२४	२-२४
३	०-१८	२६	२-३६
४	०-२४	२८	२-४८
५	०-३०	३०	३- ०
६	०-३६	३२	३-१२
७	०-४२	३४	३-२४
८	०-४८	३६	३-३६
९	०-५४	३८	३-४८
१०	१- ०	४०	४- ०
११	१- ६	४२	४-१२
१२	१-१२	४४	४-२४
१३	१-१८	४६	४-३६
१४	१-२४	४८	४-४८
१५	१-३०	५०	५- ०
१६	१-३६	५२	५-१२
१७	१-४२	५४	५-२४
१८	१-४८	५६	५-३६
१९	१-५४	५८	५-४८
२०	२- ०	६०	६-००

मि., से., प्र. से. अंश, कला विकला, प्र.विकला परिवर्त-सारणी

मि.	=अ.	क. वि.	मि.	=अ.	क. वि.
मिनट	=अंश *१	कला *२	मिनट	=अ. *१	कला *२
सेकेंड	=कला *१	विक. *२	सेकेंड	=क. *१	विक. *२
प्र.सेकें	=विक. *१	प्र.वि. *२	प्र.से.	=वि *१	प्र.वि. *२
↓	*१	*२	↓	*१	*२
१	०	१५	३१	७	४५
२	०	३०	३२	८	०
३	०	४५	३३	८	१५
४	१	०	३४	८	३०
५	१	१५	३५	८	४५
६	१	३०	३६	९	०
७	१	४५	३७	९	१५
८	२	०	३८	९	३०
९	२	१५	३९	९	४५
१०	२	३०	४०	१०	०
११	२	४५	४१	१०	१५
१२	३	०	४२	१०	३०
१३	३	१५	४३	१०	४५
१४	३	३०	४४	११	०
१५	३	४५	४५	११	१५
१६	४	०	४६	११	३०
१७	४	१५	४७	११	४५
१८	४	३०	४८	१२	०
१९	४	४५	४९	१२	१५
२०	५	०	५०	१२	३०
२१	५	१५	५१	१२	४५
२२	५	३०	५२	१३	०
२३	५	४५	५३	१३	१५
२४	६	०	५४	१३	३०
२५	६	१५	५५	१३	४५
२६	६	३०	५६	१४	०
२७	६	४५	५७	१४	१५
२८	७	०	५८	१४	३०
२९	७	१५	५९	१४	४५
३०	७	३०	६०	१५	०

सारणी के अभाव में अंशादि को घटचादि में बदलने के लिए अंश में ६ का भाग देने से लब्धि घटी होगी, शेष को १० से गुणा करने पर पल होगा। कला में ६ का भाग देने से लब्धि पल एवं शेष को १० से गुणा करने पर विपल होगा; इसी तरह विकला में ६ का भाग देने से लब्धि विपल तथा शेष को १० से गुणा करने पर प्रति-विपल होगा।

अंशादि से घंटादि परिवर्तन-सारणी

अंश=घं. मि. से.		
अंश	=घं. *१	मिनिट *२
कला	=मिनि *१	सेकेंड *१
विक	=सेकेंड *१	प्र.वि *२
↓	*१	*२
१	०	४
२	०	८
३	०	१२
४	०	१६
५	०	२०
६	०	२४
७	०	२८
८	०	३२
९	०	३६
१०	०	४०
११	०	४४
१२	०	४८
१३	०	५२
१४	०	५६
१५	१	०
१६	१	४
१७	१	८
१८	१	१२
१९	१	१६
२०	१	२०
२१	१	२४
२२	१	२८
२३	१	३२
२४	१	३६
२५	१	४०
२६	१	४४
२७	१	४८
२८	१	५२
२९	१	५६
३०	२	०
४५	३	०
६०	४	०
७५	५	०
९०	६	०
१०५	७	०
१२०	८	०
१३५	९	०
१५०	१०	०
१६५	११	०
१८०	१२	०

एकादशी व्रत-निर्णय

सब व्रतों के धर्मशास्त्रीय निर्णय की अपेक्षा एकादशी व्रत का निर्णय बहुत कठिन है तथा सामान्य विद्वानों को शास्त्र देखने पर भी भ्रम एवं सन्देहोत्पादक है। अतः यावत् शास्त्रीय वचनों की परस्पर संगति और अविरोध से इस व्रत के सुलभ रीत्या यथार्थ निर्णय का संक्षिप्त प्रकार सोदाहरण यहाँ प्रकाशित किया जा रहा है।

प्रथम तिथि और उसके वेधों के प्रकार जान लेना आवश्यक है। तिथि दो प्रकार की होती है : १. सम्पूर्णा (शुद्धा) २. सखण्डा (विद्धा)। सूर्योदय से लेकर दूसरे दिन के सूर्योदय तक ६० घटी रहनेवाली तिथि को पूर्णा कहते हैं और इसी बीच में दूसरी तिथि आ जाय तो वह सखण्डा कहलाती है। सखण्डा भी दो प्रकार की होती है: १. सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक रहनेवाली एवं शिवरात्रि इत्यादि व्रतों में अर्धरात्रि तक रहनेवाली शुद्धा और इससे अन्य विद्धा।

तिथियों का वेध भी दो प्रकार का होता है, १. प्रातर्वेध २. सायं-वेध। यह दोनों वेध सामान्यतः ६ घटी का होता है ; कहीं प्रातःवेध विशेषतः ४ घटी का भी कहा गया है ; जैसे, प्रातःवेध में तिथि का मान सूर्योदय काल से ६ (या कम-से-कम ४ घटी) का हो तो वह अग्रिम तिथि को वेधित करेगी, इससे अल्पमान की होने पर स्वतः अग्रिम तिथि द्वारा वेधित होगी। इसी प्रकार सायंवेध ये सूर्यास्त से न्यूनतम ६ घटी पूर्व जिस तिथि का आरम्भ होगा, वह पूर्ववर्ती तिथि का वेध करेगी, अन्यथा स्वतः उससे वेधित होगी। यह तिथि विषयक सामान्य वेध-विचार है ; किन्तु एकादशी व्रत-निर्णय में दशमी तिथि के विशेष वेधों का विचार किया जाता हैं।

एकादशी व्रत के मुख्य भेद चार हैं एवं तदनुसार ४ प्रकार के वेधों के आधार से उनका निर्णय किया जाता है। १. स्मार्त = ६० घटी का वेध, २ वैष्णव = ५६ घटी का वेध, ३. रामानुज एवं बल्लभमतानुयायी वैष्णव = ५५ घटी का वेध, ४. निम्बार्क सम्प्रदायके चक्राङ्कित महाभागवतों का वेध = ४५ घटी का है अर्थात् सूर्योदय-समय में दशमी हो तो स्मार्त, सूर्योदय से पहले ४ घटी के भीतर दशमी हो तो वैष्णव, सूर्योदय से पूर्व ५ घटी के भीतर दशमी हो तो रामानुज एवं बल्लभ-सम्प्रदाय के वैष्णवजन तथा सूर्योदय से पूर्व १५ घटी के भीतर दशमी उपलब्ध हो तो निम्बार्क सम्प्रदाय के महाभागवत उस एकादशी को दशमीविद्धा मानते हैं। दशमीविद्धा एकादशी में व्रत करना सर्वानुमतेन वर्जित है। अब यहाँ विशिष्ट निर्णायक नियम बतलाये जाते हैं—

१. एकादशी विद्धा हो या शुद्धा, किन्तु उसकी पारणा के लिए दूसरे दिन द्वादशी प्राप्त हो तो वह स्मार्तों के व्रतोपवास योग्य होती है। गृहस्थों को त्रयोदशी में पारण का निषेध है।

२. सूर्योदय से ४ घटी पूर्व तक अरुणोदय-काल कहलाता है। अरुणोदयविद्धा एकादशी सर्व वैष्ववों को त्याज्य होती है अर्थात् यदि दशमी ५६ घटी से १ पल भी अधिक हुई तो उस एकादशी को वैष्णवमात्र त्याग कर अगली द्वादशीतिथि में एकादशी का व्रत करते हैं।

३. इसी भाँति यदि दशमी ५५ घटी से किञ्चित् भी अधिक हुई तो रामानुज एवं बल्लभ-सम्प्रदाय के वैष्णव-जन उस एकादशी का व्रत अगले दिन द्वादशी में करते हैं।

४. केवल निम्बार्क सम्प्रदाय के चक्राङ्कित महाभागवत (वैष्णवजन) कपाल-वेधी एकादशी का त्याग कर द्वादशी में व्रत करते हैं अर्थात् दशमी ४५ घटी से १ पल भी अधिक होने से एकादशी का कपाल-वेध करती है। अतः उपर्युक्त सम्प्रदाय के वैष्णवों के लिए कपालवेधी एकादशी त्याज्य होती हैं, अन्य सब स्मार्त एवं वैष्णवों का व्रत पूर्व दिन एकादशी को ही होता है।

उपर्युक्त वेधजन्य विशिष्ट स्थितियों में एकादशी का व्रत द्वादशी में करनेवाले वैष्णवजन को त्रयोदशी में पारण का दोष नहीं है।

एकादशी के क्षय, वृद्धि की स्थिति में विचार—प्रथम दिन सम्पूर्ण एकादशी के उपरान्त दूसरे दिन किञ्चित भी एकादशी प्राप्त हो तो सर्व वैष्णव एवं स्मार्त भी दूसरे ही दिन व्रत करते हैं; काशी की जनपदीय बोली में इसी की एकादशी का सठिया जाना कहते हैं। एकादशी की वृद्धि होने पर हेमाद्रि के मतानुसार दोनों दिन एकादशी का उपवास करना चाहिए। एकादशी की वृद्धि में वैष्णव-मत से पर दिन में द्वादशी न हो तो विद्ध भी शुद्ध एकादशी मानी जाती है एवं पर दिन में द्वादशी हो तो शुद्ध भी विद्ध एकादशी मानी जाती है। उदय-काल में थोड़ी-सी एकादशी, मध्य में पूरी द्वादशी और अन्त में किञ्चित त्रयोदशी हो तो वह महत्पुण्यदायिका त्रिस्पृशा योगवती एकादशी होती है। उसमें व्रत करनेवाले वैष्णवादि को त्रयोदशी में पारण करने से महत् पुण्य होता है, यथा—'कलाप्येकादशी यत्र परतो द्वादशी न चेत्। तत्र क्रतुशतं पुण्यं त्रयोदश्यां तु पारणम् ॥' स्मार्त तो पूर्व दिन (दशमी को) व्रत कर उदया एकादशी के दिन द्वादशी लगने पर पारण करते हैं।

एकादशी का क्षय हो तो स्मार्त दशमी को व्रत कर अगले दिन द्वादशी में पारण करें तथा सर्व वैष्णवजन द्वादशी में व्रत कर त्रयोदशी में पारण करें। एकादशी के क्षय होने पर उस एकादशी के प्रशस्त नक्षत्र का द्वादशी से योग हो तो स्मार्त भी दशमीविद्धा में व्रत न कर द्वादशी में ही व्रत करें। द्वादशी का पहला चरण 'हरिवासर' संज्ञक होता है; उसको सदैव पारण में वर्जित करना।

शुद्ध या विद्ध एकादशी हो और द्वादशी की वृद्धि हो तो माधव के मत से स्मार्तों का व्रत एकादशी में और वैष्णवों का द्वादशी में होगा, हेमाद्रि के मत से सबका द्वादशी में ही व्रतोपवास होगा। आजकल माधव के मत से ही एकादशीव्रत का निर्णय किया जाता है। दशमी तिथि के क्षयके-विषय में कहा है—'नवमी पलमेकं तु दशमी च क्षयंगता। तत्र एकादशी त्यक्त्वा द्वादशीं समुपोषयेत् ॥' अर्थात् यदि नवमी एक पल भी हो और दशमी का क्षय हो गया हो तो दूसरे दिन की एकादशी को पूर्वविद्धा मानकर त्याग दे और तीसरे दिन द्वादशी को (एकादशी का) व्रत करे; किन्तु वस्तुतः उदया नवमी और क्षय दशमी दोनों के घटी पल का योग ५६ घटी में अधिक हो तभी एकादशी पूर्वविद्धा होती है, अन्यथा नहीं।

हरिवासर का विशेष विचार—आषाढ़ शुक्ल द्वादशी को अनुराधा, भाद्रपद शुक्ल द्वादशी को श्रवण, कार्तिक शुक्ल द्वादशी को रेवती नक्षत्र के योग में श्रीहरि का वास रहने में उसकी 'हरिवासर' संज्ञा है। ऐसा योग पड़ने पर एकादशी व्रत के अतिरिक्त द्वादशी का भी व्रत (दो व्रत) करना अति पुण्यप्रद है। इसमें एकादशी के पारण-लोप का दोष नहीं होता; क्योंकि दोनों तिथियों और व्रतों के एक ही देवता श्रीविष्णु हैं। वैष्णवों के लिए तो यह अवश्य कर्त्तव्य है। केवल एकादशी का व्रत करनेवाले स्मार्तों को उक्त हरिवासर-योग में एकादशी व्रत का पारण न करने का विशेष ध्यान रखना चाहिये यानी सूर्योदयात् द्वादशी में विहित नक्षत्र के योग-काल को छोड़कर ही पारण करना चाहिये और यदि पारणाकालीन द्वादशी विहित नक्षत्र से पूर्णतः व्याप्त है तो उसके पाद-विशेष को छोड़कर हरिवासर में भी पारणा कर सकते हैं। आषाढ़ शुक्ल १२ को अनुराधा के आद्यपाद, भाद्रपद शुक्ल १२ को श्रवण के मध्यपाद तथा कार्तिक शुक्ल १२ को रेवती के अत्यन्तपाद का समय छोड़कर शेष में पारणा करे। यहाँ नक्षत्र के 'एक पाद' से उसके स्पष्ट-मान का तृतीयांश गृहीत है, ज्योतिषोक्त एक नक्षत्र(चरण) पाद यानी चतुर्थांश नहीं। यदि द्वादशी स्वल्प घटी हो और नक्षत्र का योग आ पड़े तो द्वादशी में केवल पारणा करनेवाले (यानी गृहस्थों) को नक्षत्र-वेध नहीं मानना चाहिये अथवा संगवकाल को छोड़कर अथवा मध्याह्न काल में पारण करना चाहिए। उक्त द्वादशियों में नक्षत्र-योग के साथ यदि बुधवार भी हो एवं पूर्वोक्त हरिवासर योग पड़ जाय तो इस सुदुर्लभ परम पुण्यप्रद योग में वैष्णवों के अतिरिक्त गृहस्थ भी एकादशी व्रत के बाद द्वादशी का भी व्रत अवश्य करें। शास्त्र-वचन है—आ.भा-का.सितपक्षेषु मैत्र-श्रवण-रेवती च। द्वादशी बुधवारेण हरेर्वासर उच्यते।

देवदुन्दुभि-योग—द्वादश्ये एकादशी सौम्यः श्रवणश्च चतुष्टयम्। देवदुन्दुभियोगोऽयं शतमन्यु फलप्रदम्॥ एकादशी, द्वादशी, बुधवार और श्रवण नक्षत्र- इन चारों के योग से 'देवदुन्दुभि' नामक योग होता है जिसमें व्रत करने से १०० महायाग का फल प्राप्त होता है। यह विशेषतः भाद्रपद मास में सम्भव है।

एकादशी व्रत निर्णय के लिए याद रखने योग्य सारभूत ८ श्लोक (निर्णयाष्टक) ये हैं—

दशम्यर्कोदये चेत् स्मार्तानां वेध इष्यते। वैष्णवानां तु पूर्वं स्याद घटिकानां चतुष्टये ॥ १ ॥
बल्लभाः पञ्चनाडीषु केचिद्यामद्वय जगुः। पूर्वां सूर्योदयाद्वेध निर्णये वैष्णवैः समाः ॥ २ ॥

अर्थ—सूर्योदय-समय में दशमी हो तो स्मार्तों को और उससे पहले ४ घटी के भीतर दशमी हो अर्थात् पूर्वदिन की दशमी ५६ घटी के उपरान्त हो तो उससे एकादशी का वेध वैष्णवों को इष्ट है ॥१॥ वल्लभ-मत के लोग सूर्योदय से ५ घटी पूर्व अर्थात् ५५ घटी के ऊपर और कोई-कोई आधीरात के उपर ही दशमी का वेध एकादशी को मानते हैं; किन्तु निर्णय में वैष्णवों के समान हैं ॥ २ ॥

यो द्वादशीविरामाहः स्मार्तैस्तत्प्रथमं दिनम्। उपोष्यमिति हेमाद्रिर्माधवस्य मतं श्रृणु ॥ ३ ॥
द्वादश्यां वृद्धिगामिन्यामविद्धैकादशी यदि। लभ्यते सा व्रते ग्राह्यान्यत्र हेमाद्रिनिर्णयः॥ ४ ॥
वे चिदाहुर्विष्णुभक्तं स्मार्ते कार्यः व्रतद्वयम्। विद्धायां वा विवृद्धायामेकादश्यां परेऽह्नि च ॥ ५ ॥
समाप्येत परेह्नयस्मिन् द्वादशी यदि नान्यथा। माधवीयमतस्यैव प्रचारो व्रतनिर्णये ॥ ६ ॥

अर्थ—जिस सूर्योदय से अग्रिम सूर्योदय तक (६० घटी के अहोरात्र में) द्वादशी समाप्त होती हो, उसके पहले दिन एकादशी का उपवास करना, यह हेमाद्रि का मत है। अब माधव का मत सुनो। द्वादशी वृद्धिगामिनी हो (पहले दिन ६० घटी होकर दूसरे दिन भी कुछ हो), उस अवस्था में जो सूर्योदयकालिक वेध से रहित एकादशी मिले तो उसी को व्रत में ले लेना और अन्य सब स्थितियों में हेमाद्रि के समान निर्णय कर लेना ॥४॥ कोई-कोई आचार्य कहते हैं कि सूर्योदय-वेध की एकादशी के दिन और उसके दूसरे दिन, इसी तरह पूर्वोक्तवत् वृद्धिगामिनी एकादशी के दिन तथा उसके दूसरे दिन, यों दो व्रत विष्णु की भक्ति करनेवाले स्मार्त करें ॥५॥ परन्तु जब उक्त दूसरे दिन द्वादशी पूरी हो जाती हो तभी, अन्यथा दो व्रत नहीं करना। आजकल एकादशीव्रत-निर्णय में माधव के मत का ही प्रचार है ॥६॥

• एकादशी द्वादशी वा वृद्धिगा चेत् तदा व्रते । शुद्धाप्येकादशी त्याज्या सदा विद्धापि वैष्णवं ।। ७ ।।
एकादशी व्रतं कार्यं परेऽहिन त्याज्यवासरात् । असूयाऽनुगमे नात्र कार्या विद्वद्भिरर्थये ।। ८ ।।

अर्थ—एकादशी या द्वादशी पूर्वोक्तानुसार वृद्धगामिनी हो तो पहली एकादशी शुद्ध भी मिलती रहने पर वैष्णव उसे त्याग करें और विद्धा को भी त्याग करें। जो ये त्याज्य दिन कहे हैं, उनके दूसरे दिन एकादशी का व्रत करना, यह वैष्णवों का निर्णय हुआ । विद्वानों से प्रार्थना है कि उक्त अनुगमों में वे लोग असूया न करें ।। ८ ।।

एकादशी व्रत की पारणा—अगहन में गोमूत्र, पूस में गोबर, माघ में गाय का दूध, फाल्गुन में गाय की दही, चैत्र में गाय का घी, वैशाख में कुशोदक, ज्येष्ठ में तिल, आषाढ़ में यव का चूर्ण, श्रावण में दूब, भाद्रपद में कुष्माण्ड (कोहड़ा) आश्विन में गुड़ और कार्तिक में बेलपत्र या तुलसी पत्र से एकादशीव्रत की पारणा होती है ।

अष्ट महाद्वादशी—१. जिस दिन सूर्योदय-काल में एकादशी हो, पश्चात् द्वादशी के क्षय से अगले सूर्योदय के समय त्रयोदशी आ जाती हो तो इस प्रकार एक अहोरात्र में तीन तिथियों का स्पर्श करने से वह क्षय १२ त्रिस्पृशा नामवाली महाद्वादशी होती है ।

२. अरुणोदयकाल में ११ तिथि १० से अविद्ध हो (अर्थात् दशमी तिथि ५६ घटी से कम हो) और ११ की वृद्धि हो जाय तो उस वृद्ध एकादशी तिथि के दिन उन्मीलनी नामक महाद्वादशी होती है ।

३. सूर्योदयकाल में दशमी एकादशी तिथि का स्पर्श न करती हो और द्वादशी की वृद्धि हो जाय तो वह वृद्ध द्वदशी वञ्जुली नामवाली महाद्वादशी होती है ।

४. पूर्णिमा या अमावस्या तिथि बढ़ जाय तो उस पक्ष की द्वादशी पक्षवर्धिनी नामवाली होती है ।

५. शुक्लपक्ष में द्वादशी तिथि पुष्य नक्षत्र से युक्त हो तो वह जया नामक महाद्वादशी होती है ।

६.	,,	,,	श्रवण	,,	,, विजया ,,	,,
७.	,,	,,	पुनर्वसु	,,	,, जयन्ती ,,	,,
८.	,,	,,	रोहिणी	,,	,, पापनाशिनी	,,

उक्त द्वादशियों में नक्षत्र-योग के साथ बुधवार भी हो तो उस द्वादशी को भी व्रत कर त्रयोदशी में पारणा करनी होती है; शास्त्रवचन है—आ-भा का-सितपक्षेषु ···

जो मनुष्य त्रिस्पृशा महाद्वादशी में उपवास करके भगवान गोविन्द का पूजन करता है, वह निश्चय एक हजार अश्वमेघ यज्ञ का फल प्राप्त करता है । उन्मीलिनी-व्रत में उत्तम पूजा की विधि से भगवान वासुदेव का पूजन करके मनुष्य एक सहस्र राजसूय-यज्ञ का फल पाता है । वञ्जुली के व्रत में सबको सदा अभयदान करनेवाले परम पुरुष सङ्कर्षणदेव का गन्ध आदि उपचारों से भक्तिपूर्वक पूजन करे । यह द्वादशी सम्पूर्ण यज्ञों का फल देनेवाली सब पापों को हरनेवाली तथा समस्त सम्पदाओं को देनेवाली कही गई है । पक्षवर्धिनी का व्रत भी महान् फल देनेवाला है । उसमें सम्पूर्ण ऐश्वर्य प्रदान करनेवाले तथा पुत्र और पौत्र को बढ़ानेवाले जगदीश्वर भगवान प्रद्युम्न का पूजन करना चाहिये । जया-व्रत सम्पूर्ण शत्रुओं का विनाशक है । उसमें समस्त कामनाओं के दाता और मनुष्यों को सम्पूर्ण सौभाग्य प्रदान करनेवाले लक्ष्मीपति भगवान अनिरुद्ध की आराधना करनी चाहिए। विजया के व्रत में सदा समस्त भोगों के आश्रय तथा सम्पूर्ण सौख्य प्रदान करनेवाले भगवान गदाधर की पूजा करनी चाहिए। विजया में उपवास करके मनुष्य संपूर्ण तीर्थों का फल पाता है । जयन्ती व्रत के मनुष्यों को सर्व-सिद्धिदाता भगवान् वामन की अर्चना करनी चाहिये । यह तिथि उपवास करने पर सम्पूर्ण व्रतों का फल देती हैं, समस्त दानों का फल प्रस्तुत करती है तथा भोग और मोक्ष देनेवाली होती है । पापनाशिनी अपराजिता का व्रत पूर्ण ज्ञान देनेवाला है । उसमें संसार-बन्धन का नाश करनेवाले ज्ञान के समुद्र, रोग-शोक के रहित भगवान नारायण की आराधना करनी चाहिये ।

उस तिथि को उपवास करके ब्राह्मण-भोजन करानेवाला मनुष्य उस व्रत के पुण्य से ही संसार-बन्धन से मुक्त हो जाता है । हरिवासर के सिवा द्वादशी को एक समय भोजन करके व्रत रहना चाहिये । द्वादशी का व्रत स्वभाव से ही सब पाप को हरनेवाला बतलाया गया है । द्वादशी सहित एकादशी का व्रत नित्य माना गया है । अतः यहाँ उसका उद्यापन नहीं कहा गया है । इसे जीवन पर्यन्त करते रहना चाहिए । यहाँ जो त्रिस्पृशा एवं अन्य महाद्वादशियों के लक्षण लिखे गये हैं, वे निर्णय-सिन्धु, धर्म-सिन्धु के अनुसार हैं । उन ग्रन्थों में द्वादशी के क्षय से एकादशी को त्रिस्पृशा योगवती कहा गया है और वहाँ वैसी ही स्थिति में द्वादशी को भी त्रिस्पृशा लिखते हैं ; अतएव त्रिस्पृशा द्वादशी के अन्य लक्षण का अनुसंधान करने पर नारद पुराण में यह निर्वचन मिला कि जिस दिन एकादशी सूर्योदय से पहले अरुणोदय-काल में ही निवृत्त हो गई हो, दिन भर द्वादशी हो और रात्रि के अन्तिम भाग में त्रयोदशी आ गयी हो तो उस दिन त्रिस्पृशा नामवाली महाद्वादशी होती है ।

अब आगे निर्णयसिन्धु और धर्मसिन्धु के अनुसार एकादशी-निर्णय के उदाहरण लिखे हैं। वे ही निर्णयाष्टक के भी उदाहरण समझ लेवें । तिथि का आरम्भ चाहे जहाँ से हो, अन्त सूर्योदय के एक पल भी पूर्व हो तो वह तिथि 'न्यूना', सूर्योदय के उपरान्त एक पल भी हो तो 'अधिका', पूरे ६० घटी पर अन्त हो तो 'समा' तिथि कहलाती है ।

यही निर्णयसिन्धु और धर्मसिन्धु के एकादशी का नाम रखने का मूल मंत्र है। धर्मसिन्धु में इतना और विशेष है कि 'समा' नाम रखे बिना ही निर्णय कर लिया है। अब निम्न तालिका में १८ प्रकार की एकादशियों का पहला नाम निर्णयसिन्धु का और दूसरा नाम धर्मसिन्धु का जानें।

१. विद्धा न्यूना न्यूनदादशिका, अनुभयाधिक्यवतीविद्धा–

तिथि	वार	घ.	पल	निर्णय	विशेष
१०	रवि	०	१उ.	स्मार्तानान्	विष्णुप्रीतिकामैः
११क्ष.	,,	५९	५८न्यू [1]		स्मार्तैरुपवासद्वयं
१२	सोम	५९	५९न्यू	वैष्णवानाम्	कार्यमिति केचित्।

२. विद्धासमा.यूनद्वादशिका, अनुभयाधिक्यवतीविद्धा–

तिथि	वार	घ.	पल	निर्णय	विशेष
१०	रवि	०	१उ.	स्मार्तानाम्	विष्णुप्रीतिकामैः
११	,,	५९	५९या [2]		स्मार्तैरुपवासद्वयं
१२	सोम	५९	५९न्यू	वैष्णवानाम्	कार्यमिति केचित्

३ .विद्धाधिकान्यूनद्वादशिका, एकादशीमात्राधिक्यवती विद्धा–

तिथि	वार	घ.	पल	निर्णय	विशेष
१०	रवि	०	१ उ.	स्मार्तानाम्	बिष्णुप्रीतिकामैः
११	सोम	०	१ उ.		स्मार्तैरुपवासद्वयं
१२क्ष.	,,	५९	५८न्यू	स्मार्तानाम्	कार्यमिति केचित

४. विद्धान्यूना समद्वादशिका, अनूभयाधिक्यवतीविद्धा—

तिथि	वार	घ.	पल	निर्णय	विशेष
१०	रवि	०	१ उ.	स्मार्तानाम्	विष्णुप्रीतिकामैः
११क्ष.	,,	५९	५८न्यू		स्मार्तैरुपवासद्वयं
१२	सोम	६०	०	वैष्णवानाम	कार्यमिति केचित्

५ विद्धासमासम-द्वादशिका, अनुभयाधिक्यवतीविद्धा–

तिथि	वार	घ.	पल	निर्णय	विशेष
१०	रवि	०	९ उ.	स्मार्तानाम्	बिष्णुप्रीतिकामैः
११	,,	५९	५९ या		स्मार्तैरुपवासद्वयं
१२	सोम	६०	०	वैष्णवानाम्	कार्यमिति केचित

६. विद्धाधिकासमद्वादशिका, एकादशीमात्राधिक्यवती विद्धा–

तिथि	वार	घ.	पल	निर्णय	विशेष
१०	रवि	०	१ उ.	स्मार्तानाम्	विष्णुप्रीतिकामैः
११	सोम	०	१ उ.		स्मार्तैरुपवाद्वयं
१२	,,	५९	५९ या.	वैष्णवानाम्	कार्यमिति केचित्

७. विद्धान्यूनाधिकद्वादशिका, द्वादशीमात्राधिक्यवतीविद्धा–

तिथि	वार	घ.	पल	निर्णय	विशेष
१०	रवि	०	१ उ.		
११क्ष.	,,	५९	८		
१२	सोम	६०	०	स्मार्त एवं वैष्णवानाम्	
१२	मङ्गल	०	१ उ.		

८. विद्धासमाधिकद्वादशिका, द्वादशीम त्राधिक्यवतीविद्धा—

तिथि	वार	घ.	पल	निर्णय	विशेष
१०	रवि	०	१ उ.		
११	,,	५९	५९ या.		
१२	सोम	६०	०	स्मार्त एव वैष्णवानान्	
,,	मङ्गल	०	१ उ		

९: विद्धाधिकाधिकद्वाशिका, उभयाधिक्यवतीविद्धा–

तिथि	वार	घ.	पल	निर्णय	विशेष
१०	रवि	०	१ उ.		
११	सोम	०	१ उ.	स्मार्त एवं वैष्णदानाम्	
१२	मङ्गल	०	१ उ.		

[1] इस न्यून का अर्थ ६० घटी से कुछ न्यून है।

[2] इस यावत् का अर्थ पूरी ६० घटी तक है। ऐसे ही नामानुसार आगे भी समझना चाहिए।

१० शुद्धान्यूना न्यूनद्वादशिका, अनुभयाधिक्यवतीशुद्धा—

तिथि	वार	घ.	पल	निर्णय	विशेष
१०	रवि	५९	५९ या [1]		
११	सोम	५९	५९ या	स्मार्तानाम्।	
२१	मङ्गल	५९	५९ या	वैष्णवानाम	

११. शुद्धासमान्यूनद्वादशिका, अनुभयाधिक्यवतीशुद्धा—

तिथि	वार	घ.	पल	निर्णय	विशेष
१०	रबि	५९	५९ या		
११	सोम	६०	०	स्मार्तानाम	
१२	मङ्गल	५९	५९ या	वैष्णवानाम्	

१२.शुद्धाधिकान्यूनद्वादशिका, एकादशीमात्राधिक्यबतीशुद्धा

तिथि	वार	घ.	पल	निर्णय	विशेष
१०	रवि	५९	५९ या		
११	सोम	६०	०	स्मार्तानाम्	विष्णुप्रीतिकामैः
११	मङ्गल	०	१ उ	वैष्णवानाम्	स्मार्तैरुपवासद्वयं
१२	,,	५९	५८ या		कार्यमिति केचित्

१३. शुद्धान्यूननद्वादशिक, अनूभयाधिक्यवतीशुद्धा—

तिथि	वार	घ.	पल	निर्णय	विशेष
१०	रवि	५९	५९ या		
११	सोम	५९	५९ या	स्मार्तानाम्	
१२	मङ्गल	६०	०	वैष्णवानाम्	

१४. शुद्धासमासमद्वादशिका, अनूभयाधिक्यवतीशुद्धा—

तिथि	वार	घ.	पल	निर्णय	विशेष
१०	रवि	५९	५९ या		
११	सोम	६०	०	स्मार्तानाम्	
१२	मङ्गल	६०	०	वैष्णवानाम्	

१५. शुद्धाधिकासमद्वादशिका, एकादशीमात्राधिक्यवतीशुद्धा

तिथि	वार	घ.	पल	निर्णय	विशेष
१०	रवि	५९	५९ या		विष्णुप्रीतिकामैः
११	सोम	६०	०	स्मार्तानाम्	स्मार्तैरुपवासद्वयं
११	मङ्गल	०	१ उ	वैष्णवानाम्	कार्यमिति केंचित्

१६. शुद्धान्यनाधिकद्वादशिका, द्वादशिमात्राधिक्यवतीशुद्धा–

तिथि	वार	घ.	पल	निर्णय	विशेष
१०	रवि	५९	५९ या	[illegible]*	
११	सोम	५९	५९ या	स्मार्तानाम्*	हेमाद्रिमते तु
१२	मङ्गल	६०	०	वैष्णवानाम्	स्मार्तैर्वैष्णवैश्च
१२	बुध	०	१ उ.		भौमेएवो पोष्यम्

१७. शुद्धासमाधिकद्वादशिका द्वादशीमात्राभिक्यवतीशुद्धा—

तिथि	वार	घ.	पल	निर्णय	विशेष
१०	रवि	५९	५९ या	[illegible]*	
११	सोम	६०	०	स्मार्तानाम*	हेमाद्रिमते तु
१६	मङ्गल	६०	०	वैष्णवानाम्	स्मार्तैर्वैष्णवैश्च
१२	बुध	०	१ उ.		भौमेएवो पोष्यम्

१८. शुद्धाधिकाधिकद्वादशिका, उभयाधिक्यवतीशुद्धा—

तिथि	वार	घ.	पल	निर्णय	विशेष
१०	रवि	५९	५९ या		
११	सोम	६०	०		
११	मङ्गल	०	१ उ	स्मार्त एवं वैष्णवानाम्	
११	बुध	०	१ उ		

[1] यहाँ किन्हीं के मत का वेधक-घटी से अल्प दशमी हो तो उन वैष्णवों की भी एकादशी सोमवार ही को होगी, ऐसा ही आगे भी समझें।

अन्यान्य व्रत-निर्णय

अब यहाँ एकादशी के प्रसंग में कुछ अन्य व्रतों का भी निर्णय लिखा जाता है। दिनमान का पाँच भाग करना; इसमें पहला प्रातःकाल, दूसरा संगवकाल, तीसरा मध्याह्नकाल, चौथा अपराह्णकाल, और पाँचवाँ सायह्नकाल कहलाता है। यों ही रात्रि के पाँच विभाग करने से पहला भाग प्रदोषकाल होता है। रात्रिमान के १५ विभाग करने से ८वाँ भाग निशीथ काल कहलाता है। दिनमान के १६ भाग करने से ८वाँ भाग अभिजित्, ९ वाँ रोहिण, १२ वाँ विजय-मुहूर्त होता है। अब—

१. इष्टकाल में इष्टतिथि पहले ही दिन हो, २. दूसरे ही दिन हो, ३. दोनों दिन हो, ४. दोनों दिन न हो, ५. दोनों दिन इष्टकाल के एक समान अंश में हो, दोनों दिन इष्टकाल के न्यूनाधिक अंश में हो; ऐसी ६ प्रकार की स्थितियाँ उत्पन्न हो सकती हैं।

इनमें से पहले दूसरे प्रकार में सन्देह ही नहीं। छठे प्रकार में जिस दिन अधिक हो, उस दिन व्रत होगा। शेष तीन प्रकारों में निर्णय अपेक्षित है।

एकभक्त वा एकाशने का निर्णय—मध्यान्हकाल में, शेष तीनों पक्षों में पूर्व ही दिन व्रत करना।

४ति. चतुर्थी व्रत-निर्णय—शुक्ल चतुर्थी मध्याह्नकाल में, एकभक्तवत् निर्णय करना। कृष्ण चतुर्थी वा संकष्ट चतुर्थी का व्रत चंद्रोदय में चतुर्थी जिस दिन हो, उस दिन करना। दोनों दिन हो तो पूर्वदिन में, दोनों दिन न हो तो परदिन में करना।

१३ति. प्रदोष वा नक्तव्रत का निर्णय—३रे, ४थे प्रकार में पर-दिन व्रत करना, पाँचवें प्रकार में पूर्व दिन व्रत करना।

१४ति. शिवरात्रिव्रत-निर्णय—कृष्ण चतुर्दशी व्रत, निशीथकाल में प्रदोषवत् निर्णय करना।

३०ति. अमावस्या वा श्राद्ध-निर्णय—अपराह्णकाल में; ३, ४, ५वें प्रकार में पर-दिम करना।

१५ति. पूर्णिमा—व्रत में चन्द्रोदय(प्रदोष)व्यापिनी पूर्णिमा लेनी चाहिये। दो दिन रहने पर पर-दिन की, क्षय होने पर पूर्व-दिन की १४ विद्धा ही लेनी चाहिये। १८ घटी से अधिक १४, पूर्णिमा को विद्ध करती है।

पूर्णिमा के पर्वान्त योगकारी नक्षत्र—पौषी पुष्य, माघी मघा, फाल्गुनी पू. फा., चैत्री चित्रा, वैशाखी विशाखा, ज्येष्ठी ज्येष्ठा, आषाढी पू. षा. श्रावणी श्रवण, भाद्रपदी पू. भा., आश्विनी अश्विनी, कार्तिकी कृत्तिका, अग्रहायणी मृगशीर्ष।

इष्टि-काल—पर्व के अंतिम चतुर्थांश से प्रतिपदा के तीन भाग तक इष्टि होनी चाहिये; यह समय पूर्वाह्न या मध्याह्न में पड़े तो उसी दिन, अन्यथा पर-दिन। इसके निर्णय की सामान्य सरल विधि यह है—पर्व की घटी और प्रतिपदा की घटी दोनों का योग दिनमान से अधिक हो तो दूसरे दिन इष्टि और पहले दिन अन्वाधान होगा; न्यून होने पर उसी दिन इष्टि तथा उससे पूर्व-दिन अन्वाधान होगा।

टिप्पणी—१, स्पष्ट मध्याह्न का स्टैं. टा. + १२ घं. = मध्यरात्रि का स्टैं. टा. = व

६० – घट्यादि दिनमान = रात्रिमान ÷ ७५ = अ

व∓अ = महानिशीथ के आरम्भ और अंत का स्टैं. टा.

२. घट्यादि रात्रिमान ÷ १२·५ = प

प्रदोषकाल का आरम्भ = सूर्यास्त का स्टैं. टा., + प = प्रदोषकाल की समाप्ति का स्टैं. टा.

३. घट्यादि दिनमान ÷ २५ = क। स्पष्ट मध्यान्त का स्टैं. टा ∓ क = मध्यान्हकाल के आरम्भ और अंत का स्टैं. टा.

४. घट्यादि दिनमान ÷ ४० = ख।। स्पष्ट मध्यान्ह का स्टैं. टा. ऋण – ख = 'अभिजिन्मुहूर्त' के आरम्भ का स्टैं. टा. जो ठीक मध्यान्ह के समय समाप्त होता है।

५. घट्यादि दिनमान ÷ ४० = ग × २ + स्पष्ट मध्यान्ह का स्टैं. टा. = 'विजयमुहूर्त' के आरम्भ का स्टैं.टा. + ग = विजय-मुहूर्त की समाप्ति का स्टैं. टा.

तिथि-तत्त्व

तिथ्युपपत्तिं न जानन्ति ग्रहाणां नैव साधनम् । परवाक्येन वर्तन्ते ते वै नक्षत्रसूचकाः ।।
अविदित्वैव यः शास्त्रं दैवज्ञत्वं प्रपद्यते । स पंक्तिदूषकः पापोज्ञेयो नक्षत्रसूचकः ।।
नक्षत्रसूचकोद्दिष्टमुपवासं करोति यः । स व्रजत्यन्धतामिस्त्रं स्मर्धमुक्ष बिडम्बनैः ।।

'सम्मान्य महानुभाव; सप्रेम बन्दे । कलात्मिका तिथि के विषय में आपने मुझसे कुछ स्पष्टीकरण माँगने की कृपा की है तथा वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय के पञ्चाङ्ग-विभागाध्यक्ष श्री पं० गणपतिदेवजी शास्त्री ने उसको जंत्री में गणित से सिद्ध करने तथा उसके आधार पर चंद्र-शृंगोन्नति-साधन-विधि को सोदाहारण प्रकाशित करने का आदेश दिया, इसके लिये मैं आपका तथा श्रीशास्त्रीजी का अत्यन्त आभारी हूँ । भारतीय ज्योतिषसिद्धान्त तथा धर्मशास्त्र का जो कुछ अध्ययन मैं कर सका हूँ, उसके आधार पर मैं आपको एतद्विषयक अपने विचार निवेदित करता हूँ । आपकी तरफ के महाभागों द्वारा इस विषय में क्या मीमांसा हुई है, वह मेरी जानकारी में नहीं है । मेरी जानकारी किसी भी व्यक्ति विशेष से प्राप्त नहीं है ; बल्कि मेरे स्वतन्त्र अध्ययन चिन्तन का परिणाम है । और काफी सोच-विचार के बाद मैंने इस सम्बन्ध में कुल ४ टिप्पणियाँ सन् '६६ की जन्त्री में विद्वानों के विचारार्थ प्रकाशित की थीं । उनमें-से ३ टिप्पणियाँ सन ६७ की जंत्री में भी क्रमशः पृष्ठ ५०,५४,५८ पर प्रकाशित हैं ; चौथी सन् '६६ की जंत्री के चन्द्रदर्शन-प्रकरण में पृष्ठ ११८ पर तथा पाँचवीं सन् '६७ की जन्त्री-पृष्ठ ६५ पर प्रकाशित है । सन्'६६ की जंत्री भारत के प्रायः सभी ज्योतिष-सिद्धान्त एवं धर्मशास्त्र के विद्वानों के अभिप्रायार्थ भेजी गई थी और आप तथा श्रीपाण्डुरंग शास्त्री जी के अतिरिक्त अन्य विशिष्ट विद्वानों ने भी एतद्विषयक अपने विचारों से मुझे अवगत किया था । चन्द्र-दर्शन प्रकरण-वाली टिप्पणी पढ़कर श्रीपाण्डुरंग शास्त्रीजी ने जो दो पत्र मेरे पास भेजे थे ; वे नीचे उद्धृत कर रहा हूँ* । मेरा अभी तक ऐसा खयाल रहा है कि सन् '६६ की जंत्री में छपी मेरी चारों टिप्पणियाँ विद्वानों के सम्मुख मेरे आशय को स्पष्ट करने के लिए काफी हैं, सर्व-साधारण का तो यह विषय ही नहीं ; परन्तु श्रीपाण्डुरङ्ग शास्त्रीजी के पत्र को पढ़ कर मुझे दुःख हुआ कि उन जैसे बहुश्रुत विद्वान् को भी मेरा आशय टिप्पणियों में स्पष्टतया व्यक्त नहीं हो सका; अस्तु ।

पूर्णचन्द्र की १६ कला भारतीय धर्मशास्त्रों में मानी गयी है; उसमें १५ कला का अपचयोपचय तो हम पामर मानवों को दृश्य होता रहता है; १६वीं कला चन्द्र-पिण्ड की प्राणभूता (आत्मरूपा) हमारी स्थूल इन्द्रियों से अगम्य है । तिथि-तत्व का वचन देखिये—'उमा षोडश भागेन देवि प्रोक्ता महाकला । संस्थिता परमा माया देहिना देह-धारिणी ।। अमादि पौर्णमास्यान्ता या एव शशिनः कला । स्थिता समाख्याता षोडशैव वरानने ।।' वह षोडश भाग-परमिता चन्द्र-मण्डल-देहधारिणी, आधारशक्तिरूपा, आमानाम्नी महाकला क्षयोदय रहिता है । वह हमारे ज्योतिष-सिद्धान्त या गणित का विषय नहीं । अतः तदिरिक्त १५ कलाओं के अपचयोपचय से हम तिथि के स्वरूप, लक्षण, तत्व और विनियोग का विचार करते हैं । इन १५ कलाओं के अपचयोपचय का कारण भी वेद बतलाते हैं—'यत्वा देव प्रपिबन्ति तत आप्यायसे पुनः । वायुः सोमस्य रक्षिता समानां मास आकृतिः । ऋ० सं० १०।८५। अर्थ—

---

* प्रथम पत्र—आपकी १९६६ साल को 'चिन्ताहरण जंत्री' मिल गई, इस कारण धन्यवाद । विशेष देखने के लिये जो आपने पत्रांक लिखे हैं, वह हमने देखा; किन्तु उसमें कला-तिथि का सत्यस्वरूप मुझे मालूम नहीं पड़ा । हमारा 'तिथि-स्वरूप-निर्णय' फिर बाँचना जरूरी है । वह संस्कृत में है तथा उसका सारांश हिन्दी में काशी के 'सिद्धान्त' मासिक में छपा है । वह जरूर देखना चाहिये । उसमें लिखा है कि तिथि का स्वरूप एकमात्र कला-रूप ही है; ऐसा वेद शास्त्रों का सिद्धान्त है । आपने भी लिखा है कि कला प्रयुक्ता एव तिथयः । वही शास्त्र-सिद्धान्त है; फिर आप लिखते हैं, तिथि दो प्रकार की है । ये परस्पर विरुद्ध होता है । कला दर्शनयोग्या होने का समय 'चन्द्रोद्वादशभिरंशैः सूर्यमुल्लंघ्यगच्छति तदा चन्द्रस्य एका कला दर्शनयोग्या भवति ।' इस वाक्य में १२ अंशान्तर होने के बाद कला निष्पन्न होती है, यह स्पष्ट है; फिर आप तिथि दो प्रकार की होती है, यह कैसे लिखते हैं ? कृपाकर हमारी पुस्तक और 'सिद्धान्त' में छपा हुआ हिन्दी लेख सावधानी से पुनः पढ़ना जरूरी है, ऐसा हम समझते है ।

आपका—पाण्डुरङ्ग शास्त्री आठल्ये

दूसरा पत्र—श्रीगुप्ताजी को सादर विनती । आपका बुक-पोस्ट मिला जिसमें चन्द्र-दर्शन की आकृति है । उसमें 'प्रतिपन्नाम सञ्ज्ञेया तदन्ते विधु-दर्शनम्' ऐसा श्लोक लिखा है; किन्तु जब प्रतिपदान्तकाल सूर्यास्त के समय हो जाय, तब ये विधु-दर्शन कदाचित मानव-दृश्य हो जाय, किन्तु जब प्रातःकाल, सायंकाल, दुपहर अथवा रात्रि के समय में प्रतिपदान्त होता है तब विधु-दर्शन कैसे होगा ? अतः विधु-दर्शन का अर्थ 'प्रथमा चन्द्रकला दर्शन योग्या भवति' ऐसा ही करना उचित है । इसी कारण पुरुषार्थ-चिन्तामणि में भी त्रयोदशांश भवेसक्षणेचन्द्रस्य प्रथमा कला दर्शन योग्या भवति; सैव प्रतिपत् तिथि' ऐसा लिखा है । ये ही कला-तिथि का लक्षण है। ये सब विषय हमारी पुस्तक में लिखा है,; उस पर जरूर ध्यान देना; किञ्च यह कला-तिथि सब धार्मिक कार्यों में लेना है, न कि केवल चन्द्र-दर्शन शृंगोन्नति-साधन में । सब तिथियाँ भूगर्भीय होती हैं ; किन्तु कला-लक्षणा और अन्तर-लक्षणा, ऐसे भेद धर्मशास्त्र में नहीं होता । यह पुरुषार्थ-चिन्तामणि, काल-माधव इत्यादि देखने से स्पष्ट हो जायेगा । इसका भी हमारी पुस्तक में उल्लेख किया गया है । साथ-साथ कलास्वरूप का भी विवेचन सावधानी से देखिये, ऐसी प्रार्थना है । —पाण्डुरङ्ग शास्त्री आठल्ये

हे सोम ! देव तुम्हारा प्राशन करते हैं । उसके बाद तुम पुनः तेजस्वी होते हो । वायु सोम का रक्षक है और तुम समों (संवत्सरों) और मासों के कर्त्ता हो ।' निरुक्त में यह ऋचा सोमवल्ली और चन्द्रपरक है । यमादित्या अं शुभाप्याय यन्ति यमक्षितमक्षितयः पिबन्ति ।' तै० सं० २।४।१४ अर्थात् आदित्य चन्द्रमा को तेजस्वी करते हैं और पूर्ण हो जाने के बाद उसका प्राशन करते हैं । शास्त्रों में आदित्य की द्वादश संज्ञा होने के कारण ही यहाँ आदित्याः बहुवचन का प्रयोग किया गया है । धर्मशास्त्रों में इसी सूर्य-प्रक्रिया को और स्पष्ट किया है—चन्द्रोद्वादशभिरंशैः सूर्यमुल्लंध्य गच्छति तदा चन्द्रबिम्बस्य पञ्चदशसु भागेषु प्रथमो भागः दर्शनयोग्या भवति । स एव कलेत्युच्यते । कला प्रयुक्ता एव तिथयः । इस क्रम से भागः एक-एक तिथि पूरा करता हुआ आदित्य १५वीं तिथि पर चन्द्र से १८० अंश के अन्तर पर. सार्वभौमतः चन्द्रबिम्ब को पूर्ण (प्रकाशित)करता है—यह स्पष्टतया सिद्धान्तोक्त शुद्ध(केवल) अन्तर्लक्षणा तिथि का निर्वचन है । इसी को अनेक स्थलों पर अदृश्य तिथि भी कहा गया है । उन सब प्रमाण-वाक्यों का संग्रह हो चुका है । आवश्यकता होने पर उनको प्रकाशित करूँगा । इस तिथि के अलावा भूपृष्ठस्थ द्रष्टाभिप्राय से लम्बनादि दृक्कर्म-संस्कृत प्रत्यक्ष दृश्य कलातिथि भी हमारे सिद्धान्त-ग्रन्थों में ही नहीं, धर्मशास्त्रों में भी निरूपित है । एतद्विषयक प्रमाण-वाक्य मैंने सन् '६६ तथा सन् '६७ को जंत्री के चन्द्रदर्शन विषयक प्रकरण में उद्धत किये हैं । श्रीपाण्डुरंग शास्त्रीजी उसपर यह आपत्ति उठाते हैं कि 'उक्त प्रतिपदा सूर्यास्त के समय हो जाय तो विधु-दर्शन 'कदाचित्' (?) मानव-दृश्य हो जाय; जब प्रातः, सायं, दोपहर अथवा रात्रि के समय उक्त प्रतिपदान्त होगा तो वधु-दर्शन कैसे होगा ? अतः विधु-दर्शन का अर्थ चन्द्र-कला दर्शन योग्या भवति' लेना ही उचित है ।' वस्तुतः शास्त्रीजी ने धर्मशास्त्र के उक्त दो वचनों पर गहराई से विचार नहीं किया, एकाङ्गी संकुचित अर्थ में उनको ग्रहण किया है । ये दोनों वाक्य वस्तुतः परस्पर अनुपूरक हैं, विरुद्ध नहीं । धर्मशास्त्रकार का आशय कितने सुन्दर रूप में स्पष्ट है कि जब सूर्य चन्द्र के भोगांश का अंतर १२ अंश होता है तो चन्द्रबिम्ब के १५वें भाग की कला दर्शन योग्य हो जाती है इसमें किसी प्रकार भी संदेह नहीं एवं उसी समय सूर्यास्त भी हुआ हो तो सूर्यचन्द्र-बिम्बों का दृश्य अन्तर*१२ अंश होने से 'कदाचित्' नहीं; बल्कि अवश्यमेव चन्द्रदर्शन होगा, ऐसा सर्व सिद्धान्तकारों का एकमत है तथा प्रत्यक्ष अनुभव से प्रमाणित भी, बादल इत्यादि के अवरोध की बात अलग है । यदि क्षितिज निरभ्र(शुद्ध) है तो सूर्यास्त के समय उक्त दृश्य प्रतिपदान्त में चन्द्रदर्शन अवश्य होगा । सिद्धांतकारों का यह नियम अकाट्य है । इसमें प्रातः, दुपहर आदि की आपत्ति भी व्यर्थ है । सिद्धान्त या ऋषिवाक्य एकांगी या एकदेशीय नहीं होते; सार्वभौमिक सत्य का प्रतिपादन करते हैं । जिस समय उक्त दृश्य प्रतिपदान्त होगा, उस समय भूमण्डल में कहीं-न-कहीं सूर्यास्त हो रहा होगा, उस स्थल पर विधु-दर्शन धर्मशास्त्रीय वचनानुसार अवश्य होना चाहिए—यदि ऐसा नहीं होता तो वह लम्बनादि दृक्कर्म संस्कृत (प्रत्यक्ष) कला-तिथि कथमपि नहीं कही जा सकती, क्योंकि यहाँ लम्बन एवं दृक्कर्म का उपयोग ही इष्ट क्षितिज के ऊपर प्रत्यक्ष चन्द्रबिम्ब के दर्शनार्थ होता है; अन्यथा वह भूगर्भीय (अदृश्य) अन्तर्लक्षणा तिथि ही होगी । 'दर्शनयोग्या भवति' वाक्य से श्रीपाण्डुरंग शास्त्रीजी की तरह अन्य लोगों को भी कहीं दृश्य-तिथि के प्रति भ्रांति न हो जावे, इसीलिए वाराह पुराण में इस प्रसंग में और भी स्पष्टतः 'विधु-दर्शनम्' पद का प्रयोग किया है । इतनी स्पष्टतापूर्वक तिथि का स्वरूप तथा लक्षण इतने प्राचीनतम साहित्य में भारत वर्ष के सिवा विश्व के किसी अन्य देश में प्रतिपादित किया गया हो, यह हमें मालूम नहीं । यदि जड़-विज्ञानवादी किन्हीं महाशय को मालूम हो तो वे प्रकाशित करें । आपके दूसरे तीसरे प्रश्न के उत्तर में निवेदन है कि हमने द्विधा तिथि की परिभाषा में जो प्रमाण-वचन आप लोगों के सम्मुख रखें हैं, उसके मुताबिक मैं भूगर्भाभिप्रायिक अन्तर्लक्षणा को अदृश्य तिथि कहता हूँ—मैं ही नहीं अनेक आचार्यों में जगह-जगह कहा है । यही अन्तर्लक्षणा तिथि जब लम्बनादि दृक्कर्म संस्कृत होकर भूपृष्ठीय द्रष्टा के लिये स्फुटतर तो जाती है तो वह वास्तव दृश्य, प्रायक्ष कलात्मिका तिथि होती है जिसका विनियोग भी हम अनिवार्यतः चन्द्र सूर्योपराग के लिए अमा पूर्णिमा तिथियों के तथा चन्द्रदर्शन, शृंगोन्नतिप्रसंग में शुक्ल द्वितीया तिथि के साधनार्थ करते हैं । चन्द्रदर्शन की निर्णायिका (Criteria) भूगर्भीय अन्तर्लक्षणा द्वितीया कथमपि नहीं हो सकती ; क्योंकि उसमें सदैव चन्द्र-दर्शन का निश्चय नहीं रहता, यह सामान्य पंचाङ्गीय गणित करनेवाले महानुभाव भी जानते हैं । इस विषय में 'बाण वृद्धिः रसक्षय' का विचार पीछे करेंगे; प्रथम आप विद्वज्जन एतद्विषयक गणितोदाहरण के सम्बन्ध में खगोलशास्त्र-दृष्ट्या अपनी बहुमूल्य सम्मति मुझे प्रदान करें । अग्रिम उदाहरण में तिथि के स्वरूप-भेद यथा अदृश्यतिथि, दृश्यतिथि, कलातिथि एवं इनके पारस्परिक सम्बन्ध को मैंने सुलभ गणितरीत्या उपन्यस्त किया है ।

आपका चौथा प्रश्न पूर्णतः स्पष्ट नहीं है । स्यात् आपका आशय वही है जो श्रीपाण्डुरंग शास्त्रीजी ने अपने पत्रों में व्यक्त किया है और जिसका विशकलन मैं इस पत्र में कर ही चुका हूँ—अर्थात् सैद्धान्तिक नियमों को थोड़ा व्यापक दृष्टिकोण से देखिये; केवल हमारे नगर का क्षितिज ही समस्त भूवासियों का क्षितिज-वृत्त नहीं है । केवल अपने स्थान-विशेष के लिए 'चन्द्र-कला दर्शनयोग्या भवति' वाक्य को आप लें एवं सार्वभौमिकरीत्या 'विधु-दर्शनम्' पद को ग्रहण कीजिये—फिर एतद्विषयक कुछ भी संदिग्ध न रहेगा । आशा है, इस पत्र द्वारा मैं अपना अभिप्राय आप लोगों के सम्मुख अधिक स्पष्ट कर सका हूँ और विद्वानों को आगे इस सम्बन्ध में विचार प्रस्तुत करने में कोई असुविधा न होगी । त्रुटियों के लिए क्षमा-प्रार्थी हूँ ।

[जन्मभूमि पञ्चाङ्ग, बंबई के स्व० सम्पादकजी को श्रीजगजीवनदास गुप्त द्वारा लिखित पत्रोत्तर]

* बिंबमध्यं ग्रहस्यास्ति यत्र तत्र स्थितश्च सः । तिथि-नक्षत्र-योगदेबिम्बमध्यं प्रबोधकम् ।। (ब्रह्मसिद्धान्त)

२२ **वाराणसेय भूकेन्द्रीय अक्षांश ϕ′ उ. 25° 9′ 32″, वाराणसेय तिथि-लम्बन-घातांक** 3.5093413, [१६६

परमाक्रांति23°-26′-42″**चन्द्र-परमलम्बन** 54′1″·88-**सूर्य परमलम्बन**8″·88=**तिथि-परमलंबन**53′-53″=3233″

गणित-विवृत्ति ता. २१-२-१९६६	घं. मि. I.S.T. 16 55	घं. मि. I.S.T. 17 55	घं. मि. I. S. T. 18 55
तात्कालिक सायन स्पष्ट-सूर्य	332° 23′ 07″	332° 25′ 38″	332° 28′ 09″
तात्कालिक सायन स्पष्ट-चंद्र	343° 32′ 13″	344° 02′ 01″	344° 31′ 59″
तात्कालिक चन्द्र-शर	—4° 50′ 19″	- 4° 49′ 33″	- 4° 48′ 47″
इष्टकालीन काशी का खमध्य-विषुवांश	45° 09′ 5″	60° 12′ 20″	75° 14′ 48″
खमध्य विषुवांश भुजज्या घातांक	9.8507279	9.9384265	9.9854405
+ रवि परमक्रांति स्पर्शज्या घातांक	9.6371608	9.6371608	9.6371608
= लम्ब स्पर्शज्या घातांक	9.4878887	9.5755873	9.6226013
∴(विषुवांश मेषादि षटक में है) अत: लम्ब +	+17° 05′ 40″	+20° 37′ 25″	+ 22°45′07″
खमध्य-विषुवांश स्पर्शज्या घातांक	10.0024929	10.2421664	10.5794828
—रवि-परमक्रांति कोटिज्या घातांक	9.9625788	9.9625788	9.9625788
= याम्योत्तर लग्न स्पर्शज्या घातांक	10.0399141	10.2795876	10.6169040
∵याम्योत्तर लग्न	47° 37′ 45″	62° 17′ 12″	76° 19′ 37″
खमध्य विषुवांश कोटिज्या घातांक	9.8482350	9.6962601	9.4059576
+ रवि परमाक्रांति भुजज्या घातांक	9.5997396	9.5997396	9.5997396
= कोण कोटिज्या घातांक	9.4479746	9.2959997	9.0056972
∴कोण	73° 42′ 30″	78° 35′ 51″	84 11′ 05″
लम्ब में वैजिक ऋण—खमध्यक्रांति ϕ′ = आद्य	*—08° 03′ 52″*	*—04° 32 07″*	*—02° 24′ 25″*
आद्य स्पर्शज्या घातांक	9.1513331	8.8993896	8.6235990
+ कोण कोटिज्या घातांक	9.4479746	9.2959997	9.0056972
= संस्कार स्पर्शज्या घातांक	85.993077	8.1953893	7.6292962
विषुवांशमकरादिषट्क में होनेसे आद्यविपरीतदिक् संस	+02° 16′ 34″	+00° 53′ 54″	+00° 14′ 38″
याम्योत्तर लग्न + संस्कार = त्रिभोनलग्न	49° 54′ 19″	63° 11′ 06″	76° 34′ 15″
आद्य भुजज्या घातांक	9.1470169	8.8980276	8.6222157
+ कोण भुजज्या घातांक	9.9822016	9.9913424	9.9977592
= त्रिभोनलग्न नतांश भुजज्या घातांक	9.1292185	8.8893700	8.6199749
∴(आद्यचिन्हवत्) त्रिभोनलग्न नतांश	—07° 44′ 19″	—04° 26′ 44″	—02° 23′ 21″
स्पष्ट चन्द्र—त्रिभोनलग्न = विश्लेष	293° 37′ 54″	280° 50′ 55″	267° 57′ 44″
विश्लेष भुजज्या घातांक	9.9620177(—)	9.9921680(—)	9.9997253(—)
+ त्रिभोनलग्न नतांश कोटिज्या घातांक	9.9960266(+)	9.9986914(+	9.9996223(+)
+ वाराणसेय तिथि-लम्बन घातांक	3.5093413(+)	3.5093413(+)	3.5093413(+)
= स्फुट तिथि लम्बन घातांक	3.4673856(—)	3.5002007(—)	3.5086889(—)
∴स्फुट तिथि लम्बन	— 2933″	— 3164″	— 3226″
त्रिभोनलग्न नतांश भुजज्या घातांक	9.1292185(—)	8.8893700(—)	8.6199749(—)
+ वारणसेय तिथि-लम्बन घातांक	3.5093413(+)	3.5093413(+,	3.5093413(+)
= नति-संस्कार घातांक	2.6385598(—)	2.3987113(—)	2.1293162(—)
∴नति-संस्कार	— 435″	— 250″	— 134″
स्पष्टचन्द्र—स्पष्टसूर्य = अन्तरलक्षणा(भूगर्भीय) तिथि	11° 09′ 06″	11° 36′ 23″	12° 03′ 50″
+ स्फुटतिथि-लम्बन संस्कार	—0° 48′ 53″	—0° 52′ 44″	—0° 53′ 46″
= भूपृष्ठीय दृश्यतिथि	10° 20′ 13″	10° 43′ 39″	11° 10′ 04″
चन्द्र-शर	—4° 50′ 19″	—4° 49′ 33″	—4° 48′ 47″
+ नति-संस्कार	—0° 07′ 15″	—0° 04′ 10″	—0° 02′ 14″
= दृश्य चंद्र-शर दक्षिण	— 4° 57′ 34″	— 4° 53′ 43″	— 4° 51′ 01″
दृश्य तिथि कोटिज्या घातांक	9.9928934	9.9923430	9.9916974
+ दृश्य चंद्र-शर कोटिज्या घातांक	9.9983710	9.9984129	9.9984420
= क्षितवृत्तीय तिथि कोटिज्या घातांक	9.9912644	9.9907559	9.9901394
∴कला-तिथि	11° 27′ 12″	11° 46′ 47″	12° 09′ 48″

श्रीसंवत् २०२२ फाल्गुन शुक्ल प्रतिपदा को श्रीकाशीजी में सूर्यास्त(सूर्य-बिम्ब के ऊपरी कोर का अस्त) भारतीय प्रमाणित समयानुसार घं. १७ मि. ५५ बजे होता है। गत पृष्ठ के गणित-न्यास से स्पष्ट है कि उस समय कलातिथि प्रतिपदा की समाप्ति नहीं होती; क्योंकि सूर्य-चन्द्र-बिंब का तत्कालीन अन्तर १२ अंश नहीं, बल्कि ११'-४६'-४७" ही रहता है; फलतः चन्द्र-दर्शन संदिग्ध हो जाता है। सूर्यास्त के समय उससे चन्द्र का अन्तर १२ अंश हो तो मध्यम-मान से उसके अस्त होने में (१°=४मि. के हिसाब से) ४८मि. लगता है; यही ४८मि. का कालांश आधुनिक दृश्य करण-ग्रन्थों में भी स्वीकृत किया गया है। तदनुसार उस दिन काशी में चन्द्रास्त-काल और सूर्यास्तकाल का अन्तर ४८ मि. से कुछ अधिक ही होने से यहाँ चन्द्र-दर्शन निश्चित प्रतीत होता है; किन्तु यहाँ प्रतिमास के नूतन चन्द्र-दर्शनार्थी हिन्दू मुसलिम भाइयों को अत्यन्त प्रयास करने पर भी उस रोज चन्द्रदर्शन नहीं हुआ। इससे सिद्ध हो गया कि चन्द्र-दर्शन का निर्णय उक्त मध्यम कालांशानुसार नहीं; बल्कि स्पष्ट कालांग के आधार पर करना चाहिये। शास्त्र का भी यही आदेश है, यथा—ग्रहणादन्य योगे च तथा कालांश साधने। शृंगोन्नतौ शशांकस्य दृक्कर्मामिदं स्मृतम् ॥ गत पृष्ठ के गणित में घं. १८ मि. ५५ बजे कला-तिथि का मान १२°-९'-४८" है; अतः १२°।९'।४८"—११°-४६'-४७" = ०°-२३'-०१" यह १ घंटेको तिथिगति हुई और १२°—०'-०"— ११°-४६'—४७" = ०°-१३'-१३" यह तिथ्यन्तर रूप चालन हुआ जिससे अनुपात किया कि१३८१" तिथि-गति ३६०० सेकेंड में तो ७९३'' कितने समय में? तब फल २०६८ सेकेंड यानी ३४ मि. २८से. प्राप्त हुआ। इसको इष्टकाल घं. १७ मि.५५ में जोड़ने से घं १८ मि.२९ से. २८ बजे कलात्मिका प्रतिपदान्त का समय ज्ञात हो गया। इस समय यानी घं.१८ मि.२९से. २८. बजे या उससे कुछ बाद जहाँ भी सूर्यास्त होगा, वहाँ-वहाँ चन्द्र-दर्शन अवश्य होगा; यथा भारत में मारवाड़ ज., कांकरोली, नाथद्वारा, पाली, बम्बई आदि में उसी दिन चन्द्र-दर्शन सिद्ध होता है और इसीलिए सन् '६६ की जंत्री-पृष्ठ ११८ पर ता. २२-२-६६ की पाद-टिप्पणी में काशी से दक्षिण-पश्चिमी भारतीय प्रान्तों में ता. २१ फरवरी को तथा काशी में अगले दिन ता. २२ फरवरी, फाल्गुन शुक्ल द्वितीया को चन्द्र-दर्शन का निर्णय दिया गया था। पहले हम लिख आये हैं कि प्रत्यक्ष कलात्मिका तिथि का विनियोग भी हम अनिवार्यतः सूर्यचन्द्रोपराग-गणित में अमा, पूर्णिमा-तिथियों के रूप में तथा चन्द्र-शृंगोन्नति-साधनार्थ शुक्ल द्वितीया-रूप में करते हैं; तदनुसार उपर्युक्त गणितागत कला-तिथि के द्वारा वास्तव चन्द्र-शृंगोन्नति-साधन निम्न प्रकारेण सरलतया सुसम्पन्न हो जाता है।

ला स्प दृश्य चं. शर	—४।५३.७	८.९३२७१(—)
— लाज्या दृश्य तिथि	१०।४३.६	९.२६९८१(+)
= ला स्प आद्यकोण	२४।४२.५	९.६६२८७(—)

खमध्यशर नाम व्यस्तचिह्नत्रिभोनलग्न-नतांश

∴ खमध्यशर　४।२६.७(+)

— आद्यकोण　२५।४२.५(—)

= परकोण　२९।०९.२(+)

ला छेरे कलातिथि	११।४६.८	१०.००९२४
+ ला स्प परकोण	२९।०९.२	९.७४६४७
= ला स्प चंद्र-शृंगोन्नति	२९।४०.५	९.७५५६३

सितकोण-साधन-सूत्र—

सितकोण (कला में) = कलातिथि + ९.५ × ज्याकलातिथि

ला ज्या कलातिथि	११।४६.८	९.३०९९५(+)
+ ला	९.५	०.९७७७२(+)
= ला	१·९४	०.२८७६७(+)

∴ कलादि १.९ = अंशादि ०°—१'·९　+११°-४६'·८

= ११°—४८'.७ = सितकोण

चंद्रकला एवं शुक्ल-मानानयन—

चंद्रकला = (१ — कोज्या सितकोण)/२

= (१ — कोज्या ११।४८.७)/२

= (१ — ० ९७८८३)/२

= ०·०२११७/२ = ०.०१०५८

∴ चन्द्रकला = ०·०१०५८ (रूपमित चंद्रबिंब परत्वेन)

चन्द्र शुक्लमान (मध्यम मान) = चंद्रकला × चंद्रमध्यम बिम्बाङ्गुल

= ०.०१०५८ × १२ = ०·१२६९६ × ६०

= ० अंगुल ७.६ व्यंगुल शुक्लमान हुआ।

टिप्पणी—चंद्रकला को चंद्र के स्फुट बिम्बांगुल से गुणा करने पर चंद्र का स्फुट शुक्लांगुल ज्ञात होगा।

उपर्युक्त गणित से चंद्रशृंगोन्नति २९°।४०'·५ सिद्ध हुई अर्थात् उस दिन यदि काशी में चंद्र-दर्शन हो जाता तो उसकी वेधोपलब्ध शृंगोन्नति २९·७ अंश के तुल्य होती; किन्तु उस दिन यहाँ चन्द्रदर्शन गणित एवं वेधसिद्ध न होने पर भी उपर्युक्त उदाहरण पञ्चांगकारों के उपयोग एवं विद्वानों के प्रीत्यर्थ दिया गया है।

कला-तिथि का ग्रहण-गणित में विनियोग

दिनांक ३१–७–१९८१ ई० को सूर्य-ग्रहण का काशी में मध्य-काल घं. ७ मि. ३६·५ बजे (भा. प्र. समय), एतत्कालीन खमध्य विषुवांश = ६०°-१४-३७″, परमाक्रांति = २३°-२६′-२६″, भौगोलिक अक्षांश २५°-१९′, खमध्य-क्रांति =२५°-१०′-५″·५७, चन्द्र परम लंबन (निरक्ष देशीय) =५८′-३२″·८६, सूर्य परम लंबन (निरक्ष देशीय) = ८″·६६, सायन सूर्य = रा.४-७°-४७′-२″, सायन चन्द्र रा.४-६°५०′-५″, चन्द्र-शर = +०°२८′-१३″, ला वाराणसेय परम तिथि-लबन = ३·५४४३२५४

१. सर्वप्रथम खमध्य-क्रांति (भू-केन्द्रीय अक्षांश) का साधन भौगोलिक अक्षांश २५°-१९′ से करते हैं—

भूगोल-परिधि की केन्द्रच्युति = इ = ०·०८१८२०३

इ^{२} = ०·००६६९४५४

१–इ^{२} = ०·९९३३०५४६

ला (१–इ^{२}) = ९·९९७०८२८

सूत्र— स्प भू-केन्द्रीय अक्षांश

= स्प भौगोलिक अक्षांश × (१–इ^{२})

लास्प (भौगोलि. अक्षां.) २५°-१९′ = ९·६७४९१०५ (+)

+ ला (१–इ^{२}) = ९·९९७०८२८ (+)

= लास्पभू-के. अक्षां. २५°-१०′-५″·५७ = ९·६७१९९३३ (+)

भू-केन्द्रीय अक्षांश ϕ′ खमध्य-क्रांति = १५°-१०′-५″·५७

२. वाराणसेय तिथि-परमलंबन-साधन—

सूत्र—इष्ट देशीय तिथि-परमलंबन = इष्ट देशीय भू-त्रिज्या × चन्द्र निरक्ष परमलंबन – सूर्य निरक्ष परमलंबन ।

इष्टदेशीय भू-त्रिज्या = १ – स ज्या^{२} (भू-केन्द्रीय) अक्षांश

जहाँ ला 'स' = ७·५२५४२०६

ला ज्या ϕ′ २५°-१०′-५″·५७ = ९·६२८६७२१

लाज्या^{२} ϕ′ = ९·६२८६७२१ × २ = ९·२५७३४४२

+ ला 'स' = ७·५२५४२०६

= ला स ज्या^{२} ϕ′ = ०·०००६०६४०७९ = ६·७८२७६४९

∴ स ज्या^{२} ϕ′ २५°-१०′-५″·५७ = ०·०००६०६४०७९

एवं १ – स ज्या^{२} २५°-१०′-५″·५७ = ०·९९९३९३५९२१ = वाराणसेय भू-त्रिज्या

लावाराणसेयभू-त्रिज्या ०·९९९३९३५९२१ = ९·९९९७३६५

+ ला (चद्रलंबन – सूर्य-लंबन) ३५०४″·२ = ३५४४५८८९

= ला वाराणसेय तिथि-परमलंबन = ३·५४४३२५४

३. कला तिथि-साधनार्थ लंब-साधन—

ला ज्या खमध्य-विषुवांश ६३°-१४′-३७″ = ९·९५०८१६८

+ ला स्प ज्या परमाक्रांति २३°-२६′-२५″ = ९·६३७०६२७

= ला स्पज्या लंब २१°-९′-५०″·१ = ९·५८७८७९५

∴ खमध्य विषुवांश मेषादि षट्क में है, अतः लंब २१°-९′ ५०″·१ (+) धनात्मक हुआ ।

ला स्प. खम. वि. ६३°-१४′-३७″ = १०·२९७४१३३ (+)

— लाकोज्याप. क्रां. २३°-२६′ २५·″ = ९·९६२५९४४ (+)

= लास्प. या. लं. ६५°-१०′-३३·″५ = १०·३३४८१८९ (+)

∴ याम्योत्तर लग्न = ६५°-१०′-३३″·५ (+)

ला कोज्या खम. विषु. ६३°-१४′-३७″ = ९·६५३४०३५ (+)

+ ला ज्या. प. क्रां. २३°-२६′-२५″ = ९·५९९६५७१ (+)

= ला कोज्या कोण ७९°-४१′-०.″६ = ९·२५३०६०६ (+)

∴ कोण = ७९°४१′०·″६ (+)

लम्ब २१°-९०′-५०″·१ (+)

— खमध्य-क्रांति २५°-१०′-५·″६ (+)

= आद्य ४°-०′-१५·५″ (—)

ला स्पज्या आद्य ४°-०′-१५″·५ = ८·८४५१११७

+ ला कोज्या कोण ७९°-४१′- ०″·६ = ९·२५३०६०६

= ला स्प संस्कार ०°-४३′-११″ ६ = ८·०९८१७२३

खमध्य विषुवांश मकरादि षट्क में होने से संस्कार का चिह्न आद्य-चिह्न के विपरीत धन (+) होगा ।

याम्योत्तर लग्न ६५°-१०′-३३″·५ (+)

+ संस्कार ०°-४३′-११″·६ (+)

= त्रिभोन लग्न ६५°-५३′-४५″·१ (+)

ला ज्या आद्य ४°-०′-१५″·५ = ८·८४४०५०२

+ ला ज्या कोण ७९°-४१′- ०″·९ = ९·९९२९२१६

ला ज्या त्रि. ल. नतां. ३°-५६′-२२″ = ८·८३६९७१८

∴ त्रिभोन लग्न नतांश = ३°-५६′-२२″ (—)

त्रिभोन लग्न नतांश का चिह्न आद्य-चिह्नवत् किंवा व्यस्त चिह्न खमध्य-शर होता है ।

स्पष्ट चन्द्र १२६°-५०′- ५″ (+)

— त्रिभोन लग्न ६५°-५३′-४५″·१ (+)

= विश्लेष ६०°-५६′-१९″·९ (+)

विश्लेष = ६०°-५६′-१९″·९ (+)

ला ज्याविश्लेष ६०°-५६′-१९″·९ = ९·९४१५६२१ (+)

+ लाकोज्यात्रि. ल. न. (–) ३°-५६′-२२″ = ९·९९८९७२६ (+)*

+ ला तिथि परम लंबन = ३·५४४३२५४ (+)

= ला तिथि-स्फुटलंबन ३०५३″·९४ = ३·४८४८६०१ (+)

∴ तिथि-स्फुटलंबन = ३०५३″·९४ (+)

= ५०′-५४″ (+) लगभग

*त्रिकोणमिति के नियमानुसार ऋण कोण की कोज्या धनात्मिका होती है ।

ला ज्या त्रि.ल.नता. ३°-५६′-२२″ = ८·८३६९७१८(−)
+ ला तिथि परम लंबन = ३·५४४३२५४(+)
= ला नति-संस्कार २४०″·६ = २·३८१२९७२(—)

∴ नति-संस्कार = २४०″·६(—)

नति-संस्कार का चिह्न त्रिभोनलग्न-नतांशवत् होगा।
= ४′-१″ (—) लगभग

चन्द्र − सूर्य = (भू-केन्द्रीय तिथि) = ३५९°- ३′- ३″(+)
+ तिथि स्फुट लंबन = ०°-५०′-५४″(+)
= दृश्य तिथि = ३५९°-५३′-५७″(+)

३६०−३५९°-५३-′-५७″ दृश्यतिथि = ०°-६′-३″ अमावशेष

चन्द्र-शर ०°२८′१३″(+)
+ नति संस्कार ०°- ४′- १″(−)
= चन्द्र दृश्य शर ०°-२४′-१२″(+)

ला कोज्या दृश्य तिथि ०°-′६′- ३″ ९·९९९९९९३
+ लाकोज्या चन्द्र दृश्य शर ०°-२४′-१२″ ९·९९९९८९२
= ला कोज्या कला-तिथि ०°-२५′ ९·९९९९८८५

∴ कला-तिथि ०°-२५′

ग्रासमान-साधन— सूर्य-बिम्ब = ३१′-३०″·८ + ३१′-५४·४ चन्द्रबिंब = ६३′-२५″·२ बिम्बैक्य

बिम्बैक्य / २ = ६३′-२५″·२ / २ = ३१′-४२″·६ मानैक्यखण्ड

रूपमित ग्रासमान = (मानैक्य-खण्ड − कलातिथि) / सूर्य-बिम्ब

(३१′-४२″·६−२५′) / ३१′-३०″·८ = ६′-४२″·६ / ३१′-३०″·८ = ०·२१२९ = ०.२१३

लगभग। भारतीय नाविक पंचांग (नॉटिकल) में उक्त ग्रासमान ०·२१२ अंकित है;

इस प्रकार ग्रहण-गणित में भी कला-तिथि की उपयोगिता सिद्ध है।

चन्द्र एवं शुक्र का रोहिणी-शकट-भेद

ज्योतिष-शास्त्र की दृष्टि से वह वर्ष असाधारण महत्त्व लेकर आता है जिसमें चन्द्रमा या शुक्र या दोनों द्वारा रोहिणी-शकट का भेद होता है। चन्द्रमा बहुत वर्षों के बाद रोहिणी-शकट-भेद करता है; किन्तु जब ऐसा करता है तो करीब पाँच-छः वर्षों तक हर महीने वह शकट-भेद करता रहता है। पिछली बार सन् १९५९ ई० में चंद्र ने रोहिणी शकट भेद आरम्भ किया था और ता. २२ फरवरी को चन्द्र द्वारा रोहिणी शकट-भेद के बाद ता. १४ जुलाई सन् १९६१ को शुक्र-ने भी शकट-भेद किया था जिसका आकाशीय चित्र यहाँ दिया जा रहा है। आकाश में रोहिणी नक्षत्र-पुञ्ज की पाँच तारायें दिखलाई पड़ती हैं। यदि इन ताराओं को परस्पर कल्पित रेखा के द्वारा मिलाया जाय तो एक त्रिभुजाकार शकट यानी माल ढोने की गाड़ी-जैसी आकृति बनती है; इसीलिए प्राचीन महर्षियों ने रोहिणी नक्षत्र-पुञ्ज को रोहिणी-शकट का नाम दिया था। नक्षत्र-पुञ्जों को इस प्रकार आकृतिमूलक संज्ञा देने से उसके सहारे आकाश में उन्हें पहचानना निःसन्देह सरल हो जाता है, अस्तु।

कोई ग्रह जब इस शकट के अन्दर से होकर निकलता है तो इस आकाशीय घटना को उक्त ग्रह द्वारा रोहिणी-शकट का भेद कहा जाता है। प्राचीन आचार्यों ने इसको बहुत महत्त्व दिया है और संहिता-ग्रन्थो में इसके भावी परिणामों का उल्लेख किया है। इतना ही नहीं, पुराणों में भी इस असाधारण योग का वर्णन मिलता है। अग्नि-पुराण में एक कथा आती है कि त्रेता में शनि द्वारा रोहिणी-शकट-भेद से १२ वर्षीय अनावृष्टिजन्य भयंकर अकाल का दुर्योग उपस्थित होने पर उसके निवारणार्थ महापराक्रमी राजा दशरथ अपने लोक-लोकान्तरगामी रथ पर सवार होकर शनि-लोक पहुँचे और शनिदेव से युद्ध के लिये सन्नद्ध हो गये। उनके अद्भुत साहस एवं शक्तिमत्ता से प्रसन्न होकर शनिदेव ने उनको वर दिया कि उनके राज्य में शनिकृत रोहिणी-शकट-भेद का दुष्प्रभाव नही पड़ेगा। कुछ समय पूर्व इस पौराणिक कथा को कोरी कल्पना कह कर भले ही कोई उपेक्षित कर सकता था; किन्तु आज विज्ञान ने चन्द्रलोक पर मानव को सशरीर पहुँचा दिया है और अब मंगलादि ग्रहों की यात्रा को सम्भव बनाने में जिस तेजी से वह प्रगति कर रहा है, उसे देखते हुए इस कथा में निहित तथ्य और प्रेरणा का महत्त्व बहुत बढ़ जाता है। क्या इससे हमें नियति पर पुरुषकार के विजय का सन्देश नहीं मिलता? विष्णुधर्मोत्तर पुराण में रोहिणी शकट-भेद का यह फल लिखा है—'रोहिणी शकटं भिन्द्यु ग्रहायदि भवेत् तदा ॥
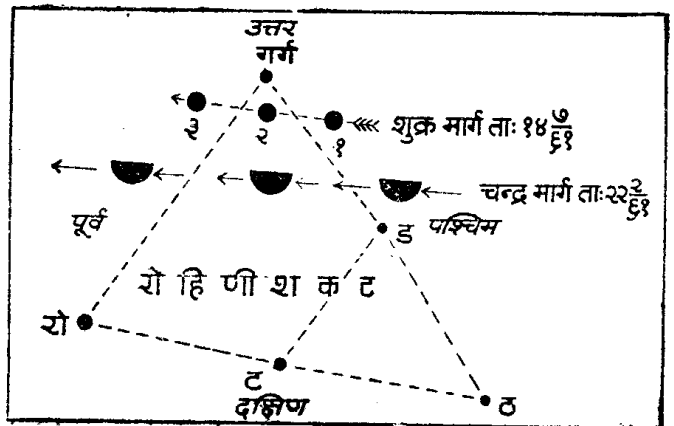
नाशः प्रजानाम् क्रूरैश्च विशेषेणेह संक्रमे ।। वाराही संहिता में चन्द्र के रोहिणीशकट-भेद का यह फल वर्णित है— रोहिणीशकटमध्यसस्थिते चन्द्रमस्य शरणीकृता जनाः। क्वापि यान्ति शिशुपाचिताशनः सूर्यतप्त पिठराम्बुपायिनः।' अर्थात् यदि चन्द्रमा रोहिणी-शकट का भेदन करे तो जनसमुदाय आश्रय रहित होकर अपने बच्चों के लिए भोजन की याचना करता हुआ, सूर्य-किरणों से तप्त जल पीता हुआ, अनिश्चित स्थान पर गमन करे। रोहिणी नक्षत्रपुञ्ज की पाँच ताराओं में सबसे उत्तर की ओर 'गर्ग' नामक तारा है जिसे अंग्रेजी में इप्सलायन टॉरी कहते हैं। यदि कोई ग्रह इस तारा के ऊपर की ओर से यानी उत्तर से होकर निकल जाय तो वह रोहिणी-शकट-भेद न कर सकेगा; किन्तु यदि वह इस तारा के नीचे की ओर से यानी दक्षिण से होकर निकलेगा तो अवश्य शकट-भेद करेगा। सन् १९७६ ई० में उक्त गर्ग तारा का विषुवांश ६६°।४८'।१०'' तथा क्रांति उ. १९°।७'।४२'' रहा; अतएव जब किसी ग्रह का उक्त विषुवांश हो एवं उत्तर क्रांति १९°।७'। २'' से कम हो तो वह 'गर्ग' तारा के ध्रुव-सूत्र में दक्षिण तरफ, शकट के अंदर होगा यानी उसके द्वारा शकट-भेद होगा। सन् १९७६ ई० में सर्व प्रथम ता० १९ अगस्त को चन्द्रमा ने रोहिणी-शकट का भेद किया। उक्त तारीख को भा. प्र. समय से घं. ६ मि. २५ बजे 'गर्ग' तारा ने काशी में याम्योत्तर-लंघन किया अर्थात् मध्याकाश में आया था और उसके बाद स्टैं. टा. से घं. ७ मि. ३४ बजे 'गर्ग' तारा से चन्द्रमा की ध्रुवसूत्रीय युति हुई; किन्तु इन सबसे पहले ही स्टैं. टा. से घं. ५ मि. १७ बजे काशी में सूर्योदय हो गया था। अतः उस दिन सूर्य के प्रकाश में गर्ग तारा का याम्योत्तरलंघन और चन्द्र-तारा-युति दोनों दिखाई नहीं दिये। उस रोज भा. स्टैं. टा. से घं. २३ मि. ५९ बजे गर्ग तारा पूर्व में उदित हुआ और चंद्रमा उसके अति निकट था। आधीरात से भोर तक क्रमशः दोनों पूर्वाकाश में ऊपर उठते रहे। सं. २०३३, भाद्रपद कृष्ण ९ गुरुवार की आधी रात के बाद ता. २० अगस्त की भोर में खमध्य से पूर्व की तरफ रोहिणी नक्षत्रपुञ्ज की 'गर्ग' तारा के अति आसन्न कृष्ण दशमी के अर्धाल्प चन्द्र को सहज ही देखा गया।

सूर्यसिद्धान्त में भोगांश और शर के आधार पर ग्रह नक्षत्रों की युति एवं रोहिणी-शकट-भेद का समय जानने की रीति बतलायी गयी है। नक्षत्र-ग्रह-युत्याधिकार के श्लोक १३ के अनुसार वृष राशि के १७वें अंश पर स्थित जिस ग्रह का दक्षिण शर २ अंश से अधिक होता है, वह रोहिणी-शकट का भेदन करता है। उपयुक्त 'गर्ग' तारे का शर २ अंश ३५ कला के लगभग है और रोहिणी-नक्षत्र-पुञ्ज के योगतारा का दक्षिण शर ५ अंश २८ कला है। अतएव स्पष्ट है कि रोहिणी नक्षत्रस्थ ग्रह का दक्षिण शर यदि २°।३५' से लेकर ५°।२८' की सीमान्तर्गत (अर्थात् २°।३५' से अधिक एवं ५°।२८' से कम) हुआ तो वह रोहिणी-शकट के भीतर से जाता हुआ दृष्टिगोचर होगा अर्थात् रोहिणी-शकट का भेदन करेगा। ग्रह के शर का घटना-बढ़ना उसके पात की क्रांतिवृत्तीय स्थिति पर अवलंबित होता है; तदनुसार राहु जब तक मिथुन के १६ अंश से तुला के १६ अंश तक की सीमा में रहता है तब तक चंद्रमा का शर भी उपर्युक्त सीमा के अन्तर्गत रहने से वह नक्षत्रमण्डल के प्रत्येक फेरे में रोहिणी-शकट का भेदन करता रहता है। ता. १९ अगस्त '७६ को स्पष्ट (True) राहु तुला के १२।। अंश पर था; और आगे वह वक्रगत्या चलता हुआ ता. २५ सितंबर सन् १९८२ को मिथुन के १६ अंश पर आया। इन ६ वर्षों की अवधि में हर महीने वह रोहिणी-शकट का भेदन करता रहा; आगे ९ वर्ष बाद सन् १९९४ ई० से सन् २००० ई० तक चन्द्रमा रोहिणी-शकट का भेदन करता रहेगा।

इदानीं रोहिणी शकट-भेदमाह—

वृषे सप्तदशे भागे यस्य याम्योंऽशक द्वयात् ।
विक्षेपोऽभ्यधिको भिन्द्याद्रोहिण्याः शकटं तु सः ।। (सूर्य सिद्धान्त)

वृषराशौ सप्तदशे १७° भागे व्यवस्थितस्य यस्य कस्यचिद् ग्रहस्य याम्यः = दक्षिणः, विक्षेप = शरः, अंशकद्वया-दभ्यधिको भवेत्, स ग्रहस्तु, रोहिण्याः शकटं = तारापञ्चकेन शकटाकारं रोहिणीनक्षत्रं, भिन्द्यात् = भेदयेदिति ।। (भग्रहयुत्याधिकार १३)

अथ रोहिणीशकट-भेदः—

गुणचत्वारिंशदंशौ सार्द्धै ४३°५ स्तुल्ये नभश्चरे ।
दक्षिणेषुः खषटचन्द्रा १६०' धिकलिप्तोऽस्ति तस्य चेत ।।
ग्रहो भिनत्ति शकटं चन्द्रो भिन्द्याद्विधुंतुदे ।
एक सप्तति भागाग्रे खार्कांशा १२०° वधि संस्थिते ।। (ज्योतिर्गणितम्)

सार्धत्रिचत्वारिंशदंशैस्तुल्ये ग्रहभोगे यदि तस्य भूमध्यस्पष्टो दक्षिण शरः षट्याधिकशतकलाभ्योऽधिकः स्यात्तर्हि स ग्रहो रोहिणीशकटं भेदस्स्यति (रा. २।११°—रा. ६।११°) एतदवधिस्थिते राहौ चन्द्रो रोहिणीशकटं तद्विवशा-द्भिन्द्यात् ।

	संक्रांति-पुण्यकाल-कोष्ठक ||		
सक्रा	पूर्व	पर
मेष	१० घ. = ४ घं.	१० घ. = ४ घं.
वृष	१६ घ. = ६ घं. २४ मि.	०
मिथुन	०	१६ घ. = ६ घं. २४मि.
कर्क	३० घ. = १२ घ.	०
सिंह	१६ घ. = ६ घं. २४ मि.	०
कन्या	०	१६ घ = ६ घं. २४ मि.
तुला	१० घ. = ४ घं	१० घ. = ४ घं.
वृश्चि.	१६ घ. = ६ घं. २४मि.	०
धनु	०	१६ घ. = ६घं २४ मि.
मकर	०	४० घ. = १६ घं
कुम्भ	१६ घ. = ६ घं. २४ मि.	०
मीन	०	१६ घ. = ६घं २४ मि.

|| संक्रान्ति-पुण्यकाल-व्यवस्था ||

संक्रान्ति-पुण्यकाल-निर्णय के लिए यावत् शास्त्रीय वचनों की परस्पर संगति और अविरोध से यह व्यवस्था हमने बनायी है। आशा है, सभी सहयोगी पञ्चांगकार तदनुसार संक्रांति-पुण्यकाल अपने पंचांगों में निर्दिष्ट किया करेंगे जिसमें इस विषय में विभिन्न, एकांगी निर्णयों से जनता व्यर्थ भ्रमित न हो और सर्व पंचांगों में एकवाक्यता भी हो सके। संक्रांति-पुण्यकाल-निर्णय में तीन नियम हैं; (१) सूर्य की सभी संक्रांतियों के लिये सामान्य नियम यह है कि उनके संक्रमण-काल के १६ घटी पूर्व से १६ घटी पश्चात् तक, कुल ३२ घटी का पुण्यकाल होता है। इसमें वृष,कर्क, सिंह, वृश्चिक और कुम्भ की संक्रांति में पूर्व की १६ घटी विशेष पुण्यकाल तथा पर की १६ घटी का सामान्य पुण्यकाल होता है। इसी प्रकार मिथुन, कन्या, धनु, मकर और मीन की संक्रांतियों से पूर्व की १६ घटी का सामान्य पुण्यकाल तथा पर की १६ घटी का विशेष पुण्यकाल होता है। मेष और तुला के पूर्व की १० घटी और पर की १० घटी, कुल २० घटी विशेष पुण्यकाल तथा पूर्वापर की १६-१६ घटी कुल ३२ घटी सामान्य पुण्यकाल होता है। चूंकि पुण्य का रात्रि में निषेध है, अतएव जिस संक्रांति के विशेष पुण्यकाल का जितना भाग दिन में पड़ता है, उतना ही ग्रहण करना चाहिये। शेष नहीं; किन्तु यदि विशेष पुण्यकाल का कुछ भी भाग दिन में न पड़े तब तो सामान्य पुण्यकाल ही लेना चाहिए

(२) नियम— कर्क और मकर-संक्रांतियों के संबंध में विशेष नियम यह है कि मकर-संक्रांति सायं-संध्या में या उसके पहले हो तथा कर्क-संक्रांति प्रातःसंध्या के पहले रात्रि में किसी भी समय हो तो पूर्व दिन का उत्तरार्ध इन संक्रांतियों का पुण्यकाल होगा। इसी प्रकार मकर-संक्रांति सायं-संध्या के पश्चात् किसी भी समय रात्रि में तथा कर्क-संक्रान्ति प्रातःसन्ध्या में या उसके बाद हो तो अग्रिम दिन का पूर्वार्ध इन संक्रान्तियों का पुण्यकाल होगा।

(३)—नियम यह है कि विशेष स्थिति में कर्क-संक्रान्ति के पूर्व की १६ घटी के बजाय ३० घटी का तथा मकर-संक्रान्ति के बाद की १६ घटी के बजाय ४० घटी का पुण्यकाल ग्रहण किया जाता है; जैसे—किसी दिन ३० घटी का रात्रिमान है और उस दिन सायं-संध्या के बाद ही मकर-संक्रान्ति लगी तो तत्पश्चात् १६ घटी का विशेष पुण्यकाल यहाँ लेनेपर (३ + १६=१९,–३०=) ११ घटी सूर्योदय से पहले ही वह समाप्त हो जायेगा। अतएव रात्रि का यह पुण्यकाल अनुपयोगी होने के कारण यहाँ ४० घटी का विशेष पुण्यकाल लेना होगा जिसमें (४०–२७=)१३ घटी, सूर्योदय के बाद तक स्नान, दानार्थ विशेष पुण्यकाल मिलेगा; सामान्य पुण्यकाल तो नियम २ के अनुसार उस दिन के पूर्वार्ध (मध्याह्न) तक रहेगा। इसी प्रकार से कर्क-संक्रान्ति के विषय में भी समझना चाहिये।

संध्याकाल—मध्यम मान से ३ घटी यानी १ घं. १२ मि. का होता है। सूर्योदय से पूर्व प्रातःसंध्या तथा सूर्यास्त के पश्चात् सायं-सन्ध्या होती है। संध्याकाल का स्पष्ट मान सूक्ष्म दृग्गणित से ज्ञात होता है।

श्राद्ध-विवेचन

प्रत्येक शरीर में आत्मा तीन रूप में होता है–१.—विज्ञानात्मा, २.—महानात्मा, ३.—भूतात्मा। विज्ञानात्मा (उसको कहते हैं जो) गर्भाधान से पहले स्त्री-पुरुष में सम्भोग की इच्छा उत्पन्न करता है। वह रोदसी मण्डल से आता है। उक्त मंडल पृथ्वी से २७ हजार मील की दूरी पर है। महानात्मा चन्द्रलोक से पुरुष के शरीर में २८ अंशात्मक रेतस् बनकर आता है। उसी २८ अंश रेतस् से पुरुष पुत्र पैदा करता है। भूतात्मा माता द्वारा खाये गये अन्न के रस से बने वायु द्वारा गर्भ-पिण्ड में प्रवेश करता है। उसे वायु में अहंकार का ज्ञान होता है। उसी को प्रज्ञानात्मा तथा भूतात्मा कहते है। यह भूतात्मा पृथ्वी के सिवा अन्य किसी लोक में नहीं जा सकता। मृत प्राणी का महानात्मा स्वजातीय चन्द्रलोक में चला जाता है। चन्द्रलोक में उस महानात्मा में २८ अंश रेतस् माँगा जाता है; क्योंकि चंद्रलोक से २८ अंश लेकर ही वह उत्पन्न हुआ था। इसी २८ अंश रेतस् को पितृऋण कहते हैं। २८ अंश रेतस् के रूप में श्रद्धा नामक मार्ग से भेजे जानेवाले पिण्ड तथा जल आदि के दान को श्राद्ध कहते हैं। इस श्रद्धा नामक मार्ग का सम्बन्ध मध्याह्नकाल में पृथ्वी से होता है। इसलिए मध्याह्नकाल में श्राद्ध करने का विधान है। पृथ्वी पर कोई भी वस्तु सूर्यमंडल तथा चन्द्रमंडल के सम्पर्क से ही बनती है। संसार में सोम सम्बन्धी वस्तु विशेषतः चावल और यव हैं। यव में मेधा की अधिकता है। धान और यव में रेतस्(सोम) का अंश विशेष रूप में रहता है। आश्विन कृष्णपक्ष में

यदि चावल तथा यव का पिंडदान किया जाय तो चन्द्रमंडल को २८ अंश रेतस् पहुँच जाता है। पितर इसी चन्द्रमा के ऊर्ध्व देश में रहते हैं; विदूर्ध्वलोके पितरो वसन्तः स्वाधः सुधादीधित मामनन्ति। (गोलाध्याय)

आश्विन कृष्ण प्रतिपदा से लेकर अमावस्या तक ऊपर की रश्मि तथा रश्मि के साथ पितृप्राण पृथ्वी पर व्याप्त रहता है। श्राद्ध की मूलभूत परिभाषा यह है कि प्रेत और पितर के निमित्त, उनकी आत्मा की तृप्ति के लिए श्रद्धापूर्वक जो अर्पित किया जाय वह श्राद्ध है। मृत्यु के बाद दशगात्र और षोड़शी-सपिण्डन तक मृत व्यक्ति की प्रेत संज्ञा रहती है। सपिण्डन के बाद वह पितरों में सम्मिलित हो जाता है।

पितृपक्ष भर में जो तर्पण किया जाता है उससे वह पितृप्राण स्वयं आप्यायित होता है। पुत्र या उसके नाम से उसका परिवार जो यव तथा चावल का पिण्ड देता है, उसमें-से रेतस् का अंश लेकर वह चन्द्रलोक में अम्भप्राण का ऋण चुका देता है। ठीक आश्विन शुक्ल प्रतिपदा से वह चक्र उपर की ओर होने लगता है। १५ दिन अपना-अपना भाग लेकर शुक्ल प्रतिपदा से उसी रश्मि के साथ रवाना हो जाता है। इसीलिये इसको पितृपक्ष कहते हैं। अन्य दिनों में जो श्राद्ध तथा तर्पण किया जाता है, उसका सम्बन्ध सूर्य को उस सुषुम्णा नाड़ी से रहता है जिसके द्वारा श्रद्धारश्मि मध्याह्नकाल में पृथ्वी पर आती रहती है और यहाँ से तत्तत् पितर का भाग ले जाती है; परन्तु पितृपक्ष में जितने पितृप्राण चन्द्रमा के ऊर्ध्व देश में रहते हैं, वे स्वतः चन्द्रपिंड की परिवर्तित स्थिति के कारण पृथ्वी पर व्याप्त रहते हैं। इसी कारण पितृपक्ष में तर्पण और श्राद्ध का इतना अधिक माहात्म्य है।

शास्त्र का निर्देश है कि माता-पिता आदि के निमित्त उनके नाम और गोत्र का उच्चारण कर मंत्रों द्वारा जो अन्न आदि अर्पित किया जाता है, वह उनको प्राप्त हो जाता है। यदि अपने कर्मों के अनुसार उनको देव-योनि प्राप्त होती है तो वह अमृतरूप में उनको प्राप्त होता है। उन्हें गन्धर्वलोक प्राप्त होने पर भोग्यरूप में, पशुयोनि में तृणरूप में, सर्पयोनि में वायुरूप में, यक्षयोनि में, पेयरूप में, दानवयोनि में मांस के रूप में, प्रेतयोनि में रुधिररूप में और मनुष्ययोनि में अन्न आदि के रूप में उपलब्ध होता है।

जब पितर यह सुनते हैं कि श्राद्धकाल उपस्थित हो गया है तो वह एक दूसरे का स्मरण करते हुए मनोमय रूप से श्राद्धस्थल पर उपस्थित हो जाते हैं और ब्राह्मणों के साथ वायुरूप में भोजन करते हैं। यह भी कहा गया है कि जब सूर्य कन्याराशि में आते हैं तो पितर अपने पुत्र-पौत्रों के यहाँ आते हैं। विशेषतः आश्विन-अमावस्या के दिन वह दरवाजे पर आकर बैठ जाते हैं। यदि उस दिन उनका श्राद्ध नहीं किया जाता तो वह शाप देकर लौट जाते हैं। अतः उस दिन पत्र-पुष्प,फल और जल-तर्पण से यथाशक्ति उनको तृप्त करना चाहिये। श्राद्धविमुख नहीं होना चाहिए। कन्यागते सवितरि पितरो यान्ति वै सुतान्। अमावास्या दिने प्राप्ते गृहद्वारं समाश्रिताः। श्राद्धाभावे स्वभवनं शापं दत्वा व्रजन्ति ते॥

मुख्यतः श्राद्ध दो प्रकार के हैं। पहला एकोद्दिष्ट और दूसरा पार्वण; लेकिन बाद में चार श्राद्धों को मुख्यता दी गयी है। इनमें पार्वण, एकोद्दिष्ट, वृद्धि और सपिण्डीकरण आते हैं। आजकल यही चार श्राद्ध समाज में प्रचलित हैं। वृद्धिश्राद्धका मतलब नान्दीमुख श्राद्ध है। श्राद्धों की पूरी संख्या बारह है—नित्यं नैमित्तिकं काम्य वृद्धिश्राद्ध सपिंडनम्। पार्वणं चेति विज्ञेयं गोष्ठ्यां शुद्धयर्थष्टमम्॥ कर्मागं नवमं प्रोक्तं दैविकं दशमं स्मृतम्। यात्रास्वेकादशं प्रोक्तं पुष्टयर्थं द्वादशं स्मृतम्॥

इनमें नित्यश्राद्ध, तर्पण और पञ्चमहायज्ञ आदि के रूप में, प्रतिदिन किया जाता है। नैमित्तिक श्राद्ध का ही नाम एकोद्दिष्ट है। यह किसी एक व्यक्ति के लिए किया जाता है। मृत्यु के बाद यही श्राद्ध होता है। प्रतिवर्ष मृत्यु-तिथि पर भी एकोद्दिष्ट ही किया जाता है। काम्य श्राद्ध अभिप्रेतार्थ सिद्धयर्थ अर्थात् किसी कामना की पूर्ति की इच्छा से किया जाता है। वृद्धिश्राद्ध पुत्र-जन्म आदि के अवसर पर किया जाता है। इसी का नाम नान्दीश्राद्ध है। सपिण्डन श्राद्ध मृत्यु के बाद दशगात्र और षोडषी के बाद किया जाता है। इसके द्वारा मृत व्यक्ति को पितरों के साथ मिलाया जाता है।

प्रेतश्राद्ध में जो पिण्डदान किया जाता है, उस पिण्ड को पितरों को दिये पिण्ड में मिला दिया जाता है। पार्वण-श्राद्ध प्रतिवर्ष आश्विन कृष्णपक्ष में मृत्यु-तिथि और अमावास्या के दिन किया जाता है। इसके अतिरिक्त अन्य सभी पर्वों पर भी यह श्राद्ध किया जाता था। गोष्ठी-श्राद्ध विद्वानों को सुखी समृद्ध बनाने के उद्देश्य से किया जाता था। इससे पितरों की तृप्ति होना स्वाभाविक है। शुद्धि-श्राद्ध शारीरिक, मानसिक और अशौचादि अशुद्धि के निवारणार्थ किया जाता था। कर्माङ्ग श्राद्ध सोमयाग, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन आदि के अवसर पर किया जाता था। दैविक श्राद्ध देवताओं की प्रसन्नता के लिए किया जाता था। यात्राश्राद्ध यात्रा-काल में किया जाता था। पुष्टिश्राद्ध धन-धान्य-समृद्धि की इच्छा से किया जाता था।

हमारे धर्मशास्त्रों में श्राद्ध के सम्बन्ध में इतने विस्तार से विचार किया गया है कि इसके सामने अन्य समस्त धार्मिक कृत्य गौण-से लगने लगते हैं। श्राद्ध के छोटे-से-छोटे कृत्य के सम्बन्ध में इतनी सूक्ष्म मीमांसा और समीक्षा की

है कि विचारशील व्यक्ति चमत्कृत हो उठते हैं। मनोविज्ञान के अध्येताओं के लिए श्राद्धीय कर्मकांड विवेचन एवं अध्ययन की सामग्री है। शास्त्रकारों ने अपने पांडित्य और मनोविज्ञान का यत्परोनास्ति-रूप प्रदर्शित किया है। नया मकान बनवाने पर, नया कूप तैयार करने पर, समृद्धि प्राप्त होने पर, देश में कोई नयी असाधारण घटना होने पर, शत्रुओं पर विजय प्राप्त होने पर, पुत्र-जन्म, यज्ञोपवीत, विवाह, कन्या-दान आदि के अवसरों पर, जब परिवार के सब लोग मिलकर उत्सव मना रहे हों, सबका मन उल्लसित हो, उस समय अपने स्वर्गीय बन्धुओं की स्मृति आना नितांत स्वाभाविक है। यह इच्छा भी उस समय अवश्य जागरित होती है कि यदि इस अवसर पर माता रहतीं, पिता रहते, बड़े भाई रहते, दूसरे आत्मीय रहते तो उनको कितना आनन्द प्राप्त होता। जो हमारे सुख में अपनी अन्तरात्मा से सुखी होते थे, दुःख में दुखी होते थे, उनकी स्मृति मिटाये मिट नहीं सकती। अतः यह इच्छा स्वाभाविक है कि वह अज्ञात लोक के वासी भी हमारे उल्लास में, आनन्दोत्सव में सम्मिलित हों; शरीर से न सही, आत्मा से हमारे साथ रहें; अतः उनके प्रति श्रद्धानत होना और श्रद्धा विवेदित करना स्वाभाविक हो जाता है। उनका शास्त्रीय मंत्रों द्वारा मानसिक आवाहन पूजन ही श्राद्ध है।

इस मनोवैज्ञानिक सत्य से इनकार नहीं किया जा सकता कि मन की भावना बड़ी प्रबल होती है। श्रद्धाभिभूत मन के सामने स्वर्गीय आत्मा सजीव और साकार हो उठती है। श्राद्ध में माता-पिता आदि के रूप का ध्यान करना आवश्यक कर्तव्य निर्धारित किया गया है। अनेक श्रद्धालु लोगों का यह अनुभव है कि श्राद्ध के समय माता, पिता या किसी अन्य स्नेही की झलक दिखायी दी। भगवान् राम ने जब अपने पिता का श्राद्ध किया तो पिण्ड-दान के बाद भगवती सीता को दशरथ आदि पितरों का दर्शन कराया था। यह निरी कपोल-कल्पना नहीं है। आज का मनोविज्ञान भी श्राद्ध के इस सत्य के निकट पहुँचता जा रहा है।

श्राद्ध के लिये जिन वस्तुओं की आवश्यकता पड़ती है, उन पर भी शास्त्रों में बहुत विस्तार से विचार किया गया है। कौन वस्तु कैसी हो, कहाँ से ली जाय, कब ली जाय। भोजन-सामग्री कैसी हो, किन पात्रों में बनायी जाय, कैसे बनायी जाय। फल, साग, तरकारी आदि में भी कुछ अश्राद्धीय ठहरा दी गयी हैं। प्रत्येक वस्तु की शुद्धता और स्तर निर्धारित कर दिया है। पुष्प और चन्दन जो निर्धारित हैं, उन्हीं का उपयोग हो सकता है।

इसके अलावा श्राद्ध में कैसे ब्राह्मणों को आमन्त्रित किया जाय, किस प्रकार किया जाय, कब किया जाय और निमन्त्रित ब्राह्मण निमन्त्रण के बाद किस प्रकार का आचरण करें, भोजन किस प्रकार करें, आदि सभी बातें विस्तार-पूर्वक बतलायी गयी है। ब्राह्मणों को, उत्तम, मध्यम और अधम तीन श्रेणियों में विभाजित किया गया है। निषिद्ध ब्राह्मणों की सूची बड़ी लम्बी है। शास्त्र का कठोर आदेश है कि अन्य किसी धार्मिक कार्य में ब्राह्मणों की परीक्षा न की जाय, पर श्राद्ध में जिन ब्राह्मणों को आमन्त्रित करना हो, उनकी परीक्षा प्रयत्नपूर्वक की जाय और यह परीक्षा आमन्त्रित करने के पूर्व कर ली जाय, बाद में नहीं—न ब्राह्मणं परीक्षेत दैवे कर्मणि धर्मवित्। पित्र्ये कर्मणि तु प्राप्ते परीक्षेत प्रयत्नतः।

श्राद्ध किसी दूसरे के घर में, दूसरे की भूमि में, कभी न किया जाय। जिस भूमि पर किसी का स्वामित्व न हो, सार्वजनिक हो, ऐसी भूमि पर श्राद्ध किया जा सकता है। शास्त्रीय निर्देश है कि दूसरे के घर में जो श्राद्ध किया जाता है, उसमें श्राद्ध करनेवाले के पितरों को कुछ नहीं मिलता। गृह-स्वामी के पितर बलात् सब छीन लेते हैं—परकीय गृहे यस्तु स्वात्पितृस्तर्पयेद्यदि। तद्भूमि स्वामिनस्तस्य हरन्ति पितरोबलात्॥

यह भी कहा गया है कि दूसरे के प्रदेश में यदि श्राद्ध किया जाय तो उस प्रदेश के स्वामी के पितर श्राद्ध-कर्म का विनाश कर देते हैं—परकीय प्रदेशेषु पितृणां निवपयेत्तुयः। तद्भूमि स्वामि पितृभिः श्राद्धकर्म विहन्यते॥

इसीलिए तीर्थ में किये गये श्राद्ध से भी आठगुना पुण्यप्रद श्राद्ध अपने घर में करने से होता है—'तीर्थादष्टगुणं पुण्यं स्वगृहे ददतः शुभे।' यदि किसी विवशता के कारण दूसरे के गृह अथवा भूमि में श्राद्ध करना ही पड़े तो भूमि का मूल्य अथवा किराया पहले उसके स्वामी को दे दिया जाय।

मृतक की अन्त्येष्टि और श्राद्ध की जो व्यवस्था इस समय प्रचलित है, वह हमारे वेदों में वर्णित है। गृह्यसूत्रों में पितृयज्ञ अथवा पितृश्राद्ध का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है। आश्वलायन गृह्यसूत्र की सप्तमी और अष्टमी कण्डिका में विस्तारपूर्वक श्राद्ध-विधि वर्णित की गयी है; वह पठनीय और मननीय है। अन्त्येष्टि-विधि का वर्णन भी इसमें उपलब्ध है। चिता-प्रज्ज्वलित होने पर ऋग्वेद का यह मन्त्र पढ़ा जाता था—'प्रेहि प्रेहि पथिभिः पूर्वेभिः' अर्थात् जिस मार्ग से पूर्वज गये हैं, उसी मार्ग से तुम भी जाओ। मूलतः वेदों में भी श्राद्ध और पिण्डदान का उल्लेख किया गया है। श्राद्ध में जो मंत्र पढ़े जाते हैं, उनमें-से कुछ ये हैं 'अत्र पितरो मादयध्वं यथाभागमा वृषायध्वम्।' इस पितृयज्ञ में पितृगण हृष्ट हों और अंशानुसार अपना-अपना भाग ग्रहण करें। 'नम वः पितरो रसाय। नमो वः पितरो शोषाय।'

पितरों को नमस्कार ! वसन्त ऋतु का उदय होने पर समस्त पदार्थ रसवान हों। तुम्हारी कृपा से देश में सुन्दर वसन्त ऋतु प्राप्त हो। पितरों को नमस्कार ! ग्रीष्म ऋतु आने पर सर्व पदार्थ शुष्क हों। देश में ग्रीष्म ऋतु भलीभाँति व्याप्त हो।'

इसी प्रकार छवों ऋतुओं के पूर्णतः सुन्दर, सुखद होने की कामना और प्रार्थना की गयी है। यह भी कहा गया है कि 'पितरों, तुम लोगों ने हमको गृहस्थ(विवाहित) बना दिया है, अतः हम तुम्हारे लिए दातव्य वस्तु अर्पित कर रहे हैं।'

वेदों के बाद हमारे स्मृतिकारों और धर्माचार्यों ने श्राद्धीय विषयों को बहुत व्यापक बनाया और जीवन के प्रत्येक अङ्ग के साथ सम्बद्ध कर दिया। मनुस्मृति से लेकर आधुनिक निर्णयसिन्धु, धर्मसिन्धु तक की परम्परा यह सिद्ध करती है कि इस विधि में समय-समय पर युगानुरूप संशोधन, परिवर्धन और परिवर्तन होता रहा है। नयी मान्यता, नयी परिभाषा, नयी विवेचना और तदनुरूप नई व्यवस्था बराबर होती रही है। दुर्भाग्य की बात यह है कि विदेशी आधिपत्य के बाद जब हिन्दू समाज पंगु हो गया, समाज का नियन्त्रण विदेशी-पद्धति और विधि विधान से होने लगा तो युग की आवश्यकता के अनुरूप नयी परिभाषा, व्यवस्था का क्रम भी अवरुद्ध हो गया। फलस्वरूप उपयोगितावादी मानव-मन की तुष्टि अपने पुरातन संस्कारों से नहीं हो पा रही है और वह संस्कार-विहीन होता जा रहा है। जीवित माता-पिता, बंधु-बांधव भी आज मात्र उपयोगितावाद की कसौटी पर कसे जा रहे हैं; तब मृत माता-पिता के प्रति आस्था, श्रद्धा और भक्ति की तो बात ही क्या ! इतना ही नहीं, हमारी आस्था स्वयं अपने-पर से डिगती जा रही है। देश में व्याप्त समस्त अशान्ति, विक्षोभ, असंतोष, अनैतिकता आदि का मूल कारण यही है। जब हम स्वयं अघोर (शिव) नहीं हैं तो 'अघोराः पितरः सन्तु' की कामना कैसे कर सकते हैं ?

संसर्प मास-निर्णय

विगत सन् १९६३ ई० में क्षयाधिक मास पड़ा था; उसके १९ वर्ष बाद सन् १९८२ ई० में पुनः क्षयाधिक मास पड़ा। जब क्षयमास पड़ता है तो उसके पहले तीन मास के भीतर एक अधिक मास तथा क्षयमास के बाद तीन मास के भीतर दूसरा अधिक मास पड़ता है ; इस प्रकार क्षयमास के आगे पीछे दो अधिक मास अनिवार्यतः पड़ा करते हैं। क्षयमास के पहलेवाले अधिक मास को धर्मशास्त्रों में 'संसर्प' संज्ञा दी गयी है और चूड़ाकर्म, उपनयन, विवाह, अग्न्याधान, राजाभिषेक आदि मंगल-कृत्यों को छोड़कर मासिक व्रतोत्सवादि के लिए वह शुद्ध(कर्मार्ह) माना गया है। संसर्प मास में अधिक मास सम्बन्धी कृत्यों अपूप-दान, पुरुषोत्तम व्रतादि का निषेध किया गया है; वे सब धर्मकृत्य क्षयमासोत्तर अधिकमास में करने चाहियें। कई बार संसर्प मास क्षयमास से अव्यवहित होता है अर्थात् वे दोनों परस्पर संलग्न रहते हैं जैसाकि सन् १९६३ ई० में था और कई बार इन दोनों के अन्तर्गत अन्य मास पड़ जाते हैं जो स्थिति सन् १९८२–८३ ई. में थी। क्षयमास के पहलेवाले अधिकमास को, चाहे वह क्षयमास से व्यवहित हो या अव्यवहित, प्राकृत शुद्ध मानना चाहिए, यह एक धर्मशास्त्रीय पक्ष है; दूसरा पक्ष यह है कि क्षयमास से व्यवहित संसर्पमास के पश्चात् चूंकि अग्रिम वही मास शुद्धरूप में उपलब्ध होता है;अतः इस शुद्ध मास की अपेक्षा संसर्प मास का प्राकृतत्व(शुद्धत्व) गौण हो जाता है; अतः संसर्पमास में केवल तत्संबंधी अनन्यगतिक कर्म एवं नित्य व्रतादि करने चाहिए; उस मास के विहित व्रत पर्वोत्सवादि धर्मकृत्य शुद्धमास में करने चाहिए—संसर्प में नहीं। इसी पक्ष को भारत के अधिकांश पञ्चांगकारों एवं धर्मशास्त्रियों ने मान्य किया। अतएव तदनुसार सन् १९८२ ई० में अमांतमानेन प्रथम आश्विन संसर्पाधिमास एवं द्वितीय आश्विन (पूर्णमान्त मान से शुद्ध आश्विन शुक्लपक्ष और कार्तिक कृष्णपक्ष) शुद्धमास रूपेण 'चिंताहरण जंत्री' में दिया गया। तत्सम्बन्धी क्षयमास एवं तदुत्तरवर्ती अधिक(पुरुषोत्तम) मास अगले ईसवी वर्ष सन् १९८३ में पड़ने से उन सबका विस्तृत विवरण आगे दिया गया है। यहाँ केवल संसर्पमास के वर्ज्यावर्ज्य संबन्धी शास्त्रीय वचन दिये जा रहे हैं—

'वापी कूपतड़ागादि प्रतिष्ठा यज्ञ कर्म च। न कुर्यान्मलमासे तु संसर्पांहस्पतौ तथा ।। (वशिष्ठ)
गृह प्रवेश गोदान स्थानासन महोत्सवम्। न कुर्यान्मलमासे तु संसर्पांहस्पतौ तथा ।। (मरीचि)
वस्तुतस्तु यद्वर्षेक्षयाख्यमासस्तत्र पूर्वापरमधिमासद्वयं। तत् त्रितयमपि सर्वकर्म बहिष्कृतम्(कृत्य-शिरोमणि)

कन्यास्थ सूर्य में मलमास हो तो तुलार्क में ही देव पितृसम्बन्धी कर्म करने चाहिए जैसाकि पितामह सिद्धांत का वचन है—

मासि कन्यागते भानुरसंक्रांतौ भवेद्यदि। दैवं पित्र्यं तदा कर्म तुलार्के कुर्युरक्षयम् ।।

संसर्पमास में संध्यावन्दनादि नित्य कर्म, रोग-निवृत्यर्थ शांति-कर्म, दूसरे बार का तीर्थ-स्नान, गजच्छायायोगनिमित्तक श्राद्ध, प्रेतक्रिया, गर्भाधान, ऋणादि में वार्धुषिकृत्य, दशगात्र-पिण्डदान एवं श्राद्ध करने चाहिए।

क्षयाधिमास-निर्णय

द्वि संक्रांति युक्तस्य क्षयस्य मासद्वयत्वेन परिगणनात् (स्मृतिमुक्ताफल, श्राद्धकाण्ड)।

क्षयमासो माससंज्ञा प्रयोजक संक्रांतिद्वययुक्तत्वात् मासद्वयात्मकः। (जयसिंह कल्पद्रुम)

दर्शान्तयोर्द्वयोमध्येऽधिमासश्चेन्न संक्रमः, द्वे संक्रान्ती क्षयः स्यात्स एकोऽपि द्वयात्मको भवेत् (रत्नमाला)

यत्रमासि रवि संक्रमद्वयं तत्र मासयुगलं क्षयाह्वयम्। (रत्नावली)

एक एव यदा मासः संक्रान्तिद्वय संयुतः। मासद्वयगतं श्राद्धं मलमासेऽपि शस्यते॥ (सत्यव्रत)

मासद्वयोदितं कर्म तत्कुर्यादिति निर्णयः। एकस्मिन मासि मासौ द्वौ यदि स्यातां तयोर्द्वयोः॥ तावेव पक्षौ ता एव तिथयस्त्रिंशदेव हि॥ (मदनरत्नोद्धृत स्मृत्यन्तर वचन)

संक्रांतिद्वय युक्त एको मासः क्षयमास संज्ञकः सच ......मास द्वयात्मक एकोमासो ज्ञेयः। (धर्मसिन्धु)

तिथ्यर्धं प्रथमे पूर्वो द्वितीयेऽर्धे तदुत्तरः। मासाविति बुधैश्चिन्त्यौ क्षयमासस्य मध्यगौ॥ (भविष्य पुराण)

मासद्वयोदितं कर्म तत्(तत्र) कुर्यादिति(कुर्याद्धि) निर्णयः।

एक चांद्रमास में जब सूर्य की दो संक्रान्तियाँ होती है तो वह क्षयमास होता है और अपने परवर्ती मास से युगलीभूत होता है। सिद्धान्त शिरोमणि में भी कहा गया है—'एकस्मिन मासे संक्रान्तिद्वयेनजाते सति मास युगल जातम्।' गत लेख में बताया जा चुका है कि जब क्षयमास पड़ता है तो उसके पहले तीन मास के भीतर एक अधिक मास और उसके बाद तीन मास के भीतर दूसरा अधिक मास अनिवार्यतः पड़ा करते हैं जिसमें क्षयमास के पहलेवाले अधिक मास को 'संसर्पमास', क्षयमास को 'अहंस्पतिमास' तथा क्षयमासोत्तर अधिक मास को 'मलिम्लुच मास' कहते हैं। संसर्प मास के दो भेद हैं, १. अव्यवहितपूर्व और २ व्यवहितपूर्व। जब संसर्प मास के तुरन्त बाद क्षय मास पड़ जाता है अर्थात् वे दोनों संलग्न रहते हैं तो उस संसर्प को अव्यवहितपूर्व कहते हैं और जब उन दोनों के अन्तर्गत अन्य मास भी रहते हैं तो उस संसर्प का व्यवहितपूर्व कहते हैं। संसर्प अव्यवहित हो या व्यवहित मंगल एवं शुभ कार्यों तथा अन्यगतिक धर्म-कर्म में उसी भांति वर्ज्य होता है, जैसे क्षय मास और क्षयोत्तरवर्ती अधिक (मल) मास। इसी कारण कहा गया है—यत्रुतस्तु यद्वर्षेक्षयाख्यमासस्तत्र पूर्वापरमधिमास द्वयं। तत् त्रितयमपि सर्वकर्म बहिष्कृतम्॥ (कृत्यशिरोमणि)। यहाँ सर्व कर्म का अर्थ उन-उन मासों के किये जानेवाले नित्य नैमित्तिक व्रतोपवासादि अनन्यगतिक धर्मकृत्यों में कथमपि नहीं है; क्योंकि किसी भी काल और उसमें अनुष्ठेय धर्मकर्मों का लोप नहीं होता, चाहे वह संसर्पमास हो, अहंस्पति(क्षय) मास हो या अधिक(मल)मास हो। उपर्युक्त मास-संज्ञाएँ तो उनके काल-वैशिष्ट्य की सूचक हैं। यहाँ क्षयमास का अर्थ उस मास का कालाभाव या लुप्त हो जाना नहीं है। उसकी अवस्था ठीक क्षय तिथि, नक्षत्रादि पंचांगीय कालावयवों के समान ही होती है। जैसे, क्षयतिथि के अंक का उल्लेख पञ्चांगकार तिथि-श्रेणी में न कर उसका लोप कर देते हैं; यह इसलिए कि पाठक सहज ही समझ जायें कि किस तिथि का क्षय हुआ है; किन्तु उसका काल लुप्त नहीं रहता; वह तो पूर्ववर्ती औदयिक तिथि के साथ ही पंचांग, जंत्री में प्रत्यक्ष वर्तमान रहता है और उस क्षय-तिथि सम्बन्धी कृत्य उसी काल में सम्पन्न होते हैं। उदाहरणार्थ—ई० सन् '८३ के वर्षारम्भ-दिन शनिवार ता. १ जनवरी के बगल में २ (द्वितीया) तिथि जंत्री में छपी है और अगले दिन रविवार ता. २ जनवरी को ४ तिथि अंकित है, (तृतीया) तिथि का अंक ३ अनुल्लिखित (लुप्त) है; क्योंकि रविवार को सूर्योदय-काल में वर्तमान न रहने से उसको 'क्षय' संज्ञा है; किन्तु तृतीया का भोग-काल स्पष्टतः द्वितीया के भोग-काल के साथ ही उल्लिखित है। शनिवार को काशी के सूर्योदयात् ७ घटी १० पल तक द्वितीया, तत्पश्चात् ५१ घटी २८ पल तक तृतीया उसी बार में भोग करेगी अर्थात् यहाँ शनिवार में द्वितीया-तृतीया दो तिथियाँ युगलीभूत हैं। दोनों के कालमान गणित-सिद्धान्तसिद्ध हैं; किन्तु तृतीया की 'क्षय' संज्ञा धर्मशास्त्रीय नियमानुसार है। इस भांति भारतीय ज्योतिष की पंचांगीय काल-गणना का धर्मशास्त्र से अविच्छेद्य सम्बन्ध है। धर्मशास्त्रीय नियमानुसार ही वि० सवत् २०३९ में अमान्त माननेन पौष मास क्षयसंज्ञक है एवं अपने परवर्ती माघमास के साथ युगलीभूत हैं, तथैव फाल्गुन अधिक(मल)मास है। मासद्वयात्मक स्थिति के परिपोषक कतिपय शास्त्रीय प्रमाण-वचन इस लेख के प्रारम्भ में ही उद्धृत हैं। इसी क्रम में अधिक(मल)मास और संसर्प मास का वैशिष्ट्य भी ज्ञातव्य है : अधिक (मल) मास २७ से ३६ मासों के अन्तराल से आया करते हैं और वे सदैव षष्ठि (६०) तिथ्यात्मक होते है जिनमें ३० तिथियों का

पहला मास अधिक (मल) मास होता है और अग्रिम ३० तिथियों का मास उसी नाम का शुद्ध मास होता है; किन्तु संसर्प मास सदा ६० तिथियों का नहीं होता, कभी ६०, कभी ३० तिथियों का होता है। संसर्पमास जब क्षयमास से व्यवहितपूर्व होता है तो ६० तिथ्यात्मक होता है और जब व्यवहितपूर्व होता है तो त्रिशत्(३०) तिथ्यात्मक होता है। संसर्प मास सदैव क्षय(अहंस्पति) मास का पूर्ववर्ती मास होता है, अतः वह भी क्षयमास के समान १९ वर्ष से १४१ वर्ष के अन्तराल से आता है। जब गणित से त्रिशत् तिथ्यात्यक संसर्प मास उपलब्ध होता है तो संसर्पमास-शुद्धि प्रतिपादक यावत् शास्त्रीय वचन उसके प्राकृतत्व (शुद्धत्व) में चरितार्थ हो जाते हैं, कोई भी वचन निरवकाश, व्यर्थ नहीं होता; किन्तु जब गणित-सिद्धांत से षष्ठि तिथ्यात्मक संसर्प मास प्राप्त होता है तो संसर्पमासोत्तर वही मास शुद्ध रूपेण भी उपलब्ध होने से संसर्प का प्राकृतत्व(शुद्धत्व) स्वतः गौण हो जाता है। इसी धर्मशास्त्रीय पक्ष को धार्मिक जगत के प्रबल बहुमत द्वारा स्वीकार किये जाने से तदनुकूल संसर्पमास-निर्णय सन् '८२ की चिंताहरणजंत्री में प्रकाशित किया गया था। संसर्प मास के ६० तिथ्यात्मक होने के कारण क्षयमास (अहंस्पति) का पंचांग में स्वतन्त्र अस्तित्व न रहकर वह परवर्ती चान्द्रमास से युगलीभूत हो जाता है। चान्द्रमास भी दो प्रकार का होता है, १. अमान्त मास, २. पूर्णिमान्त मास। दोनों प्रकार के मासों को वेदादि शास्त्र-प्रामाण्य है, किन्तु क्षयाधिक मास-निर्णय सर्वथा अमान्त मासानुसार किया जाता है। एक अमावस्या के अन्त से अग्रिम अमावस्या के अन्त तक का चांद्रमास अमान्त मास कहलाता है। अमान्त काल से ही शुक्ल प्रतिपदा का आरम्भ भी होता है। अतएव अमान्त मास को शुक्लादि मास भी कहते हैं। इसी प्रकार एक पूर्णिमान्त से अग्रिम पूर्णिमान्त तक के मास को पूर्णिमान्त मास अथवा कृष्णादिमास कहते हैं। दोनों प्रकार के मासों का शुक्लपक्ष एक ही होता है; किन्तु अमान्त मास के कृष्णपक्ष से पूर्णिमान्त मास का कृष्णपक्ष एक मास आगे रहता है; जैसे, अमान्त मानेन क्षय पौषमास का पहला पौषशुक्लपक्ष, पूर्णिमान्त पौषमास का भी शुक्लपक्ष हैं; किन्तु उसका परवर्ती कृष्णपक्ष जो अमान्त मान से पौष कृष्णपक्ष है, वही पूर्णिमान्त मान से माघ कृष्णपक्ष है। इसी भाँति अमान्त एवं पूर्णिमान्त मानेन माघ शुक्लपक्ष के बाद का अमान्तमानेन माघ-कृष्णपक्ष पूर्णिमान्त मान से फाल्गुन कृष्णपक्ष है। इन दोनों पक्षों में जहाँ अमान्त मास का व्यवहार है, वहाँ क्रमशः पौष और माघ मास दोनों के शुक्ल एवं कृष्णपक्ष के देव-पितृ-कर्म एतत्कालव्यापिनी एक ही तिथि में अनुष्ठित होंगे। अतः संकल्प-वाक्य में उन दोनों मास-नाम की योजना होगी। इसी प्रकार जहाँ पूर्णिमान्त मास का प्रचलन है, वहाँ पौष-माघोभय शुक्लपक्ष में पौष और माघ दोनों मासों के शुक्लपक्षोपलक्षित नित्य नैमित्तिक देव-पितृकर्म इस पक्ष की तत्प्रयुक्त एक ही तिथि में, संकल्प-वाक्य में अपने-अपने मास-नामोच्चरण के साथ अनुष्ठित होंगे। इसी भाँति माघ-फाल्गुनोभय कृष्णपक्ष में माघ और फाल्गुन दोनों मासों के कृष्णपक्ष सम्बन्धी देव-पितृकर्म संपादित होंगे। स्नान दान व्रत पूजनादि सम्बन्धी ऐसे कृत्य जिनका प्रतिदिन दो मासों के निमित्त द्विरावृत्त (दोहराना) सम्भव हो, उनकी द्विरावृत्ति करें और जो उपवास, नक्तव्रत, भू-शयनादि नियम एक दिन में दोहराये नहीं जा सकते, वे एक ही बार करने से द्विगुण फल देगें। जिन व्यक्तियों का इन दो पक्षों में जन्म मरण होगा, उनके जन्म मरण की तिथि, मास-निर्धारण के लिए भिन्न विधान है। तदर्थ पौष माघ के उक्त दोनों पक्षों की प्रत्येक तिथि के पूर्वापर दो भाग होंगे। पूर्णिमान्त मास के उपयोग कर्त्ताओं के पौष-माघोभय शुक्लपक्ष की प्रत्येक तिथि का पहला भाग पौष शुक्लपक्ष की तिथि तथा अगला भाग माघ मास के शुक्लपक्ष की तिथि होगी। इसी तरह माघ-फाल्गुनोभय कृष्णपक्ष की प्रत्येक तिथियों के दो पूर्वापर भाग होंगे जिनमें पहला भाग माघ कृष्णपक्ष की तिथि तथा अगला भाग फाल्गुन कृष्णपक्ष की तिथि होगी। इस विभागानुसार जिस मास की जिस तिथि में किसी व्यक्ति का जन्म या मरण होगा, अगले संवत् के उसी मास की उसी कर्म-कालव्यापिनी तिथि को उस व्यक्ति का वर्धापन या आब्दिक श्राद्ध सम्पादित होगा। यहाँ विशेषतः स्मरणीय है कि गत संवत् के पौष, माघ शुक्लपक्ष एवं माघ, फाल्गुन कृष्णपक्ष की किसी तिथि में जिस व्यक्ति का मरण हुआ हो, उसका श्राद्ध संवत् २०३९ के मासद्वयात्मक पक्षों में से मरण-मास, पक्ष की मरण-तिथि के द्विधाविभक्त उस पूर्व या पर-भाग में होगा जो मध्याह्नव्यापी हो। यदि वह तिथि-भाग मरण-मास का न होकर उससे युगलीभूत मास का हो तो उस मासाङ्गभूत मरण-मास, पक्ष, तिथि में श्राद्धसम्पादन का संकल्प बोलना चाहिए।

क्षयमास के अनन्तर ता. १३ फरवरी से ता. १४ मार्च '८३ तक फाल्गुन मास पुरुषोत्तम (मल) मास हुआ था। उसी मास में पुरुषोत्तम भगवान् की पूजा, अपूप-दानादि आधिमास संबन्धी यावत् कृत्य एवं काशी में पञ्चक्रोशीय यात्रा भी सम्पन्न हुई थी। सन् १९८२ ई. मे आश्विन-अधिमास संसर्पमास था, इसी कारण उस मास में उपर्युक्त कृत्यों को न करने की सूचना हमारी जंत्री में प्रकाशित की गयी थी।

सत्यमेव जयते, १५ अगस्त अमर हो, पञ्चाङ्ग-परिवार का यश अमर हो !

पूज्य श्रीगुरुदेव के चरण-कमलों में सादर दण्डवत् प्रणाम !

'चिन्ताहरण जंत्री' का सम्पादनाकार्य करते हुए आपको ३६ वर्ष हो गये हैं। आपका महत् योगदान एवं अथक परिश्रम प्राप्त कर जंत्री उत्कृष्ट तथा श्रेष्ठतम वार्षिक ग्रह-पंजिका बन गयी है जिससे सर्वसाधारण और ज्योतिषीवर्ग का अधिकाधिक हित-साधन हुआ है। 'चिन्ताहरण जंत्री' द्वारा आपने सूक्ष्म, शुद्ध एवं यथार्थ ज्योतिर्गणित का जन-जन में प्रचार-प्रसार कर स्थूल, अशुद्ध और अवास्तविक गणित-प्रणाली के विरुद्ध 'क्रान्ति'-सी उत्पन्न कर दी है। अतएव सूक्ष्म गणित-प्रसार की आपकी सद्वांछा पूरी होगी। 'ज्योतिष-रहस्य' पुस्तक के प्रथम एवं द्वितीय खण्ड की रचना कर आपने ज्योतिर्गणित एवं खगोल-शास्त्र को उसके मौलिक रूप में अधिकाधिक विकसित एवं उन्नत किया है। खगोलीय रेखा-चित्रों सहित उपपत्तियों को सरल हिन्दी भाषा में संकलित कर अतीव सरल, सुगम, बोधगम्य तथा रोचक बना दिया है। ज्योतिष-रहस्य के द्वितीय खण्ड में प्रकाशित 'कुंडली-निर्माण की वैज्ञानिक पद्धति' शीर्षक लेख लिखकर ज्योतिष-जगत में अप्रतिम कार्य किया है जिसमें सचित्र खगोल-दर्शन द्वारा अनेक खगोलीय पदार्थों की परिभाषा पाठकों के सम्मुख सुस्पष्ट कर दी है। वह कितना रोचक, पठनीय, और मननीय है, इसका अनुमान खगोल विद्या के जिज्ञासु प्रेमी ही कर सकेंगे। साथ-ही-साथ इस लेख के अनुपूरक अनेकशः क्रियात्मक नव्य गणितोदाहरण भी 'चिन्ताहरण जंत्री' में आपके सौजन्य से निरन्तर छपते चले आ रहे हैं। ज्यो० र० द्वि० खण्ड के प्राक्कथन में आप लिखते हैं—'किस अज्ञात शक्ति के अदृश्य हाथों से ज्योतिष-रहस्य का यह द्वितीय खण्ड पाठकों तक पहुँच रहा है.—मैं नहीं जानता ! अत्यन्त अशांतिमय परिस्थिति में भी आप अपने पाठकों को भाग्यवादी बनते नहीं देखना चाहते; बल्कि कर्तव्य-मार्ग पर अचल कर्मठता की शुभ कामना करते हुए 'कार्य करो' की प्रेरणा देते हैं. यह आपकी उदात्त महानता का प्रतीक है।

'चिन्ताहरण जंत्री' ईसवी वर्ष-पद्धति से सम्पादित होकर सभी पौर्वात्य और पाश्चात्य पद्धति की अखिल आवश्यकताओं की पूर्ति करती है। इधर कुछ संस्कृतज्ञ पण्डित चिन्ताहरण की अवहेलना अंग्रेजी-पद्धति की पंजिका कह कर करते रहे उनकी दृष्टि में जंत्री चैत्र शुक्ल १ से चैत्र कृष्ण ३० तक के चान्द्र-वर्षमान में न छपने के कारण 'अपावन' है; किन्तु वे भी इसकी सरलता, सौम्यता और बोधगम्यता, सर्वाङ्गपूर्णता के ग्राहक तथा प्रशंसक हैं। यह बड़े ही हर्ष की बात है कि अब पूज्य गुरुदेव द्वारा सम्पादित चिन्ताहरण जंत्री का वृहद् संस्करण भी प्रकाशित हो रहा है जिसमें पूरे संवत्सर का पञ्चाङ्ग भी सम्मिलित है। तदर्थ चिन्ताहरण जंत्री के सुविज्ञ सम्पादक-मण्डल को कोटिशः धन्यवाद !

पूज्य गुरुदेव ने मात्र पत्र-व्यवहार के सम्पर्क से मुझ अज्ञान शिशु को खगोल-गणित का जिज्ञासु बनाकर हृदयस्थ अज्ञानान्धकार को दूर किया। यद्यपि ज्ञान की इयत्ता नहीं, ज्ञान अनादि और अनन्त है; संसार में कोई भी जानकारी अन्तिम नहीं, सदैव नयी खोज और संशोधन होते आये हैं तथा आगे भी होंगे। विज्ञता का अभिमान मिथ्या है। पूज्य गुरुदेव ने मेरी बाल-बुद्धि और 'खीझ' पर भी शांतिपूर्ण पत्रोत्तर देकर उत्साह-वर्धन किया है; गणितीय त्रुटियों को सुधार कर उपपत्ति समझायी है तथा मुझ अबोध के लेख भी स्वीकार कर जंत्री में प्रकाशित किये हैं। आपका मुझ पर शिशुवत् स्नेह सदैव से है। आपकी कृपा-दृष्टि और स्नेह प्राप्त कर मेरा खगोलीय अल्प ज्ञान पला-पुसा, पुष्पित-पल्लवित हुआ है। ज्योतिर्गणित के विवेचक, गायक और काल-अभिव्यञ्जक भगवान् ज्योतिर्धर से मैं आपके स्वास्थ्य एवं दीर्घायु की शुभ कामना करता हूँ। चिन्ताहरण जंत्री में नित्य नवीन लेख प्रकाशित हों तथा पञ्चांग-जंत्रियों में यह सर्वश्रेष्ठ प्रामाणित हो, इसका अक्षय आलोक कभी मंद न हो एवं सतत् तेजोवृद्धि हो, यह मंगल-कामना करता हूँ।

आगे नम्र निवेदन है कि सन् १९७५ ई० की चिन्ताहरण जंत्री में आपने नतांश-साधन विषयक अपना लेख प्रकाशित किया था जिसमें भास्कराचार्य के एतद्विषयक सूत्र, उपपत्ति और उदाहरण के साथ-साथ नवीन पाश्चात्य सूत्रों को भी सोदाहरण प्रकाशित किया था। उसके बाद नतोन्नतांश के अनुपूरक दिगंश विषयक लेख की हम जिज्ञासुओं को आतुरतापूर्वक प्रतिक्षा थी; लेकिन आगे की जंत्रियों में क्रमशः आपका 'काल-परिमाण और परिणमन' विषयक लेख-माला प्रकाशित होने लगी। इस पर मैंने आपसे आग्रह किया था कि आप नतांश-जैसा ही लेख दिगंश पर भी जंत्री में प्रकाशित कीजिए जिसके बिना नतांश विषयक आपका लेख एकांगी रह गया है। आपने मेरी प्रार्थना स्वीकार कर सन् १९८१ ई० की जंत्री में दिगंश विषयक अभूतपूर्व लेख प्रकाशित किया। इतना ही नहीं, नतांश और दिगंश के द्वारा सूर्य-ग्रहण-गणित की ऐसी सरल रीति भी बतायी जो अन्यत्र अप्राप्य है; इसके लिए ज्योतिष-जगत आपका चिर आभारी रहेगा। दिगंश सम्बन्धी आपके लेख में भास्कराचार्य के दिगंश-सूत्र और पाश्चात्य सूत्रों की सोपपत्तिक एकवाक्यता सिद्ध की गयी है। इसके अतिरिक्त पाश्चात्य-सूत्रों के उदाहरण भी आपने दिये हैं; किन्तु भास्करीय-सूत्रों के गणितोदाहरण नहीं

दिये। यह पौर्वात्य सिद्धान्त-गणित के अध्येताओं के लिए कष्टप्रद है, अतः मैं उन सूत्रों के उदाहरण बनाकर आपके पास भेज रहा हूँ। आशा है, ये आपको स्वीकार्य होंगे। दिगंश-साधनार्थ भास्कराचार्य के मूल श्लोक-संख्या ७२, ७३ और ५२ सिद्धांत शिरोमणि के त्रिप्रश्नाधिकार में द्रष्टव्य हैं; यहाँ केवल सूत्र एवं उनके गणितोदाहरण दिये जा रहे हैं—

$$\text{सूत्र—इष्ट शंकुतल} = \frac{\text{पलभा} \times \text{इष्ट शंकु}}{१२}$$

$$\text{दिगंशज्या} = \frac{\text{अग्रज्या—इष्ट शंकुतल} \times \text{त्रि}}{\text{इष्ट छाया (उन्नतांश कोज्या)}}$$

उदाहरण सं. १—सन् १९८१ ई. की चिन्ताहरण जंत्री में ता. १३ जनवरी सन् १९७८ ई० को भा. प्र. समय (I.S.T.) से घण्टादि ९।१८.६ बजे के लिये अग्रादि-साधन के उदाहरण पृष्ठ-सं. ६९,७० पर दिये गये हैं। उसी उदाहरण को हमें पलभा, पलकर्ण आदि उपकरणों से सम्पन्न करना है। अतः पहले उन सबके मान यहाँ लिखे जा रहे हैं—

उन्नतांश २८° की ज्या ०.४६९४७=इष्ट शंकु। लाज्या उन्नतांश ९.६७१६१, ला कोज्या उन्नतांश ९.९४५९३, अग्रा २३°।५७'(—)पूर्व-बिन्दु से दक्षिण। वाराणसेय पलभाङ्गुल ५.६३८४।

ला पलभा	०.७५११६+
+ला इष्ट शंकु	९.६७१६१+
—ला १२	१.०७९१८+
==ला इष्ट शंकुतल	९.३४३५९+
स्वा. संख्या ,,	०.२२०५९+
अग्रज्या	०.४०५९४(—)
—इष्ट शंकुतल	०.२२०५९(+)
==भुज	०.६२६५३(—)
ला भुज	९.७९६९४(—)
—ला कोज्या उन्नतांश	९.९४५९३(+)
==ला ज्या दिगंश	९.८५१०१(—)

∴ दिगंश ४५°।१२'(—) पूर्व-बिन्दु से दक्षिण।

दिगंश-साधनार्थ भास्कराचार्य के अन्य सूत्र—

$$\text{इष्ट छाया} = \frac{\text{उन्नतांश कोज्या} \times १२}{\text{उन्नतांश ज्या}}$$

$$\text{इष्ट छाया कर्ण} = \frac{\text{त्रि} \times १२}{\text{इष्ट शंकु}}$$

त्रि. कर्ण : अग्राभुज : : इ. छायाकर्ण : छायाकर्णवृत्तीयाग्राभुज

$$\therefore \text{कर्णवृत्तीय अग्रा} = \frac{\text{इष्ट छाया कर्ण} \times \text{अग्राज्या}}{\text{त्रि.}}$$

कर्णवृत्तीय अग्रा ± पलभा = भुज(पल-क्षेत्रज)

इष्ट छाया : पलक्षेत्रज भुज : : त्रि : महद्वृत्तीयदिग्ज्या भुज

$$\text{दिगंशज्या} = \frac{\text{भुज} \times \text{त्रि,}}{\text{इष्ट छाया}}$$ अथवा अग्रज्या-शंकुतल=भुज तब,

छाया : छायाकर्ण : : भुज : छायाकर्णवृत्तीय दिग्ज्या

$$\therefore \text{दिगंशज्या} = \frac{\text{भुज} \times \text{छायाकर्ण}}{\text{छाया}}$$

उदाहरण-सं. २.

ला १२	१.०७९१८
+ला उन्नतांश कोज्या	९.९४५९३
—ला उन्नतांशज्या	९.६७१६१
==ला इष्ट छाया	१.३५३५०
ला १२	१.०७९१८
—ला इष्ट शंकु	९.६७१६१
==ला इष्ट छायाकर्ण	१.४०७५७
+ला अग्राज्या	९.६०८४६
==ला कर्णवृत्तीयाग्रा	१.०१६०३
स्वा. संख्या ,,	१०.३७६(—)
— पलभा	५.६३८(+)
==भुज	१६.०१४(—)
ला भुज	१.२०४५(—)
— ला छाया	१.३५३५(+)
==ला दिगंशज्या	९.८५१०(—)

∴ दिगंश ४५°।१२'(—)पूर्व-बिन्दु से दक्षिण

उदाहरण-सं. ३.

किंवा ला (अग्राज्या – शंकुतल) भुज	९.७९६९४(—)
+ला छायाकर्ण	१.४०७५७(+)
—ला छाया	१.३५३५०(+)
==ला दिगंशज्या	९.८५१०१(—)

∴ दिगंश ४५°।१२' (—) पूर्व-बिन्दु से दक्षिण दिशा के सिद्ध हुए। आपके चरणारबिन्दु का एक अकिंचन—

जयकृष्ण पनिका
ग्राम– घटई (पीपर टोला)
पो०– सीधी, शहडोल, वाया जयसिंह नगर,
जिला–सरगुजा (मध्य प्रदेश)

सम्पादकीय टिप्पणी—उपर्युक्त गणित में सरलता के लिए पाँच अंकीय लाघवाङ्क (Logarithim) का प्रयोग किया गया है। जिनको विशेष सूक्ष्म गणित की अपेक्षा हो, वे सप्तांकी लाघवांक का प्रयोग करें। उपर्युक्त सूत्रों की उपपत्ति समझने अथवा अन्य शंका-समाधान के लिए हमें पत्र न लिख कर सीधे लेखक से सम्पर्क करें; पत्रोत्तर के लिए उनके पास जवाबी लिफाफा या डाक-टिकट भेजना आवश्यक है।

गणित-ज्योतिष के संबंध में—

श्रीजगजीवनदास गुप्त को ज्योतिष-रहस्य के प्रथम संस्करण के पाठकों द्वारा भेजे गये कुछ अत्यन्त उपयोगी पत्र और सारणियाँ :—

प्रातःस्मरणीय श्रीगुरुपदारविन्द में दण्डवत् प्रणाम्।

""आपने परमलंबन घातांक निकालने की विधि (कै० पं० श्रीगणपतिदेवजी शास्त्री) की पुस्तक (दृक्-सिद्ध-पञ्चांग निर्माण-पद्धति) की सहायता से बतायी—चन्द्र – सूर्य = तिथि ∴ चन्द्र परमलंबन – सूर्य परम लंबन = तिथि परमलंबन निरक्ष देशीय। यहाँ चन्द्र परम-लंबन ५४′।१″।८८–०।८।८८″सूर्य परमलंबन=५१′।५३″=३२३३″ यह तिथि-परलंबन निरक्षदेशीय है। इसमें साक्ष देश वाराणसी-हेतु संस्कार श्रीशास्त्रीजी की पुस्तक के पृष्ठ-सं १३९ से –१″·९५५ लेकर निरक्ष तिथि परम-लंबन ३२३३″ में घटाया तो वाराणसेय तिथि-परम लंबन का मान ३२३१·०४५ हुआ, इसका लाघवांक ३·५०९३·४३०३ आपने लिखा है; ज्योतिष-रहस्य द्वितीय भाग में ३·५०९३४१३० प्रकाशित है; अन्तर १७३ के बारे में आपने लिखा है कि ज्योतिष-रहस्य छपने के समय के पुराने कागजों को देखना होगा; किन्तु मैंने इस अन्तर का पता लगा लिया है; वह इस प्रकार से—वाराणसी-अक्षांश २५°।१८′।२५″ की भू-त्रिज्या ०·९९९३९१ को उक्त निरक्ष तिथि-परम लंबन विकला ३२३३″ से गुण दिया तो गुणन-फल ३२३१·०३११ आया जिसका लाघवांक ३·५०९३४१२ है जो आपकी पुस्तक में छपे लाघवांक से मिल गया। दशमलव के सातवें स्थान में अन्तर १ नगण्य है··· । —आपका ही, भोलादत्त महतोलिया।

इनका वर्तमान पता है–पं. श्रीभोलादत्त महतोलिया, शास्त्री, बी. ए.
श्रीजीवन-विजय-पञ्चांग कार्यालय, आदर्श कालोनी, पो० रुद्रपुर, जिला—नैनीताल—२६३१५३ (उ. प्र.)

सम्पादकीय टिप्पणी—संयोग की बात हैं कि इसी विषय में श्रीदिनेश्वर गोस्वामी के मन में भी जिज्ञासा उत्पन्न हुई और उन्होंने सारणी द्वारा सामान्य अनुपात से भू-त्रिज्या लाने के बजाय गणित-सूत्र से उसका सूक्ष्म मान सिद्ध करने तथा प्रकारान्तर से साक्षदेशीय परम लंबन की गणित-विधि भी उदाहरण सहित हमें भेजी है जो सिद्धान्त गणित-प्रेमियों के हितार्थ यहाँ प्रकाशित की जा रही है।

परमाराध्य गुरुवर, चरण कमलों में सादर प्रणाम्!

आपके निर्देशानुसार साक्षदेशीय परम लंबन-साधन का गणितोदाहरण बना कर भेज रहा हूँ।

पृथ्वी का ध्रुवीय व्यासार्ध = ब = ३९४९·९२ मील
पृथ्वी का विषुववृत्तीय व्यासार्ध = अ = ३९६३·२१ मील

अतः $\frac{\text{ब}}{\text{अ}}$ = ०·९९६६४६, आपने भू-परिधि की केन्द्रच्युति का वर्ग इ^2=०·००६६९४५४ लिखा है।

∴ $\text{इ}^2 = 1 - \frac{\text{ब}^2}{\text{अ}^2}$, इस आधार पर $\frac{\text{ब}^2}{\text{अ}^2} = 1 - \text{इ}^2$

∴ $\frac{\text{ब}}{\text{अ}} = \sqrt{1 - \text{इ}^2}$

= $\sqrt{०·९९३३०५४६}$ = ०.९९६६४७१

लाघवांक से ला $\frac{\text{ब}}{\text{अ}} = \frac{1}{2}\text{ला}(1 - \text{इ}^2)$ =

$\frac{1}{2}$ × ९·९९७०८२८ = ९·९९८५४१४ इसकी स्वा. संख्या ०·९९६६४७१ स्थिरांक हुआ; पृथ्वी गेंद की भाँति सर्वथा गोल पिण्ड नहीं है, बल्कि दक्षिणोत्तर ध्रुवों पर कुछ चिपटी है। उसका चिपटापन स=१–$\frac{\text{ब}}{\text{अ}}$ है, तब भू-त्रिज्या =१ — स ज्या² ϕ, जहाँ ϕ = भौगोलिक अक्षांश है। स = ०·००३३४६१, यही श्री पं. गणपतिदेवजी शास्त्री के ग्रन्थ में इ का मान है, किन्तु इसका अद्यतन संशोधित सूक्ष्म मान ०·००३३५२९ है।

ϕ=२५°।१८′।२५″ लेने पर ला ज्या ϕ =९·६३०९०३०

२ लाज्या ϕ २५°।१८′।२५″	९·२६१८०६०
+ला स ०·००३३५२९	७·५२५४२०६
= ला स ज्या²ϕ	६·७८७२२६६

इसकी स्वा. संख्या ०·०००६१२६७ है। इसे पूर्णाङ्क १ में घटाने पर ०·९९९३८७३३ = १ — स ज्या² ϕ = भू-त्रिज्या हुई। अतः

अभीष्ट स्थान का परम(क्षैतिज) लंबन = निरक्ष-देशीय परम लंबन × भू-त्रिज्या। तब—

ला निरक्ष परम लंबन	३२३३″	३·५०९६०५७
+ला भू-त्रिज्या	०·९९९३८७३३	९·९९९७३३८
=ला वाराणसेय तिथि प. लंबन-घातांक		३·५०९३३९५

प्रकारान्तर से—

(१) स्थिरांक × निरक्ष परम लंबन = ध्रुवीय परम लंबन।
(२) निरक्ष परम लंबन—ध्रुवीय परम लम्बन = शेष।
(३) शेष × ज्या²ϕ =लंबन-शुद्धि, इसका संस्कार निरक्ष परम लंबन में करने से अभीष्ट साक्ष देश का परम लंबन होता है। इस लंबन-शुद्धि की सारणी बनाकर श्री पं. गणपतिदेवजी ने अपने 'दृक्सिद्ध-पञ्चांग-निर्माण-पद्धति' ग्रंथ में प्रकाशित की है।

किन्तु वह किंचित् स्थूल पुराने मूलांकों के आधार से बनी है, सूक्ष्मता के लिये प्रस्तुत विधियों का उपयोग करना चाहिये ; अस्तु—

ला स्थिरांक ९·९९८५४१४ पहले सिद्ध कर आये हैं, अब—

ला स्थिरांक	९·९९८५४१४
—ला निरक्ष परम लंबन ३२३३″	३·५०९६०५७
= ला ध्रु. परम लंबन ३२२२″·१६३	३·५०८१४७१

निरक्ष परम लंबन ३२३३″—३२२२″·१६ ध्रुवीय परम लंबन = १०″·८४ शेष।

ला शेष १०″·८४	१·०३५०२९३
ला ज्या² ϕ	९·२६१८०६०
ला लंबन-शुद्धि १″·९८०७	१०·२९६८३५३

निरक्ष परम लंबन ३२३३″—१″·९८०७ लंबन-शुद्धि =३२३१″·०१९३ वाराणसेय परम तिथि-लंबन

इसका लाघवांक ३·५०९३३९५ है, यही लाघवांक प्रथम रीति से भी आया है, अतः पाठक चाहे जिस रीति का उपयोग कर सकते हैं। उपर्युक्त गणित में भौगोलिक अक्षांश ϕ का प्रयोग किया है, किन्तु—

वर्तमान में कुछ खगोलवेत्ता उसके बजाय भू-केन्द्रीय अक्षांश ϕ' का प्रयोग करते हैं और मेरे विचार से यही समीचीन है।

आपका चरणानुरागी—

दिनेश्वर गोस्वामी

सम्पादकीय टिप्पणी—इनका पूरा पता यह है—श्रीदिनेश्वर गोस्वामी (B.Sc.) ग्राम—झौवा मठिया, पो०—बेनबलिया, जिला—भोजपुर-८०२१५१ (बिहार)। श्री पं. गणिपतिदेवजी ने अपने उपर्युक्त ग्रन्थ के पृष्ठ ७९ पर चन्द्र के परम लंबन के गणितोदाहरण में काशी के भौगोलिक अक्षांश २५।१८।२५ के बजाय भू-केन्द्रीय अक्षांश २५।९।३४·४ का उपयोग किया है, किन्तु पृष्ठ १३९ पर लंबन-शुद्धि-सारणी के उदाहरण में ϕ २५।१८।२५ का उपयोग किया है, यह उनके ग्रन्थ का अन्तर्विरोध है। उनके गणित-परिणाम से तुलनार्थ हमारे निर्देशानुसार उपर्युक्त गणित में भी ϕ २५।१८।२५ का ही उपयोग पत्र-लेखक ने किया है; किन्तु पाठकों को ध्यान रखना चाहिए कि चिन्ताहरण जत्री ने काशीका भौगोलिक अक्षांश ϕ२५°।१९′ तथा भू-केन्द्रीय ϕ'२५°।१०′।३″ स्वीकृत किया है एवं वाराणसी सम्बन्धी यावत् खगोलीय गणित में इसी ϕ'का उपयोग किया जाता है। अक्षांश के बजाय पलभा का उपयोग अब भी अनेक ज्योतिषी करते हैं। इनके लिए भू-केन्द्रीय पलभा-साधनार्थ यह बड़ा उपयोगी श्लोक है—

निष्पत्ति जाति कृतिहीन शशाङ्कनिघ्नो।
वेधोपलब्ध पलभा पलभा भवेत्सा॥

जब कै० पं. श्रीगणपतिदेवजी को अपेक्षित कोई खगोलीय गणित-सूत्र उपपत्ति, और उदाहरण सहित बनाकर मैं देता था तो वे प्रसन्न होकर अपने संग्रह में-से कोई दुर्लभ पुस्तक मुझे उपहारस्वरूप प्रदान करते थे। ऐसे ही एक प्रसंग में एक बार मुझे उनसे 'ग्रहण-करण' नामक एक लीथो छापे की पुस्तिका प्राप्त हुई थी जिसे महाराजा दरभंगा के आर्थिक सहाय्य से महामहोपाध्याय पं. श्रीसुधाकरजी द्विवेदी ने बनाकर छपवाया था। उस पुस्तक के अन्तिम पृष्ठ पर हाथ से उपर्युक्त श्लोक लिखा हुआ था। बहुत समय तक वह पुस्तक पढ़ने का मुझे अवसर नहीं मिला। दो-एकबार उसके कुछ पृष्ठ पढ़ने का सुयोग मिला भी तो अन्तिम पृष्ठ के उक्त श्लोक पर ध्यान नहीं गया। श्रीशास्त्रीजी के स्वर्गवास के कुछ समय बाद जब वह पुस्तक पढ़ रहा था तो उक्त श्लोक पर विशेषतः ध्यान आकृष्ट हुआ। जो लोग यावत् खगोलीय गणित में भू-केन्द्रीय अक्षांश का उपयोग नहीं करते, उन्हें भी सूर्य-ग्रहण-गणित में अनिवार्यतः भूकेन्द्रीय अक्षांश का उपयोग करना होता है अन्यथा ग्रहण का मिनिट पर्यन्त शुद्ध दृक्तुल्य स्पर्शादि काल प्राप्त नहीं हो सकता। पुराने ज्योतिषीगण जो अक्षांश के बजाय पलभा का उपयोग ग्रहणादि गणित में करते थे, उन्हें पलभा को भू-केन्द्रीय बनाना अनिवार्य था। अतः सम्भवतया शास्त्रीजी के गुरु-जनों में-से किसी ने उक्त श्लोक बनाकर उक्त पुस्तक के अन्त में हाथ से लिख दिया था। श्लोक के साथ उसके अर्थ-स्वरूप यह लिखा था :—

निष्पत्ति ला $(१-इ^२)$=१̄·९९७१४६०

ला $(१-इ^२)$ + ला स्प प = ला स्प प′

उपर्युक्त सूत्र में जो ला $(१-इ^२)$ का मान दिया है, वह लेखक के समय का सर्वस्वीकृत मान था, लेकिन अब भू-परिधि की केन्द्रच्युति = इ का अद्यतन संशोधित मान ०·०८१८२०३ है और १—इ² का मान ०·९९३३०५४६ है जैसाकि श्रीदिनेश्वर गोस्वामी के पत्र से स्पष्ट है। इस मान से पलभा की स्पर्शज्या को गुणा करने से भू-केन्द्रीय पलभा की स्पर्शज्या प्राप्त होगी जिसका चापांश सूक्ष्म शुद्ध, भू-केंद्रीय पलभा होगी। उदाहरण, वाराणसेय अक्षांश २५°।१९′ का पलभांगुल ५·६७६६५ है, अतः

ला स्प ५·६७६६५	८·९९७३९५१
+ ला १—इ²	९·९९७०८२८
= ला स्प ५·६३८९	८·९९४·७७९

∴ काशी की भू-केंद्रीय पलभा अं. ५ व्यं. ३८·३ हुई इसी का उपयोग श्रीजयकृष्ण पनिका ने अपने पत्र के भास्कररीत्या दिगंशानयन—गणित में किया है ।

श्रद्धेय गुरुदेवजी, सादर चरण-स्पर्श,

आपका पत्र दिनांक २५।८।८२ का तथा मेरी लग्न-सारिणी वापस प्राप्त हुई है । मेरी भूल का भी पता चला । पुनः लग्न-सारणी को शुद्ध कर स्वीकृति वास्ते भेज रहा हूँ । क्षमा करेंगे गुरुदेव ! आप कार्य-भार से व्यस्त रहते हैं । आपका आदेश एवं सुझाव तथा 'ज्योतिष-रहस्य' के अध्ययन से पता चलता है कि जितने भी पञ्चांग आधुनिक समय में प्रकाशित हो रहे हैं, प्रायः सभी का गणित पुरातन स्थूल है । मेरी प्रार्थना है कि ज्योतिष की ओर जनता की श्रद्धा और विश्वास प्राप्त करने के लिये प्रमुख-प्रमुख स्थानों की लग्न-सारणी बनाकर ज्योतिष-रहस्य अथवा चिन्ताहरण जंत्री में प्रकाशित करवा दिया जाय जिससे ज्योतिष का अल्प जानकर साधारण व्यक्ति भी सूक्ष्म, शुद्ध गणित से कुण्डली-निर्माण कर सके ।

गया की पलभा आपके विगत पत्र द्वारा ५·५४ मुझे प्राप्त है । हिसाब गणित से समझ में नहीं आ रहा है, प्रयास जारी है । पलभा ५·५४ के आधार पर गया की निम्न लग्नसारणी निर्मित है ।

इस पुस्तक की पृष्ठसंख्या ४ के सूत्रानुसार गया के अक्षांश उ. २४°।४८' की पलभा का गणित—

यहाँ ϕ = अभीष्ट स्थान का अक्षांश—

$$२५ - \sqrt{२५^2 - १०\phi}$$
$$= २५ - \sqrt{६२५ - १० \times २४·४८}$$
$$= २५ - \sqrt{६२५ - २४०·४८०}$$
$$= २५ - \sqrt{६२५ - २४८}$$
$$= २५ - \sqrt{३७७}$$
$$= २५ - १९·४१६४ = ५·५८३६$$

इस प्रकार पलभा ५·५८३६ आती है ; आपने ५·५४ लिखा है ।

सम्पादकीय टिप्पणी—श्रीदिनेश्वर गोस्वामी का पत्र और मेरी पलभा-साधन के लिए टिप्पणी पढ़िये । तदनुसार भू-केन्द्रीय पलभा-साधन के लिये—

ला स्प. ५·८३६	८·९९०१७
+ ला $१ - इ^2$	९·९९७०८
= ला स्प. ५.५४	८·९८७२५

इस भाँति आपको गया की पलभा ५·५४ अंगुल यहाँ से लिखकर भेजा गया था ।

गया की पलभा अं.५·५४तथा भौ.अक्षांश उ.२४°।४८'की

लग्न-सारणी

अंश	स्वोदय भुक्त पल	प्रत्यंश उदय-गति पल	स्वोदय भुक्त पल	अंश
—	—		३६००·००	३६०
१०	७३·७२	७·३	३५२६·२८	३५०
२०	१४९·००	७·५	३४५१·००	३४०
३०	२२६·८३	७·७	३२७३·१७	३३०
४०	३०७·७७	८·०	३२९२·२३	३२०
५०	३९३·३७	८·५	३२०६·६३	३ ०
६०	४८४·१९	९·०	३११५·८१	३००
७०	५७९·७८	९·५	३०२०·२२	२९०
८०	६८०·६९	१०·०	२९१९·३१	२८०
९०	७८६·४८	१०·५	२८१३·५२	२७०
१००	८९६·६९	११·०	२७०३·३१	२६०
११०	१००९·७८	११·३	२५९०·२२	२५०
१२०	११२४·१९	११·४	२४७५·८१	२४०
१३०	१२३९·३७	११·५	२३६०·६३	२३०
१४०	१३५३·७७	११·४	२२४६·२१	२२०
१५०	१४६६·८३	११·३	२१३३·१७	२१०
१६०	१५७९·००	११·२	२०२१·००	२००
१७०	१६८९·७२	११·०	१९१०·२८	१९०
१८०	१८००·००	११·०	१८००·००	१८०

नोट—किसी स्थान में प्रत्येक राशि के उदय होने में जो समय लगता है, वही उस स्थान में उस राशि का स्वोदयकाल होता है । स्वोदय-काल तथा जन्मकालिक सूर्य-स्पष्ट द्वारा लग्न स्पष्ट किया जाता है । अभीष्ट स्थान के लिए द्वादश राशियों का स्वोदय काल बनाने की विधि 'ज्योतिष-रहस्य' नामक पुस्तक के द्वितीय भाग में दी गयी है; उसी मुताबिक गयाके लिए यह लग्न-सारिणी बनाकर ज्योतिष-प्रेमियों के प्रसन्नार्थ प्रेषित कर रहा हूँ । (इन्हीं का एक दूसरा पत्र) सेवा में—पूज्यपाद श्रीगुरुदेवजी,सादर चरण-स्पर्श !

मेरी जानकारी में एक तुकबन्दी है जो मेरी बारम्बार की अनुभूत हैं । वर्षा के दस महा-नक्षत्र में सूर्य के प्रवेश-कालीन लग्न के विषय में यह है—

मेष, सिंह, धनु, रौद(धूप) करे । वृष, मकर, कन्या मिट्टी भीजें । मन्मथ कुम्भ, तुला दे पवना । कर्कट मीन वृश्चिक जल-पूर्णा ।।

मेष लग्न में सूर्य आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्यादि दस नक्षत्र में प्रवेश करे तो धूप होती है । कर्क लग्न में नक्षत्र-प्रवेश होने से वृष्टि अधिक होती है । इसी प्रकार १२ लग्नों का उपर्युक्त फल है । इसे जंत्री में जन-लाभार्थ स्थान देकर मुझ जैसे अल्पज्ञ को आभारी करने की कृपा हेतु प्रार्थना है । यदि इसे उचित नहीं समझा जाय तो नहीं भी स्थान दिया जा सकता है ; पर यह लोकोक्ति शतशः अक्षरशः सत्य प्रमाणित हुई है । आपका—

रामदेव प्रसाद सिंह

ग्राम—दक्खिन पाँव, पो०-वजीरगंज,

जिला-गया, पिन : ८०५१३१